❁ इस पञ्चाङ्ग की विशेषमान्यता देख, इसी माफिक अन्य पञ्चाङ्ग बने हैं. अतः पञ्चाङ्ग लेते समय 'पं. भवानीशंकरजी' का ट्रेडमार्क चित्र अवश्य देखें। ❁





स्वस्तिश्रीजोधपुरनगरीयषट्पलभोपरि सुसंस्कारितग्रहगणितानुसारं

श्रीमन्मुकुटमणीनांश्री १०८ श्रीविक्रमराज्यातीत शुभसंवत् २०८२

राष्ट्रीयशाकः १९४७ ईस्वी सन् २०२५–२६ हिजरी सन् १४४६–४७

नीमचनगरस्थराजज्योतिषिभिः पण्डितवर्यभवानीशंकररविशंकर महोदयैः

प्रकाशितं भवानीशंकरीयं निर्णयसागरचण्डमार्त्तण्डपञ्चाङ्गशास्त्रसम्मतम्

❁ भारतीयस्वातंत्र्य संवत् ७८–७९ ☆ श्री जैन महावीर संवत् २५५१–५२ ❁





निर्णयसागरपञ्चाङ्गकार्यालय, नीमच छा.

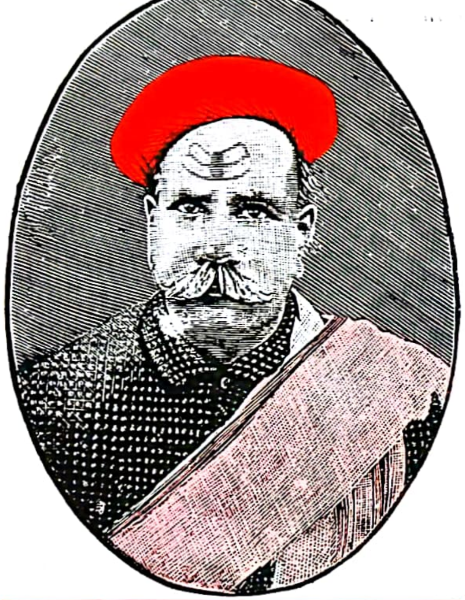
जयति स विक्रमार्को यन्नाम्ना चलति संवतो गणना।
पञ्चाङ्गम् हि तदीयं मान्यतमं भारतादिदेशेषु॥

पञ्चाङ्गम् सुलभं सेव्यं शास्त्रमर्मसमन्वितम्।
निर्णयात्मकं सर्वमान्यं निर्णयसागरसंज्ञकम्॥

卐 शत तुल्य वर्षों से प्रचलित सन्मान्य लोकप्रिय पञ्चाङ्ग ● मूल्य १२०) रु. मात्र 卐

♣ नक्कालों से सावधान ♣ नववर्ष का पञ्चाङ्ग लेते समय मुख पृष्ठ पर पं. श्री रविशंकरजी का स्पष्ट चित्र एवं इन्द्रधनुष सा–सातरंगी–त्रिदर्पणीय ☐ होलोग्राम देख लेवें।

स्व. पण्डित श्री भवानीशंकर शर्मा राजज्योतिषी



निर्णयसागर पञ्चाङ्ग कार्यालय नीमच छावनी

प्रिय ग्राहक महाशय ! इस सुरम्य सृष्टि रचना विधान के साथ ही श्री ब्रह्मदेव ने मनुष्यों के लिए धर्मादि व्यवस्था वर्णन की, उस वर्णित ग्रंथ का सन्नाम 'वेद' है और वेदोक्तधर्म ही मनुष्य मात्र को कर्त्तव्य है। वेद में धर्मादि साधन हेतु काल-तंत्र (समय) का कथन किया गया और उस समय ज्ञान हेतु उन्हीं ब्रह्मदेव ने वेदाङ्ग रूपक ज्योतिष कालशास्त्र का भी निर्माण किया यथा श्रुति सूत्र वचन - **विनैतदखिलं श्रौत स्मार्त्त कर्म न सिध्यति। तस्माज्जगद्धितायेदंब्रह्मणा निर्मितंपुरा ॥** यह ज्योतिर्विज्ञान सिद्धान्त+ संहिता+होरा नामक तीन स्कन्धों में विस्तृत वर्णित है, परन्तु काल ज्ञान सिद्धांत संभाग से समुत्पन्न होता है। सिद्धांत के बहुविध ग्रंथ आगमकाल से प्रचलित है, तदनुरूप फलाशय उपकरण तथ्य भी न्यूनाधिक अन्तरांश में विदित हो पाते हैं एवं जनसाधारण में सहज विभ्रम भी बन पाता है, परन्तु आपका यह लोकप्रिय **'निर्णयसागर चण्डमार्त्तण्ड पञ्चाङ्ग'** शत तुल्य वर्षों से सारगर्भित ग्रह-गति उपकरण, अनुसन्धान, अनुभवाऽगत तथ्ययुक्त गणना नियामक से कालांश निर्णय कर निर्मित होता है एवं जन समाज के धर्मादिक कृत्य तथा अन्य विविध काल निर्णय तथा मानवीय गृहस्थ्य धर्म के नित्योपयोगी कार्य प्रसाधना गणना प्रतिफल हेतु अनुभवसिद्ध भी चरितार्थ बना है, यह विषय सर्वविदित स्पष्ट है। ❊ सम्प्रति हमारे इस भारत विख्यात सर्वदेशीय पंचाङ्ग की अधिक सन्मान्यता तथा प्रचार-प्रसार को देखकर लघुमानस ईर्ष्या विदग्ध कतिपयजन विभिन्न प्रकार की विभ्रामक धारणा प्रस्तुत कर स्वयं को निष्णात शुद्ध सम्पन्न पंचाङ्ग से उद्घोषित करते हैं। यह उनकी व्यक्तिगत समझ है हमारा सत्य सन्मार्ग ध्रुववत् शाश्वत है। हमारे पंचाङ्ग के मानद ग्राहकगण इन सारहीन प्रचार से विचलित होने वाले नहीं, क्योंकि नीति वचन भी है कि - **"खलो मृगयते दोषं गुणपूर्णेषु वस्तुष" पुनरपि - क्रमेलकः केलिवनं प्रविश्य निरीक्षतेकण्टकजालमेव"** तदर्थ भावार्थ गुणज्ञ-विज्ञजन स्पष्ट ही समझेंगे। हमारा यह जोधपुरी नित्यकर्म-धर्मकृत्योपयोगी पंचाङ्ग **जोधपुर अक्षांश २६।१९ उत्तर तथा रेखांश ७३।४ पूर्व** स्थितिवत् सर्वसाधारण एवं पण्डितवर्ग की उपयोगिता को दृष्टिगत रखते हुए निर्मित होता है। यह **निर्णयसागर पंचांग** स्वनामधन्य तुल्य भारतवर्ष में ही क्या ?

प्रारम्भिक विज्ञापना

भारत से बाह्य अन्य राष्टों में भी विभिन्न जनसमुदाय श्रीधर्माचार्य श्रीधर्मसंघ तथा कालांश-निर्णायक विज्ञ पण्डितजनों आदि से व्यवहार में लाया जाता है। ट्रिनीडाड एकेडमी आफ हिन्दूज-वेस्टइण्डीज ने तो विशेष मान्यता प्रदान कर मानद सर्टिफिकेट प्रमाण पत्र भी प्रेषित किया है। यह इस निर्णय सागर पंचाङ्ग की शुद्धता एवं गणना प्रामाणिकता का सुस्पष्ट प्रमाण है। **सर्वसाधारण हेतु**

✿ पंचाङ्ग अभिज्ञान अवलोकन विधि ✿

भारतीय पंचाङ्ग के प्रमुख ५ अंग होते हैं। अतः पंचाङ्गसंज्ञक कहलाता है, यथा-**तिथिवार्श्च नक्षत्रं योगः करणमेव च। एतैः पंचभिरंगै संयुतं पंचाङ्गमुच्यते ॥** एवमेव प्रकारान्तरेऽपि सूत्रम् - **तिथिर्वासिरनक्षत्रे योगः करणमेव च इति पंचाङ्गमाख्यातं व्रतपर्वनिदर्शकम् ॥** तिथि १ भाग, वार २ भाग, नक्षत्र ३ भाग, योग ४ भाग तथा करण ये पांच विभाग हैं। **❊ प्रथम १ भाग-तिथि-तत्व ❊ सूर्यचन्द्रयोर्या स्थितिःसा एव तिथिः** अमावस्या के अन्त पर सूर्य चन्द्र दोनों एक समान राशि अंश पर रहते हैं, तथा शीघ्र गतिमान चन्द्रमा का जब सूर्य से क्रमिक १२ अंशों का अन्तर सिद्ध होता है, उस कालांश अन्तरांश को प्रतिपदा, १२ से २४ अंशान्तर को द्वितीया एवमेव क्रमशः २४ से ३६ अंशान्तर के बनते तृतीया तिथि सिद्ध होकर अग्रिम क्रमिक रूप से १२-१२ अंश पर तिथि क्रम वृद्धिशील रहते १६८ से १८० अंशान्तर पर पूर्णिमा का स्वरूप प्रत्यक्ष प्रतीत होता है तथा १८० अंश के अन्त से १६८ अंश तक १२ अंश न्यूनान्तर बनते कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा, १६८ अंश से १५६ अंश तक १२ अंश न्यूनान्तर होते कृष्णपक्ष की द्वितीया तिथि इसी प्रकार न्यूनान्तर होते-होते १२ मे ० शून्य अंशान्तर पर ३० अमावस्या तिथि का स्वरूप बनेगा। **प्रतिपदा-द्वितीया-तृतीया-चतुर्थी-पंचमी-षष्ठी-सप्तमी-अष्टमी-नवमी-दशमी-एकादशी-द्वादशी-त्रयोदशी-चतुर्दशी और पूर्णिमा १५ शुक्ल पक्षीय तिथि तथा पुनः प्रतिपदा से क्रमशः चतुर्दशी अमावस्या 30 संज्ञक ये कृष्णपक्ष की तिथि मानी जाती है ❊ पक्ष संज्ञा ❊** १ चान्द्र मास में २ पक्ष होते हैं, पहला शुक्ल पक्ष १ से १५ पूर्णिमा तक पुनः कृष्णपक्ष १ से ३० अमावस्या तिथि तक। **❊ द्वितीय २ भाग वारों का विज्ञान ❊** एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय के पूर्वसमय को वार माना है। वार प्रवृत्ति सूर्योदय से ही क्रमशः **रवि-सोम-मंगल-बुध-गुरू शुक्र-शनि** आदि ७ वार क्रमशः चलते हैं। अंग्रेजी दिनांक अर्द्धरात्रि १२।० से बदल जाती है, परन्तु वार प्रवृत्ति सूर्योदय से ही मान्य होती है। **क्षयवृद्धि सूत्र** १ तिथि का मान २ सूर्योदयकाल में स्पर्श करें तो वह वृद्धि तिथि तथा १ ही तिथि का मान प्रथम सूर्योदय से द्वितीय पूर्व ही पूरक हो जावे तो वह क्षय तिथि बनती है। यही नियामक क्षय वृद्धि स्थिति का नक्षत्र-योगों के उपकरणों हेतु भी मान्य रहता है। **❊ तृतीय३ भाग - नक्षत्रनिर्णय ❊** आकाश ३६० अंशों का गणनागत मान्य है, तथा समस्त भचक्र को २७ भागों में विभक्त करने से १३ अंश २० कला अर्थात ८०० कला का १ क्षेत्र अश्विन्यादि रेवती पर्यन्त २७ नक्षत्रों को भाग मान्य है। **"नक्षरतीति नक्षत्राः"** ये नक्षत्र स्थित बिन्दु मान के हैं, जिस दिन समय को चन्द्रमा पृथ्वी से जिस नक्षत्रपुंज में दिखे उस समय पंचाङ्ग में वहीं नक्षत्र रहता है। **अश्विनी, भरणी, कृतिका, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, पूर्वाफाल्गुनी,**

स्व. पं. श्री रविशंकर शर्मा



उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ, उत्तराषाढ, श्रवण, घनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, रेवती, ये २७ नक्षत्र क्रमशः हैं। इनमें अभिजित् नक्षत्र का मान उत्तराषाढ नक्षत्र की अन्तिम १५ घटी और श्रवण प्रारंभ की ४ घटी, कुल १९ घटी का मान अभिजित् नक्षत्र का है। १ नक्षत्र में ४ चरण होते हैं, प्रति चरण ३ अंश २० कला तथा १ राशि में ९ चरण का मानक बनता है।

❊ चतुर्थ ४ भाग-योगों के नाम ❊ सूर्य+चन्द्र गति में १३ अंश २० कला का अन्तर होने से १ योग का कालांश बनता है अर्थात् सूर्य की माध्यमिक गति दैनिक १ अंश है और चन्द्रमा की १३ अंश २० कलादि, जिस समय में दोनों मिलकर औसतन १३ अंश २० कला की दूरी आकाश में पार करेंगे, उस कालांश का एक योग नाम बनेगा योग भी २७ होते हैं यथा **विष्कुम्भ, प्रीति, आयुष्मान, सौभाग्य, शोभन, अतिगंड, सुकर्मा, धृति, शूल, गण्ड, वृद्धि, ध्रुव, व्याघात, हर्षण, वज्र, सिद्धि, व्यतिपात, वरियान, परिध, शिव, सि द्ध, साध्य, शुभ, शुक्ल, ब्रह्म, ऐन्द्र, वैधृति** ये २७ योग हैं **❊ पंचम ५ भाग-करण ❊** तिथि के आधे भाग को करण कहते हैं, तिथियों के सूक्ष्म प्रभाव जानने के लिये प्रत्येक तिथि के २ भाग मान्य किये हैं यथा-'**तिथ्यर्धं करणं स्यात**' प्रत्येक भाग की करण संज्ञा है "**सूर्य चन्द्रयोर्मध्ये षद् अंशांतरे करणमेकं**" बव-बालव-कौलव-तैतिल-गर-वणिज-विष्टि (भद्रा) ये ७ चलसंज्ञक तथा **शकुनि-चतुष्पद-नाग-किंस्तुघ्न ये ४ स्थिर करण** एवं भारतीय पंचांग के पांच तत्व। **❊ गणितागत नियामक सूत्र - पूर्ण ६0 घटी की अपेक्षा ❊** तिथि-नक्षत्र-योग आदि का पूर्ण मानक सप्तवृद्धिः दशक्षयः सूत्रानुसार ७ घटी तक वृद्धि तथा १० घटी तक न्यूनता का मान गणितागत मान्य रहता है। **❊ निर्णयसागर पंचांग अनुक्रमणिका संकेताक्षर ❊** प्रतिमास पृष्ठों पर इन सभी पंचांग उपकरणों के नाम प्रथमाक्षर-संकेत में दिये हैं तथा घटी-पल रूप में इन सभी के 'समाप्तिकाल' का मान लिखा है। यथा प्रतिपदा १० घटी २० पल है तो यहां तक प्रतिपदा रहते, १० घटी २० पल बाद द्वितीया प्रारंभ होगी। तिथि तथा नक्षत्रादिक घटी पल मान के साथ ही घन्टा मिनिट स्टे.टाइम भी दिया गया है। गणना स्पष्टार्कोदयकालिक समझें। एवमेव नक्षत्र-योग-करण हेतु भी क्रिया जानें। चैत्रशुक्ल प्रतिपदा से नवीन विक्रमवर्ष प्रारंभ होता है। प्रतिमास पृष्ठ पर प्रथम कोष्ठक रवियोग विशेष दिवस + आनन्दादि योग का है। फिर क्रमशः तिथि वार कोष्ठक तथा घटी पल मान तथा घण्टा मिनिट समय, अग्रिम कोष्ठ क्रमशः नक्षत्र घटी पल तथा घण्टा मिनिट मानक तथा योग करणों के केवल घटी पल मानों का ही है। अग्रिम कोष्ठ से दिनमान घटी पल मानक तथा अग्रिम कोष्ठ रवि उदय-रवि अस्तकाल जो कि स्टैण्डर्ड समयानुसार दिये हैं। बं.मु.भा.कोष्ठ क्रमशः बंगला-मुस्लिम चांद तारीखें-भारतीय शाके तारीखों के हैं इनसे अग्रिम दैनिक चन्द्रराशि प्रवेश प्रारम्भ समय घटी पलों में तथा स्टे.घण्टा मिनिट में भी है व आगे का कोष्ठ दैनिक प्रातः सूर्य स्पष्ट तथा निम्न कोष्ठ सूर्य दैनिक कला विकला गति का है। इससे आगे कोष्ठ ता. यह अंग्रेजी सन् तारीखों का स्पष्ट है। पुनः अग्रिम सीध में सभी सम्प्रदाय वर्ग के सर्वा.अर्थात् सर्वार्थ सिद्धि योग और अमृत अर्थात् अमृतसिद्धि योग विशेष समय-ग्रहनक्षत्र-राशि संचार ग्रह उदयास्त आदि खगोल विचारक प्रस्तुत हैं। नीचे प्रति पाक्षिक ८-१५-३० तिथि की ग्रहकुण्डली तथा नवग्रहों की स्पष्टता सूर्योदयकालिक ०।० इष्टकाल की है। साथ ही ग्रहगोचर फलश्रुति-मासिक संक्रान्तिफल की भी रचना प्रस्तुत है। हमें आशा है कि हमारे मानद ग्राहकवर्य आजकल की नवीन प्राचीन गणित रचना एवं असली-नकली छाप इत्यादि विज्ञापना संकेतों से विभ्रमित नहीं होते, वर्षों से अनुभवाऽगत-व्यवहार-सिद्ध यथा नाम तथा गुणद-फलद "निर्णयसागरीयपंचांग" को ही पूर्वानुसार स्वीकार करते प्रोत्साहित करेंगे। हमारे पंचांग के सद्प्रकाशन हेतु तथा नक्कालों के असद् अनैतिक प्रकाशन कार्य हित सुरक्षा संरक्षा के लिये भारत सरकार ट्रेड विभाग द्वारा पंचांग पंडित भवानीशंकर रविशंकर शर्मा, नीमच छावनी (म.प्र.) का ट्रेडमार्क नं. २५३८२८ क्रम से रजिस्टर्ड किया है। एवमेव गणितागत सम्पादन-कलाकार्य तथा सारिणी विविध चित्रादि मुखपृष्ठ हेतु कापीराइट नं.एल ४६२९-३०-६९ से प्रमाणित किया गया है। एवं नियामक अधिसूचना सर्वसाधारण जनसमुदाय-विचारशीलगण हेतु सुस्पष्ट है।

▲ पञ्चाङ्ग विषयक-पर्व तिथि संज्ञा सूत्र ▲

नक्षत्रग्रहयोगेन भेदाः कालस्य नैकधा। तज्ज्ञानं ज्यौतिषात् तस्मात् कालतन्त्रमपीरितम् ॥
आकाशस्थानि सर्वाणि नक्षत्राणि ग्रहास्तथा। ज्योतिः शब्देन कथ्यन्ते तज्ज्ञानं ज्यौतिषं स्मृतम् ॥

❊ मन्वादिसंज्ञातिथयः ❊ चैत्र शुक्ल की ३-१५ ♣ ज्येष्ठ शुक्ल की १५ ♣ आषाढ शुक्ल की १०-१५ ♣ श्रावण कृष्ण की ८-३० ♣ भाद्रपद शुक्ल की ३ ♣ आश्विन शुक्ल की ९ ♣ कार्त्तिक शुक्ल की १२-१५ ♣ पौष शुक्ल की ११ ♣ माघ शुक्ल की ७ ♣ फाल्गुन शुक्ल की १५ ♣ इस प्रकार की १४ मनुओं की ❊ मन्वादि ❊ तिथि संज्ञा। ◆ **युगएवंयुगादितिथिसंज्ञा** ◆ वैशाख शुक्ल तृतीया-त्रेता युगादि। आश्विन कृष्ण त्रयोदशी-कलियुगादि। कार्तिक शुक्ल नवमी कृत-सत्य युगादि, माघ कृष्ण अमावस्या-द्वापर युगादि।

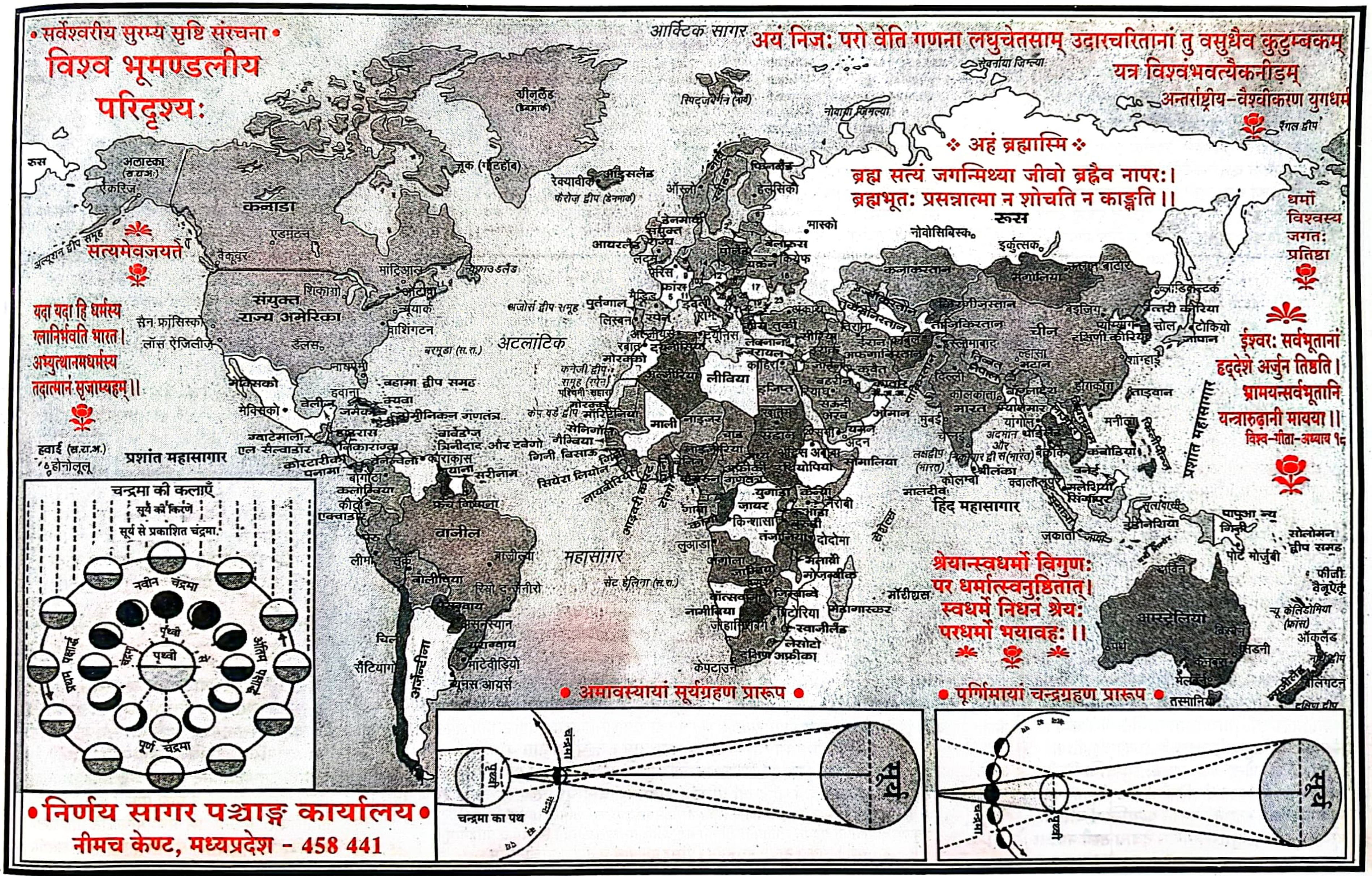
❊ कल्पादि-कल्प तिथि संज्ञा ❊ चैत्र शुक्ल १-५ तिथियां कल्पादि। वैशाख शुक्ल ३। मार्गशीर्ष शुक्ल ९। माघ शुक्ल १३। चैत्र कृष्ण ३ कल्पादि। **❊ प्रतिफल ❊** इन तिथियों में दान-पुण्य-स्नान का विशेष अक्षय संज्ञा का महत्व है। उपर्युक्त तिथ्यादि में किया गया दान-पुण्य-स्नानादि कृत्य अनन्त पुण्यफल प्रदाता **❊ तिथियों के स्वामी-अधिपति ❊** प्रतिपदा-अग्नि, २-ब्रह्मा, ३-पार्वती, ४-गणेश, ५-सर्पनाग, ६-कार्त्तिकेय, ७-सूर्य, ८-शिव, ९-दुर्गा, १०-यमराज, ११-विश्वदेव, १२-विष्णु, १३-कामदेव, १४-शिव, पूर्णिमा-चन्द्र, अमावस्या-पितर-पितृदेव।

पञ्चाङ्ग शास्त्रीय-विषय अनुक्रमणिका

सारगर्भित चन्द्र-फल सारावली सूत्र

भारतीय ज्योतिर्विज्ञान के अन्तर्गत नवग्रहों के मध्य "चन्द्रमा" का महत्व अपना निज वैशिष्ट-विशेषकर संज्ञा का मान्य है। सभी भारतीय फलित अन्वेषकों ने चन्द्रमा को मन का कारक पूर्णतया मान्य किया है। ✦ चन्द्रमा मनसोजातःचक्षुसूर्योअजायत् ✦ यह मूलसूत्र चन्द्रमा की उत्पत्तिकाल पुरुष अथवा विराट पुरुष के मन से चरितार्थ बनी-यह सर्वसम्मत विषय है। सर्वविदित अनुभव में आता है कि मनुष्य की 'मानसिक स्थिति' पर चन्द्रमा का प्रभाव स्पष्ट प्रतीत होता है। चन्द्रमा की क्षय-वृद्धि के साथ मनुष्य की मानसिक स्थिति में परिवर्तन होता है। उन्माद रोग से पीड़ित व्यक्तियों पर चन्द्र की वृद्धि-क्षय रचना का प्रभाव मानसिक रोगों के चिकित्सक-डाक्टरों ने अनुभव किया है। चन्द्र को माता का स्थान एवं सूर्य को आत्मा का स्थान मान्य है। 'कालात्मा दिनकर मनश्च हिमगुः' भावार्थ स्पष्ट है काल पुरुष आत्मा सूर्य और चन्द्रमा मन है। भारतीय ज्योतिष में लग्न के समान ही चन्द्र लग्न को भी महत्व इसलिये प्रदान किया कि मनुष्य जीव-जातक के सम्पूर्ण कार्य 'मन की प्रेरणा' से ही होते हैं। सूत्र वचन भी है कि 'इन्द्रियाणां मनो नाथः' इन्द्रियों का स्वामी भी मन है। मनुष्य की मनोस्थिति का पता उसकी कुण्डली में जन्मकालीन चन्द्र की स्थिति से 'आत्मा' का बल सूर्य से और शारीरिक विचार लग्न से होता है। मूल कथन यह भी कि सूर्य हृदय उच्च भावना-प्रकृति-व्यक्तित्व स्वभाव का सूचक। एवमेव चन्द्रमा मस्तिष्क, मन इन्द्रियां अन्य मनोविकार संस्कारों का सूचक। चन्द्रमा का प्रभाव पेड़-पौधों, वनस्पतियों पर विशेष बनता है। यह तथ्य विज्ञान सम्मत है। शुक्ल पक्ष में बीजवपन किये पौध तेजी से बढ़ते हैं तथा कृष्ण पक्ष में बोये हुए मन्द गति से बढ़ते हैं। ज्वारभाटे के रूप में चन्द्रमा के प्रभाव से सभी विदित हैं। चन्द्र प्रभाव केवल जल पर ही जलीय पदार्थों और जन्तुओं पर भी प्रत्यक्ष दिखता है। मछलियां अपने अण्डे चन्द्रमा की कलाओं के गणनानुसार देती हैं। शुक्ल पक्ष में मछलियां अधिक पुष्ट होती हैं। पागलपन के रोगियों का उन्माद पूर्णिमा को विशेष बन जाता है एवं स्पष्ट अनुभव मानसविकार के चिकित्सकों द्वारा बनता है। आयुर्वेद में चन्द्रमा की कलाओं और नक्षत्र अनुसार औषध संग्रह करने का तथा निर्माण का विधान भी सर्वविदित है। आचार्य वराह मिहिर प्रदत्त सूत्र 'कुजेन्दु हेतुः प्रतिमासामार्त्तवं ।।' अर्थात् स्त्री जगत में मासिक धर्म की रचना भी चन्द्रमा आधारित है।

चन्द्रमा का मौलिक स्वरूप- 'श्वेत श्वेताम्बरो देवो दशाश्वः श्वेत भूषणः गदा हस्तो द्विबाहश्च विधातव्यो विधुर्द्विजः ।। संस्कृत साहित्य में चन्द्रमा को इन पर्यायवाचिक बहुल नामों से यथा सोम-ग्लौ-उडुपति, इन्दु-मृगांक-अब्ज-शशधर विधु-शशांक-यामिनीश-राकापति-शीतांशु-अब्धिज-हिमकर-अमृत-शुभांशु आदि नामों से भी वर्णन है। ज्योतिष फलित-मुहूर्त आदि गणना में चन्द्रमा को ही मान्य एवं महत्व प्रदान किया है। इसका सरलतम कारण यह पृथ्वी के सबसे निकट पास का तथा परावर्तक संज्ञा का ग्रह है। पृथ्वी के साथ नक्षत्र मण्डल का भ्रमण करते हुए अपने ऊपर गिरने वाली ग्रहों-रश्मियों को पृथ्वी पर परावर्तित करता रहता है। जिसका प्रभाव मनुष्य-पशु-पक्षी-वनस्पति एवं समुद्र के जल पर पड़ना विज्ञानसम्मत सिद्ध हो चुका है। सामान्यतः बली चन्द्रमा मनुष्य की मानसिक स्थिति और स्वास्थ्य को प्रभावशील रखता है। निर्बल चन्द्रमा तन और मन को अस्वस्थ करता है। अतएव सभी शुभ प्रभावी कार्यों की रचना शुभारंभ हेतु प्राथमिकता से चन्द्र बल शोधन करना परमावश्यकीय समझा जाता है। सांसारिक सारे कार्य मनुष्य अपनी मनस्थिति के अनुरूप करता है। उसी से उसका उत्थान-पतन, सुख-दुःख हानि, लाभ रूपी फल प्राप्त होते हैं। भारतीय जनसमुदाय तो सूर्य और चन्द्रमा को केवल आकाशी पिण्ड ही नहीं वरन प्रत्यक्ष देवता मानकर दर्शन अभिवन्दना करते धन्यभागी बनते हैं। मूलतया जन्माक्षर कुण्डली में ६-८-१२ भावों में चन्द्र स्थिति को अशुभ ही माना है। सूर्य चन्द्र-मंगल चन्द्र- बुध चन्द्र-गुरु चन्द्र-शुक्र चन्द्र-शनिचन्द्र-राहुचन्द्र इत्यादि युति योग बनते फलित शास्त्र में शुभाऽशुभ दोनों प्रकार के फलादेश व्यक्त किए हैं। इसमें मूलतया शुभ भाव राशि+उच्च नीच राशि+पापग्रह राशि आदि मित्र सौम्य ग्रह राशि आदि का प्रतिफल। पूर्णतया इन विषयक स्थान भाव राशि का विचार मंथन करते ही प्रतिफल विदित हो पाता है। फलित शास्त्र में चन्द्रजनित "गज केसरी योग" रचना का महत्व विशेष माना गया है। यदि लग्न अथवा चन्द्रमा से गुरु केन्द्र स्थान में हो और शुभ ग्रह दृष्टिशील तथा नीच राशि का शत्रु ग्रही और अस्त म्लान स्थिति का नहीं हो तो पूर्णतया सुखद गजकेसरी योग मान्य बनता है। तथा गुरु चन्द्र की नवम पंचम भाव स्थिति तथा दृष्टि योग भी है तो प्रायः कुफल का नाश बनते सुयोगद-सुफल ही प्राप्त होता है। चन्द्रमा का प्रमुख बल उसका रश्मि-किरण बल है। अतः शुक्ल पक्ष की अष्टमी से कृष्ण पक्ष की पंचमी तक का ही शुभाऽशुभ प्रभावी बन पाता है।


• सर्वेश्वरीय सुरम्य सृष्टि संरचना •
विश्व भूमण्डलीय परिदृश्यः
अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम् उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्
यत्र विश्वंभवत्यैकनीड़म्
अन्तर्राष्ट्रीय-वैश्वीकरण युगधर्म
❖ अहं ब्रह्मास्मि ❖
ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या जीवो ब्रह्मैव नापरः।
ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा न शोचति न काङ्क्षति ।।
धर्मो विश्वस्य जगतः प्रतिष्ठा
सत्यमेवजयते
यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ।।
ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशे अर्जुन तिष्ठति।
भ्रामयन्सर्वभूतानि यन्त्रारुढानी मायया ।।
विश्व-गीता-अध्याय १८
श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः पर धर्मात्स्वनुष्ठितात्।
स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः ।।
आर्कटिक सागर
ग्रीनलैंड
कनाडा
संयुक्त राज्य अमेरिका
अलास्का
रूस
अटलांटिक
प्रशांत महासागर
हिंद महासागर
महासागर
ब्राजील
लीबिया
आस्ट्रेलिया
चीन
मंगोलिया
भारत
चन्द्रमा की कलाएँ
सूर्य की किरणें
सूर्य से प्रकाशित चन्द्रमा
नवीन चन्द्रमा
पूर्ण चन्द्रमा
पृथ्वी
• अमावस्यायां सूर्यग्रहण प्रारूप •
• पूर्णिमायां चन्द्रग्रहण प्रारूप •
सूर्य
चन्द्रमा का पथ
•निर्णय सागर पञ्चाङ्ग कार्यालय•
नीमच केण्ट, मध्यप्रदेश - 458 441

नित्योपयोगी परमेश्वर-स्तवनीय स्तुति सारावली

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते । पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥

श्री विष्णुः प्रियःस्तवन

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं ।
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम् ॥
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं ।
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ॥
गोविन्द गोविन्द हरे मुरारे गोविन्द गोविन्द मुकुन्द कृष्ण ।
गोविन्द गोविन्द रथाङ्गपाणे गोविन्द दामोदर माधवेति ॥
सुखावसाने त्विदमेव सारं दुःखावसाने त्विदमेव गेयम् ।
देहावसाने त्विदमेव जाप्यं गोविन्द दामोदर माधवेति ॥
मङ्गलं भगवान विष्णुः मङ्गलं गरूड़ध्वजः ।
मङ्गलं पुण्डरीकाक्षः मङ्गलायतनं हरिः ॥
मूकं करोति वाचालं पङ्गु लंघयते गिरिम् ।
यत्कृपा तमहं वन्दे परमानन्दमाधवम् ॥
त्वमेव माता च पिता त्वमेव । त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ॥
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव । त्वमेव सर्वं मम देवदेव ॥

♠ सरस्वती सुखदा स्तवन ♠

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता
या वीणावरदण्डमण्डित करा या श्वेतपद्मासना ।
या ब्रह्माच्युतशंकरप्रभृतिभिर्देवै सदावन्दिता
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा॥
शुक्लां ब्रह्मविचारसारपरमामाद्यां जगद्व्यापिनीं
वीणापुस्तकधारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम् ।
हस्ते स्फाटिकमालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थितां
वन्दे त्वां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम् ॥

♠ श्री विश्वेश्वर विराट स्तवन ♠

यं शैवाः समुपासते शिव इति ब्रह्मेति वेदान्तिनो
बौद्धा बुद्ध इति प्रमाणपटवः कर्तेति नैयायिकाः ।
अर्हन्नित्यथ जैनशासनरताः कर्मेति मीमांसकाः
सोऽयं वो विदधातु वांछितफलं त्रैलोक्यनाथो हरिः ॥
यं ब्रह्मा-वरूणेन्द्र-रूद्र-मरूतः स्तुन्वन्ति दिव्यैः
स्तवै-र्वेदैः साङ्गपदक्रमोपनिषदैर्गायन्ति यं सामगाः ।
ध्यानावस्थित-तद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो
यस्यान्तं न विदुः सुराऽसुरगणाः देवाय तस्मै नमः ॥

या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः - पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः ।
श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा - तां त्वां नताःस्म परिपालय देवि विश्वम् ॥
नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः । नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताःस्म ताम् ।
ॐजयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी । दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते ॥
जय त्वं देवि चामुण्डे जय भूतार्तिहारिणी । जय सर्वगते देवि कालरात्रि नमोऽस्तु ते ॥
सर्वमंगलमांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके । शरण्ये त्र्यम्बके गौरी नारायणि नमोऽस्तु ते ॥
या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥
या देवि सर्वभूतेषु चेतनेत्यभिधीयते । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥

जो देवी पुण्यात्माओं के गृह-भवनों में श्री-सिद्ध महालक्ष्मी के रूप से तथा पापात्माओं के गृह-भवनों में अलक्ष्मी-दरिद्रा स्वरूप से, निर्मल पवित्र बुद्धि वाले व्यक्तियों के हृदय में सद्बुद्धि प्रारूप से तथा सद्विचारक कुलीन सज्जनों के हृदय में श्रद्धास्वरूप से एवं सद्कुलोद्भव व्यक्तियों में लज्जा-विनम्रता-क्षमाशीलता-पांत्रता स्वरूप से स्वयं निवास करती हैं। हे देवि ! आप विश्व का प्रतिपालन करें।

सर्वेऽत्र सुखिनः सन्तु सर्वे सन्तु निरामयाः । सर्वे भद्रांणि पश्यन्तु न कश्चिद् दुःखमाप्नुयात् ॥
न त्वहं कामये राज्यं न स्वर्गं न पुनर्भवम् । कामयेदुःखतप्तानां प्राणिनामार्तिनाशनम् ॥
सच्चिदानन्दरूपाय विश्वोत्पत्यादिहेतवे । तापत्रयविनाशाय श्रीकृष्णाय वयं नुमः ॥
आकाशात् पतितं तोयं यथा गच्छति सागरम् । सर्वदेवनमस्कारः केशवं प्रति गच्छति ॥

श्री शिव पञ्चाक्षर स्तोत्रम्

इस जीव-जगत के मध्य नैसर्गिक रूप में चरितार्थ पञ्च ज्ञानेन्द्रिय एवं मन-बुद्धि-अहंकार विषयक अष्ट विकार शमन-सन्तुलन हेतु श्री शिवसाधना-सिद्धि शिवयोग प्रदायक इस स्तोत्र का प्रातः-मध्याह्न-सायं वेला में पठन वाचन योग्य शाश्वत सन्मार्ग है।

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय भस्माङ्गरागाय महेश्वराय । नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय तस्मै 'न'काराय नमः शिवाय ॥
मन्दाकिनीसलिलचन्दनचर्चिताय नन्दीश्वरप्रमथनाथमहेश्वराय । मन्दारपुष्पबहुपुष्पसुपूजिताय तस्मै 'म'काराय नमः शिवाय ॥
शिवाय गौरीवदनाब्जवृन्द सूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय । श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय तस्मै 'शि'काराय नमः शिवाय ॥
वसिष्ठ कुम्भोद्भवगौतमार्य मुनीन्द्रदेवार्चित शेखराय । चन्द्रार्कवैश्वानरलोचनाय तस्मै 'व'काराय नमः शिवाय ॥
यज्ञस्वरूपाय जटाधराय पिनाकहस्ताय सनातनाय । दिव्याय देवाय दिगम्बराय तस्मै 'य'काराय नमः शिवाय ॥
पञ्चाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसंनिधौ । शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ॥

श्रीराम-हनुमान स्तवन सूत्र

आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम् । लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम् ।
रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय वेधसे । रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः ॥
नीलाम्बुजश्यामल कोमलाङ्गम् सीता समारोपितवाम भागम् । पाणौ महासायकचारु चापं नमामि रामं रघुवंशनाथम् ॥
राम रामेति रामेति रमे रामे मनोरमे । सहस्रनाम तत्तुल्यं रामनाम वरानने ॥
अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं दनुजवन कृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम् । सकल गुणनिधानं वानराणामधीशं रघुपतिप्रियभक्तं वातजातं नमामि ॥
मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रीयं बुद्धिमतां वरिष्ठं । वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये ॥
हे राम पुरूषोत्तम नरहरे नारायण केशव । गोविन्द गरुड़ध्वज गुणनिधे दामोदर माधव ॥
हे कृष्ण कमलापते यदुपते सीतापते श्रीपते । वैकुण्ठाधिपते चराऽचरपते लक्ष्मीपते पाहिमाम् ॥
नारायणं निराकारं नरवीर नरोत्तमम् । नृसिंह नागनाथं च तं वन्दे नरकान्तकम् ॥

श्री शंकरः शिवःस्तवन

वन्दे देवमुमापतिं सुरगुरूं वन्दे जगत्कारणम्
वन्दे पन्नगभूषणं मृगधरं वन्दे पशूनां पतिम् ।
वन्दे सूर्य-शशांक-वह्निनयनं वन्दे मुकुन्दप्रियं
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शंकरम् ॥
सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्रीशैले मल्लिकार्जुनम्
उज्जयिन्यां महाकालमोंकारममलेश्वरम् ॥१॥
परल्यां वैद्यनाथं च डाकिन्यां भीमशंकरम् ।
सेतुबन्धे तु रामेशं नागेशं दारूकावने ॥२॥
वाराणस्यां तु विश्वेशं त्र्यम्बकं गौतमी तटे
हिमालये तु केदारं घुश्मेशं च शिवालये ॥३॥
एतानि ज्योतिर्लिङ्गानि सायं प्रातः पठेन्नरः।
सप्तजन्म कृतं पापं स्मरणेन विनश्यति ॥४॥
ॐकारं बिन्दुसंयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः
कामदं मोक्षदं चैव ॐकाराय नमो नमः ॥

♠ श्रीपाद आचार्य-गुरूवर्य स्तुति ♠

अखण्ड मण्डलाकारं व्याप्तं येन चराऽचरम् ।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः ॥१॥
अखण्डानन्दबोधाय शिष्य सन्तापहारिणे ।
सच्चिदानन्दरूपाय तस्मै श्री गुरवे नमः ॥२॥
अज्ञान तिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया ।
चक्षुरून्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥३॥
गुरूर्ब्रह्मा गुरूर्विष्णुर्गुरूर्देवो महेश्वरः ।
गुरूः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥४॥

♠ श्रीकृष्ण प्रभु स्तवन ♠

कस्तूरीतिलकं ललाटपटले वक्षःस्थले कौस्तुभं
नासाग्रे नवमोक्तिकं करतले वेणुं करे कंकणम् ।
सर्वाङ्गे हरिचन्दनं सुविमलं कण्ठे च मुक्तावलीं
गोपस्त्रीपरिवेष्टितो विजयते गोपालचूड़ामणिः ॥
करारविन्देन पदारविन्दं मुखारविन्दे विनिवेशयन्तम् ।
वटस्य पत्रस्य पुटे शयानं बालं मुकुन्दं मनसा स्मरामि ॥
गोपालबालं भुवनैकपालं संसारमायामति मोहजालम् ।
यशोविशालं शिशुपालकालं बालं मुकुन्दं मनसा स्मरामि ॥



▲❖▲ वार्षिक प्रमुख व्रतोत्सव निर्णय–परिपत्र संवत् २०८२ सनाब्द २०२५–२०२६ ई. पञ्चाङ्गे निर्णयसागरे ▲❖▲

♠**संकेत सूत्रावली**– भारत सरकार मान्य अवकाश की जगह ▲ इस चिह्न का प्रयोग किया गया है तथा वर्ष में समस्त रविवार तथा प्रत्येक मास के द्वितीय शनिवार को भी शासकीय अवकाश रहेगा। इस चिह्न ❖ का अवकाश सर्वत्र मान्य नहीं, जिलाधीश महोदय की अनुज्ञा से वैकल्पिक मान्यता है। तथा चन्द्रदर्शन विभेद से मुस्लिम त्यौहारों में एक दिन का विशेषान्तरीय अवकाश भी मान्य हो सकता है। इस चिह्न ● का अवकाश केवल ट्रैजरी तथा बैंक विषयक है। निर्णय सागर पञ्चाङ्ग कार्यालय – नीमच (म.प्र.)

व्रतपर्वादिक	दिनांक-माह-वार
चैत्री नवरात्री प्रारंभ	३० मार्च रवि
चेटीचन्द श्री झूलेलाल जन्म	३० मार्च रवि
▲इदुलफ़ित्तर–मीठी ईद मुस्लिम	३१ मार्च सोम
श्री मत्स्य जयंती	३१ मार्च सोम
गणगौर पूजा – मेला पर्व	३१ मार्च सोम
चैत्रीय दुर्गाष्टमी पूजा	०५ अप्रैल शनि
▲श्री राम ज.–दुर्गा नवमी पूजा	०६ अप्रैल रवि
▲श्री महावीर जयंती – जैन	१० अप्रैल गुरु
श्री हनुमान जयंती पर्व	१२ अप्रैल शनि
श्री खालसा ज.–वैशाखी पर्व	१३ अप्रैल रवि
▲डॉ अम्बेडकर जन्म १३४वां	१४ अप्रैल सोम
वल्लभाचार्य जयंती – वैष्णव	२४ अप्रैल गुरु
❖श्री छत्रपति शिवाजी जन्म	२९ अप्रैल मंगल
श्री परशुराम जयंती दशावतारे	२९ अप्रैल मंगल
अक्षय तृतीय – आखातीज	३० अप्रैल बुध
श्री आद्यशंकराचार्य जयंती	०२ मई शुक्र
श्री सूरदास जन्मोत्सव	०२ मई शुक्र
श्री रामानुजाचार्य जयंती	०२ मई शुक्र
श्री नृसिंह जयंती पर्व मेला	११ मई रवि
श्री कूर्म जयंती – दशावतारे	१२ मई सोम
▲पीपल पूनम बुद्ध जयंती	१२ मई सोम
रोहिणी रवि तपन काल प्रारंभ	२५ मई रवि
वट सावित्री अमावस्या पूजा	२६ मई सोम
श्री शनि जयंती – पर्व दिवस	२७ मई मंगल
श्री महाराणा प्रताप जयंती	२९ मई गुरु
श्री महेश नवमी – महेश्वरी वंशे	०४ जून बुध
विश्व पर्यावरण दिवस	०५ जून गुरु
श्री गंगा दशहरा स्नान पर्व	०५ जून गुरु
निर्जला एकादशी व्रत पर्व	०६ जून शुक्र
▲बकरीद – ईदुज्जुहा मुस्लिम	०७ जून शनि

मृगशिरा रवि वायु प्रवाह लक्षण	०८ जून रवि
वट सावित्री व्रत–दिनत्रय पूर्ण	१० जून मंगल
❖श्री कबीर जयंती पर्व	११ जून बुध
वर्षा ऋतु प्रा., विश्व योग दिवस	२१ जून शनि
आर्द्रायां रवि प्रवेश	२२ जून रवि
❖आषाढ़ी गुप्त नवरात्री प्रारंभ	२६ जून गुरु
❖श्री जगन्नाथ रथ यात्रा	२७ जून शुक्र
भड़ली नवमी पर्व तिथि	०४ जुलाई शुक्र
देवशयनी एकादशी व्रत	०६ जुलाई रवि
▲मोहर्रम ताजिया मुस्लिम	०६ जुलाई रवि
श्री गुरु पूर्णिमा पूजा पर्व	१० जुलाई गुरु
नागपंचमी राजस्थानी	१५ जुलाई मंगल
श्री बाल तिलक जयंती	२३ जुलाई बुध
श. चन्द्रशेखर आजाद जन्म	२३ जुलाई बुध
❖हरियाली अमावस्या पर्व	२४ जुलाई गुरु
❖श्रावण तीज – झूला तीज	२७ जुलाई रवि
नागपंचमी देशाचारीय	२९ जुलाई मंगल
श्री कल्की जयंती – दशावतारे	३० जुलाई बुध
गोस्वामी तुलसीदास जयंती	३१ जुलाई गुरु
▲रक्षाबंधन श्रावणी पर्व	०९ अगस्त शनि
कज्जली सातू तीज–व्रत पर्व	१२ अगस्त मंगल
बहुला भादवा चतुर्थी व्रत	१२ अगस्त मंगल
हलचन्दन षष्ठी व्रत	१४ अगस्त गुरु
▲रा. स्वतंत्रता दिवस ७९वां	१५ अगस्त शुक्र
▲श्रीकृष्ण ज.–जन्माष्टमी व्रत	१५ अगस्त शुक्र
श्री गोगानवमी	१७ अगस्त रवि
बछबारस गौ सेवा संकल्प	२० अगस्त बुध
श्री पर्युषण पर्व प्रा. श्वे. जैन	२० अगस्त बुध
सती पूजा अमा.– अग्रवंशे	२३ अगस्त शनि
श्री वराह जयंती–दशावतारे	२५ अगस्त सोम
हरितालिका व्रत	२६ अगस्त मंगल

श्री गणेश ज.	२७ अगस्त बुध
संवत्सरी पर्व श्वे.जैन चतुर्थी पक्ष	२७ अगस्त बुद्ध
ऋषिपंचमी पर्व	२८ अगस्त गुरु
पर्युषण पर्व प्रा. दिगंबर जैन	२८ अगस्त गुरु
बलदेव – हल– मोर छठ	२९ अगस्त शुक्र
श्रीराधा रानी अष्टमी पर्व	३१ अगस्त रवि
श्री दधीचि जयंती	३१ अगस्त रवि
श्री भागवत सप्ताह प्रारंभ	०१ सितम्बर सोम
श्री चन्द्र नवमी उदासीन	०१ सितम्बर सोम
मेला श्रीराम देव–तेजा दशमी	०२ सितम्बर मंगल
जल एकादशी फूलडोल पर्व	०३ सितम्बर बुध
श्री वामन जयंती दशावतारे	०४ सितम्बर गुरु
राष्ट्रीय शिक्षक दिवस	०५ सितम्बर शुक्र
❖अनंत चतुर्दशी पर्व	०६ सितम्बर शनि
महालय श्राद्धपक्ष प्रारंभ	०७ सितम्बर रवि
विश्वकर्मा पूजा	१७ सितम्बर बुध
सर्व पितृ अमावस्या तर्पण	२१ सितम्बर रवि
शारदीय नवरात्री प्रारंभ	२२ सितम्बर सोम
श्री अग्रसेन जयंती ५१४९वीं	२२ सितम्बर सोम
शहीद भगत सिंह जन्म	२८ सितम्बर रवि
● बैंक अर्द्धबंदी, दुर्गाष्टमी	३० सितम्बर मंगल
दुर्गानवमी पूजा	०१ अक्टूबर बुध
❖श्री गाँधी, लाल ब.शास्त्री ज.	०२ अक्टूबर गुरु
▲विजय दशमी – दशहरा पर्व	०२ अक्टूबर गुरु
शरद पूर्णिमा महोत्सव–क्षीरपान	०६ अक्टूबर सोम
पाराशर ऋ.ज., श्रीवाल्मी.ज.	०७ अक्टूबर मंगल
राष्ट्रीय वायु सेना दिवस	०८ अक्टूबर बुध
सौभाग्य करक करवा चतुर्थी व्रत	१० अक्टूबर शुक्र
अहोई अष्टमी पूजा पर्व	१३ अक्टूबर सोम
धनतेरस + धनवन्तरी जयंती	१८ अक्टूबर शनि
नरक चतुर्दशी निमित दीपदान	१९ अक्टूबर रवि

रूप चतुर्दशी अरुणोदय स्नान	२० अक्टूबर सोम
▲महालक्ष्मी पूजा दीपावली	२१ अक्टूबर मंगल
श्री महावीर स्वामी निर्वाण	२१ अक्टूबर मंगल
महर्षि दयानंद पुण्य १४२वां	२१ अक्टूबर मंगल
▲अन्नकूट गोवर्धन पूजा	२२ अक्टूबर बुध
भाईदूज + चित्रगुप्त पूजा	२३ अक्टूबर गुरु
संयुक्त राष्ट्रीय दिवस	२४ अक्टूबर शुक्र
सौभाग्य लाभ पंचमी	२६ अक्टूबर रवि
सूर्यषष्ठी – डालाछठ	२७ अक्टूबर सोम
गोपाष्टमी – गौ सेवा संकल्प	३० अक्टूबर गुरु
देवप्रबोधिनी एकादशी	०१ नवम्बर शनि
बैकुण्ठ चतुर्दशी	०४ नवम्बर मंगल
▲श्री गुरुनानक जयंती	०५ नवम्बर बुध
श्री पुष्करराज स्नान मेला	०५ नवम्बर बुध
श्री निम्बार्क जयंती	०५ नवम्बर बुध
श्री कालभैरव अष्टमी	१२ नवम्बर बुध
श्री नेहरू जन्म दि.–बाल दि.	१४ नवम्बर शुक्र
श्री गीता जयंती पर्व	०१ दिसम्बर सोम
राष्ट्रीय नौसेना, जलसेना दिवस	०४ दिसम्बर गुरु
श्री गुरु दत्तात्रय जयंती	०४ दिसम्बर गुरु
राष्ट्रीय सशस्त्र सेना दिवस	०७ दिसम्बर रवि
श्रीपार्श्वनाथ जयंती – जैन	१४ दिसम्बर रवि
धनु संक्रांति मलमास प्रारंभ	१५ दिसम्बर सोम
राष्ट्रीय किसान दिवस	२३ दिसम्बर मंगल
▲ईसा जन्म – क्रिसमस डे	२५ दिसम्बर गुरु
▲गुरु गोबिन्द सिंह जन्म	२७ दिसम्बर शनि
ईस्वी नव वर्ष २०२६ प्रारंभ	०१ जनवरी गुरु
माघी संकष्ट चतुर्थी व्रत	०६ जनवरी मंगल
श्रीरामानन्दाचार्य जयंती	०९ जनवरी शुक्र
स्वा.विवेकानंद जन्म–युवा दि.	१२ जनवरी सोम
❖लोहड़ी पर्व पंजाब	१३ जनवरी मंगल

❖मकर संक्रांति पर्व पुण्य	१४ जनवरी बुध
राष्ट्रीय थल सेना दिवस	१५ जनवरी गुरु
माघी गुप्त नवरात्री प्रारंभ	१९ जनवरी सोम
नेताजी सुभाषचंद्र जन्म	२३ जनवरी शुक्र
श्री सरस्वती जयंती–बसंत पंचमी	२३ जनवरी शुक्र
श्रीनर्मदा जयंती स्नान पर्व	२५ जनवरी रवि
▲राष्ट्रीय गणतंत्र दिवस ७७वां	२६ जनवरी सोम
श्री गाँधी पुण्य दिवस	३० जनवरी शुक्र
श्री विश्वकर्मा जयंती	३१ जनवरी शनि
श्री रामस्नेही जयंती शाहपुरा	३१ जनवरी शनि
गुरु रविदास जयंती ६१३वीं	०१ फरवरी रवि
▲श्री महाशिवरात्रि पर्व	१५ फरवरी रवि
स्वामी दयानंद बोधोत्सव	१६ फरवरी सोम
फुलेरा दूज	१९ फरवरी गुरु
श्री रामकृष्णपरमहँस जयंती	१९ फरवरी गुरु
रमजान – पाक रोजे शुरू	१९ फरवरी गुरु
श्री दादूदयाल जयंती	२४ फरवरी मंगल
श्री खाटूश्याम जी मेला प्रारंभ	२७ फरवरी शुक्र
राष्ट्रीय विज्ञान दिवस	२८ फरवरी शनि
होलिका दहन पर्व	०२ मार्च सोम
▲छारंडी वसंतोत्सव	०३ मार्च मंगल
श्री चैतन्य महाप्रभु जयंती	०३ मार्च मंगल
वि. महिला दि., श्री रंग पंचमी	०८ मार्च रवि
शील रंग सप्तमी	१० मार्च मंगल
शीतला अष्टमी–बासोड़ा	११ मार्च बुध
श्री केशरियाजी मेला जैन	११ मार्च बुध
श्री दशामाता व्रत पूजा	१३ मार्च शुक्र
रंग तेरस	१७ मार्च मंगल
चैत्री अमावस्या विक्रमवर्ष पूर्ण	१९ मार्च गुरु

पञ्चाङ्गं सुलभं सेव्यं शास्त्रीयविधिनिर्मितम्।
निर्णयार्थं जनैर्मान्यं नाम्ना निर्णयसागरम्॥

▲★▲ श्री विक्रम संवत् २०८२ शाके १९४७ मध्ये ग्रहाणां निरयन राशि गतिचार–प्रवेश उदयास्त बोधक परिपत्र–पञ्चाङ्गे निर्णयसागरे ▲★▲



✪ सूर्य निरयन संक्रान्ति ✪

तारीख	राशी	घंटा–मिनिट
१३.४.२५	मेष	२७–२२
१४.५.२५	वृषभ	२४–१२
१५.६.२५	मिथुन	०६–४४
१६.७.२५	कर्क	१७–३२
१६.८.२५	सिंह	२५–५२
१६.९.२५	कन्या	२५–४७
१७.१०.२५	तुला	१३–४६
१६.११.२५	वृश्चिक	१३–३७
१५.१२.२५	धनु	२८–१९
१४.१.२६	मकर	१५–०७
१२.२.२६	कुम्भ	२८–१०
१४.३.२६	मीन	२५–०४

✪ भानु सायन संक्रान्ति ✪

१९.४.२५	वृषभ	२५–२७

• प्रखर ग्रीष्म ऋतु कालांश प्रारंभ •

२०.५.२५	मिथुन	२४–२५
२१.६.२५	कर्क	०८–१२

• रवि दक्षिणायाने वर्षा ऋतु प्रारंभ •

२२.७.२५	सिंह	१८–५९
२२.८.२५	कन्या	२६–०४

• सुखद शरद ऋतु काल प्रारंभ •

२२.९.२५	तुला	२३–४९

• रवि दक्षिणगोलीय गति प्रारंभ •

२३.१०.२५	वृश्चिक	०९–२१

• सुखद हेमंत ऋतु काल प्रारंभ •

२२.११.२५	धनु	०७–०६
२१.१२.२५	मकर	२०–३३

• रवि उत्तरायने – शिशिर ऋतु प्रारंभ •

१९.१.२६	कुम्भ	३१–१५
१८.२.२६	मीन	२१–२२

• ऋतुराज बसंत काल प्रारंभ •

✪ रवि नक्षत्र चार प्रवेश ✪

तारीख	नक्षत्र	घंटा–मिनिट
३१.३.२५	रेवती	१४–००
१३.४.२५	अश्विनी	२७–२२
२७.४.२५	भरणी	१९–११
११.५.२५	कृत्तिका	१३–१८
२५.५.२५	रोहिणी	०९–३१

• रोहिणी तपन परिताप काल प्रारंभ •

८.६.२५	मृगशिरा	०७–१८

• वायु प्रवाह गर्भलक्षण रचना प्रारंभ •

२२.६.२५	आर्द्रा	०६–२०

• वर्षा मानसून संचार सुगति प्रारंभ •

०५.७.२५	पुनर्वसु	२९–४८
१९.७.२५	पुष्य	२९–२२
०२.८.२५	आश्लेषा	२८–०८
१६.८.२५	मघा	२५–५२
३०.८.२५	पूर्वा फा.	२१–४४
१३.९.२५	उत्तरा फा.	१५–४१
२७.९.२५	हस्त	०७–०७
१०.१०.२५	चित्रा	२०–१२
२३.१०.२५	स्वाति	३०–४०

• मानसून वर्षा समापित नक्षत्र •

०६.११.२५	विशाखा	१४–५२
१९.११.२५	अनुराधा	२०–५६
२.१२.२५	ज्येष्ठा	२५–१४
१५.१२.२५	मूल	२८–१९
२८.१२.२५	पूर्वाषाढ़	३०–३०
११.१.२६	उत्तराषाढ़	०८–३६
२४.१.२६	श्रवण	१०–५०
६.२.२६	धनिष्ठा	१४–०५
१९.२.२६	शतभिषा	१८–३४
४.३.२६	पूर्वाभाद्रपद	२४–५५
१८.३.२६	उत्तराभाद्रपद	०९–२१

✪ मंगल राशी प्रवेश ✪

तारीख	राशी	घंटा–मिनिट
२.४.२५	कर्क	२५–२९
६.६.२५	सिंह	२६–०८
२८.७.२५	कन्या	१९–५७
१३.९.२५	तुला	२१–२१
२७.१०.२५	वृश्चिक	१५–४१
६.११.२५	अस्त	२३–५२
७.१२.२५	धनु	२०–१७
१५.१.२६	मकर	२८–२६
२३.२.२६	कुम्भ	११–५०

✪ बुध राशि प्रवेश ✪

तारीख	राशी	घंटा–मिनिट
०६.०४.२५	उदय	२९–२४
०७.०४.२५	मीन–मार्गी	१६–३८
०६.०५.२५	मेष	२८–०६
१५.०५.२५	अस्त	२९–०५
२३.०५.२५	वृषभ	१२–५९
०६.०६.२५	मिथुन	०९–२६
०८.०६.२५	उदय	२०–२३
२२.०६.२५	कर्क	२१–३१
१८.०७.२५	कर्क–वक्री	१०–१४
१८.०७.२५	अस्त	२०–२८
१०.०८.२५	उदय	२९–०७
११.०८.२५	कर्क–मार्गी	१२–५९
३०.०८.२५	सिंह	१६–४१
०२.०९.२५	अस्त	२९–३४
१५.०९.२५	कन्या	११–०७
०२.१०.२५	तुला	२७–४३
०६.१०.२५	उदय	१९–०४
२४.१०.२५	वृश्चिक	१२–३७
०९.११.२५	वृश्चिक–वक्री	२४–३०
१२.११.२५	अस्त	१८–४१
२३.११.२५	तुला	२०–०७
२६.११.२५	उदय	३०–०१
२९.११.२५	तुला–मार्गी	२३–०८
०६.१२.२५	वृश्चिक	२०–४४
२८.१२.२५	धनु	३१–२३
२९.१२.२५	अस्त	२५–३०
१७.०१.२६	मकर	१०–२२
०३.०२.२६	कुम्भ	२१–५२
०८.०२.२६	उदय	१८–१७
२६.०२.२६	कुम्भ–वक्री	१२–१७
२७.०२.२६	अस्त	२७–५५
१४.०३.२६	उदय	१२–४०

✪ गुरु राशी प्रवेश ✪

तारीख	राशी	घंटा–मिनिट
१४.०५.२५	मिथुन	२२–३४
१२.०६.२५	अस्त	२३–२९
०५.०७.२५	उदय	२९–२९
१८.१०.२५	कर्क	१९–४७
११.११.२५	कर्क–वक्री	२१–५१
०५.१२.२५	मिथुन	१७–२४
११.०३.२६	मिथुन–मार्गी	०९–०१

रोहिणी मृगशिरा आर्द्रा पुनर्वसु निम्न ४ नक्षत्रों के मध्य वक्री मार्गी गतिरचना नियामक से गुरु का गोचर चलन–कलन मान्य रहेगा।

✪ शुक्र राशी प्रवेश ✪

तारीख	राशी	घंटा–मिनिट
१३.०४.२५	मीन मार्गी	०६–३२
३१.०५.२५	मेष	११–३२
२९.०६.२५	वृषभ	१४–०९
२६.०७.२५	मिथुन	०८–५६
२०.०८.२५	कर्क	२५–१९
१४.०९.२५	सिंह	२४–१६
०९.१०.२५	कन्या	१०–४७
०२.११.२५	तुला	१३–१४
२६.११.२५	वृश्चिक	११–२२
१५.१२.२५	अस्त	१४–५१
२०.१२.२५	धनु	०७–४५
१२.०१.२६	मकर	२७–५८
०२.०२.२६	उदय	३०–१०
०५.०२.२६	कुम्भ	२५–११
०१.०३.२६	मीन	२४–५७

✪ शनि राशी प्रवेश ✪

तारीख	राशी	घंटा–मिनिट
१३.०७.२५	मीन – वक्री	०९–३८
२८.११.२५	मीन – मार्गी	०९–४५
०८.०३.२६	अस्त	०९–३४

यह विक्रम वर्ष शनि मीन राशी गतिचार से प्रभावशाली रहेगा। नक्षत्रचार नियामक अनुसार पूर्वाभाद्रपद और उत्तराभाद्रपद नक्षत्र के मध्य गतिचार चरितार्थ रहेगा।

✪ राहु–केतु राशी गति ✪

तारीख	राशी	घंटा–मिनिट
१८.५.२०२५	राहू–कुम्भ	१७–१२
१८.५.२०२५	केतु–सिंह	१७–१२

नवीन चैत्री वर्षारंभ से उपरोक्त अंकित तारीख तक राहु–मीन और केतु–कन्या में तथा इसके बाद राहु –कुम्भ और केतु – सिंह राशी विषयक मान्य रहेगा।

✪ चन्द्रदर्शन स्थिति ✪

तारीख	मास	तिथि वार
३०.०३.२५	चैत्र	१ रविवार
२८.०४.२५	वैशाख	१ सोमवार
२८.०५.२५	ज्येष्ठ	२ बुधवार
२६.०६.२५	आषाढ़	१ गुरुवार
२६.०७.२५	श्रावण	२ शनिवार
२४.०८.२५	भाद्रपद	१ रविवार
२३.०९.२५	आश्विन	२ मंगलवार
२३.१०.२५	कार्तिक	२ गुरुवार
२२.११.२५	मार्गशीर्ष	२ शनिवार
२१.१२.२५	पौष	१ रविवार
२०.०१.२६	माघ	२ मंगलवार
१८.०२.२६	फाल्गुन	१ बुधवार

✪ ग्रह गोचर प्रतिफल ✪

शनिवक्र जने पीड़ा–गुरु वक्रे स्थिरो रोगो।। शनिवक्रे महामारी रौरवं च भयं पथि।। धन धान्यं व वस्त्रं च रुण्डमुण्डा च मोदिनी।। यदा जीवयुतोमंदोजीवाद्वा सप्तमेस्थितः।।तदा प्रजा विनश्यंति भूश्चान्न परिक्षयः।। भौम वक्रे अनावृष्टि–बुधवक्रे धनक्षयः।। शुक्र वक्रे सुखी प्रजा।। पाठान्तरेऽपि भौमवक्रे सचिव द्वन्दे गुरुवक्रे सुभिक्षंस्यात्।।

संकेत–यदा कदा दिक्देशान्तर विभेद से १ दिन चन्ददर्शन अन्तरांश बन जाता है एवं मुस्लिम तारीख–त्यौहार में भी १ दिन का यदा–कदा ही अन्तरांश बनना चन्द्रदर्शन स्थितिवश स्वाभाविक है।

पंचांगं सुलभं सेव्यं शास्त्रीय विधिनिर्मितम्। निर्णयार्थां जनैर्मान्यं नाम्ना निर्णयसागरम्।।

ग्रामे ग्रामे पुरे प्रान्ते
प्रचारं यस्य वर्त्तते।
निर्णायकं ही पञ्चाङ्गं
निर्णयसागराभिधम्



♠ **श्रीवर्षफलाऽभिमुखं** – श्रीगणेशाय नमोनमः ♠ श्री विश्वप्रबोधकाय भगवते श्रीभुवनभास्कराय नमोनमः ♠ ज्योतिषक्रस्य केन्द्राय जगत: स्तिथि रुपिणे त्रिनेत्र नेत्र रूपाय ग्रेह्शाय नमो नम: ♠ भवानीशंकरो वन्दे श्रद्धाविश्वास रुपिणौ ♠स्वस्ति श्रीभारतहृदयसम्राट श्रीराष्ट्रपतिमहोदया: ♠येषां सुपल्लविते प्रजा–लोकतंत्रीय विज्यराज्ये ज्योतिर्विद्वर्य श्री पण्डित भवानीशंकर रविशंकर शास्त्री महोदयै: सम्यक् प्रकाशितं विनिर्मितश्च विविधविषयाऽलंकृत ♠ श्री निर्णयसागर पंचांग ♠ सर्वत्र भरतखण्डे परमादरणीयम् ♠ अथास्मिन् विक्रमाब्दे सृष्टितोगताब्दा: **१९५५८८५१२६** एवं चतुर्युगमनेषु कृत–सतयुग प्रमाणं **१७२८000** अस्यां वेलायां श्रीविष्णु मत्स्यकच्छपावराहनृसिंहदी देवानामवतार:। त्रेतायुग प्रमाणं **१२९६000** युगेऽस्मिन् श्रीवामनपरशुराम मर्यादा–पुरुषोत्तम: श्रीरघुसूर्यवंशीय राघवेन्द्र रामचंद्राऽवतार। द्वापरयुग प्रमाणं **८६४000** कालांशेऽस्मिन् षोडशकलावन्त: श्रीयदुचन्द्रवंशीय श्रीकृष्णचन्द्र बलरामयो: अवतार:। कलियुग प्रमाणं **४३२000** तन्मध्ये अहिंसानायक श्री बुद्धाऽवतारऽभवत् तथा च कल्कि अवतार: कलियुगस्य **८२१** वर्षाऽवशेषकाले स्यात्।। सम्प्रति गत्कालिवर्षाणि **५१२६** एवं गणनया भोम्यकलियुगवर्षाणि **४२६८७४** तथा च विविध कालांश विषये श्रीरामरावणयुद्धतो गताब्दखा: **८८0१६७** एवञच श्रीकृष्णाऽवतारतो गताब्दा: **५२५१** कुरुपाण्डवयुद्धतो गताब्दा: **५१२६** एवञच कालक्रमानुगते श्रीविक्रमादित्य राज्यात् संवात **२०८२** राष्ट्रीय शाके **१९४७** तथा च श्रीभारतीयस्वातंत्र्य संवत् **७८–७९** एवञच श्रीभारतीय गणराज संवत् **७६–७७** कालांश गतिक्रम:।

♠ वर्षेऽस्मिन् वर्षेश अधिपति(राजा): **शनि (चैत्र शुक्ल प्रतिपदा प्रवेश वार)** तथा संहितामतान्तरे उपेश(राजा) **सूर्य (चैत्र शुक्ल प्रतिपदा सूर्योदयकालिक वार) (देखे पेज – १२२)** १, मंत्री **सूर्य** : २ , पूर्व अन्नाधिप: सस्येश **बुध** : ३, पच्श्रादन्नाधिप : ध्यानेश **चन्द्र** : ४, मेघेश **सूर्य** : ५, रसेश **शुक्र** : ६, निरसेश **बुध** : ७, फलेश **शनि** : ८ धनेश **भौम** : ९, दुर्गेश **शनि** : १० एते वर्षमध्ये विश्ववृतीय संसदीयविमंडले दशाऽधिकारिण:।।

♠इथं काल गणनानुगते ब्राहस्पत्यमानेन षष्टि अब्दानां मध्य ब्रह्मा –विष्णु–रूद्र शिव विंशतिकायां **श्री सिद्धार्थी** नामकीय संवत्सर **५३** तथा च सौराब्दीय मानत: चैत्र शुक्लपक्ष कालांशत: **श्री रौद्र** नामकीय संवत्सर **५४** गतिशील:।। तथा च संकल्पादौ चैत्री वर्षांत **श्री सिद्धार्थी** संवत्सर: गणनीय:।। सम्प्रति सप्तमवैवस्वद् मन्वंतरकाल:। एवमेव वर्षफलाभिमुखे वर्षनाम **कार्तिक**। चतुर्मेघगणनया मेघनाम **संवर्त** : नवमेघ गणनया मेघनाम **नील**, रोहिणी निवास **संधि**, समय निवास **वैश्य** गृहे संवत् समय वाहन **महिष**: केचिन्मते **अश्व**: संवत् विश्वा १२, आषाढ कृष्णे रोहिणी १३–१४ तिथि मध्ये।। एवं विगणनया – गणितागते स्तंभ चतुष्के चैत्र शुक्ल प्रतिपदायां **रेवती भोग: ४२ घटी**, वैशाख शुक्ले प्रतिपदायां **भरणी भोग : ५0 घटी**, ज्येष्ठा शुक्ल प्रतिपदाया **मृगशिरा भोग : ११ घटी**, आषाढ शुक्ल प्रतिपदायां **पुनर्वसु भोग : १२ घटी एवं गणितागत स्तंभ विषये जल – तृण स्तंभ मान्यता तथा – वायु अन्न – स्तंभस्य अल्पता।** वर्षेऽस्मिन् सोमवती अमावस्या 0, अंगारकीय भौम चतुर्थी १, सोमवती पंचमी १ रविवारीय सप्तमी २, बुधाष्टमी 0, रविवारीय दशमी १ एवं विगणनानुक्रमे शुभाऽशुभ तिथ्यादी रचना मान्यता। ♠ **वर्षेऽस्मिन् संवत २०८२ में भूगोल पर २ सूर्य ग्रहण तथा २ चन्द्र ग्रहण घटित होंगे परन्तु इन में से दोनों सूर्य ग्रहण भारत में दृश्य नहीं होंगे जिसका सूतक लागू नहीं होगा तथा दोनों चन्द्र ग्रहण भारत में दृश्य होंगे जिसका सूतक लागू होगा।।** ♠ शनि दृष्टि: उत्तर, उत्पत्ति विश्वा ९३, खपति विश्वा ९३, अगस्त्य: सिंहाऽक्रस्यसप्तांशे उदयं स्यात्।। संवत् मुहूर्ता ३७५ संवत् दिनानी ३५५, क्षय तिथय: १६, वृद्धि ११, सौभाग्य पंचमी घटिकादय: ५८।। इत्थं वार्षिक गणनानुगते स्पष्टता।।

♣ **वर्षमध्ये विश्वादय:** ♣ वर्षा विश्वा ११, धान्य ११, तृण ५, शीत १३, तेज १७, वायु १३, वृद्धि १५, क्षय १५, विग्रह ११, क्षुधा ११, तृष्णा ९, निंद्रा १५, आलस्य १५, उधम १३, शांति १५, क्रोध १३, दंभ ५, लोभ ३, मैथुन १५, रसनिष्पत्ति ९, फलनिष्पत्ति १३, उत्साह ११, उग्रता १३, पाप १५, पुण्य ५, व्याधि ५, व्यधिनाश ३, आचार ३, अनाचार ९, मृत्यु मरण ७, जन्म १७, देशोपद्रव ७, देशस्वास्थ्य १३, चोरभय ३, चोरभयनाश १३, उद्भिज (वृक्षलताबेलादि) १३, जरायुज (मनुष्य गौ आदि वर्ग) ३ , अण्डज (पक्षी एवं विषजीव) ७, स्वेदज (जूं–खटमल–दीमक–मच्छर आदि कीट) ११ ♠ विश्वाप्रमाणे पूर्णविश्वा २0 अनुपातेन फलादेशो वीजानियात् ♠ तथा च वर्षरक्षार्थे परिपालन–संवर्धनार्थचत्वारि रक्षा–कल्प दुर्गाणि ♠ वैशाखशुक्ले तृतीययां रोहिणी ४९ घटी भावी सुभिक्षार्थे **सुखद** प्रतिफलं। श्रावण शुक्ले पूर्णिमायां श्रवण ५७ घटी उत्पत्ति उत्पादानार्थे **सुखद** प्रतिफलं कार्तिक शुक्ले पूर्णिमायां कृतिका 0 घटी गौ प्रजा बालऽबाल संरक्षण–पोषणर्थे **हानि** प्रतिफलं। पौष कृष्णे अमावस्यायां मूलनक्षत्रीय **२१ घटी सामान्य** प्रतिफलं शीतकलिकं।। एवं चत्वारि वर्षरक्षा दुर्गाणि स्पष्टता एतेषां ६0 घटी मानतो अनुपातेन निर्णयम्। इत्थं वर्षान्तर्गते सौरमण्डलीय ग्रहजनित गोचर–चलनकलनाऽनुसारेण शुभाऽशुभं वर्षफलाऽभिमुखं अनुभूयते।। बालवृद्ध धेनु प्रजायाभाम्यं सुकल्पं सततं सबलं प्रबलमस्ति धर्मो विश्वस्य जगतः प्रतिष्ठा–धर्मो रक्षति रक्षितः।। धर्मेयत्नः सदा कार्यो धर्म एकः सुखावहः धर्मेण पाल्यते सर्वं त्रैलोक्यं सचराचरम्।। ग्रहाः राज्यं प्रयच्छन्ति ग्रहाः राज्यं हरन्ति च। ग्रहैर्व्याप्तमिदं सर्वं त्रैलोक्यं सचराचरम्।। श्रीरस्तु–भारते भारतु भारती।। ♣ **ग्रहशान्ति मंत्र** ♣ ब्रह्मामुरारि त्रिपुरान्तकारीः भानु शशि भूमिसुतोबुधश्च। गुरुश्च शुक्रः शनि राहुकेतवः सर्वे–ग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु।। एवं गणना गणित गतिक्रम पंचांगे निर्णयसागरे नीमच नगरस्थे मध्यप्रदेशे। शुभमिति –

श्रीमानानन्दरूपोऽस्मि रविसूनुः सुनीमचे। गौड़ः पौत्रो भवानीशपंचाननस्य धीमतः

♠ **त्रिपुष्कर + द्विपुष्कर** ♠ तिथि २–७–१२ वार–रवि, मंगल, शनि तथा नक्षत्र – विशाखा, उत्तराफाल्गुनी, पूर्वाभाद्रपद, पुनर्वसु, कृतिका, उत्तराषाढ इन तीनों के योग होने पर त्रिपुष्कर नामक योग होता है। ♠ तथा तिथि – २–७–१२ वार–रवि, मंगल, शनि तथा नक्षत्र – चित्रा, मृगशिरा, घनिष्ठा इन तीनों के योग बनने पर द्विपुष्कर नामक योग गणनानुगत। इन दोनों योगानुयोगों का प्रतिफल मृत्यु + विनाश + वस्तुलाभवृद्धि में त्रिपुष्कर तीन गुना तथा द्विपुष्कर दोगुना फल देता है। इन योगवश लाभ होने पर भावी लाभ और अधिक तथा मृत्यु विनाश होने से और भी हानि विशेष बन पावे एवं शास्त्रीय मान्यता मुहूर्त्त चिन्तामणि शास्त्रग्रन्थ मतानुसार स्पष्टं एवञ्च तदग्रे नीतिसार सूत्राणि।। ♠ ♣ ♠

♣ उषः प्रशस्यते गर्गः शकुनं च बृहस्पतिः। अंगिरा च मनोत्साह विप्रवाक्य जनार्दनः।। गर्गमते सूर्योदय पूर्ववेला, गुरुमते शकुन प्रमाण, अंगिरानुसार मनोत्साह, जनार्दनमते श्रीविज्ञवचन। इत्यादि शास्त्र वचन आवश्यकीय मुहूर्त्त रचना हेतु श्रीकार रहते हैं। ● भाग्यं फलति सर्वत्र न च विद्या न च पौरूषम्। समुद्रमन्थनं प्राप्य, विष्णुर्ललक्ष्मीहरेर्विषम्।। देवदानवगंधर्वाः यक्षराक्षस किन्नराः। पीड्यन्ते ग्रहपीड़ाभिः किं पुनर्भुवि मानवाः।। ● आयुः कर्म च वित्तं विद्या निधनमेव च। पंचेत्यान्नपि सृज्यन्ते गर्भस्थस्यैव देहिनः।। कालः पचति भूतानि कालः संहरते प्रजाः।। कालः सुप्तेषु जागर्ति कालो ही दुरति क्रमः।। वन रणे शत्रुजलाग्निमध्ये महार्णवे पर्वतमस्तके वा।। सुप्तं प्रमत्तं विषमास्थितं वा रक्षन्ति पुण्यानि पुराकृतानि।। यद् दूरं यद्दुराध्य यच्च दूरे अवस्थितम्। तत्सर्वं तपसा साध्यं तपोहि दूरित क्रमम्। इत्थं शास्त्रीय नीति वचन सूत्राणि।



वर्षफलाशय–सूत्रावली – श्रीशंवन्दे–सजयति सिंधुरवदनो–देवोयत्पाद पंकजस्मरणम् । वासरमणिरिवतमसां राशीन्नाशयति विघ्नानाम् ॥ आदित्यो मंत्र संयुक्त आदित्यो भुवनेश्वरः। अदित्यांन्नापरो देवो आदित्यः परमेश्वरः ॥ प्राप्तेनूतनवत्सरे प्रतिगृहे कुर्यात् ध्वजारोपणं स्नानं मंगलमाचरेत् द्विजवरैः सार्ध सुपूजोत्सवम् देवानां गुरुयोषितां च शिशवोऽलंकारवस्त्रादिभिः, संपूज्योगणकः फलं च श्रुणुयात्तस्माच्चलाभप्रदम् ॥ सरस्वतीं च दैवज्ञं पूजयित्वा विनायकं दैवज्ञ मुखतो भक्त्या श्रुणुवर्षफलं मुदा॥

सिद्धार्थ नामकीय संवत्सरे तु – सिद्धार्थवत्सरेभूयोज्ञानवैराग्ययुक्प्रजाः। सकलावसुधाभातिबहुसस्यार्घवृष्टिभिः।।1 ।। एवं **तदग्रेऽपि फलश्रुतिः**– रौद्रेब्देनृपसंभूतक्षोभक्लेशसमन्विते । सततंत्वखिलालोकामध्यसस्यार्घवृष्ट्यः।।2।। **(1) वर्षेश राजा शनिफलं**– शनैश्चरे भूमिपतौ सकृज्जलं प्रभूतरोगैः परिपीड्यते जनः। युद्धं नृपाणां गदतस्कराद्यैर्भ्रमन्ति लोकाः क्षुधिताश्च देशान् ।। उपनायक सूर्यस्य फलं– सूर्ये नृपे स्वल्पफलाश्च मेघाः स्वल्पं पयो गौषुजनेषु पीड़ा। स्वल्पं सुधान्यं फलमल्पवृक्षाश्चौराग्निबाधा निधनं नृपाणाम्।। **(2) मंत्री सूर्यस्तस्यफलं**– नृपभयं गदतोपि हि तस्करात्प्रचुरधान्यधनादि महीतले। रसचयं हि समर्घतमं तदा रविरमात्यपदं हि समागतः।। **(3) सस्येश (पूर्व अंन्नाधिपः) बुधस्तस्यफलं**– जलधरा जलराशिमुचो भृशं सुखसमृद्धियुतं निरुपद्रवम्। द्विजगणः श्रुतिपाठकरः सदाप्रथमसस्यपतौ सति बोधने।। **(4) धान्येश (पश्चादन्नाधिपः) चन्द्रस्तस्यफलं**– चन्द्रेधान्याधिपेजातेप्रजावृद्धिः प्रजायते। गोधूमाः सर्षपाश्चैवगोषुक्षीरं तदाबहु।। **(5) मेघेश सूर्यस्तस्यफलं**– जलदपेयदिवासरपेतदासरसिवैरमतेजनतारसम्। यवचणेक्षुनिवारसुशालिभिः सुखचयंसुलभंभुवि वर्तते।। **(6) रसेश शुक्रस्तस्यफलं**– यजनयाजनकोत्सवकोत्सुकाजनपदाजलतोषितमानसाः। सुखसुभिक्षसु–मोदवतीधराधरणिपा हतपापगणप्रियाः।। **(7) नीरसेश बुधस्तस्यफलं**– चित्रवस्त्रादिकंचैवशंखचंदनपूर्वकम्। अर्घवृद्धिः प्रजायेतनीरसेशोबुधोयदि।। **(8) फलेश शनिस्तस्यफलं**– यदिशनिः फलपः फलहा भवेज्जनित–पुष्पगणस्य दमः सदा। हिमभयंवरतस्करजन्तुभीर्जनपदो गदराशिमहाकुलः।। **(9) धनेश मंगलस्तस्यफलं**– असममौल्यकरोधरणीसुतः शरदितापकरस्तुषधान्यहृत् । सहसिमासिभवेद्द्विगुणंतदानरपतिर्जनशोकविधायकः।। **(10) दुर्गेश शनिस्तस्यफलं** – रविसुतेगढपालिनिविग्रहे सकलदेशगताश्चलिताजनाः। विविधवैरिविशेषितनागराः कृषिधनं शलभैर्मुषितंभुवि।। **वर्षनाम कार्तिकस्तस्यफलं**– सत्यात्पीड़ाकार्तिकेवर्षेवह्नीगावोपजीविनाम्। शस्त्राग्नेश्चभयंवृद्धिः पुष्पकौसुम्भजीविनाम्।। **रोहिणी निवास संधि भागे तत् फलं**– संधिसंस्थंयदाब्राह्मभंजायते। खंडवृष्टिस्तदासर्वधान्याप्तयः।। **समय निवास वैश्यगृहे तत् फलं**– खण्डवृष्टिः सर्वधान्यमहर्घं स्याद् वणिग्वैश्मनी संस्थिते।। **चतुर्मेघ गणनानुसारेण मेघनाम संवर्तस्तस्यफलं**– कामाधिक्यंस्वल्पताधर्मकार्येपृथ्वीपालास्तत्परा नान्यकार्ये। संवर्ताख्योनीरदः स्याद्धियत्रप्रांचो वायुर्वातिसर्वत्रतत्र।। **नवमेघगणनानुगते मेघनाम नील संज्ञकीय**–सत्पयोदिशतिगोकुलपूर्णावस्त्रताखिलमहीपरिपूर्णा। नीलनाम्निजलदेजलवृष्टिर्जायतेसकलमानवतुष्टिः।। स्तम्भ चत्वारेशु– **वायु+ अन्न अल्पता, जल + तृण मान्यता** ♠●♠ **कालेवर्षतुपर्जन्यः पृथिवी सस्यशालिनी देशोऽयं क्षोभरहितो सुप्रजाः सन्तु निर्भयाः। अपुत्राः पुत्रिणः सन्तु पुत्रिणः सन्तुपौत्रिणः। अधनाः सधनाः सन्तु सर्वे सन्तु निरामयाः। शिवमस्तु सर्वजगतः परिहितनिरताः भवन्तुभूतगणाः दोषाः प्रयान्तु नाशं सर्वत्र सुखी भवतु लोकः।। सूर्यशौर्यमथेन्दुरुच्चपदवीं सन्मंगलं मंगलः। सद्बुद्धिं च बुधो गुरुश्च गुरुतां शुक्रः सुखं शं. शनिः।। राहुर्बाहुबलं करोतु विपुलं केतुः कुलस्योन्नतिं। नित्यं प्रीतिकरा भवन्तु भवतां सर्वे प्रसन्ना ग्रहाः।। इत्याशीर्वादादिकं शुभ संकल्प।। एवं बहुविधं संचिन्त्य दैवज्ञैः कथनीयं शुभाऽशुभफलम् एवं मेदिनी संहितान्तर्गते राजावली फलश्रुतिः पंचांगे निर्णयसागरे नीमच नगरस्थे - शुभमिति।।** ♠●♠

卐 श्री भैरव – भवानी सुवाक्यं सूत्रावली 卐



आद्य सनातन शक्ति हो ! जीव जगत प्रतिपाल । विक्रमाब्द अभिनव बना, कहो भुवन के हाल ॥
सुनो देव ! इस वर्ष में, अधिनायक पद काज । शनि देवता मन्दश्री, नेता नायक राज ॥
आतंक द्वन्द्व, हिंसा मति, तृष्णा तंत्र अपार । अदल बदल बहुधा बने, प्रजा तंत्र अभिसार ॥
नीति राज नवचक्र की मुद्रा पंथ प्रभार । जनमानस ले आपदा, ऋतु प्रकोप संसार ॥
मंत्री पद श्री सूर्य का अभिनव पंथ निहार । नेता शासी दलपति, विग्रह विविध प्रकार ॥
सस्य धान्य के श्रीपति, बुध–चन्द्र अधिवर्ष । हरित श्वेत क्रान्ति सबल, कृषि सम्पदा हर्ष ॥
रसाधीश भृगु देवता, बुध नीरस का पक्ष । खनिज सम्पदा देश की, भूमि भारत दक्ष ॥
देव शनि रक्षा पदे, धन नायक श्री भौम । व्यय विशेष की धारणा, मुद्रा मार्ग विलोम ॥
अर्थ तन्त्र चिन्तन गति, विश्व पक्ष अधिभार । फलाधीश शनि देवता, नहीं सुखद संसार ॥
रोहिणी वास संधि भुवन, वर्ष वैश्य का कक्ष । वृष्टि खंड रचना बने, भेद भूमि को लक्ष ॥
नृप फलेश दुर्गेश हो, एकै ग्रह संयोग। कम वर्षा दुर्भिक्ष दुःख, बढ़े प्रजा में रोग ॥
षड़ाष्टकी शनि भौम की, विग्रह विविध प्रकार । यान खान कम्पन्न गति, जन धन क्षति प्रहार ॥
शनि वक्र सावन बदी, बना दुःखद दुर्योग । ऋतु कोप भय आपदा, जन धन क्षति कुयोग ॥
लेख सुलेख लिखे सभी, कोविद करे विचार । निर्णय गणना शास्त्र की, ग्रह गति संसार ॥
धर्म कर्म पर दृढ़ रहो, राष्ट्र सत्व परिवेश । विज्ञ भवानी सुत कहें, मौलिक सूत्र निवेश ॥

♠● लाभ खर्च विवेक २०८२ विक्रमाब्दे एवं सनाब्दे २०२५–२०२६ ई. ●♠

राशि	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
लाभ	१४	०८	११	०५	०८	११	०८	१४	०२	०५	०५	०२
खर्च	१४	०८	०५	०५	१४	०५	०८	१४	०८	०२	०२	०८

♣ **लाभ खर्च विगणना** – अपनी–अपनी राशि अनुसार लाभ खर्च दोनों अंकों का योग कर १ घटावें तथा ८ का भाग देवें। यदि शेष १ रहे तो वर्ष में लाभ, २ में सुख शान्ति, ३ में क्लेश, ४ में रोग–शोक, ५ में अपयश, ६ में मानद जीवन, ७ में विजय लाभ, तथा ८ या 0 शेष रहते कुयोग नेष्ट फलसूचक। इसे भी विशेषकर अपनी जन्मराशि में गोचर दिन दशा का मनन करना भी योग्य विषयक सूत्र रचना समझना चाहिए।

♣ **सुभिक्षदुर्भिक्ष परिज्ञान सूत्र** – प्रभवादि संवत्सर क्रम से वर्तमान वत्सर संख्या में दो का गुणा करें ३ घटावें तथा ६ का भाग देवें शेष १ – ४ से दुर्भिक्ष, ५ – २ से सुभिक्ष, ३ – ६ शेष में साधारण फल, 0 शेष अशुभफल * अन्य नियम – विक्रम वर्ष की संख्या ३ से गुणा कर ५ जोड़ें योगफल में ७ का भाग देने से शेष ३ – ५ रहते दुर्भिक्ष शून्य से नेष्ट फल तथा १ – २ – ४ – ६ शेष से सुभिक्ष प्रदायक प्रतिफल समझना चाहिए।



पद्मालयां पद्मकरां पद्मपत्र निभेक्षणाम्।
वन्दे पद्ममुखीं देवीं पद्मनाभप्रियां शुभाम्।।
ॐ सर्वज्ञे सर्व वरदे सर्वदुष्ट भयंकरी।
सर्व दुःखहरे देवि महालक्ष्मी नमोस्तु ते।।
जयति कञ्जपत्राक्षि जयति श्रीपति प्रिये।।
जयमातर्महालक्ष्मी संसारार्णवतारिणी।।
भवानि त्वं महालक्ष्मीः सर्वकाम प्रदायिनी।
सुपूजिता प्रसन्ना स्यान्महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते।।

श्रीवर्धन श्रीःयंत्रराज			
७	१२	१	१४
२	१३	८	११
१६	३	१०	५
९	६	१५	४

♣ श्री महालक्ष्मी पूजा–अर्चना मुहूर्त ♣

सिद्धिबुद्धिप्रदे देवि भुक्ति मुक्ति प्रदायनी।
मंत्रपूते सदा देवि महालक्ष्मी नमोऽस्तु ते।।
नमस्ते तु महामाये श्रीपीठे सुरपूजिते।
शंख चक्र गदा हस्ते महालक्ष्मी नमोस्तु ते।।

● बहीखाता निर्माण एवं आनयन मुहूर्त ●

(१) स्वस्ति शुभ संवत् २०८२ आश्विन शुक्ल पक्ष १ सोमवार उत्तरा फाल्गुनी/हस्त नक्षत्र ता. २२.९.२०२५ ई. आवश्यके। **(२) आश्विन शुक्ल पक्ष ३** बुधवार चित्रा नक्षत्र ता. २४.९.२०२५ ई.। **(३) आश्विन शुक्ल पक्ष १०** गुरुवार उत्तराषाढ नक्षत्र दिवा ९:१३ या. रवियोग ता. २.१०.२०२५ ई.। **(४) कार्तिक कृष्ण पक्ष २** बुधवार अश्विनी नक्षत्र ता. ८.१०.२०२५ ई.। **(५) कार्तिक कृष्ण पक्ष ९** बुधवार पुष्य नक्षत्र दिवा १०:३४ उ १२:०० या. ता. १५.१०.२०२५ ई.।

● धनत्रयोदशी श्री कुबेर पूजा ●

संवत् २०८२ **कार्तिक कृष्ण पक्ष १२** शनिवार ता. १८.१०.२०२५ भगवान श्री धनवंतरी पूजन एवं सायं प्रदोष वेला यमदीपदानं तथा श्री पूजनं सायं ६:०३ से रात्रि ८:३५ पर्यंत।

- **नरकचतुर्दशी दीपदानं–प्रदोष वेला १९.१०.२०२५**
- **रूप चतुर्दशी अरुणोदय स्नान – २०.१०.२०२५**

● श्री महालक्ष्मी पूजा–दीपोत्सव ●

श्री संवत् २०८२ **कार्तिक कृष्ण पक्ष ३० मंगलवार** तिथिमानक रचना अनुसार तारीख **२१.१०.२०२५ ई.**

दिवस वेला पर प्रालेपन गादीस्थापना–स्याही भरना – कलम दवात संवारने हेतु प्रातः स्टैंडर्ड रेलवे घड़ी समयानुसार दिवा ९:३३ से १०:५८ तक **चंचल वेला,** दिवा १०:५८ से १:४७ तक **लाभ–अमृत वेला,** दिवा १२:०० से १२:४५ तक **अभिजित वेला,** दिवा ३:११ से ४:३६ तक **शुभ वेला** समगतिक मान्य तथा श्री पूजन मुहूर्त दैनिक लग्न विगणना मान्यता अनुसार सायं गोधूलि **प्रदोष वेला** का समय मानक सायं सूर्यास्त समय ६:०० से ८:३३ रात्रि पर्यंत तथा स्थिर संज्ञक **वृषभ लग्न** सायं समय मानक ७:२५ से ९:२२ रात्रि पर्यंत तथा अर्धरात्रि स्थिर संज्ञक **सिंह लग्न वेला** मध्य रात्रि १:५३ से ४:०८ पर्यंत एवं इस सिंह लग्न में कनकधारा स्तोत्र का पठन पाठ विशेष श्रीकारक सिद्ध होता है। प्रकारांतर से पूजन समय परिहार समाधान सूचक **वृश्चिक स्थिर लग्न** प्रातः ८:४५ से ११:०२ तक स्थिर संज्ञक **कुम्भ लग्न** दिवा २:४९ से ४:१९ पर्यंत की समय मान्यता भी सामान्य पक्ष अनुसार व्यवहार जनक है।

● श्री रोकड़ मिलान लेखन ●

श्री रोकड़ मिलान लेखन कार्य– श्री नावाँकार्य शुभारम्भ हेतु कार्तिक सुदी १ बुधवार प्रतिपदा तिथि मानक एवं ता. २२.१०.२०२५ ई. प्रातः ६:४४ से ९:३३ तक **लाभ–अमृत वेला** दिवा १०:५८ से १२:२२ तक **शुभ वेला श्रीकार।**

● शासकीय लेखा–बही निर्माण व्यवहार मुहूर्त ●

(१) संवत् २०८२ **चैत्र कृष्ण पक्ष १ बुधवार** उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र ७:३९ उ.ता. ४.३.२०२६ ई.। (२) **चैत्र कृष्ण पक्ष २ गुरुवार** उत्तरा फाल्गुनी/हस्त नक्षत्र ता. ५.३.२०२६ ई.।

✷ विवाह लग्ने विश्वादा ग्रहाः ✷

(लग्नं शुभं विवाहे स्याद् दश विंशोपकाधिकम्–मुहूर्तगणपति)

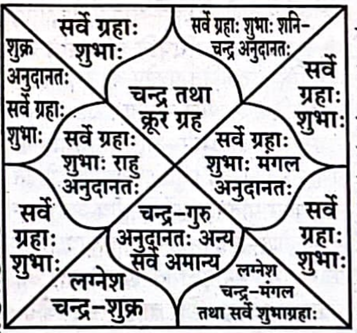
सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	२	३	१	१	१	३	३	३
६	३	६	२	२	२	६	६	६
८	११	११	३	३	४	८	८	८
११			४	४	५	११	११	११
			५	५	९			
			६	६	१०			
			९	९	११			
			१०	१०				
			११	११				
३।।	५	१।।	२	३	२	१।।	१।।	१।।

विवाहेलग्नभंगदा ग्रहाः

● एवञ्च विवाहलग्ने शुद्धि–विवेचना सूत्र ●

सर्वमान्य आगम काल से सिद्ध मुहूर्त्त चिन्तामणि मतानुगत विवाहलग्न–विषयक सूत्र– **व्यये शनिःखेऽवनिजस्तृतीये भृगुस्तनौ चन्द्रखला न शस्ताः। लग्नेट् कविग्लौश्च रिपौ मृतौ ग्लोर्लग्नेट्– सुभाऽराश्च मदे च सर्वे।।** भावार्थ विवेचना– विवाहलग्न काल में चन्द्र तथा पाप ग्रह वर्जित है। परन्तु वृषभ, क़र्क राशि एवं पूर्ण चन्द्रमा की स्थिति दोषसंज्ञक नहीं। ✦ **द्वितीय** २ भाव में कोई भी ग्रह वर्जित नहीं है। ✦ **तृतीय** ३ भाव में शुक्र सम गतिक अनुदानादि से शुभ मान्य तथा अन्य सभी ग्रह शुभ मान्य ✦ **चतुर्थ** ४ भाव में राहु सम गतिक तथा अनुदानादि से शुभ मान्य तथा अन्य सभी ग्रह शुभ मान्य ✦ **पंचम** ५ भाव में सभी ग्रह प्रायः शुभ ही मान्य ✦ **षष्ठ** ६ भाव में चन्द्र–शुक्र तथा लग्नेश शुभ नहीं। तथापि चन्द्र नीच राशि वृश्चिक – नवांश का चन्द्र एवं शुक्र–कन्या नीच राशि का तथा कर्क–सिंह शत्रु राशि का शुभ ही मान्य तथा चन्द्र व शुक्र का लग्नेश होकर छठे भाव में होना शुभ नहीं। ✦ **सप्तम** ७ भाव में चन्द्र–गुरु की रचना सामान्य संज्ञक बनते अनुदानादि से शुभ मान्य तथा सप्तम में अन्य सभी ग्रह वर्जित हैं। ✦ **अष्टम** ८ भाव में चन्द्र–मंगल–लग्नेश तथा अन्य सभी शुभ ग्रह मान्य नहीं। तथापि नीच राशि वृश्चिक ८ चन्द्र एवं शुक्र शत्रु राशि कर्क–सिंह तथा मंगल शत्रुराशि मिथुन–कन्या एवं अस्तंगत स्थिति का शुभ ही मान्य। परन्तु चन्द्र–शुक्र–मंगल का लग्नेश होकर ८ भाव में स्थान शुभसूचक नहीं। ✦ **नवम** ९ भाव में प्रायः सभी ग्रह शुभ ✦ **दशम** १० भाव में मंगल सामान्य संज्ञा का बनते अनुदानादि से शुभ ही मान्य तथा अन्य सभी ग्रह वर्जित नहीं हैं। ✦ **एकादश** ११ भाव में प्रायः सभी ग्रह शुभ मान्य। ✦ **द्वादश** १२ भाव में शनि तथा चन्द्र सामान्य संज्ञा के बनते अनुदानादि से शुभ मान्य तथा अन्य कोई भी ग्रह वर्जित नहीं है एवं यह विवाह लग्न शोधन–शुद्धि का नियामक बहुसम्मत है। ● **विशेषशास्त्रीय सूत्र–लग्न बल–ग्रह परिहार–समाधान हेतु भी शास्त्रीय वचन प्राप्त है। यथा–गुरुरेकोपि केन्द्रस्थः शुक्रो वा यदि वा बुधः। हरेः स्मृतिर्यथा हन्ति तद्वद्दोषा न कालजाः।।काव्योगुरुर्वासौम्योवायदाकेन्द्रत्रिकोणगाः।नाशयंत्यखिलान्दोषान्पापानिवहरिस्मृतिः।।**

विवाहलग्न भंगदा ग्रहाः



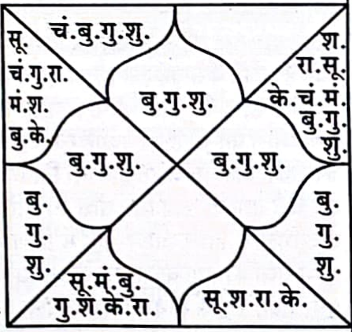
विशेष संकेत–समाधान सूत्र

लग्न प्रथम १ भाव स्थान तथा षष्ठ ६–७ भाव स्थान एवं अष्टम ८ भाव स्थान तथा १०–१२ भाव ग्रह रचना हेतु विशेष उपरोक्त भाषा लेखन परिहारक वचन सूत्र पर भी ध्यान रखना चाहिए।

✦ प्रत्येक शुभ कार्यों हेतु सामान्य लग्न शुद्धि ✦

व्ययाष्टशुद्धोपचये लग्नगे शुभदृग्युते। चन्द्रे त्रिषड्दशायस्थे सर्वारम्भः प्रसिद्धयति।। अभिष्ट कार्य सम्पादन हेतु जन्म लग्न या जन्म राशि से ३–६–१०–११ भाव राशि में लग्न हो तथा लग्न से द्वादश १२ एवं अष्टम ८ भाव स्थान शुद्ध (ग्रह रहित) रहें। लग्न पर शुभ ग्रह की दृष्टि या योग हो तथा चन्द्रमा लग्न से ३–६–१०–११ स्थान भाव में हो। एवं सुयोग रहते सभी शुभ कार्यों का शुभारंभ शास्त्रसम्मत एवं सामान्य लग्न शुद्धि नियामक गणना से शुभ होता है।

विवाहलग्न रेखाप्रदाः ग्रहाः

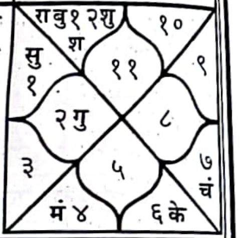


卐 वर्षलग्नम् ४।१२ 卐



राष्ट्रभाषायां वर्षराजावली फलश्रुतिः

卐 वर्षेशलग्नम् १०।०० 卐



यस्योदये जगत्पद्मं विकसत्येव सर्वतः । सततं तमहं वन्दे द्युमणिं त्रिजगन्मणिम् ॥ तमिस्रया जगद् ग्रस्तं यो जीवयति भूतले । तं वन्दे परमानन्दं सर्वसाक्षिणमीश्वरम् ॥ यदेकं यत्परं नित्यं यदनन्तं चिदात्मकम् ॥ यदेकं व्यापकं लोके तद्रूपं चिन्तयाम्यहम् ॥ यं शैवाःसमुपासते शिव इति ब्रह्मेति वेदान्तिनो । बोद्धा बुद्ध इति प्रमाण पटवः कर्तेति नैयायिकाः अर्हन्नित्यथ जैनशासनरताः कर्मेति मीमांसका । सोऽयं वो विदधातु वांछित फलं त्रैलोक्यनाथो रविः ॥ गंगा यमुना निर्मल धारा मेरू विन्ध्य नगराज । विद्यमान जब तक वसुधा में अटल रहे गणराज ॥ नगरी टोला पण्यवीथिका आलय मन्दिर ग्राम । हो वैभव परिपूर्ण धरित्री, दीप जले हर धाम ॥ सचिव सभासद शासक शिक्षक कवि कोविद कविकान्त । चमू चमूपति नायक कृषक रहे कार्यरत शान्त ॥ जड़ता मृशा न्यूनता चिंता राग द्वेष दुष्कर्म । ये उलूक भागे आभा लख अरूणोदय सत्कर्म ॥ इत्यादि सर्वजनहिताय – बहुजन सुखाय – विश्वकल्याणकामनार्थे शुभ संकल्पः पंचांगे निर्णयसागरे नीमचनगरस्थे ॥ ★●★

✷ सतत गतिमान काल चक्र ! राष्ट्रीय एवं विश्व वैभव विकास सुख सम्पदा–वर्चस्व एवं वैज्ञानिक–परमाणुविक शक्ति अनुसंधान–गवेषणा तथा विविध उर्जा उत्पादन प्राकृतिक वरद खनिज जंगल भू–सम्पदा अभिवृद्धि चरण नियामक से बहुजन हिताय–बहुजन सुखाय–वसुधैव कुटुम्बकम् – यत्र विश्वं भवत्यैकनीड़म् अन्तर्राष्ट्रीय–वैश्वीकरण संकल्पित सूत्रानुगत यह महाकाल परिचक्र–चक्रवत् निरन्तर अबाध गतिशील है। तथापि इस नवीन विक्रम वर्ष २०८२ शाके १९४७ देश स्वातंत्र्य वर्ष ७८-७९ की वार्षिक सौरमण्डलीय नवीन ग्रह संसद का चयन–निर्वाचन गणितागत निम्नानुसार चरितार्थ है तथा नाक्षत्रिक प्रमुख सदस्यों के गोचर गति प्रवाह एवमेव शोषक–पोषक तत्व, सम–विषम रश्मि प्रभामण्डल प्रसार–गति नियामक मीमांसानुसार संहिता–मेदिनी प्रतिफल विश्लेषण भावार्थ सार यह कि

♠ **वर्ष लग्न प्रवेश सिंह राशि स्थिर–स्वभाव संज्ञक अग्नि तत्व प्रधान तथा वर्षेश लग्न प्रवेश कुम्भ राशि स्थिर संज्ञक तथा जलतत्व वर्ग से चरितार्थ है।** इन लग्न पतियों का स्थान न्यास वर्ष कुण्डली में अष्टम भाव तथा वर्षेश कुण्डली में द्वितीय भाव एवं इनके स्वामी सूर्य एवं शनि हैं। दोनों में से वर्ष लग्न हल्का एवं वर्षेश लग्न मध्यम है एवं वर्ष लग्न पाप दृष्ट हैं, वर्षेश लग्न भी पाप दृष्ट है तथा केन्द्र स्थान भाव रचना प्रभावशील वर्ग की है एवं नवग्रह रचना स्थान विशेष शुभ राजयोगद वर्ग का नहीं है अतः वर्षजनित प्रतिफल विविध दृष्टि से सामान्य प्रतिफल का सूचक है तथा वर्ष लग्न सिंह राशि का चरितार्थ है एवं वर्ष लग्न पति सूर्य उच्चाभिलाषी होकर अष्टम भाव में ग्रहण योग में गया है। वर्षेश लग्न कुम्भ राशि का तथा वर्षेश लग्न पति नीचाभिलाषी होकर द्वितीय भाव में बुध, शुक्र, राहु के साथ है। चन्द्रमा तुला राशि का भाग्यभाव में स्थित है अन्य ग्रहों के स्थान न्यास में गुरू वृषभ राशि का केन्द्र स्थान में तथा सूर्य मेष का तृतीय भाव में है। अन्य ग्रहों का स्थान न्यास भी विशेष शुभ संज्ञा का परिचायक नहीं है एवं राजनैतिक–सामाजिक एवं विविध व्यवहार पक्ष में वर्षफल सामान्य सूचक बन पावे। आर्थिक सम्पदा मुद्राकोष, बैंक, संभाग, दृष्टि से नवीन सूत्रों का निर्धारण तथा आर्थिक लेन–देन व्यवहार जगत में संशोधित नियामक का सूत्रपात होकर आर्थिक क्षेत्र में गिरावट बन पावे। शिक्षा स्वास्थ्य विषयक भी अनुसंधान बनते लोक सुविधा का पक्ष सामान्यतः प्रभावशील नहीं रह पावे। देश–देशांतर के राष्ट्रनायक सीमा–संभाग सुरक्षा दृष्टि से परस्पर विरोधाभास से ग्रसित बने तथा विविध वाहन अस्त्र–शस्त्र परमाणु परीक्षण आदि हेतु विशेष व्यय प्रभार से त्रासदी प्राप्त कर पावे।

♠ संवत्सर चलन कलन नियामक अनुसार श्रीविष्णु विंशति का कालचक्र प्रभावशाली बनते **श्री सिद्धार्थी+श्री रौद्र नाम गुरूवत्सर** से यह विक्रम वर्ष प्रभावशील बना है। तदनुरूप फलाशय यह कि सिद्धार्थी नामक वर्ष होने से प्रजा ज्ञान वैराग्य से युक्त हो। पृथ्वी पर प्रसन्नता रहे और जल अन्न अच्छे हों। पृथ्वी पर सुख धर्म में चित्त लगे, सुकाल हो, क्रय– विक्रय अधिक हो, उद्योग में नवनिर्माण व गाँव–शहर में नये भौतिक सुख संसाधन मिले, चैत्र वैशाख में पीड़ा, ज्येष्ठ आषाढ़ प्रचण्ड पवन आँधी आदि श्रावण में अल्प वर्षा हो। अन्न में तेजी भादो में खण्ड वृष्टि, आश्विन भाव सामान्य, कार्तिक पैदावार उत्तम, अन्न मन्दा, मृगशिर से फाल्गुन तक सर्व सुख धान्य की प्राप्ति अच्छी, पशुओं में तेजी हो। वर्ष अन्त में रौद्र संवत्सर प्रवेश से राष्ट्र स्तर पर स्थिति चिंताजनक बने

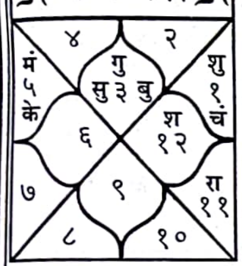
♠ **इस वर्ष के अधिपति शनि–रवि के पदासीन अनुसार संहिता शास्त्रीय प्रतिफल यह कि** ऋतुजनित प्रकोप की रचना, कृषि उत्पत्ति उत्पादन में विशेष कष्टद श्रम गति, अनुपातिक लाभांश न्यूनता। राष्ट्रीय आर्थिक वित्त मुद्रा कोष संतुलन हेतु जनमानस पर टैक्स करों का प्रभार–अधिभार तथा कृषि तंत्र–यातायात परिवहन विषय पर नवीन कर प्रणाली की रचना। युवक–युवती नवोदित वर्ग हेतु उद्योग कार्य व्यवसाय रोजगार समस्या विशेषकर गतिमान बनें। राष्ट्रीय आर्थिक नीति रीति तथा अर्थवित्त विषमता से जनमानस में आक्रोश–विद्वेष–उद्वेग का वातावरण तथा आर्थिक घोटाला हेराफेरी–मुद्राकोष दुरूपयोग प्रवंचन हेतु मनोवृत्ति विशेषकर बनें। अग्निवात–अग्निकाण्ड–विस्फोटक प्रदूषण–समुद्री चक्रवात अंधड़ आंधी वायुवेग–भूगर्जना–तापमान परम वृद्धि–पर्यावरण प्रकोप आदि से जनधन क्षति का कुयोग। मार्गरोध–तस्करी–अपहरण–चौर्यकर्म–लूटपाट आतंक में अनुपातिक वृद्धि तथा राजनेता–नायक विशिष्ट शासकीय पदासीन वर्ग को विविध विषयक चिंता प्रतिभार की रचना एवं समस्या समाधान का प्रभार बनें।

♠ **वर्ष के प्रधानमंत्री का पदभार सूर्यदेव के हस्तगत बना है** एवं संहिता प्रतिफल यह कि यह वर्ष राजा से मंत्री पद की आपसी शत्रुता का परिचायक है। संहिता सूत्रफल यह कि रविरमात्ये भुवि रोग पीड़ा रसेपु धान्येषु महर्घता – स्वास्थ्य प्रपीड़ा में अभिवृद्धि रसवर्गीय पदार्थ उन्नत भाव कृषि उत्पादन में कमी तथा स्वार्थ मनोवृत्ति का चलन कलन बने। सशक्त विरोध की न्यूनता का प्रतिफल चरितार्थ बनें।

♠ **सस्य–धान्य विभाग के अधिनायक क्रमशः खरीफ फसल विषयक पदभार चन्द्रसुत बुधदेव को प्राप्त है।** तथा शीतकालीन रबी फसल के अधिपति अमृत रश्मिप्रसारक चन्द्रदेव हैं एवं प्रतिफल यह कि कृषि विकास तथा कृषि प्रसाधन उपकरणों हेतु शासकीय सुविधा–योगदान विशेषकर प्राप्त होवें। राष्ट्रीय बैंक माध्यम से हरित–श्वेत क्रान्ति विकास अभियानगत आर्थिक मद ऋण, प्रदायगी एवं अदायगी सुविधा में विशेष अभिवृद्धि। कृषि विश्वविद्यालय में नीति निदेशक नायकगण नवीनतम कृषि रचना प्रक्रिया विधि का सन्मार्ग प्रचारित करने में सक्षम रहेंगे। कृषक समुदाय में अभिनव कृषि प्रणाली ज्ञान विज्ञान विकास हेतु शासकीय कृषि भवन–मंत्रालय द्वारा प्रचार प्रसार का योगदान एवं समुन्नत फसल सुरक्षा के लिये उत्तम बीज कीटनाशक नवीनतम औषध रासायनिक पदार्थ द्रव्य उपकरणों का वितरण चरितार्थ बनें तथा सिंचाई विषयक नवीन अनुसंधान एवं लघुत्तम (अल्पजल) प्रक्रिया द्वारा वृहत्तम प्रतिफल फसल अभिवृद्धि हेतु दिशा निर्देश प्राप्त होवें। जलसिंचित भूमि का विकास एवं युगानुकूल यांत्रिक उपकरण सुविधा बनते कृषक समाज में उत्साह संवर्धन भी बनें।

♠ **मेघपर्जन्य नायक पदभार विश्व प्रबोधक सूर्यदेव को प्राप्त हुआ है।** तदनुसार संहिता प्रतिफल यह कि मेघ मण्डल मानसून की रचना तो विशेषकर बनें परन्तु जल वृष्टि की रचना जलधारा वेग प्रपात–सुवेग में न्यूनता तथा पर्यावरण जनित विकार विशेष गतिशील बनते–भूमण्डलीय तापमान–परिताप में अनुपातिक विशेष वृद्धि तथा वायुमण्डल संचरण विषमता का प्रारूप बन पावे। राष्ट्रीय जल समस्या समाधान में गतिरोध जल प्रदायगी वितरण प्रणाली हेतु प्रान्तीय स्तर पर वैचारिक विवादक गति बने।

卐 आर्द्रायां रविः २।१३ 卐



♠ रसेश–नीरसेश पद कार्यप्रभार क्रमशः दैत्य गुरू श्री शुक्राचार्य को तथा सौम्यनायक बुधदेव को प्राप्त है। प्रतिफल यह कि विविध रसवर्गीय पदार्थ–द्रव्य वस्तु का उत्पादन अनुकूल बनें। डीजल–पेट्रोल–केरोसीन–रसोई गैस, विविध खाद्य तेल आदि हेतु नवीन आचार रचना राष्ट्रीय नीति–रीति सार्थक फलद बनें एवं भाव नियंत्रण विषय पर विशेषकर विचार विमर्श बन पावे। तथा इत्र–सुगंधित तेल–दूध–श्रृंगारिक प्रसाधान क्रीम–लोशन आदि का कार्य व्यवसाय लाभद बनें एवं चंदन–गुलाब–केवड़ा–चमेली–मोगरा आदि के पुष्प विशेष उत्पन्न बनें। कन्द पदार्थ यथा–अदरक, आलू, अरबी, प्याज, लहसन, मूली, गाजर, सकरकन्द, सुरण, रतालु, जमीकन्द आदि का उत्पादन एवं कार्य व्यवसाय भी लाभद रहे।

♠ **इस वर्ष का फलनायक पदभार रविसुत शनिदेव के हस्तगत तदनुसार** संहिता प्रतिफल यह कि यदि शनि फलपः फला–हिमभयं सूत्रानुगत पौध–वृक्ष–लता बेलादि में पुष्प विकास उद्भव तो होवे परन्तु हिम प्रपात, तुषार, विपुल वायु आँधी वेग, विशेष शीतलहर आदि से ऋतुजनित विषमता से निष्फलता विखण्डना आदि बनते उत्पादन न्यूनता। विविध फल फूल साग सब्जी व्यापार–व्यवसाय मध्य तेजी का गतिक्रम सहज बन पावे।

♠ **धनाध्यक्ष वित्त विभाग का कार्यप्रभार भूमिसुत–भौमदेव के हस्तगत प्रभावशील** तदनुसार राष्ट्रीय एवं विश्वव्यापी अर्थतन्त्र मुद्राकोष में नवीन आचार संहिता नीति रीति व्यवहार का सूत्रपात, आर्थिक असन्तुलन विषमता विबाधा निवारण हेतु मुद्रा कोषालय बैंक आदि में अभिनव योजना–नीति सूत्र–आचरण संहिता की रचना। आर्थिक वित्त तंत्र विषयक गोलमाल घोटाला काण्ड आदि की रचना प्रायः बने एवं जनमानस मध्य आर्थिक लेनदेन–धन व्यवहार में न्यूनता का असर रहे। राष्ट्रीय–अन्तर्राष्ट्रीय आयात–निर्यात व्यवहार गति में विषमता। अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष–विकास संघ–विश्व बैंक आदि मध्य भी स्पष्ट नीति रीति व्यवहार की न्यूनता बने। राष्ट्रीय टैक्स कर नीति रीति में नवीन आचार संहिता का सूत्रपात। जनमानस के मध्य आर्थिक स्थिति को लेकर आक्रोश असन्तोष की रचना विभावना बन पावे।

♠ **रक्षा सुरक्षा विभाग, जल–थल–नभ आण्विक पद का कार्यप्रभार मन्दनायक शनिदेव के हस्तगत।** तदनुसार प्रतिफल यह कि देश–विदेश भू संभाग में सीमा विवाद–सैन्य संघर्ष–राजनैतिक पद पतन–पराभव की रचना। देश देशान्तर मध्य शांति व्यवस्था में न्यूनता एवं अस्त्र शस्त्र–अणु परमाणु रचना विविध यान आदि हेतु अनुपातिक व्यय–खर्च भार में विशेष गति। राष्ट्र–अन्तर्राष्ट्रीय–मित्र राष्ट्र मध्य सीमा विषयक अनुबंधन की अवहेलना तथा विस्फोटक अशांति प्रसारक आतंक–नक्सल आदि दल संघटन मध्य विशेष अभियान गति। देश–प्रान्तीय जनमानस मध्य आरक्षण भाषा–भूषा–जाति–धर्म–जिला–प्रान्त रचना आदि विषयक विवाद विग्रह आन्दोलन आदि से सत्तारूढ़ नायक त्रस्त बन पावें।

♠ वर्षनाम कार्तिक संज्ञा का प्रभावशील – तदनुसार प्रतिफल यह है कि कार्तिक संज्ञा का गुरू वत्सर सुख सुविधा का विधायक नहीं बने। कौसुंभ–मदिरालय–सुरापान कार्य व्यवसाय की अभिवृद्धि विशेष–इन विषयक कार्यकारकगण को सुलाभ। मादक द्रव्य पदार्थों में जन मानस की अभिरूचि विशेष। पशुपालक वर्ग को श्रमसाधना विशेष तथा पशुपालन में दुःविधा। अग्निवात प्रवाह–विस्फोटक रचना–आगजनी विषयक कुयोग। शस्त्र–अस्त्र भण्डार में विक्षोभ तथा अग्निकाण्ड प्रवाह से जन धन क्षति कुयोग।

♠ **रोहिणी रमण परिचक्र विन्यास** – इस विक्रम वर्ष में **रोहिणी निवास सन्धि मध्य** का तथा **वैश्य घर वर्ष का स्थान न्यास** एवं चतुर्मेघ गणना नियामक से **संवर्त** संज्ञा की मेघ रचना गतिशील है। इन उपकरणों की विगणना तथा गणितागत आर्द्रा रवि नक्षत्र गतिचार अनुसार मेघ गाज मानसुन संरचना ऋतु गर्जना प्रवर्षण गति न्यूनाधिक खण्ड वृष्टि मापक की बनें। देश भूभेद व्यवस्था से सजल रूप आंशिक संभाग में तथा विशेषकर भूसंभाग में खण्डशः सामान्य गतिक रचना रहे। साथ ही कथन यह भी कि मानसून गतिपथ–गर्भरचना–शकुन सूत्र–वायु प्रवाह अति उपलक्षण सूत्र रचना पंचांग में प्रदत्त प्रति चैत्रादि द्वादश मास पृष्ठों के ग्रहगोचरीय फल श्रुति कोष्ठक–में देख लेना भी सन्मार्ग सूचक विषय है। तथा वर्ष मध्य जल तृण का स्तंभ पक्ष आरक्षक सहायक संज्ञा का चरितार्थ है। वायु+अन्न के स्तंभ अल्प बनें हैं।

❋ आर्द्रायां रवि गतिचार तिथि नक्षत्र योगादि फलाशय सूत्र ❋

♠ **तिथि फलं** – द्वादश्यांशिवनक्षत्रंप्रविष्टश्चेद्दिवाकरः। नानाविधंशुभंतर्हीजनः प्राप्नोतिनिश्चितम् ॥ ♠ **वार फलं** – रविवासरे पशुनाशः ॥ ♠ **नक्षत्रफलं** – अर्कस्यरौद्रसंवेशेभरणीचन्द्रर्भयदि। तर्हिस्याद्रोगबाहुल्यंशुभंनैवकदाचन ॥ ♠ **योगफलं** – सुकर्मनामयोगकेयदिशभरविर्व्रजेत्। तदासमस्तभूसुराः सुकर्मकर्तमुद्यताः ॥ ♠ **प्रवेश वेला फलं** – सूर्योदय रोगकरी स्मृताः। ♠ **चंद्रस्थिति फलं** – चन्द्र मेष राशिः अग्नितत्वीय एकादश भावगतियः तथा शुभग्रहयुतः रचना मित्र संज्ञक मंगल गृहे उत्तम प्रतिफलं सूचकम्।

❋ देश–दिशा संभाग अनुसार प्रवर्षण रचना प्रतिफलम् भारतदेशीय ❋

♠ **पूर्व दिशा** – सामान्य से उत्तम कृषि सस्य उत्पादन अनुकूल मेघ गाज जल रचना। ♠ **पश्चिम दिशा** – उत्तम वर्षा मापक–सार्वत्रिक समकल गति विशेष उत्तम योग। ♠ **उत्तर दिशा** – मानसून मेघ गाज वर्षा गति सामान्य न्यूनता। ♠ **दक्षिण दिशा** – मेघ गाज प्रवर्षण सामान्य से उन्नत गति। ◆ **देश दिशाकोणीय संभागानुसारेण प्रतिफलम्** – ♠ **उत्तर पश्चिम मध्य वायव्य कोणीय** देश–प्रदेश समकल वर्षा गति सामान्य से उत्तम, आंशिक भाग सजल विशेष प्राकृतिक प्रकोप युक्त। ♠ **पूर्वोत्तर मध्य ईशान कोणीय संभाग** – समकल वर्षा गति नहीं, सामान्य ठीक, आंशिक भाग सजल विशेष प्राकृतिक प्रकोप युक्त। ♠ **पश्चिम दक्षिण मध्य नैऋत्य कोणीय संभाग** – अधिक भाग सजल विशेष तथा कतिपय भाग में सूक्ष्मतम भी बन पावे – ♠ **दक्षिण पूर्व मध्य आग्नेय कोणीय संभाग** – सजल विशेष तथा कतिपय भाग में बाढ़ की स्थिति भी बन पावे एवं भारतीय मानचित्र प्रारूप से देश प्रांत संभाग एवं प्रमुख दिशा मध्य स्थित कोणानुसार सचित्र दृश्यमान अनुभव भी चरितार्थ बन पावे।

◆ **एवं बहुविध संचिन्त्य दैवज्ञैः कथनीयं शुभाऽशुभ प्रतिफलम् ॥ सर्वेषां गणनायकानां कृते शाश्वत ज्योतिर्नीति वचनसूत्रम् ॥ स्वस्ति प्रजाभ्यःपरिपालयन्तां न्याय्येन मार्गेण मही महिपाः गौ ब्राह्मणेभ्यः शुभमस्तु नित्यं लोकाः समस्ता सुखिनोभवन्तु ॥**



❋ फलाशय सूत्र रचना ❋

चोंच दुःख पाखा मरण, कण्ठा मिलन समाज।
उदर सुप्रेरक पूंछ धन, मस्तक होवे काज ॥
शुभ लक्षण पावा परे, घर में मंगलाचार।
विज्ञ भवानीसुत कहे, पक्षी शकुन विचार ॥

विक्रमाब्द २०८२ सनाब्द २०२५-२०२६ ई. दिनमान राशिफल सूत्र

मेष **(एरीज) चू–चे–चो–ला, ली–लू–ले–लो, अ. (अश्विनी ४, भरणी ४, कृत्तिका १)**

इस वर्ष की दिनदशा गोचर गणना का चलन कलन राज योगद व योगवाही नहीं। विविध जीवनीय पक्षों में न्यूनता का गतिक्रम तथा आत्म सन्तोष सुख पक्ष हेतु कारक धारक नहीं। असामयिक व्यय प्रभार तथा अकल्पित विषय समस्या से मानसिक अशान्ति का प्रतिफल बनें। नीति रीति विवेक गुण धर्मों का पालन रखते, सन्तुलित जीवन प्रवाह पर लक्ष्य साधना रखे, उन्नत लालसा के प्रति मनोवृत्ति नहीं रखें। इस वर्ष का सुयोग ३० प्रतिशत का तो कुयोग की रचना ७० प्रतिशत की। अतः आर्थिक सन्तुलन लेन देन में स्पष्टता का मार्ग अपनावे, निज शक्ति से बाहर कार्य योजना का विस्तार भी नहीं रखे। अपयश, अपवाद की अनुभूति बने, राज काज में समय व्यतीत होकर विवाद विग्रह की परिणिति सहज बने। कार्य व्यवसाय लाभ आमद से असन्तोष तथा रकम अवरोध का अवसर भी बने। शरीर सुख स्वास्थ्य का गतिक्रम सामान्य नित्य की दिनचर्या रात्रिचर्या में व्यवधान रहे। परिवार सुख एवं मित्र बान्धव पक्ष से मनोविकार बनते सहयोग की न्यूनता। जन जीवनीय कर्म क्षेत्र में श्रम साधना विशेष रहें। गुरूवार का व्रत रखना योग्य तथा आरक्षण विवाधा निवारण में सहायक सिद्ध शनि मुद्रिका धारण करना योग्य।

वृषभ **(टोरस) ई–उ–ए, ओ–वा–वि–वू–वे–वो (कृतिका ३, रोहिणी ४, मृगशिरा २)**

इस वर्ष के गोचर ग्रह पथ का प्रभाव आपके जनजीवन में सुखद वर्ग का चरितार्थ है। कर्मोदय राज्योदय–भाग्योदय विषयक पक्षों में सार्थक गतिमान होने का संकेत प्रदान करता है। अतः पूर्ण मनोयोग निष्ठा रखते अपने कार्य क्रिया कलापों पर गतिमान होने का लक्ष्य रखना उपादेय है। सुयोग का निर्माण ७० प्रतिशत का तो कुयोग का वर्चस्व ३० वर्ग का बना है एवं इसी अनुपात अनुसार विविध पक्षों में प्रतिफल बन पावे। शरीर सुख बुद्धि पक्ष का चलन कलन ठीक रहे, मनोत्साह की अनुभूति रहे। निज कार्य व्यवसाय का प्रतिफल ठीक, लाभ आमद का पक्ष अनुकूल रहे मानद जन जीवन का विकास बने। अवरोधित कार्य का समाधान होवे। आर्थिक कोष में अभिवृद्धि रहे। राजनैतिक व्यवसायिक तथा कला विद्या, अध्ययनरत सभी वर्ग हेतु मनोनीत विकास सफलता का प्रतिफल बने। परिवार सुख तथा सहयोगीजन मित्र मण्डल बंधु वर्ग से अनुकूल वातावरण बनते मनोत्साह वृद्धि रहे। ससुराल पक्ष तथा सन्तान पक्ष से खेद की अनुभूति संभव साथ ही कार्य प्रभार विशेष से मानसिक खेद की रचना भी बन पावे। अतः वर्ष पर्यंत गुरूवार का व्रत रखना सन्मार्ग सूचक समझें।

मिथुन **(जैमिनी) का–की, कु–घ–ङ–छ, के–को–ह (मृगशिरा २, आर्द्रा ४, पुनर्वसु ३)**

इस वर्ष की दिन दशा एवं समय गति का चलन कलन विशेष सार्थक योगवाही फलद नहीं। एक पक्षीय रूप में श्रीकार–श्रीवर्धन स्थिति का प्रतिफल नहीं, अपितु सामान्य वर्ग का गतिक्रम विविध पक्षों में रहे। अतः अनैतिक–अव्यवहारिक क्रिया कलापोंसे बचाव रखते, सन्तुलित जीवन क्रम पर लक्ष्य रखावें। अन्यथा अपवाद अपयश का चलन कलन वन पावे। सुयोग का निर्माण ३५ प्रतिशत तो कुयोग का वर्चस्व ६५ वर्ग का प्रतीत होता है, इसी अनुपात अनुसार जीवनीय प्रति पक्ष में फलावट रहे। शरीर सुख आरोग्य लाभ पक्ष सामान्य, मानद जन जीवन में कमी बने। पद अथवा स्थान परिवर्तन वश मानसिक व्यथा की अनुभूति, स्त्री अथवा पिता पक्ष से मनोविकार भी संभव, परिवार सुख पक्ष में कमी। निज कार्य व्यवसाय द्वारा लाभ आमद की गति में न्यूनता, श्रम साधना अनुकूल प्रतिफल नहीं रहे। भूमि जमीन जायदाद पक्ष से विकार तथा खर्चे का वातावरण बने, मनोत्साह में भी कमी रहे। आमदनी की अपेक्षा खर्चे की गति विशेष तथा मित्र बान्धव सहयोगी वर्ग से विषमता का स्वरूप प्राप्त होवे। तथापि सुयोग दृष्टि से पूर्व अर्जित सम्पदा तथा निजकर्म कला पक्ष से विषम परिस्थिति में सहायक गति प्राप्त होवे। शनिवार का व्रत रखना सुख शान्ति विधायक सूत्र भी स्पष्ट समझें।

कर्क **(कैंसर) ही–हे–हो–डा, डी–डू–डे–डो (पुनर्वसु १, पुष्य ४, अश्लेषा ४)**

इस वर्ष का गोचर ग्रह न्यास दशा पथ का प्रतिफल विशेष योगवाही धारक श्रीकार नहीं। अपितु सम दृष्टि से सामान्य प्रतिफल का कारक विधायक। भाग्य कर्म राजयोग पक्ष से विशेष विकास अभिवृद्धि का स्वरूप नहीं एवं आत्म सन्तोष में न्यूनता। अतः सन्तुलित नियमित जीवन रेखा पर ही गतिमान रहने का निरन्तर प्रयास रखना सन्मार्ग सूचक सूत्र। कुयोग का प्रभाव ६० प्रतिशत का तो सुयोग का वर्चस्व ४० वर्ग का प्रतिपादित है। इसी अनुपात अनुसार जीवनीय गति में फलाशय बन पावे। शरीर सुख पक्ष में सामान्य स्थिति एवं मनोत्साह में न्यूनता रहे, स्वास्थ्य हेतु ध्यान रखें। कार्य व्यवसाय में अवरोध विबाधा, बने चले कार्य में भी अवरोधक गति, तथा लाभ आमद की स्थिति संतोषजनक नहीं रहे। मित्र बन्धु एवं सहयोगी वर्ग से विषमता का वातावरण तथा असामयिक खर्चे का अवसर प्राप्त होवें। शुभ कार्यों में गतिरोध, अधिकारी वर्ग से अनुकूल वातावरण में कमी, अतः नीति रीति शान्त मन स्थिति गुण धर्म का जीवन में समावेश रखें। मन बुद्धि की रचना एवं निज कार्यकला पक्ष से संतोष की अनुभूति रहेगी। गुरूवार का व्रताचरण रखना श्रीकार फलद बनें।

सिंह **(लियो) मा–मी–मू–मे, मो–टा–टी–टू, टे (मघा ४, पूर्वाफाल्गुनी ४, उत्तराफाल्गुनी १)**

इस वर्ष का गोचर दिनमान एवं ग्रह गति पथ का चलन कलन श्रीकार शुभ सूचक नहीं। भाग्य–कर्म–राज्य एवं सुयोग दृष्टि से जीवनीय प्रतिफल में न्यूनता का प्रतिफल, स्वतंत्र कार्यशील, सेवारत अथवा राजनेता नायक पक्ष में पराभव अपवाद की अनुभूति रहे। अतः अमानवीय कार्य–प्रलोभन, वाद–विवाद से बचाव हेतु विशेषकर ध्यान रखना सन्मार्ग सूचक सूत्र। शान्त नीति रीति विवेक गुण धर्मों का परिपालन रखना योग्य समझे। विशेष नवसम्पर्क–हठवादिता–स्वाभिमान दर्प आदि से बचाव का प्रयास रखें। सुयोग की रचना ३० प्रतिशत तो कुयोग का मापदंड ७० वर्ग का प्रतीत होता है। इसी अनुपात अनुसार आपके जनजीवन में प्रतिफल बन पावे। शरीर सुख तथा नित्य की जीवनचर्या में विबाधा की अनुभूति, गुप्त चिन्ता–मनोविकार तथा अपघात चोट मोच का प्रारूप भी बने। ससुराल पक्ष–मित्र बांधव सहयोगी वर्ग से विषम वातावरण खेद की अनुभूति रहे। कार्य व्यवसाय संतोषजनक नहीं रहते, लाभ आमद पक्ष में कमी तथा रकम अवरोधक स्थिति भी संभव। स्थान अथवा पद परिवर्तन एवं बने चले कार्य में विबाधा, मानद जनजीवन में कमी रहे। निज परिवार पक्ष स्त्री–सन्तति पक्ष से मनोविकार खेद की गति एवं आवक की अपेक्षा जावक विशेष रहे। अरिष्ट निवारक कवच तुल्य सिद्ध विधान की शनि मुद्रिका धारण करना योग्य समझें।

कन्या **(वर्गो) टो–प–पी (प्री), पू–ष–ण–ठ, पे–पो (उफा. ३, हस्त ४, चित्रा २)**

इस वर्ष का गोचर ग्रह न्यास तथा दिनमान गोचर गतिचार सामान्य फल का प्रतिपादक, विशेष योगवाही सार्थक नहीं। अभिनव योजना–विकास रचना अथवा नवीन कार्य विस्तारक कारक योग विशेष नहीं। अतः सन्तुलित नियमित कार्य रचना का गतिमान होता रहे, यह लक्ष्य रखें तथा मानसिक प्रसन्नता मनोत्साह कायम रखने हेतु विशेष ध्यान रखना सन्मार्ग समझें। सुयोग का विकास ४० प्रतिशत तो कुयोग की रचना ६० वर्ग की है, इसी रचना नियामक अनुसार जीवनीय प्रतिपक्ष में फलाशय बन पावें। शरीर सुख एवं परिवार सुख पक्ष में असंतोष रहें, स्त्री तत्व से भी मनोनीत वातावरण में कमी, यान वाहन आदि से अपघाट चोट–मोच का अंदेशा रहे। भाग्य विकास में कमी, सुयोग न्यूनता, भूमि–जमीन जायदाद, कृषि विषयक पक्ष तथा मित्र बन्धु बान्धव आदि से असंतोष खेद की अनुभूति रहे। आपके ज्ञान विज्ञान–कला तत्व से सहायक भूमिका बने, तथा कार्य व्यवसाय पक्ष से भी अनुकूल गति मति रहे। तथापि वर्ष पर्यन्त शनिवार का व्रत रखना सुख शांति विधायक समझें। वर्ष प्रतिफल मूलतया सामान्य वर्ग का रहे।

तुला **(लिब्रा) रा–री, रू–रे–रो–ता, ती–तू–ते (चित्रा २, स्वाति ४, विशाखा ३)**

इस वर्ष की ग्रह गणना गति एवं गोचर ग्रह गतिचार का चलन कलन विविध पक्षों में अनुकूल स्थिति का प्रतीत है। भाग्य–राज्य–कर्म एवं धारक श्रीकार सुयोग दृष्टि से प्रतिफल वर्चस्व कारक बने। अभिनव सम्पर्क, कार्यक्षमता आदि में गति मति बनते विगत अवरोधित कार्य समाधान के अवसर प्राप्त कार्य योजना, मनोत्साह, नव होवे। मुद्रा कोष में आय वृद्धि तथा बचत स्थिति का प्रारूप भी बने।

सुयोग का प्रभाव ६० प्रतिशत का तो कुयोग की रचना ४० वर्ग की चरितार्थ है। इसी अनुपात अनुसार जनजीवन में प्रतिफल विघटित हो पावें। राजनेता, नायक, स्वतंत्र कार्यरत अथवा शासकीय सेवारत सभी हेतु अनुकूल वातावरण का निर्माण होकर जीवनीय सौख्य सम्पदा का विकास बने। शरीर सुख पक्ष ठीक रहते कार्य क्रिया शक्ति का गतिक्रम ठीक रहे व्यवसाय प्रगति, मांगलिक कार्य सुयोग, मुद्राकोष में अभिवृद्धि बने। नव निर्माण में मनोवृत्ति, कार्य क्षेत्र में वर्चस्व तथा सहसम्पर्क में वृद्धि बने। तथापि अधिक उदार मनोवृत्ति से बचाव रखें, निज शक्ति से बाहर गतिमान नहीं रहते बोल चाल व्यवहार पक्ष में सन्तुलन का ध्यान रखें। गुरूवार का व्रताचरण भी सन्मार्ग सूचक सूत्र है।

वृश्चिक (स्कॉर्पियो) **तो, ना–नी–नू–ने, नो–या–यी–यू (विशाखा १, अनुराधा ४, ज्येष्ठा ४)**

इस वर्ष की ग्रह जनित स्थिति एवं गोचर दिनमान का विपाक विशेष योगद सार्थक फल का परिचायक नहीं। विगत वर्ष अपेक्षा अनुपातिक प्रतिपक्ष में प्रतिफल न्यूनता सूचक। जीवनीय मनोत्साह तथा निज कार्य गति में न्यूनता का उपलक्षण बने तथा श्रम साधना अनुकूल लाभांश में न्यूनता असन्तोष। सुयोग का मापक ४० प्रतिशत तो कुयोग का वर्चस्व ६०वर्ग का प्रतीत होता है। इसी अनुपात अनुसार जनजीवनीय प्रतिपक्ष में फलाशय की अनुभूति बनें। आजीविका पक्ष में असन्तोष, व्यय–खर्चे में गति, ऋण प्रभार तथा व्यर्थ प्रवास पर्यटन के कारण मानसिक खिन्नता सहज बन पावे। पद परिवर्तन अथवा स्थान परिवर्तन की रचना संभव, स्त्री सन्तान एवं परिवार पक्ष वातावरण से भी मनोविकार बन पावें। शरीर सुख पक्ष सामान्य रहे, वायु वात जनित आदि व्याधि संभव, मांगलिक कार्य रचना में विबाधा तथा मित्र–बन्धु वर्ग से विषम वातावरण की अनुभूति बनें। मानद जनजीवन में कमी, मनोनीत सुख प्रसाधनों में भी विकार तथा अपयश अपवाद की परिस्थिति का निर्माण निज शक्ति अनुसार क्रिया रत रहना सन्मार्ग सूचक तथा वर्ष पर्यन्त गुरूवार का व्रताचरण भी श्रेयस्कर समझें।

धनु (सैजिटेरीयस) **ये–यो–भ–भी, भू–ध–फ–ढ, भे (मूल ४, पूर्वाषाढ ४, उत्तराषाढ १)**

इस वर्ष का गोचर विपाक तथा दिनमान परिचक्र का चलन कलन योगवाही श्रेयस्कर नहीं, सुयोग की रचना न्यून तथा विषम कुयोग का प्रभाव गतिमान है। भाग्योदय कर्म–पुण्य–राज्ययोग विषयक तथ्य से पराभव निराशा की अनुभूति बने। अकल्पित समस्या का निर्माण, ऋण प्रभार, रकम अवरोध वाद विवाद की रचना सहज बने। अतः अधिक उन्नत लालसा प्रलोभन, अनैतिक कार्य, विशेषकर बोलचाल व्यवहार हित विशेष ध्यान रखना चाहिये। कुयोग का प्रभाव ७०प्रतिशत तो सुयोग का वर्चस्व ३०वर्ग का प्रतीत होता है, इसी रचना नियामक से जीवनीय प्रतिफल बन पावे। शरीर सुख न्यून, बौद्धिक वैचारिक शक्ति में कमी, तथा धन सम्पदा का लाभ नहीं रहे। जमीन जायदाद–कृषि तथा माता मित्र–बान्धव पक्ष से वाद विवाद विग्रह। वाहनादि से चोट मोच एवं राज काज में समय व्यतीत होवे। यात्रा प्रवास के योग निरर्थक सिद्ध होकर मनोत्साह में कमी। निज कार्य व्यवसाय से असन्तोष, स्थान अथवा पद परिवर्तन से मानसिक खेद, अधिकारी वर्ग से विरोधाभास की गति। आपको निज स्वाभिमान दर्प की मात्रा में कमी रखना योग्य रहे, साथ ही अरिष्ट निवारक सिद्धि विधान की शनि मुद्रिका धारण करना योग्य रहे।

मकर (कैप्रिकॉर्न) **भो–जा–जी, खी–खू–खे–खो, ग–गी (उत्तराषाढ ३, श्रवण ३, घनिष्ठा २)**

इस वर्ष का ग्रह जनित प्रतिफल एवं गोचर दिन दशा का प्रचलन आप हेतु अनुकूल सार्थक प्रतीत होता है। राज भाग्य कर्म–पुण्य आदि अधियोग का प्रभाव सुखद उदयमान कालांश चरितार्थ होवें। स्वयं का बल पुरूषार्थ, पराक्रम मनोत्साह जागृत होकर, नव सम्पर्क, कार्य योजना का प्रस्तार बने। धन परियोजना, मुद्रा कोष में अभिवृद्धि अवरोधित कार्यों का समाधान भी बन पावे। जन जीवन में यश सम्पदा तथा मानदजन जीवन का प्रतिफल विदित होवे। सुयोग का प्रभाव ७०प्रतिशत का तथा कुयोग की रचना ३० वर्ग की विदित होती है। इसी अनुपात से जनजीवनीय विविध पक्षों में गतिविधि रहें। शरीर सुख आरोग्य पक्ष ठीक रहते दैनिक दिनचर्या–रात्रिचर्या का चलन कलन ठीक। कार्य व्यवसाय पक्ष से लाभ आमद का गतिक्रम सन्तोष कारक। मांगलिक कार्य समायोजना, नवनिर्माण में गतिमति, परिवार–मित्र बान्धव–सहयोगी वर्ग से अनुकूल वातावरण। तथापि कुयोग वश विवेक शक्ति में न्यूनता संदिग्ध गति–मति भय का वातावरण भी संभव, तदर्थ आत्म विश्वास कायम रखने हेतु विशेषकर ध्यान रखना होगा। तथा वर्ष पर्यन्त गुरूवार का व्रताचरण भी सन्मार्ग सूचक समझें।

कुम्भ (एक्वेरियस) **गू–गे, गो–सा–सी–सू, से–सो–द (धनिष्ठा २, शतभिषा ४, पूर्वाभाद्रपद ३)**

इस वर्ष का गोचर ग्रह न्यास एवं दिनमान गति पथ का संचार आपके जन जीवन हेतु कारक विधायक नहीं। राजयोग–कर्म पुण्य–भाग्य विषयक उदय विकास हेतु विबाधा का गतिक्रम प्रतीत होवे तथा बने चले कार्यक्रम में भी व्यवधान की अनुभूति रहे एवं आपको प्रलोभन, अनैतिक कार्य, तथा अति दुःसाहस से बचाव हेतु लक्ष्य विशेषकर रखना होगा। साथ ही नित्य की कार्य व्यवस्था हेतु पूर्ण निष्ठापूर्वक गतिमान होने का प्रयास रखना योग्य है। निजशक्ति से बाहर कार्यविस्तार हेतु भी नियंत्रण रखें। सुयोग का मापक ३० वर्ग का तो कुयोग की रचना ७० प्रतिशत की प्रतीत होती है। जीवनीय गतिक्रम में इसी अनुपात अनुसार प्रतिफल बन पावे। शरीर सुख स्वास्थ्य पक्ष हेतु भी आपको सचेष्ट रहना होगा। साथ ही आहार व्यवहार खान पीन पर सन्तुलन रखना भी योग्य सूचक। निज कार्य व्यवसाय का चलन कलन सामान्य एवं असन्तोष चिन्तन भी बने, लाभ आमद का प्रारूप ठीक नहीं रहते आर्थिक विषमता की अनुभूति रहे। परिवार सुख पक्ष सहयोगी वर्ग तथा बन्धु बान्धव मित्र मण्डल से विवाद विग्रह की स्थिति। निज वाणी का प्रभाव न्यून बनते, मनोत्साह में कमी बने। व्यर्थ कार्यों में गति मति तथा भूमि विषयक व लेन देन हेतु विवादक गति, ससुराल पक्ष एवं माता पक्ष से खेद की अनुभूति। गुरूवार व्रताचरण वर्ष पर्यन्त योग्य तथा अरष्टि विबाधा निवारण हेतु सिद्ध विधान की शनि मुद्रिका धारण करना उचित।

मीन (पाइसेस) **दी, दू–थ–झ–ज, दे–दो–चा–ची (पूर्वाभाद्रपद १, उत्तराभाद्रपद ४, रेवती ४)**

इस वर्ष की ग्रह रचना एवं गोचर दिनमान का विपाक योग वाही श्रीकार नहीं, जनजीवनीय सुख सम्पदा कार्य विकास तथा मानद जन जीवन हेतु सार्थक फलद नहीं। विशेषकर मानसिक सन्ताप–मनोविकारखेद की अनुभूति बन पावे। भाग्य–राजयोग–कर्म–पुण्य आदि गुण धर्मों में विषमता की गति रहे। अतः उन्नत कार्य योजना, अति दुःसाहस का प्रदर्शन तथा निज शक्ति से बाहर खर्चे की गति मति पर नियंत्रण का प्रयास रखें। साथ ही आत्म सन्तोष एवं शरीर सुख पक्ष हेतु विशेषकर ध्यान रहे। कुयोग की गणना ७० प्रतिशत तो सुयोग का वर्चस्व ३० वर्ग का चरितार्थ है। इसी नियामक अनुसार जीवनीय प्रतिक्षेत्र में प्रतिफल बन पावें। मूलतः अस्त्र–शस्त्र वाहनादि से प्रपीड़ा, चोट मोच संघात का गतिक्रम रहे। सामाजिक राजनैतिक–आर्थिक तथा मानद जन जीवन में न्यूनता का असर बने एवं अपवाद अपयश का संयोग भी संभव। सोच विचार की क्षमता कम रहते, ओज शक्ति पराक्रम में अनुपातिक न्यूनता रहे। आमद की अपेक्षा खर्चे का मार्ग विशेष तथा आर्थिक विषमता की अनुभूति भी बन पावे। नियोजित सन्तुलित जीवन क्रम पर लक्ष्य रखावें तथा मानसिक पवित्रता हेतु भी प्रयास विशेष रखें आरक्षण समाधान हेतु सिद्ध विधान की कवच तुल्य शनि मुद्रिका धारण करना भी योग्य समझें।

● **राशिफल सूत्र विषयक–संकेत** ● दिनमान भावीफल अपनी जन्म नक्षत्र राशि अनुसार देखना ही योग्य है तथा निज कुलज वंशज प्रारूप से संप्राप्त सम्पदा सुविधा तथा वर्तमान कार्यक्रिया क्षेत्र का सन्तुलन बनाते राशि फलाशय का मनन करना चाहिए एवमेव नित्य के जनजीवनीय कार्य क्रियाकलापों में फलसूत्रों के माध्यम से प्रसार व संकुचन गति का निर्धारण करना भी योग्य विषयक है तथा जन्म ग्रह संस्थिति के सुप्रभावी अथवा कुयोगद स्थान न्यास विभेद से उपर्युक्त प्रतिफल में न्यूनाधिक अंतरांश बनना भी सहज विषयक है।

स्वस्ति श्री विक्रमाब्द २०८२ शाकः १९४७ रेखाभिः सहिता विवाहलग्नोपनयनादि विविध मुहूर्त्तादयः

गजाननं भूतगणादिसेवितं कपित्थजम्बूफलचारू–भक्षणम् ! उमासुतं शोकविनाशकारकं नमामि विघ्नेश्वरपादपंकजम् ॥ वक्रतुण्डमहाकाय कोटिसूर्यसमप्रभः । निर्विघ्नं कुरू मे देव ! शुभकार्येषु सर्वदा ॥ श्रीमन् महागणाधिपतये नमो नमः ॥

स्वभावादेव कालोऽयं शुभाशुभ समन्वितः । अनादिनिधनः सर्वो न निर्दोषो न निर्गुणः ॥
तस्मान्निर्दोषकालार्थे मुहूर्त्तमधिगच्छताम् । कालः शुभो गुणैर्युक्तो बलवद्भिः शुभप्रदः ॥

गुरूशुक्रास्त एवं विविध समयशुद्धि विवेचना

*** भवानीशंकरौ वन्दे श्रद्धाविश्वास रूपिणौ ***

♣ **मीनसंक्रान्ति मलमास**–संवत् २०८१ फाल्गुन शुक्ल पक्ष १५ शुक्रवार तारीख १४.३.२०२५ से संवत् २०८२ वैशाख कृष्ण पक्ष १ रविवार तारीख १३.४.२०२५ पर्यंत मान्य रहेगा। ♣ **गुरूअस्तोदय**–आषाढ कृष्ण पक्ष १ गुरूवार ता. १२.६.२०२५ से गुरू तारा अस्त रचना का बनते भावी आषाढ शुक्ल पक्ष १० शनिवार ता. ५.७.२०२५ को गुरूतारा उदित स्वरूप का रहेगा। ♣ **श्री हरि–देवशयनकालांशः**–आषाढ़ शुक्ल पक्ष ११ रविवार ता. ६.७.२०२५ से कार्तिक शुक्ल पक्ष १० शनिवार ता. १.११.२०२५ पर्यंत देवशयन कालांश मान्य रहेगा। ♣ **महालय श्राद्ध पक्ष**–भाद्रपद शुक्ल पक्ष १५ रविवार ता. ७.९.२०२५ से आश्विन कृष्ण पक्ष ३० रविवार ता. २१.९.२०२५ पर्यंत श्राद्ध पितृ पक्ष कालांश नेष्ट सूचक ♣ **शुक्रास्त**–पौष कृष्ण पक्ष ११ सोमवार ता. १५.१२.२०२५ से शुक्र तारा अस्त रचना का बनते फाल्गुन कृष्ण पक्ष १ सोमवार ता. २.२.२०२६ को शुक्रतारा उदित स्वरूप का रहेगा। ♣ **धनु संक्रान्ति मल मास**–पौष कृष्ण पक्ष ११ सोमवार ता. १५.१२.२०२५ से प्रारंभ होकर भावी माघ कृष्ण पक्ष ११ बुधवार ता. १४.१.२०२६ पर्यंत कुमुहूर्त्त सूचक नेष्ट कालांश मान्य। ♣ **होलाष्टक कालांश**–फाल्गुन शुक्ल पक्ष ८ मंगलवार ता. २४.२.२०२६ से फाल्गुन शुक्ल पक्ष १४ सोमवार ता. २.३.२०२६ पर्यंत विवाह मुहूर्त्त आदि शुभ मांगलिक कार्य रचना शोधन हेतु कालांश मान्य नहीं।

मीन संक्रान्ति मलमास–संवत् २०८२ चैत्र कृष्ण पक्ष १० शनिवार ता. १४.३.२०२६ से संवत् २०८३ वैशाख कृष्ण पक्ष १२ मंगलवार ता. १४.४.२६ ई.पर्यंत मान्य रहेगा। ♣ **गोधूलि लग्न वेला**–गोरज गोधूलिक वेला के विवाह लग्न सर्वदा सूर्यास्त समय से १२ मिनिट पूर्व तथा १२ मिनिट उपरांत तक मान्य एवं गुरूवार को सूर्यास्त होने पर तथा शनिवार को सूर्यसाक्षी मध्य ही वर–कन्या का हस्तमिलाप–पाणिग्रहण शुभ। अन्यथा गोधूलि–अन्य गोधूलि वेला संज्ञक समय सिद्ध नहीं होगा। अतः विवाह विषयक अन्य पूजा कर्म आदि समय से १ घंटा पूर्व ही समाधित कर लेना योग्य सूत्र है ♣ तथा जिन ग्रहों के (दा.) दानतः अथवा (पू.) पूज्य उल्लेख किया गया हो उस दिवस पर अथवा श्रीगणपति स्थापना दिवस पर ही अभीष्ट ग्रह हेतु अनुदानादिक क्रिया सूत्र रचना पर ध्यान रखना युक्तियुक्त विषय है। ♣ **क्रान्तिसाम्य**–महापात गणितागत सूक्ष्म रचना अनुसार मान्य किया गया है। इस पक्ष विषयक सूर्य–चन्द्र की राश्यात्मक स्थिति मात्र को मान्य नहीं किया गया है। यह गणितागत सिद्धान्त रचना का विषय भी स्पष्ट है ✱ तथा इन विवाह मुहूर्त्तों में दिवा–गोधूलि–रात्रि आदि इन ३ लग्नवेला की गणना मान्यता की गई है। अपनी–अपनी कार्यसुविधा लोक मान्यता देशाचार–कुलाचार अनुसार कार्य समाधान करना भी सन्मार्ग सूचक सूत्र। ✱ दिवा लग्न हेतु शास्त्रीय व्यवधान विशेष नहीं यथासूत्र विवाह पद्धति मध्ये–**दिवासूर्यमवलोक्य रात्रौ ध्रुवं च विपश्य**। अर्थात् दिवा लग्न भी कार्य समाधान सूचक तथा रात्रिलग्न वेला पाठान्तर वैशेषिक मान्यता अनुरूप है। ✱ देवशयन कालांश के लग्न मुहूर्त्त तथा कात्यायनोक्त नक्षत्र चतुष्टयी के विवाह मुहूर्त्त भी युगधर्मानुकुल जनसुविधार्थ प्रस्तुत हैं। इनका सदुपयोग–कार्यव्यवहार भी देशकाल परिस्थिति एवं निजकुलज धर्म सम्प्रदाय शाखा–प्रशाखा देशाचार–कुलाचार मान्यतानुसार समुचित है। ✱ विवाह मुहूर्त्त विषयक शास्त्र वचन – **मुहूर्त्तात्मा स्थिरः काल पुराणादौ प्रकीर्त्तितः । अतो मुहूर्त्ते कर्तव्यं विवाहाद्यं बुधैः सदा । सिद्धिर्भवति कार्याणां शुभलग्न मुहूर्त्तयोः । अतो मुहूर्त्तेमेवादौ सर्वकृत्येषु चिन्तयेत् ॥ भार्यात्रिवर्गकरणं शुभशील युक्ता, शीलं शुभं भवति लग्न वशेन तस्याः । तस्माद विवाहसमयः परिचिन्त्ये हि, तन्निघ्नतामुपागता सुतशील धर्माः । इति विवाहादिकेषु विविध मुहूर्त्तेषु सूत्राऽधारम् ॥**

सर्वदिशीय शुभ विवाह–मुहूर्त्ताः विक्रम वर्ष २०८२ सन् २०२५–२०२६ ई.मध्ये

मास–पक्ष–तिथि	वार	दिनांक	विवाह नक्षत्र	रेखा	लत्तादि दोष रेखाएँ	चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरूराशि	● विवाह लग्न समय दिवा–रात्रि एवं पूजा दानादि उपकरा–सूत्रावली ●
वैशाख कृष्ण १	सोम	१४-०४-२५	स्वाति	७	।।।।ऽ।ऽऽ।।	तुला	मेष	वृषभ	विवाह लग्न ३ मिथुन दिवा ९।५३ से १२।०७ लग्न ८ वृश्चिक रात्रि ९।१३ से ११।२९ गु. ७ पू.भान्तमपि
वैशाख कृष्ण ३	बुध	१६-०४-२५	अनुराधा	८	।ऽ।।।ऽअ।।।।	वृश्चिक	मेष	वृषभ	विवाह लग्न ११ कुंभ रात्रि ३।०९ से ४।४०
वैशाख कृष्ण ५	शुक्र	१८-०४-२५	मूल	६	।।।।ऽऽरा।ऽ।ऽ	धनु	मेष	वृषभ	विवाह लग्न ११ कुंभ रात्रि ३।०२ से ४।३२ दग्धा परिहारः
वैशाख कृष्ण ६	शनि	१९-०४-२५	मूल	७	।।।।ऽ।।ऽ।ऽ	धनु	मेष	वृषभ	विवाह लग्न ३ मिथुन दिवा ९।३४ से १०।२१ चं.७ पू.दग्धा परिहारः भान्तमपि
वैशाख कृष्ण ७	रवि	२०-०४-२५	उत्तराषाढ़	७	।।।ऽगु।ऽ।ऽ।।	मकर	मेष	वृषभ	विवाह लग्न ८ वृश्चिक रात्रि ८।५०से ११।०६ गु.७पू.लग्न ११ कुम्भ रात्रि २।५४ से ४।२४ गु.पाद वेधाऽभावः
वैशाख कृष्ण १२	शुक्र	२५-०४-२५	उत्तराभाद्रपद	७	।।ऽबु।ऽऽअ।।।।	मीन	मेष	वृषभ	विवाह लग्न ३ मिथुन दिवा ९।३९से ११।२३
वैशाख शुक्ल २	मंगल	२९-०४-२५	रोहिणी	९	।।।।।ऽचौ।।।।	वृषभ	मेष	वृषभ	विवाह लग्न ८ वृश्चिक रात्रि ८।१३ से १०।२९ चं.गु.७ पू.लग्न ११ कुंभ रात्रि से २।१७ से ३।४७
वैशाख शुक्ल ३	बुध	३०-०४-२५	रोहिणी	९	।।।।।ऽचौ।।।।	वृषभ	मेष	वृषभ	विवाह लग्न २ वृषभ दिवा ६।५३ से ८।४९ चं.१ परिहारः लग्न ३ मिथुन दिवा ८।४१ से ११।०३
वैशाख शुक्ल ३	बुध	३०-०४-२५	मृगशिरा	९	।।ऽगु।।।।।।।	वृषभ	मेष	वृषभ	विवाह लग्न ८ वृश्चिक रात्रि ८।०९ से १०।२५ चं.गु.७ पू.
वैशाख शुक्ल ८	सोम	०५-०५-२५	मघा	९	ऽमंगु।।।।।।।।।	सिंह	मेष	वृषभ	विवाह लग्न ८ वृश्चिक रात्रि ७।४९ से १०।०५ गु.७ पू.लग्न ११ कुंभ रात्रि १।५३ से ३।२३ चं.७ पू.गणितेन क्रान्तिसाम्याऽभावः

मास–पक्ष–तिथि	वार	दिनांक	विवाह नक्षत्र	रेखा	लत्तादि दोष रेखाएँ	चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरूराशि	● विवाह लग्न समय दिवा–रात्रि एवं पूजा दानादि उपकरा–सूत्रावली ●
वैशाख शुक्ल ९	मंगल	०६-०५-२५	मघा	९	ऽमंगु।।।।।।।।।	सिंह	मेष	वृषभ	विवाह लग्न २ वृषभ दिवा ६।२१ से ८।२५ लग्न ३ मिथुन दिवा ८।२५ से १०।३९ गणितेन क्रान्तिसाम्याऽभावः तिथ्यंतमपि
वैशाख शुक्ल १०	बुध	०७-०५-२५	उत्तराफाल्गुनी	७	।।ऽके।ऽ।ऽ।।।	सिंह	मेष	वृषभ	विवाह लग्न ८ वृश्चिक रात्रि ७।४१ से ९।५८ केतु युति परिहारः गणितेन क्रान्तिसाम्याऽभावः
वैशाख शुक्ल ११	गुरू	०८-०५-२५	उत्तराफाल्गुनी	७	।।ऽके।ऽ।ऽ।।।	कन्या	मेष	वृषभ	विवाह लग्न ८ वृश्चिक रात्रि ७।३७ से ९।०७ भान्तमपि केतु युति परिहारः गणितेन क्रान्तिसाम्याऽभावः
ज्येष्ठ कृष्ण ५	शनि	१७-०५-२५	उत्तराषाढ	७	।।।ऽगु।ऽअ।ऽ।।	धनु	वृषभ	मिथुन	विवाह लग्न गोधलि ९ धनु रात्रि ९।२० से ११।२३ गु.७ पू.मं.८ परिहारः गु.पाद वेधाऽभावः
ज्येष्ठ शुक्ल २	बुध	२८-०५-२५	मृगशिरा	९	।।ऽगु।।।।।।।	वृषभ	वृषभ	मिथुन	विवाह लग्न ३ मिथुन दिवा ६।५९ से ९।१३
ज्येष्ठ शुक्ल २	बुध	२८-०५-२५	मृगशिरा	८	।।ऽगु।।ऽरा।।।।	मिथुन	वृषभ	मिथुन	विवाह लग्न ९ धनु रात्रि ०९।०८ से १०।३९ चं.गु.७ पू.मं.८ परिहारः
ज्येष्ठ शुक्ल ६	रवि	०१-०६-२५	मघा	६	ऽगु।।।।ऽरोऽऽ।।	सिंह	वृषभ	मिथुन	विवाह लग्न ९ धनु रात्रि ९।३७ से १०।२३ गु.७ पू.लग्न १ मेषरात्रि ३।०५ से ४।४३ श.१२ पू.
ज्येष्ठ शुक्ल ७	सोम	०२-०६-२५	मघा	६	ऽगु।।।।ऽरोऽऽ।।	सिंह	वृषभ	मिथुन	विवाह लग्न ३ मिथुन दिवा ६।३९ से ८।५२
ज्येष्ठ शुक्ल ७	सोम	०२-०६-२५	मघा	८	ऽगु।।।।।।ऽ।।	सिंह	वृषभ	मिथुन	विवाह गोधूलि लग्न ९ धनु रात्रि ८।१५ से १०।१९ गु.७ पू.तिथ्यंतमपि, भान्तमपि
ज्येष्ठ शुक्ल ९	बुध	०४-०६-२५	उत्तराफाल्गुनी	७	।।ऽके।ऽऽअ।।।।	कन्या	वृषभ	मिथुन	विवाह लग्न ९ धनु रात्रि ८।११ से १०।१५ गु.७ पू.केतु युति परिहारः
ज्येष्ठ शुक्ल १२	शनि	०७-०६-२५	स्वाति	८	ऽसू।।।ऽ।।।।।	तुला	वृषभ	मिथुन	विवाह लग्न १ मेष रात्रि २।४१ से ४।१९ चं.७ श.१२ पू.
ज्येष्ठ शुक्ल १२	रवि	०८-०६-२५	स्वाति	८	।।।।ऽ।ऽ।।।	तुला	वृषभ	मिथुन	विवाह लग्न ३ मिथुन दिवा ६।१६ से ८।२९ लग्न ४ कर्क दिवा ८।२९ से १०।४७ तिथ्यंतमपि
मार्गशीर्ष शुक्ल २	शनि	२२-११-२५	मूल	८	।।।ऽगु।ऽचौ।।।।	धनु	वृश्चिक	कर्क	विवाह लग्न ७ तुला रात्रि ४।१७ से ६।१७ से ६।३५ गु.पादवेधाऽभावः
मार्गशीर्ष शुक्ल ३	रवि	२३-११-२५	मूल	८	।।।ऽगु।ऽचौ।।।।	धनु	वृश्चिक	कर्क	विवाह लग्न १० मकर दिवा १०।५५ से १२।४० गु. पाद वेधाऽभावः गु.७ पू.
मार्गशीर्ष शुक्ल ५	मंगल	२५-११-२५	उत्तराषाढ	६	।ऽ।।ऽ।ऽऽ।।	मकर	वृश्चिक	कर्क	विवाह लग्न ४ कर्क रात्रि ९।१७ से ११।३५ चं.७ पू.
मार्गशीर्ष शुक्ल १०	रवि	३०-११-२५	उत्तराभाद्रपद	८	।।।।।।।ऽ।ऽ	मीन	वृश्चिक	कर्क	विवाह लग्न १० मकर दिवा १०।२८ से १२।१३ गु.७ पू.लग्न ४ कर्क रात्रि ८।५८ से ९।३० तिथ्यंतमपि दग्धा परिहारः
मार्गशीर्ष शुक्ल १०	रवि	३०-११-२५	उत्तराभाद्रपद	९	।।।।।।।ऽ।।	मीन	वृश्चिक	कर्क	विवाह लग्न ४ कर्क रात्रि ९।३०से ११।१६
मार्गशीर्ष शुक्ल १४	गुरू	०४-१२-२५	रोहिणी	७	ऽचं।।।ऽ।।ऽ।।	वृषभ	वृश्चिक	कर्क	विवाह लग्न ४ कर्क रात्रि ८।४३ से ११।०० तिथि क्षये चांवल अनुदानतः परिहारः
पौष कृष्ण ७	गुरू	११-१२-२५	उत्तराफाल्गुन	९	।।।।।।।ऽ।।	सिंह	वृश्चिक	मिथुन	विवाह लग्न ७ तुला रात्रि ३।५६ से ५।२१
पौष कृष्ण ८	शुक्र	१२-१२-२५	उत्तराफाल्गुन	८	।।।।।ऽरो।ऽ।।	कन्या	वृश्चिक	मिथुन	विवाह लग्न १० मकर दिवा १०।२१ से ११।२६ अत्यावश्यके
फाल्गुन कृष्ण ८	मंगल	१०-०२-२६	अनुराधा	९	।।।।।।।ऽ।।	वृश्चिक	मकर	मिथुन	विवाह लग्न २ वृषभ दिवा १२।०६ से २।०३ लग्न ७ तुला रात्रि ११।०५ से १।२२
फाल्गुन शुक्ल ४	शनि	२१-०२-२६	रेवती	९	।।।।।ऽरो।।।।	मीन	कुम्भ	मिथुन	विवाह लग्न २ वृषभ दिवा १।०१ से १।१८
चैत्र कृष्ण ७	मंगल	१०-०३-२६	अनुराधा	९	।ऽ।।।।।।।।	वृश्चिक	कुम्भ	मिथुन	विवाह लग्न ३ मिथुन दिवा १२।४१ से २।२६ चं.६ परिहारः
चैत्र कृष्ण ८	बुध	११-०३-२६	मूल	८	।।।ऽगु।।।ऽ।।	धनु	कुम्भ	मिथुन	विवाह लग्न १० मकर रात्रि ३।४८ से ५।३२ गु.पाद वेधाऽभावः शु. ३ पू.
चैत्र कृष्ण ९	गुरू	१२-०३-२६	मूल	८	।।।ऽगु।।।ऽ।।	धनु	कुम्भ	मिथुन	विवाह लग्न १ मेष दिवा ८।३० से ९।५८ गु.पाद वेधाऽभावः

कात्यायनोक्त विशेष–४ नक्षत्रीय विवाह मुहूर्त संवत् २०८२ मध्ये

चित्रा–श्रवण–घनिष्ठाऽश्विन्याधिकानि चत्वारि तथाऽपि खलग्रहयुतं वर्ज्यं सूत्रानुगत–अश्विनी–चित्रा–श्रवण–घनिष्ठा आदि ४ नक्षत्रीय विवाह लग्न शोधन विशेष शास्त्रीय मान्यता अनुसार अभिलेखन

वैशाख कृष्ण ८	सोम	२१-०४-२५	श्रवण	७	।ऽ।।ऽ।।ऽ।।	मकर	मेष	वृषभ	विवाह लग्न ८ वृश्चिक रात्रि ८।४६ से ११।०२ गु.७ पू.लग्न ११ कुम्भ रात्रि २।५० से ४।२०
वैशाख कृष्ण ९	मंगल	२२-०४-२५	श्रवण	६	।ऽ।।ऽऽरो।ऽ।।	मकर	मेष	वृषभ	विवाह लग्न २ वृषभ दिवा ७।२५ से ९।२२
वैशाख कृष्ण ९	मंगल	२२-०४-२५	धनिष्ठा	८	।।।।।ऽरो।ऽ।।	मकर	मेष	वृषभ	विवाह लग्न ८ वृश्चिक रात्रि ८।४१ से १०।५८ गु.७ पू.
ज्येष्ठ कृष्ण ५	रवि	१८-०५-२५	श्रवण	९	ऽचं।।।।।।।।।	मकर	वृषभ	मिथुन	विवाह गोधूलि लग्न ९ धनु रात्रि ९।१६ से ११।११ गु.७ पू.लग्न १ मेष रात्रि ४।०१ से ५।४३ श.१२ पू.रात्रि ३।५०उ.राज पंचकः रेखा ८
मार्गशीर्ष शुक्ल ५	मंगल	२५-११-२५	श्रवण	१०	।।।।।।।।।।	मकर	वृश्चिक	कर्क	विवाह लग्न ७ तुला रात्रि ४।०६ से ५।२६ रात्रि ५।२६ उ.महापातः

विशेष धर्म–सम्प्रदाय–पंथ मार्ग तथा संभागीय विवाह मुहूर्त्त सन्मान्यता संवत् २०८२ मध्ये

सिन्ध–पंजाब–कश्मीर–हिमाचल प्रदेश प्रान्तीय संभागों में देशाचार–लोकाचार नियामक स्थितिवश देवशयन चातुर्मास कालांश में भी विवाह लग्न आदि सम्पन्न होते हैं। जनसमाज एवं पण्डितगणों द्वारा कार्य सम्पन्न होते हैं। इस पक्ष हेतु बृहद दैवज्ञ रंजन नामक शास्त्रीय निबंध ग्रंथ में वचन प्रमाण भी प्राप्त हैं। यथा–प्रमाणं ग्राम वचनं विवाहादौ तथात्यये। अत: परम्परायातं धर्मं वदन्ति ते खलु॥ देशांचारस्तावदादौ विचिन्त्यो देशे–देशे या स्थिति सैव कार्या॥

मास–पक्ष–तिथि	वार	दिनांक	विवाह नक्षत्र	रेखा	लत्तादि दोष रेखाएँ	चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरूराशि	● विवाह लग्न समय दिवा–रात्रि एवं पूजा दानादि उपकरा–सूत्रावली ●
श्रावण कृष्ण १	शुक्र	११-०७-२५	उत्तराषाढ	७	।ऽ।।ऽ।ऽ।।।	मकर	मिथुन	मिथुन	विवाह लग्न १ मेष रात्रि १२।२९ से २।०७ श.१२ पू.लग्न २ वृषभ रात्रि २।०७ से ४।०४
श्रावण कृष्ण २	शनि	१२-०७-२५	श्रवण	८	।।।।।ऽरो।ऽ।।	मकर	मिथुन	मिथुन	विवाह लग्न १ मेष रात्रि १२।२५ से २।०३ श.१२ पू.लग्न २ वृषभ रात्रि २।०३ से ४।०१
श्रावण कृष्ण ३	रवि	१३-०७-२५	धनिष्ठा	८	।।।ऽबुऽ।।।।।	कुम्भ	मिथुन	मिथुन	विवाह लग्न १ मेष रात्रि ०१।०१ से १।५९ श.१२ पू.लग्न २ वृषभ रात्रि १।५९ से ३।५६ बु.पाद वेधाऽभाव:
श्रावण कृष्ण ८	शुक्र	१८-०७-२५	अश्विनी	८	।।।।।ऽअ।ऽ।।	मेष	कर्क	मिथुन	विवाह लग्न २ वृषभ रात्रि १।४० से २।१४ भान्तमपि
श्रावण कृष्ण १०	रवि	२०-०७-२५	रोहिणी	८	।।।।।ऽरा।ऽ।।	वृषभ	कर्क	मिथुन	विवाह लग्न १ मेष रात्रि ११।५४ से १।३२ श.१२ पू.लग्न २ वृषभ रात्रि १।३२ से ३।२९ चं.१ परिहार: लग्न ३ मिथुन रात्रि ३।२९ से ५।४६
श्रावण कृष्ण ११	सोम	२१-०७-२५	मृगशिरा	८	।।ऽशु।।।।ऽ।।	वृषभ	कर्क	मिथुन	विवाह लग्न १ मेष रात्रि ११।५० से १।२८ श.१२ पू.लग्न २ वृषभ रात्रि १।२८ से ३।२५ चं.१ परिहार: लग्न ३ मिथुन रात्रि ३।२५ से ५।४२
श्रावण शुक्ल २	शनि	२६-०७-२५	मघा	९	।ऽ।।।।।।।।	सिंह	कर्क	मिथुन	विवाह लग्न ३ मिथुन रात्रि ४।०६ से ४।५१
श्रावण शुक्ल ४	सोम	२८-०७-२५	उत्तराफाल्गुनी	७	।।ऽमं।।ऽअ।ऽ।।	कन्या	कर्क	मिथुन	विवाह लग्न ३ मिथुन रात्रि २।५८ से ५।११ मं.युति परिहार:
श्रावण शुक्ल ७	गुरू	३१-०७-२५	स्वाति	८	।ऽ।।।।।ऽ।।	तुला	कर्क	मिथुन	विवाह लग्न ३ मिथुन रात्रि २।४६ से ४।५९
श्रावण शुक्ल ८	शुक्र	०१-०८-२५	स्वाति	८	।ऽ।।।ऽचो।ऽ।।	तुला	कर्क	मिथुन	विवाह लग्न ३ मिथुन रात्रि २।४२ से ३।४१ भान्तमपि
श्रावण शुक्ल ९	रवि	०३-०८-२५	अनुराधा	९	।।।।।।।ऽ।।	वृश्चिक	कर्क	मिथुन	विवाह लग्न ७ तुला दिवा ११।४० से १२।३०
श्रावण शुक्ल ९	रवि	०३-०८-२५	अनुराधा	८	।।।।।ऽरो।ऽ।।	वृश्चिक	कर्क	मिथुन	विवाह लग्न ७ तुला दिवा १२।३० से १।५७ गोधूलि लग्न १ मेष रात्रि ११।०१ से १२।३८ चं.८ परिहार: शु.३ श.१२ पू.लग्न २ वृषभ रात्रि १२।३८ से २।३४ चं.७ पू.लग्न ३ मिथुन रात्रि २।३४ से ४।४७ चं.६ परिहार:
श्रावण शुक्ल १३	गुरू	०७-०८-२५	उत्तराषाढ	१०	।।।।।।।।।।	ध./म.	कर्क	मिथुन	विवाह लग्न गोधूलि लग्न २ वृषभ रात्रि १२।२२ से २।१८
श्रावण शुक्ल १४	शुक्र	०८-०८-२५	उत्तराषाढ	१०	।।।।।।।।।।	मकर	कर्क	मिथुन	विवाह लग्न ७ तुला दिवा ११।२० से १।३८
श्रावण शुक्ल १४	शुक्र	०८-०८-२५	श्रवण	७	।।।।ऽऽरा।ऽ।।	मकर	कर्क	मिथुन	विवाह लग्न २ वृषभ रात्रि १।५३ से २।५३ लग्न ३ मिथुन रात्रि २।१५ से ४।२८
श्रावण शुक्ल १५	शनि	०९-०८-२५	श्रवण	७	।।।।ऽऽरा।ऽ।।	मकर	कर्क	मिथुन	विवाह लग्न ७ तुला दिवा ११।१६ से १।३४
भाद्रपद कृष्ण ४	बुध	१३-०८-२५	रेवती	८	।।।।ऽ।।ऽ।।	मीन	कर्क	मिथुन	विवाह लग्न २ वृषभ रात्रि ११।५८ से १।५५ लग्न ३ मिथुन रात्रि १।५५ से ४।०८
भाद्रपद कृष्ण ९	रवि	१७-०८-२५	रोहिणी	८	।।।।।।।ऽ।ऽ	वृषभ	सिंह	मिथुन	विवाह लग्न ३ मिथुन रात्रि १।३९ से ३।१८ दग्धा परिहार: भान्तमपि
भाद्रपद शुक्ल १	रवि	२४-०८-२५	उत्तराफाल्गुनी	९	ऽगु।।।।।।।।।	सिंह	सिंह	मिथुन	विवाह लग्न ३ मिथुन रात्रि २।०६ से ३।२४ लग्न ४ कर्क रात्रि ३।२४ से ५।४२
भाद्रपद शुक्ल २	सोम	२५-०८-२५	उत्तराफाल्गुनी	८	ऽगु।।।।ऽ।।।।	कन्या	सिंह	मिथुन	विवाह लग्न ७ तुला दिवा १०।१३ से १२।३१ लग्न २ वृषभ रात्रि ११।११ से १।०७ शु.३ पू.लग्न ३ मिथुन रात्रि १।०७ से ३।२१ लग्न ४ कर्क रात्रि ३।२१ से ३।५० भान्तमपि
भाद्रपद शुक्ल ५	गुरू	२८-०८-२५	स्वाति	८	ऽमं।।।।ऽअ।।।।	तुला	सिंह	मिथुन	विवाह लग्न ३ मिथुन रात्रि १२।०९ लग्न ४ कर्क रात्रि ३।०९ से ५।२७
भाद्रपद शुक्ल ९	सोम	०१-०९-२५	मूल	७	।।।ऽगु।ऽचौ।।।ऽ	धनु	सिंह	मिथुन	विवाह लग्न ३ मिथुन रात्रि १२।४० से २।५३ चं.७ पू.दग्धा परिहार: गु.पाद वेधाऽभाव:
भाद्रपद शुक्ल १२	गुरू	०४-०९-२५	उत्तराषाढ	९	।।।।ऽ।।।।।	मकर	सिंह	मिथुन	विवाह लग्न २ वृषभ रात्रि १०।३१ से ११।४४ शु.३ पू.भान्तमपि
भाद्रपद शुक्ल १३	शुक्र	०५-०९-२५	श्रवण	८	ऽसू।.।ऽबु।।।।।।	मकर	सिंह	मिथुन	विवाह लग्न ७ तुला दिवा ९।३० से ११।४७ बु.पाद वेधाऽभाव:
भाद्रपद शुक्ल १४	शनि	०६-०९-२५	धनिष्ठा	७	।।।ऽशुऽऽअ।।।।	कुम्भ	सिंह	मिथुन	विवाह लग्न २ वृषभ रात्रि १०।२३ से १०।५६ शु.पाद वेधाऽभाव: भान्तमपि
आश्विन शुक्ल ४	शुक्र	२६-०९-२५	अनुराधा	१०	।।।।।।।।।।	वृश्चिक	कन्या	मिथुन	विवाह लग्न २ वृषभ रात्रि १०।०९ से ११।०१ चं.७ पू.लग्न ३ मिथुन रात्रि ११।०१ से १।१४ चं.६ परिहार: शु.३ पू.
आश्विन शुक्ल ९	बुध	०१-१०-२५	उत्तराषाढ	८	।।।।ऽ।ऽ।।।	मकर	कन्या	मिथुन	विवाह लग्न २ वृषभ रात्रि ८।४४ से १०।४१ लग्न ४ कर्क रात्रि १२।५४ से ३।१२ चं. ७ पू.
आश्विन शुक्ल १०	गुरू	०२-१०-२५	श्रवण	८	।।।।।ऽचौ।ऽ।।	मकर	कन्या	मिथुन	विवाह लग्न ९ धनु दिवा १२।१७ से २।२० गु.७ पू.लग्न २ वृषभ रात्रि ८।४० से १०।३७ लग्न ४ कर्क रात्रि १२।५० से ३।०८

मास–पक्ष–तिथि	वार	दिनांक	विवाह नक्षत्र	रेखा	लत्तादि दोष रेखाएँ	चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरूराशि	● विवाह लग्न समय दिवा–रात्रि एवं पूजा दानादि उपकरा–सूत्रावली ●
आश्विन शुक्ल ११	शुक्र	०३-१०-२५	धनिष्ठा	१०	।।।।।।।।।।	म./कुं.	कन्या	मिथुन	विवाह लग्न २ वृषभ रात्रि ८।३६ से १०।३३ लग्न ३ मिथुन रात्रि १०।३३ से १२।४६
कार्तिक कृष्ण ५	शनि	११-१०-२५	रोहिणी	७	।ऽ।।।ऽचौ।ऽ।।	वृषभ	कन्या	मिथुन	विवाह लग्न १० मकर दिवा २।०७ से ३।२० मं. १० पू.भान्तमपि
कार्तिक कृष्ण ५	शनि	११-१०-२५	मृगशिरा	७	ऽश।।।।ऽचौ।ऽ।।	वृ./मि.	कन्या	मिथुन	विवाह लग्न २ रात्रि ८।०४ से १०।०१ चं. १ परिहारः लग्न रात्रि १०।०१ से २।३२ शु.३ पू.
कार्तिक शुक्ल १	बुध	२२-१०-२५	स्वाति	१०	।।।।।।।।।।	तुला	तुला	कर्क	विवाह लग्न ३ मिथुन रात्रि ९।१८ से ११।३१ लग्न ४ कर्क रात्रि ११।३१ से १।४९ भान्तमपि शु.३ पू.
कार्तिक शुक्ल ३	शुक्र	२४-१०-२५	अनुराधा	९	।।।।।ऽचौ।।।।	वृश्चिक	तुला	कर्क	विवाह लग्न १० मकर दिवा १२।५३ से २।३८
कार्तिक शुक्ल ३	शुक्र	२४-१०-२५	अनुराधा	१०	।।।।।।।।।।	वृश्चिक	तुला	कर्क	विवाह लग्न ४ कर्क रात्रि ११।२३ से १।४१ शु. ३ पू.
कार्तिक शुक्ल ६	सोम	२७-१०-२५	मूल	८	।।।ऽगु।।।ऽ।।	धनु	तुला	कर्क	विवाह लग्न १० मकर दिवा १२।४१ से १।२८ गु.पाद वेधाऽभावः भान्तमपि
कार्तिक शुक्ल ६	मंगल	२८-१०-२५	उत्तराषाढ	७	।।।।ऽऽअ।ऽ।।	मकर	तुला	कर्क	विवाह लग्न ४ कर्क रात्रि ११।०७ से १।२५ चं.७ शु.३ पू.
कार्तिक शुक्ल ८	गुरू	३०-१०-२५	धनिष्ठा	८	।ऽ।।।ऽरा।।।।	मकर	तुला	कर्क	विवाह लग्न ४ कर्क रात्रि १०।५९ से १।१७ चं.७ शु.३ पू.
कार्तिक शुक्ल ९	शुक्र	३१-१०-२५	धनिष्ठा	८	।ऽ।।।ऽरा।।।।	कुम्भ	तुला	कर्क	विवाह लग्न १० मकर दिवा १।५० से २।१० चं.७ पू.
कार्तिक शुक्ल ११	रवि	०२-११-२५	उत्तराभाद्रपद	७	ऽसू।।।।।ऽ।।ऽ	मीन	तुला	कर्क	विवाह लग्न ४ कर्क रात्रि १०।४७ से ११।१०
कार्तिक शुक्ल ११	रवि	०२-११-२५	उत्तराभाद्रपद	८	ऽसू।।।।।।।।ऽ	मीन	तुला	कर्क	विवाह लग्न ४ कर्क रात्रि ११।१० से १।०५
कार्तिक शुक्ल १३	सोम	०३-११-२५	उत्तराभाद्रपद	८	ऽसू।।।।।।।।ऽ	मीन	तुला	कर्क	विवाह लग्न १० मकर दिवा १२।१४ से १।५८ गु.७ पू.दग्धा परिहारः
कार्तिक शुक्ल १३	सोम	०३-११-२५	रेवती	८	।ऽ।।।ऽरो।।।।	मीन	तुला	कर्क	विवाह लग्न ४ कर्क रात्रि १०।४३ से १।०१
कार्तिक शुक्ल १४	मंगल	०४-११-२५	रेवती	८	।ऽ।।।ऽरो।।।।	मीन	तुला	कर्क	विवाह लग्न १० मकर दिवा १२।१० से १२।३५ भान्तमपि
मार्गशीर्ष कृष्ण २	शुक्र	०७-११-२५	रोहिणी	७	।।।।ऽऽअऽ।।।	वृषभ	तुला	कर्क	विवाह लग्न १० मकर दिवा १२।३५ से १।४२ गु.७ पू.
मार्गशीर्ष कृष्ण ३	शनि	०८-११-२५	मृगशिरा	९	ऽश।।।।।।।।।	मिथुन	तुला	कर्क	विवाह लग्न १० मकर दिवा ११।५४ से १।३८ गु.७ पू.
मार्गशीर्ष कृष्ण ८	बुध	१२-११-२५	मघा	८	।।।।।ऽरो।ऽ।।	सिंह	तुला	कर्क	विवाह लग्न ४ कर्क रात्रि १०।०८ से १२।२६

विक्रम संवत् २०८३ – चान्द्र संवत्सर प्रारंभ १९.०३.२०२३

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को नव संवत्सर प्रारंभ होता है। संवत्सर का प्रारंभ उदयकालिक प्रतिपदा के दिन होता है। प्रतिपदा की वृद्धि होने पर इसका प्रारंभ पहले दिन (६० घटी प्रतिपदा के दिन) होता है और प्रतिपदा का क्षय होने पर नवसंवत्सर उसी दिन प्रारंभ होता है, जिस दिन वह प्रतिपदा तिथि प्रारंभ और समाप्त हो रही हो। इस स्थिति में स्पष्ट है नवसंवत्सर का प्रारंभ उस दिन होगा, जिस दिन चैत्र अमा समाप्त हो रही हो। इस बारे में धर्मसिंधुकार का यह वचन अंकित है – तत्र चैत्र शुक्ल प्रतिपदि वत्सराम्भः। तत्रौदयिकी प्रतिपद् ग्राह्या। दिनद्वये उदयव्याप्तौ अव्याप्तौ वा पूर्वा। आगामी वर्ष सं. २०८३ में चैत्र शुक्लपक्ष की प्रतिपदा १९.३.२६ ई. को सं. २०८२ की चैत्र अमावस्या की समाप्ति वाले दिन ही है। सं. २०८३ की चैत्र शुक्ल पक्ष वाली यह प्रतिपदा १९.३.२६ ई. को प्रातः ६ घं.५३ मि. से प्रारंभ होकर २०.३.२६ ई.को सूर्योदय से पहले ही ४ घं.५२ मि.पर समाप्त हो जाएगी। **अतः यहां प्रतिपदा का क्षय है** – यह स्पष्ट है। अपितु उपरोक्त धर्मसिंधु नियमानुसार सं. २०८३ में नवसंवत्सर का प्रारंभ १९.३.२६ ई. गुरूवार को ही होगा यह शास्त्रोक्त व शास्त्र नियमों के अधीन है।

विशेष संकेत – विक्रम संवत् २०८३ चन्द्र नवसंवत्सर का प्रारंभ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के क्षय के कारण १९ मार्च २०२६ ई.को हो रहा है, अतः इससे सम्बंधित चैत्री नवरात्रारम्भ, घटस्थापना आदि अन्य व्रत–पर्व भी इसी दिन रहेंगे – यह भी स्पष्ट है।

श्रीविक्रम संवत् २०८२	श्री निम्बार्काब्द ५१२१-२२	श्रीफसली बंगाली १४३१-१४३२	पारसी शहंशाही १३९४-१३९५	✻ हस्तलिखित जन्म पत्रिका निर्माण एवं विश्लेषण ✻
राष्ट्रीय शाकः १९४७	श्री रामचरणाब्द ३०६-३०७	श्रीकृष्ण संवत् ५२५१-५२५२	हिजरी मुस्लिम सन् १४४६-१४४७	वर–वधु कुण्डली मिलान (विवाह गुण मिलान) ✻ शुभ
भारत स्वातंत्र्य संवत् ७८-७९	श्री रामानन्दाब्द ७२७-७२८	श्रीमहावीर जैन संवत् २५५१-२५५२	श्री खालसा सिक्ख पंथ ३२५-३२६	मुहूर्त, ज्योतिषीय परामर्श आदि कार्य हेतु सम्पर्क करें –
श्री वल्लभाब्द ५४७-५४८	श्री बुद्ध संवत् २५६८-२५६९	श्रीराजेन्द्रगुरू जैन सं. ११८-११९	मलयालम वर्ष १७००-१७०१	**निर्णय सागर पंचांग कार्यालय**
श्री रामानुजाब्द १००९-१०१०	श्री हरिदासाब्द वृन्दावने ५४६-५४७	श्री खरतरगच्छ श्रीसंघ संवत् १००२	ईस्वी सन् २०२५-२०२६	503, तिलक मार्ग, नीमच मो. 8964098640

सांकेतिक सार्वदिशीय शुभ विवाह मुहूर्त आगामी संवत् २०८३

मास–पक्ष–तिथि	वार	दिनांक	विवाह नक्षत्र	रेखा	लत्तादि दोष रेखाएँ	चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरूराशि	● विवाह लग्न समय दिवा–रात्रि एवं पूजा दानादि उपकरा–सूत्रावली ●
वैशाख शुक्ल ३	सोम	२०-०४-२६	रोहिणी	१०	IIIIIIIIII	वृषभ	मेष	मिथुन	विवाह लग्न २ वृषभ चं. १ परिहारः लग्न ३ मिथुन मं. १० पू. लग्न ४ कर्क दिवा १२।४४ प्रा.
वैशाख शुक्ल ३	सोम	२०-०४-२६	रोहिणी	९	IIIIIऽचौIIII	वृषभ	मेष	मिथुन	विवाह लग्न ४ कर्क दिवा १२।४४ उ.
वैशाख शुक्ल ५	मंगल	२१-०४-२६	मृगशिरा	७	ऽराIIIIऽचौIऽII	वृषभ	मेष	मिथुन	विवाह लग्न २ वृषभ चं. १ परिहारः लग्न ३ मिथुन १० पू. लग्न ४ कर्क दिवा १२।३२ या.
वैशाख शुक्ल ५	मंगल	२१-०४-२६	मृगशिरा	७	ऽराIIIIIऽऽII	मिथुन	मेष	मिथुन	विवाह लग्न ४ कर्क दिवा १।१८ उ.
वैशाख शुक्ल १०	रवि	२६-०४-२६	मघा	७	IऽऽकेIIऽअIIII	सिंह	मेष	मिथुन	विवाह लग्न २ वृषभ लग्न ३ मिथुन मं. १० पू. लग्न ४ कर्क केतु युति परिहारः गणितेन क्रान्तिसाम्याऽभावः
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण ४	मंगल	५-०५-२६	मूल	८	IIIऽगुIIIऽII	धनु	मेष	मिथुन	विवाह लग्न १० मकर गुरू पाद वेधाऽभावः
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण ४	बुध	६-०५-२६	मूल	८	IIIऽगुIIIऽII	धनु	मेष	मिथुन	विवाह लग्न ३ मिथुन चं. ७ पू. गुरू पाद वेधाऽभावः
द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल ५	शुक्र	१९-०६-२६	मघा	७	IऽऽकेIIऽराIIII	सिंह	मिथुन	कर्क	विवाह लग्न २ वृषभ शु. ३ पू. केतु युति परिहारः
द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल ६	शनि	२०-०६-२६	मघा	७	IऽऽकेIIऽराIIII	सिंह	मिथुन	कर्क	विवाह लग्न ४ कर्क दिवा ९।२६ या. केतु युति परिहारः
द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल ९	मंगल	२३-०६-२६	हस्त	८	ऽगुIIIIIIऽII	कन्या	मिथुन	कर्क	विवाह लग्न ४ कर्क
द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल १४	रवि	२८-०६-२६	मूल	७	IIIऽबुIऽराIऽII	धनु	मिथुन	कर्क	विवाह लग्न १ मेष बुध पाद वेधाऽभावः गणितेन क्रान्तिसाम्याऽभावः
आषाढ कृष्ण ६	सोम	०६-०७-२६	उत्तराभाद्रपद	८	ऽचंIIIIऽअIIII	मीन	मिथुन	कर्क	विवाह लग्न १ मेष श. १ मेष श. १२ पू. रात्रि १।४२ उ.
आषाढ कृष्ण ७	मंगल	०७-०७-२६	उत्तराभाद्रपद	८	ऽचंIIIIऽअIIII	मीन	मिथुन	कर्क	विवाह लग्न ४ कर्क

संवत् २०८२ साक्षेप
दोषयुक्त अमान्य
● विवाह मुहूर्त ●

● वैशाख पक्षे ●

१ सूर्ये चित्रा/स्वात्यां ता. १३.४.२५ संक्रान्तिः
१३ शनौ उभा/रेवती/अश्विन्यां ता. २६.४.२५ क्षीण चन्द्रः
३० सूर्ये अश्विन्यां ता. २७.४.२५ क्षीण चन्द्रः

● वैशाख शुक्ल पक्षे ●

४ गुरौ मृगशिरायां ता. १.५.२५ भद्रा, लग्नाऽभावः
११ गुरौ हस्ते ता. ८.५.२५ शुक्र तथा पाप ग्रह शनिवेधः
१२ शुक्रे हस्ते ता. ९.५.२५ शुक्र तथा पाप ग्रह शनिवेधः
१२ शुक्रे चित्रायां ता. ९.५.२५ पाप ग्रह राहुवेधः
१३ शनौ चित्रायां ता. १०.५.२५ पाप ग्रह राहुवेधः
१३ शनौ स्वात्यां ता. १०.५.२५ लग्नाऽभावः, व्यतिपातः
१४ सूर्ये स्वात्यां ता. ११.५.२५ भद्रा, व्यतिपातः
१५ चन्द्रे स्वात्यां ता. १२.५.२५ भद्रा

● ज्येष्ठ कृष्ण पक्षे ●

१ भौमे अनुराधायां ता. १३.५.२५ मासान्तः
२ बुधे अनुराधायां ता. १४.५.२५ संक्रान्तिः
३ गुरौ मूले ता. १५.५.२५ भद्रा, मृत्युपंचकः
४ शुक्रे मूले ता. १६.५.२५ मृत्युपंचक
५ सूर्ये उषायां ता. १८.५.२५ लग्नाऽभावः
६ चन्द्रे श्रवणे ता. १९.५.२५ लग्नाऽभावः
८ भौमे धनिष्ठायां ता. २०.५.२५ लग्नाऽभावः
१० गुरौ उभायां ता. २२.५.२५ पापग्रह शनियुतिः
११ शुक्रे उभायां ता. २३.५.२५ पापग्रह शनियुतिः
११ शुक्रे रेवत्यां ता. २३.५.२५ पापग्रह केतुवेधः
१२ शनौ रेवत्यां ता. २४.५.२५ पापग्रह केतुवेधः
१२ शनौ अश्विन्यां ता. २४.५.२५ लग्नाऽभावः, क्षीण चन्द्रः
तदग्रे क्षीण चन्द्रः

● ज्येष्ठ शुक्ल पक्षे ●

८ भौमे उफायां ता. ३.६.२५ मृत्यु पंचकः
९ बुधे हस्ते ता. ४.६.२५ लग्नाऽभावः, पापग्रह शनिवेधः
१० गुरौ हस्ते ता. ५.६.२५ शनिवेधः, व्यतिपातः
११ शुक्रे हस्ते ता. ६.६.२५ व्यतिपातः, शनिवेधः
११ शुक्रे चित्रायां ता. ६.६.२५ लग्नाऽभावः, भद्रा, राहु वेधः
१२ शनौ चित्रायां ता. ७.६.२५ पापग्रह राहु वेधः

➲ अग्रे गुरू अस्तः तदग्रे देवशयन कालांशः

● कार्तिक शुक्ल पक्षे ●

१४ भौमे अश्विन्यां ता. ४.११.२५ पाप ग्रह केतु वेधः, भद्रा
१५ बुधे अश्विन्यां ता. ५.११.२५ पाप ग्रह केतु वेधः, भद्रा

● मार्गशीर्ष कृष्ण पक्षे ●

१ गुरौ रोहिण्यां ता. ६.११.२५ परिघार्धः
२ शुक्रे मृगशिरायां ता. ७.११.२५ भद्रा
९ गुरौ मघायां ता. १३.११.२५ लग्नाऽभावः
१० शुक्रे उफायां ता. १४.११.२५ भद्रा, वैधृतिः
११ शनौ उफा/हस्ते ता. मासान्तः
१२ सूर्ये हस्त/चित्रायां ता. १६.११.२५ संक्रान्तिः, क्षीण चन्द्रः
तदग्रे क्षीण चन्द्रः

● मार्गशीर्ष शुक्ल पक्षे ●

१ शुक्रे अनुराधायां ता. २१.११.२५ क्षीण चन्द्रः
४ चन्द्रे उषायां ता. २४.११.२५ अल्प रेखा ५
६ बुधे श्रवण/घनिष्ठायां ता. २६.११.२५ महापातः, मृत्यु पंचकः
७ गुरौ घनिष्ठायां ता. २७.११.२५ लग्नाऽभावः, मृत्यु पंचकः
९ शनौ उभायां ता. २९.११.२५ लग्नाऽभावः
१० शनौ रेवत्यां ता. ३०.११.२५ लग्नाऽभावः
११ चन्द्रे रेवत्यां ता. १.१२.२५ व्यतिपातः, भद्रा
११ चन्द्रे अश्विन्यां ता. १.१२.२५ पापग्रह केतु वेधः
१२ भौमे अश्विन्यां ता. २.१२.२५ पापग्रह केतु वेधः

● पौष कृष्ण पक्षे ●

१ शुक्रे रोहिणी/मृगशिरायां ता. ५.१२.२५ लग्नाऽभावः, मृत्यु पंचकः
३ शनौ मृगशिरायां ता. ६.१२.२५ मृत्यु पंचकः अल्प रेखा ५
५ भौमे मघायां ता. ९.१२.२५ वैधृतिः
६ बुधे मघायां ता. १०.१२.२५ वैधृतिः लग्नाऽभावः

➲ अग्रे शुक्रास्तः एवं मल मासः

● फाल्गुन कृष्ण पक्षे ●

५ शुक्रे हस्ते ता. ६.२.२६ पाप ग्रह शनि वेधः
५ शुक्रे चित्रायां ता. ६.२.२६ भुजंग पातः
६ शनौ चित्रायां ता. ७.२.२६ भुजंग पातः, महापातः
६ शनौ स्वात्यां ता. ७.२.२६ पापग्रह राहु वेधः
७ सूर्ये स्वात्यां ता. ८.२.२६ पापग्रह राहु वेधः
९ बुधे अनुराधायां ता. ११.२.२६ लग्नाऽभावः
१० गुरौ मूले ता. १२.२.२६ संक्रान्तिः
११ शुक्रे मूले ता. १३.२.२६ लग्नाऽभावः, गुरू पाद वेधः
१२ शनौ उषायां ता. १४.२.२६ क्षीण चन्द्रः
तदग्रे क्षीण चन्द्रः

● फाल्गुन शुक्ल पक्षे ●

२ गुरौ उभायां ता. १९.२.२६ पाप ग्रह शनि युतिः
३ शुक्रे उभायां ता. २०.२.२६ पाप ग्रह शनि युतिः
३ शुक्रे रेवत्यां ता. २०.२.२६ लग्नाऽभावः, भद्रा
४ शनौ अश्विन्यां ता. २१.२.२६ पाप ग्रह केतु वेधः
५ सूर्ये अश्विन्यां ता. २२.२.२६ पाप ग्रह केतु वेधः

➲ अग्रे होलाष्टकः

● चैत्र कृष्ण पक्षे ●

१ बुधे उफायां ता. ४.३.२६ मृत्यु पंचकः, भुजंग पातः
२ गुरौ उफायां ता. ५.३.२६ भुजंग पातः
३ गुरौ हस्ते ता. ५.३.२६ पापग्रह शनि वेधः
३ शुक्रे हस्ते ता. ६.३.२६ पापग्रह शनि वेधः, भद्रा
३ शुक्रे चित्रायां ता. ६.३.२६ पापग्रह सूर्य वेधः
४ शनौ चित्रायां ता. ७.३.२६ पापग्रह सूर्य वेधः
४ शनौ स्वात्यां ता. ७.३.२६ पापग्रह राहु वेधः
५ सूर्ये स्वात्यां ता. ८.३.२६ पापग्रह राहु वेधः
६ चन्द्रे अनुराधायां ता. ९.३.२६ लग्नाऽभावः, भद्रा
१० शुक्रे उषायां ता. १३.३.२६ मासान्तः
१० शनौ उषा/श्रवणे ता. १४.३.२६ संक्रान्तिः

➲ अग्रे मीन संक्रान्ति

** आत्मीय निवेदन **

इस पंचांग के निर्माण एवं मुद्रण में यथायोग्य पूर्णतया सावधानी–दक्षता रखी गई है। तथापि मानवीय सहजगतिक दृष्टिदोष वश तथा कम्प्यूटर यांत्रिकी तकनीकी वश किसी भी प्रकार की अशुद्धि–मुद्रण व्यतिक्रम के हेतु प्रकाशक–पंचांग रचियता एवं मुद्रक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी प्रकार के न्यायिक विवाद–समाधान हेतु न्यायक्षेत्र नीमच छावनी–मध्यप्रदेश ही मान्य रहेगा।

भवदीय – शुभाऽभिलाषी

निर्णयसागर पंचांग–नीमच

● विवाह मुहूर्त में दस दोषों का संक्षिप्त विवरण ●

हमारे पंचांग में निम्नवर्णित दस दोषों का शोधन करने के उपरांत एवं देशानुकूल विवाह मुहूर्त प्रस्तुत किए हैं। इन दोषों को विवाह मुहूर्त में रेखा–स्तंभ में दर्शाया गया है। दोषों के क्रम में जहाँ दोष है वहां (ऽ) और जहां दोष नहीं है वहां (।) ऐसी रेखा दी है। इन दस दोषों में से भी क्रूर युति, क्रान्तिसाम्य, दग्धा, मृत्युबाण, वेध दोष सर्वथा त्याज्य हैं।

◆ १. लत्ता दोष चक्र ◆

ग्रह	सूर्य	पूर्णचंद्र	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	राहु
वि.न.	१२	२२	३	७	६	५	८	९
दिशा	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम
फल	धननाश	भय	मृत्यु	भय	बन्धुनाश	कार्यहानि	कुलक्षय	मरण

उदाहरण – सूर्य अश्विनी नक्षत्र पर हो और विवाह उ.फा. का हो तो सूर्य नक्षत्र से विवाह नक्षत्र १२ वां होने से यह सूर्य का लत्तादोष वाला विवाह नक्षत्र होगा। इसी प्रकार अन्य ग्रहों का लत्ता दोष भी जानें।

◆ २. पातदोष चक्र ◆

हर्षण, वैधृति, साध्य, व्यतिपात, गण्ड और शूल योगों का अंत जिस नक्षत्र में हो वह पात से दूषित होता है। इन नक्षत्रों में विवाह करने से पात दोष होता है।

विवाह नक्षत्र	रो.	मृग.	मघा	उ.फा.	हस्त	स्वाति	अनु.	मूल	उ.षा.	उ.भा.	रेवती
सूर्यधिष्ठित नक्षत्र	आर्द्रा	मृ.	अश्वि.	कृ.	भ.	कृ.	अश्वि.	रो.	भ.	भ.	अश्वि.
	पुन.	आ.	मृ.	आ.	मृ.	श्र.	आ.	ज्ये.	पुन.	श.	म.
	श.	ज्ये.	ज्ये.	वि.	श.	ध.	उषा.	ध.	श.	वि.	ध.
	पूफा.	ध.	पुष्य	पूफा.	पूभा.	पुष्य	पूभा.	अश्ले.	वि.	उफा.	ज्ये.
	चि.	म.	ह.	उभा.	स्वा.	ह.	पूषा.	मू.	अनु.	मू.	पूफा.
	मू.	ह.	रे.	पूभा.	म.	रे.	पूफा.	उभा.	उषा.	पूफा.	स्वा.

◆ ३. युतिदोष ◆

जिस नक्षत्र का विवाह हो उसी नक्षत्र में यदि कोई ग्रह हो तो उस ग्रह का युतिदोष समझा जाता है। चन्द्र उच्च, मित्र वा स्वक्षेत्री हो तो युतिदोष नहीं होता, अपितु श्रेष्ठ होता है। सूर्य, मंगल, शनि, राहु, केतु की युति दारिद्रय, मृत्यु आदि भयप्रद मानी गई है।

◆ ४. वेध दोष चक्र ◆

अश्विनी	रोहिणी	मृगशिरा	मघा	उफा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	अनुराधा	मूल	उषा.	श्रवण	धनिष्ठा	उ.भा.	रेवती
पूफा.	अभिजित	उषा.	श्रवण	रेवती	उभा.	पूभा.	शत.	भरणी	पुनर्वसु	मृग.	मघा	आश्लेषा	हस्त	उफा.

उपर के नक्षत्र का विवाह और नीचे के नक्षत्र पर क्रूर ग्रह हो तो वेधदोष होता है, यह सर्वत्र अवश्य ही त्याग देना चाहिए।

◆ ५. जामित्र दोष चक्र ◆

विवाह लग्न से सातवें ग्रह होने से जामित्र दोष होता है। उपर वाली पंक्ति में विवाह नक्षत्र हैं। यानि १४ वें नक्षत्र में पापी ग्रह का जामित्र दोष वर्जनीय है।

अश्विनी	रोहिणी	मृगशिरा	मघा	उफा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	अनुराधा	मूल	उषा.	श्रवण	धनिष्ठा	उभा.	रेवती
चित्रा	अनुराधा	ज्येष्ठा	धनिष्ठा	पूभा.	उभा.	रेवती	अश्विनी	कृतिका	मृगशिरा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	उफा.	हस्त

◆ ६. बाणज्ञान सुलभ चक्र ◆

बाण नाम	सूर्य के गतांश प्रत्येक राशि के	वर्जित वार	वर्जित कार्य	वर्जित समय
रोग	८/१७/२६	रविवार	उपनयन	रात्रि
अग्नि	२/११/२०/२९	मंगलवार	गृहप्रवेश	दिन–रात
नृप	४/१३/२२	शनिवार	राजसेवा	दिन
चौर	६/१५/२४	मंगलवार	यात्रा	रात्रि
मृत्यु	१/१०/१९/२८	बुधवार	विवाह	संध्या

◆ ७. एकार्गल दोष ◆

व्याघात, गण्ड, व्यतिपात, विष्कुंभ, शूल, वैधृति, वज्र, परिघ, अतिगंड ये योग हो और सूर्य के नक्षत्र से विवाह का नक्षत्र अभिजित् सहित गिनने से विषम हो तो एकार्गल दोष होता है।

◆ ८. उपग्रह दोष ◆

सूर्य के नक्षत्र से ५ वें, ७ वें, ८ वें, १० वें, १४ वें, १५ वें, १८ वें, १९ वें, २१ वें, २२ वें, २३ वें, २४ वें, २५ वें नक्षत्र पर चन्द्र हो तो उपग्रह दोष होता है।

◆ ९. क्रान्तिसाम्य दोष चक्र ◆

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	कन्या	तुला
सिंह	मकर	धनु	वृश्चिक	मीन	कुंभ

नीचे दी गई सारणी में पंक्ति १ और २ में दी गई राशि क्रमशः में कहीं भी सूर्य एवं चन्द्रमा हो तो स्थूल रूप से क्रांतिसाम्य दोष होता है। यह सर्वत्र वर्जित है। जैसे – मेष के सूर्य और सिंह के चन्द्रमा में या सिंह के सूर्य और मेष के चन्द्रमा में होता है। हमारे निर्णयसागर पंचांग के विवाह मुहूर्त शोधन में गणितागत सूक्ष्म क्रांतिसाम्य ही लिया गया है। जो महापात से गणित करना चाहिए।

◆ १०. दग्धा तिथि दोष ◆

सूर्य राशि	धनु	वृष	कर्क	कन्या	सिंह	मकर
	मीन	कुंभ	मेष	मिथुन	वृश्चिक	तुला
तिथि	२	४	६	८	१०	१२

इन संक्रान्तियों के सौर मास में ये दग्धा तिथियां विवाह में वर्जनीय हैं। इनका उपयोग संभाग विशेष पर निर्भर करता है।

♣ यज्ञोपवीत मुहूर्त्ताः ♣

चैत्र शुक्ल पक्षे

५ बुधे रोहिण्यां ल. २ दिवा ८।५० उ. ता. २.४.२५
१० चन्द्रे आश्लेषायां ल. २ अभिजिति ता. ७.४.२५ नक्षत्रवृद्धि
१२ बुधे पूफायां ल. २ दिवा ९।५७ उ.ता. ९.४.२५

वैशाख कृष्ण पक्षे

१ चन्द्रे स्वात्यां ल. ३ अभिजिति ता. १४.४.२५

वैशाख शुक्ल पक्षे

३ बुधे रोहिण्यां ल. २,३ ता. ३०.४.२५
४ गुरौ मृगशिरायां अभिजिति ता. १.५.२५
५ शुक्रे आर्द्रायां ल. २ अभिजिति ता. २.५.२५
१० बुधे पूफायां ल. २,३ ता. ७.५.२५
११ गुरौ उफायां अभिजिति दिवा १२।३० उ.ता. ८.५.२५ केतु युति परिहारः

ज्येष्ठ कृष्ण पक्षे

५ सूर्ये उषायां ल. ३ अभिजिति ता. १८.५.२५

ज्येष्ठ शुक्ल पक्षे

२ बुधे मृगशिरायां ल. ३ ता. २८.५.२५
३ गुरौ आर्द्रायां अभिजिति ता. २९.५.२५
१२ सूर्ये स्वात्यां ल. ३ अभिजिति दिवा १२।४२ या. ता. ८.६.२५

फाल्गुन शुक्ल पक्षे

२ गुरौ पूभायां ल. २ अभिजिति ता. १९.२.२६
३ शुक्रे उभायां ल. २ अभिजिति ता. २०.२.२६ पाप ग्रह शनि युतिः

चैत्र कृष्ण पक्ष

२ गुरौ उफायां ल.चिं.दिवा ८।१८ या.ता. ५.३.२६

♣ गृहारंभ मुहूर्त्ताः ♣

वैशाख कृष्ण पक्षे

१ चन्द्रे स्वात्यां ल. ३ अभिजिति ता. १४.४.२५

वैशाख शुक्ल पक्षे

११ गुरौ उफायां अभिजिति दिवा १२।३० उ.ता. ८.५.२५ केतु युति परिहारः

श्रावण कृष्ण पक्षे

२ शनौ उषायां ल.चिं.दिवा ६।३६ या.ता. १२.७.२५

भाद्रपद कृष्ण पक्षे

२ चन्द्रे शतभिषायां अभिजिति दिवा १।०० या.ता. ११.८.२५

भाद्रपद शुक्ल पक्षे

१२ गुरौ उषायां अभिजिति ता. ४.९.२५

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्षे

२ शुक्रे रोहिण्यां अभिजिति दिवा १२।३५ उ.ता. ७.११.२५

पौष कृष्ण पक्षे

१ शुक्रे रोहिण्यां ल.चिं.दिवा ११।४६ या. ता. ५.१२.२५
१ शुक्रे मृगशिरायां अभिजिति ता. ५.१२.२५
२ शनौ मृगशिरायां ल.चिं.दिवा ८।४९ या.ता. ६.१२.२५

चैत्र कृष्ण पक्षे

१ बुधे उफायां ७।३७ उ.ल. २ ता. ४.३.२६

♣ नवगृह प्रवेश मुहूर्त्ताः ♣

वैशाख कृष्ण पक्षे

१२ शुक्रे उभायां ल. ३ ता. २५.४.२५

वैशाख शुक्ल पक्षे

११ गुरौ उफायां अभिजिति दिवा १२।३० उ. ता. ८.५.२५ केतु युति परिहारः

पौष कृष्ण पक्षे

८ शुक्रे उफायां अभिजिति ता. १२.१२.२५

फाल्गुन कृष्ण पक्षे

९ बुधे अनुराधायां ल.चिं.दिवा ९।५९ उ.१०।५३ या. ता. ११.२.२६ मासान्तः

♣ सामान्य नवगृह प्रवेश मुहूर्त्ताः ♣

वैशाख कृष्ण पक्षे

११ गुरै शतभिषायां ल. २ ता. २४.४.२५

वैशाख शुक्ल पक्षे

६ शनौ पुष्ये अभिजिति दिवा १२।३४ उ. ता. ३.५.२५

ज्येष्ठ शुक्ल पक्षे

१२ शनौ स्वात्यां ल.चि.दिवा ९।४० उ. ११।१७ या. ता. ७.६.२५

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्षे

७ गुरौ धनिष्ठायां अभिजिति ता. २७.११.२०२५
८ शुक्रे शतभिषायां अभिजिति दिवा १२।२९ उ.ता. २८.११.२०२५

● पंचांग में दिए गए मुहूर्त्त के अतिरिक्त आज के आधुनिक युग और व्यस्त जीवनशैली में आवश्यकता अनुसार **लोकाचार – पारम्परिक – मानक रूप से संवत् २०८२ में निम्न अबूझ मुहूर्त्त** – शुभ दिवस भी उपयोगी रह सकते हैं :- ३० मार्च – **चैत्री नववर्ष**, ६ अप्रैल – **रामनवमी**, ३० अप्रैल – **अक्षय तृतीया**, ५ मई – **जानकी नवमी**, १२ मई – **पीपल पूर्णिमा**, ५ जून – **गंगा दशमी**, ४ जुलाई – **भड़ली नवमी**, ६ जुलाई – **देवशयनी एकादशी**, २७ अगस्त – **गणेश चतुर्थी**, २ अक्टूबर – **विजयादशमी**, १८ अक्टूबर – **धनतेरस**, १ नवम्बर – **देवप्रबोधिनी एकादशी**, २३ जनवरी – **बसंत पंचमी**, १९ फरवरी – **फुलेरा दूज**

वेधशुद्धि सहिताः चक्रशुद्धि रहिताः

● संकेत समाधान – पूर्वोक्त गृहनिर्माण–नवीन गृह प्रवेश मुहूर्त्तों के अतिरिक्त चन्द मुहूर्त्त रचना शोधन विविध चक्रशुद्धि से रहित तथा वेध विगणना मान्यतायुक्त तथा मासादि शुद्धि न्यूनता पक्ष वाले भी समयानुकूल देशकाल स्थिति एवं विशेष आवश्यकता अनुसार समाधान समुचित तथा श्रीकार वेला एवं ल.चि.से अभिप्राय योग्य चौघटिका–वेला मान्य।

♣ गृहारंभ मुहूर्त्ताः ♣

वैशाख कृष्ण पक्षे

८ चन्द्रे उषायां ल. २ अभिजिति दिवा १२।३७ या.ता. २१.४.२५ गु.पाद वेधाऽभावः
११ गुरौ शतभिषायां ल. २ ता. २४.४.२५
१२ शुक्रे उभायां ल. ३ ता. २५.४.२५

वैशाख शुक्ल पक्षे

३ बुधे रोहिण्यां ल. २,३ ता. ३०.४.२५
४ गुरौ मृगशिरायां अभिजिति ता. १.५.२५
६ शनौ पुष्ये अभिजिति दिवा १२।३४ उ. ता. ३.५.२५

ज्येष्ठ शुक्ल पक्षे

२ बुधे मृगशिरायां ल. ३ ता. २८.५.२५
५ शनौ पुष्ये ल. ३ ता. ३१.५.२५
१२ शनौ स्वात्यां ल.चि.दिवा ९।४० उ. ११।१७ या. ता. ७.६.२५

श्रावण कृष्ण पक्षे

७ गुरौ रेवत्यां अभिजिति ता. १७.७.२५ पापग्रह केतु वेधः
११ चन्द्रे रोहिण्यां अभिजिति ता. २१.७.२५

श्रावण शुक्ल पक्षे

१ शुक्रे पुष्ये अभिजिृति ता. २५.७.२५ आवश्यके
६ बुधे हस्ते ल.चिं.ता. ३०.७.२५ पापग्रह शनि वेधः
१० चन्द्रे अनुराधायां ल.चिं.दिवा ९।१३ या. ता. ४.८.२५

भाद्रपद कृष्ण पक्षे

४ बुधे रेवत्यां ल.चिं.ता. १३.८.२५ तिथि क्षये चांवल अनुदानतः परिहारे
६ गुरौ रेवत्यां ल.चिं.दिवा ९।०६ या.ता. १४.८.२५
१० चन्द्रे मृगशिरायां ल.चिं.दिवा ६।२३ या.ता. १८.८.२५

भाद्रपद शुक्ल पक्षे

२ चन्द्रे उफायां अभिजिति ता. २५.८.२५
५ गुरौ स्वात्यां अभिजिति दिवा ८।४४ उ. ता. २८.८.२५
६ शुक्रे स्वात्यां ल.चिं.दिवा ११।३९ या. ता. २९.८.२५

आश्विन शुक्ल पक्षे

१ चन्द्रे उफायां ल.चिं.दिवा ११।२४ या.ता. २२.९.२५ आवश्यके
५ शनौ अनुराधायां ल. ९ अभिजिति ता. २७.९.२५
१० गुरौ उषायां ल.चिं.दिवा ९।१३ या. ता. २.१०.२५
१२ शनौ धनिष्ठायां ल.चिं.दिवा ९।०९ या. ता. ४.१०.२५

कार्तिक कृष्ण पक्षे

९ बुधे पुष्ये ल. ९ दिवा १२।०० या. ता. १५.१०.२५

कार्तिक शुक्ल पक्षे

१ बुधे स्वात्यां ल.चिं.ता. २२.१०.२५ आवश्यके
३ शुक्रे अनुराधायां अभिजिति ता. २४.१०.२५
७ बुधे उषायां ल.चिं.दिवा ९।२४ या.ता. २९.१०.२५
१३ चन्द्रे उभायां अभिजिति ता. ३.११.२५

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्षे

११ शनौ उफायां अभिजिति ता. १५.११.२५ मासान्तः

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्षे

१ शुक्रे अनुराधायां अभिजिति ता. २१.११.२५ आवश्यके
७ गुरौ धनिष्ठायां अभिजिति ता. २७.११.२५

पौष कृष्ण पक्षे

८ शुक्रे उफायां अभिजिति ता. १२.१२.२५

फाल्गुन कृष्ण पक्षे

६ शनौ चित्रायां अभिजिति ता. ७.२.२६
९ बुधे अनुराधायां ल.चिं.दिवा ९।५९ उ.१०।५३ या.ता. ११.२.२६ मासान्तः

♣ गृह प्रवेश ♣

वैशाख कृष्ण पक्षे

१ चन्द्रे स्वात्यां ल. ३ अभिजिति ता. १४.४.२५
८ चन्द्रे उषायां ल. २ अभिजिति दिवा १२।३७ या.ता. २१.४.२५ गुरू पाद वेधाऽभावः

वैशाख शुक्ल पक्षे

३ बुधे रोहिण्यां ल. २,३ ता. ३०.४.२५
४ गुरौ मृगशिरायां अभिजिति ता. १.५.२५

ज्येष्ठ शुक्ल पक्षे

२ बुधे ज्येष्ठायां ल. ३ ता. २८.५.२५
५ शनौ पुष्ये ल. ३ ता. ३१.५.२५

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्षे

१ शुक्रे अनुराधायां अभिजिति ता. २१.११.२५ आवश्यके

पौष कृष्ण पक्षे

१ शुक्रे रोहिण्यां ल.चिं.दिवा ११।४६ या.ता. ५.१२.२५
१ शुक्रे मृगशिरायां अभिजिति ता. ५.१२.२५
२ शनौ मृगशिरायां ल.चिं.दिवा ८।४९ या.ता. ६.१२.२५

फाल्गुन कृष्ण पक्षे

६ शनौ चित्रायां अभिजिति ता. ७.२.२६

फाल्गुन शुक्ल पक्षे

३ शुक्रे उभायां ल. २ अभिजिति ता. २०.२.२६ पापग्रह शनि युतिः

चैत्र कृष्ण पक्षे

१ बुधे उफायां ल. २ ता. ४.३.२६
२ गुरौ उफायां ल.चिं.दिवा ८।१८ या. ता. ५.३.२६

♣ देवप्रतिष्ठा मुहूर्त्ताः ♣

वैशाख कृष्ण पक्षे
१ चन्द्रे स्वात्यां ल. ३ अभिजिति ता. १४.४.२५
७ सूर्ये उषायां अभिजिति ता. २०.४.२५ गु.पाद वेधाऽभावः
८ चन्द्रे उषायां ल. २ अभिजिति दिवा १२।३७ या.ता. २१.४.२५ गु.पाद वेधाऽभावः
११ गुरौ शतभिषायां ल. २ ता. २४.४.२५
१२ शुक्रे उभायां ल. ३ ता. २५.४.२५

वैशाख शुक्ल पक्षे
३ बुधे रोहिण्यां ल. २, ३ ता. ३०.४.२५
४ गुरौ मृगशिरायां अभिजिति ता. १.५.२५
६ शनौ पुनर्वसौ ल. २, ३ अभिजिति दिवा १२।३४ या.ता. ३.५.२५
६ शनौ पुष्ये अभिजिति दिवा १२।३४ उ.ता. ३.५.२५
७ सूर्ये पुष्ये दिवा ७।१९ या.ल.चि.ता. ४.५.२५
११ गुरौ उफायां अभिजिति दिवा १२।३० उ. ता. ८.५.२५ केतु युति परिहारः

ज्येष्ठ कृष्ण पक्षे
५ सूर्ये उषायां ल. ३ अभिजिति ता. १८.५.२५
१३ सूर्ये अश्विन्यां ल. ३ ता. २५.५.२५

ज्येष्ठ शुक्ल पक्षे
२ बुधे मृगशिरायां ल. ३ ता. २८.५.२५
५ शनौ पुष्ये ल. ३ ता. ३१.५.२५
१२ शनौ स्वात्यां ल.चि.दिवा ९।४०उ. ११।१७ या. ता. ७.६.२५

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्षे
६ चन्द्रे पुनर्वसौ अभिजिति ता. १०.११.२५
११ शनौ उफायां अभिजिति ता. १५.११.२५ मासान्तः
१२ सूर्ये हस्ते अभिजिति ता. १६.११.२५ संक्रान्तिः

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्षे
१ शुक्रे अनुराधायां अभिजिति ता. २१.११.२५ आवश्यके
६ बुधे श्रवणे दिवा ११।१२ उ. ता. २६.११.२५
७ गुरौ धनिष्ठायां अभिजिति ता. २७.११.२५
८ शुक्रे शतभिषायां अभिजिति दिवा १२।२९ उ.ता. २८.११.२५
१० सूर्ये उभायां अभिजिति दिवा ता. ३०.११.२५

पौष कृष्ण पक्षे
१ शुक्रे रोहिण्यां ल.चि.दिवा ११।४६ या. ता. ५.१२.२५
१ शुक्रे मृगशिरायां अभिजिति ता. ५.१२.२५
२ शनौ मृगशिरायां ल.चि.दिवा ८।४९ या. ता. ६.१२.२५
८ शुक्रे उफायां अभिजिति ता. १२.१२.२५

फाल्गुन कृष्ण पक्षे
६ शनौ चित्रायां अभिजिति ता. ७.२.२६
९ बुधे अनुराधायां ल.वि.दिवा ९।५९ उ. १०।५३ ता. ११.२.२६ मासान्तः

फाल्गुन शुक्ल पक्षे
३ शुक्रे उभायां ल. २ अभिजिति ता. २०.२.२६ पापग्रह शनि युतिः

चैत्र कृष्ण पक्षे
१ बुधे उफायां ल. २ ता. ४.३.२६
२ गुरौ उफायां ल.चिं.दिवा ८।१८ या.ता. ५.३.२६

● दक्षिणायने तु उग्र देवानां प्रतिष्ठा मुहूर्त्त ●

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्षे
१ शुक्रे अनुराधायां अभिजिति ता. २१.११.२५ आवश्यके
६ बुधे श्रवणे ल.चिं.दिवा ११।१२ उ.ता. २६.११.२५
७ गुरौ घनिष्ठायां अभिजिति ता. २७.११.२५
८ शुक्रे शतभिषायां अभिजिति दिवा १२।२९ उ. ता. २८.११.२५
१० सूर्ये उभायां अभिजिति ता. ३०.११.२५

पौष कृष्ण पक्षे
१ शुक्रे रोहिण्यां ल.चिं.दिवा ११।४६ या.ता. ५.१२.२५
१ शुक्रे मृगशिरायां अभिजिति ता. ५.१२.२५
२ शनौ मृगशिरायां ल.चिं.दिवा ८।४९ या. ता. ६.१२.२५
८ शुक्रे उफायां अभिजिति ता. १२.१२.२५

♣ द्विरागमन मुहूर्त्ताः ♣

वैशाख कृष्ण पक्षे
१ चन्द्रे स्वात्यां ल. ३ अभिजिति ता. १४.४.२५
८ चन्द्रे उषायां ल. २ अभिजिति दिवा १२।३७ या.ता. २१.४.२५ गु.पाद वेधाऽभावः
११ गुरौ शतभिषायां ल. २ ता. २४.४.२५
१२ शुक्रे उभायां ल. ३ ता. २५.४.२५

वैशाख शुक्ल पक्षे
३ बुधे रोहिण्यां ल. २, ३ ता. ३०.४.२५
४ गुरौ मृगशिरायां अभिजिति ता. १.५.२५
११ गुरौ उफायां अभिजिति दिवा १२।३० उ.ता. ८.५.२५ केतु युति परिहारः

ज्येष्ठ शुक्ल पक्षे
२ बुधे मृगशिरायां ल. ३ ता. २८.५.२५

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्षे
१ शुक्रे अनुराधायां अभिजिति ता. २१.११.२५ आवश्यके
६ बुधे श्रवणे ल.चिं.दिवा ११।१२ उ.ता. २६.११.२५
७ गुरौ धनिष्ठायां अभिजिति ता. २७.११.२५

पौष कृष्ण पक्षे
१ शुक्रे रोहिण्यां ल.चि.दिवा ११।४६ या. ता. ५.१२.२५
१ शुक्रे मृगशिरायां अभिजिति ता. ५.१२.२५
८ शुक्रे उफायां अभिजिति ता. १२.१२.२५

फाल्गुन कृष्ण पक्षे
९ बुधे अनुराधायां ल.चिं.दिवा ९।५९ उ. १०।५३ या.ता. ११.२.२६ मासान्तःआवश्यके
११ शुक्रे मूले ल.चिं.दिवा ९।३५ या.ता. १३.२.२६ गुरू पाद वेधाऽभावः

फाल्गुन शुक्ल पक्षे
३ शुक्रे उभायां ल. २ अभिजिति ता. २०.२.२६ पापग्रह शनि युतिः

चैत्र कृष्ण पक्षे
१ बुधे उफायां ल. २ ता. ४.३.२६
२ गुरौ उफायां ल.चिं.दिवा ८।१८ या. ता. ५.३.२६

♣ विपणि–व्यापार मुहूर्त्ताः ♣

वैशाख कृष्ण पक्षे
७ सूर्ये उषायां अभिजिति ता. २०.४.२५ गुरू पाद वेधाऽभावः
८ चन्द्रे उषायां ल. २ अभिजिति दिवा १२।३७ या.ता. २१.४.२५ गु.पाद वेधाऽभावः
१२ शुक्रे उभायां ल. ३ ता. २५.४.२५

वैशाख शुक्ल पक्षे
३ बुधे रोहिण्यां ल. २, ३ ता. ३०.४.२५
४ गुरौ मृगशिरायां अभिजिति ता. १.५.२५
६ शनौ पुष्ये अभिजिति दिवा १२।३४ उ. ता. ३.५.२५
७ सूर्ये पुष्ये दिवा ७।१९ या.ल.चिं.ता. ४.५.२५
११ गुरौ उफायां अभिजिति दिवा १२।३० उ.ता. ८.५.२५ केतु युति परिहारः

ज्येष्ठ कृष्ण पक्षे
५ सूर्ये उषायां ल. ३ अभिजिति ता. १८.५.२५
१३ सूर्ये अश्विन्यां ल. ३ ता. २५.५.२५

ज्येष्ठ शुक्ल पक्षे
२ बुधे मृगशिरायां ल. ३ ता. २८.५.२५
५ शनौ पुष्ये ल. ३ ता. ३१.५.२५

श्रावण कृष्ण पक्षे
२ शनौ उषायां ल.चिं.दिवा ६।३६ या. ता. १२.७.२५
७ गुरौ रेवत्यां अभिजिति ता. १७.७.२५ पापग्रह केतु वैधः
११ चन्द्रे रोहिण्यां अभिजिति ता. २१.७.२५

श्रावण शुक्ल पक्षे
१ शुक्रे पुष्ये अभिजिति ता. २५.७.२५ आवश्यके
६ बुधे हस्ते ल.चिं.ता. ३०.७.२५ पापग्रह शनि वेधः
९ सूर्ये अनुराधायां अभिजिति ता. ३.८.२५
१० चन्द्रे अनुराधायां ल.चिं.दिवा ९।१३ या.ता. ४.८.२५

भाद्रपद कृष्ण पक्षे
४ बुधे रेवत्यां ल.चिं.ता. १३.८.२५ तिथि क्षये चाँवल अनुदानतः परिहारे
६ गुरौ रेवत्यां ल.चिं. दिवा ९।०६ या.ता. १४.८.२५
१० चन्द्रे मृगशिरायां ल.चिं.दिवा ६।२३ या.ता. १८.८.२५

भाद्रपद शुक्ल पक्षे
२ चन्द्रे उफायां अभिजिति ता. २५.८.२५
१२ गुरौ उषायां अभिजिति ता. ४.९.२५

आश्विन शुक्ल पक्षे
१ चन्द्रे उफायां ल.चिं.दिवा ११।२४ या.ता. २२.९.२५ आवश्यके
५ शनौ अनुराधायां ल.९ अभिजिति ता. २७.९.२५
१० गुरौ उषायां ल.चिं.दिवा ९।१३ या.ता. २.१०.२५

कार्तिक कृष्ण पक्षे
६ सूर्ये मृगशिरायां ल.चिं.दिवा १०।५५ या. ता. १२.१०.२५
९ बुधे पुष्ये ल.९ दिवा १२।०० या.ता. १५.१०.२५
१३ सूर्ये उफायां अभिजिति दिवा १।५२ या.ता. १९.१०.२५

कार्तिक शुक्ल पक्षे
३ शुक्रे अनुराधायां अभिजिति ता. २४.१०.२५
७ बुधे उषायां ल.चिं.दिवा ९।२४ या.ता. २९.१०.२५
१३ चन्द्रे उभायां अभिजिति ता. ३.११.२५

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्षे
२ शुक्रे रोहिण्यां अभिजिति दिवा १२।३५ उ.ता. ७.११.२५
११ शनौ उफायां अभिजिति ता. १५.११.२५ मासान्तः
१२ सूर्ये हस्ते अभिजिति ता. १६.११.२५ संक्रान्तिः

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्षे
१ शुक्रे अनुराधायां अभिजिति ता. २१.११.२५ आवश्यके
१० सूर्ये उभायां अभिजिति ता. ३०.११.२५

पौष कृष्ण पक्षे
१ शुक्रे रोहिण्यां ल.चि.दिवा ११।४६ या.ता. ५.१२.२५
१ शुक्रे मृगशिरायां अभिजिति ता. ५.१२.२५
२ शनौ मृगशिरायां ल.चि.दिवा ८।४९ या.ता. ६.१२.२५
८ शुक्रे उफायां अभिजिति ता. १२.१२.२५

फाल्गुन कृष्ण पक्षे
६ शनौ चित्रायां अभिजिति ता. ७.२.२६
९ बुधे अनुराधायां ल.चिं.दिवा ९।५९ उ. १०।५३ या. ता. ११.२.२६ मासान्तः

फाल्गुन शुक्ल पक्षे
३ शुक्रे उभायां ल. २ अभिजिति ता. २०.२.२६ पापग्रह शनि युतिः

चैत्र कृष्ण पक्षे
१ बुधे उफायां ल. २ ता. ४.३.२६
२ गुरौ उफायां ल.चिं.दिवा ८।१८ या. ता. ५.३.२६

● कलयंत्र–मशीन शुभारंभ ●

वाहन क्रय मुहूर्त:

वैशाख कृष्ण पक्षे

१ चन्द्रे स्वात्यां ल. ३ अभिजिति ता. १४.४.२५
११ गुरौ शतभिषायां ल.चिं.ता. २४.४.२५

वैशाख शुक्ल पक्षे

३ बुधे रोहिण्यां ल. ३ ता. ३०.४.२५
४ गुरौ मृगशिरायां अभिजिति ता. १.५.२५
६ शनौ पुनर्वसौ ल.३ अभिजिति दिवा १२।३४ या.ता.३.५.२५
६ शनौ पुष्ये अभिजिति दिवा १२।३४ उ.ता.३.५.२५
७ सूर्ये पुष्ये दिवा ७।१९ या.ल.चि.ता.४.५.२५

ज्येष्ठ कृष्ण पक्षे

२ बुधे ज्येष्ठायां ल.चिं.दिवा ११।४७ उ.ता.१४.५.२५ संक्रान्तिः
३ गुरौ ज्येष्ठायां ल. ३ अभिजिति ता. १५.५.२५
१३ सूर्ये अश्विन्यां ल. ३ ता. २५.५.२५

ज्येष्ठ शुक्ल पक्षे

२ बुधे मृगशिरायां ल. ३ ता. २८.५.२५
५ शनौ पुष्ये ल. ३ ता. ३१.५.२५
१२ शनौ स्वात्यां ल.चि.दिवा ९।४० उ. ११।१७ या.ता.७.६.२५
१२ सूर्ये स्वात्यां ल. ३ अभिजिति दिवा १२।४२ या.ता.८.६.२५

श्रावण कृष्ण पक्षे

२ शनौ श्रवणे अभिजिति ता. १२.७.२५
३ सूर्ये श्रवणे ल.चिं.दिवा ६।५३ या.ता.१३.७.२५
३ सूर्ये धनिष्ठायां अभिजिति ता. १३.७.२५
७ गुरौ रेवत्यां अभिजिति ता.१७.७.२५ पापग्रह केतु वेधः
११ चन्द्रे रोहिण्यां अभिजिति ता. २१.७.२५

श्रावण शुक्ल पक्षे

१ शुक्रे पुष्ये अभिजिति ता. २५.७.२५ आवश्यके
६ बुधे हस्ते ल.७ ता. ३०.७.२५ पापग्रह शनि वेधः
९ सूर्ये अनुराधायां अभिजिति ता. ३.८.२५
१० चन्द्रे अनुराधायां ल.चि.दिवा ९।१३ या. ता.४.८.२५
१० चन्द्रे ज्येष्ठायां अभिजिति ता.४.८.२५ बु.पाद वेधाऽभावः
१५ शनौ श्रवणे ल.७ अभिजिति ता.९.८.२५

भाद्रपद कृष्ण पक्षे

१ सूर्ये धनिष्ठायां ल.७ अभिजिति ता.१०.८.२५
२ चन्द्रे शतभिषायां ल.७ अभिजिति दिवा १।०१ या.ता.११.८.२५
४ बुधे रेवत्यां ल.७ ता. १३.८.२५ तिथि क्षये चांवल अनुदानतः परिहारे
६ गुरौ रेवत्यां ल.चिं.दिवा ९।०६ या.ता.१४.८.२५
१० चन्द्रे मृगशिरायां ल.चिं.दिवा ६।२३ या.ता.१८.८.२५
१२ बुधे पुनर्वसौ ल.७ ता. २०.८.२५

भाद्रपद शुक्ल पक्षे

५ गुरौ स्वात्यां ल.७ अभिजिति दिवा ८।४४ उ.ता.२८.८.२५
६ शुक्रे स्वात्यां ल.चिं.दिवा ११।३९ या.ता.२९.८.२५
१३ शुक्रे श्रवणे ल.७ अभिजिति ता.५.९.२५

आश्विन शुक्ल पक्षे

५ शनौ अनुराधायां ल.९ अभिजिति ता. २७.९.२५
६ सूर्ये ज्येष्ठायां ल.९ अभिजिति ता. २८.९.२५
१० गुरौ श्रवणे ल.९ अभिजिति ता. २.१०.२५
११ शुक्रे श्रवणे ल.चिं.दिवा ६।५९ या. ता.३.१०.२५
१२ शनौ धनिष्ठायां ल.चिं.दिवा ९।०९ या. ता.४.१०.२५

कार्तिक कृष्ण पक्षे

६ सूर्ये मृगशिरायां ल.चिं.दिवा१०।५५ या. ता.१२.१०.२५
७ चन्द्रे पुनर्वसौ ल.९ अभिजिति दिवा १२।२७ उ.ता.१३.१०.२५
९ बुधे पुष्ये ल.९ दिवा १२।०० या. ता.१५.१०.२५

कार्तिक शुक्ल पक्षे

१ बुधे स्वात्यां ल.१० ता. २२.१०.२५ आवश्यके
३ शुक्रे अनुराधायां ल.१० अभिजिति ता. २४.१०.२५
५ सूर्ये ज्येष्ठायां ल.चिं.दिवा १०।४७ या. ता. २६.१०.२५
८ गुरौ श्रवण ल.चिं.दिवा १०।०७ या. ता. ३०.१०.२५

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्षे

२ शुक्रे रोहिण्यां अभिजिति दिवा १२।३५ उ.ता.७.११.२५
६ चन्द्रे पुनर्वसौ ल.१० अभिजिति ता. १०.११.२५
१२ सूर्ये हस्ते ल.१० अभिजिति ता.१६.११.२५ संक्रान्तिः

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्षे

१ शुक्रे अनुराधायां ल.१० अभिजिति ता.२१.११.२५ आवश्यके
२ शनौ ज्येष्ठायां ल.१० अभिजिति ता. २२.११.२५
६ बुधे श्रवणे ल.१० दिवा ११।१२ उ. ता. २६.११.२५
७ गुरौ धनिष्ठायां ल.१० अभिजिति ता. २७.११.२५
८ शुक्रे शतभिषायां अभिजिति दिवा १२।२९ उ. ता. २८.११.२५

पौष कृष्ण पक्षे

१ शुक्रे रोहिण्यां ल.१० दिवा ११।४६ या.ता.५.१२.२५
१ शुक्रे मृगशिरायां अभिजिति ता. ५.१२.२५
२ शनौ मृगशिरायां ल.चि.दिवा ८।४९ या. ता.६.१२.२५

फाल्गुन कृष्ण पक्षे

६ शनौ चित्रायां अभिजिति ता.७.२.२६
९ बुधे अनुराधायां ल.चिं.दिवा ९।५९ उ. १०।५३ या. ता. ११.२.२६ मासान्तः
९ बुधे ज्येष्ठायां ल.चिं.दिवा १०।५३ उ. ता.११.२.२६ मासान्तः
१० गुरौ ज्येष्ठायां अभिजिति दिवा १२।२३ उ. ता.१२.२.२६ संक्रान्तिः

चैत्र कृष्ण पक्षे

८ बुधे ज्येष्ठायां ल.१ ता.११.३.२६

✻ संवत् २०८२ ई.मध्य प्रमुख पर्व पूजनादि मुहूर्त वेला ✻

- **चैत्री बसंत नवरात्रि** – चैत्र शुक्ल पक्ष १ रविवार तारीख ३०.३.२०२४ ई.दिवा ०८।०७ से ०९।३९ तक चंचल वेला वेला, दिवा ०९।३९ से १२।४३ तक लाभ अमृत वेला, दिवा १२।१८ से ०१।०७ तक अभिजित वेला में पूजन एवं घट स्थापना करना श्रेष्ठ रहेगा।
- **आषाढ़ी गुप्त नवरात्रि** – आषाढ़ शुक्ल पक्ष १ गुरूवार तारीख २६.६.२०२५ ई.प्रातः में ५।५१ से ७।३३ तक शुभ, दिवा १०।५८ से १२।४१ तक चंचल वेला, दिवा १२।४१ से ०४।०५ तक लाभ अमृत वेला, दिवा १२।१३ से ०१।०८ तक अभिजित वेला में पूजन एवं घट स्थपना करना श्रेष्ठ रहेगा।
- **रक्षाबंधन पर्व मुहूर्त** – श्रावण शुक्ल पक्ष १५ शनिवार तारीख ०९.८.२०२५ ई.को दिवा ०७।४९ से ९।२७ तक शुभ, दिवा १२।१७ से १।०९ तक अभिजित, दिवा १२।४३ से २।२१ तक चंचल, दिवा २।२१ से ५।३७ तक लाभ–अमृत वेला में रक्षाबंधन का मुहूर्त श्रेष्ठ रहेगा।
- **श्रीगणेश पूजन स्थापना समय** – भाद्रपद शुक्ल पक्ष ४ बुधवार तारीख २७.८.२०२५ ई.को मध्यान्ह में श्री गणेश जन्मोत्सव मनाया जाएगा। शास्त्रानुसार श्री गणेश पूजन का श्रेष्ठ समय वृश्चिक लग्न सहित मध्यान्हकाल माना गया है। वृश्चिक लग्न दिवा १२।२३ से २।३९ तक श्री गणेश स्थापना करना श्रेष्ठ रहेगा
- **आश्विन शरद नवरात्रि** – आश्विन शुक्ल पक्ष १ सोमवार तारीख २२.९.२०२५ ई.प्रातः ६।३० से ८।०० तक अमृत वेला, दिवा ०९।३० से ११।०० तक शुभ दिवा १२।०६ से १२।५५ तक अभिजित वेला में पूजन एवं घट स्थापना करना श्रेष्ठ रहेगा
- **माघी गुप्त नवरात्रि** – माघ शुक्ल पक्ष १ सोमवार तारीख १९.१.२०२६ ई.प्रातः ७।३१ से ८।५० तक अमृत, दिवा १०।१० से ११।२९ तक शुभ वेला, दिवा १२।२७ से १।१० तक अभिजित वेला में पूजन एवं घट स्थापना करना श्रेष्ठ रहेगा।
- **होलिका दहन** – फाल्गुन शुक्ल पक्ष १४ सोमवार तारीख २.३.२०२६ ई.प्रदोष वेला में सायं ०६।३६ से ०९।०० तक होलिका का दहन करना श्रेष्ठ रहेगा।
- **चैत्री बसंत नवरात्रि** – चैत्र कृष्ण पक्ष ३० गुरूवार तारीख १९.३.२०२६ ई.दिवा १२।२२ से ०१।१० तक अभिजित वेला में एवं आवश्यकता में प्रातः ०६।५३ से ०८।१७ तक शुभ, दिवा ११।१६ से १२।४६ तक चंचल वेला, दिवा १२।४६ से ०३।४६ तक लाभ अमृत वेला में पूजन एवं घट स्थापना करना श्रेष्ठ रहेगा।

✻ कजली तीज व्रत–पर्व निर्णय ✻ इस व्रत को लेकर गत वर्ष कई मत–मतान्तर रहे। यह पर्व भाद्रपद कृष्ण की तीज को मनाया जाता है। यह महिला प्रधान व्रत है। ज्योतिषीय गणित के कारण कई बार तृतीया तिथि द्वितीया तिथि व चतुर्थी तिथि से मिश्रित हो जाती है, ऐसी स्थिति में व्रत पर्व निर्णय में मत–मतान्तर उत्पन्न हो जाता है। यहाँ पौराणिक कथाओं व लौकिक–प्रान्तिक मान्यताओं का विचार करें तो तृतीया तिथि के चन्द्रोदय का महत्व उजागर होता है। साथ ही निर्णय सिन्धु अनुसार चतुर्थी मिश्रित तृतीया को ग्राह्य करने का विधान बताया गया है। ऐसी विषम स्थिति में सभी पंचांगों का एक समान निर्णय करना कठिन हो जाता है। यह स्थिति आम जनमानस के साथ–साथ क्षेत्रीय पण्डित–पुजारी–धर्माचार्य व पंचांगकर्ता हेतु भी विभ्रम तथा वाद–विवाद की स्थिति उत्पन्न करती है। लोकाचार परम्परा, पौराणिक कथाओं व अलग–अलग प्रान्तीय क्षेत्र की व्यवस्था अनुसार चन्द्रोदय व्यापिनी तिथि का विचार भी आमजन मानस में प्रबल है। साथ ही इसी विषय में अन्य धार्मिक आचार्यों और विद्वानों से असंख्य वार्ता और विचार करने पश्चात् लोक जनहित और सनातन धर्म के व्रत–पर्व में एकरूपता लाने हेतु पंचांग में (चतुर्थी मिश्रित तृतीया तिथि) निर्णय सिन्धु वाले मत को ग्राह्य किया जा रहा है। जनमानस अपने क्षेत्रीय व्यवस्था अनुसार निर्णय लेने हेतु स्वतंत्र हैं। शुभाऽभिलाषी – निर्णयसागर पंचांग, नीमच

दीपावली निर्णय २०२५

ज्योतिषीय गणित से कार्तिक कृष्ण पक्ष अमावस्या तिथि २० अक्टूबर दिन में ०३:४५ से प्रारंभ होकर २१ अक्टूबर सायं ०५:५५ तक रहेगी। सामान्य नियमानुसार दीपावली पर्व प्रदोष काल में व्याप्त अमावस्या तिथि को मनाया जाता है। यद्यपि दीपावली के दिन निशीथकाल में लक्ष्मी का आगमन शास्त्रों में अवश्य वर्णित है, लेकिन कर्मकाल (महालक्ष्मी पूजन, दीपदान आदि का समय तो प्रदोष ही माना है।) यथा – प्रदोषसमये लक्ष्मीं पूजयित्वा ततः क्रमात्। दीपवृक्षाश्च दातव्याः शक्तया देवगृहेषु च॥ दृश्य गणित द्वारा निर्मित पंचांग कैलेण्डर में ज्योतिषीय गणना से सम्पूर्ण भारत में अमावस्या तिथि की २ प्रमुख स्थिति उत्पन्न होती है।

● पहली स्थिति – अमावस्या एक ही दिन प्रदोषकाल में व्याप्त ●

भारत के वो राज्य या शहर जहाँ अमावस्या सिर्फ २० अक्टूबर को सूर्यास्त के बाद प्रदोष काल में व्याप्त है और २१ अक्टूबर को सूर्यास्त से पहले ही समाप्त हो जाएगी वहां **दीपावली पर्व २० अक्टूबर को ही मान्य रहेगा**। क्यूंकि २० अक्टूबर को ही प्रदोष काल में अमावस्या तिथि व्याप्त रहेगी।

● दूसरी स्थिति – अमावस्या दो दिन प्रदोषकाल में व्याप्त ●

भारत के वो राज्य या शहर जहाँ अमावस्या २० और २१ अक्टूबर दोनों ही दिन सूर्यास्त के बाद प्रदोष काल में व्याप्त है। इन राज्य व क्षेत्र जहाँ दूसरे दिन मतलब २१ अक्टूबर को अमावस्या तिथि सूर्यास्त के बाद १ घटी अर्थात् २४ मिनिट या इससे अधिक व्याप्त है – इस स्थिति में दीपावली निर्णय हेतु धर्मसिंधु में लेख है कि तव **सूर्योदयं व्याप्यास्तोत्तरं घटिकाधिक रात्रिव्यापिनी दर्शे सति न संदेहः**। अर्थात् यहाँ सूर्योदय में व्याप्त होकर सूर्यास्त के उपरांत एक घटिका से अधिक व्यापी अमावस्या होवे तब संदेह नहीं है, अपितु इन स्थानों में दीपावली का पर्व २१ अक्टूबर को ही मान्य रहेगा। साथ ही निर्णय सिंधु में भी उल्लेख है कि – **दिनद्वये सत्वे परः दण्डैक रजनी योगे दर्शः स्यातु परेऽहनि। तदा विहो पूर्वेद्युः परेऽहिन् सुखरात्रिकाः**॥ अर्थात् यदि अमावस्या दोनों दिन प्रदोष व्यापिनी होवे तो अगली करना कारण कि तिथि तत्व का कथन है कि एक घड़ी रात्रि का योग होवे तो अमावस्या दुसरे दिन होती है तब प्रथम दिन छोड़कर अगले दिन सुखरात्रि होती है। **अतः इस दूसरी स्थिति में दीपावली का पर्व २१ अक्टूबर को ही मान्य रहेगा।**

उपरोक्त दी गई दोनों स्थिति अनुसार दीपावली पर्व सम्पूर्ण भारत में शास्त्रोक्त नियमानुसार २० एवं २१ अक्टूबर को अलग अलग दिन मान्य रहेगा।

जो कि व्रत–पर्व की एकरूपता हेतु उचित नहीं

● अन्तिम निर्णायक स्थिति ●

धर्मसिंधु में पुरूषार्थचिंतामणि के मत से

सम्पूर्ण भारत में एक ही दिन दीपावली मान्य रहेगी – पुरुषार्थचिंतामणौ तु पूर्वत्रैव व्याप्तिरिति पक्षे परत्र यामत्रयाधिकव्यापि दर्शापेक्षया प्रतिपदावृद्धिसत्त्वे लक्ष्मीपूजादिकमपि परत्रैवेत्युक्तम्॥ एतन्मते उभयत्र प्रदोषाव्याप्ति – पक्षेपि परत्रदर्शस्य सार्धयामत्रयाधिकव्यापित्वात्परैव युक्तेति भाति।

भावार्थ – अगर प्रथम दिन ही प्रदोष व्यापिनी अमावस्या हों परन्तु दुसरे दिन अमावस्या साढ़े तीन प्रहर से अधिक हो एवं प्रतिपदा वृद्धि गामिनी हों तो प्रथम दिन प्रदोष व्यापिनी अमावस्या छोड़कर भी दूसरे दिन ही ग्रहण करना॥

☞ **इस नियमानुसार अर्थात् द्वितीय दिन अमावस्या साढ़े तीन प्रहर से अधिक है एवं प्रतिपदा वृद्धिगामिनी है इसलिए चतुर्दशी तिथि वाले दिन प्रदोष व्यापिनी अमावस्या को छोड़कर अगले दिन अमावस्या मंगलवार दिनांक २१.१०.२०२५ ई. को एक ही दिन सम्पूर्ण भारत में दीपावली पर्व मान्य रहेगा।**

दीपावली पर्व सम्पूर्ण भारत का एक विशेष प्रमुख पर्व है। कोई क्षेत्रीय पर्व दो दिन अलग–अलग मनाए जाएं तो विशेष गंभीर बात नहीं परन्तु दीपावली जैसा बड़ा राष्ट्रीय पर्व अगर धर्मशास्त्रीय वाक्यों में एकरूपता के अभाव के कारण दो अलग अलग दिन मनाया जाये तो यह सनातन धर्म हेतु उचित नहीं है इस तरह की स्थितियाँ यदा–कदा ही उत्पन्न होती हैं और ऐसी परिस्थिति में सभी को मिल जुलकर एक ही निर्णय लेना चाहिए। सनातन धर्म और जनमानस के व्रत पर्वों में एकरूपता हेतु इस तरह की विषम परिस्थिति, जहाँ एक बड़ा त्यौहार भारत में दो अलग–अलग दिन मान्य हो रहा है, वहाँ एकरूपता हेतु पुरूषार्थ चिंतामणि के उक्त वचन का चयन किया जाना ही सन्मार्ग सूत्र है।

● इस नियमानुसार दीपावली पर्व सम्पूर्ण भारत में एक ही दिन २१ अक्टूबर को मान्य रह सकेगा। **पुनः निवेदन है कि इस पुरूषार्थ चिंतामणि निर्णय का चयन व्रत पर्व की एकरूपता एवं जनमानस हित में है**। उपरोक्त वर्णित सभी स्थिति में धर्मशास्त्र निर्णयानुसार विद्वानजन अपना निर्णय लेने हेतु पूर्ण रूप से स्वतंत्र हैं।

विशेष नोट : वर्तमान में अधिकतर पंचांग दृश्य गणित द्वारा निर्मित होते हैं परन्तु कुछ क्षेत्र में अभी भी पुरातन सूर्य सिद्धान्त ग्रह लाघव तथा ब्रह्मसिद्धान्त के उपयोग से पंचांग बनाए जाते हैं। इनकी गणित से कार्तिक अमावस्या सिर्फ २० अक्टूबर को ही सूर्यास्त के बाद प्रदोष काल में व्याप्त है, अतः इन स्थूल गणित वाले पंचांग कैलेण्डर में दीपावली २० अक्टूबर को ही अंकित की होगी।

✽ महालय श्राद्ध पक्ष निर्णय ✽

श्राद्ध पक्ष विवरण (अपरान्ह काल अनुसार)	तिथि	वार	तारीख
पूर्णिमा श्राद्ध	१५	रविवार	०७.०९.२५
प्रतिपदा श्राद्ध	१	सोमवार	०८.०९.२५
द्वितीया श्राद्ध	२	मंगलवार	०९.०९.२५
तृतीया श्राद्ध	३	बुधवार	१०.०९.२५
चतुर्थी श्राद्ध (अपरान्ह काल अनुसार)	३	बुधवार	१०.०९.२५
चतुर्थी श्राद्ध (देश काल परिस्थिति अनुसार)	४	गुरूवार	११.०९.२५
पंचमी श्राद्ध	४	गुरूवार	११.०९.२५
षष्ठी श्राद्ध	५	शुक्रवार	१२.०९.२५
सप्तमी श्राद्ध (सप्तमी तिथि क्षय है)	६	शनिवार	१३.०९.२५
अष्टमी श्राद्ध	८	रविवार	१४.०९.२५
नवमी श्राद्ध	९	सोमवार	१५.०९.२५
दशमी श्राद्ध	१०	मंगलवार	१६.०९.२५
एकादशी श्राद्ध	११	बुधवार	१७.०९.२५
द्वादशी श्राद्ध	१२	गुरूवार	१८.०९.२५
त्रयोदशी श्राद्ध	१३	शुक्रवार	१९.०९.२५
चतुर्दशी श्राद्ध	१४	शनिवार	२०.०९.२५
अमावस्या श्राद्ध	३०	रविवार	२१.०९.२५

पार्वण श्राद्ध हमेशा अपरान्हव्यापिनी मृत्युतिथि के दिन किया जाता है, जबकि एकोद्दिष्ट श्राद्ध मध्यान्हव्यापिनी तिथि में किया जाता है। पिता, पितामह, परपितामह, मातामह, प्रमातामह, वृद्धमातामह तथा इनकी पत्नियों का श्राद्ध पार्वण पद्धति से अपरान्हकाल–व्यापिनी तिथि में किया जाता है। उपाध्याय, गुरू, ससुर, चाचा, मामा, भाई, बहनोई, भतीजा, शिष्य, जामाता, भानजा, फुफड़, मासड़, पुत्र, मित्र, विमाता के पिता एवं इन सभी की पत्नियों का श्राद्ध एकोद्दिष्ट पद्धति से मध्यान्हव्यापिनी तिथि में किया जाता है।

✽ **चतुर्थी श्राद्ध निर्णय** – चतुर्थी तिथि १० सितम्बर को दिन में ०३:३८ से प्रारंभ होकर ११ सितम्बर को दिन में १२:४६ को समाप्त होगी, यहां तिथि की अपरान्ह काल में व्याप्ति सिर्फ १०.०९.२५ को ही है अतः शास्त्रोक्त नियमानुसार तो १०.०९.२५ को ही श्राद्ध होना चाहिए, यहां शास्त्रोक्त नियम तो अपरान्ह काल से ही तिथि श्राद्ध निर्धारण का है, जो व्यक्ति विशेष अपनी सुख सुविधा और आराम देखते हुए अपने पितरों का श्राद्ध निकालना चाहते हैं वो यहां कुतुप काल का उपयोग लेते हुए ११.०९.२५ को चतुर्थी का श्राद्ध कर सकते हैं परन्तु पुनः वर्णित करना चाहेंगे कि शास्त्रोक्त निर्णय तो १०.९.२५ का ही रहेगा, और ११.९.२५ का निर्णय देशकाल परिस्थिति और आधुनिक दिनचर्या को देखकर दिया है यहां शास्त्र का कोई नियम उपयोग में नहीं लिया है।

✽ **पंचमी श्राद्ध निर्णय** – पंचमी तिथि ११.९.२५ को दिन में १२:४६ से प्रारंभ होकर १२.९.२५ को प्रातः ०९:५९ पर समाप्त हो जाएगी यहां हर तरह की स्थिति मध्यान्ह अपरान्ह कुतुप काल सब ११.९.२५ को ही व्याप्त है अतः पंचमी श्राद्ध ११.९.२५ को ही करना शास्त्रोक्त है।

श्राद्ध पक्ष की तिथियों का निर्णय उदयकालीन तिथि अनुसार करना अज्ञानता का सूचक है।

गृह निर्माण मुहूर्त्त-क्रिया

❖ **गृहारम्भे शुभ मासाः** - सौर संक्रान्तिजनित मिथुन-कन्या-धनु-मीन का कालांश समय मान्य नहीं तथा शेष सभी सौर संक्रान्ति मास गृहारंभ में शुभ है। अभिप्राय यह कि मेष राशि सूर्य में चैत्र। वृषभ राशि सूर्य में ज्येष्ठ। कर्क राशि सूर्य में आषाढ। सिंह राशि सूर्य में भाद्रपद। तुला सूर्य में आश्विन। आदि कृष्णपक्षीय चान्द्रमास गृहारंभ नवनिर्माण हेतु शुभ फलद है।

❖ **शुभ तिथि** - २-३-५-६-७-१०-११-१२-१३-१५ तथा कृष्णपक्षीय प्रतिपदा १ भी शुभ। शुक्ल प्रतिपदा १ तथा ४-९-१४-८-३० तिथि गृह रचना विषय में मान्य नहीं

❖ **शुभ वार** - सोम, बुध, गुरू, शुक्र, शनि मान्य तथा रवि-मंगलवार वर्जित है।

❖ **शुभनक्षत्र**- रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, चित्रा, हस्त, स्वाति, अनुराधा, तीनों उत्तरा, घनिष्ठा, शतभिषा, रेवती आदि १३ नक्षत्र सप्तशलाका चक्रवेध-रहित शुभ मान्य।

❖ **समय लग्न शुद्धि** - गृहारंभ हेतु स्थिर तथा द्विस्वभाव राशि के लग्न विशेष शुभ तथापि १-३-५-६-८-११-१२ संज्ञक लग्नों में तथा शुभ ग्रह ८-१२ भाव में नहीं रहे एवं केन्द्र १-४-७-१० एवं त्रिकोण ५-९ भाव स्थान में शुभ ग्रह की रचना तथा ३-६-११ स्थान भावों में पाप ग्रह शुभ ही मान्य एवं अभिजित मुहूर्त्त वेला तथा आवश्यकता विशेष में श्रीकार-शुभ चौघटिका वेला का समय भी मान्य है।

❖ **भू-शयन गणना क्रम** (१) सूर्य जिस नक्षत्र में रहे उससे इष्ट मुहूर्त्त दिवस का नक्षत्र गणनानुसार ५-७-९-१२-१९-२६ वाँ दिवस भूशयन सुप्तपृथ्वी विकार भी दोषप्रद माना जाता है। तथा इन नक्षत्रों में भी क्रमशः ४-८-५-३-६-७ घटी नक्षत्र (आदि की घटी) मात्र में ही भूशयन तथा शेष घटियों में सुप्त विकार नहीं। वास्तु रत्नावली ग्रन्थानुसार इस प्रकार का अभिमत है तथा कतिपय ग्रंथों में इष्ट सूर्य संक्रान्ति दिन से ५-७-९-१५-२१-२४ वाँ दिवस मात्र में ही भूशयन मानते हैं। इन भूशयन समय में गृह निर्माण-कूप-तड़ाग-बीज वपन-हल प्रवाह चलाना खनन आदि का कार्य नेष्ट सूचक है।

❖ **गृहारंभेवृषवास्तु-वत्सगणना** - सूर्य नक्षत्र से इष्ट दिन नक्षत्र तक गणनानुसार दिन नक्षत्र १ से ७ तक अशुभ तथा ८ से १८ तक शुभ, तथा १९ से २८ तक अशुभ। नक्षत्र गणना अभिजित् सहित करना चाहिये।

भूमि-वस्तु क्रय-विक्रय मुहूर्त्त

दोनों पक्ष की ५-६-१०-११-१५ तथा कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा १ तिथि भी मान्य। तथा चन्द्र-बुध सामान्य एवं गुरू-शुक्रवार विशेष शुभ। एवमेव मृगशिरा-पुनर्वसु-पुष्य-आश्लेषा-मघा-हस्त-स्वाति-विशाखा-अनुराधा-मूल तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा-श्रवण-रेवती का सुयोग शुभ मान्य।

❀ नवीन गृह प्रवेश मुहूर्त्त ❀

❀ **चान्द्र मास** - वैशाख-ज्येष्ठ-माघ-फाल्गुन आदि उत्तरायण काल विशेष शुभ। तथा कार्त्तिक-फाल्गुन मास सामान्यतया आवश्यकता विशेष मध्य मान्य।

❀ **नक्षत्र** - रोहिणी, मृगशिरा, चित्रा, अनुराधा, तीनों उत्तरा, रेवती विशेष शुभ मान्य तथा आवश्यकता विशेष मध्य-पुष्य-स्वाति-घनिष्ठा, शतभिषा भी मान्य। ❀ **वार** - चन्द्र, बुध, गुरू, शुक्र, शनि। ❀ **तिथि** - शुक्ल पक्षीय १ रिक्ता संज्ञा ४-९-१४ तथा अमावस्या रहित सभी तिथि गणना मान्यता शुभ तथा स्थिर लग्न सर्वोत्तम २-५-८-११ तथा द्वि स्वभाव लग्न सामान्य शुभ ३-६-९-१२ तथा लग्न शुद्धि हेतु १-२-३-४-५-७-९-१० इन स्थान भावों में शुभ ग्रह स्थिति तथा ३-६-११ भावों में पापग्रह मान्य तथा चन्द्रमा १-६-८-१२ भाव स्थानों में नहीं होवे और ४-८ भाव शुद्ध होवे तथा कलश चक्र की शुद्धि देखकर सन्मुख में गाय कन्या-जलपूर्ण कलश, श्रीफल, आम्रपर्ण, पुष्पमाला तथा विप्र सहित वेदध्वनि मांगलिक गायन वाद्य के सहित दम्पत्ति को नवगृह प्रवेश शुभ है ❀ **कलश चक्र गणना सूत्र** - अभिजित रहित करें। सूर्य नक्षत्र से इष्ट दिवस दिन नक्षत्र तक गणना करें। ५ संख्या तक अशुभ तथा ६ से १३ तक शुभ। १४ से २१ अशुभ एवं २२ से २७ दिन गणना तक शुभफल।

श्रीदेव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त

चैत्रे वा फाल्गुन वापि ज्येष्ठे वा माधवे तथा।
माघे वा सर्वदेवानां प्रतिष्ठा शुभदा भवेत् ॥
यस्य देवस्य यत्तिथिवार नक्षत्रादिकं तद्दिनेयदि
तस्य प्रतिष्ठा मुहूर्तो भवेत्तदा अत्युत्तमः ॥
रिक्तान्यतिथिषु स्यात्सावारे भौमान्यके तथा।
तथा महाश्विनो मासः उत्तमः सर्वकामदः ॥

जिस देवता की प्रतिमा स्थापित करनी हो उस देवता के ही दिन-तिथि-नक्षत्र तथा शुभ योग-शुभ लग्न में स्थापना करना चाहिये तथा दिवस के पूर्वाह्न काल में स्थापना बनें यह भी लक्ष्य साधना रखना चाहिये। ✽ **शुभ मान्य मास** - माघ, फाल्गुन, वैशाख, ज्येष्ठ (तथा विकल्प से चैत्र-आश्विन मास भी प्रकारान्तर से मान्य) एवं माघ मास में श्री विष्णु की प्रतिष्ठा नहीं। तथा मातृ, भैरव, वराह, नृसिंह एवं देवी प्रतिष्ठा दक्षिणायन में भी शास्त्र सम्मत हैं ✽ **शुभ तिथि** - २-३-५-६-७-८-१०-११-१२-१३-१५ एवं कृष्ण पक्ष की १ प्रतिपदा तिथि भी शुभ श्रीकार। ✽ **शुभवार** - सोम, बुध, गुरू, शुक्र, शनि। तथा मंगलवार का पूर्णतया निषेध है।

✽ **शुभ नक्षत्र**-अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, श्रवण, घनिष्ठा, शतभिषा, रेवती तथा तीनों उत्तरा संज्ञक नक्षत्र दिवस शुभ।

✿ शासक अधिकारी सम्पर्क मुहूर्त्त ✿

दोनों पक्ष की तिथियां २-३-५-७-१०-११-१३ तथा कृष्णपक्षीय १ प्रतिपदा। **वार** - सूर्य, सोम, बुध, गुरू, शुक्र। **नक्षत्र** - अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, अनुराधा, श्रवण आदि शुभ।

♣ पद विशेष अधिग्रहण मुहूर्त्त ♣

राजपत्रित पद-मंत्री-सरपंच-प्रधान, दल नेता, नगराध्यक्ष तथा सभी सामाजिक एवं शासकीय पद विशेष हेतु भी। **तिथि** - ४-९-१४ रिक्ता तिथि - मंगलवार-रात्रि समय - मलमास आदि अमावस्या समय का त्याग करें। **नक्षत्र**- अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, अनुराधा, ज्येष्ठा, अभिजित, श्रवण, रेवती नक्षत्र मान्य हैं। **लग्न समय** - ३-५-६-७-८-११ एवं अभिजित मुहूर्त। **लग्नशुद्धि विवेचन** - ३-६-११ भाव स्थानों में पापग्रह तथा १-४-७-१० केन्द्र एवं ५-९ त्रिकोण तथा ११-२-३ भावों में शुभग्रह रहते लग्न बल विशेष शुभद मान्य रहता है।

❀ शासकीय-राजसेवा-मुहूर्त्त ❀

दोनों पक्ष की तिथि यथा २-३-५-७-१०-११-१३ एवं १५ पूर्णिमा तथा कृष्ण पक्ष १ प्रतिपदा आदि शुभ मान्य एवं नृप पंचक दिवस का त्याग करें। अश्विनी, मृगशिरा, पुष्य, हस्त, चित्रा, अनुराधा, अभिजित, रेवती नक्षत्र शुभ मान्य तथा सोम-मंगल शनिवार अशुभ

● विविध चुनाव अभियान मुहूर्त्त ●

तिथि २-३-५-९-१०-१२-१५ शुक्ल पक्ष विशेष शुभ तथा कृष्ण पक्ष सामान्य मान्य। वार-सोम, बुध, गुरू, शुक्र। नक्षत्र-अश्विनी, रोहिणी, तीनों उत्तरा, रेवती आदि विशेष शुभ तथापि **अमृतसिद्धि-सर्वार्थसिद्धि-रवियोग विशेष दिवस** आदि का सुयोग भी श्रीकार विशेष मान्य रहता है।

▲ ज़लाशय कूप-खनन मुहूर्त्त ▲

रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, मघा, तीनों उत्तरा, हस्त, अनुराधा, पूर्वाषाढ, घनिष्ठा, शतभिषा आदि नक्षत्र शुभ। तथा शुभवार एवं मौलिक पंचांग शुद्धि का ध्यान रखते, एवमेव पूर्ण चन्द्र जल चर राशि (कर्क-मकर-मीन) अथवा अर्द्धजल (वृषभ-धन-कुम्भ) के चन्द्रचार में विशेष शुभ। तथा बुध, गुरू, शुक्र केन्द्रभाव स्थित तथा पापग्रह सूर्य, मंगल, शनि निर्बल भाव रचना के रहते मान्य।

कुम्भकार-प्रजापति कार्य मुहूर्त्त

दोनों पक्ष की २-३-५-६-७-८-१०-११-१२-१३-१५ तथा कृष्ण पक्ष १ प्रतिपदा तिथि मंगलवार छोडकर, सभी वार शुभ मान्य। रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, ज्येष्ठा, श्रवण, रेवती, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ, उत्तराभाद्रपद आदि नक्षत्र श्रीकार शुभ मान्य। ईंट, चूना, सुरखी, सीमेन्ट आदि पक्ष हेतु सुखद।

★ मुकदमा नालिश-अर्जी मुहूर्त्त ★

वार-मंगल, शनि। **तिथि** ४-९-१४। **नक्षत्र**-कृतिका, आर्द्रा, पुनर्वसु, आश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा, मूल, विशाखा, तीनों पूर्वा, आदि नक्षत्र मान्य तथा भद्रा का समय काल भी विशेषकर श्रीकार।

✱ मशीनरी शुभारंभ मुहूर्त्त ✱

नक्षत्र अश्विनी-पुनर्वसु-पुष्य-हस्त-चित्रा-स्वाति-अनुराधा-ज्येष्ठा-श्रवण-घनिष्ठा-शतभिषा-रेवती तथा सोमवार बुधवार विशेष शुभ। अन्यवार सामान्य मान्य एवं चर लग्न अथवा अभिजित मुहूर्त्त अथवा श्रीकार शुभादि चौघटिका वेला सुखद

✶ धेनु-गौ आदि दुधारू पशु मुहूर्त्त ✶

नक्षत्र-अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, विशाखा, ज्येष्ठा, घनिष्ठा, शतभिषा, रेवती आदि में दुधारू पशु लेना बेचना शुभ। तथा अन्य चौपाया पशु हेतु-पुनर्वसु, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ, पूर्वाभाद्रपद, हस्त, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, घनिष्ठा, रेवती में लेना बेचना शुभ। *शकुन-नौमी-चौदस-चौथ चौपाया। वार मंगले हानिकर पाया ॥* एवमेव दैनिक चन्द्र बल शुद्धि गणना पर भी ध्यान रखना चाहिए।

♠ श्रीराज मुहूर्त्त रचना ♠

तिथि - २-३-७-१२-१५ वार-रवि, मंगल, बुध, शुक्र तथा **नक्षत्र** - भरणी, मृगशिरा, पुष्य, पूर्वाफाल्गुनी, चित्रा, अनुराधा, पूर्वाषाढ, घनिष्ठा, उत्तराभाद्रपद। इन तीन तिथि+वार+नक्षत्र के सुयोग मिलने पर सर्वसिद्धिकारक श्रीकार श्रीराजयोग मुहूर्त्त वेला का निर्माण बनता है।

★ श्रीकुमार-तन्त्र मुहूर्त्त रचना ★

तिथि - १-५-६-१०-११ वार- मंगल, बुध, सोम, शुक्र। तथा नक्षत्र-अश्विनी, रोहिणी, पुनर्वसु, मघा, हस्त, विशाखा, मूल, श्रवण, पूर्वाभाद्रपद। इन तिथि+वार+नक्षत्र का सुयोग किसी भी दिन प्राप्त होने पर सिद्धिप्रदायक श्रीकुमार मुहूर्त्त का संयोग। सर्वकार्य रचना विषय में सुखद श्रीकार मान्य।

▲❀▲ अथमुहूर्त्तचिंतामणिमार्त्तण्डगणपतीत्यादिमतेन आवश्यकीय-कतिपय मुहूर्त्ताः ▲❀▲

मुहूर्त्तनाम	❊ नक्षत्रादिकम् ❊	तिथि	वार
प्रथम रजोदर्शन	श्रवण, घनिष्ठा, शतभिषा, मृगशिरा, चित्रा, रेवती अनु. हस्त, अश्वि. पुष्य. रोहि. उत्तरा ३ स्वाति, तथा मास-माघ, मार्ग. वैशा. आश्विन ज्येष्ठ, फाल्गुन मास तथा शुक्ल पक्ष शुभ।	शुभ	चं.बु. गु.शु.
रजःस्नान शीघ्रगर्भा.	हस्त, स्वा., अश्वि., मृग., अनु., घनि., उत्तरा ३ रोहिणी ज्येष्ठा मृग., रेवती, स्वाति, हस्त, अश्वि., रोहिणी शीघ्र गर्भयोग।	शुभ	शुभ
सीमंत कर्म पुंसवन	मृग, पुष्य, मूल, श्रव., पुन., हस्त। उत्तरा ३ रेवती रोहिणी। गर्भमासतः ३-६-८ मास विष्णु पूजा।	शुभ	र.गु.मं.
जातकर्म नामकर्म	जन्मतः ११-१२ दिने, मृग., रेवती, चित्रा, अनु., उत्तरा ३ रोहिणी, हस्त, अश्विनी, पुष्य, स्वाति, पुनर्वसु, श्रवण, घनिष्ठा, शत.।	शुभ	शुभ
सूतिका स्नान	उत्तरात्रय ३ रोहिणी, रेवती, मृगशिरा, हस्त, स्वाति, अश्विनी, अनु.।	शुभ	र.मं.गु.
पालने में शयन	मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा, हस्त, अभि., अश्विनी, पुष्य, उत्तरा ३ रोहि.। सूर्यभाद्गणना आरोग्य ५, मृत्यु ५, देहकष्ट ५, व्याधि ५, अन्तिम सौख्य ७। दिन - ३२, १२, १६, १८, १०	शुभ	शुभ
जल पूजन जलवा	श्रवण, पुन., पुष्य, मृग., हस्त., मूल, अनु. (शु.+गु. अस्त चैत्र + पौष अधिकमास निषेध)	शुभ	शुभ
अन्नप्राशन	शिशु जन्मतः ६,८,१० मासे। कन्या प्रति ५, ७ विषम मासे, शुक्लपक्षे, अश्विनी, रोहिणी, मृगशिा, पुनर्वसु, पुष्य, उत्तरा ३ हस्त चित्रा स्वाति अनुराधा, अभिजित, श्रवण, घनिष्ठा, रेवती (मीन, मेष, वृश्चिक, लग्न एवं जन्मराशि नक्षत्र निषेध)	२, ३, ५, ७, १० १३, १५	शुभ
कर्णवेध परोजना	श्रवण, घनिष्ठा, पुनर्वसु, इस्त, अश्वि, पुष्य, अभिजित, मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनु (देवशयन, चैत्र, पौष, जन्ममास तथा समवर्ष निषेध) जन्मतः ६-७ मास शुभ।	शुभ	शुभ
जडुला उतारना	मृगशिरा, रेवती, चित्रा, स्वाति, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, हस्त, अश्विनी, पुष्य, ज्येष्ठा, चैत्रहीन, उत्तरायणे ३, ५, ७ वर्षे	शुभ	शुभ
विद्यारंभः अक्षरबोध	मूलतः पंचम् ५ वर्षे अश्वि.मृ.आर्द्रा पुनर्वसु पुष्य श्ले. पूर्वा. ३ हस्त चित्रा स्वाति मूल घनिष्ठा शतभिषा अनध्याय वर्जित दिन तथा कुम्भ रवि निषेध। १-८ तिथि नैव।	२, ३, ५, ६, १० ११, १२	सू.बु. गु.शु.
चूड़ा पहनना	अश्वि.ह.चि.स्वा.वि.अनु.घनि.रेव.शुभ। सूर्यभात ३ ने. ५ ने.३ शु.४शु.७ने.२ने.१शु.२शु.१ ने.। उत्तरा ३ रोहिणी नेष्टम्।	शुभ	सु.गु. बु.शु.

मुहूर्त्तनाम	❊ नक्षत्रादिकम् ❊	तिथि	वार
कन्या वरण	पूर्वा फा.३ उत्तरा.३, श्रवण अनुराधा स्वाति घनिष्ठा कृतिका रोहिणी रेवती मूल मृग मघा, हस्त एवं वैवाहिक नक्षत्र शुभद।	शुभ	मंगल त्याग
वर वरण	पूर्वा ३, उत्तरा ३, कृतिका रोहिणी।	शुभ	शुभ
वधू प्रवेश	विवाहतः २, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०, १२, १४, १६ दिन। एवमग्रे विषम मास तथा वर्षों में। हस्त चि. रोहि. मृग अश्वि. रेवती, मघा, पुष्य, घनि. श्रव. उत्तरा ३ मूल. अनु. तथा स्थिर लग्न मान्य हैं।	शुभ	शुभ
द्विरागमन मुकलावा	मेषे. वृश्चि. कुम्भ के सूर्ये, मूल, ह. चि. रो. मृ. अश्वि. पुष्य. उ. ३, श्र. ध. पुन. रे. स्वा. अनु. २-३-६-७-१२ लग्ने विवाहतः १-३-५ वर्षे, दीपावली, विजयादशमी अबूझ शुभ।	शुभ	शुभ
गंधर्व विवाह	अश्विनी, कृतिका, आर्द्रा, पुनर्वसु, श्ले, ज्येष्ठा, घनिष्ठा, शतभिषा, इन नक्षत्रों में तथा गुरू शुक्रास्त का विचार नहीं।	शुभ	सू. मं.श.
दूकान शुभारम्भ	उत्तरा ३, रोहिणी, मृगशिरा, चित्रा, रेवती, अनुराधा, हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभि. चन्द्रलग्ने, कुंभ लग्ने निषेध।	शुभ	मंगल त्याग
वस्तु क्रय खरीद	शुक्ल पक्ष की ११ से कृष्णपक्ष की ५ तक, रेवती, अश्वि. स्वा. श्रव. शत.चित्रा	शुभ	शुभ
वस्तु विक्रय	पूर्वा ३, विशाखा कृतिका आश्लेषा, भरणी शुभद, रिक्ता तिथि अमावस्या निषेध, कुम्भ लग्न निषेध।	शुभ	शुभ
बहीखाता व्यवस्था	मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, उत्तरा ३, हस्त चित्रा अनुराधा श्रवण रेवती चर तथा द्विस्वभाव लग्ने।	शुभ	शुभ
नौकर रखना	हस्त अभिजित अश्विनी पुष्य मृगशिरा रेवती चित्रा अनुराधा राशि + नक्षत्रयोनि मैत्री आदि वर्ग वैर चिन्तनीयम्।	शुभ	शुभ
ऋण का लेन-देन	मंगलवार संक्रान्ति दिन, वृद्धियोग, हस्तयुक्त रविवार को ऋण नहीं लेवें। मंगल को चुकावें तथा बुधवार को धन नहीं देवें।		
रोगमुक्त स्नान	रेवती पुनर्वसु उत्तरा ३, रोहिणी मघा स्वाति आश्लेषा इनमें निषेध तथा शेष नक्षत्रों में अशुभ चन्द्र स्थिति रहते	अशुभ	चं.शु. त्याग

कृषिकर्म विषये

● **हल चलाना कृषि कर्म** - मूल. विशा, मघा, स्वा, पुन. श्र, ध, शत, उत्तरा ३ रोहि, मृग, चित्रा, रे, अनु। सूर्यनक्षत्र गणना-३ ने ३ श्रे ३ ने ५ श्रे ३ ने ५ श्रे ३ ने २ श्रे। वार तिथि शुभ है।

● **बीज बावनी** - हल चालक नक्षत्रों में से श्रव, शत, पुन, विशा छोड़ देवें तथा शेष नक्षत्रों में बीज बोवें। राहु नक्षत्रतः गणना- ८ ने, ३ श्रे, १ ने, ३ श्रे, १ ने, ३ श्रे, १ ने, ३ श्रे, ४ ने। तिथि शुभ लेवें। वार - र,चं. बु. गु. शु. श.।

● **दंगी सीटा तोड़ना** - फसल कटाई में मूल. ज्ये. आर्द्रा. श्ले. पूभा. हस्त. कृ. श्र. ध. मृ. स्वा. मघा. उत्त.३ पूषा. भरणी. पुष्य स्थिर लग्ने वार + तिथि शुभ।

♠ ट्रक-मोटर-कार-इंजन-स्कूटर-बस मुहूर्त्त हेतु ♠

अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, श्रवण, घनिष्ठा, शतभिषा, रेवती। मंगलवार तथा ४-९-१४ तिथि अशुभ।

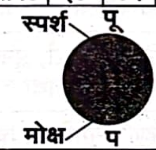
भारतीय भू-संभाग मध्य सूर्य-चन्द्र ग्रहण-विवेचना

इस संवत् २०८२ के अंतर्गत भू-मंडलीय ग्रहण गणना नियामक से चार ग्रहण का प्रारूप गणितागत प्राप्त हो रहा है, इनमें से दो सूर्य ग्रहण व दो चन्द्र ग्रहण होंगे, **भारतीय भू-भाग में दोनों चन्द्र ग्रहण दृश्य होंगे तथा दोनों सूर्य ग्रहण दृश्य नहीं होंगे।** भारत में अदृश्य ग्रहण हेतु वेध, सूतक, स्नान, दान, पुण्य, कर्म, यम, नियम एवं जप अनुष्ठान हेतु मान्यता नहीं होगी। इसी विषय में धर्मशास्त्रीय वचन विशेष यह है कि- **।। द्विपान्तरे ग्रहण सत्वेऽपिदर्शन योग्यत्वायान्न पुण्यकाल:।।**

१. खग्रास चन्द्र ग्रहण ता. ७.९.२५ : संवत् २०८२ भाद्रपद शुक्ल पक्ष १५ रविवार को सम्पूर्ण भारत में चन्द्र ग्रहण होगा! भारतीय समय में इसका विरल छाया प्रवेश रात्रि ०८:५८, स्पर्श रात्रि ०९:५७, सम्मिलन रात्रि ११:०१, मध्य रात्रि ११:४२, उन्मीलन रात्रि शेष १२:२३, मोक्ष रात्रि शेष ०१:२७ एवं विरल छाया निर्गम रात्रि शेष ०२:२५ बजे होगा। **इसका सूतक भारतीय समय से दिन में १२:५७ बजे से प्रारम्भ होगा। यह ग्रहण सम्पूर्ण भारत में दृश्य होगा!** भारत सहित एशिया, ऑस्ट्रेलिया, अफ्रीका, यूरोप, अंटार्कटिका, पैसेफिक और इंडियन ओसियन में भी दृश्य होगा। **जहां ग्रहण दृश्य होगा उन्हीं स्थानों पर ग्रहण से सम्बंधित वेध, सूतक, स्नान, दान, पुण्य, कर्म, यम, नियम मान्य होंगे।**

खग्रास चन्द्र ग्रहण
संवत् २०८२ भाद्रपद शुक्ल पक्ष १५ रविवार, दिनांक ७.९.२५ ई.

समय	स्पर्श	मध्य	मोक्ष	पर्व
घटी	३८	४३	४७	८
पल	५३	१५	३८	४५
घंटा	९	११	१	३
मिनिट	५७	४२	२७	३०



विविध राशियों पर ग्रहण का शुभाशुभ प्रभाव यह कि- **मेष राशि-** सुखद लाभद सुयोगद। **वृषभ-**सुख सम्पदा सूचक। **मिथुन-** जीवनीय मानद रूप में न्यूनता। **कर्क-**प्रपीड़ा विकार कष्टद प्रभारक। **सिंह-** मानसिक चिन्तन मनोविकार खेद। **कन्या-** विकासप्रद सुयोगद प्रतिफल। **तुला-** मनोविकार प्रवास चिन्तन। **वृश्चिक-** अपवाद, चिन्ता, खेद, प्रवास। **धनु-** सुखद लाभद, योगकारक फलसूचक। **मकर-** अपव्यय अपवाद, चिन्तन। **कुंभ-** शरीर विकार प्रपीड़ा कष्टद प्रभार सूचक। **मीन-** आर्थिक चिन्तन, अपव्यय, खेद, प्रवास। यह ग्रहण पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र तथा कुम्भ राशि मंडल पर मान्य है। अतः इस राशि व नक्षत्र वालों को ग्रहण दर्शन नहीं करना चाहिए। अपितु अपने इष्ट देव की आराधना गुरुमंत्र जप एवं धार्मिक ग्रन्थ का पठन-मनन करना चाहिए। साथ ही इस चन्द्रग्रहण का दुष्प्रभाव उड़ीसा, बंगाल, आसाम, बिहार, सौराष्ट्र-गुजरात, पश्चिमी देश संभाग, पर्वत विशेषवाला संभाग तथा महापुरुष पद विशेषस्थ वर्ग, उच्च अधिकारी, उच्च उद्योगपति धनिक-श्रीमन्त विशेष एवं ट्रक व्यवसायशीलगण, फिल्म निर्माता-अभिनयकर्ता तथा हिंसक-आतंक प्रसारकगण हेतु कष्टद प्रभार सूचक। पदलोलुप-स्वार्थी-पशुपालक-चौर्यकर्मशील-तस्करगण हेतु भी नेष्ट फलद तथा इस ग्रहण वश संक्रामक आदि व्याधि, ऋतुजनित प्रकोप, आंधी, पवन वेग, हिमखण्ड प्रपात स्खलन, चक्रवात रचना एवं अग्नि तथा अस्त्र-शस्त्रादि से जन-धन-क्षति कुयोग साथ ही गर्भवती स्त्री तथा लकड़ी विषयक व्यवसाय कार्यकर्ता वर्ग को भी प्रपीड़ा बन पावे एवं कृषि सम्पदा विकास में श्रमसाधना कष्टद कार्यरचना। वस्तु पदार्थ दृष्टि से तरल रसवर्गीय द्रव्य पदार्थ में भावी तेजी का गतिक्रम एवं कार्यव्यवसाय लाभद बनें तथा सुगंधी पदार्थ इत्र, सेन्ट, पावडर-आदि सुगंधी शृंगारिक सामान तथा लाल एवं पीले रंग की वस्तु में भावी तेजी की धारणा, चना-हल्दी, मेथी, सरसों, तुवर, लाल मिर्च, मसूर आदि का कार्य व्यवसाय, भावी लाभ प्रदायक बन पावे।

२. खंडग्रास सूर्यग्रहण ता. २१.९.२०२५ : संवत् २०८२ आश्विन कृष्णपक्ष ३० रविवार को सूर्यग्रहण होगा। भारतीय समय से इसका स्पर्श रात्रि ११:०० से ग्रहण का मध्य रात्रिशेष ०१:१२ एवं मोक्ष रात्रि ३:२४ बजे होगा। **यह ग्रहण भारत में दृश्य नहीं होगा। भारत में इससे सम्बन्धी कोई भी यम, नियम, सूतक आदि मान्य नहीं होंगे।** यह ग्रहण पैसेफिक, अटलांटिक ओसियन एवं दक्षिणी ऑस्ट्रेलिया और अन्टार्कटिका में दृश्य होगा।

३. कंकणाकृति सूर्य ग्रहण ता. १७.२.२०२६ : संवत् २०८२ फाल्गुन कृष्ण पक्ष ३० मंगलवार को कंकणाकृति सूर्य ग्रहण होगा। भारतीय समय से इसका स्पर्श दिन में ५:१३ से ग्रहण का मध्य दिवा ०५:४२ एवं मोक्ष ६:११ बजे होगा। **यह ग्रहण भारत में दृश्य नहीं होगा। इससे भारत में इससे सम्बन्धी कोई भी यम, नियम, सूतक आदि मान्य नहीं होंगे।** यह ग्रहण दक्षिण साउथ अफ्रिका, अन्टार्कटिका, मेडागास्कर, बोस्तवान, तंजानिया में दृश्य होगा।

४. खग्रास/ग्रस्तोदित चन्द्र ग्रहण ता. ३.३.२०२६ : संवत् २०८२ फाल्गुन शुक्ल पक्ष १५ मंगलवार दि. ३.३.२०२६ ई. को चंद्रग्रहण होगा! भारतीय समय में चन्द्र का विरल छाया में प्रवेश दिवा २:१४ बजे, स्पर्श दिवा ३:२० बजे, सम्मिलन दिवा ४:३५ बजे, मध्य सायं ५:०४ बजे, उन्मीलन सायं ५:३३ बजे, मोक्ष सायं ६:४७ बजे, विरल छाया से निर्गम सायं ७:५३ बजे होगा। यह ग्रहण भारत में चंद्रोदय से पूर्व ही प्रारम्भ हो जावेगा इससे **सम्पूर्ण भारत में ग्रस्तोदित ग्रहण ही दृश्य होगा। चन्द्र ग्रहण का सूतक ९ घंटे पूर्व होता है परन्तु ग्रस्तोदय चन्द्र ग्रहण में सूतक पूर्ववर्ती दिन सूर्योदय से या चन्द्रोदय से १२ घंटे पूर्व से ही मान्य रहेगा! चन्द्रस्य ग्रस्तोदये तू यामचतुष्टयवेधात्पुर्व दिवा न भूंजीत्** (धर्मसिंधु)।

ग्रहण का शुभाशुभ प्रभाव **मेष राशि-** चिन्ता, विकार। **वृषभ-** अपवाद, खेदजनक। **मिथुन-** सुयोगद, सौख्य, लाभकारक। **कर्क-** अपवाद, व्यर्थ खर्च का परिचायक। **सिंह-** शरीर विकार, कष्टप्रदायक। **कन्या-** आर्थिक चिन्तन, अपव्यय सूचक। **तुला-** सुखद लाभद, सुयोगद। **वृश्चिक-** सुख सुविधा, शुभ फलद। **धनु-** मानद रूप में कमी, चिन्तन सूचक। **मकर-** देह विकार, प्रपीड़ा प्रभार प्रदायक। **कुंभ-** चिन्तन, विकार, अपवाद सूचक। **मीन-** सुखद, फलद योग। यह ग्रहण पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र व सिंहराशि मंडल पर मान्य है अतः इस राशि व नक्षत्र वालों को ग्रहण दर्शन नहीं करना चाहिए। अपितु अपने इष्ट देव की आराधना, गुरुमंत्र, जप एवं धार्मिक ग्रन्थ का पठन-मनन करना चाहिए। इस चन्द्रग्रहण का दुष्प्रभाव कश्मीर, बंगाल, सुदूर जंगल भाग, चौपाया पशु, राष्ट्रीय विचारक पुरुष, उच्च उद्योगपति-श्रीमन्त, मालवा संभाग, विंध्याचल संभाग, महापुरुष विशेष एवं शिल्पकार, दम्भी-घमण्डी, कुमारी कन्या, अस्त्र-शस्त्र निर्माता, फिल्म निर्माता, अभिनयकर्ता, गायक वादक तथा महिला वर्ग-विशेष पर प्रभारक कष्टसूचक। वस्तु पदार्थ दृष्टि से शहद श्रीफल, विविध फल, सूत-कपास-वस्त्र, नमक, चावल, चना, गुड़, जौ-यव, गेहूँ, जुवार, अलसी, सरसों, अरण्डा, ताम्बा, विविध तरल रस पदार्थ तथा काली+पीली रंग वस्तु पर तेजी का गतिक्रम तथा व्यवसाय लाभद बन पावें। बाड़मेर, जैसलमेर, पश्चिमी गुजरात में ग्रहण मांद्य रूप में दृश्य होगा। अत: इन क्षेत्रों में ग्रहण से सम्बंधित वेध, सूतक, स्नान, दान, पुण्य, कर्म, यम, नियम मान्य नहीं होंगे।

होलिका दहन निर्णय : संवत् २०८२ में फाल्गुन शुक्ल १४ के दिन (२ मार्च, २०२६) प्रदोषकाल में पूर्णिमा और संपूर्ण रात्रि में भद्रा की व्याप्ती है। दूसरे दिन पूर्णिमा सूर्यास्त से पूर्व समाप्त हो रही है किन्तु पूर्णिमा की व्याप्ती साढ़े तीन प्रहर से अधिक है और प्रतिपदा तिथि वृद्धिगामी है, इसलिये शास्त्रवचन के अनुसार होलिका दहन पूर्णिमा के दिन (३ मार्च, २०२६) को होना चाहिए था **परंतु ३ मार्च के दिन ग्रस्तोदित चंद्र ग्रहण है** और ग्रहणकाल तथा प्रदोष से पूर्व ही पूर्णिमा समाप्त हो रही है। **ऐसी स्थिति में धर्मसिंधु के अनुसार होलिका दहन पूर्व दिन ही करना * इदं चंद्रग्रहणसत्वे वेधमध्ये कार्यम ग्रस्तोदये परदिने प्रदोषे पूर्णिमासत्वे ग्रहणमध्य एव कार्यम्। अन्यथा पूर्वदिने *** - (धर्मसिंधु) दूसरे दिन में ग्रस्तोदय ग्रहण हो और प्रदोष काल में पूर्णिमा न हो तो पूर्व दिन ही होलिका दहन पूजा करें। साढ़े तीन प्रहर से अधिक पूर्णिमा और प्रतिपदा वृद्धिगामी होते हुए भी धर्मसिंधु में दिये हुए ग्रहण विचार के वचनानुसार होलिका दहन २ मार्च, २०२६ को प्रदोषकाल में करना शास्त्र सम्मत होगा। इस दिन भद्रा सायं ०५:५६ से मध्य रात्रि के बाद रात्रि शेष २९:२९ (३ तारीख की सुबह ०५:२९) तक रहेगी। भद्रा के सम्बन्ध में शास्त्रों में लिखा गया है कि यदि भद्रा निशीथकाल (मध्य रात्रि) के बाद तक रहे तो फिर भद्रा में ही प्रदोष के समय भद्रा का मुख छोड़कर होलिका का दहन करें। **इस वर्ष प्रदोष में भद्रा का मुख नहीं रहेगा इससे प्रदोष वेला (सूर्यास्त से २ घंटे २४ मिनट) में ही होलिका का दहन करना शास्त्रोक्त है।** ♠ ♠ ♠ ♠

● स्वयंसिद्ध-मुहूर्त्त सूत्रम् ●

प्रतिपद्वत्सरादि या तृतीया क्षय्यसंज्ञिका । दशमी विजयाख्या च मुहूर्त्तास्त्रय ईरिताः ।। प्रतिपत्कार्त्तिके शुक्ले स मुहूर्त्तोऽर्ध संज्ञक । स्वयंसिद्धा इमेज्ञेयाः सर्वकार्य प्रसाधकाः ।। ये ३।। साढे तीन मुहूर्त्त अबूझ संज्ञक तथा आश्विन सुदी की दशमी, दीपावली, प्रदोष वेला, आषाढ सुदी भडली नवमी तथा कार्त्तिक सुदी की देवप्रबोध एकादशी एवं माघ मध्य वसंत पंचमी, फाल्गुन शुक्ल २ फुलेरा दूज आदि भी मतान्तर से अनपूछा मुहूर्त्त संज्ञक लोकाचार में मान्य

♠ पुनरपिशास्त्रीय वचन ♠

वर्षादौ प्रतिपच्चैव दशमी विजयाभिधा। अक्षयाख्या तृतीया च कार्त्तिकी प्रतिपत्सिते ।। सार्धतिस्त्रः दिनान्येते शुभेषु सिद्धिदायकः । नात्र दोषो भवेत्किञ्चिनित्यं च शुभवर्धते ।। अर्थात् नववर्ष प्रतिपदा, विजयादशमी, अक्षय तृतीया, कार्त्तिक सुदी प्रतिपदा अर्द्धभाग समयोचित समाधान कारक

♠ अष्टादश पुराणादिक संख्या ♠

● अस्माकं सनातन सांस्कृतिक समृद्धिः ●

यद्यपि पौराणिक शैली प्रधानतया त्रैगुण्य-रचना और प्रकृति की विकासक है तथा प्रत्येक पुराण में गुणत्रय और गुणातीत संसार एवं अव्यक्त ब्रह्म का प्रतिपादन और उस प्रतिपाद्य की प्राप्ति का विधान है। वैदिक प्रक्रिया के अनुसार सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड तीन भागों में विभक्त है। १ पृथ्वी, २ अन्तरिक्ष, ३ द्यौः तथा काल क्रमानुसार इन तीनों में ६-६ परिवर्तन होते हैं १ सत्ता, २ उत्पत्ति, ३ बुद्धि, ४ परिपाक, ५ अपचय, ६ विनाश एवं ३ से प्रत्येक विकारों की गणना करने से १८ संख्या बनती है। १८ पुराण इन तीनों स्थानों की सृष्टि-प्रलय आदि का निरूपण करते हैं। अतः १८ भाव विकारों को व्यक्त करने के लिये पुराण भी १८ माने गये हैं। १ ब्रह्म पुराण, २ पद्म पुराण, ३ विष्णु पुराण, ४ शिव पुराण, ५ श्रीमद् भावगत पुराण, ६ नारदीय पुराण, ७ मार्कण्डेय पुराण, ८ अग्निपुराण, ९ भविष्यपुराण, १० ब्रह्मवैवर्त्तपुराण, ११ लिंग पुराण, १२ वाराह पुराण, १३ स्कन्द पुराण, १४ वामन पुराण, १५ कूर्म पुराण, १६ मत्स्य पुराण, १७ गरूड़ पुराण, १८ ब्रह्माण्ड पुराण। पुराण लक्षण : सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च। वंशानुचरितञ्चैव पुराणं पञ्च लक्षणम् ।। पुराणे ही कथा दिव्या आदि वशा च धीमताम्। कथ्यन्ते ये पुरास्माभिः श्रुतपूर्व पितुस्तव ।।

★☆ मानवीय आत्म तत्व संबोध ☆★

● इस नर देह शरीर का राजा आत्मा है। बुद्धि-शरीर का मंत्री। तथा मन-शरीर का सेनापति। एवमेव सभी ज्ञान-कर्म आदि इन्द्रियां शरीर की सेनाएँ हैं। यदि राजा सुषुप्त-सोया हुआ अथवा अज्ञान से विभ्रमित है तो मंत्री तथा सेनापति अपनी सेना द्वारा राजा को पराभव प्रदान करते-आधीन कर लेते हैं तथा यदि राजा संज्ञा एवं विवेकशील हो तथा अपने राजा होने का ज्ञान हो तो वह बुद्धिबल द्वारा मन को वश में करके अनैतिक क्रियाओं से बचकर सांसारिक-अव्यावहारिक कामनाओं का हनन कर सकता है। इस नियामक अनुसार निष्काम-कर्मयोगी परम पुरूष पद भी सहज ही प्राप्त कर सकता है।

शरीर - मन - बुद्धि - आत्मा

कर्मयोग - भक्तियोग - ज्ञानयोग - बुद्धियोग

शब्दः स्पर्शश्च रूपं च रसो गन्धः क्रमाद् गुणाः

आकाश वायु अग्नि जल पृथ्वी

खनिलाग्न्यम्बुवामेक गुणवृद्ध्यन्वयः परे ।।

(१) पृथ्वी-जल-अग्नि-वायु-आकाशा। मन-बुद्धि-अहंकार। इन अष्टधा तत्व विषय पर आधारित ही मूलतया प्रकृति रचना है।

(२) जल पृथ्वी से सूक्ष्म है। अग्नि तत्व जल तत्व से सूक्ष्म है। अग्नि तत्व से वायु तत्व सूक्ष्म है। आकाश तत्व पंच भौतिक तत्वों में सबसे अधिक सूक्ष्म है। इन पंचभौतिक तत्वों से भी अधिक सूक्ष्म प्रकृति के तीन तत्व हैं मन-बुद्धि-अहंकार। आत्मा के संयोग से इन तीनों का समुच्चय चित्त या अंतःकरण कहाता है। मन आकाश तत्व से अधिक सूक्ष्म है। तथा बुद्धि मन से अधिक सूक्ष्म तथा अहंकार बुद्धि से अधिक सूक्ष्म है। अंतःकरण के ये तीन अंग ''मन-बुद्धि-अहंकार'' से आत्मा के देह छोड़ने के उपरान्त सारहीन हीं हैं।

शाश्वत ध्रुव-धर्म सूत्रावली

★भोगा न भुक्ता वयमेव भुक्ता स्तपो न तप्तं वयमेव तप्ताः।
कालो न यातो वयमेव याता स्तृष्णा न जीर्णा वयमेव जीर्णाः ।।

★आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्।
परोपकारः पुण्याय-पापाय परपीड़नम् ।।

★अष्टादशपुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयम्।
परोपकारः पुण्याय-पापाय परपीड़नम् ।।

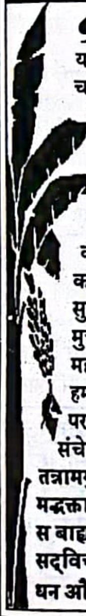
★सत्यान्नास्ति परो धर्मो नानृतात्पातकं परम्।
स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः ।।

★मुखो पवित्रं यदि रामनामं। हृदयपवित्रं यदि ब्रह्मज्ञानम्।
चरणौ पवित्रं यदि तीर्थ गमनं। हस्तौ पवित्रं यदि पुण्यदानम् ।।

★अत्यन्त कोपः कटुका च वाणी दरिद्रता च स्वजनेषु वैरम्।
नीचप्रसंगः कुलहीन सेवा चिह्नानि देहे नरक स्थितानाम् ।।

★निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु।
लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु या यथेष्टम्।
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा।
न्याय्यात्पथः प्रविचलन्तु पदं न धीराः ।।★

♠ श्री प्रभु प्रार्थना-प्रत्याकर्षण सूत्र ♠



दैनिक व्यस्ततम जनजीवन में यथाशक्ति-श्रद्धा-भक्ति-निष्ठापूर्वक अपने श्रीइष्टदेव एवमेव श्रीदेवी शक्ति तत्व की उपासना प्रार्थना नियमित करना चाहिये। प्रति सद्गृहस्थ्य हेतु यह एक अनुपम सार्थक-फलद-पुण्यद सन्मार्ग है। इस प्रार्थना शक्तिजनित प्रभामण्डल के विकसित होने पर जीवनीय विषम विबाधा-समस्या का निवारण एवं विशेषकर मूल प्रकृति जनित ''अहं तत्व भाव'' विकार का शमन-निराकरण समाधान बनना भी सर्वधर्म सम्मत शाश्वत सूत्र है। इस युग के महामना महात्मा गांधीजी द्वारा भी किसी भी प्रायोजन-आयोजन के प्रथम ''प्रार्थना तत्व'' का समावेश किया जाता रहा है तथापि धर्मशास्त्रीय उद्घोषणा भी यही है कि ''देवो भूत्वा देवं यजेत्'' भावेन लभते सर्व भावेन देव दर्शनम्। भावेन परमं ज्ञानं तस्माद् भावाऽवलम्बनम् ।। अर्थात् अपने इष्टदेव का स्तोत्र पाठ जप-पूजन-ध्यान-कीर्तन-भजन-प्रार्थना-अनुष्ठान आदि कर्म सर्वदा सात्विक, पवित्र अन्तःकरण एवं निष्काम मनोभावना से सम्पन्न करना चाहिये एवं पंच भौतिक देहधारी मानव-मनुष्य ग्रहजनित विबाधा-आधि व्याधि से भी मुक्त होकर शाश्वत सुगम शांत गतिक जीवनक्रम का अनुभव सहज भाविक प्राप्त कर सकता है। इस विषयक शास्त्रीय सूत्र-रोगार्त्तो मुच्यते रोगाद्बद्धो मुच्येत बन्धनात्। भयान्मुच्येत भीतस्तु मुच्येतापन्न आपदः ।। प्रार्थना हमारे आंतरिक परिवर्त्तनों में महत्वपूर्ण भूमिका बनाती है जब भी हम प्रार्थना करते हैं तो हमारे कलुषित विचार तिरोहित हो जाते हैं तथा इससे हमारा मन शरीर स्वस्थ्य-पवित्र-प्रफुल्लित होता है एवं तथ्य सार यह भी कि प्रार्थना एक प्रक्रिया है - आत्मा को परमात्मा के पथ का राही बनने का तथा इस सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के रचियता परिपालक सर्वेश्वर की परम शक्ति सत्ता संचेतना समाधार विधायक तत्व का सुगम सन्मार्ग। तदर्थ ही शास्त्रीय वचनामृत सूत्र- करोति सततं यो हि तन्नामगुणकीर्त्तनम्। कालं मृत्युं स जयति जन्म रोगं जरां भयम् ।। नाऽहं वसामि वैकुण्ठे योगिनां हृदये न च। मद्भक्ता यत्र गायन्ति त्तिष्ठामि तत्र नारद ।। ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वाऽवस्थां गतोऽपि वा। यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ।। अष्टादश पुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयम्। परोपकारः पुण्याय पापाय पर पीड़नम् ।। उत्तम सद्विचार रहें, करे मनुष्य सतकर्म। जो चाहे सो प्राप्त करें, संकल्पित मन का धर्म ।। जाना सब को एक दिन तज धन औ परिवार। आनन्द सूत्र ऐश्वर्य-मद ये मिथ्या अधिकार ।। ☆ कृणवन्तो विश्वमार्यम्-जीवेम शरद शतम् ☆

◆दुष्ट पंचांग कुयोग परिहार

तथा शास्त्रसम्मत अनुदान सूत्र यह कि ◆ दुष्टयोगे हेम चन्द्रे च शंखं धान्यं तिथ्यर्धे तिथौ तण्डुलांश्च। वारे रत्नं भे च तारासु राजा ।। योग-दुष्ट कुयोगद हो तो स्वर्णदान, चन्द्रमा-हेतु शंख, करण-हेतु धान्य, तिथि-हेतु चांवल, दिन-हेतु रत्न-मुद्रादि, नक्षत्र-हेतु गोदान, नाड़ी-हेतु स्वर्णदान, तारा हित नमक आदि के अनुदान से सरलतया परिहार बनता है।

✷ विवाहे शुद्धिचक्रं तथा गोचर ग्रहफल शुभाऽशुभ ज्ञानचक्रम् ✷

यादृशेन शशांकेनग्रहः संचरते नृणाम् ।। तादृशं फलमाप्नोति शुभं वा यदि वाऽशुभम् ।। शोभन से ठीक, पूज्य से सामान्य, निन्द्य से अशुभ समझें। ● विशेष वचनानुसार वर पक्ष में १२ चन्द्र शुभ मान्य तथा कन्या हेतु १२ वाँ चन्द्र मान्य नहीं। ● स्त्रीणां गुरूबलं श्रेष्ठं पुरूषाणां रवेर्बलम्। तयोश्चन्द्रबलं श्रेष्ठमिति गर्गेण निश्चितम् ।। गोचरे वा विलग्ने वा ये ग्रहारिष्ट सूचकाः। पूजयेत्तान प्रयत्नेन पूजिता स्युः शुभप्रदाः ।।

सूर्यः	चन्द्रः	मंगलः	बुधः	गुरूः	शुक्रः	श.रा.के.	ग्रहाः
३।६ १०।११	१।२।३।५।६। ७।९।१०।११	३।६ १०।११	२।६ १०।११	२।५।७ ९।११	१।२।३ ९।११	३।६ १०।११	शोभन
१।२।५ ७।९	०	१।२।५ ७।९	१।३।५ ७।९	१।३।६ १०	५।६ ७।१०	१।२।५ ७।९	पूज्य
४।८।१२	४।८।१२	४।८।१२	४।८।१२	४।८।१२	४।८।१२	४।८।१२	निन्द्य

अष्टक वर्ग शोधन-साधना

प्रतिवार्षिक ग्रहगोचरीय चलन कलन अनुसार ग्रह एवं लग्न बल हेतु रेखाष्टक वर्ग रेखा बल की मान्यता ज्योतिर्विद समाज में पुरातन समय से ही प्रचलित है। इष्ट मुहूर्त्त अथवा अन्य कार्य विषयक दिवस पर अष्टकवर्ग रेखा बल की गणना बनने पर नेष्ट अशुभ संज्ञा ४-८-१२ गोचर ग्रह भी शुभ श्रीकार संज्ञा का मान्य हो जाता है। यथा ही शास्त्रीय सूत्र - अष्टवर्गेण ये शुद्धास्ते शुद्धाः सर्व कर्मसु। सूक्ष्माऽष्टवर्गसंशुद्धिः स्थूला शुद्धिस्तु गोचरे ॥ पुनरपि मुहूर्त्तग्रन्थान्तरे शास्त्रीय सूत्र - अष्टवर्गविशुद्धेषु गुरूशीतांशुभानुषु। व्रतोद्वाहौ च कर्त्तव्यो गोचरे न कदाचन् ॥ तावद् गोचरमन्वेष्यं यावन्न प्राप्यतेऽष्टकम्। अष्टवर्गे तु सम्प्राप्ते गोचरं विफलं भवेत् ॥ इष्ट मुहूर्त्त दिवस अथवा विवाह लग्नादि समय पर सूर्य+चन्द्र+गुरू का अपना अपना रेखाष्टक बल प्राप्त करें यदि १ से ३ रेखा इष्ट ग्रह की आवे तो इष्ट ग्रह को रेखा बल मान्य नहीं होवें। यदि ४ या इससे अधिक ८ अंक मध्य तक रेखा बल प्राप्त होने पर गोचर गणनीय ४-८-१२ गणना के सूर्य+चन्द्र+गुरू गोचर में रहते भी मांगलिक कार्य का समाधान-विधान मुहूर्त्त शास्त्र सम्मत है। सभी ग्रहों के रेखाबल कोष्टक निर्णयसागरीय पंचांग संवत् २०७२ पृष्ठ संख्या ६८ पर स्पष्ट दिये गये हैं। जिस ग्रह का रेखाबल प्राप्त करना होवे उसकी कुण्डली रचना (जन्म कुण्डली अथवा चन्द्र लग्न कुण्डली की तरह कर लेवें) अर्थात् अभीष्ट ग्रह को इष्ट दिवस की ग्रह राशि अनुसार लग्न भाव मानते प्रथम भाव में रखते-अन्य इष्ट दिवस के गोचर ग्रह पंचांग में देखकर लिख लेवें। इस प्रकार जिस ग्रह का रेखा बल प्राप्त करना है उसकी स्थिति रचना बन जावेगी। तथा जो भी इष्टकालिक लग्न हो उस राशि भाव के स्थान पर लग्न लिख देवें। इस उपरान्त इष्ट ग्रह का रेखाबल कोष्ठक पंचांग में देखें। तथा इष्ट ग्रह की कोष्ठक रचना संख्या-भाव अनुसार ग्रह विषयक रेखा लगावें। यथा-गुरू रेखाष्टक कोष्ठ में सूर्य राशि भाव स्थान से १-२-३-४-७-८-९-१०-११ भाव में गुरू रहते पुनरपि १-। रेखा गुरू को प्राप्त। एवमेव चन्द्र राशि भाव से २-५-७-९-११ भाव में गुरू रहते १-। रेखा और भी। इसी प्रकार अवशेष मं.बु.गु.शु.श. तथा लग्न भाव स्थान से रेखा प्रदान करते यदि ४ रेखा अथवा अधिक रेखा गुरू को प्राप्त बनते रेखा बलिष्ट-गुरू शुभ ही मान्य रहेंगा। एवमेव इष्ट दिवस के सूर्य चन्द्रादि कुण्डली रचना करके रेखा बल भी विदित कर सकते हैं।

मूलादिक-गण्डान्तक
✷ जन्म नक्षत्र ✷

नवजात शिशु-बालक के जन्म समय पर रेवती-अश्विनी। आश्लेषा-मघा। ज्येष्ठा-मूल आदि नक्षत्रों में जन्म होने पर गण्ड नक्षत्र मूलादि संज्ञा से जन्म माना जाता है। इन नक्षत्र समाप्त स्थिति समय से भावी नवीन नक्षत्र तथा नवीन राशि की गणना बनते गण्डान्त नक्षत्र की शान्ति मान्यता। तथापि-इन नक्षत्रों में भी चरण भेद से शुभ-अशुभ निर्णय बनता है। तथापि वेदिक साहित्य में इन नक्षत्रों की शान्ति साधना हेतु ये अभिमन्त्र है।

♣ गंड मूल नक्षत्र शांति मंत्र ♣

(१) **रेवती** (पूषा) : ॐ पूषन् तवव्रते वयं नरिष्येम कदाचन स्तोतारस्त इहस्मसि। ॐ पूष्णे नमः।

▲ सर्वेषां कृते जप संख्या-यथाशक्ति ▲

(२) **अश्विनी** नक्षत्र (स्वामित्व अश्विनी कुमार) : ॐ अश्विनातेजसाचक्षुः प्राणेन सरस्वतीवीर्यम्। वाचेन्द्रोबलेनेंद्राय दधुरिन्द्रियम्। ॐ अश्विनी कुमाराभ्यां नमः॥

(३) **अश्लेषा** (स्वामित्व सर्प) : ॐ नमोस्तु सर्प्पेभ्यो ये के च पृथिवी मनुः ये अन्तरिक्षे ये दिवितेभ्यः सर्प्पेभ्यो नमः॥ ॐ सर्प्पेभ्यो नमः॥

(४) **मघा** (स्वामित्व पितर) : ॐ पितृभ्यः स्वाधायिभ्यः स्वधानमः पितामहेभ्य स्वधायिभ्यः स्वधाः नमः। प्रपितामहेभ्य स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। अक्षन्नापित्रोमीमदन्त पितरोऽतीतृपन्तपितरः पितरः शुन्धध्वम्॥ ॐ पितृभ्यो नमः/पितराय नमः॥

(५) **ज्येष्ठा** (इन्द्र) : ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र हवे हवे सुह्व शूरमिन्द्रम् हयामि शक्रं पुरूहुंतमिन्द्र स्वस्तिनो मधवा धात्विंद्रः॥ ॐ शक्राय नमः॥

(६) **मूल** (राक्षस) : ॐ मातेव पुत्र पृथिवी पुरीष्यमणि स्वेयोनावभारूषा। तां विश्वेदेवर्ऋतुभिः संवदानः प्रजापतिविश्वकर्मा विमुच्वतु॥ ॐ निर्ऋतये नमः॥

चन्द्रसूर्यादि-गोचरगणनाविषये-व्यवस्था

● पाणिग्रहे स्त्रीसुरतेऽभिषेके निषेके यात्रा व्रत बन्धने च। व्रतोपवासादिषु गर्ग पूर्वः शुभो द्वादशगो हिमांशुः॥ तथा च पुनरपि शास्त्रीय निबंध ग्रंथ विभेदे तु-स्वर्क्षे स्वोच्चेऽष्टमित्रर्क्षे पूर्णो वा रजनीपतिः। गोचरे शुभमादत्ते निन्द्योऽप्यावश्यके विधौ॥ तथा च प्रकारान्ते ● शुभांशेगुरूदृष्टोऽशुभोपिसन्। भावार्थ - पुरूष वर्ग हेतु द्वादश १२वाँ चन्द्र गोचर गणना अनुसार शुभ ही मान्य है, पाणिग्रहण-विवाह-सुरत काम क्रिया, अभिषेक यात्रा में १२वाँ चन्द्र पुरूष हेतु शुभ। इस उपरान्त भी शास्त्रकारों ने "नारीणां द्वादशश्चन्द्रः कष्टहानिकरस्तदा"-अर्थात् स्त्री वर्ग हेतु १२वाँ चन्द्र कदापि मान्य नहीं तथा आवश्यकता विशेष में यदि गोचर गणना में ४-८-१२ चन्द्रमा अपनी राशि कर्क का, स्व उच्च वृषभ का, मित्र राशि का एवं पूर्ण बिम्ब-पूर्णिमा चन्द्र अशुभ गणना का भी व्यवहार योग्य है तथा गुरू-चन्द्र का नव पंचम दृष्टि सम्बंध बनना भी शुभ मान्य है।

☆ सूर्यस्य गोचरगणना विषये-व्यवस्था ☆

● उच्च राशिगतो भानुरूच्चराशिगतो गुरूः रिष्फा १२ ऽष्ट ८ तुर्यगो ४ ऽपीष्टो नीचारिस्थः शुभोऽप्यसत्॥ एवं ज्योतिनिर्बन्धग्रंथे सूत्रम्॥ द्विरर्च्यो द्वादशस्तुर्यो १२-४ ऽथाष्टमास्त्रिगुणार्चनात् ८॥ तथा च बृहदैवज्ञरंजन निबन्ध-ग्रंथेऽपि-अनिष्ट स्थानगे सूर्ये शुभराशिः पुरो भवेत्। त्रयोदशदिनं त्यक्त्वा शेषस्थं शुभमादिशेत्॥ अशुभ स्थानगे सूर्ये दद्याद्धेनुं सदक्षिणाम्॥

भावार्थ - उच्च राशि मेष का सूर्य ४-८-१२ वाँ भी शुभ मान्य तथा नीच ७ तुला एवं वृषभ २ एवं मकर कुंभ १०-११ राशिगत गोचर गणना से शुभ भी विशेषकर जप-अनुष्ठान-पूज्यादि क्रम से समाधान योग्य एवं गौ दान-स्वर्ण अनुदान कार्य सर्वदा व्यवहार जनक है।

● गुरू-बृहस्पतिः गोचर गणना विषये ●

स्वोच्चे गुरूः स्वभवने भवनेथ मित्रे मित्रांशके स्वभवनोच्चगतांशके वा। कर्मान्त्यजन्मनिधनारि-चतुस्त्रये वा पुत्रार्थसौख्यपतिवृद्धिकरो विवाहे॥ उच्चस्थः स्वगृही सुहृद्भवनगो वाचस्पतिर्नित्यशः। पूर्णायुर्विविधार्थ सौख्यजनको जन्माष्टगो वा भवेत्॥ झष १२ चाप ९ कुलीरस्थो ४ जीवोप्यशुभगोचरः। अतिशोभनतां दद्याद्विवाहोपनयादिषु॥ भावार्थ यह कि अपनी उच्च राशि कर्क ४ या स्वराशि धनु-मीन ९-१२ अथवा मित्र राशि मेष-कर्क-सिंह-वृश्चिक आदि का गोचर गमन बनते बृहस्पति ४-८-१२ वीं गणना का भी शुभ मान्य होता है। ● तथा वक्रातिचार गति स्थिति रहते जिस राशि में गुरू गतिशील रहें वहीं राशि गोचर गणना में मान्य रहना चाहिये यथा शास्त्र वचन - ● वक्रातिचारे सुरराजमन्त्री यत्रागतस्तत्र फलं ददाति॥☆ तथा गुरू अतिचारी अथवा वक्री गतिशील रहने पर - सभी राशियों वाली कन्या-बाला को शुभ ही मान्य है यथा शास्त्रीय वचन गर्गाचार्यः - चारोतिचारे वक्रे वा तस्मिन्भे संस्थिति गुरूः। शुद्धिं दद्यात्स्वतंत्रेण योषितां पाणिपीडने॥ एवं गुरु की अतिचार अथवा वक्रगति बनते गोचर शुद्धि हेतु पूर्णतया स्वतंत्रता मान्य करने का भी समादेश बनता है। ● तथा वर-कन्या की जन्म नक्षत्र राशि का ज्ञान नहीं होने पर वर-कन्या के प्रचलित नाम राशि अनुसार ही गुण-गण मेलापक एवं सूर्य-चन्द्र-गुरू आदि की गोचर गणना शास्त्र सम्मत है। यथा शास्त्र वचन-अज्ञातजन यिष्ये तु नामभादेव चिन्तयेत्। जायापत्योर्भकूटाद्यं गोचराद्यखिलं तथा। एकस्यापि तु दम्पत्योरज्ञाते जन्मभे तथा। जन्मभात्तु गुरूद्वयादि मेलनं नामभाद् द्वयोः॥ ♠ गोचरे वा विलग्ने वा ये ग्रहारिष्ट सूचकाः। पूजयेत्तान् प्रयत्नेन पूजिता स्युः शुभप्रदाः॥

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्॥

विश्व मान्य धर्मसूत्र १ सत्यं वद-सत्य बोलो। २.धर्मं चर-धर्माचरण करो। ३.मातृदेवो भव-जननी देव तुल्य ४.पितृ देवो भव-जनक देव तुल्य। ५.आचार्य देवो भव-गुरू वचन पर पूर्ण आस्था। ६.अतिथि देवो भव-अतिथि देव तुल्य सर्वदा। ७.स्वाध्यायान्मा प्रमदः-अहर्निश पठन-मननशील एवं प्रमाद आलस्य से सदा दूर। ८.श्रद्धया देयम्-श्रद्धा से दान-अनुदान मान्य। इन सूत्रों पर जितने भी प्रतिशत निर्वाह क्रिया बनेगी, उतना ही उत्तम परमात्म तत्व प्राप्त होगा

ज्योतिर्विज्ञान के आदि-अनादि काल से सन्मान्य महर्षि-प्रणेता समुदाय-त्रिकालज्ञ अष्टादश संख्यक नामावली

सूर्यः पितामहो व्यासो वसिष्ठोऽत्रिः पराशरः।
कश्यपो नारदो गर्गो मरीचिर्मुनुरङ्गिराः॥
लोमशः पौलिशश्चैव च्यवनो यवनो भृगुः।
शौनकोऽष्टादशाश्चैते ज्योतिःशास्त्र प्रवर्त्तकाः॥
सिद्धान्त-संहिता-होरारूपं स्कन्धत्रयात्मकम्।
वेदस्य निर्मलं चक्षुज्योतिः शास्त्रमकल्मषम्॥

अथ लग्नपत्रं अक्षांश २६....चरखण्ड ६०।४८।२०, अक्षप्रभा ६।० अजमेर, जोधपुर, ग्वालियर, कानपुर, पटना, कूचबिहार, पूर्निया, दरभंगा, गौहाटी-आसाम, शिलांगेऽपि

अंशा:	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६
मेष	५४	१	८	१६	२३	३०	३८	४६	५४	३	११	१९	२८	३६	४४	५३	१	१०	१८	२६	३५	४३	५१	०	८	१६	२५	३३	४२	५०
१	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११
वृषभ	५८	७	१५	२३	३२	४०	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	११	२१	३१	४१
२	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७
मिथुन	५१	१	११	२१	३०	४२	५२	३	१४	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३१	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२	३	१४
३	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३
कर्क	२६	३७	४९	०	१२	२३	३५	४६	५८	९	२१	३२	४४	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१६	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	१
४	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	१२	२४	३४	४७	५८	१०	२२	३३	४४	५५	७	१८	२९	४०	५२	३	१४	२५	३७	४८	५९	११	२२	३३	४४	५६	७	१८	२९	४१
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
कन्या	५२	३	१४	२६	३७	४८	०	११	२२	३३	४५	५६	७	१८	३०	४१	५२	३	१५	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४५	५६	७	१८
६	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०
तुला	३०	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२	४
७	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५
वृश्चि.	१५	२७	३८	५०	१	१३	२५	३६	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२७	३९	५०	१	१३	२५	३६	४७
८	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५१
धनु	५९	१०	२२	३३	४५	५६	८	१८	२८	३८	४९	५९	८	१८	२८	३८	४८	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	३०	४०	५०	०
९	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५
मकर	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	१९	२७	३६	४४	५२	१	९	१८	२६	३४	४३	५१	०	८	१६	२४	३३	४१	४९	५८	६	१५	२३
१०	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	३१	४०	४८	५६	५	१३	२२	२९	३६	४३	५१	५८	५	१२	२०	२७	३४	४१	४८	५६	३	११	१८	२५	३२	४०	४७	५४	१	९
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
मीन	१६	२३	३०	३८	४५	५२	०	७	१४	२१	२९	३६	४३	५०	५८	५	१२	१९	२७	३४	४१	४९	५६	३	१०	१८	२५	३२	३९	४७
अंशा:	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९

लग्नसारिणी विधि - इष्ट दिन के सूर्य के राशि अंश अनुसार सारिणी से फलांक ग्रहण करें, उपर अंश कोष्टक तथा बाईं तरफ से कोष्ठ में राशि का निर्देश है। अपने इष्ट घटी पलों में इस फलांक को जोड़ें, तथा इस योगफल से न्यून समान कोष्टांक सारिणी में पुनः देखें एवं ऊपर अंशादि व वाम पार्श्व में राशि अर्थात् लग्न के राशि अंश विदित होगे। यथा उदाहरण-इष्ट दिन के सूर्य राशि-अंश ४।१० हैं तो फलांक २५।७ आये इसमें इष्ट घटि २० पल १३ में जोड़ें योगफल ४५।२० हुआ, लग्नसारिणी में योगफल का फलांक ७ राशि २७ अंश पर ४५।२५ है अतः योगफल से न्यून सामान ७ राशि २६ अंश लग्न स्पष्ट हुआ। ♣ **दिनमान**-सूर्य-राशि अंश समान फलांक लग्नसारिणी से लेवें, तथा इससे सप्तम राशि के अंश फलांक में से घटा देवें यह दिनमान होगा दिनमान में ५ का भाग देने से मध्यम देशी सूर्यास्त समय आवेगा, उसको १२।० घंटा मिनिट में घटाने पर लोकल देशी सूर्योदय समय आवेगा। इसमें स्टेण्डर्ड समयान्तर फल तथा वेलान्तर संस्कार धन ऋण करने से स्टेण्डर्ड प्रमाण का सूर्योदय बनेगा। ♠ **सूक्ष्म अयनांश ज्ञान विधी** - अयनांश प्रसाधन में विभिन्न मत-मतान्तर हैं, परन्तु यहां सारगर्भित सूक्ष्म गणनाक्रम को प्रदर्शित किया जा रहा है। इष्ट शाके वर्ष में १८०० घटावें, शेषफल को २ जगह रखें। १ स्थान पर ७० से भाग देकर '**अंशादि लब्धी**' लेवें तथा दूसरे स्थान पर ५० से भागित कर '**कलादि-लब्धी**' लेवें। तथा अंशादि और कलादि लब्धी फलों को परस्पर घटावें, तथा घटाये शेष को **सर्वदा २२।८।३३ अंशादि** में जोड़ने से सौर शक वर्षारम्भ कालिक अयनांश होंगे। इष्ट दिवस के अयनांश हेतु इष्ट दिन के सूर्य राशि अंश को अंशादि करके ५० से गुणा कर ३६० के भाग से '**विकलादि लब्धी**' होगी। इसे वर्षारम्भ अयनांश विकला में जोड़े तो इष्ट दिन कालिक अयनांश सिद्ध होंगे। अभी २३।३६ से अधिक अयनांश होने '**अर्धाधिकं रूपं स्यात्**' गणित नियम से २४ अयनांश क्रम से लग्न-पत्र मान्य किया है। अयनांश की वार्षिक गति ५० विकला है। **शाकेवर्षहेतुनियम**-चैत्रसुदी १ से मेष संक्रान्ति पूर्वकाल तक गत वर्षीय शाके मानें। तथा मेषाऽर्क काल से सौर वर्षीय शाके होता है, **यथासौरवर्षारंभाच्छकप्रवृत्ति वेंदितव्याइति गणितशास्त्रवचनं** ♠ ♣ ♠

चोरी गत वस्तु अभिज्ञान

अंधलो.	रो.	पु.	उ.	वि.	पू.	ध.	रे.	मिले, पूर्वे
मंदलो.	मृ.	आ.	ह.	ऽनु.	उ.	श.	अ.	प्राप्ति दक्षिणे
मध्यलो.	आ.	म.	चि.	ज्ये.	अ.	पू.	भ.	प्राप्ति पश्चिमे
सुलोचन	पु.	पू.	स्वा	मू.	श्र.	उ.	कृ.	कुयोग उत्तरे

लग्न सारिणी

उत्तर अक्षांश १७.५० से १८.५० मध्य स्थित संभाग हित नित्योपयोगी-अयनांश-२४

हैदराबाद, सिकन्दराबाद, सतारा, सांगली संभाग, गुलबर्गा, शोलापुर, पंढरपुर, बीदर, महाबलेश्वर, उस्मानाबाद, विशाखापत्तनम्, राजमुन्द्री, वारंगल, मेदक तथा बीजापुर, कोल्हापुर, रत्नागिरि, गुन्टूर, महबूब नगर आदि आसन्न संभाग हित अथवा समीपस्थ क्षेत्र नगर हेतु उपयुक्त।

लग्नम्	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
० मेष	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७
	१२	२०	२८	३७	४५	५३	१	९	१८	२७	३६	४५	५४	३	११	२०	२९	३८	४७	५६	५	१४	२३	३२	४१	५०	५९	८	१७	२५
१ वृष	७	७	७	८	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२
	३४	४३	५२	१	१०	१९	२८	३८	४९	५९	९	१९	३०	४०	५०	१	११	२१	३२	४२	५२	२	१३	२३	३३	४४	५४	४	१५	२५
२ मिथुन	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७
	३५	४५	५६	६	१६	२७	३७	४८	५९	१०	२३	३३	४४	५५	६	१७	२९	४०	५१	२	१३	२४	३६	४७	५७	९	२०	३१	४३	५४
३ कर्क	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३
	५	१६	२७	३८	५०	१	१२	२३	३४	४५	५६	७	१८	२९	४०	५१	२	१३	२४	३५	४६	५७	८	१९	३०	४१	५२	३	१४	२५
४ सिंह	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
	३६	४७	५८	९	२०	३१	४२	५३	३	१४	२४	३५	४६	५६	७	१७	२८	३९	५०	०	१०	२१	३२	४२	५३	३	१४	२५	३५	४६
५ कन्या	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४
	५६	७	१८	२८	३९	४९	०	११	२१	३२	४२	५३	४	१४	२५	३५	४६	५७	७	१८	२८	३९	५०	०	११	२१	३२	४३	५३	४
६ तुला	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९
	१४	२५	३६	४६	५७	७	१८	२९	४०	५१	२	१३	२४	३५	४६	५७	८	१९	३०	४१	५२	३	१४	२५	३६	४७	५८	९	२०	३१
७ वृश्चि.	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५
	४२	५३	४	१५	२६	३७	४८	५९	११	२१	३६	४४	५५	६	१७	२८	४०	५१	२	१३	२४	३५	४७	५८	९	२०	३१	४२	५४	५
८ धनु	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०
	१६	२७	३८	४९	१	१२	२३	३३	४४	५४	४	१४	२५	३६	४६	५६	६	१६	२७	३७	४७	५७	८	१८	२८	३९	४९	५९	१०	२०
९ मकर	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४
	३०	४०	५१	१	११	२२	३२	४१	५०	५९	८	१७	२६	३५	४४	५२	१	१०	१९	२८	३७	४६	५५	४	१३	२२	३१	४०	४९	५७
१० कुंभ	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
	६	१५	२४	३३	४२	५१	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४
११ मीन	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	३
	१२	२०	२८	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४
अंशादि	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९

उत्तर अक्षांश १८.५० से १९.५० मध्य स्थित संभाग हित नित्योपयोगी-अयनांश-२४

बम्बई (मुम्बई), पूना, औरंगाबाद, नान्देड़, अहमद नगर, बीड़, आदिलाबाद, बस्तर, मध्य उड़ीसा संभाग, निजामाबाद, करीमनगर, पूना (पूणे), जगन्नाथपुरी, थाना कल्याण, जगदलपुर, भुवनेश्वर, विजयनगरम् आदि आसन्न संभाग हित अथवा समीपस्थ क्षेत्र नगर हेतु उपयुक्त।

लग्नम्	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
० मेष	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७
	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	७	१६	२५	३३	४२	५१	०	९	१८	२७	३६	४४	५३	२	११	२०	२९	३८	४६	५५	४	१३	२२
१ वृष	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२	१२
	३१	४०	४९	५७	६	१५	२४	३४	४५	५५	५	१५	२६	३६	४६	५६	७	१७	२७	३७	४८	५८	८	१९	२९	३९	४९	०	१०	२०
२ मिथुन	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७
	३०	४१	५१	१	११	२२	३२	४३	५४	६	१७	२८	३९	५०	१	१३	२४	३५	४६	५८	९	२०	३१	४२	५३	५	१६	२७	३८	५०
३ कर्क	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३
	१	१२	२३	३४	४५	५७	८	१९	३०	४१	५२	३	१४	२५	३७	४८	५९	९	२०	३२	४३	५४	५	१६	२७	३८	४९	०	११	२२
४ सिंह	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
	३४	४५	५६	७	१८	२९	४१	५१	१	१२	२३	३३	४४	५५	५	१६	२७	३७	४८	५९	९	२०	३१	४१	५३	३	१३	२४	३५	४५
५ कन्या	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४
	५६	७	१७	२८	३९	४९	०	११	२१	३३	४३	५३	४	१५	२५	३६	४६	५७	८	१९	२९	४०	५१	१	१२	२३	३३	४४	५५	५
६ तुला	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९
	१६	२७	३७	४८	५९	९	२०	३१	४२	५३	५	१५	२६	३७	४९	०	११	२२	३३	४४	५५	६	१७	२८	३९	५०	१	१२	२३	३५
७ वृश्चि.	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५
	४६	५७	८	१९	३०	४१	५२	३	१४	२६	३७	४८	५९	१०	२२	३३	४४	५५	६	१८	२९	४०	५१	२	१४	२५	३६	४७	५८	१०
८ धनु	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०
	२१	३२	४३	५४	२	१७	२८	३८	४९	५९	९	१९	३०	४०	५०	१	११	२१	३१	४१	५२	२	१२	२३	३३	४३	५३	४	१४	२४
९ मकर	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५
	३४	४५	५५	५	१५	२६	३६	४५	५४	२	११	२०	२९	३८	४७	५६	५	१४	२२	३१	४०	४९	५७	७	१६	२४	३३	४२	५१	०
१० कुंभ	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
	९	१८	२७	३५	४४	५३	२	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	५	१३	२१	२९	३७	४५	५३	१	९	१७	२५	३३	४१	४९	५७	४
११ मीन	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	३
	१२	२०	२८	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	३	११	१९	२७	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	२
अंशादि	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९

उत्तर अक्षांश २०.५० से २१.५० मध्य स्थित संभाग हित नित्योपयोगी-अयनांश-२४

नागपुर, अमरावती, अजन्ता, अमलनेर, आकोला, एलिचपुर, कटक, खण्डवा, जलगाँव, जूनागढ़-गुज, तुमसर, धूलिया, नासिक, पालीताणा, पोरबन्दर गुजरात, वाशीम, भण्डारा, भुसावल, भडोच, भावनगर, भुवनेश्वर, मनमाड़, मालेगाँव, यवतमाल, रायपुर छत्तीसगढ, वर्धा, सम्बलपुर, सूरत-गुजरात, सोमनाथ, छत्तीसगढ, राजनाँदगाँव, दुर्ग, सेंधवा, चोपड़ा आदि आसन्न संभाग हित अथवा समीपस्थ क्षेत्र नगर हेतु उपयुक्त।

लग्नम्	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७	७
मेष	६	१४	२२	३०	३७	४५	५३	२	१०	१९	२८	३७	४५	५४	३	१२	२०	२९	३८	४४	५५	४	१३	२१	३०	३८	४८	५७	५	१४
१	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२
वृष	२३	३१	४०	४८	५७	६	१५	२५	३५	४६	५६	६	१६	२७	३७	४७	५७	८	१८	२८	३८	४८	५९	९	१९	२९	४०	५०	०	१०
२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७
मिथुन	२१	३१	४१	५१	२	१२	२२	३३	४४	५६	७	१८	२९	४०	५२	३	१४	२६	३७	४८	५९	१०	२२	३३	४४	५५	७	१८	२९	४०
३	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३
कर्क	५२	३	१४	२५	३७	४८	५९	१०	२१	३३	४४	५५	६	१७	२९	४०	५१	२	१३	२५	३६	४७	५८	९	२१	३२	४३	५४	५	१७
४	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
सिंह	२८	३९	५०	१	१३	२४	३५	४६	५७	७	१८	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	४५	५६	७	१७	२८	३९	५०	१	११	२२	३३	४४
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४
कन्या	५५	६	१७	२७	३८	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१६	२७	३७	४८	५९	१०	२१	३२	४२	५३	४	१५	२६	३७	४७	५८	९
६	३४	३४	३४	३४	३३	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९
तुला	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३६	४७	५९	१०	२१	३२	४३	५५	६	१७	२८	३९	५१	२	१३	२४	३५	४७	५८	९	२०	३१	४३
७	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५
वृश्चि.	५४	५	१६	२७	३९	५०	१	१२	२३	३५	४६	५७	८	२०	३१	४२	५३	५	१६	२७	३८	४९	०	११	२३	३४	४६	५७	८	१९
८	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०
धनु	३१	४२	५३	४	१६	२७	३८	४८	५८	९	१९	२९	३९	५०	०	१०	२०	३१	४१	५१	१	११	२३	३२	४२	५२	३	१३	२३	३३
९	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५
मकर	४४	५४	४	१४	२५	३५	४५	५३	२	११	२०	२९	३७	४६	५४	४	१२	२१	३०	३९	४७	५६	५	१३	२२	३१	४०	४८	५७	५
१०	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
कुंभ	१४	२३	३२	४२	५०	५८	७	१५	२३	३०	३८	४६	५४	१	९	१७	२५	३२	४०	४८	५५	३	११	१९	२७	३५	४३	५०	५८	६
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२
मीन	१३	२१	२९	३७	४४	५२	०	८	१६	२३	३१	३९	४७	५४	१	९	१८	२५	३३	४१	४९	५६	४	१२	२०	२८	३५	४३	५१	५९
अंशादि	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९

उत्तर अक्षांश २७.५० से २८.५० मध्य स्थित संभाग हित नित्योपयोगी-अयनांश-२४

बीकानेर, अलवर, अलीगढ, आगरा हाथरस, मथुरा, भरतपुर, मैनपुरी, बदायूँ, श्री कोलायतजी, काठमाण्डु, गोंडा, डिबरूगढ, पाटन-गुज., फरीदाबाद-हरि., फर्रुखाबाद, भूटान, महेन्द्रगढ-हरि., शाहजहाँपुर, श्रीमाधोपुर, सीतापुर, कोलायतजी, झुन्झुनु, चिड़ावा, सीकर, नवलगढ, नारनौल, पिलानी, फतेहपुर शेखावटी, चुरू-शेखावाटी, लाडनूं, श्रीडूंगरगढ, आदि आसन्न संभाग हित अथवा समीपस्थ क्षेत्र नगर हेतु उपयुक्त।

लग्नम्	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	२	२	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
मेष	५२	५९	६	१३	२१	२८	३५	४३	५२	०	८	१६	२५	३३	४१	४९	५८	६	१४	२२	३१	३९	४७	५६	४	१२	२०	२९	३७	४५
१	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
वृष	५३	२	१०	१८	२६	३५	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२४	३४	४४	५४	४	१४	२४	३४
२	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७
मिथुन	४४	५४	४	१४	२४	३४	४४	५५	७	१८	३०	४१	५३	४	१५	२७	३८	५०	१	१३	२४	३५	४७	५९	१०	२१	३३	४५	५६	७
३	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
कर्क	१८	३०	४२	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१४	२५	३७	४९	०	१२	२४	३५	४७	५९	१०	२२	३४	४५	५७	९	२०	३२	४४	५५
४	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	७	१९	३०	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४८	०	११	२३	३४	४६	५७	८	२०	३१	४३	५४	६	१७	२९	४०
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
कन्या	५१	३	१४	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३१	४३	५४	६	१८	२९	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	०	१२	२३
६	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०
तुला	३४	४६	५७	८	२०	३२	४३	५४	६	१८	३०	४१	५३	५	१६	२८	४०	५१	३	१५	२६	३८	५०	१	१३	२५	३६	४८	५९	११
७	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५
वृश्चि.	२३	३५	४६	५८	१०	२१	३३	४४	५५	७	१९	३०	४२	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४४	५६
८	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१
धनु	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	७	१७	२७	३७	४७	५७	७
९	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५
मकर	१७	२६	३७	४७	५७	७	१७	२५	३४	४२	५०	५८	७	१५	२३	३१	४०	४८	५६	४	१३	२१	२९	३८	४६	५४	२	११	१९	२७
१०	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुंभ	३५	४४	५२	०	८	१७	२५	३२	३९	४६	५४	१	८	१५	२२	२९	३७	४४	५१	५८	५	१२	२०	२७	३४	४१	४८	५५	३	१०
११	५७	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
मीन	१७	२४	३१	३८	४६	५३	०	७	१४	२१	२९	३६	४३	५०	५७	४	१२	१९	२६	३३	४०	४७	५५	२	१०	१६	२३	३०	३८	४५
अंशादि	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९

उत्तर अक्षांश २२.५० से २३.५० मध्य स्थित संभाग हित नित्योपयोगी-अयनांश-२४

कलकत्ता, अहमदाबाद, इन्दौर, उज्जैन, देवास, धार, रतलाम, भोपाल, बांसवाड़ा, बड़ौदा, जामनगर, सिवनी, होशंगाबाद, इटारसी, जबलपुर, नरसिंहपुर, रांची, नड़ीयाद, जमशेदपुर (टाटा), मंडला, पुरलिया, मिदनापुर आदि आसन्न संभाग हित अथवा समीपस्थ क्षेत्र नगर हेतु उपयुक्त

लग्न सारिणी

लग्नम्	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
० मेष	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७
	२	१०	१८	२५	३३	४०	४८	५७	५	१४	२२	३१	४०	४९	५७	५	१४	२३	३१	४०	४८	५७	५	१४	२३	३१	४०	४९	५७	६
१ वृष	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२
	१४	२३	३२	४०	४९	५७	६	१६	२६	३६	४७	५७	७	१७	२७	३७	४८	५८	८	१८	२८	३८	४९	५९	९	१९	२९	३९	५०	०
२ मिथुन	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७
	१०	२०	३०	४०	५१	१	११	२२	३४	४५	५६	७	१९	३०	४१	५३	४	१५	२७	३८	४९	०	१२	२३	३४	४६	५७	८	२०	३१
३ कर्क	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३
	४२	५३	५	१६	२७	३९	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८	९	२१	३२	४३	५५	६	१७	२९	४०	५१	३	१४	२५	३६	४८	५९	११
४ सिंह	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
	२२	३३	४५	५६	७	१९	३०	४१	५२	३	१४	२५	३६	४७	५८	९	२०	३१	४२	५३	४	१५	२६	३७	४८	५९	१०	२१	३२	४३
५ कन्या	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
	५४	५	१६	२७	३८	४९	०	११	२२	३३	४४	५५	६	१७	२८	३९	५०	१	१२	२३	३४	४५	५६	७	१८	२९	४०	५१	२	१३
६ तुला	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९
	२४	३५	४६	५७	८	१९	३०	४१	५२	४	१५	२७	३८	४९	१	१२	२३	३५	४६	५७	९	२०	३१	४३	५४	५	१७	२८	३९	५१
७ वृश्चि.	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५
	२	१३	२५	३६	४७	५९	१०	२१	३३	४४	५५	६	१८	२९	४०	५२	३	१४	२६	३७	४८	५९	११	२२	३३	४५	५६	७	१९	३०
८ धनु	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०
	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	५९	९	१९	३०	४०	५०	०	१०	२०	३१	४१	५१	१	११	२१	३२	४२	५२	२	१२	२२	३३	४३
९ मकर	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५
	५३	३	१३	२३	३३	४३	५४	२	११	२०	२८	३७	४६	५४	३	११	२०	२९	३७	४६	५५	३	१२	२०	२९	३७	४६	५५	३	१२
१० कुंभ	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
	२०	२९	३८	४६	५५	३	१२	२०	२७	३५	४२	५०	५७	५	१३	२०	२८	३६	४३	५१	५८	६	१४	२१	२९	३६	४४	५२	५९	७
११ मीन	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२
	१४	२२	३०	३७	४५	५२	०	८	१५	२३	३१	३८	४६	५३	१	८	१६	२४	३१	३९	४६	५४	१	९	१७	२४	३२	४०	४९	५५
अंशादि	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९

उत्तर अक्षांश १२.५० से १३.५० मध्य स्थित संभाग हित नित्योपयोगी-अयनांश-२४

मद्रास (चेन्नई), बैंगलोर, बैलूर, हासन, मंगलूर, चिकमंगलूर, रोबर्टसनपेट, कांचीपुरम्, कोलार (गोल्ड फील्ड), तुमकूर, चित्तूर, श्रीरंगपट्टम्, मैसूर, कन्नड़ संभाग, मण्डया, कांचीपुरम्, चिंगलपेट आदि आसन्न संभाग हित अथवा समीपस्थ क्षेत्र नगर हेतु उपयुक्त।

लग्नम्	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
० मेष	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७
	२१	२९	३८	४६	५४	३	११	२०	२९	३९	४८	५७	६	१६	२५	३४	४३	५३	२	११	२०	२९	३९	४८	५७	६	१६	२५	३४	४३
१ वृष	७	८	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२
	५३	२	११	२०	३०	३९	४८	५८	८	१९	३०	४०	५१	१	११	२२	३२	४३	५३	४	१४	२४	३५	४५	५६	६	१७	२७	३८	४८
२ मिथुन	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८
	५८	९	१९	३०	४०	५१	१	१२	२३	३४	४५	५६	७	१८	२९	४०	५१	२	१३	२४	३५	४६	५८	९	२०	३१	४२	५३	४	१५
३ कर्क	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३
	२६	३७	४८	५९	१०	२१	३२	४३	५३	४	१५	२५	३६	४७	५८	८	१९	३०	४०	५१	२	१२	२३	३४	४४	५५	६	१७	२७	३८
४ सिंह	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
	४९	५९	१०	२१	३२	४२	५३	३	१३	२४	३४	४४	५४	५	१५	२५	३५	४६	५६	६	१६	२६	३७	४७	५७	७	१८	२८	३८	४८
५ कन्या	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३
	५९	९	१९	२९	४०	५०	०	१०	२०	३१	४१	५१	१	१२	२२	३२	४२	५३	३	१३	२३	३३	४४	५४	४	१४	२५	३५	४५	५५
६ तुला	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९
	६	१६	२६	३६	४७	५७	७	१८	२९	३९	५०	०	११	२२	३३	४३	५४	५	१५	२६	३७	४७	५८	९	२०	३०	४१	५२	२	१३
७ वृश्चि.	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४
	२४	३४	४५	५६	७	१७	२८	३९	५०	१	१२	२३	३४	४५	५६	७	१८	२९	४०	५१	२	१३	२५	३६	४७	५८	९	२०	३६	४२
८ धनु	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	५०
	५३	४	१५	२६	३७	४८	५९	९	२०	३०	४१	५१	२	१२	२२	३३	४३	५४	४	१५	२५	३६	४७	५७	८	१८	२९	३९	५०	०
९ मकर	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४
	९	२०	३०	४१	५२	२	१२	२१	३०	४०	४९	५८	७	१७	२६	३५	४४	५४	३	१२	२१	३०	४०	४९	५८	७	१७	२६	३५	४४
१० कुंभ	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
	५४	३	१२	२२	३१	४०	४९	५७	६	१४	२२	३१	३९	४८	५६	४	१३	२१	२९	३८	४६	५४	३	११	२०	२८	३६	४५	५३	१
११ मीन	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	३	३
	१०	१८	२७	३५	४३	५२	०	८	१७	२५	३३	४२	५०	५९	७	१५	२४	३२	४०	४९	५७	५	१४	२२	३१	३९	४७	५६	४	१२
अंशादि	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९

लग्न सारिणी

उत्तर अक्षांश २८.५० से २९.५० मध्य स्थित संभाग हित नित्योपयोगी-अयनांश-२४

देहली राजधानी, सरदारशहर, चुरू, भिवानी, हिसार, श्रीगंगानगर, रेवाड़ी, रोहतक, हनुमानगढ, पानीपत, मुरादाबाद, बुलंद शहर, बरेली, मेरठ, रामपुर, नैनीताल, पीलीभीत, मुजफ्फरनगर, बिजनौर, अनूपगढ आदि आसन्न संभाग हित अथवा समीपस्थ क्षेत्र नगर हेतु उपयुक्त।

लग्नम्	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
० मेष	२ ५०	२ ५७	३ ४	३ ११	३ १८	३ २५	३ ३२	३ ४०	३ ४८	३ ५६	४ ५	४ १३	४ २१	४ २९	४ ३७	४ ४५	४ ५४	५ २	५ १०	५ १८	५ २६	५ ३४	५ ४३	५ ५१	५ ५९	६ ७	६ १५	६ २३	६ ३२	६ ४०
१ वृष	६ ४८	६ ५६	७ ४	७ १२	७ २१	७ २९	७ ३७	७ ४७	७ ५७	८ ७	८ १७	८ २७	८ ३७	८ ४७	८ ५७	९ ७	९ १७	९ २७	९ ३७	९ ४७	९ ५७	१० ७	१० १७	१० २७	१० ३७	१० ४७	१० ५७	११ ७	११ १७	११ २७
२ मिथुन	११ ३७	११ ४७	११ ५७	१२ ७	१२ १७	१२ २७	१२ ३७	१२ ४८	१३ ०	१३ ११	१३ २३	१३ ३४	१३ ४६	१३ ५७	१४ ९	१४ २०	१४ ३२	१४ ४३	१४ ५५	१५ ६	१५ १८	१५ २९	१५ ४०	१५ ५२	१६ ३	१६ १५	१६ २६	१६ ३८	१६ ४९	१७ १
३ कर्क	१७ १२	१७ २४	१७ ३५	१७ ४७	१७ ५८	१८ १०	१८ २१	१८ ३३	१८ ४५	१८ ५६	१९ ८	१९ २०	१९ ३२	१९ ४३	१९ ५५	२० ७	२० १९	२० ३०	२० ४२	२० ५४	२१ ६	२१ १७	२१ २९	२१ ४१	२१ ५३	२२ ५	२२ १६	२२ २८	२२ ४०	२२ ५२
४ सिंह	२३ ३	२३ १५	२३ २७	२३ ३९	२३ ५०	२४ २	२४ १४	२४ २६	२४ ३७	२४ ४९	२५ ०	२५ १२	२५ २३	२५ ३५	२५ ४७	२५ ५८	२६ ९	२६ २१	२६ ३२	२६ ४४	२६ ५५	२७ ७	२७ १९	२७ ३०	२७ ४२	२७ ५३	२८ ५	२८ १६	२८ २८	२८ ३९
५ कन्या	२८ ५१	२९ २	२९ १४	२९ २५	२९ ३७	२९ ४८	३० ०	३० १२	३० २३	३० ३५	३० ४६	३० ५८	३१ ९	३१ २१	३१ ३२	३१ ४४	३१ ५५	३२ ७	३२ १८	३२ ३०	३२ ४१	३२ ५३	३३ ५	३३ १६	३३ २८	३३ ३९	३३ ५१	३४ २	३४ १४	३४ २५
६ तुला	३४ ३७	३४ ४८	३४ ५९	३५ ११	३५ २३	३५ ३४	३५ ४६	३५ ५८	३६ १०	३६ २१	३६ ३३	३६ ४५	३६ ५७	३७ ८	३७ २०	३७ ३२	३७ ४४	३७ ५५	३८ ७	३८ १९	३८ ३१	३८ ४२	३८ ५४	३९ ६	३९ १८	३९ ३०	३९ ४१	३९ ५३	४० ५	४० १७
७ वृश्चि.	४० २८	४० ४०	४० ५२	४१ ४	४१ १५	४१ २७	४१ ३९	४१ ५०	४२ २	४२ १३	४२ २५	४२ ३६	४२ ४८	४२ ५९	४३ ११	४३ २२	४३ ३४	४३ ४५	४३ ५७	४४ ८	४४ २०	४४ ३१	४४ ४२	४४ ५४	४५ ५	४५ १७	४५ २८	४५ ४०	४५ ५१	४६ ३
८ धनु	४६ १४	४६ २६	४६ ३७	४६ ४९	४७ ०	४७ १२	४७ २३	४७ ३४	४७ ४३	४७ ५३	४८ ३	४८ १३	४८ २३	४८ ३३	४८ ४३	४८ ५३	४९ ३	४९ १३	४९ २३	४९ ३३	४९ ४३	४९ ५३	५० ३	५० १३	५० २३	५० ३३	५० ४३	५० ५३	५१ ३	५१ १३
९ मकर	५१ २३	५१ ३३	५१ ४३	५१ ५३	५२ ३	५२ १३	५२ २३	५२ ३१	५२ ३९	५२ ४७	५२ ५६	५३ ४	५३ १२	५३ २०	५३ २८	५३ ३६	५३ ४५	५३ ५३	५४ १	५४ ९	५४ १७	५४ २५	५४ ३४	५४ ४२	५४ ५०	५४ ५८	५५ ६	५५ १५	५५ २३	५५ ३१
१० कुंभ	५५ ३९	५५ ४७	५५ ५५	५६ ३	५६ १२	५६ २०	५६ २८	५६ ३५	५६ ४२	५६ ४९	५६ ५६	५७ ३	५७ १०	५७ १७	५७ २५	५७ ३२	५७ ३९	५७ ४६	५७ ५३	५८ ०	५८ ७	५८ १४	५८ २१	५८ २८	५८ ३५	५८ ४२	५८ ४९	५८ ५६	५९ ३	५९ ११
११ मीन	५९ १८	५९ २५	५९ ३२	५९ ३९	५९ ४६	५९ ५३	० ०	० ७	० १४	० २१	० २८	० ३५	० ४२	० ४९	० ५७	१ ४	१ ११	१ १८	१ २५	१ ३२	१ ३९	१ ४६	१ ५३	२ ०	२ ७	२ १४	२ २१	२ २८	२ ३५	२ ४३
अंशादि	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९

उत्तर अक्षांश २४.५० से २५.५० मध्य स्थित संभाग हित नित्योपयोगी-अयनांश-२४

पटना, इलाहाबाद, प्रयाग, झाँसी, चित्रकूट, वाराणसी, काशी, गया, उदयपुर (मेवाड़), कोटा, आबूरोड़, बून्दी, चित्तौड़गढ, नाथद्वारा, नीमच, जालौर, सिरोही, छतरपुर, ओरछा, प्रतापगढ, मन्दसौर, अम्बाजी, गाजीपुर आदि आसन्न संभाग हित अथवा समीपस्थ क्षेत्र नगर हेतु उपयुक्त।

लग्नम्	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
० मेष	२ ५८	३ ६	३ १३	३ २१	३ २८	३ ३६	३ ४३	३ ५१	४ ०	४ ८	४ १७	४ २५	४ ३४	४ ४२	४ ५१	४ ५९	५ ८	५ १६	५ २५	५ ३३	५ ४२	५ ५०	५ ५८	६ ७	६ १५	६ २४	६ ३२	६ ४१	६ ४९	६ ५८
१ वृष	७ ६	७ १५	७ २३	७ ३२	७ ४०	७ ४९	७ ५७	८ ७	८ १७	८ २७	८ ३७	८ ४७	८ ५८	९ ८	९ १८	९ २८	९ ३८	९ ४८	९ ५८	१० ८	१० १८	१० २८	१० ३९	१० ४९	१० ५९	११ ९	११ १९	११ २९	११ ३९	११ ४९
२ मिथुन	११ ५९	१२ ९	१२ २०	१२ ३०	१२ ४०	१२ ५०	१३ ०	१३ ११	१३ २३	१३ ३४	१३ ४५	१३ ५७	१४ ८	१४ २०	१४ ३१	१४ ४२	१४ ५४	१५ ५	१५ १७	१५ २८	१५ ३९	१५ ५०	१६ १	१६ १३	१६ २५	१६ ३६	१६ ४७	१६ ५९	१७ १०	१७ २१
३ कर्क	१७ ३३	१७ ४४	१७ ५६	१८ ७	१८ १८	१८ ३०	१८ ४१	१८ ५२	१९ ४	१९ १५	१९ २७	१९ ३८	१९ ५०	२० १	२० १३	२० २४	२० ३६	२० ४७	२० ५८	२१ १०	२१ २२	२१ ३३	२१ ४४	२१ ५६	२२ ७	२२ १९	२२ ३०	२२ ४२	२२ ५४	२३ ५
४ सिंह	२३ १६	२३ २८	२३ ३९	२३ ५१	२४ २	२४ १४	२४ २५	२४ ३६	२४ ४७	२४ ५८	२५ १०	२५ २१	२५ ३२	२५ ४३	२५ ५४	२६ ५	२६ १७	२६ २८	२६ ३९	२६ ५०	२७ १	२७ १२	२७ २४	२७ ३५	२७ ४६	२७ ५७	२८ ८	२८ १९	२८ ३१	२८ ४२
५ कन्या	२८ ५३	२९ ४	२९ १५	२९ २६	२९ ३८	२९ ४९	३० ०	३० ११	३० २२	३० ३३	३० ४५	३० ५६	३१ ७	३१ १८	३१ २९	३१ ४०	३१ ५२	३२ ३	३२ १४	३२ २५	३२ ३६	३२ ४७	३२ ५९	३३ १०	३३ २१	३३ ३२	३३ ४३	३३ ५४	३४ ६	३४ १७
६ तुला	३४ २८	३४ ३९	३४ ५०	३५ १	३५ १३	३५ २४	३५ ३५	३५ ४६	३५ ५८	३६ ९	३६ २१	३६ ३२	३६ ४३	३६ ५५	३७ ७	३७ १८	३७ ३०	३७ ४१	३७ ५३	३८ ४	३८ १६	३८ २७	३८ ३८	३८ ५०	३९ १	३९ १३	३९ २४	३९ ३६	३९ ४७	३९ ५९
७ वृश्चि.	४० १०	४० २२	४० ३३	४० ४५	४० ५६	४१ ८	४१ १९	४१ ३०	४१ ४२	४१ ५३	४२ ४	४२ १६	४२ २७	४२ ३९	४२ ५०	४३ १	४३ १३	४३ २४	४३ ३५	४३ ४७	४३ ५८	४४ ९	४४ २१	४४ ३२	४४ ४४	४४ ५५	४५ ६	४५ १८	४५ २९	४५ ४०
८ धनु	४५ ५२	४६ ३	४६ १५	४६ २६	४६ ३७	४६ ४९	४७ ०	४७ १०	४७ २०	४७ ३०	४७ ४०	४७ ५०	४८ १	४८ ११	४८ २१	४८ ३१	४८ ४१	४८ ५१	४९ १	४९ ११	४९ २१	४९ ३१	४९ ४२	४९ ५२	५० ३	५० १२	५० २२	५० ३२	५० ४२	५० ५२
९ मकर	५१ २	५१ १२	५१ २३	५१ ३३	५१ ४३	५१ ५३	५२ ३	५२ ११	५२ २०	५२ २८	५२ ३७	५२ ४६	५२ ५४	५३ २	५३ ११	५३ १९	५३ २८	५३ ३६	५३ ४५	५३ ५३	५४ २	५४ १०	५४ १८	५४ २७	५४ ३५	५४ ४४	५४ ५२	५५ १	५५ ९	५५ १८
१० कुंभ	५५ २६	५५ ३५	५५ ४४	५५ ५२	५६ ०	५६ ९	५६ १७	५६ २४	५६ ३२	५६ ३९	५६ ४७	५६ ५४	५७ २	५७ ९	५७ १६	५७ २४	५७ ३१	५७ ३९	५७ ४६	५७ ५४	५८ १	५८ ८	५८ १६	५८ २३	५८ ३१	५८ ३८	५८ ४६	५८ ५३	५९ १	५९ ८
११ मीन	५९ १५	५९ २३	५९ ३०	५९ ३८	५९ ४५	५९ ५३	० ०	० ७	० १५	० २२	० ३०	० ३७	० ४५	० ५२	० ५९	१ ७	१ १४	१ २२	१ २९	१ ३७	१ ४४	१ ५२	१ ५९	२ ६	२ १४	२ २१	२ २९	२ ३६	२ ४४	२ ५२
अंशादि	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९

नव-वर्षीय विक्रमाब्दशाके मध्ये ईस्वीमासदिनांकोपरि दिनदशा ज्ञानार्थ सुगमसारिणी

मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
१३ अप्रैल से शु.द.उ.सू.द. दिन २० प्रवे.	१४ मई से शु.द.उ.सू.द. दिन २० प्रवे.	३ अप्रैल से रा.द.उ.शु.द. दिन ७० प्रवे.	२२ मार्च से गु.द.उ.रा.द. दिन ४२ प्रवे.	२१ अप्रैल से गु.द.उ.रा.द. दिन ४२ प्रवे.	२४ मार्च से श.द.उ.गु.द. दिन ५८ प्रवेश	१८ मार्च से बु.द.उ.श.द. दिन ३६ प्रवे.	१७ अप्रैल से बु.द.उ.श.द. दिन ३६ प्रवे.	२२ मार्च से भौ.द.उ.बु.द. दिन ५६ प्रवे.	२४ मार्च से चं.द.उ.भौ.द. दिन २८ प्रवे.	२४ अप्रैल से चं.द.उ.भौ.द. दिन २८ प्रवे.	३ अप्रैल से सू.द.उ.चं.द. दिन ५० प्रवे.
४ मई से सू.द.उ.चं.द. दिन ५० प्रवे.	४ जून से सू.द.उ.चं.द. दिन ५० प्रवे.	१५ जून से शु.द.उ.सू.द. दिन २० प्रवे.	४ मई से रा.द.उ.शु.द. दिन ७० प्रवे.	४ जून से रा.द.उ.शु.द. दिन ७० प्रवे.	२२ मई से गु.द.उ.रा.द. दिन ४२ प्रवे.	२३ अप्रैल से श.द.उ.गु.द. दिन ५८ प्रवे.	२४ मई से श.द.उ.गु.द. दिन ५८ प्रवे.	१८ मई से बु.द.उ.श.द. दिन ३६ प्रवे.	२१ अप्रैल से भौ.द.उ.बु.द. दिन ५६ प्रवे.	२२ मई से भौ.द.उ.बु.द. दिन ५६ प्रवे.	२४ मई से चं.द.उ.भौ.द. दिन २८ प्रवे.
२५ जून से चं.द.उ.मं.द. दिन २८ प्रवे.	२७ जुलाई से चं.द.उ.भो.द. दिन २८ प्रवे.	६ जुलाई से सू.द.उ.चं.द. दिन ५० प्रवे.	१६ जुलाई से शु.द.उ.सू.द. दिन २० प्रवे.	१६ अगस्त से शु.द.उ.सू.द. दिन २० प्रवे.	६ जुलाई से रा.द.उ.शु.द. दिन ७० प्रवे.	२४ जून से गु.द.उ.रा.द. दिन ४२ प्रवे.	२४ जुलाई से गु.द.उ.रा.द. दिन ४२ प्रवे.	२५ जून से श.द.उ.गु.द. दिन ५८ प्रवे.	१९ जून से बु.द.उ.श.द. दिन ३६ प्रवे.	२० जुलाई से बु.द.उ.श.द. दिन ३६ प्रवे.	२३ जून से भौ.द.उ.बु.द. दिन ५६ प्रवे.
२५ जुलाई से भौ.द.उ.बु.द. दिन ५६ प्रवे.	२५ अगस्त से भौ.द.उ.बु.द. दिन ५६ प्रवे.	२७ अगस्त से चं.द.उ.भौ.द. दिन २८ प्रवे.	६ अगस्त से सू.द.उ.चं.द. दिन ५० प्रवे.	६ सितम्बर से सू.द.उ.चं.द. दिन ५० प्रवे.	१७ सितम्बर से शु.द.उ.सू.द. दिन २० प्रवे.	६ अगस्त से रा.द.उ.शु.द. दिन ७० प्रवे.	६ सितम्बर से रा.द.उ.शु.द. दिन ७० प्रवे.	२५ अगस्त से गु.द.उ.रा.द. दिन ४२ प्रवे.	२६ जुलाई से श.द.उ.गु.द. दिन ५८ प्रवे.	२७ अगस्त से श.द.उ.गु.द. दिन ५८ प्रवे.	२१ अगस्त से बु.द.उ.श.द. दिन ३६ प्रवे.
२१ सित. से बु.द.उ.श.द. दिन ३६ प्रवे.	२२ अक्टू. से बु.द.उ.श.द. दिन ३६ प्रवे.	२५ सित. से भौ.द.उ.बु.द. दिन ५६ प्रवे.	२७ सित. से चं.द.उ.भौ.द. दिन २८ प्रवे.	२७ अक्टू. से चं.द.उ.भौ.द. दिन २८ प्रवे.	७ अक्टू. से सू.द.उ.चं.द. दिन ५० प्रवे.	१७ अक्टू. से शु.द.उ.सू.द. दिन २० प्रवे.	१६ नव. से शु.द.उ.सू.द. दिन २० प्रवे.	७ अक्टू. से रा.द.उ.शु.द. दिन ७० प्रवे.	२५ सितम्बर से गु.द.उ.रा.द. दिन ४२ प्रवे.	२५ अक्टू. से गु.द.उ.रा.द. दिन ४२ प्रवे.	२७ सित. से श.द.उ.गु.द. दिन ५८ प्रवे.
२७ अक्टू. से श.द.उ.गु.द. दिन ५८ प्रवे.	२६ नव. से श.द.उ.गु.द. दिन ५८ प्रवे.	२० नव. से बु.द.उ.श.द. दिन ३६ प्रवे.	२५ अक्टू. से भौ.द.उ.बु.द. दिन ५६ प्रवे.	२४ नव. से भौ.द.उ.बु.द. दिन ५६ प्रवे.	२६ नव. से चं.द.उ.भौ.द. दिन २८ प्रवे.	६ नव. से सू.द.उ.चं.द. दिन ५० प्रवे.	६ दिस. से सू.द.उ.चं.द. दिन ५० प्रवे.	१५ दिस. से शु.द.उ.सू.द. दिन २० प्रवे.	६ नव. से रा.द.उ.शु.द. दिन ७० प्रवे.	६ दिस. से रा.द.उ.शु.द. दिन ७० प्रवे.	२४ नव. से गु.द.उ.रा.द. दिन ४२ प्रवे.
२४ दिस. से गु.द.उ.रा.द. दिन ४२ प्रवे.	२२ जन. से गु.द.उ.रा.द. दिन ४२ प्रवे.	२५ दिसं. से श.द.उ.गु.द. दिन ५८ प्रवे.	१९ दिसं. से बु.द.उ.श.द. दिन ३६ प्रवे.	१८ जन. से बु.द.उ.श.द. दिन ३६ प्रवे.	२३ दिसं. से भौ.द.उ.बु.द. दिन ५६ प्रवे.	२५ दिसं. से चं.द.उ.भौ.द. दिन २८ प्रवे.	२४ जन. से चं.द.उ.भौ.द. दिन २८ प्रवे.	४ जन. से सू.द.उ.चं.द. दिन ५० प्रवे.	१४ जन. से शु.द.उ.सू.द. दिन २० प्रवे.	१२ फर. से शु.द.उ.सू.द. दिन २० प्रवे.	४ जन. से रा.द.उ.शु.द. दिन ७० प्रवे.
३ फर. से रा.द.उ.शु.द. दिन ७० प्रवे.	४ मार्च से रा.द.उ.शु.द. दिन ७० प्रवे.	२० फर. से गु.द.उ.रा.द. दिन ४२ प्रवे.	२४ जन. से श.द.उ.गु.द. दिन ५८ प्रवे.	२२ फर. से श.द.उ.गु.द. दिन ५८ प्रवे.	१७ फर. से बु.द.उ.श.द. दिन ३६ प्रवे.	२२ जन. से भौ.द.उ.बु.द. दिन ५६ प्रवे.	२० फर. से भौ.द.उ.बु.द. दिन ५६ प्रवे.	२२ फर. से चं.द.उ.भौ.द. दिन २८ प्रवे.	२ फर.से सू.द.उ.चं.द. दिन ५० प्रवे.	४ मार्च से सू.द.उ.चं.द. दिन ५० प्रवे.	१४ मार्च से शु.द.उ.सू.द. दिन २० प्रवे.

दिनदशा-सूत्र

जन्मना विंशतिः २० सूर्यः तृतीयेदश १० चन्द्रमा। चतुर्थे चाष्टमे ८ भौमः, षष्टे वेदो ४ बुधस्तथा ॥ सप्तमे दश १० मन्दस्य, नवमेष्ट ८ बृहस्पतेः। दशमे विंशति २० राहोः, शेषा भृगुदशा स्मृता ॥ सूत्रानुसार ज्ञान विधि - मेष राशि हेतु तारीख १३ अप्रैल से सूर्य की दिनदशा २० दिन की प्रारम्भ होगी। जो कि तारीख ३ मई को समाप्त होकर, आगे ४ मई से (सु.द.उ.चं.द.) सूर्यदशा उतर कर चन्द्रदशा ५० दिन चालू होंगी। इसी प्रकार आगे भी क्रमशः सभी राशियों की दशा का ज्ञान सुगम है। इनका शुभाशुभ फल वर्तमान वर्ष के प्रतिमासिक एवं इष्ट दिन पंचांग गोचर राशि ग्रह गणना नियमानुसार समझें क्रमशः प्रवास-सुख-दुःख-सुख-पीड़ा-धनहानि-शोक-सुख इत्यादि ८ प्रतिफल तथा गोचर ग्रह चलन-कलन अनुसार फल का विचार करना भी योग्य है। तथापि स्थूल दृष्टि से पाप ग्रह सूर्य-मंगल- शनि-राहु-केतु आदि का दिन-दशा का समय अशुभ फल प्रदायक तथा शुभ ग्रह चन्द्र-बुध-गुरू-शुक्र की दिनदशा का प्रतिफल शुभ फलसूचक। तथापि अपनी जन्मराशि से जन्म लग्न की तरह द्वादश १२ भावों को मानकर शुभ भाव के स्वामी की दशा में शुभ प्रतिफल तथा अशुभ भाव के स्वामी की दशा में अशुभ प्रतिफल विचारणीय विषय है।

● **A.M.(ए.एम.) और P.M. (पी.एम.) का सरलार्थ तथा भारतीय ज्योतिष गणना** – देश, काल और परिस्थितियों के अनुरूप समय को व्यक्त करने के पैमाने बदलते रहे हैं। वैज्ञानिक प्रगति और नवीनतम आविष्कारों के चलते आज परमाणु घड़ी भी है, जो सबसे सही समय बताती है। जब बात समय को व्यक्त करने की हो रही है, तो इसे व्यक्त करने के लिए प्रायः एएम और पीएम शब्दों का प्रयोग करते हैं। एएम दोपहर से पहले और पीएम दोपहर के बाद के समय के लिए प्रयोग किया जाता है। प्राचीनकाल में मनुष्य सूर्य की विभिन्न स्थितियों से समय का पता लगाते थे। रात्रि में समय का ज्ञान प्राप्त करने के लिए वह तारों की मदद लेते थे। सूर्य की स्थिति से ही एएम और पीएम शब्दों की उत्पत्ति हुई। दोपहर के समय जब सूर्य ठीक हमारे सिर के उपर होता है, हम उत्तर से दक्षिण दिशा की ओर आकाश में एक काल्पनिक रेखा की कल्पना करते हैं। इस रेखा को मेरीडियन कहते हैं। जब सूर्य इस रेखा पर होता है, तब दोपहर का समय होता है। सूर्य जब इस रेखा के पूर्व की ओर होता है तो दोपहर से पहले का समय अर्थात् सुबह का और जब सूर्य इस रेखा से पश्चिम की ओर चला जाता है, तो दोपहर के बाद का समय होता है। मेरीडियन शब्द लेटिन भाषा के मेरीडीज शब्द से बना है, जिसका अर्थ है दिन का मध्य अर्थात् दोपहर। एएम शब्द एंटी-मेरीडियन का संक्षिप्त रूप है। जब सूर्य मेरीडियन रेखा के पूर्व की ओर होता है तब दोपहर से पहले का समय होता है और उसे एएम शब्द में व्यक्त करते हैं। इसी तरह सूर्य जब मेरीडियन रेखा के पश्चिम की ओर होता है, तो पीएम शब्द का प्रयोग करते हैं, जो पोस्ट मेरीडियन का संक्षिप्त रूप है। दिन के बारह बजे से लेकर रात के बारह बजे तक के समय के लिए पीएम तथा रात के बारह बजे से दिन के बारह बजे तक के समय के लिए एएम का प्रयोग होता है। भारतीय ज्योतिष गणना नियामक अनुसार नवीन वार प्रवृत्ति सूर्योदय से मान्य होती है तथा अंग्रेजी ईस्वी काल गणना नियामक से रात्रि 12 बजे से ही वार परिवर्तन एवं तारीख परिवर्तन का उद्बोधन बन पाता है। परन्तु भारतीय गणना पद्धति से ही जन्मपत्र जन्मकाल इष्टकाल आदि गणना हेतु वार प्रवृत्ति सूर्योदय काल से ही मान्य बनती है। तदनुसार अंग्रेजी ईस्वी तारीख का अंकन करना समुचित है

नक्षत्र चरण से विंशोत्तरी एवं अष्टोत्तरी भुक्ता दशा सुगम-अभिज्ञान सारणी

राशि	मेष १									वृष २									मिथुन ३									कर्क ४									सिंह ५									कन्या ६								
नक्षत्र	अश्विनी				भरणी				कृत्तिका				रोहिणी				मृगशिर				आर्द्रा				पुनर्वसु				पुष्य				अश्लेषा				मघा				पूर्वाफाल्गुनी				उत्तराफाल्गुनी				हस्त				चित्रा	
चरण	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२
अक्षर	चु	चे	चो	ला	लि	लू	ले	लो	अ	इ	उ	ए	ओ	वा	वि	वू	वे	वो	क	की	कू	घ	ड	छ	के	को	हा	ही	हू	हे	हो	डा	डी	डू	डे	डो	मा	मी	मू	मे	मो	टा	टी	टू	टे	टो	पा	पी	पू	ष	ण	ठ	पे	पो
राशि	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	६
अंश	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०
कला	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
विंशोत्तरी महादशा	केतु ७				शुक्र २०				सूर्य ६				चंद्र १०				मंगल ७				राहु १८				गुरू १६				शनि १९				बुध १७				केतु ७				शुक्र २०				सूर्य ६				चंद्र १०				मंगल ७	
भुक्ता वर्ष	१	३	५	७	५	१०	१५	२०	१	३	४	६	२	५	७	१०	१	३	५	७	४	९	१३	१८	४	८	१२	१६	४	९	१४	१९	४	८	१२	१७	१	३	५	७	५	१०	१५	२०	१	३	४	५	२	५	७	१०	१	३
भुक्ता मास	९	६	३	०	०	०	०	०	६	०	६	०	६	०	६	०	९	६	३	०	६	०	६	०	०	०	०	०	९	६	३	०	३	६	९	०	९	६	३	०	०	०	०	०	६	०	६	०	६	०	६	०	९	६
अष्टोत्तरी महादशा	राहु				राहु				शुक्र				शुक्र				शुक्र				सूर्य				सूर्य				सूर्य				सूर्य				चंद्र				चंद्र				चंद्र				मंगल				मंगल	
भुक्ता वर्ष	६	७	८	९	९	१०	११	१२	१	३	५	७	८	१०	१२	१४	१५	१७	१९	२१	०	०	१	१	१	२	२	३	३	३	४	४	४	५	५	६	१	२	३	५	६	७	८	१०	११	१२	१३	१५	०	१	१	२	२	३
भुक्ता मास	९	६	३	०	९	६	३	०	९	६	३	०	९	६	३	०	९	६	३	०	४	९	१	६	१०	३	७	०	४	९	१	६	१०	३	७	०	३	६	९	०	३	६	९	०	३	६	९	०	६	०	६	०	६	०
भुक्ता दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१५	०	१५	०	१५	०	१५	०	१५	०	१५	०	१५	०	१५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

राशि	तुला ७									वृश्चिक ८									धनु ९									मकर १०									कुंभ ११									मीन १२								
नक्षत्र	चित्रा		स्वाति				विशाखा				अनुराधा				ज्येष्ठा				मूल				पूर्वाषाढ				उत्तराषाढ				श्रवण				धनिष्ठा				शतभिषा				पूर्वाभाद्रपद				उत्तराभाद्रपद				रेवती			
चरण	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४
अक्षर	रा	री	रू	रे	रो	ता	ती	तू	ते	तो	ना	नी	नू	ने	नो	या	यी	यू	ये	यो	भा	भी	भू	धा	फा	ढा	भे	भो	जा	जी	खी	खू	खे	खो	गा	गी	गू	गे	गो	सा	सी	सू	से	सो	दा	दी	दू	थ	झ	ञ	दे	दो	चा	ची
राशि	६	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	११	११	११	०
अंश	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०
कला	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
विंशोत्तरी महादशा	मंगल ७		राहु १८				गुरू १६				शनि १९				बुध १७				केतु ७				शुक्र २०				सूर्य ६				चन्द्र १०				मंगल ७				राहु १८				गुरू १६				शनि १९				बुध १७			
भुक्ता वर्ष	५	७	४	९	१३	१८	४	८	१२	१६	४	९	१४	१९	४	८	१२	१७	१	३	५	७	५	१०	१५	२०	१	३	४	६	२	५	७	१०	१	३	५	७	४	९	१३	१८	४	८	१२	१६	४	९	१४	१९	४	८	१२	१७
भुक्ता मास	३	०	६	०	६	०	०	०	०	०	९	६	३	०	३	६	९	०	९	६	३	०	०	०	०	०	६	०	६	०	६	०	६	०	९	६	३	०	६	०	६	०	०	०	०	०	९	६	३	०	३	६	९	०
अष्टोत्तरी महादशा	मंगल		मंगल				मंगल				बुध				बुध				बुध				शनि				शनि				शनि				गुरू				गुरू				गुरू				राहु				राहु			
भुक्ता वर्ष	३	४	४	५	५	६	६	७	७	८	१	२	४	५	७	८	९	११	१२	१४	१५	१७	०	१	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	१	३	४	६	७	९	११	१२	१४	१५	१७	१९	०	१	२	३	३	४	५	६
भुक्ता मास	६	०	६	०	६	०	६	०	६	०	५	१०	३	८	१	६	११	४	९	२	७	०	७	३	१०	६	४	२	०	११	११	७	३	०	७	२	९	४	११	६	१	८	३	१०	५	०	९	६	३	०	९	६	३	०
भुक्ता दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१५	०	१५	०	०	०	०	२१	२७	२८	२९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

✲ चन्द्रमा का नक्षत्र चरणों में प्रवेशकाल रेल्वे स्टेण्डर्ड टाईम अनुसार दिया गया है ✲

संकेत – २९ मार्च को रेवती नक्षत्र का प्रथम चरण १९:२७ (सायं ७.२७) से प्रारंभ होगा और ३० मार्च को ००:४३ (२९ ता.की रात्रि शेष १२.४३) पर समाप्त होगा तथा ३० मार्च ००:४३ से रेवती नक्षत्र का दूसरा चरण प्रारंभ तथा ३० मार्च को प्रात: ६:०१ पर समाप्त होगा। तदुपरांत रेवती नक्षत्र का तीसरा चरण प्रारंभ होकर ता. ३० मार्च को दिन में ११:१७ पर समाप्त होगा। तदुपरांत चतुर्थ चरण प्रारंभ होकर ३० मार्च को दिवा १६:३५ (सायं ४:३५) पर समाप्त होगा। दिनांक वाले कॉलम में जहाँ दो तारीखें दी हैं, वहाँ स्टेण्डर्ड टाईम २४:०० के बाद अगली तारीख का समय दिया गया है।

सन २०२५ मास/दि.	चरण नक्षत्र	१ घं.मि.	२ घं.मि.	३ घं.मि.	४ घं.मि.
मार्च २९/३०	रेवती	१९:२७	००:४३	०६:०१	११:१७
३०/३१	अश्विनी	१६:३५	२१:५१	०३:०८	०८:२६
३१/१	भरणी	१३:४५	१९:०३	००:२३	०५:४४
अप्रैल १/२	कृतिका	११:०७	१६:३०	२१:५४	०३:२१
२/३	रोहिणी	०८:५०	१४:१९	१९:५१	०१:२५
३/४	मृगशिरा	०७:०२	१२:४०	१८:२१	००:०५
४	आर्द्रा	०५:५१	११:३९	१७:३०	२३:२४
५	पुनर्वसु	०५:२१	११:१९	१७:२०	२३:२५
०६/०७	पुष्य	०५:३२	११:४१	१७:५३	००:०७
०७/०८	आश्लेषा	०६:२५	१२:४३	१९:०५	०१:२९
०८/०९	मघा	०७:५५	१४:२२	२०:५२	०३:२३
०९/१०	पूफा.	०९:५७	१६:३१	२३:०८	०५:४५
१०/११	उफा.	१२:२५	१९:०४	०१:४५	०८:२७
११/१२	हस्त	१५:१०	२१:५३	०४:३७	११:२२
१२/१३	चित्रा	१८:०८	००:५३	०७:३८	१४:२४
१३/१४	स्वाति	२१:११	०३:५६	१०:४२	१७:२८
१५	विशाखा	००:१४	०६:५८	१३:४२	२०:२६
१६	अनुराधा	०३:११	०९:५२	१६:३४	२३:१५
१७/१८	ज्येष्ठा	०५:५५	१२:३३	१९:१०	०१:४६
१८/१९	मूल	०८:२१	१४:५३	२१:२४	०३:५३
१९/२०	पूषा.	१०:२१	१६:४६	२३:०९	०५:२९
२०/२१	उषा.	११:४८	१८:०४	००:१७	०६:२८
२१/२२	श्रवण	१२:३७	१८:४२	००:४६	०६:४६
२२/२३	धनिष्ठा	१२:४४	१८:३८	००:३१	०६:२०
२३/२४	शतभिषा	१२:०८	१७:५१	२३:३३	०५:१२
२४/२५	पूभा.	१०:४९	१६:२३	२१:५५	०३:२५

सन २०२५ मास/दि.	चरण नक्षत्र	१ घं.मि.	२ घं.मि.	३ घं.मि.	४ घं.मि.
२५/२६	उभा.	०८:५४	१४:१९	१९:४३	०१:०६
२६	रेवती	०६:२७	११:४६	१७:०५	२२:२२
२७	अश्विनी	०३:३९	०८:५४	१४:०९	१९:२४
२८	भरणी	००:३९	०५:५२	११:०७	१६:२२
२८/२९	कृतिका	२१:३८	०२:५३	०८:१०	१३:२७
२९/३०	रोहिणी	१८:४७	००:०७	०५:२८	१०:५२
३०/०१	मृगशिरा	१६:१८	२१:४५	०३:१४	०८:४६
मई १/२	आर्द्रा	१४:२१	१९:५७	०१:३६	०७:१८
२/३	पुनर्वसु	१३:०४	१८:५१	००:४२	०६:३६
३/४	पुष्य	१२:३४	१८:३४	००:३७	०६:४३
४/५	आश्लेषा	१२:५४	१९:०५	०१:२१	०७:३९
५/६	मघा	१४:०१	२०:२४	०२:५१	०९:२०
६/७	पूफा.	१५:५२	२२:२५	०५:००	११:३८
७/८	उफा.	१८:१७	००:५७	०७:३९	१४:२२
८/९	हस्त	२१:०७	०३:५१	१०:३६	१७:२२
१०	चित्रा	००:०९	०६:५५	१३:४२	२०:२८
११	स्वाति	०३:१५	१०:०१	१६:४७	२३:३२
१२/१३	विशाखा	०६:१७	१३:०१	१९:४४	०२:२७
१३/१४	अनुराधा	०९:०९	१५:५०	२२:३०	०५:०९
१४/१५	ज्येष्ठा	११:४७	१८:२३	००:५९	०७:३४
१५/१६	मूल	१४:०८	२०:३९	०३:१०	०९:३९
१६/१७	पूषा.	१६:०८	२२:३३	०४:५८	११:२२
१७/१८	उषा.	१७:४४	००:०३	०६:२१	१२:३८
१८/१९	श्रवण	१८:५३	०१:०४	०७:१५	१३:२३
१९/२०	धनिष्ठा	१९:३०	०१:३३	०७:३५	१३:३४
२०/२१	शतभिषा	१९:३२	०१:२७	०७:१९	१३:१०
२१/२२	पूभा.	१८:५८	००:४३	०६:२७	१२:०८
२२/२३	उभा.	१७:४७	२३:२४	०४:५८	१०:३१
२३/२४	रेवती	१६:०२	२१:३१	०२:५८	०८:२४
२४/२५	अश्विनी	१३:४८	१९:१०	००:३२	०५:५२
२५/२६	भरणी	११:१२	१६:३०	२१:४८	०३:०६
२६/२७	कृतिका	०८:२४	१३:४०	१८:५७	००:१४
२७	रोहिणी	०५:३३	१०:५०	१६:०९	२१:२९

सन २०२५ मास/दि.	चरण नक्षत्र	१ घं.मि.	२ घं.मि.	३ घं.मि.	४ घं.मि.
२८	मृगशिरा	०२:५१	०८:१२	१३:३६	१९:०१
२९	आर्द्रा	००:२९	०५:५७	११:२९	१७:०२
२९/३०	पुनर्वसु	२२:३९	०४:१७	०९:५८	१५:४२
३०/३१	पुष्य	२१:२९	०३:१८	०९:११	१५:०७
३१/०१	आश्लेषा	२१:०७	०३:०९	०९:१५	१५:२४
जून १/२	मघा	२१:३७	०३:५१	१०:०९	१६:३१
२/३	पूफा.	२२:५६	०५:२२	११:५२	१८:२४
४	उफा.	००:५९	०७:३५	१४:१३	२०:५३
५	हस्त	०३:३६	१०:१८	१७:०२	२३:४७
६/७	चित्रा	०६:३४	१३:१९	२०:०६	०२:५३
७/८	स्वाति	०९:४०	१६:२६	२३:११	०५:५७
८/९	विशाखा	१२:४२	१९:२५	०२:०८	०८:५०
९/१०	अनुराधा	१५:३१	२२:१०	०४:४८	११:२५
१०/११	ज्येष्ठा	१८:०२	००:३६	०७:०८	१३:४०
११/१२	मूल	२०:११	०२:३९	०९:०६	१५:३२
१२/१३	पूषा.	२१:५७	०४:२०	१०:४१	१७:०१
१३/१४	उषा.	२३:२१	०५:३८	११:५४	१८:०८
१५	श्रवण	००:२२	०६:३३	१२:४३	१८:५२
१६	धनिष्ठा	२५:००	०७:०५	१३:०९	१९:१२
१७	शतभिषा	०१:१४	०७:१३	१३:१०	१९:०७
१८	पूभा.	०१:०२	०६:५४	१२:४५	१८:३५
१९	उभा.	००:२३	०६:०८	११:५३	१७:३५
१९/२०	रेवती	२३:१७	०४:५६	१०:३३	१६:१०
२०/२१	अश्विनी	२१:४५	०३:१८	०८:५०	१४:२०
२१/२२	भरणी	१९:५०	०१:१८	०६:४६	१२:१२
२२/२३	कृतिका	१७:३९	२३:०३	०४:२८	०९:५२
२३/२४	रोहिणी	१५:१७	२०:४०	०२:०४	०७:२९
२४/२५	मृगशिरा	१२:५४	१८:१९	२३:४५	०५:१२
२५/२६	आर्द्रा	१०:४१	१६:०९	२१:४०	०३:१२
२६/२७	पुनर्वसु	०८:४७	१४:२२	१९:५९	०१:३९
२७/२८	पुष्य	०७:२२	१३:०६	१८:५३	००:४३
२८/२९	आश्लेषा	०६:३६	१२:३०	१८:२८	००:३०
२९/३०	मघा	०६:३४	१२:४१	१८:५१	०१:०४

सन २०२५ मास/दि.	चरण नक्षत्र	१ घं.मि.	२ घं.मि.	३ घं.मि.	४ घं.मि.
३०/०१	पूफा.	०७:२१	१३:३९	२०:०१	०२:२६
जुलाई १/२	उफा.	०८:५४	१५:२३	२१:५६	०४:३०
२/३	हस्त	११:०७	१७:४५	००:२५	०७:०७
३/४	चित्रा	१३:५१	२०:३४	०३:१९	१०:०४
४/५	स्वाति	१६:५०	२३:३५	०६:२१	१३:०६
५/६	विशाखा	१९:५१	०२:३५	०९:१८	१६:००
६/७	अनुराधा	२२:४२	०५:२१	११:५९	१८:३६
८	ज्येष्ठा	०१:१२	०७:४५	१४:१६	२०:४६
९	मूल	०३:१५	०९:४१	१६:०६	२२:२८
१०	पूषा.	०४:५०	११:०८	१७:२६	२३:४२
११/१२	उषा.	०५:५६	१२:०८	१८:१९	००:२८
१२/१३	श्रवण	०६:३६	१२:४२	१८:४७	००:५०
१३/१४	धनिष्ठा	०६:५३	१२:५३	१८:५३	००:५१
१४/१५	शतभिषा	०६:४९	१२:४४	१८:३९	००:३३
१५	पूभा.	०६:२६	१२:१७	१८:०८	२३:५७
१६	उभा.	०५:४७	११:३३	१७:२०	२३:०५
१७	रेवती	०४:५०	१०:३३	१६:१६	२१:५८
१८	अश्विनी	०३:३९	०९:१८	१४:५८	२०:३६
१९	भरणी	०२:१४	०७:५०	१३:२६	१९:०२
२०	कृतिका	००:३८	०६:११	११:४५	१७:१९
२०/२१	रोहिणी	२२:५३	०४:२६	१०:००	१५:३३
२१/२२	मृगशिरा	२१:०७	०२:४०	०८:१४	१३:४९
२२/२३	आर्द्रा	१९:२५	०१:००	०६:३७	१२:१५
२३/२४	पुनर्वसु	१७:५४	२३:३४	०५:१६	१०:५९
२४/२५	पुष्य	१६:४४	२२:३०	०४:१८	१०:०८
२५/२६	आश्लेषा	१६:०१	२१:५५	०३:५१	०९:५०
२६/२७	मघा	१५:५२	२१:५६	०४:०२	१०:११
२७/२८	पूफा.	१६:२३	२२:३७	०४:५४	११:१३
२८/२९	उफा.	१७:३६	२३:५९	०६:२६	१२:५६
२९/३०	हस्त	१९:२८	०२:०१	०८:३६	१५:१३
३०/३१	चित्रा	२१:५३	०४:३३	११:१५	१७:५८
अगस्त १	स्वाति	००:४२	०७:२५	१४:१०	२०:५५
२	विशाखा	०३:४१	१०:२४	१७:०९	२३:५२

✻ चन्द्रमा का नक्षत्र चरणों में प्रवेशकाल रेल्वे स्टेण्डर्ड टाईम अनुसार दिया गया है ✻

सन २०२५ मास/दि.	चरण नक्षत्र	१ घं.मि.	२ घं.मि.	३ घं.मि.	४ घं.मि.	सन २०२५ मास/दि.	चरण नक्षत्र	१ घं.मि.	२ घं.मि.	३ घं.मि.	४ घं.मि.	सन २०२५ मास/दि.	चरण नक्षत्र	१ घं.मि.	२ घं.मि.	३ घं.मि.	४ घं.मि.	सन २०२५ मास/दि.	चरण नक्षत्र	१ घं.मि.	२ घं.मि.	३ घं.मि.	४ घं.मि.
३/४	अनुराधा	०६:३५	१३:१६	१९:५६	०२:३५	५/६	धनिष्ठा	२३:३८	०५:३०	११:२१	१७:०९	८/९	भरणी	२२:४५	०४:०३	०९:२२	१४:४२	१०/११	पुष्य	१८:४८	००:३६	०६:२७	१२:२०
४/५	ज्येष्ठा	०९:१३	१५:४७	२२:२१	०४:५३	६/७	शतभिषा	२२:५६	०४:३९	१०:२१	१६:०२	९/१०	कृतिका	२०:०३	०१:२३	०६:४४	१२:०७	११/१२	आश्लेषा	१८:१८	००:१७	०६:२०	१२:२६
५/६	मूल	११:२३	१७:५०	००:१५	०६:३८	७/८	पूभा.	२१:४१	०३:१८	०८:५४	१४:२९	१०/११	रोहिणी	१७:३१	२२:५६	०४:२२	०९:५०	१२/१३	मघा	१८:३५	००:४६	०७:०१	१३:१८
६/७	पूषा.	१३:००	१९:१८	०१:३४	०७:४९	८/९	उभा.	२०:०३	०१:३४	०७:०६	१२:३७	११/१२	मृगशिरा	१५:२०	२०:५१	०२:२४	०७:५९	१३/१४	पूफा.	१९:३८	०२:००	०८:२४	१४:५१
७/८	उषा.	१४:०१	२०:११	०२:१८	०८:२४	९/१०	रेवती	१८:०७	२३:३६	०५:०५	१०:३४	१२/१३	आर्द्रा	१३:३७	१९:१५	००:५७	०६:४०	१४/१५	उफा.	२१:२१	०३:५१	१०:२४	१६:५८
८/९	श्रवण	१४:२८	२०:२९	०२:२९	०८:२७	१०/११	अश्विनी	१६:०३	२१:३१	०३:००	०८:२८	१३/१४	पुनर्वसु	१२:२७	१८:१५	००:०५	०५:५८	१५/१६	हस्त	२३:३५	०६:११	१२:५०	१९:३०
९/१०	धनिष्ठा	१४:२४	२०:१८	०२:११	०८:०२	११/१२	भरणी	१३:५८	१९:२७	००:५७	०६:२७	१४/१५	पुष्य	११:५४	१७:५२	२३:५२	०५:५४	१७	चित्रा	०२:११	०८:५२	१५:३४	२२:१७
१०/११	शतभिषा	१३:५३	१९:४१	०१:२८	०७:१५	१२/१३	कृतिका	११:५९	१७:३०	२३:०३	०४:३६	१५/१६	आश्लेषा	१२:००	१८:०७	००:१६	०६:२८	१८/१९	स्वाति	०५:०२	११:४५	१८:२९	०१:१४
११/१२	पूभा.	१३:००	१८:४४	००:२७	०६:१०	१३/१४	रोहिणी	१०:११	१५:४६	२१:२३	०३:०१	१६/१७	मघा	१२:४२	१८:५७	०१:१५	०७:३५	१९/२०	विशाखा	०७:५९	१४:४४	२१:२८	०४:१३
१२/१३	उभा.	११:५२	१७:३२	२३:१३	०४:५३	१४/१५	मृगशिरा	०८:४१	१४:२१	२०:०३	०१:४६	१७/१८	पूफा.	१३:५८	२०:२१	०२:४६	०९:१३	२०/२१	अनुराधा	१०:५९	१७:४३	००:२७	०७:११
१३/१४	रेवती	१०:३३	१६:११	२१:४९	०३:२७	१५/१६	आर्द्रा	०७:३२	१३:१७	१९:०५	००:५५	१८/१९	उफा.	१५:४२	२२:११	०४:४२	११:१५	२१/२२	ज्येष्ठा	१३:५६	२०:३९	०३:२२	१०:०४
१४/१५	अश्विनी	०९:०६	१४:४३	२०:२१	०१:५८	१६/१७	पुनर्वसु	०६:४६	१२:३८	१८:३२	००:२८	१९/२०	हस्त	१७:५०	००:२४	०७:०१	१३:३८	२२/२३	मूल	१६:४७	२३:२८	०६:०८	१२:४८
१५/१६	भरणी	०७:३६	१३:१३	१८:५०	००:२८	१७/१८	पुष्य	०६:२६	१२:२५	१८:२५	००:२८	२०/२१	चित्रा	२०:१७	०२:५५	०९:३६	१६:१७	२३/२४	पूषा.	१९:२८	०२:०५	०८:४२	१५:१८
१६	कृतिका	०६:०६	११:४३	१७:२१	२२:५९	१८/१९	आश्लेषा	०६:३२	१२:३८	१८:४५	००:५४	२१/२२	स्वाति	२२:५९	०५:४१	१२:२४	१९:०७	२४/२५	उषा.	२१:५४	०४:२६	१०:५८	१७:२८
१७	रोहिणी	०४:३९	१०:१७	१५:५७	२१:३७	१९/२०	मघा	०७:०६	१३:१८	१९:३२	०१:४८	२३	विशाखा	०१:५२	०८:३५	१५:२०	२२:०५	२५/२६	श्रवण	२३:५८	०६:२४	१२:४९	१९:१२
१८	मृगशिरा	०३:१८	०८:५८	१४:४०	२०:२२	२०/२१	पूफा.	०८:०६	१४:२४	२०:४५	०३:०८	२४/२५	अनुराधा	०४:५१	११:३६	१८:२१	०१:०६	२७	धनिष्ठा	०१:३३	०७:५१	१४:०७	२०:२०
१९	आर्द्रा	०२:०६	०७:४९	१३:३४	१९:२०	२१/२२	उफा.	०९:३२	१५:५७	२२:२५	०४:५३	२५/२६	ज्येष्ठा	०७:५२	१४:३६	२१:२०	०४:०३	२८	शतभिषा	०२:३२	०८:४०	१४:४६	२०:४९
२०	पुनर्वसु	०१:०८	०६:५५	१२:४४	१८:३५	२२/२३	हस्त	११:२४	१७:५५	००:२९	०७:०३	२६/२७	मूल	१०:४७	१७:२८	००:०९	०६:४९	२९	पूभा.	०२:५०	०८:४६	१४:४१	२०:३३
२१	पुष्य	००:२७	०६:२०	१२:१४	१८:१०	२३/२४	चित्रा	१३:४०	२०:१७	०२:५५	०९:३५	२७/२८	पूषा.	१३:२८	२०:०४	०२:३९	०९:१३	३०	उभा.	०२:२३	०८:०८	१३:५२	१९:३२
२२	आश्लेषा	००:०९	०६:०७	१२:०८	१८:११	२४/२५	स्वाति	१६:१७	२२:५८	०५:४१	१२:२४	२८/२९	उषा.	१५:४५	२२:१४	०४:४२	११:०७	दिसम्बर १	रेवती	०१:११	०६:४६	१२:१९	१७:४९
२३	मघा	००:१७	०६:२३	१२:३१	१८:४२	२५/२६	विशाखा	१९:०९	०१:५३	०८:३८	१५:२३	२९/३०	श्रवण	१७:३०	२३:४९	०६:०७	१२:२१	१/२	अश्विनी	२३:१८	०४:४४	१०:०८	१५:३०
२४	पूफा.	००:५५	०७:०९	१३:२६	१९:४४	२६/२७	अनुराधा	२२:०९	०४:५४	११:३९	१८:२४	३०/३१	धनिष्ठा	१८:३४	००:४२	०६:४८	१२:५१	२३	भरणी	२०:५२	०२:१०	०७:२८	१२:४४
२५	उफा.	०२:०६	०८:२८	१४:५३	२१:२०	२८	ज्येष्ठा	०१:०८	०७:५१	१४:३३	२१:१४	३१/१	शतभिषा	१८:५१	००:४७	०६:४१	१२:३२	३४	कृतिका	१८:००	२३:१४	०४:२७	०९:४१
२६	हस्त	०३:५०	१०:२०	१६:५३	२३:२७	२९	मूल	०३:५५	१०:३३	१७:०९	२३:४४	नवम्बर १/२	पूभा.	१८:२१	००:०५	०५:४७	११:२६	४५	रोहिणी	१४:५४	२०:०६	०१:१९	०६:३२
२७/२८	चित्रा	०६:०४	१२:४२	१९:२१	०२:०१	३०/१	पूषा.	०६:१८	१२:४८	१९:१६	०१:४२	२/३	उभा.	१७:०४	२२:३७	०४:०९	०९:३८	५६	मृगशिरा	११:४६	१७:००	२२:१५	०३:३१
२८/२९	स्वाति	०८:४४	१५:२६	२२:०९	०४:५३	अक्टूबर १/२	उषा.	०८:०६	१४:२७	२०:४५	०३:००	३/४	रेवती	१५:०६	२०:३०	०१:५३	०७:१४	६७	आर्द्रा	०८:४९	१४:०७	१९:२७	००:४९
२९/३०	विशाखा	११:३९	१८:२३	०१:०८	०७:५२	२/३	श्रवण	०९:१३	१५:२२	२१:२९	०३:३३	४/५	अश्विनी	१२:३५	१७:५२	२३:०९	०४:२५	७	पुनर्वसु	०६:१३	११:३९	१७:०७	२२:३८
३०/३१	अनुराधा	१४:३७	२१:२१	०४:०४	१०:४६	३/४	धनिष्ठा	०९:३५	१५:३२	२१:२७	०३:१९	५/६	भरणी	०९:४०	१४:५४	२०:०७	०१:२०	८	पुष्य	०४:१२	०९:४७	१५:२६	२१:०७
३१/१	ज्येष्ठा	१७:२७	००:०६	०६:४४	१३:२०	४/५	शतभिषा	०९:०९	१४:५६	२०:४०	०२:२१	६	कृतिका	०६:३४	११:४६	१७:००	२२:१३	९	आश्लेषा	०२:५३	०८:४०	१४:३१	२०:२५
सितम्बर १/२	मूल	१९:५५	०२:२७	०८:५७	१५:२५	५/६	पूभा.	०८:०१	१३:३८	१९:१२	००:४५	७	रोहिणी	०३:२८	०८:४२	१३:५८	१९:१५	१०	मघा	०२:२३	०८:२३	१४:२७	२०:३४
२/३	पूषा.	२१:५१	०४:१४	१०:३४	१६:५२	६	उभा.	०६:१६	११:४४	१७:११	२२:३७	८	मृगशिरा	००:३४	०५:५२	११:१४	१६:३७	११	पूफा.	०२:४४	०८:५७	१५:१३	२१:३३
३/४	उषा.	२३:०८	०५:२१	११:३१	१७:३८	७	रेवती	०४:०२	०९:२४	१४:४६	२०:०७	८/९	आर्द्रा	२२:०२	०३:२९	०८:५८	१४:३०	१२	उफा.	०३:५६	१०:२०	१६:४७	२३:१७
४/५	श्रवण	२३:४४	०५:४६	११:४६	१७:४३	८	अश्विनी	०१:२८	०६:४७	१२:०६	१७:२५	९/१०	पुनर्वसु	२०:०५	०१:४१	०७:२०	१३:०३	१३/१४	हस्त	०५:५०	१२:२	१९:००	०१:३८

✻ चन्द्रमा का नक्षत्र चरणों में प्रवेशकाल रेल्वे स्टेण्डर्ड टाईम अनुसार दिया गया है ✻

सन २५-२६ मास/दि.	चरण नक्षत्र	१ घं.मि.	२ घं.मि.	३ घं.मि.	४ घं.मि.
१४/१५	चित्रा	०८:१८	१४:५९	२१:४१	०४:२४
१५/१६	स्वाति	११:०९	१७:५३	००:३८	०७:२३
१६/१७	विशाखा	१४:१०	२०:५५	०३:४०	१०:२६
१७/१८	अनुराधा	१७:११	२३:५६	०६:४०	१३:२३
१८/१९	ज्येष्ठा	२०:०७	०२:४९	०९:३०	१६:११
१९/२०	मूल	२२:५१	०५:३०	१२:०८	१८:४५
२१	पूषा.	०१:२२	०७:५६	१४:३०	२१:०३
२२	उषा.	०३:३६	१०:०६	१६:३६	२३:०४
२३/२४	श्रवण	०५:३२	११:५८	१८:२२	००:४५
२४/२५	धनिष्ठा	०७:०८	१३:२७	१९:४६	०२:०३
२५/२६	शतभिषा	०८:१८	१४:३१	२०:४३	०२:५२
२६/२७	पूभा.	०९:००	१५:०५	२१:०९	०३:१०
२७/२८	उभा.	०९:१०	१५:०६	२१:००	०२:५३
२८/२९	रेवती	०८:४३	१४:३१	२०:१६	०१:५९
२९/३०	अश्विनी	०७:४१	१३:१९	१८:५६	००:३१
३०	भरणी	०६:०४	११:३५	१७:०४	२२:३२
३१	कृतिका	०३:५८	०९:२२	१४:४६	२०:०८
जनवरी २०२६	रोहिणी	०१:३०	०६:५०	१२:१०	१७:२९
१/२	मृगशिरा	२२:४८	०४:०७	०९:२५	१४:४४
२/३	आर्द्रा	२०:०४	०१:२३	०६:४४	१२:०५
३/४	पुनर्वसु	१७:२८	२२:५१	०४:१६	०९:४२
४/५	पुष्य	१५:११	२०:४१	०२::१३	०७:४८
५/६	आश्लेषा	१३:२५	१९:०४	००:४५	०६:३०
६/७	मघा	१२:१८	१८:०७	००:००	०५:५७
७/८	पूफा.	११:५६	१७:५८	००:०४	०६:१२
८/९	उफा.	१२:२४	१८:३९	००:५६	०७:१७
९/१०	हस्त	१३:४१	२०:०६	०२:३५	०९:०६
१०/११	चित्रा	१५:४०	२२:१५	०४:५२	११:३१
११/१२	स्वाति	१८:१२	००:५३	०७:३६	१४:२०
१२/१३	विशाखा	२१:०५	०३:५०	१०:३५	१७:२१
१४	अनुराधा	००:०७	०६:५१	१३:३६	२०:२०
१५	ज्येष्ठा	०३:०४	०९:४६	१६:२७	२३:०८
१६/१७	मूल	०५:४८	१२:२५	१९:०२	०१:३८

सन २०२६ मास/दि.	चरण नक्षत्र	१ घं.मि.	२ घं.मि.	३ घं.मि.	४ घं.मि.
१७/१८	पूषा.	०८:१२	१४:४४	२१:१६	०३:४५
१८/१९	उषा.	१०:१४	१६:४०	२३:०६	०५:२९
१९/२०	श्रवण	११:५२	१८:१३	००:३२	०६:५०
२०/२१	धनिष्ठा	१३:०७	१९:२१	०१:३५	०७:४७
२१/२२	शतभिषा	१३:५८	२०:०७	०२:१५	०८:२१
२२/२३	पूभा.	१४:२७	२०:३०	०२:३२	०८:३३
२३/२४	उभा.	१४:३३	२०:३०	०२:२७	०८:२२
२४/२५	रेवती	१४:१६	२०:०८	०१:५८	०७:४७
२५/२६	अश्विनी	१३:३६	१९:२२	०१:०७	०६:५०
२६/२७	भरणी	१२:३३	१८:१३	२३:५३	०५:३१
२७/२८	कृतिका	११:०९	१६:४४	२२:१९	०३:५३
२८/२९	रोहिणी	०९:२७	१४:५९	२०:३०	०२:०१
२९/३०	मृगशिरा	०७:३२	१३:०१	१८:३०	००:००
३०	आर्द्रा	०५:२९	१०:५८	१६:२७	२१:५७
३१	पुनर्वसु	०३:२७	०८:५७	१४:२९	२०:०१
फरवरी १	पुष्य	०१:३४	०७:०८	१२:४३	१८:१९
१/२	आश्लेषा	२३:५८	०५:३७	११:१९	१७:०२
२/३	मघा	२२:४८	०४:३५	१०:२४	१६:१६
३/४	पूफा.	२२:११	०४:०७	१०:०६	१६:०८
४/५	उफा.	२२:१३	०४:१९	१०:२९	१६:४२
५/६	हस्त	२२:५७	०५:१४	११:३५	१७:५८
७	चित्रा	००:२४	०६:५१	१३:२१	१९:५४
८	स्वाति	०२:२८	०९:०४	१५:४२	२२:२१
९/१०	विशाखा	०५:०३	११:४४	१८:२७	०१:११
१०/११	अनुराधा	०७:५५	१४:३९	२१:२४	०४:०८
११/१२	ज्येष्ठा	१०:५३	१७:३६	००:१९	०७:०१
१२/१३	मूल	१३:४२	२०:२२	०३:००	०९:३७
१३/१४	पूषा.	१६:१३	२२:४६	०५:१८	११:४८
१४/१५	उषा.	१८:१६	००:४२	०७:०६	१३:२८
१५/१६	श्रवण	१९:४८	०२:०६	०८:२२	१४:३५
१६/१७	धनिष्ठा	२०:४८	०२:५७	०९:०५	१५:११
१७/१८	शतभिषा	२१:१६	०३:१८	०९:१९	१५:१८
१८/१९	पूभा.	२१:१६	०३:१२	०९:०६	१४:५९

सन २०२६ मास/दि.	चरण नक्षत्र	१ घं.मि.	२ घं.मि.	३ घं.मि.	४ घं.मि.
१९/२०	उभा.	२०:५२	०२:४२	०८:३१	१४:२०
२०/२१	रेवती	२०:०७	०१:५३	०७:३८	१३:२३
२१/२२	अश्विनी	१९:०७	००:४९	०६:३२	१२:१३
२२/२३	भरणी	१७:५५	२३:३४	०५:१४	१०:५४
२३/२४	कृतिका	१६:३४	२२:१२	०३:५०	०९:२९
२४/२५	रोहिणी	१५:०७	२०:४५	०२:२२	०८:००
२५/२६	मृगशिरा	१३:३९	१९:१६	००:५४	०६:३२
२६/२७	आर्द्रा	१२:११	१७:५०	२३:२९	०५:०८
२७/२८	पुनर्वसु	१०:४९	१६:२९	२२:१०	०३:५२
२८/१	पुष्य	०९:३५	१५:१८	२१:०२	०२:४७
मार्च १/२	आश्लेषा	०८:३४	१४:२१	२०:१०	०२:००
२/३	मघा	०७::५२	१३:४४	१९:३८	०१:३४
३/४	पूफा.	०७:३२	१३:३०	१९:३१	०१:३४
४/५	उफा.	०७:३९	१३:४५	१९:५४	०२:०४

सन २०२६ मास/दि.	चरण नक्षत्र	१ घं.मि.	२ घं.मि.	३ घं.मि.	४ घं.मि.
५/६	हस्त	०८:१८	१४:३२	२०:४९	०३:०८
६/७	चित्रा	०९:३०	१५:५३	२२:१८	०४:४६
७/८	स्वाति	११:१६	१७:४६	००:२०	०६:५५
८/९	विशाखा	१३:३२	२०:०९	०२:४९	[illegible]
९/१०	अनुराधा	१६:११	२२:५३	०५:३७	[illegible]
१०/११	ज्येष्ठा	१९:०५	०१:४९	०८:३३	[illegible]
११/१२	मूल	२२:००	०४:४२	११:२४	१८:०४
१३	पूषा.	००:४४	०७:२१	१३:५६	२०:३०
१४	उषा.	०३:०३	०९:३२	१६:००	२२:२६
१५	श्रवण	०४:४९	११:०९	१७:२७	२३:४३
१६/१७	धनिष्ठा	०५:५६	१२:०६	१८:१४	[illegible]
१७/१८	शतभिषा	०६:२२	१२:२२	१८:२०	००:१५
१८	पूभा.	०६:०९	१२:००	१७:४९	२३:३५
१९	उभा.	०५:२१	११:०४	१६:४६	२२:२६

✻ हवन हेतु अग्निवास चक्रम् (सूत्र व विवरण हेतु पृष्ठ ७६ देखें।) ✻

तिथि–शुक्ल पक्ष	१,९	२,१०	३,११	४,१२	५,१३	६,१४	७,१५	८
तिथि–कृष्ण पक्ष	२,१०	३,११	४,१२	५,१३	६,१४	७,३०	८	९,१
रविवार	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल
सोमवार	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी
मंगलवार	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी
बुधवार	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश
गुरूवार	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल
शुक्रवार	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी
शनिवार	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी

✻ अभिषेक हेतु शिववास चक्रम् (सूत्र हेतु पृष्ठ ११७ देखें।) ✻

तिथि–शुक्ल पक्ष	१,८,१५	२,९	३,१०	४,११	५,१२	६,१३	७,१४
तिथि–कृष्ण पक्ष	७,१४	१,८,३०	२,९	३,१०	४,११	५,१२	६,१३
वास	श्मशान	गौरी साथ	सभा में	क्रीड़ारत	कैलाश पर	बैल पर	भोजन में
फल	मृत्यु	सुख संपदा	संताप	कष्ट	सुख	अभीष्ट सिद्धि	पीड़ा

चैत्र शुक्ल पक्षः संवत् २०८२ रा.शाकः १९४७

रवियोगा:	तिथि	वार	घटी	पल	घं.	मि.	नक्षत्र	घटी	पल	घं.	मि.	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	दिनमान पल	स्टैण्डर्ड टाइम सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	विविध तारीखें बंग	मुस	भा	चन्द्रराशि प्रवेश काल रा.घटी पल	घं.मि.	सूर्योदय कालिक सूर्य स्पष्ट रा.अं.क.वि.	गति	अंग्रेजी ता.
प्रवर्ध	१	र	१५	३८	१२	५०	रे	२५	०१	१६	३५	ऐं	२८	१७	ब	१५	३८	३०	३८	६	३५	६	५०	१७	९	९	मेष २५/०१	१६/३५	[illegible]	[illegible]	३०
१३।४५ उ. १४।०० या.	२	चं	०६	३५	०९	१२	अ	१७	५९	१३	४५	वै	१८	०१	कौ	०६	३५	३०	४२	६	३४	६	५०	१८	श१	१०	मेष		[illegible]	[illegible]	३१
क्षय	३	चं	५७	५३	२९	४३	0	०	०	०	०	0	०	०	0	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	000	००	० ०	०	०
११।०७ उ.	४	मं	५०	०१	२६	३३	भ	११	२६	११	०७	वि	०८/५८	०८/५६	व	२३	५१	३०	४६	६	३३	६	५१	१९	२	११	वृषभ २४/५४	१६/३०	[illegible]	[illegible]	अ१
०८।५० या.	५	बु	४३	१७	२३	५०	कृ	०५	४६	०८	५०	आ	५०	४६	ब	१६	३०	३०	५०	६	३२	६	५१	२०	३	१२	वृषभ		[illegible]	[illegible]	२
०७।०२ उ. २१।५१ या.	६	गु	३७	५९	२१	४२	रो/मृ	०१/५८	२०/२२	०७/२९	०२/५१	सौ	४३	४७	कौ	१०	२७	३०	५४	६	३०	६	५२	२१	४	१३	मिथुन २९/३९	१८/२२	[illegible]	[illegible]	३
पद्म	७	शु	३४	१९	२०	१३	आ	५७	०८	२९	२१	शो	३८	०९	ग	०५	५७	३०	५७	६	२९	६	५२	२२	५	१४	मिथुन		[illegible]	[illegible]	४
२१।३२ उ.	८	श	३२	२७	१९	२७	पुन	५७	३९	२९	३२	अ	२३	५७	वि	०३	११	३१	०१	६	२८	६	५३	२३	६	१५	कर्क ४२/२२	२३/२५	[illegible]	[illegible]	५
पूर्ण रवि	९	र	३२	२१	१९	२४	पु	५९	५४	३०	२५	सु	३१	०९	बा	०२	१२	३१	०५	६	२७	६	५३	२४	७	१६	कर्क		[illegible]	[illegible]	६
पूर्ण रवि	१०	चं	३३	५६	२०	०१	श्ले	६०	००	-	-	धृ	२९	४१	तै	०२	५८	३१	०९	६	२६	६	५४	२५	८	१७	कर्क		[illegible]	[illegible]	७
०७।५५ या.	११	मं	३७	०१	२१	१३	श्ले	०३	४५	०७	५५	शू	२९	२३	व	०५	१९	३१	१३	६	२५	६	५४	२६	९	१८	सिंह ०३/४५	०७/५५	[illegible]	[illegible]	८
चर	१२	बु	४१	१९	२२	५६	म	०८	५३	०९	५७	गं	३०	०३	ब	०९	०३	३१	१६	६	२४	६	५५	२७	१०	१९	सिंह		[illegible]	[illegible]	९
१२।२५ उ.	१३	गु	४६	३५	२५	०१	पूफा	१५	०४	१२	२५	वृ	३१	२९	कौ	१३	५२	३१	२०	६	२३	६	५५	२८	११	२०	कन्या ३१/४४	१९/०५	[illegible]	[illegible]	१०
१५।१० या.	१४	शु	५२	३०	२७	२२	उफा	२२	०१	१५	१०	ध्रु	३३	२८	ग	१९	३०	३१	२४	६	२२	६	५६	२९	१२	२१	कन्या		[illegible]	[illegible]	११
पूर्णिमा	१५	श	५८	४८	२९	५२	ह	२९	२७	१८	०८	व्या	३५	४८	वि	२५	३८	३१	२८	६	२१	६	५६	३०	१३	२२	कन्या		[illegible]	[illegible]	१२

✦ मार्च–अप्रैल सन् २०२५ ई. बसंत ऋतुः रवि उत्तरायणे–उत्तरगोले ✦

♣ सम्प्रति भद्रादि ग्रह – नक्षत्रचार समय भार.स्टे.टा.घण्टा–मिनटों में ही अंकित किये हैं ♣

- ३० सर्वा.१६/३५ उ.३०/३४ या.पंचक १६/३५ या.चंद्रदर्शनं नवरात्रि प्रा.घट स्थापना गुड़ीपड़वा चेटीचंड **A**
- ३१ **रेवत्यां रविः १४/०० सिंजारा गणगौरी पूजा मेला** श्रीमत्स्य ज.**B**
- ० **A** चांद्र संवत्सर प्रा.श्री झूलेलाल ज.ज्योतिष दिवस श्रीगौतम ज. **चैत्री नववर्ष** प्रा.ध्वजारोपण
- अ१ भ.१६/०५ उ.२६/३३ या.सर्वा.११/०७ उ.**श्रीगणेश दमनक चतुर्थी व्रत C**
- २ सर्वा. ३०/३० या.**श्रीपंचमी** कर्के भौमः २५/२९
- ३ **स्कंद षष्ठी** पूभायां बुधः १८/४२
- ४ भ. २०/१३ उ.नवपद ओली आराधना प्रा.जैन
- ५ भ.०७/४५ या.अशोकाष्टमी **श्री दुर्गाष्टमी**



- ६ सर्वा.०६/२७ उ.३०/२५ या.रवि पुष्य ०६/२७ उ.३०/२५ या.श्रीराम नवमी दुर्गा नवमी पूजा नवरात्रि पूर्ण **D**
- ७ **श्रीधर्मराज दशमी** विश्व स्वास्थ्य दि.मार्गी बुधः १६/३८
- ८ भ.०८/३३ उ.२१/१३ या.सर्वा.०६/२५ उ.०७/५५ या.**कामदा ११ व्रतं सर्वे.E**
- ९ हरि दमनोत्सवः **विष्णु द्वादशी**
- १० **प्रदोष व्रतं** अनंग त्रयोदशी **श्रीमहावीर ज.जैन** मृगशिरा १ गुरूः १८/५१
- ११ भ. २७/२२ उ.श्रीनृसिंह दोलोत्सव **शिव दमनक चतुर्दशी F**
- १२ भ.१६/३६ या.**पूर्णिमाव्रतं श्रीहनुमान ज.**संत पीपा ज.वैशाख स्नान प्रा.**G**





निर्णयसागरीय गोचरग्रहाः



अ. १ चैत्र शुक्ले ८ शनौ इष्ट ००।००

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	११	२	३	११	१	११	११	११	५
अं.	२१	२०	००	०२	२२	०१	००	०२	०२
क.	१७	३७	४५	५३	२४	४२	४५	१८	१८
वि.	२१	५३	३५	०८	३४	४५	४१	२७	२७
ग	५९	७।१२	२१	१०	०९	१८	०७	३	३
ति	०२	०४	१०	३७ व	४८	१२ व	०५	११	११
नक्षत्र	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

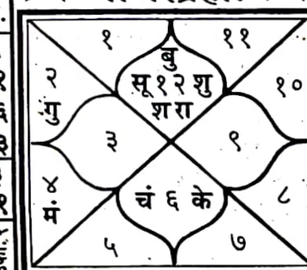
♣ ग्रह गोचरीय फलश्रुतिः ♣

क्रूरवार तेजी करें, मावस शनि कुसंग। मंदी से तेजी बने, वस्तु विविध प्रसंग ॥ निर्यातक गति न्यूनता, आयात रूप नव देश। दलहन तिलहन नित्य का, उन्नत भाव निवेश ॥ चलन कलन राहु शुक्र का, भौतिक बुद्धि अपार। वस्तु सुगंधी गंध की, तेजी पंथ निहार ॥ अमा पूर्णिमा वार शनि, नहीं सुखद परिवेश। निर्धन लेवे आपदा, पशुजन पीड़ित देश ॥ श्री गणेश नववर्ष का, वासर सूर्य निहाल। नेता नायक दलपति, कष्टद जन तंत्र विशाल ॥ चलन कलन गुरु भौम का, एकादश त्रय अभिलक्ष। शांति विश्व की भावना, संधि सूत्रता दक्ष ॥ अर्थ कोष मुद्रा विषय, लाभ योग विस्तार। उन्नत देशज सम्पदा, उत्पादन अभिसार ॥ अणु शक्ति विज्ञान की, प्रभुता नित्य निहार। योग सुयोग उपलक्षणा, भारत देश विहार ॥

अ. २ चैत्र शुक्ले १५ शनौ इष्ट ००।००

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	११	५	३	११	१	११	११	११	५
अं.	२८	१७	०३	०३	२३	००	०१	०१	०१
क.	०९	३०	२०	३१	३५	२६	३४	५६	५६
वि.	४५	५९	१२	०७	२१	०६	३९	१३	१३
ग	५८	७।१०	२३	२५	१०	०१	०६	३	३
ति	४६	१०	१५	१८	३१	१३ व	५२	११	११
नक्षत्र	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

निर्णयसागरीय गोचरग्रहाः



● **अभिजित वेला** ● शुभ मुहूर्त्तों में प्रायः अभिजित कार्यम् लिखा जाता है, उसके स्पष्ट समय ज्ञान हेतु सूत्र–इष्टदिन के दिनमान को आधा करके घण्टा मिनिट बनावें तथा इसे इष्टदेशीय सूर्योदयकाल में जोड़ें, यह योगफल स्टेण्डर्ड मध्यान्हकाल होगा, इस मध्यान्हकाल से मौलिक 24 मिनिट पहले तथा 24 मिनिट बाद अभिजित मुहूर्त्त का समय समझना चाहिए। बुधवार को अभिजित मुहूर्त्त साधना का निषेध है। स्व स्थानीय सूर्योदय स्टेण्डर्ड समय का लेवें। ● **अभिजित मुहूर्त्त विषये मान्यता** ● ब्रह्मक्षत्रिय वैश्यानां शूद्राणांचापि नित्यशः। सर्वेषामेव वर्णानां योगो मध्यन्दिनेऽभिजित ॥ शंकुमूले यदा छाया मध्यान्हे च प्रजायते। तदा चाभिजिदाख्याता घटिकैक्रा स्मृताबुधैः ॥ ● **संकेत** ● चैत्रादि द्वादश मासों में सर्वदा प्रथम कोष्ठक में रवियोग दिवस गणना दी गई है। अर्थ यह कि दोष संघ विनाशक रवि योग दिवस विशेष कल्प समय साधना हेतु प्रमुख परिहार विषयक सूत्र गणना मानक मान्य होता है। यह सुयोग अनुभव सिद्ध है। **B** पूभायां शुक्रः २८।४७ शव्वाल मास १० मुस.ईदुलफितर मीठी ईद **C** बैंक वार्षिक लेखाबंदी अप्रैल मास ४ ता. ३० प्रा. **D** बुधोदय पू. २९।२४ **E** लक्ष्मीकांत दोलोत्सवः **F** उभायां बुधः १७।२९ पुष्ये भौमः ३०।०३ **G** नवपद ओली आराधना पूर्ण सिद्धाचल यात्रा जैन

वैशाख कृष्ण पक्षः संवत् २०८२ रा.शाकः १९४७

रवियोगाः	तिथि	वार	घटी	पल	घं.	मि.	नक्षत्र	घटी	पल	घं.	मि.	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	दिनमान पल	स्टैण्डर्ड टाईम सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	विविध तारीखें बंग	मुस	भा	चन्द्रराशि प्रवेश काल रा.घटी पल	घं.मि.	सूर्योदय कालिक सूर्य स्पष्ट रा.अ.क.वि.	गति	अंग्रेजी ता.
पद्म	१	र	६०	००	-	-	चि	३७	०७	२१	११	ह	३८	१८	बा	३२	०२	३१	३१	६	२०	६	५७	१वै	१४	२३	तुला ०३/१७	०७/३९	११ २९ ०८ ३१	५८ ४४	१३
छत्र	१	चं	०५	१६	०८	२६	स्वा	४४	४६	२४	१४	व	४०	४७	कौ	०५	१६	३१	३५	६	१९	६	५७	२	१५	२४	तुला		० ०० ०७ १५	५८ ४३	१४
श्रीवत्स	२	मं	११	३४	१०	५६	वि	५२	११	२७	११	सि	४३	०६	ग	११	३४	३१	३९	६	१८	६	५८	३	१६	२५	वृश्चि. ३५/२२	२०/२७	० ०१ ०५ ५८	५८ ४१	१५
चौ.व्रत	३	बु	१७	३१	१३	१८	अ	५९	०५	२९	५५	व्य	४५	०२	वि	१७	३१	३१	४२	६	१७	६	५८	४	१७	२६	वृश्चिक		० ०२ ०४ ३९	५८ ३८	१६
कालदंड	४	गु	२२	४९	१५	२४	ज्ये	६०	००	-	-	व	४६	२५	बा	२२	४९	३१	४६	६	१६	६	५९	५	१८	२७	वृश्चिक		० ०३ ०३ १७	५८ ३७	१७
चर	५	शु	२७	११	१७	०८	ज्ये	०५	१४	०८	२१	प	४७	००	तै	२७	११	३१	४९	६	१५	६	५९	६	१९	२८	धनु ०५/१४	०८/२१	० ०४ ०१ ५४	५८ ३६	१८
१०।२१ उ.	६	श	३०	२०	१८	२२	मू	१०	१७	१०	२१	शि	४६	३५	व	३०	२०	३१	५३	६	१४	७	००	७	२०	२९	धनु		० ०५ ०० ३०	५८ ३४	१९
११।४८ या.	७	र	३१	५९	१९	०१	पूषा	१३	५७	११	४८	सि	४४	५८	वि	०१	२३	३१	५७	६	१३	७	००	८	२१	३०	मकर ३९/३७	१८/०४	० ०५ ५९ ०४	५८ ३२	२०
मृत्यु	८	चं	३१	५६	१८	५९	उषा	१६	०२	१२	३७	सा	४१	५९	बा	०२	१२	३२	००	६	१३	७	०१	९	२२	वै१	मकर		० ०६ ५७ ३६	५८ ३१	२१
लुम्बक	९	मं	३०	०४	१८	१३	श्र	१६	२१	१२	४४	शु	३७	३४	तै	०१	१५	३२	०४	६	१२	७	०१	१०	२३	२	कुंभ ४५/४९	२४/३१	० ०७ ५६ ०६	५८ २९	२२
मित्र	१०	बु	२६	२३	१६	४४	ध	१४	५२	१२	०८	शु	३१	४१	वि	२६	२३	३२	०७	६	११	७	०२	११	२४	३	कुंभ		० ०८ ५४ ३५	५८ २८	२३
ए.व्रत	११	गु	२०	५७	१४	३३	श	११	३९	१०	४९	ब्र	२४	२४	बा	२०	५७	३२	११	६	१०	७	०२	१२	२५	४	मीन ५३/१०	२७/२६	० ०९ ५३ ०३	५८ २६	२४
प्रदोष	१२	शु	१४	००	११	४५	पूभा	०६	५२	०८	५४	ऐं	१५	५४	तै	१४	००	३२	१४	६	०९	७	०३	१३	२६	५	मीन		० १० ५१ २९	५८ २४	२५
धूम्र	१३	श	०५	५०	०८	२८	उभा/रे	००/५३	४८/४७	०६/२७	२७/३९	वै	०६/५६	२३/०७	व	०५	५०	३२	१७	६	०८	७	०३	१४	२७	६	मेष ५३/४७	२७/३९	० ११ ४९ ५३	५८ २३	२६
क्षय	१४	श	५६	४५	२८	५०	0	०	०	०	०	0	०	०	0	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0		० ०	०	०
अमावस	३०	र	४७	१५	२५	०१	अ	४६	१९	२४	३९	प्री	४५	२९	च	२२	०३	३२	२१	६	०७	७	०४	१५	२८	७	मेष		० १२ ४८ १६	५८ २१	२७

✦अप्रैल सन् २०२५ ई. ग्रीष्म ऋतुः रवि उत्तरायणे–उत्तरगोले ✦

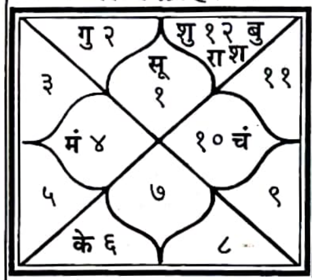
♣ सम्प्रति भद्रादि ग्रह – नक्षत्रचार समय भार.स्टे.टा.घण्टा–मिनटों में ही अंकित किये हैं ♣




- १३ अश्विन्यां रविः २७/२२ मेषेऽर्कः २७/२२ श्री महावीर रथयात्रा जैन A
- १४ डॉ.अम्बेडकर ज. १३४ वीं
- १५ भ. २४/०८ उ.
- १६ भ. १३/१८ या.सर्वा.अमृत ०६/१७ उ. २९/५५ या.वैशाखी चतुर्थी व्रतं चंद्रोदय रात्रि
- १७ A बं.वैशाख मास प्रा.मार्गी शुक्रः ०६/३२ खालसा ज.फसली सन १९३२ प्रा.वैशाखी पर्व
- १८ श्रीमलूकदास ज.वृन्दावने गुडफ्राइडे
- १९ भ. १८/२२ उ.वृषभे भानुः २५/२७ ग्रीष्म ऋतु प्रा.
- २० भ. ०६/४७ या.सर्वा. ११/४८ उ. ३०/१३ या.इस्टर सण्डे श्रीजयंत सेन सूरी म.सा.पुण्य त्रि.स्तु.जैन
- २१ सर्वा. १२/३७ उ. ३०/१२ या.रा.वैशाख मास प्रा.शीतला पूजा–बूढ़ा बासोड़ा
- २२ भ. २९/३४ उ.पंचक २४/३१ उ.विश्व पृथ्वी दि.
- २३ भ. १६/४४ या.
- २४ वरूथिनी ११ व्रतं सर्वे.श्री वल्लभाचार्य ज.
- २५ प्रदोष व्रतं श्री सेन ज.७२५ वीं उभायां शुक्रः २३/३०
- २६ भ. ०८/२८ उ. १८/४१ या.पंचक २७/३९ या.मास शिवरात्रि
- ० B श्रीशुकदेव ज.रेवत्यां बुधः १५/२९
- २७ सर्वा. ०६/०७ उ. २४/३९ या.देवपितृ कार्ये अमावस्या भरण्यां रविः ११/११ B




卐 निर्णयसागरीय गोचरग्रहाः 卐



अ. ३ वैशाख कृष्णे ८ चंद्रे इष्ट ००।००

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०	९	३	११	१	११	११	११	५
अं.	०६	०६	०६	०९	२५	०१	०२	०१	०१
क.	५७	३१	५८	४१	१३	३६	३५	२७	२७
वि.	३६	०६	४७	००	१४	५६	११	३७	३७
ग	५८	७८१	२५	५८	११	१८	०६	३	३
ति	३१	२७	३०	१३	१९	२४	३२	११	११
नक्षत्र	अश्वि. २	उषा. ३	पुष्य १	उभा. २	मृग. १	पूभा. ४	पूभा. ४	पूभा. ४	उफा. २

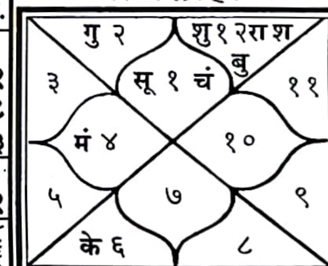
♣ मेष संक्रान्ति फलम् – रण संभागीय ♣

वैशाख कृष्ण पक्षे १सूर्ये मेषेऽर्कः प्र.वा.३ न.४ अस्य पुण्यकालः परदिने सोमवासरे सूर्योदय वेलातः पुण्यप्रदः। वारनाम घोरा–सुदूर जंगल–पर्वत निवासी, आदिवासी, निर्धन, वयोवृद्ध, अनुसूचित जनजाति हेतु शासकीय सुलाभ, नवीन योजना। नक्षत्र नाम महोदरी–तस्कर–ठग, चौर्यकर्मशील, लोभी–प्रलोभी, संग्रहशील, स्टॉकिस्ट वर्ग हेतु मनोत्साह वर्धक सुखद। रात्रि ३ या.व्या. गायक, वादक, नर्तक, चलचित्र, अभिनेता–निर्माता हेतु कष्टद प्रभार सूचक। दक्षिणे गमन, नैर्ऋत्यां दृष्टिः। संक्रान्ति वास निवास शाह वैश्य गृहे, कौलव करणे, वाहन–वराह, उपवाहन–वृषभ, हरित वस्त्र, खड्गायुध, ताम्र पात्र, भिक्षान्न भक्षण, चंदन लेपन, सर्पजाति, बकुल पुष्प, मुक्ताभूषण, हरित कंचुकी, गतालंकाऽवस्था, उत्तिष्ठा, मुहूर्त–१५, धान्य–गल्ला, उन्नत भाव, बैल, हरा वस्त्र, मोती, चंदन, इत्र, धनिया, सौंफ, हरे मूंग, मेहंदी, मसूर, मिर्च, खोपरा गोला, ताम्बा, रसायन द्रव्य, घी, शक्कर उन्नत धारणा, शुक्रोदय पूर्वे, वत्स पश्चिमे, राहु दक्षिणे, मूल पाताले।

अ. ४ वैशाख कृष्णे ३० सूर्ये इष्ट ०।०

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०	०	३	११	१	११	११	११	५
अं.	१२	०१	०९	१६	२६	०३	०३	०१	०१
क.	४८	३३	३५	११	२२	५४	१३	०८	०८
वि.	१६	५७	०८	०६	१७	०८	४१	३३	३३
ग	५८	११४	२६	७३	११	२८	०६	३	३
ति	२१	३२	४९	५१	४७	४०	१५	११	११
नक्षत्र	अश्वि. ४	अश्वि. १	पुष्य २	उभा. ४	मृग. १	उभा. १	पूभा. ४	पूभा. ४	उफा. २

卐 निर्णयसागरीय गोचरग्रहाः 卐



● **जन्म समयपाद विवेक** ● जन्म लग्नतः चन्द्र १–६–११ स्थाने स्वर्णपाद, २–५–९ स्थाने चांदीपाद, ३–७–१० में तांबा, ४–८–१२ में लौह पाद समझें। ● **नक्षत्रानुसार पाद ज्ञान** ● आर्द्रा दश रूपाणां विशाखा नवताम्रका रेवती षट् स्वर्णश्च शेषाः लोहाः प्रकीर्त्तिताः ॥ भावार्थ – आर्द्रा से १० नक्षत्र चांदी पाया का जन्म तथा विशाखा से ९ गणना तक ताम्बा तथा रेवती से ६ गणना तक सोना का पाया एवं शेष गणना का लोह पाद। ● **नक्षत्र पाद गणना** ● में मतान्तर भी हैं, आर्द्रा से १० चांदी एवं विशाखा से ४ नक्षत्र लोहा, पूर्वाषाढ से अग्रिम ७ गणना ताम्बा तथा शेष स्वर्णपाद। परन्तु प्रथम लग्नतः चन्द्र स्थिति प्रमाण ही विशेष अनुभवयुक्त–प्रभावशील मान्य है।

वैशाख शुक्ल पक्षः संवत् २०८२ रा.शाकः १९४७																		दिन मान		स्टेण्डर्ड टाईम सूर्योदय		सूर्यास्त		विविध तारीखें			चन्द्रराशि प्रवेश काल		सूर्योदय कालिक सूर्य स्पष्ट		अंग्रेजी ता.	✦अप्रैल–मई सन् २०२५ ई. ग्रीष्म ऋतुः रवि उत्तरायणे–उत्तरगोले✦
रवियोगाः	तिथि	वार	घटी	पल	घं.	मि.	नक्षत्र	घटी	पल	घं.	मि.	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	घटी	पल	घं.	मि.	घं.	मि.	बंग	मुस	भा	रा.घटी पल	घं.मि.	रा.अ.क.वि.	गति	ता.	♣सम्प्रति भद्रादि ग्रह – नक्षत्रचार समय भार.स्टे.टा.घण्टा–मिनटों में ही अंकित किये हैं♣
चर	१	चं	३७	४२	२१	११	भ	३८	४८	२१	३८	आ	३४	५०	किं	१२	२८	३२	२४	६	०७	७	०४	१६	२९	८	वृषभ ५१/५८	२६/५४	० १३ ४६ ३७	५८ १९	२८	चंद्रदर्शन पाराशर ऋषि ज.मतांतरे उभायां १ शनिः ०६/१७ **A** जैन हस्तिनापुर
गद	२	मं	२८	३५	१७	३२	कृ	३१	४४	१८	४७	सौ	२४	३०	बा	०३	०५	३२	२८	६	०६	७	०५	१७	जि१	९	वृषभ		० १४ ४४ ५६	५८ १७	२९	सर्वा. ०६/०६ उ. १८/४७ या.श्रीपरशुराम ज.श्रीशिवाजी ज.४१८ वीं जिल्कादमास ११मुस.
१६।१८ उ.	३	बु	२०	१९	१४	१३	रो	२५	३३	१६	१८	शो	१४	५१	ग	२०	१९	३२	३१	६	०५	७	०५	१८	२	१०	मिथुन ५२/५५	२७/१५	० १५ ४३ १३	५८ १६	३०	भ. २४/४४ उ.सर्वा. ०६/०५ उ. ३०/०४ या.अक्षयतृतीया आखातीज वर्षीतप पारणा पालीताणा **A**
१४।२१ या.	४	गु	१३	२०	११	२४	मृ	२०	४२	१४	२१	अ	०६/५८	१५/५६	वि	१३	२०	३२	३४	६	०४	७	०६	१९	३	११	मिथुन		० १६ ४१ २८	५८ १४	म१	भ. ११/२४ या. ★ अगस्त्य अस्त ०७/०४ विश्व श्रम दि.मई मास ५ ता. ३१ प्रा.
१३।०४ उ.	५	शु	०७	५९	०९	१५	आ	१७	३२	१३	०४	धृ	५३	११	बा	०७	५९	३२	३७	६	०३	७	०६	२०	४	१२	मिथुन		० १७ ३९ ४२	५८ १२	२	सर्वा. १३/०४ उ. ३०/०३ या.श्रीसूरदास ज.श्रीआद्य शंकराचार्य ज.१२३७ वीं **B**
१२।३४ या.	६	श	०४	३४	०७	५२	पुन	१६	१९	१२	३४	शू	४९	०५	तै	०४	३४	३२	४०	६	०३	७	०७	२१	५	१३	कर्क ०१/२६	०६/३७	० १८ ३७ ५३	५८ १०	३	श्री गंगा सप्तमी **B** श्री रामानुजाचार्य ज.
श्रीवत्स	७	र	०३	१४	०७	१९	पु	१७	०९	१२	५४	गं	४६	३९	व	०३	१४	३२	४४	६	०२	७	०७	२२	६	१४	कर्क		० १९ ३६ ०२	५८ ०८	४	भ. ०७/१९ उ. १९/२२ या.सर्वा. ०६/०२ उ. १२/५४ या.रविपुष्य ०६/०२ उ. १२/५४ या.
१४।०१ उ.	८	चं	०३	५८	०७	३६	श्ले	२०	००	१४	०१	वृ	४५	४६	ब	०३	५८	३२	४७	६	०१	७	०८	२३	७	१५	सिंह २०/००	१४/०१	० २० ३४ १०	५८ ०६	५	श्री जानकी नवमी देवी बगलामुखी जयंती
पूर्णरवि	९	मं	०६	३६	०८	३९	म	२४	३९	१५	५२	ध्रु	४६	१३	कौ	०६	३६	३२	५०	६	०१	७	०८	२४	८	१६	सिंह		० २१ ३२ १५	५८ ०४	६	अश्विन्यां मेषे बुधः २८/०६
१८।१७ या.	१०	बु	१०	५१	१०	२०	पूफा	३०	४३	१८	१७	व्या	४७	४२	ग	१०	५१	३२	५३	६	००	७	०९	२५	९	१७	कन्या ४७/२५	२४/५८	० २२ ३० १९	५८ ०२	७	भ. २३/२२ उ.टैगोर ज.श्रीमहावीर स्वामी कैवल ज्ञान जैन **C** रेडक्रास दि.
ए.व्रत	११	गु	१६	१६	१२	३०	उफा	३७	४८	२१	०७	ह	४९	५४	वि	१६	१६	३२	५६	५	५९	७	१०	२६	१०	१८	कन्या		० २३ २८ २१	५८ ००	८	भ. १२/३० या.मोहिनी ११ व्रतं सर्वे.विश्व मातृ दि.चतुर्विध संघ स्थापना दि.जैन **C**
२४।०१ उ.	१२	शु	२२	२५	१४	५७	ह	४५	२६	२४	०९	व	५२	२८	बा	२२	२५	३२	५९	५	५९	७	१०	२७	११	१९	कन्या		० २४ २६ २१	५७ ५८	९	प्रदोषव्रतं **D** वैशाख स्नान पूर्ण देवयानी यात्रा सांभर लेक आश्लेषायां भौमः ०८/३२
२७।१५ या.	१३	श	२८	५१	१७	३०	चि	५३	१३	२७	१५	सि	५५	०७	तै	२८	५१	३३	०२	५	५८	७	११	२८	१२	२०	तुला १९/२१	१३/४२	० २५ २४ १९	५७ ५७	१०	सर्वा. २७/१५ उ. २९/५७ या.
१३।१८ उ.	१४	र	३५	१३	२०	०२	स्वा	६०	००	-	-	व्य	५७	३८	ग	०२	०४	३३	०५	५	५७	७	११	२९	१३	२१	तुला		० २६ २२ १६	५७ ५५	११	भ. २०/०२ उ.कृतिकायां रविः १३/१८ श्रीनृसिंह ज.
०६।१७ या.	१५	चं	४१	१३	२२	२६	स्वा	००	५१	०६	१७	व	५९	५०	वि	०८	१७	३३	०७	५	५७	७	१२	३०	१४	२२	वृश्चिक ५१/१७	२६/२७	० २७ २० ११	५७ ५४	१२	भ. ०९/१६ या.पूर्णिमा व्रतं पीपल पूर्णिमा श्रीकूर्म ज.श्रीबुद्ध ज.**D**







卐 निर्णयसागरीय गोचरग्रहाः 卐



अ.५ वैशाख शुक्ले ८ चंद्रे इष्ट ०।०

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०	३	३	११	१	११	११	११	५
अं.	२०	२५	१३	२७	२७	०८	०४	००	००
क.	३४	४७	१५	०३	५८	२२	०२	४३	४३
वि.	१०	५५	०५	२५	२४	०८	१५	०८	०८
ग	५८	७४९	२८	९०	१२	३९	०५	३	३
ति	०६	१९	१९	५६	१८	०६	४९	११	११
नक्षत्र	भरणी ३	आश्ले. ३	पुष्य ३	रेवती ४	मृग. २	उभा. २	उभा. १	पूभा. ४	उफा. २

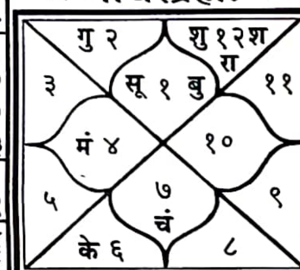
♣ ग्रह गोचरीय फलश्रुतिः ♣

शुक्ल पक्ष वैशाख को, तृतीया रोहिणी लक्ष। संस्था सेवा वर्ग की, जनसेवा में दक्ष ॥ वैशाख कृष्ण अमावस्या, रेवती पक्ष सुभिक्ष। रोहिणी योग, दुर्भिक्ष का, मध्यम अश्विनी पक्ष ॥ भरणी व्याधि जानिये, कृत्तिका से जल अल्प। यान खान घटना विविध, निर्णय शकुन सुकल्प ॥ भरणी गत रवि योग जब, मेघ गाज आकाश ॥ सुख सुभिक्ष की न्यूनता, निर्णय शकुन प्रकाश ॥ प्रातः चैत्र वैशाख में , वन पक्षी ध्वनि धीर, मधुर बोल सुहावने, श्रावण वर्षे नीर ॥ बिना ऋतुफल फूल हो, धरा मध्य जिस भाग। शकुन भवानी शास्त्र का, सुख सुभिक्ष नहीं राग ॥ कृष्ण पक्ष वैशाख का, एकादशी तिथि दक्ष। मेघ गाज से मानिये, भावी वर्ष सुभिक्ष ॥ कृष्ण पक्ष वैशाख का, तिथि आठम का संग। मेघ गाज नभ बिजली, भावी सुखद सुरंग ॥

अ.६ वैशाख शुक्ले १५ चंद्रे इष्ट ०।०

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०	६	३	०	१	११	११	११	५
अं.	२७	११	१६	०८	२९	१३	०४	००	००
क.	२०	४९	३६	२१	२५	१७	४१	२०	२०
वि.	११	५१	४४	४३	४२	२१	४५	५३	५३
ग	५७	७१३	२९	१०४	१२	४५	०५	३	३
ति	५४	५९	२६	५०	४१	५६	२४	११	११
नक्षत्र	कृतिका १	स्वाति ४	पुष्य ४	अश्वि. ३	मृग. २	उभा. ३	उभा. १	पूभा. ४	उफा. २

卐 निर्णयसागरीय गोचरग्रहाः 卐



● **रोगीणां मरण जीवनविचार** ● ज्येष्ठा, आश्लेषा, शतभिषा, आर्द्रा, तीनों पूर्वा, भरणी, विशाखा, घनिष्ठा, कृतिका नक्षत्र तथा शनि–मंगल–रविवार एवं ४-९-१४-१२-६ तिथि इनमें रोगी बने मनुष्य को दुःख रोग अधिक देखना होता है। इन तीनों नक्षत्र वार तिथि में एक भी कम होवे तब चिंता न करें। दशा–उपदशा गोचर ग्रह गति विचार भी योग्य। महामृत्युंजय जप–जाप तथा तुलादानतः विविध शारीरिक पीड़ा हित शांति सूत्र समझें। ● **काक स्पर्श प्रतिफल सूत्र** ● शकुन शास्त्रीय नियामक से कौआ–काक का मस्तक पर स्पर्श धनसम्पदा विनाशक तथा विविध जीवनीय समस्याओं में वृद्धि प्रदायक एवं कमर भाग तथा कन्धों पर काक स्पर्श भी शुभ सूचक नहीं होता है। यह काक स्पर्श प्रतिफल महिला जगत–स्त्री पक्ष पर विशेषकर प्रतिफल प्रदान करता है। तथापि यदि किसी वृक्ष के नीचे दही–खीर आदि पक्वान्न भोजन के कारण काक स्पर्श का शकुन प्रभाव नहीं बनता है तथा अकस्मात् यकायक स्पर्श का दोष कुफल सूचक एवं काक का मैथुन कर्म अवलोकन भी नेष्टफल सूचक बनता है। मुहूर्त गणपति ग्रन्थानुगत यह प्रतिफल है तथा दोष निवारण हेतु सवस्त्र स्नान करके इन वस्त्रों का अनुदान कर देना परिहार सूचक एवं शांति विधायक समझें।

ज्येष्ठ कृष्ण पक्षः संवत् २०८२ रा.शाकः १९४७																		दिन मान		स्टेण्डर्ड टाईम सूर्योदय		सूर्यास्त		विविध तारीखें			चन्द्रराशि प्रवेश काल		सूर्योदय कालिक सूर्य स्पष्ट		अंग्रेजी ता.	✦ मई सन् २०२५ ई. ग्रीष्म ऋतुः रवि उत्तरायणे–उत्तरगोले ✦
रवियोगाः	तिथि	वार	घटी	पल	घं.	मि.	नक्षत्र	घटी	पल	घं.	मि.	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	घटी	पल	घं.	मि.	घं.	मि.	बंग	मुस	भा	रा.घटी पल	घं.मि.	रा.अं.क.वि.	गति		♣ सम्प्रति भद्रादि ग्रह – नक्षत्रचार समय भार.स्टे.टा.घण्टा–मिनटों में ही अंकित किये हैं ♣
श्रीवत्स	१	मं	४६	४०	२४	३६	वि	०८	०३	०९	०९	प	६०	००	बा	१४	०२	३३	१०	५	५६	७	१२	३१	१५	२३	वृश्चिक		० २८ १८ ४०	५७ ५२	१३	जिनवर व्रत जैन
सौम्य	२	बु	५१	२५	२६	३०	अ	१४	३९	११	४७	प	०१	३६	तै	१९	०९	३३	१३	५	५६	७	१३	ज्ये१	१६	२४	वृश्चिक		० २९ १५ ५७	५७ ५१	१४	सर्वा.अमृत ०५/५६ उ. ११/४७ या.वृषभेऽर्कः २४/१२ श्रीनारद ज. वीणादानं A
कालदंड	३	गु	५५	२१	२८	०३	ज्ये	२०	३१	१४	०८	शि	०२	४७	व	२३	३०	३३	१६	५	५५	७	१३	२	१७	२५	धनु २०/३१	१४/०८	१ ०० १३ ४७	५७ ५०	१५	भ. १५/१९ उ. २८/०३ या.बुधास्त पू. २९/०५
चौ.व्रत	४	शु	५८	१९	२९	१४	मू	२५	३३	१६	०८	सि	०३	१९	ब	२६	५८	३३	१८	५	५५	७	१४	३	१८	२६	धनु		१ ०१ ११ ३६	५७ ४९	१६	ज्येष्ठ **चतुर्थी व्रतं चंद्रोदय रात्रि** २२/४९ रेवत्यां शुक्रः १२/४५
मातंग	५	श	६०	००	-	-	पूषा	२९	३५	१७	४४	सा	०३	०७	कौ	२९	२४	३३	२१	५	५४	७	१४	४	१९	२७	मकर ४५/२४	२४/०४	१ ०२ ०९ २५	५७ ४७	१७	**A बं.ज्येष्ठ मास प्रा.**भरण्यां बुधः २५/०१ मृगशिरायां ३ मिथुने गुरूः २२/३४
१८।५३ उ.	५	र	००	११	०५	५८	उषा	३२	२८	१८	५३	शु	०२/५९	०२/५७	तै	००	११	३३	२३	५	५४	७	१५	५	२०	२८	मकर		१ ०३ ०७ ११	५७ ४६	१८	सर्वा. ०५/५४ उ. १८/५३ या.पूभायां ३ कुम्भे राहुः उफायां १ सिंहे केतुः १७/१२
१९।३० या.	६	चं	००	४७	०६	१२	श्र	३४	०२	१९	३०	ब्र	५६	४६	व	००	४७	३३	२६	५	५३	७	१५	६	२१	२९	मकर		१ ०४ ०४ ५७	५७ ४५	१९	भ. ०६/१२ उ. १८/०७ या.सर्वा. ०५/५३ उ. १९/३० या.
क्षय	७	चं	५९	५८	२९	५२	0	०	०	०	०	0	०	०	0	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0		० ०	०	०	**B रोहिणी तपनकाल प्रा.मास शिवरात्रि**
उत्पात	८	मं	५७	३८	२८	५६	ध	३४	०९	१९	३२	ऐं	५२	२३	बा	२९	००	३३	२८	५	५३	७	१६	७	२२	३०	कुंभ ०४/१७	०७/३६	१ ०५ ०२ ४२	५७ ४४	२०	पंचक ०७/३६ उ.मिथुने भानुः २४/२५ **श्री दादूदयाल पुण्यः कालाष्टमी**
मानस	९	बु	५३	४५	२७	२२	श	३२	४५	१८	५८	वै	४६	४५	तै	२५	५४	३३	३०	५	५२	७	१७	८	२३	३१	कुंभ		१ ०६ ०० २६	५७ ४३	२१	कृत्तिकायां बुधः २२/१७
मुद्गर	१०	गु	४८	२२	२५	१३	पूभा	२९	४८	१७	४७	वि	३९	५३	व	२१	१५	३३	३३	५	५२	७	१७	९	२४	ज्ये१	मीन १५/४१	१२/०८	१ ०६ ५८ ०९	५७ ४२	२२	भ. १४/२२ उ. २५/१३ या.**रा.ज्येष्ठ मास प्रा.**
ए.व्रत	११	शु	४१	३७	२२	३०	उभा	२५	२७	१६	०२	प्री	३१	५२	ब	१५	०९	३३	३५	५	५२	७	१८	१०	२५	२	मीन		१ ०७ ५५ ५०	५७ ४१	२३	सर्वा.अमृत १६/०२ उ. २९/५१ या.**अपरा ११ व्रतं स्मा.वै.**वृषभे बुधः १२/५९
प्रदोष	१२	श	३३	४४	१९	२१	रे	१९	५३	१३	४८	आ	२२	५३	कौ	०७	४८	३३	३७	५	५१	७	१८	११	२६	३	मेष १९/५३	१३/४८	१ ०८ ५३ ३१	५७ ४०	२४	**पंचक १३/४८ या.अपरा ११ व्रतं निम्बा शनि प्रदोष व्रतं**
आनंद	१३	र	२५	०२	१५	५२	अ	१३	२४	११	१२	सौ	१३	०९	व	२५	०२	३३	३९	५	५१	७	१९	१२	२७	४	मेष		१ ०९ ५१ ११	५७ ३९	२५	भ. १५/५२ उ. २६/०३ या.सर्वा. ०५/५१ उ. ११/१२ या.रोहिण्यां रविः ०९/३१ B
चर	१४	चं	१५	५४	१२	१२	भ/कृ	०६/५९	२३/१५	०८/२९	२४/३३	शो	०२/५२	५८/४०	श	१५	५४	३३	४१	५	५१	७	१९	१३	२८	५	वृषभ १९/३५	१३/४१	१ १० ४८ ४९	५७ ३८	२६	सर्वा. २९/३३ उ. २९/५० या.पितृकार्ये अमावस्या **वटसावित्री पूजा C** रोहिण्यां बुधः २९/०४
अमावस	३०	मं	०६	४५	०८	३२	रो	५२	३१	२६	५१	सु	४२	३९	ना	०६	४५	३३	४३	५	५०	७	२०	१४	२९	६	वृषभ		१ ११ ४६ २७	५७ ३७	२७	**देवकार्ये अमावस्या भावुका ३० श्री शनि ज.श्रीसंत ज्ञानेश्वर ज.करवीर व्रतं C**









卐 निर्णयसागरीय गोचरग्रहाः 卐



अ.७ ज्येष्ठ कृष्णे ८ भौमे इष्ट ०।०

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	१	९	३	०	२	११	११	१०	४
अं.	०५	२९	२०	२३	०१	१९	०५	२९	२९
क.	०२	०३	३६	१५	०८	४६	२३	५५	५५
वि.	४२	००	११	४७	२९	२९	०६	२७	२७
ग	५७	८०७	३०	१२०	१३	५१	०४	३	३
ति	४४	१३	३३	२९	०३	४८	५२	११	११
नक्षत्र	कृत्तिका ३	धनिष्ठा २	आश्ले. २	भरणी ३	मृ. ३	रेवती १	उभा. १	पूभा. ३	उफा. १

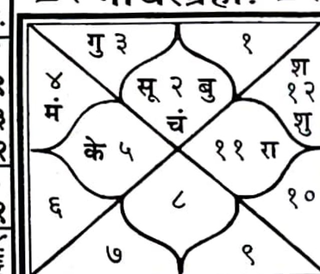
♣ वृषभ संक्रान्ति फलम् – वापी कूप संभागीय ♣

ज्येष्ठ कृष्ण पक्षे २ बुधे वृषभेऽर्कः प्र.वा. ४ न. ४ अस्य पुण्यकालः परदिने गुरूवासरे सूर्योदय वेलातः पुण्यप्रदः। वार नाम मंदाकिनी–राजनेता, दलपति, सचिव, राजपत्रित अधिकारी, नीति निर्देशक, अधीक्षक हेतु मनोत्साह वर्धक सुखद। नक्षत्र नाम राक्षसी–आदिवासी जन, सुदूर जंगल–पर्वत निवासी, जनजाति–अनुसूचित, अल्पसंख्यक वर्ग हेतु सुखद। रात्रि २ या.व्या.हिंसाशील, आतंक प्रसारक, देशद्रोही, विस्फोटककर्ता, तमोगुण प्रधान वर्ग हेतु कष्टद प्रभारक, पश्चिमे गमन, वायव्यां दृष्टिः, संक्रान्ति वास निवास, मालीगृहे, गर करणे, वाहन–गज, उपवाहन–खर, रक्तवस्त्र, धनुषायुध, लौहपात्र, पयभक्षण, गौरोचन लेपन, पशुजाति, बिल्व पुष्प, कुक्कुट भूषण, श्वेत कंचुकी, प्रोढावस्था, उपविष्ट, मुहूर्त–१५, धान्य–गल्ला उन्नत भाव, हाथी, गधा, लाल वस्त्र, लोहा–इस्पात, सिनेमा, सुगंधित द्रव्य, सफेद रंग वस्तु, चांवल, सूत–कपास, पोस्ता, लहसुन, मिर्च, मसूर, हल्दी, कलपूर्जे, मशीनरी, सोना, चांदी, अश्वगंध, कंदमूल पदार्थ, कार्य व्यवसाय लाभद भावी उन्नत भाव गति। शुक्रोदय पूर्वे, वत्स उत्तरे, राहु पश्चिमे, मूल पाताले।

अ.८ ज्येष्ठ कृष्णे ३० भौमे इष्ट ०।०

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	१	१	३	१	२	११	११	१०	४
अं.	११	१०	२४	०७	०२	२६	०५	२९	२९
क.	४६	११	१२	५३	४०	०१	५५	३३	३३
वि.	२७	०४	४६	२७	३७	०८	३४	१२	१२
ग	५७	१००	३१	१३०	१३	५५	०४	३	३
ति	३७	२२	२७	३६	१८	३७	२०	११	११
नक्षत्र	रोहिणी १	रोहिणी १	आश्ले. ३	कृत्तिका ४	मृ. ३	रेवती ३	उभा. १	पूभा. ३	उफा. १

卐 निर्णयसागरीय गोचरग्रहाः 卐



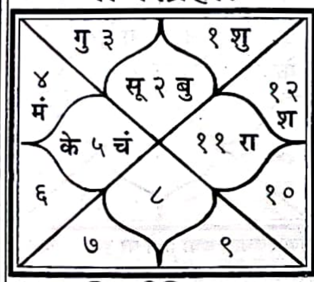
● **गर्भस्थ जीव प्रश्न** ● गर्भ जीव पुत्र या कन्या इस प्रश्नफल हेतु प्रश्न दिन की तिथि वार, नक्षत्र, योग एवं गर्भिणी नामाक्षर संख्या जोड़कर ७ का भाग देवें। शेष २-४-६ रहें तो कन्या अथवा १-३-५-७ शेष रहते पुत्र जन्म। विशेष–कृष्ण पक्ष में तिथि संख्या १५ से ३० तक की लेना चाहिए। एवमेव सूत्र यह भी कि शनि गोचर में प्रश्न दिवस पर १-३-५-७-११ विषम राशि गत गर्भ स्थित होते पुत्र समझें तथा यदि सम राशि २-४-६-८-१०-१२ में हो तो गर्भस्थ कन्या समझें। अन्य भी गणना नियामक यह कि गर्भिणी के नाम अक्षर को ३ गुणित करें, इसमें २ और जोड़ें तथा वर्तमान तिथि मिलाकर ८ का भाग देवें। शेष अंक सम अर्थात् २-४-६-० बचें तो कन्या और विषम १-३-५-७ आदि से पुत्र प्रजनन समझें। ● **युगोऽयं अर्थस्य–व्यवस्था सूत्रावली** ● यो नरः जन्मपर्यन्तं स्वयोदर पूरकः। न करोति हरेः पूजां स नरो गो वृषस्मृतः ॥ दानं भोगो नाशस्तिस्रो गतयो भवन्ति वित्तस्य। यो न ददाति न भुंक्ते तस्य तृतीया गतिर्भवति ॥ न देवाय न विप्राय न बन्धुभ्यो न चात्मने। कृपणस्य धनं याति वन्हितस्कर पार्थिवैः ॥ अधमाः धनमिच्छन्ति धनमानौ तु मध्यमा। उत्तमा मान मिछन्ति मानो हि महतां धनम् ॥

ज्येष्ठ शुक्ल पक्षः संवत् २०८२ रा.शाकः १९४७																		दिन मान		स्टेण्डर्ड टाईम सूर्योदय		सूर्यास्त		विविध तारीखें			चन्द्रराशि प्रवेश काल		सूर्योदय कालिक सूर्य स्पष्ट		अंग्रेजी ता.	✦मई–जून सन् २०२५ ई. ग्रीष्म ऋतुः रवि उत्तरायणे–उत्तरगोले✦
रवियोगाः	तिथि	वार	घटी	पल	घं.	मि.	नक्षत्र	घटी	पल	घं.	मि.	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	घटी	पल	घं.	मि.	घं.	मि.	बंग	मुस	भा	रा.घटी पल	घं.मि.	रा.अ.क.वि.	गति		♣सम्प्रति भद्रादि ग्रह – नक्षत्रचार समय भार.स्टे.टा.घण्टा–मिनटों में ही अंकित किये हैं♣
क्षय	१	मं	५८	०२	२९	०३	0	०	०	०	०	0	०	०	0	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0		० ०	०	०	
अमृत	२	बु	५०	१२	२५	५५	मृ	४६	३८	२४	२९	ध्रु	३३	१६	बा	२३	५९	३३	४५	५	५०	७	२०	१५	३०	७	मिथुन ११ २६	१३ ३७	[illegible]	[illegible]	२८	चंद्रदर्शनं सर्वा. ०५ ५० उ. २४ २९ या.
२२।३१ उ.	३	गु	४३	४२	२३	१९	आ	४२	०२	२२	३९	शू	२४	५२	तै	१६	४६	३३	४७	५	५०	७	२१	१६	जि१	८	मिथुन		[illegible]	[illegible]	२९	सर्वा. २२ ३९ उ.रम्भातृतीया महाराणा प्रताप ज.जिल्हजमास१ २मुस.
२१।२१ या.	४	शु	३८	५४	२१	२३	पुन	३९	०९	२१	२९	गं	१७	४७	व	११	०४	३३	४९	५	५०	७	२१	१७	२	९	कर्क २४ ४२	१५ ४२	[illegible]	[illegible]	३०	भ. १० १५ उ. २१ २३ या.सर्वा. २१ २९ या.
२१।०७ उ.	५	श	३६	०६	२०	१६	पु	३८	१५	२१	०७	वृ	१२	१५	ब	०७	१४	३३	५०	५	४९	७	२२	१८	३	१०	कर्क		[illegible]	[illegible]	३१	श्रुति पंचमी जैन अश्विन्यां मेषे शुक्रः ११ ३२
२१।३७ या.	६	र	३५	२७	२०	००	श्ले	३९	२८	२१	३७	ध्रु	०८	२५	कौ	०५	३०	३३	५२	५	४९	७	२२	१९	४	११	सिंह ३९ २८	२१ ३७	[illegible]	[illegible]	जू१	अरण्य षष्ठी विंध्यवासिनी पूजा जून मास ६ता. ३० प्रा.सांई टेऊँराम पुण्यः
ध्वांक्ष	७	चं	३६	५६	२०	३५	म	४२	४६	२२	५६	व्या	०६	१८	ग	०५	५६	३३	५३	५	४९	७	२३	२०	५	१२	सिंह		[illegible]	[illegible]	२	भ. २० ३५ उ.A श्रीरामेश्वर प्रतिष्ठा आचार्य श्रीरामशर्मा पुण्य श्री शांति विजय म.सा.पुण्य जैन
२४।५९ उ.	८	मं	४०	२०	२१	५७	पूफा	४७	५४	२४	५९	ह	०५	४८	वि	०८	२५	३३	५५	५	४९	७	२३	२१	६	१३	सिंह		[illegible]	[illegible]	३	भ. ०९ ११ या.मृगशिरायां बुधः ०६ ५५ B मघायां सिंहे भौमः २६ ०८ मिथुने बुधः ०९ २६
पूर्णरवि	९	बु	४५	१५	२३	५५	उफा	५४	२७	२७	३६	व	०६	३९	बा	१२	३८	३३	५६	५	४९	७	२३	२२	७	१४	कन्या ०४ २६	०७ ३५	[illegible]	[illegible]	४	सर्वा. २७ ३६ उ. २९ ४९ या.श्रीमहेश नवमी माहेश्वरीवंशीय
पूर्णरवि	१०	गु	५१	०९	२६	१६	ह	६०	००	-	-	सि	०८	३२	तै	१८	०७	३३	५८	५	४९	७	२४	२३	८	१५	कन्या		[illegible]	[illegible]	५	श्रीगंगा दशहरा विश्व पर्यावरण दि.सघना वृक्षाः संकल्पे देशेग्रामे बटुक भैरव ज.A
०६।३४ या.	११	शु	५७	३०	२८	४९	ह	०१	५३	०६	३४	व्य	११	००	व	२४	१८	३३	५९	५	४९	७	२४	२४	९	१६	तुला ३५ ४५	२० ०७	[illegible]	[illegible]	६	भ. १५ ३२ उ. २८ ४९ या.निर्जला ११ व्रतं स्मा.वै.गुरू अचलदासपुण्य जोधपुर B
काण	१२	श	६०	००	-	-	चि	०९	३८	०९	४०	व	१३	४१	ब	३०	३९	३४	००	५	४९	७	२५	२५	१०	१७	तुला		[illegible]	[illegible]	७	सर्वा. ०९ ४० उ. २९ ४९ या.निर्जला ११ व्रतं निम्बार्क बकरीद
प्रदोष	१२	र	०३	४५	०७	१८	स्वा	१७	१४	१२	४२	प	१६	१३	बा	०३	४५	३४	०१	५	४९	७	२५	२६	११	१८	तुला		[illegible]	[illegible]	८	मृगशिरायां रविः ०७ १८ प्रदोषव्रतं वट सावित्री व्रत प्रा.बुधोदय प. २० २३
१५।३१ उ.	१३	चं	०९	३०	०९	३७	वि	२४	१७	१५	३१	शि	१८	२०	तै	०९	३०	३४	०२	५	४९	७	२६	२७	१२	१९	वृश्चि. ०७ ३५	०८ ५१	[illegible]	[illegible]	९	सर्वा. १५ ३१ उ. २९ ४९ या.आर्द्रायां बुधः १४ ५६
१८।०२ या.	१४	मं	१४	२९	११	३६	अ	३०	३३	१८	०२	सि	१९	५०	व	१४	२९	३४	०३	५	४९	७	२६	२८	१३	२०	वृश्चिक		[illegible]	[illegible]	१०	भ. ११ ३६ उ. २४ २८ या.पूर्णिमा व्रतं वटसावित्री व्रत पूर्णता
पूर्णिमा	१५	बु	१८	३३	१३	१४	ज्ये	३५	५५	२०	११	सा	२०	३७	ब	१८	३३	३४	०४	५	४९	७	२६	२९	१४	२१	धनु ३५ ५५	२० ११	[illegible]	[illegible]	११	पूर्णिमा पुण्य श्रीकबीर ज.श्रुति पूर्णिमा पर्व जैन





卐 निर्णयसागरीय गोचरग्रहाः 卐



अ. ९ ज्येष्ठ शुक्ले ८ भौमे इष्ट ०।०

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	१	४	३	१	२	०	११	१०	४
अं.	१८	१६	२७	२३	०४	०२	०६	२९	२९
क.	२९	५३	५५	१३	१४	३९	२४	१०	१०
वि.	१७	३४	२०	५२	१८	३७	१४	५७	५७
ग	५७	७३१	३२	१३०	१३	५८	०३	३	३
ति	२८	५२	१४	११	२९	३३	४६	११	११
नक्षत्र	रोहिणी ३	पूफा. २	आश्ले. ४	रोहिणी ४	मृ. ४	अश्वि. १	उभा. १	पूभा. ३	उफा. १

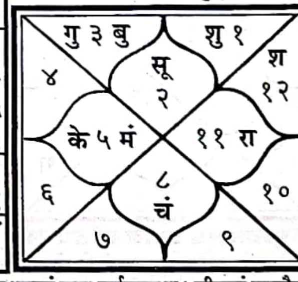
♣ ग्रह गोचरीय फलश्रुतिः ♣

कृत्तिका रवि, मेघ गाज यदि संग। श्रीवृद्धि सुख की आमना, निर्णय शकुन प्रसंग॥ रोहिणी पथ रविचार का, तपन ताप सुखनंद। मेघ गाज वर्षा यदि, सुख सुभिक्ष हो मंद॥ शेष चरण वर्षागति, शकुन सूत्र सुख रंग। महिमा ऋतु विधान की, वाक्य भवानी संग॥ ज्येष्ठ सुदी में आर्द्रा से, चित्रा नखत विचार। मेघ गाज से आपदा, भावी कष्ट प्रहार॥ रोग शोक व्याधिगति, संक्रामक अतिचार। स्वास्थ्य तंत्र में न्यूनता, पांच रूप भौमवार॥ आठें चौदस जेठ बदी, चालै दक्षिण वाम। वर्षा ऋतु में, समझ लो उत्तम जल बरसाय॥ ज्येष्ठ कृष्ण प्रतिपदा वार मंगलवार। मनुष्यों में जानिए, विभिन्न व्याधि विचार॥ षड़ाष्टकी राहु भौम की, एवं गुरू गतिचार। व्यय विशेष संसार में राजकाज प्रतिभार॥

अ. १० ज्येष्ठ शुक्ले १५ बुधे इष्ट ०।०

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	१	७	४	२	२	०	११	१०	४
अं.	२६	२२	०२	०९	०६	१०	०६	२८	२८
क.	०८	३८	१६	५३	०२	३७	५२	४५	४५
वि.	३१	५७	०४	०२	४२	४०	००	३१	३१
ग	५७	७३८	३३	११६	१३	६१	०३	३	३
ति	२०	३७	०२	१५	३७	१२	०५	११	११
नक्षत्र	मृ. १	ज्येष्ठा २	मघा १	आर्द्रा १	मृ. ४	अश्वि. ४	उभा. २	पूभा. ३	उफा. १

卐 निर्णयसागरीय गोचरग्रहाः 卐



● **सुभाषित नीति वचन** ● **यजमान** ● **आशीर्वाद वचन सूत्र** ● लक्ष्मीस्ते पंकजाक्षी निवसतु वदे भारती कण्ठदेशे। वर्धन्तां बन्धुवर्गाः प्रबलरिपुगणा यान्तु पाताल मूले॥ देशे देशे च कीर्त्तिः प्रसरतु भवतां कुन्द पूर्णन्दुशुभ्रा। जीवत्वं पुत्रपौत्रः सकलगुणयुतैर्भुज्यसे राज्यलक्ष्मीः॥ नास्ति कामसमो व्याधिर्नास्ति मोहसमो रिपुः। नास्ति कोपसमो वन्हिर्नास्ति ज्ञानात्परं सुखम्॥ निर्गुणस्य हतं रूप दुःशीलस्य हतं कुलम्। असिद्धस्य हता विद्या अभोगेन हतं धनम्॥ नरत्वं दुर्लभं लोके विद्या तत्र सुदुर्लभा। कवित्वं दुर्लभं तत्र शक्तिस्तत्र सुदुर्लभा॥ ● **सुभाषित नीति वचन सूत्र** ● यदि सन्ति गुणाः पुसां विकसन्त्येव ते स्वयम्। न हि कस्तूरिकामोदः शपथेन विभाव्यते॥ अनन्तशास्त्रं बहुला च विद्या अल्पश्च कालो बहुविघ्नता च। यत्सारभूतं तदुपासनीयं हंसो यथा क्षीरमिवाम्बुमध्यात्। धनहीनो न हीनश्च धनिकः स सुनिश्चयः। विद्यारत्नेन यो हीनः सर्ववस्तुषु॥

आषाढ़ कृष्ण पक्षः संवत् २०८२ रा.शाकः १९४७

✦जून सन् २०२५ ई. ग्रीष्म–वर्षा ऋतुः रवि उत्तरा.–दक्षिणायणे–उत्तरगोले✦

♣ सम्प्रति भद्रादि ग्रह – नक्षत्रचार समय भार.स्टे.टा.घण्टा–मिनटों में ही अंकित किये हैं ♣

रवियोगाः	तिथि	वार	घटी	पल	घं.	मि.	नक्षत्र	घटी	पल	घं.	मि.	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	दिनमान पल	स्टेण्डर्ड टाईम सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	विविध तारीखें बंग	मुस	भा	चन्द्रराशि प्रवेश काल रा.घटी पल	घं.मि.	सूर्योदय कालिक सूर्य स्पष्ट रा.अ.क.वि.	गति	अंग्रेजी ता.	
धूम्र	१	गु	२९	३९	१४	२८	मू	४०	२१	२१	५७	शु	२०	४०	कौ	२१	३९	३४	०५	५	४९	७	२७	३०	१५	२२	धनु		[illegible]	[illegible]	१२	अस्तं गुरूः प. २३/२९ ★
प्रवर्ध	२	शु	२३	४६	१५	१९	पूषा	४३	५०	२३	२१	शु	१९	५८	ग	२३	४६	३४	०५	५	४९	७	२७	३१	१६	२३	मकर ५९/३४	२९/३८	[illegible]	[illegible]	१३	भ. २७/३६ उ.आर्द्रायां १ गुरूः २३/२७ भरण्यां शुक्रः २१/१२
चौ.व्रत	३	श	२४	५६	१५	४७	उषा	४६	२३	२४	२२	ब्र	१८	३०	वि	२४	५६	३४	०६	५	४९	७	२७	३२	१७	२४	मकर		[illegible]	[illegible]	१४	भ. १५/४७ या.सर्वा. २४/२२ उ. २९/४९ या.आषाढ़ी चतुर्थी व्रतं चंद्रोदय रात्रि २२/१९
गद्	४	र	२५	०७	१५	५२	श्र	४७	५७	२५	००	ऐं	१६	१६	बा	२५	०७	३४	०७	५	४९	७	२८	आ१	१८	२५	मकर		[illegible]	[illegible]	१५	मिथुनेऽर्कः ०६/४४ बं.आषाढ मास प्रा.
२५।१४ उ.	५	चं	२४	१८	१५	३२	ध	४८	३२	२५	१४	वै	१३	१४	तै	२४	१८	३४	०७	५	४९	७	२८	२	१९	२६	कुंभ १८/२२	१३/१०	[illegible]	[illegible]	१६	पंचक १३/१० उ.पुनर्वसौ बुधः १७/०२
२५।० २या.	६	मं	२२	२५	१४	४७	श	४८	०१	२५	०२	वि	०९	२२	व	२२	२५	३४	०७	५	४९	७	२८	३	२०	२७	कुंभ		[illegible]	[illegible]	१७	भ. १४/४७ उ. २६/१५ या.
पद्म	७	बु	१९	२५	१३	३५	पूभा	४६	२४	२४	२३	प्री	०४/५८	३७/५७	ब	१९	२५	३४	०८	५	४९	७	२८	४	२१	२८	मीन ३१/५५	१८/३५	[illegible]	[illegible]	१८	रानी झांसी पुण्यः
छत्र	८	गु	१५	१६	११	५६	उभा	४३	३९	२३	१७	सौ	५२	२१	कौ	१५	१६	३४	०८	५	५०	७	२९	५	२२	२९	मीन		[illegible]	[illegible]	१९	सर्वा. २३/१७ उ. A विश्व योग दि.
श्रीवत्स	९	शु	१०	०१	०९	५०	रे	३९	४८	२१	४५	शो	४४	५२	ग	१०	०१	३४	०८	५	५०	७	२९	६	२३	३०	मेष ३९/४८	२१/४५	[illegible]	[illegible]	२०	भ. २०/३७ उ.सर्वा. २९/५० या. अमृत ०५/५० उ. २१/४५ या.पंचक २१/४५ या.
सौम्य	१०	श	०३	४३	०७	१९	अ	३५	०१	१९	५०	अ	३६	३८	वि	०३	४३	३४	०८	५	५०	७	२९	७	२४	३१	मेष		[illegible]	[illegible]	२१	भ. ०७/१९ या. योगिनी ११ व्रतं स्मार्त कर्के भानुः ०८/१२ रवि दक्षिणायणे वर्षा ऋतु प्रा. A
क्षय	११	श	५६	३५	२८	२८	0	०	०	०	०	0	०	०	0	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0		० ०	०	०	B संग चं.चं.स्त्री.पु.वाहन मूषक वर्षा मध्यम आम–केरी त्याग नियम प्रा.जैन
कालदंड	१२	र	४८	५१	२५	२३	भ	२९	३१	१७	३९	सु	२७	४८	कौ	२२	४६	३४	०८	५	५०	७	२९	८	२५	आ१	वृषभ ४३/०४	२३/०४	[illegible]	[illegible]	२२	योगिनी ११ व्रतं वै.निम्बा.आर्द्रायां रविः ०६/२० रा.आषाढ मास प्रा.कर्के बुधः २१/३१ B
प्रदोष	१३	चं	४०	४९	२२	१०	कृ	२३	३६	१५	१७	धृ	१८	३७	ग	१४	५१	३४	०८	५	५०	७	३०	९	२६	२	वृषभ		[illegible]	[illegible]	२३	भ. २२/१० उ.सर्वा. १५/१७ उ. २९/५१ या.सोम प्रदोष व्रतं मास शिवरात्रि
मातंग	१४	मं	३२	५३	१९	००	रो	१७	३९	१२	५४	शू	०९	२२	वि	०६	४९	३४	०८	५	५१	७	३०	१०	२७	३	मिथुन ४४/४७	२३/४६	[illegible]	[illegible]	२४	भ. ०८/३४ या.पुष्ये बुधः २९/०२
अमावस	३०	बु	२५	२७	१६	०२	मृ	१२	०४	१०	४१	गं	००/५२	२३/००	ना	२५	२७	३४	०७	५	५१	७	३०	११	२८	४	मिथुन		[illegible]	[illegible]	२५	सर्वा. ०५/५१ उ. १०/४१ या. देवपितृकार्ये अमावस्या







卐 निर्णयसागरीय गोचरग्रहाः 卐



अ. ११ आषाढ़ कृष्णे ८ गुरौ इष्ट ०।०

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	२	११	४	२	२	०	११	१०	४
अं.	०३	०६	०६	२४	०७	१८	०७	२८	२८
क.	४६	२८	४२	१७	५१	५४	१४	२०	२०
वि.	५८	४१	५४	१४	५९	५७	०४	०५	०५
ग	५७	८४१	३३	९७	१३	६३	०२	३	३
ति	१७	५२	४६	०९	४२	१८	२१	११	११
नक्षत्र	मृ. ४	उभा. १	मघा ३	पु. २	आर्द्रा १	भरणी २	उभा. २	पूभा. ३	उफा. १

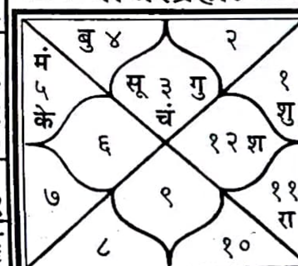
♣ मिथुन संक्रान्तिफलम् – रण संभागीय ♣

आषाढ कृष्ण पक्षे ४ सूर्ये मिथुनऽर्कः प्र.वा.५ न.५ अस्य पुण्यकालः अद्यैव रविवासरे सूर्योदय वेलातः पुण्यप्रदः। वार नाम घोरा–सुदूर जंगल–पर्वत निवासी, आदिवासी, निर्धन, वयोवृद्ध, अनुसूचित जनजाति हेतु शासकीय सुलाभ, नवीन योजना। नक्षत्र नाम महोदरी–तस्कर–ठग, चौर्य कर्मशील, लोभी–प्रलोभी, संग्रहशील, स्टाकिस्ट वर्ग हेतु मनोत्साह वर्धक–सुखद। दिवा १ या.व्या.शिक्षक, लेखक, व्याख्याता, राष्ट्रीय विकास, सेनापति, आरक्षी नायक, सुरक्षा अधिकारी, गुप्तचर विभाग पद विशेष पर प्रभारक कष्टद। दक्षिणे गमन, नैऋत्यां दृष्टिः। संक्रान्ति वास निवास शाह वैश्य गृहे, बालव करणे, वाहन व्याघ्र, उपवाहन अश्व, पीतवस्त्र, गदायुध, रजतपात्र, पायस भक्षण, कुंकुमलेपन, भूतजाति, जाति पुष्प, कंकण भूषण, पर्ण कंचुकी, कुमार्यावस्था, उपविष्टा, मुहूर्त–३०, धान्य, गल्ला स्थिर समभाव, घोड़ा, सोना, चांदी, चना, तुवर, हल्दी, सरसों, दानामैथी, केसर, चंदन, रोली, चाय, तमाखु, सौंठ, गरम मसाला, सुगंधी पदार्थ उन्नत धारणा। शुक्रोदय पूर्वे, वत्स उत्तरे, राहु पश्चिमे, मूल स्वर्गे।

अ. १२ आषाढ़ कृष्णे ३० बुधे इष्ट ०।०

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	२	२	४	३	२	०	११	१०	४
अं.	०९	०३	१०	०३	०९	२५	०७	२८	२८
क.	३०	४३	०६	२२	१४	१८	२६	०१	०१
वि.	३८	२१	४९	४४	११	०४	४१	००	००
ग	५७	८७१	३४	८२	१३	६४	०१	३	३
ति	१६	४३	१८	०२	४३	३४	४६	११	११
नक्षत्र	आर्द्रा १	मृ. ४	मघा ४	पु. १	आर्द्रा १	भरणी ४	उभा. २	पूभा. ३	उफा. १

卐 निर्णयसागरीय गोचरग्रहाः 卐



● **इन्द्रधनुष दर्शन प्रतिफलम्** ● वायु वेग के सम्पर्क में आयी सूर्य किरणें जो जल के अन्तर्गत प्रविष्ट होती हैं, उससे सात वर्ण वाले धनुष की रचना बनती है। यही इन्द्र धनुष संज्ञा सूचक उपलक्षण रचना। वर्षा होने पर इन्द्र धनुष बने तो वर्षा बन्द होवे तथा पहले हो तो वर्षा करे। पश्चिम दिशा का इन्द्रधनुष वर्षा करे। पूर्व दिशा का इन्द्रधनुष पहले वर्षा नहीं होवे तो वर्षाकारक तथा बरसते दिखे तो वर्षा बन्द होवे। संध्या समय से पूर्व–पहले समय का वर्षा प्रदायक, उत्तर दिशा का अचानक शीघ्र वर्षा सूचक। दक्षिण दिशा का धनुष वर्षा नहीं होवे तो विशेष वर्षा रचना का सूचक। आकाश मध्य भाग का वर्षाकारक तथा शनि–शुक्र–सोम–मंगल–गुरूवार का इन्द्रधनुष दर्शन भावी ४–५ दिनों में वर्षाकारक बनें। सूर्य अस्त के समय पश्चिम दिशा का इन्द्रधनुष वर्षाकारक। **संध्या प्रकाश विषये सूत्र** – दिन तथा रात के सन्धिकाल समय पर २ या ३ घड़ी अर्थात् १ घन्टा समय पर्यन्त तारा दर्शन स्थिति काल को संध्याकाल गणितागत मान्य किया है। प्रातःकाल एवं सायंकालिक संध्या की मेघ रचना प्रवर्षण कारक बनती है।

आषाढ़ शुक्ल पक्षः संवत् २०८२ रा.शाकः १९४७

✦ जून–जुलाई सन् २०२५ ई. वर्षा ऋतुः रवि दक्षिणायणे–उत्तरगोले ✦

♣ सम्प्रति भद्रादि ग्रह – नक्षत्रचार समय भार.स्टे.टा. घण्टा–मिनटों में ही अंकित किये हैं ♣

रवियोगाः	तिथि	वार	घटी	पल	घं.	मि.	नक्षत्र	घटी	पल	घं.	मि.	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	दिनमान पल	स्टेण्डर्ड टाईम सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	विविध तारीखें बंग	मुस	भा	चन्द्रराशि प्रवेश काल रा. घटी पल	घं.मि.	सूर्योदय कालिक सूर्य स्पष्ट रा.अ.क.वि.	गति	अंग्रेजी ता.	सम्प्रति भद्रादि ग्रह – नक्षत्रचार
काण	१	गु	१८	५५	१३	२५	आ	०७	१८	०८	४७	ध्रु	४४	३२	ब	१८	५५	३४	०७	५	५१	७	३०	१२	२९	५	कर्क ४९/३१	२५/४०	२ १० २७ ५४	५७ १६	२६	चंद्रदर्शन सर्वा. ०८/४७ उ.गुप्त नवरात्रि विधान प्रा. कृतिकायां शुक्रः ११/१६
लुंबक	२	शु	१३	४१	११	२०	पुन	०३	४६	०७	२२	व्या	३८	१६	कौ	१३	४१	३४	०६	५	५२	७	३०	१३	मो१	६	कर्क		२ ११ २५ १०	५७ १६	२७	सर्वा. ०७/२२ या.जगन्नाथ रथयात्रा पुरी A
०६।३६ उ.	३	श	१०	०७	०९	५५	पु	०१	५०	०६	३६	ह	३३	२८	ग	१०	०७	३४	०६	५	५२	७	३०	१४	२	७	कर्क		२ १२ २२ २६	५७ १५	२८	भ. २१/२९ उ. A मोहर्रम मास १ हिजरीसाल १४४७ प्रा.
०६।३४ या.	४	र	०८	२७	०९	१५	श्ले	०१	४५	०६	३४	व	३०	१६	वि	०८	२७	३४	०५	५	५२	७	३०	१५	३	८	सिंह ०१/४५	०६/३४	२ १३ १९ ४१	५७ १५	२९	भ. ०९/१५ या.वृषभे शुक्रः १४/०९
०७।२१ उ.	५	चं	०८	५०	०९	२४	म	०३	४१	०७	२१	सि	२८	४०	बा	०८	५०	३४	०४	५	५३	७	३०	१६	४	९	सिंह		२ १४ १६ ५५	५७ १४	३०	स्कंदकुमार षष्ठी सांईटेऊँराम जन्म पूफायां भौमः २०/१६
०८।५४ या.	६	मं	११	११	१०	२१	पूफा	०७	३३	०८	५४	व्य	२८	३४	तै	११	११	३४	०४	५	५३	७	३०	१७	५	१०	कन्या २३/४७	१५/२४	२ १५ १४ १०	५७ १४	जु१	विवस्वत सप्तमी महावीर स्वामी गर्भ कल्याणक जैन डॉक्टर दि.जुलाई मास ७ ता.३१ प्रा.
प्रवर्ध	७	बु	१५	१४	११	५९	उफा	१३	०५	११	०७	व	२९	४३	व	१५	१४	३४	०३	५	५३	७	३०	१८	६	११	कन्या		२ १६ ११ २३	५७ १४	२	भ. ११/५९ उ. २५/०० या.सर्वा. ११/०७ उ. २९/५४ या.चौमासी अष्टान्हिका प्रा.जैन B
१३।५१ उ.	८	गु	२०	३४	१४	०७	ह	१९	५३	१३	५१	प	३१	४५	ब	२०	३४	३४	०२	५	५४	७	३०	१९	७	१२	तुला ५३/३४	२७/१९	२ १७ ०८ ३७	५७ १३	३	B आचार्य विद्याचंद्रसूरी पुण्य त्रिस्तु.जैन
पूर्णरवि	९	शु	२६	३६	१६	३२	चि	२७	२०	१६	५०	शि	३४	१३	कौ	२६	३६	३४	०१	५	५४	७	३०	२०	८	१३	तुला		२ १८ ०५ ५०	५७ १३	४	भड़ली नवमी विवेकानंद पुण्य
१९।५१ या. २१।४८ उ.	१०	श	३२	४३	१८	५९	स्वा	३४	५३	१९	५१	सि	३६	४३	ग	३२	४३	३४	००	५	५४	७	३०	२१	९	१४	तुला		२ १९ ०३ ०३	५७ १३	५	सर्वा. ०५/५४ उ. १९/५१ या. ★ उदयं गुरूः पू. २९/२९ C
२२।४२ या.	११	र	३८	२२	२१	१६	वि	४१	५८	२२	४२	सा	३८	५१	व	०५	३७	३३	५८	५	५५	७	३०	२२	१०	१५	वृश्चिक २५/१५	१६/०१	२ २० ०० १६	५७ १३	६	भ. ०८/१० उ. २१/१६ या.देवशयनी ११ व्रतं सर्वे.चातुर्मास प्रा.विष्णु शयनोत्सवः D
मानस	१२	चं	४३	०९	२३	११	अ	४८	११	२५	१२	शु	४०	१८	ब	१०	५३	३३	५७	५	५५	७	३०	२३	११	१६	वृश्चिक		२ २० ५७ २९	५७ १३	७	सर्वा. ०५/५५ उ. २५/१२ या.
२७।१५ उ.	१३	मं	४६	४८	२४	३९	ज्ये	५३	१९	२७	१५	शु	४०	५३	कौ	१५	०७	३३	५६	५	५६	७	३०	२४	१२	१७	धनु ५३/१९	२७/१५	२ २१ ५४ ४१	५७ १३	८	भौमप्रदोष व्रतं कल्याण विजय गणिवर्य पुण्य जैन रोहिण्यां शुक्रः १६/२४
२८।५० या.	१४	बु	४९	१४	२५	३७	मू	५७	१५	२८	५०	ब्र	४०	३२	ग	१८	१०	३३	५४	५	५६	७	३०	२५	१३	१८	धनु		२ २२ ५१ ५४	५७ १३	९	भ. २५/३७ उ.चौमासी अष्टान्हिका पूर्ण जैन
पूर्णिमा	१५	गु	५०	२६	२६	०७	पूषा	५९	५९	२९	५६	ऐं	३९	१२	वि	१९	५८	३३	५३	५	५६	७	३०	२६	१४	१९	धनु		२ २३ ४९ ०६	५७ १३	१०	भ. १३/५५ या.गुरू पूर्णिमा व्रतं शिव शयनोत्सवः चातुर्मास प्रा.जैन E





卐 निर्णयसागरीय गोचरग्रहाः 卐



अ. १३ आषाढ़ शुक्ले ८ गुरौ इष्ट ०।०

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	२	५	४	३	२	१	११	१०	४
अं.	१७	१९	१४	१३	११	०३	०७	२७	२७
क.	०८	२३	४३	०२	०३	५९	३८	३५	३५
वि.	३७	०६	२८	२७	४०	३६	०१	३३	३३
ग	५७	७१३	३४	५९	१३	६५	००	३	३
ति	१३	१६	५६	२२	३९	५७	५८	११	११
नक्षत्र	आर्द्रा ४	हस्त ३	पूफा. १	पुष्य ३	आर्द्रा २	कृतिका ३	उभा. २	पूभा. ३	उफा. १

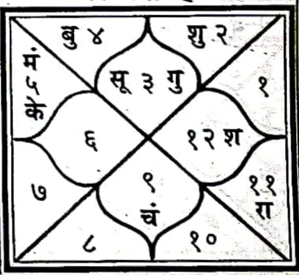
♣ ग्रह गोचरीय फलश्रुतिः ♣

चतुर्दशी आषाढ़ की, रोहिणी संग प्रयोग। आरक्षी, सेनापति, कष्टद भार कुयोग॥ आठे नवमी पूर्णिमा, शुक्ल पक्ष आषाढ़। मेघ गर्जना साथ हो, निर्णय सौख्य प्रगाढ़॥ यदि हो निर्मल चंद्रमा, भावी कष्ट प्रहार। मेघ मध्य यदि चंद्रमा, सुख सुभिक्ष संचार॥ लक्षण वायु गर्भ का, वर्षा विषम विचार। आषाढ मास की लक्षणा, निर्णय फलित निहार॥ जल वर्षा मापक गति, वसुधा भारत लक्ष। शकुन पंथ श्रीशास्त्र का, सागर निर्णय कक्ष॥ वत्सर नववर्ष से, पवन वेग नभचार। भावी मेघ वर्षा गति, आषाढ मास उपचार॥ श्री गणेश आर्द्रा रवि, मेघ गाज अधिरंग। निर्णय शकुन शास्त्र का, भावी समय कुरंग॥ आर्द्रा बरसे स्वल्प भी पुनर्वसु भरे तड़ाग। शकुन भवानी शास्त्र का, बहुविध करे प्रयाग॥

अ. १४ आषाढ शुक्ले १५ गुरौ इष्ट ०।०

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	२	८	४	३	२	१	११	१०	४
अं.	२३	१३	१८	१८	१२	११	०७	२७	२७
क.	४९	५५	४९	४६	३८	४४	४२	१३	१३
वि.	०६	०१	३५	५५	५१	२५	४२	१८	१८
ग	५७	७६५	३५	३४	१३	६६	००	३	३
ति	१३	१९	२७	३१	३२	५९	१६	११	११
नक्षत्र	पुन. २	पूषा. १	पूफा. २	आश्ले. १	आर्द्रा. २	रोहिणी १	उभा. ४	पूभा. ३	उफा. १

卐 निर्णयसागरीय गोचरग्रहाः 卐



● **आषाढ़ी पूर्णिमा वायु प्रवाह फल** ● सूर्यास्तकाले पूर्व दिशा का वायु प्रवाह शुभ, आग्नेय कोण का रोगशोक कारक, दक्षिण का राष्ट्रचिंता, नैऋत्य का अल्पवर्षा, पश्चिम का वर्षाकारक, वायव्य का फसल न्यून, उत्तर तथा ईशान का सुभिक्षप्रद पूर्णिमा को वायु प्रवाह, मेघ शुभ, परन्तु वर्षा होना सम। बादल गाज से शीतकाल में मावठा। आषाढ बदी ८ को बादल गाज वर्षा होना भावी चातुर्मास में वर्षा विधायक। तथा आषाढी अमावस्या को मृगशिरा से पूर्वाफाल्गुनी तक ये ७ नक्षत्र सुभिक्षकारक। आषाढ सुदी ४-५ को बिजली गाज होना सम्पूर्ण धान्य उत्पादक गति रचना। आषाढ सुदी ५ को रवि–मंगल–शनिवार होने से कृषि हानि कुयोग तथा शुभ वार होने से सुभिक्ष। आषाढ सुदी ७ की वर्षा भाद्रपद में वर्षा विधायक सुदी नवमी की वर्षा शीतकाल मावठा कारक।

C पुनर्वसौ रविः २९।४८ सं.चं.सू.स्त्री.नपुं.वाहन अश्व वर्षा मध्यम   D जिनदत्त सूरी पुण्यः आश्लेषायां बुधः २९।४४   E कोकिला व्रतं वायु परीक्षा सन्यासी चातुर्मास प्रा.व्यासपीठ पूजा

श्रावण कृष्ण पक्षः संवत् २०८२ रा.शाकः १९४७

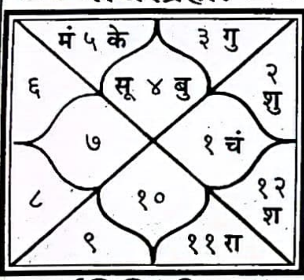
✦जुलाई सन् २०२५ ई. वर्षा ऋतुः रवि दक्षिणायणे–उत्तरगोले✦

रवियोगाः	तिथि	वार	घटी	पल	घं.	मि.	नक्षत्र	घटी	पल	घं.	मि.	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	दिनमान पल	स्टेण्डर्ड टाईम सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	विविध तारीखें बंग	मुस	भा	चन्द्रराशि प्रवेश काल रा.घटी पल	घं.मि.	सूर्योदय कालिक सूर्य स्पष्ट रा.अ.क.वि.	गति	अंग्रेजी ता.	♣ सम्प्रति भद्रादि ग्रह – नक्षत्रचार समय भार.स्टे.टा.घण्टा–मिनटों में ही अंकित किये हैं ♣
आनंद	१	शु	५०	३०	२६	०९	उषा	६०	००	-	-	वै	३६	५८	बा	२०	३६	३३	५१	५	५७	७	२९	२७	१५	२०	मकर १५/२१	१२/०९	२ २४ ४६ १९	५७ १३	११	विश्व जनसंख्या दि.
राक्षस	२	श	४९	३४	२५	४७	उषा	०१	३७	०६	३६	वि	३३	५५	तै	२०	०९	३३	५०	५	५७	७	२९	२८	१६	२१	मकर		२ २५ ४३ ३२	५७ १३	१२	सर्वा. ०६/३६ उ. २९/५८ या.अशून्य शयन व्रतारंभः फल द्वितीया
गद	३	र	४७	४३	२५	०३	श्र	०२	१८	०६	५३	प्री	३०	०७	व	१८	४४	३३	४८	५	५८	७	२९	२९	१७	२२	कुंभ ३२/१९	१८/५३	२ २६ ४० ४५	५७ १४	१३	भ. १३/२८ उ. २५/०३ या.पंचक १८/५३ उ.वक्री शनिः ०९/३८
चौ.व्रत	४	चं	४५	०५	२४	००	ध	०२	०२	०६	४९	आ	२५	३९	ब	१६	२९	३३	४६	५	५८	७	२९	३०	१८	२३	कुंभ		२ २७ ३७ ५८	५७ १४	१४	श्रावणी चतुर्थी व्रतं चंद्रोदय रात्रि २२/१०
२१।४७ उ.	५	मं	४१	४२	२२	४०	श/पूभा	०१/५९	०९/२९	०६/२९	२६/४७	सौ	२०	३४	कौ	१६	२८	३३	४४	५	५९	७	२९	३१	१९	२४	मीन ४४/५८	२३/५८	२ २८ ३५ १२	५७ १५	१५	सर्वा. २९/४७ उ. २९/५९ या.नागपंचमी मरूस्थली बंगालेऽपि
२८।५० या.	६	बु	३७	३८	२१	०२	उभा	५७	०८	२८	५०	शो	१४	५५	ग	०९	४४	३३	४३	५	५९	७	२८	श्रा१	२०	२५	मीन		२ २९ ३२ २७	५७ १५	१६	भ. २१/०२ उ.कर्केऽर्कः १७/३२ बं.श्रावण मास प्रा.
मित्र	७	गु	३२	५५	१९	१०	रे	५४	०९	२७	३९	अ	०८	४३	वि	०५	२०	३३	४१	६	००	७	२८	२	२१	२६	मेष ५४/०९	२७/३९	३ ०० २९ ४२	५७ १६	१७	भ. ०८/०८ या.सर्वा. ०६/०० उ.पंचक २७/३९ या.
वज्र	८	शु	२७	३५	१७	०२	अ	५०	३५	२६	१४	सु	०२/५४	००/५०	बा	००	१९	३३	३९	६	००	७	२८	३	२२	२७	मेष		३ ०१ २६ ५८	५७ १७	१८	सर्वा. २६/१४ या.वक्री बुधः १०/१४ बुधास्त प. २०/२८
ध्वांक्ष	९	श	२१	४५	१४	४३	भ	४६	३२	२४	३८	शू	४७	१६	ग	२१	४५	३३	३६	६	०१	७	२७	४	२३	२८	मेष		३ ०२ २४ १५	५७ १८	१९	भ. २५/२९ उ.पुष्ये रविः २९/२२ सं.चं.चं.स्त्री.पु.वाहन चातक वर्षा श्रेष्ठ
धूम्र	१०	र	१५	३१	१२	१४	कृ	४२	११	२२	५३	गं	३९	२७	वि	१५	३१	३३	३४	६	०१	७	२७	५	२४	२९	वृषभ ००/२७	०६/१२	३ ०३ २१ ३३	५७ १८	२०	भ. १२/१४ या.मृगशिरायां शुक्रः १२/५५ पूभायां २ राहुः पूफायां ४ केतुः १४/५१
ए.व्रत	११	चं	०९	०५	०९	३९	रो	३७	४४	२१	०७	वृ	३१	३२	बा	०९	०५	३३	३२	६	०२	७	२६	६	२५	३०	वृषभ		३ ०४ १८ ५१	५७ १९	२१	सर्वा. ०६/०२ उ. ३०/०२ या.अमृत २१/०७ उ. ३०/०२ या.कामदा ११ व्रतं सर्वे.
प्रदोष	१२	मं	०२	४०	०७	०६	मृ	३३	२७	१९	२५	ध्रु	२३	४५	तै	०२	४०	३३	३०	६	०२	७	२६	७	२६	३१	मिथुन ०५/३२	०८/१५	३ ०५ १६ १०	५७ २०	२२	भ. २८/४० उ.भौम प्रदोष व्रतं सिंहे भानुः १८/५९
क्षय	१३	मं	५६	३५	२८	४०	0	०	०	०	०	0	०	०	0	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0		० ०	०	०	A रा.श्रावण मास प्रा.उफायां भौमः ०८/३५
मूसल	१४	बु	५१	०७	२६	२९	आ	२९	३९	१७	५४	व्या	१६	१८	वि	२३	४४	३३	२७	६	०३	७	२६	८	२७	श्रा१	मिथुन		३ ०६ १३ २१	५७ २१	२३	भ. १५/३२ या.श्रीतिलक एवं आजाद ज.मास शिवरात्रि A
अमावस	३०	गु	४६	३५	२४	४१	पुन	२६	४२	१६	४४	ह	०९	२८	च	१८	४२	३३	२५	६	०३	७	२५	९	२८	२	कर्क १२/२०	१०/५९	३ ०७ १० ५०	५७ २१	२४	सर्वा. ०६/०३ उ. ३०/०४ या.अमृत १६/४४ उ. ३०/०४ या.गुरू पुष्य १६/४४ उ. ३०/०४ या.देवपितृ हरियाली अमा.





निर्णयसागरीय गोचरग्रहाः



अ.१५ श्रावण कृष्णे ८ शुक्रे इष्ट ०।०

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	३	०	४	३	२	१	११	१०	४
अं.	०१	०१	२३	२१	१४	२०	०७	२६	२६
क.	२६	२२	३५	२१	२६	४४	४१	४७	४७
वि.	५८	५२	१३	३३	२९	०८	५९	५१	५१
ग	५७	८५१	३६	०१	१३	६८	००	३	३
ति	१७	३८	०२	३५ व	२१	०३	३३ व	११	११
नक्षत्र	पुन. ४	अश्वि. १	पूफा. ४	आश्ले. २	आर्द्रा ३	रोहिणी ४	उभा. २	पूभा. ३	पूफा. १

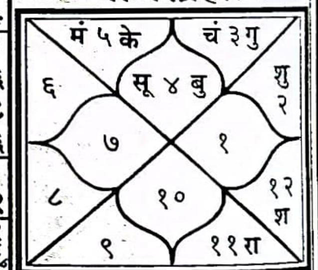
♣ कर्क संक्रान्ति फलम् – वापी कूप संभागीय ♣

श्रावण कृष्ण पक्षे ६ बुधे कर्केऽर्कः प्र.वा.४ न.५ अस्य पुण्यकालः अद्यैव बुधवासरे सूर्योदय वेलातः पुण्यप्रदः। वार नाम मंदाकिनी–राजनेता, दलपति, सचिव, राजपत्रित अधिकारी, नीति–निदेशक, अधीक्षक हेतु मनोत्साह वर्धक सुखद। नक्षत्र नाम मंदा–वैज्ञानिक, शोध कार्यकर्ता, विद्वान जगत साहित्यकार, प्राचार्य, ज्ञानप्रदाता हेतु सौख्य कारक। दिवा ४ याम व्यापिनी निर्धन, अल्पसंख्यक तथा जंगल पर्वतवासी, असहाय–वयोवृद्ध वर्ग हेतु कष्टद प्रभारक। पश्चिमे गमन, वायव्यां दृष्टि, संक्रान्ति वास निवास मालीगृहे, वणिज करणे, वाहन–महिष, उपवाहन–उष्ट्र, श्याम वस्त्र, तोमरायुध, खप्पर पात्र, दधिभक्षण, अलक्तलेपन, मृगजाति, अर्कपत्र पुष्प, मणिभूषण, पाडुकंचुकी, प्रगल्भावस्था, उपविष्ट, मुहूर्त–४५, धान्य गल्ला स्थिर समभाव, भेड़–बकरी, ऊँट, काले वस्त्र, दूध, दही, घी, लोहा, इस्पात, मशीनरी–कलपुर्जे, तिल, अफीम, ज़ीरा, अजवाइन, कलौंजी, उड़द, काली मिर्च, विष पदार्थ–रसायन, तरल द्रव्य कार्य व्यवसाय लाभप्रद भावी उन्नत धारणा। शुक्रो दय पूर्वे, वत्स उत्तरे, राहु पश्चिमे, मूल भूमौ।

अ.१६ श्रावण कृष्णे ३० गुरौ इष्ट ०।०

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	३	२	४	३	२	१	११	१०	४
अं.	०७	२७	२७	१९	१५	२७	०७	२६	२६
क.	१०	०७	१२	५९	४६	३४	३७	२८	२८
वि.	५०	२४	२८	५९	०५	१०	१३	४६	४६
ग	५७	८३२	३६	२९	१३	६८	०१	३	३
ति	२१	४८	२८	२९ व	०९	४४	०१ व	११	११
नक्षत्र	पुष्य. २	पुन. ३	उफा. १	आश्ले. १	आर्द्रा ३	मृग. २	उभा. २	पूभा. २	पूफा. १

निर्णयसागरीय गोचरग्रहाः



● **कार्य सिद्धि की समय मर्यादा** ● कार्य कब होगा, ऐसे प्रश्न होने पर प्रश्न दिवस की तिथि, वार, नक्षत्र की संख्या का योग करें तथा योग संख्या में ३ का गुणा करें और ६ और जोड़ें। योगफल में ९ का भाग देवें, १ शेष में पक्ष, २ शेष में मास, ३ शेष में ऋतु, ४ शेष रहते ६ मास, ५ में एक दिन, ६ में १ रात, ७ में ३ घण्टा, ८ में यथा समय में और ९-० शेष बचते शीघ्र कार्य समाधान बनें।

● **अंकप्रश्न प्रतिफलम्** ● पृच्छक के प्रश्न समय पर १०८ संख्या के भीतर कोई अंक कहावे, इस अंक संख्या को १२ से भाग देवें तथा शेष १–७–९ रहे तो विलम्ब से कार्य, ४–५–८–१० बचे तो निष्फल गति, ११ शेष बचे तो सिद्धि ०–२–३–६–१२ शेष रहे तो कार्यसिद्धि योग। ● **चोर स्त्री या पुरूष नपुंसक** ● प्रश्न दिवस पर आर्द्रा से स्वाति तक १० नक्षत्र रहते स्त्री वर्ग चोर विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा नक्षत्र रहते नपुंसक वर्ग तत्व तथा शेष नक्षत्र मूल से रेवती तक तथा अश्विनी से मृगशिरा नक्षत्र के रहते पुरूष वर्ग चोर सज्ञक यह प्रश्न फल विचार उपलक्षण सूचक फलद अनुभव में आये हैं।

श्रावण शुक्ल पक्षः संवत् २०८२ रा.शाकः १९४७

✦जुलाई–अगस्त सन् २०२५ ई. वर्षा ऋतुः रवि दक्षिणायणे–उत्तरगोले✦

♣सम्प्रति भद्रादि ग्रह – नक्षत्रचार समय भार.स्टे.टा.घण्टा–मिनटों में ही अंकित किये हैं♣

रवियोगाः	तिथि	वार	घटी	पल	घं.	मि.	नक्षत्र	घटी	पल	घं.	मि.	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	दिनमान पल	स्टेण्डर्ड टाईम सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	विविध तारीखें बंग	मुस	भा	चन्द्रराशि प्रवेश काल रा.घटी पल	घं.मि.	सूर्योदय कालिक सूर्य स्पष्ट रा.अं.क.वि.	गति	अंग्रेजी ता.	
उत्पात	१	शु	४३	२०	२३	२३	पु	२४	५३	१६	०१	व	०३ ५८	३१ ४०	किं	१४	४६	३३	२३	६	०४	७	२५	१०	२९	३	कर्क		[illegible]	[illegible]	२५	नक्त व्रतारंभ A मिथुन शुक्रः ०८ ५६
मानस	२	श	४१	३६	२२	४२	श्ले	२४	३०	१५	५२	व्य	५५	०४	बा	१२	१५	३३	२०	६	०४	७	२४	११	३०	४	सिंह २४ ३०	१५ ५२	[illegible]	[illegible]	२६	चंद्रदर्शनं सिंजारा श्रीकरपात्री ज.श्री देवपुरी पुण्यः कैलाश सीकर (राज.) A
१६।२३ उ.	३	र	४१	३५	२२	४२	म	२५	४६	१६	२३	व	५२	५१	तै	११	२१	३३	१८	६	०५	७	२४	१२	स१	५	सिंह		[illegible]	[illegible]	२७	स्वर्ण गौरी–हरियाली तीज–मधुश्रवा झूलातीज सफर मास २ मुस.
१७।३६ या.	४	चं	४३	१९	२३	२५	पूफा	२८	४६	१७	३६	प	५२	०१	व	१२	१३	३३	१५	६	०५	७	२३	१३	२	६	कन्या ४४ ४७	२४ ००	[illegible]	[illegible]	२८	भ. १० ५८ उ. २३ २५ या.वरद विनायक दूर्वा चतुर्थी व्रतं B
११।१८ उ.	५	मं	४६	४४	२४	४७	उफा	३३	२५	१९	२८	शि	५२	२७	ब	१४	४९	३३	१२	६	०६	७	२३	१४	३	७	कन्या		[illegible]	[illegible]	२९	नागपंचमी देशाचारीय पुष्ये बुधः १६ २४
२१।५३ या.	६	बु	५१	३०	२६	४२	ह	३९	२७	२१	५३	सि	५३	५५	कौ	१८	५७	३३	१०	६	०६	७	२२	१५	४	८	कन्या		[illegible]	[illegible]	३०	सर्वा. ०६ ०६ उ. २१ ५३ या.वर्ण षष्ठी श्री कल्कि ज.
चर	७	गु	५७	११	२८	५९	चि	४६	२८	२४	४२	सा	५६	०३	ग	२४	१५	३३	०७	६	०७	७	२१	१६	५	९	तुला १२ ५२	११ १५	[illegible]	[illegible]	३१	भ. २८ ५९ उ.श्रीतुलसी ज.शील सप्तमी सिंधु आर्द्रायां शुक्रः २७ ४४
२७।४१ उ.	८	शु	६०	००	-	-	स्वा	५३	५३	२७	४१	शु	५८	२७	वि	३०	११	३३	०४	६	०७	७	२१	१७	६	१०	तुला		[illegible]	[illegible]	अ१	भ. १८ ११ या.दुर्गाष्टमी सिंधु अगस्त मास ८ ता.३१ प्रा.
२८।०८ या.	८	श	०३	११	०७	२४	वि	६०	००	-	-	शु	६०	००	ब	०३	११	३३	०१	६	०८	७	२०	१८	७	११	वृश्चि. ४४ २२	२३ ५३	[illegible]	[illegible]	२	आश्लेषायां रविः २८ ०८ सं.चं.सू.स्त्री.नपुं.वाहन खर वर्षा मध्यम
०६।३५ उ.	९	र	०८	५६	०९	४३	वि	०१	०७	०६	३५	शु	००	४०	कौ	०८	५६	३२	५८	६	०८	७	१९	१९	८	१२	वृश्चिक		[illegible]	[illegible]	३	B श्रमण तपस्या प्रा.जैन कन्यायां भौमः १९ ५७ वन महोत्सव दिवस
पूर्णरवि	१०	चं	१३	५४	११	४२	अ	०७	४०	०९	१३	ब्र	०२	२०	ग	१३	५४	३२	५५	६	०९	७	१९	२०	९	१३	वृश्चिक		[illegible]	[illegible]	४	भ. २४ ३२ उ.सर्वा. ०६ ०९ उ. ०९ १३ या.
११।२३ या.	११	मं	१७	३९	१३	१३	ज्ये	१३	०४	११	२३	ऐं	०३	०७	वि	१७	३९	३२	५२	६	०९	७	१८	२१	१०	१४	धनु १३ ०४	११ २३	[illegible]	[illegible]	५	भ. १३ १३ या.पवित्रा ११ व्रतं सर्वे.
प्रदोष	१२	बु	१९	५८	१४	०९	मू	१७	०६	१३	००	वै	०२	४९	बा	१९	५८	३२	४९	६	१०	७	१७	२२	११	१५	धनु		[illegible]	[illegible]	६	प्रदोषव्रतं विष्णु पवित्रार्पण दधिभक्षण व्रतारंभ
१४।०१ उ.	१३	गु	२०	४६	१४	२८	पूषा	१९	३८	१४	०१	वि	०१ ५८	२० ४१	तै	२०	४६	३२	४६	६	१०	७	१७	२३	१२	१६	मकर ३५ ०३	२० ११	[illegible]	[illegible]	७	C रा.अगस्त क्रांति दि.संस्कृत दिवस अमरनाथ यात्रा पूर्ण प्रतापमल पुण्य स्था.जैन
१४।२८ या.	१४	शु	२०	०५	१४	१३	उषा	२०	४४	१४	२८	आ	५४	५५	व	२०	०५	३२	४३	६	११	७	१६	२४	१३	१७	मकर		[illegible]	[illegible]	८	भ. १४ १३ उ. २५ ५३ या.सर्वा. १४ २८ उ.पूर्णिमाव्रतं मरुधरकेसरी मिश्रीमल जन्म जैन कोकिलाव्रत पूर्णता
पूर्णिमा	१५	श	१८	०५	१३	२५	श्र	२०	३२	१४	२४	सौ	५०	१०	ब	१८	०५	३२	४०	६	११	७	१५	२५	१४	१८	कुंभ ५० ००	२६ ११	[illegible]	[illegible]	९	सर्वा. १४ २४ या.पंचक २६ ११ उ.पूर्णिमा पुण्य रक्षाबंधन श्रावणी उपाकर्म C









卐 निर्णयसागरीय गोचरग्रहाः 卐



अ. १७ श्रावण शुक्ले ८ शुक्रे इष्ट ०।०

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	३	६	५	३	२	२	११	१०	४
अं.	१४	०९	०२	१४	१७	०६	०७	२६	२६
क.	४९	२०	०६	४५	३०	४६	२५	०३	०३
वि.	५४	५४	०४	५७	१०	५०	२१	१९	१९
गति	५७ २६	७११ ४५	३७ ००	४३ ५७ व	१२ ४९	६९ ३१	०१ ५५ व	३ ११	३ ११
नक्षत्र	पुष्य ४	स्वाति १	उफा. २	पुष्य ४	आर्द्रा ४	आर्द्रा १	उभा. २	पूभा. २	पूफा. ४

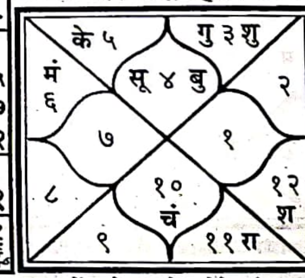
♣ ग्रह गोचरीय फलश्रुतिः ♣

देव शनि की वक्रता, तेजी सूत कपास। दलहन में मंदी नहीं, गणना गणित विकास ॥ श्रावण महिमा सौख्य की, श्रवण पूर्णिमा लक्ष। कृषि खेत खलिहान में, हरित रूप नव दक्ष ॥ शुभारंभ श्रावण दिवस, मेघ गाज यदि लक्ष। निर्णय शकुन शास्त्र का, वर्षा गति सुदक्ष ॥ चित्रा स्वाति विशाखा में, मेघ गाज गतिरंग। सुख सुभिक्ष की धारणा, निर्णय शकुन प्रसंग ॥ अश्विनी कृत्तिका रोहिणी, बदी श्रावण आलक्ष। मेघ गाज वर्षा यदि, सुख सुभिक्ष का पक्ष ॥ शुक्ला श्रावण सप्तमी, मेघ गाज आकाश। लक्षण योग सुभिक्ष का, निर्णय शास्त्र विकास ॥ युति योग गुरु शुक्र का, राशि मिथुन विचार। नायक देश विदेश के, बहुचर्चित संसार ॥ अनावृष्टि–अतिवृष्टि से, ऋतु कोप संसार। निर्णय गणना शास्त्र की, गोचर फल संचार ॥

अ. १८ श्रावण शुक्ले १५ शनौ इष्ट ०।०

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	३	९	५	३	२	२	११	१०	४
अं.	२२	१८	०७	१०	१९	१६	०७	२५	२५
क.	२९	४३	०३	१९	११	०५	०७	३७	३७
वि.	३८	३६	५२	१७	१८	३८	३१	५२	५२
गति	५७ ३२	८१३ ०२	३७ ३१	११ ४४ व	१२ २४	७० १६	०२ ३७ व	३ ११	३ ११
नक्षत्र	आश्ले. २	श्रवण ३	उफा. ४	पुष्य ३	आर्द्रा ४	आर्द्रा ३	उभा. २	पूभा. २	पूफा. ४

卐 निर्णयसागरीय गोचरग्रहाः 卐



● **नीति वचन सूत्र** ● अर्था भाग्योदये जन्तुं विशन्ति शतशः स्वयम्। दिग्भ्योम्युपेत्य सर्वाभ्यः सायं तरूनिवाण्डजाः ॥ भावार्थ – संध्या होते ही जैसे सभी पशु–पक्षी विभिन्न दिशाओं से आकर वृक्षों पर रेन–बसेरा लेने पहुंच जाते हैं। एवमेव जब मनुष्य का भाग्योदय काल बनता है, तब सभी दिशाओं से विविध प्रकार की सम्पदा अनायास भाग्यशाली व्यक्ति के पास पहुंच जाती है। **रक्षाबंधन पर्व मुहूर्त** – श्रावण शुक्ल पक्ष १५ शनिवार तारीख ०९.८.२०२५ को दिवा ०७।४९ से ९।२७ तक शुभ, दिवा १२।१७ से १।०९ तक अभिजित, दिवा १२।४३ से २।२१ तक चंचल, दिवा २।२१ से ५।३७ तक लाभ–अमृत वेला में रक्षाबंधन का मुहूर्त श्रेष्ठ रहेगा।

भाद्रपद कृष्ण पक्षः संवत् २०८२ रा.शाकः १९४७

रवियोगाः	तिथि	वार	घटी	पल	घं.	मि.	नक्षत्र	घटी	पल	घं.	मि.	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	दिनमान पल	स्टेण्डर्ड टाईम सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	विविध तारीखें बंग	मुस	भा	चन्द्रराशि प्रवेश काल रा.घटी पल	घं.मि.	सूर्योदय कालिक सूर्य स्पष्ट रा.अ.क.वि.	गति	अंग्रेजी ता.
मातंग	१	र	१४	५८	१२	११	ध	१९	१३	१३	५३	शो	४४	३६	कौ	१४	५८	३२	३७	६	१२	७	१४	२६	१५	१९	कुम्भ		३ २३ २७ १०	५७ ३३	१०
अमृत	२	चं	१०	५६	१०	३४	श	१७	०१	१३	००	अ	३८	२४	ग	१०	५६	३२	३४	६	१२	७	१४	२७	१६	२०	मीन ५९/५६	३०/१०	३ २४ २४ ४३	५७ ३४	११
चौ.व्रत	३	मं	०६	१२	०८	४१	पूभा	१४	०९	११	५२	सु	३१	४३	वि	०६	१२	३२	३१	६	१२	७	१३	२८	१७	२१	मीन		३ २५ २२ १७	५७ ३६	१२
लुम्बक	४	बु	००	५९	०६	३७	उभा	१०	४९	१०	३३	धृ	२४	४१	बा	००	५९	३२	२७	६	१३	७	१२	२९	१८	२२	मीन		३ २६ १९ ५२	५७ ३७	१३
क्षय	५	बु	५५	२८	२८	२४	0	०	०	०	०	0	०	०	0	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0		० ०	०	०
०१।०६ उ.	६	गु	४९	४६	२६	०८	रे	०७	११	०९	०६	शू	१७	२६	ग	२२	३७	३२	२४	६	१३	७	११	३०	१९	२३	मेष ०७/११	०९/०६	३ २७ १७ २९	५७ ३९	१४
०७।३६ या.	७	शु	४४	०१	२३	५०	अ	०३/५९	२५/४०	०७/३०	३६/०६	गं	१०	०६	वि	१६	५२	३२	२१	६	१४	७	१०	३१	२०	२४	मेष		३ २८ १५ ०८	५७ ४०	१५
केतु	८	श	३८	२२	२१	३५	कृ	५६	०१	२८	३९	वृ	०२/५५	४७/३४	बा	११	१०	३२	१७	६	१४	७	०९	भा१	२१	२५	वृषभ १३/४३	११/४४	३ २९ १२ ४८	५७ ४२	१६
धाता	९	र	३२	५५	१९	२५	रो	५२	३७	२७	१८	व्या	४८	३३	तै	०५	३६	३२	१४	६	१५	७	०८	२	२२	२६	वृषभ		४ ०० १० ३०	५७ ४३	१७
आनंद	१०	चं	२७	४९	१७	२३	मृ	४९	३७	२६	०६	ह	४१	५१	व	००	१९	३२	११	६	१५	७	०८	३	२३	२७	मिथुन २१/०३	१४/४०	४ ०१ ०८ १३	५७ ४५	१८
ए.व्रत	११	मं	२३	१३	१५	३३	आ	४७	१०	२५	०८	व	३५	३५	बा	२३	१३	३२	०७	६	१६	७	०७	४	२४	२८	मिथुन		४ ०२ ०५ ५७	५७ ४७	१९
प्रदोष	१२	बु	१९	१७	१३	५९	पुन	४५	२७	२४	२७	सि	२९	५३	तै	१९	१७	३२	०४	६	१६	७	०६	५	२५	२९	कर्क ३०/४८	१८/३५	४ ०३ ०३ ४४	५७ ४८	२०
शुभ	१३	गु	१६	१२	१२	४५	पु	४४	४०	२४	०९	व्य	२४	५३	व	१६	१२	३२	००	६	१७	७	०५	६	२६	३०	कर्क		४ ०४ ०१ ३२	५७ ५०	२१
मृत्यु	१४	शु	१४	०९	११	५६	श्ले	४४	५९	२४	१७	व	२०	४५	श	१४	०९	३१	५७	६	१७	७	०४	७	२७	३१	सिंह ४४/५९	२४/१७	४ ०४ ५९ २२	५७ ५१	२२
अमावस	३०	श	१३	१८	११	३७	म	४६	३३	२४	५५	प	१७	३५	ना	१३	१८	३१	५३	६	१८	७	०३	८	२८	भा१	सिंह		४ ०५ ५७ १२	५७ ५२	२३

✦ अगस्त सन् २०२५ ई. वर्षा–शरद ऋतुः रवि दक्षिणायणे–उत्तरगोले ✦

♣ सम्प्रति भद्रादि ग्रह – नक्षत्रचार समय भार.स्टे.टा.घण्टा–मिनटों में ही अंकित किये हैं ♣

अंग्रेजी ता.	
१०	अशून्य शयन व्रत पूर्ण मेवाड़ भूषण प्रतापमल म.सा.पुण्य जैन बुधोदय पू. २१/०७
११	भ. २१/४० उ.मार्गी बुधः १२/५९ कज्जली तीज देखें पृष्ठ २२ पर
१२	भ. ०८/४१ या.सर्वा. ११/५२ उ. ३०/१३ या.कज्जली सातुड़ी तीज बहुला चतुर्थीव्रतं चंद्रोदय २१/१७ A
१३	श्रमण तपस्या पूर्ण जैन हस्ते भौमः २२/३१
०	A पुनर्वसौ १ गुरूः २९/०४ पुनर्वसौ शुक्रः १४/०७
१४	भ. २६/०८ उ.सर्वा. ०६/१३ उ.पंचक ०९/०६ या.हलचंदन षष्ठी व्रतं चंद्रोदय रात्रि २२/२७
१५	भ. १२/५९ या.सर्वा. ०७/३६ या.स्वतंत्रता दि.७९ वाँ श्रीकृष्ण जन्माष्टमी स्मार्त्त
१६	सर्वा.अमृत २८/३९ उ. ३०/१५ यां.मघायां रविः २५/५२ सिंहेऽर्कः २५/५२ श्रीकृष्ण जन्माष्टमी वैष्णव B
१७	गोगानवमी नंद महोत्सवः
१८	भ. ०६/२३ उ. १७/२३ या.सर्वा.अमृत ०६/१५ उ. २६/०६ या.
१९	अजा ११ व्रतं सर्वे. C आश्लेषायां बुधः २८/२०
२०	प्रदोषव्रतं गोवत्सपूजा बछबारस पर्युषणपर्व प्रा.जैन कर्के शुक्रः २५/१९
२१	भ. १२/४५ उ. २४/१८ या.सर्वा.अमृत गुरूपुष्य ०६/१७ उ. २४/०९ या.मासशिवरात्रि C
२२	पितृकार्ये अमावस्या कन्यायां भानुः २६/०४ शरदऋतु प्रा.मणिधारीजिनचंद्रसूरी दादामेला देहली जैन
२३	देवकार्ये शनैश्चरी अमावस्या कुशोत्पाटिनी पिठोरी अमावस्या सतीपूजा अग्रवंशे D

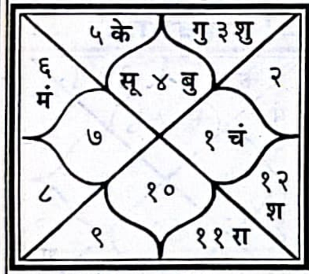








निर्णयसागरीय गोचरग्रहाः



अ. १९ भाद्रपद कृष्णे ८ शनौ इष्ट ०।०

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	३	०	५	३	२	२	११	१०	४
अं.	२९	२६	११	११	२०	२४	०६	२५	२५
क.	१२	४४	२७	२०	३६	१९	४७	१५	१५
वि.	४८	५६	४९	३०	५४	२३	२५	३७	३७
ग	५७	८५१	३७	३७	११	७०	०३	३	३
ति	४२	४२	५८	०६	५९	५४	११ व	११	११
नक्षत्र	आश्ले. ४	कृत्तिका १	हस्त १	पुष्य ३	पुन. १	पुन. २	उभा. १	पूभा. २	पूफा. ४

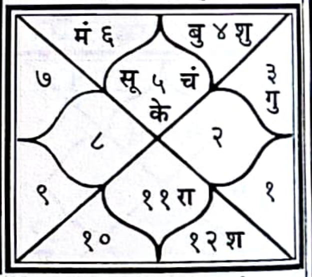
♣ सिंह संक्रान्ति फलम् – भवन संभागीय ♣

भाद्रपद कृष्ण पक्षे ८ शनौ सिंहेऽर्क प्र.वा.४ न.५ अस्य पुण्यकालः परदिने रविवासरे सूर्योदय वेलातः पुण्यप्रदः। वारनाम राक्षसी–श्रमजीवी, निर्धन परिवार, जनजाति, व्यवसायहीन समुदाय हेतु मनोत्साहवर्धक सुखद प्रतिफल। नक्षत्र नाम मिश्रा–शासकीय पशुधन विकास योजना, पशुपालकों की सुविधा, डेयरी फार्म, दुग्ध उत्पादन पक्ष हेतु सुयोग। रात्रि ३ याम व्यापिनी, गायक, वादक, नर्तक, चलचित्र, अभिनेता–निर्माता हेतु कष्टद प्रभार सूचक। उत्तरे गमन, ईशान दृष्टिः। संक्रान्ति वास निवास दुष्टजन–पापात्मागृहे, तैतिल करणे, वाहन–गर्दभ, उपवाहन–मेष, श्वेत वस्त्र, दंडायुध, कांस्यपात्र, पक्वान्न भक्षण, मृतिका लेपन, पक्षी जाति, केतकी पुष्प, प्रवाल भूषण, भूर्ज पत्र, कंचुकी, सुप्तावस्था, मुहूर्त–३०, धान्य, गल्ला स्थिर समभाव, मिठाई, ईंट, कांसा, फूल, भोजपत्र, जंगल वस्तु, इमारती लकड़ी, ताम्बा, मूंगा, मादक पदार्थ, भूगत खनिज, वस्तु, घी, शक्कर, गुड़, मावा, श्रीफल, खोपरा बुरा, सूखा मेवा, कार्य व्यवसाय लाभप्रद, भावी तेजी की रचना, शुक्रोदय पूर्वे, वत्स पूर्वे, राहु उत्तरे, मूल स्वर्गे।

अ. २० भाद्रपद कृष्णे ३० शनौ इष्ट ०।०

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	४	४	५	३	२	३	११	१०	४
अं.	०५	०३	१५	१८	२१	०२	०६	२४	२४
क.	५७	१६	५४	०२	५९	३७	२३	५३	५३
वि.	१२	४८	५९	२२	१९	२२	३३	२१	२१
ग	५७	७७५	३८	८२	११	७१	०३	३	३
ति	५२	३९	२६	१३	२९	२७	४१ व	११	११
नक्षत्र	मघा २	मघा १	हस्त २	आश्ले. १	पुन. १	पुन. ४	उभा. १	पूभा. २	पूफा. ४

निर्णयसागरीय गोचरग्रहाः



● **भद्रा परिहार–विवेक सूत्र** ● कर्क, सिंह, कुंभ, मीन राशि के चन्द्र रहते भद्रा (मृत्युलोक) मेष, वृषभ, मिथुन, वृश्चिक चन्द्र में भद्रा (स्वर्गलोक) कन्या, तुला, धनु, मकर (पाताललोक) इस प्रकार मृत्यु लोक पर भद्रा रहते पूर्णतया अशुभ, शेष समय विशेष अशुभ नहीं। ● **पुनरपि परिहार** ● शुक्ल पक्षे ४–११ तिथि कृष्ण पक्ष में ३–१० तिथि वाली भद्रा दिन में शुभ। तथा शुक्ल पक्ष ८–१५ तथा कृष्ण पक्षे ७–१४ तिथि में रात्रि में भद्रा शुभ। तथा विशेषकर भद्रा–वैधृति मध्यान्ह काल के उपरान्त मान्य विशेष नहीं है तथा न्यायालय कार्य, विशिष्ट व्यक्ति से सम्पर्क, शत्रु–विरोधीगण हेतु कार्यरचना, चिकित्सा एवं वैद्य–डॉक्टर से सम्पर्क हेतु तथा स्त्री प्रसंग, विविध वाहन क्रय एवं उपयोग में भद्रा दोष नहीं। भद्रावास हेतु विविध मत हैं, परन्तु हमारे द्वारा मुहूर्त चिन्तामणि मतानुसार ही नियामक मान्य है। **B** बं.भाद्रपद मास प्रा.श्रीजाम्भोजी ज.विश्नोईपंथ दुर्वाष्टमी संग चं.चं.स्त्री.पु.वाहन मंडूकवर्षा श्रेष्ठ **D** लोहार्गल यात्रा नक्त व्रत पूर्णता रा.भाद्रपद मास प्रा.पुष्ये शुक्रः २०।३६

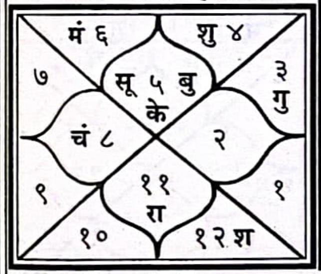
भाद्रपद शुक्ल पक्षः संवत् २०८२ रा.शाकः १९४७																		दिनमान		स्टेण्डर्ड टाईम सूर्योदय		सूर्यास्त		विविध तारीखें			चन्द्रराशि प्रवेश काल		सूर्योदय कालिक सूर्य स्पष्ट		अंग्रेजी ता.	✦अगस्त–सितम्बर सन् २०२५ ई. शरद ऋतुः रवि दक्षिणायणे–उत्तरगोले✦
रवियोगाः	तिथि	वार	घटी	पल	घं.	मि.	नक्षत्र	घटी	पल	घं.	मि.	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	घटी	पल	घं.	मि.	घं.	मि.	बंग	मुस	भा	रा. घटी पल	घं.मि.	रा.अ.क.वि.	गति		♣सम्प्रति भद्रादि ग्रह – नक्षत्रचार समय भार.स्टे.टा. घण्टा–मिनिटों में ही अंकित किये हैं♣
छत्र	१	र	१३	४७	११	४९	पूफा	४९	३०	२६	०६	शि	१५	२९	ब	१३	४७	३१	५०	६	१८	७	०२	९	२९	२	सिंह		४ ०६ ५५ ०४	५७ ५४	२४	चंद्रदर्शनं सर्वा. २६ ०६ उ. ३० १८ या.अगस्त्योदयः १५ ०२ ★
२७।५० उ.	२	चं	१५	४२	१२	३५	उफा	५३	४८	२७	५०	सि	१४	२९	कौ	१५	४२	३१	४६	६	१८	७	०१	१०	११	३	कन्या ०५ २६	०८ २९	४ ०७ ५२ ५८	५७ ५५	२५	बाबा रामदेव दूज ६४० वाँ मेला श्रीवराह ज. A
३०।०४ था.	३	मं	१९	०१	१३	५५	ह	५९	२४	३०	०४	सा	१४	३४	ग	१९	०१	३१	४३	६	१९	७	००	११	२	४	कन्या		४ ०८ ५० ५३	५७ ५६	२६	भ. २६ ४७ उ.हरितालिकातीज व्रतं श्रीवराह ज.मध्य एवं पूर्वीभारते
कालदंड	४	बु	२३	३४	१५	४५	चि	६०	००	-	-	शु	१५	३७	वि	२३	३४	३१	३९	६	१९	६	५९	१२	३	५	तुला ३२ ३५	१९ २१	४ ०९ ४८ ४९	५७ ५८	२७	भ. १५ ४५ या.श्रीगणेश चतुर्थी संवत्सरी पर्व जैन
०८।४४ उ.	५	गु	२९	०४	१७	५७	चि	०६	००	०८	४४	शु	१७	२६	बा	२९	०४	३१	३५	६	२०	६	५८	१३	४	६	तुला		४ १० ४६ ४७	५७ ५९	२८	ऋषिपंचमी व्रतं गर्गअंगिराऋषि ज. पर्युषणपर्व प्रा. दिगम्बर जैन
११।३९ था.	६	शु	३५	०६	२०	२२	स्वा	१३	१६	११	३९	ब्र	१९	४२	कौ	०२	०३	३१	३२	६	२०	६	५७	१४	५	७	तुला		४ ११ ४४ ४६	५८ ०१	२९	श्री बलदेव छठ सूर्यषष्ठीं राष्ट्रीय खेल दिवस
शुभ	७	श	४१	०७	२२	४७	वि	२०	४२	१४	३७	ऐं	२२	०२	ग	०८	०८	३१	२८	६	२१	६	५६	१५	६	८	वृश्चि. ०३ ५१	०७ ५३	४ १२ ४२ ४७	५८ ०२	३०	भ. २२ ४७ उ.पूफायां रविः २१ ४४ मुक्ता भरण संतान सप्तमी B
मृत्यु	८	र	४६	३३	२४	५८	अ	२७	४६	१७	२७	वै	२४	०५	वि	१३	५६	३१	२५	६	२१	६	५५	१६	७	९	वृश्चिक		४ १३ ४० ४८	५८ ०३	३१	भ. ११ ५५ या.श्रीदधीचि ज. राधाष्टमी महालक्ष्मी व्रतारंभः
११।५५ उ.	९	चं	५०	५५	२६	४४	ज्ये	३३	५४	१९	५५	वि	२५	२५	बा	१८	५४	३१	२१	६	२१	६	५४	१७	८	१०	धनु ३३ ५४	१९ ५५	४ १४ ३८ ५१	५८ ०५	सि१	श्रीचंद्र नवमी अदुःख नवमी श्रीमद्भागवत ज. सितम्बर मास १ ता. ३० प्रा.
पूर्णरवि	१०	मं	५३	४९	२७	५३	मू	३८	४३	२१	५१	प्री	२५	४४	तै	२२	३४	३१	१७	६	२२	६	५३	१८	९	११	धनु		४ १५ ३६ ५६	५८ ०६	२	महालक्ष्मीव्रत पूर्णता मेला रामदेवजी तेजादशमी खेजड़ली मेला जोधपुरे C
२३।०८ था.	११	बु	५५	०१	२८	२२	पूषा	४१	५६	२३	०८	आ	२४	४७	व	२४	३८	३१	१३	६	२२	६	५२	१९	१०	१२	मकर ५७ २८	२९ २१	४ १६ ३५ ०२	५८ ०७	३	भ. १६ १३ उ. २८ २२ या.पद्मा जलझूलनी ११ व्रतं स्मा.वै.फूलडोल मेला D
सौम्य	१२	गु	५४	२५	२८	०९	उषा	४३	२३	२३	४४	सौ	२२	२७	ब	२४	५६	३१	१०	६	२३	६	५१	२०	११	१३	मकर		४ १७ ३३ ०९	५८ ०९	४	पद्मा जलझूलनी ११ व्रतं निम्बा.वामन ज.श्रवण द्वादशी
२३।३८ उ.	१३	शु	५२	०६	२७	१४	श्र	४३	०९	२३	३८	शो	१८	४३	कौ	२३	२८	३१	०६	६	२३	६	४९	२१	१२	१४	मकर		४ १८ ३१ १७	५८ १०	५	प्रदोषव्रतं सर्वा. ०६ २३ उ. २३ ३८ या.शिक्षक दि.हस्तिमुनि मेवाड़ी पुण्य जैन
२२।५६ था.	१४	श	४८	१६	२५	४२	ध	४१	२१	२२	५६	अ	१३	४०	ग	२०	२१	३१	०२	६	२३	६	४८	२२	१३	१५	कुंभ १२ २५	११ २१	४ १९ २९ २८	५८ १२	६	भ. २५ ४२ उ.अनंत चतुर्दशी व्रतं पंचक ११ २१ उ.पूफायां बुधः १६ ४२
पूर्णिमा	१५	र	४३	०८	२३	३९	श	३८	१४	२१	४१	सु	०७	२६	वि	१५	५०	३०	५९	६	२४	६	४७	२३	१४	१६	कुंभ		४ २० २७ ३१	५८ १४	७	भ. १२ ४४ या.पूर्णिमाव्रतं पूर्णिमाश्राद्ध महालय श्रद्धारंभः चन्द्रग्रहण E







卐 निर्णयसागरीय गोचरग्रहाः 卐



अ. २१ भाद्रपद शुक्ले ८ सूर्ये इष्ट ०।०

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	४	७	५	४	२	३	११	१०	४
अं.	१३	११	२१	०१	२३	१२	०५	२४	२४
क.	४०	०७	०४	०२	२८	११	५२	२७	२७
वि.	४८	५२	१४	२०	५४	०३	२४	५४	५४
ग	५८	७२०	३८	१११	१०	७२	०४ ०८ व	३	३
ति	०३	२३	५६	४१	४९	०२		११	११
नक्षत्र	पूफा.१	अनु.१	हस्त ४	मघा १	पुन.२	पुष्य ३	उभा.१	पूभा.२	पूफा.४

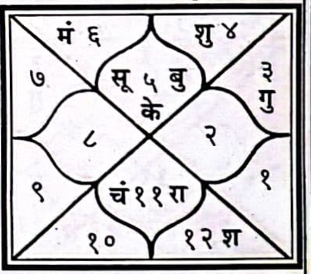
♣ ग्रह गोचरीय फलश्रुतिः ♣

देव शनि की वक्रता, तेजी सूत कपास। दलहन में मंदी नहीं, गणना गणित विकास॥ बुधादित्य की स्थिति, कोविद लाभ विशेष। शिक्षा शिक्षक पंथ में, लाभद रूप निवेश॥ चलन कलन शनि सूर्य का, निर्धन जग अभिसार। सेवाकर्मी कोप से, शासन तंत्र विचार॥ अर्थ पक्ष अभिनव गति, धनिक त्रास अधियोग। बैंक कोष मुद्रा विषय, नीति नव्य प्रयोग॥ आगे पीछे ग्रह गति, भानु मध्य प्रचार। मेघ गाज वर्षा गति, धारा खण्ड प्रसार॥ चलन कलन रवि भौम का, अग्रिम मंगल कक्ष। वृष्टिरोध इनसे बने, खण्ड रूप का पक्ष॥ महिमा भादव मास की, चित्रा स्वाति विशाखा। मेघ गाज वर्षा गति, भावी साख सुशाख॥ संक्रान्ति भादव मास की, जलधारा यदि संग। संक्रामक व्याधि गति, आश्विन कष्ट भुजंग॥

अ. २२ भाद्रपद शुक्ले १५ सूर्ये इष्ट ०।०

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	४	१०	५	४	२	३	११	१०	४
अं.	२०	११	२५	१४	२४	२०	०५	२४	२४
क.	२७	००	३८	२६	४२	३६	२२	०५	०५
वि.	३१	३७	०६	१७	४०	४३	३०	३८	३८
ग	५८	८४१	३१	११६	१०	७२	०४ २५ व	३	३
ति	१४	४२	२२	१२	०९	३१		११	११
नक्षत्र	पूफा.३	शत.२	चित्रा १	पूफा.१	पुन.२	आश्ले.२	उभा.१	पूभा.२	पूफा.४

卐 निर्णयसागरीय गोचरग्रहाः 卐



● **सुभाषित–नीति वचन सूत्र** ● घृतकुम्भसमा नारी तप्तांगारसमः पुमान्। तस्माद् घृतं च वन्हिं च नैकत्र स्थापयेद् बुधः॥ असन्तुष्टा द्विजा नष्टाः सन्तुष्टाश्च महीभुजः। सलज्जा गणिका नष्टा निर्लज्जाश्च कुलांगनाः॥ शान्तितुल्यं तपो नास्ति न सन्तोषात्परं सुखम्। न तृष्णायाः परो व्याधिः न च धर्मो दयासम्॥ सत्येन धार्यते पृथ्वी सत्येन तपते रविः। सत्येन वाति वायुश्च सर्वं सत्ये प्रतिष्ठितम्॥ उद्योगे नास्ति दारिद्र्यं जपतो नास्ति पातकम्। मौने च कलहो नास्ति–नास्ति जागरितो भयम्॥ कामधेनुगुणा विद्या स्वकाले फलदायिनी। प्रवासे मातृसदृशी विद्या गुप्तं स्मृतम्। कोकिलानां स्वरो रूपं स्त्रीणां रूपं पतिव्रतम्। विद्या रूपं कुरूपाणां क्षमा रूपं तपस्विनाम्॥

A तैलाधर तपस्या प्रा.जैन रविउल अव्वल मास ३ मुस.
B मघायां सिंहे बुधः १६।४१ सं.सू.सू.स्त्री.नपुं.वाहन महिष वर्षा श्रेष्ठ **C** धूप दशमी जैन बुधास्त पू. २१।३४ **D** चारभुजा जी मेवाड़ चित्रायां भौमः १७।५३ आश्लेषायां शुक्रः २३।५१ **E** कुमारीणां संध्यापूजा प्रा.

आश्विन कृष्ण पक्षः संवत् २०८२ रा.शाकः १९४७

✦ सितम्बर सन् २०२५ ई. शरद ऋतुः रवि दक्षिणायणे–उत्तरगोले ✦

♣ सम्प्रति भद्रादि ग्रह – नक्षत्रचार समय भार.स्टे.टा.घण्टा–मिनटों में ही अंकित किये हैं ♣

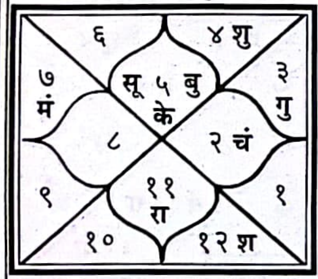
रवियोगाः	तिथि	वार	घटी	पल	घं.	मि.	नक्षत्र	घटी	पल	घं.	मि.	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	दिनमान पल	स्टेण्डर्ड टाईम सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	विविध तारीखें बंग	मुस	भा	चन्द्रराशि प्रवेश काल रा.	घटी पल	घं.मि.	सूर्योदय कालिक सूर्य स्पष्ट रा.अ.क.वि.	गति	अंग्रेजी ता.	
मुसल	१	चं	३७	००	२१	१२	पूभा	३४	०६	२०	०३	धृ	००/५२	१४/१९	बा	१०	१०	३०	५५	६	२४	६	४६	२४	१५	१७	मीन	२०/१२	१४/२९	[illegible]	[illegible]	८	प्रतिपदा श्राद्ध स्वामी शिवानंद जन्म विश्व साक्षरता दिवस
सिद्धि	२	मं	३०	१३	१८	३०	उभा	२९	१७	१८	०७	गं	४३	५५	तै	०३	४०	३०	५१	६	२५	६	४५	२५	१६	१८	मीन			[illegible]	[illegible]	९	भ.२९/०५ उ.सर्वा.०६/२५ उ.१८/०७ या.द्वितीया श्राद्ध जिनचंद्रसूरी दादा मेला जैन बिलाड़ा राज.
चौ.व्रत	३	बु	२३	०३	१५	३८	रे	२४	०६	१६	०३	वृ	३५	१६	वि	२३	०३	३०	४७	६	२५	६	४४	२६	१७	१९	मेष	२४/०६	१६/०३	[illegible]	[illegible]	१०	भ.१५/३८ या.पंचक १६/०३ या.तृतीया–चतुर्थीश्राद्ध चतुर्थीव्रतं चंद्रोदय रात्रि २०/२६
मानस	४	गु	१५	५१	१२	४६	अ	१८	५२	१३	५८	ध्रु	२६	३८	बा	१५	५१	३०	४३	६	२५	६	४३	२७	१८	२०	मेष			[illegible]	[illegible]	११	सर्वा.०६/२५ उ. १३/५८ या.पंचमी श्राद्ध
११।५९ उ.	५	शु	०८	५३	०९	५९	भ	१३	५२	११	५९	व्या	१८	१४	तै	०८	५३	३०	४०	६	२६	६	४२	२८	१९	२१	वृषभ	२७/४२	१७/३१	[illegible]	[illegible]	१२	षष्ठी श्राद्ध
१०।११ या. १५।४१ उ.	६	श	०२	२४	०७	२४	कृ	०९	२३	१०	११	ह	१०	१५	व	०२	२४	३०	३६	६	२६	६	४१	२९	२०	२२	वृषभ			[illegible]	[illegible]	१३	भ.०७/२४ उ.१८/१२ या.सर्वा.अमृत १०/११ उ.३०/२७ या.सप्तमी श्राद्ध A
क्षय	७	श	५६	३६	२९	०५	0	०	०	०	०	0	०	०	0	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0			० ०	०	०	श्राद्ध पक्ष निर्णय हेतु पृष्ठ २३ देखें।
०८।४१ या.	८	र	५१	४०	२७	०७	रो	०५	३६	०८	४१	व	०२/५६	५१/११	बा	२४	०१	३०	३२	६	२७	६	३९	३०	२१	२३	मिथुन	३४/०२	२०/०४	[illegible]	[illegible]	१४	अष्टमी श्राद्ध जीवित्पुत्रिका व्रतं श्रीलक्ष्मी व्रत मघायां सिंहे शुक्रः २४/१६ हिन्दी दि.
आनंद	९	चं	४७	४२	२५	३२	मृ	०२	४२	०७	३२	व्य	५०	१८	तै	१९	३३	३०	२८	६	२७	६	३८	३१	२२	२४	मिथुन			[illegible]	[illegible]	१५	सर्वा.अमृत ०६/२७ उ.०७/३२ या.नवमी श्राद्ध मातृ नवमी सौभाग्यवतीनां श्राद्ध B
चर	१०	मं	४४	४८	२४	२३	आ/पुन	००/५९	४७/५६	०६/३०	४६/२६	व	४५	१६	व	१६	०६	३०	२४	६	२८	६	३७	आ१	२३	२५	कर्क	४५/०३	२४/२९	[illegible]	[illegible]	१६	भ.१२/५४ उ. २४/२३ या.कन्यायांऽर्कः २५/४७ दशमी श्राद्ध बं.आश्विन मास प्रा.
ए.व्रत	११	बु	४३	००	२३	४०	पु	६०	००	-	-	प	४१	०७	ब	१३	४५	३०	२१	६	२८	६	३६	२	२४	२६	कर्क			[illegible]	[illegible]	१७	इन्दिरा ११ व्रतं सर्वे.एकादशी श्राद्ध विश्वकर्मा पूजा
शुभ	१२	गु	४२	२२	२३	२५	पु	००	१०	०६	३२	शि	३७	५२	कौ	१२	३२	३०	१७	६	२८	६	३५	३	२५	२७	कर्क			[illegible]	[illegible]	१८	सर्वा.अमृत गुरू पुष्य ०६/२८ उ.०६/३२ या.सन्यासीनां द्वादशी श्राद्ध
प्रदोष	१३	शु	४२	५२	२३	३७	श्ले	०१	३३	०७	०६	सि	३५	३१	ग	१२	२८	३०	१३	६	२९	६	३४	४	२६	२८	सिंह	०१/३२	०७/०६	[illegible]	[illegible]	१९	भ.२३/३७ उ.प्रदोष व्रतं त्रयोदशी श्राद्ध मास शिवरात्रि
पद्म	१४	श	४४	३१	२४	१७	म	०४	०२	०८	०६	सा	३४	०४	वि	१३	३२	३०	०९	६	२९	६	३३	५	२७	२९	सिंह			[illegible]	[illegible]	२०	भ.११/५४ या.चतुर्दशीश्राद्ध दग्धशस्त्रादिहतानां श्राद्ध हस्ते बुधः २४/५२
अमावस	३०	र	४७	१७	२५	२४	पूफा	०७	३७	०९	३२	शु	३३	२८	च	१५	४५	३०	०५	६	३०	६	३२	६	२८	३०	कन्या	२३/४१	१५/५८	[illegible]	[illegible]	२१	सर्वा.०९/३२ उ.३०/३० या.देवपितृकार्ये सर्वपितृ अमावस्याश्राद्ध C







निर्णयसागरीय गोचरग्रहाः



अ. २३ आश्विन कृष्णे ८ सूर्ये इष्ट ०।०

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	४	१	६	४	२	३	११	१०	४
अं.	२७	२२	००	२७	२५	२९	०४	२३	२३
क.	१५	००	१५	४७	५१	०५	५०	४३	४३
वि.	५४	५०	००	१८	३६	४५	५६	२३	२३
ग	५८	८४१	३९	१११	०९	७२	०४/३६	३	३
ति	२८	४२	४९	१२	२५	५९	व	११	११
नक्षत्र	उफा. १	रोहिणी ४	चित्रा ३	उफा. १	पुन. २	आर्द्रा ४	उभा. १	पूभा. २	पूफा. ४

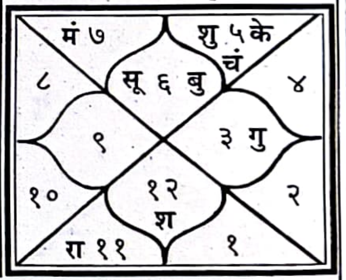
♣ कन्या संक्रान्ति फलम् – वन संभागीय ♣

आश्विन कृष्ण पक्षे १० भौमे कन्यायांऽर्कः प्र.वा.४ न.५ अस्य पुण्यकालः परदिने बुधवासरे सूर्योदय वेलातः पुण्यप्रदः। वारनाम महोदरी–तस्कर, लोभी–प्रलोभी, प्रवंचक, धूर्त्त, चौर्यकर्मशील, संग्राहक, ठग पक्ष हेतु दिशापथ सूचक शुभ फलद। नक्षत्र नाम महोदरी–तस्कर, ठग, चौर्यकर्मशील, लोभी, प्रलोभी, संग्रहशील, स्टॉकिस्ट वर्ग हेतु मनोत्साहवर्धक सुखद। रात्रि ३ याम व्यापिनी, गायक, वादक, नर्तक, चलचित्र, अभिनेता, निर्माता हेतु कष्टद, प्रभार सूचक। पश्चिमे गमन, वायव्यं दृष्टि। संक्रान्ति वास निवास, कुम्हारगृहे, बवकरणे, वाहन–सिंहे, उपवाहन–गज, श्वेत वस्त्र, भुशुण्डायुध, स्वर्णपात्र, अन्नभक्षण, कस्तूरीलेपन, देवजाति, पुन्नागपुष्प, पिरोजभूषण, विचित्र कंचुकी, बालावस्था, उपविष्ट, मुहूर्त–४५, धान्य–गल्ला स्थिर समभाव, सफेद वस्त्र, सोना, चांदी, सूत, कपास, कंदमूल पदार्थ, चांवल, सुगंधी पदार्थ, सफेद रंग वस्तु, गेहूँ, मक्का, ज्वार, बाजरा, चना, जौ, मूंग, मोठ, साबूदाना आदि वस्तु कार्य लाभद भावी तेज धारणा। शुक्रोदय पूर्वे, वत्स पूर्वे, राहु उत्तरे, मूल स्वर्गे।

अ. २४ आश्विन कृष्णे ३० सूर्ये इष्ट ०।०

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	५	४	६	५	२	४	११	१०	४
अं.	०४	२५	०४	१०	२६	०७	०४	२३	२३
क.	०५	०४	५५	२४	५५	३७	१८	२१	२१
वि.	५२	५४	०५	३१	०५	५८	२७	०७	०७
ग	५८	७४४	४०	१०४	०८	७३	०४/४०	३	३
ति	४२	१९	१६	०६	३५	२५	व	११	११
नक्षत्र	उफा. ३	पूफा. ४	चित्रा ४	हस्त १	पुन. ३	मघा ३	उभा. १	पूभा. २	पूफा. ४

निर्णयसागरीय गोचरग्रहाः



वत्स विचार – भ्रमतीन्द्रदिशं वत्सो मासानां च त्रिकंत्रिकम्। आदौ भाद्रपदं कृत्वा सव्यतो दिक्चतुष्टयम्॥ यात्राविवादसम्बंधे द्वारे च गृहहर्म्भयोः। भूपतेर्मिलने युद्धे वत्सस्याभिमुखेत्यजेत्॥ नोट – यहां पर भाद्रपद मास से तीन तीन माह पूर्वादि दिशा सव्य क्रम से लिखी हैं, परन्तु मतांतर से सिंहादि संक्रान्ति क्रम से वत्सवास का विचार किया जाता है। ● **ज्वालामुखी योग–बिछुड़ा चन्द्र विषयक सूत्र** ● प्रतिपदा में मूल, पंचमी में भरणी, अष्टमी में कृतिका, नवमी में रोहिणी तथा दशमी में आश्लेषा नक्षत्र का योग–समय ज्वालामुखी योग का सूचक–यह कालांश नेष्टफल संज्ञा का उपलक्षक। तथापि रवियोग–सर्वार्थ अमृत सुयोग दिवस भी बनते यह कुयोग नगण्य बन जाता है ● तथा वृश्चिक नीच राशि का चन्द्र समय–काल बिछुड़ा संज्ञक माना जाता है। ● **सुभाषित नीतिवचन** ● अस्ति पुत्रो वशे यस्य भृत्यो भार्या तथैव च। अभावे सति सन्तोषः स्वर्गस्थोऽसौ महीतले॥ किं जातैर्बुभिः पुत्रैः शोकसन्ताप कारकैः। वरमेकः कुलालम्बी यत्र विश्राम्यते कुलम्॥

A उफायां रविः १५।४१ सं.सू.सू.स्त्री.पु.वाहन जम्बूक वर्षा नेष्टं तुलायां भौमः २१।२१ उफायां बुधः १६।०१ **B** कन्यायां बुधः ११।०७ **C** तर्पणंच श्राद्धपक्ष पूर्ण पूभा १ राहुः पूफा ३ केतु १४।५४

आश्विन शुक्ल पक्षः संवत् २०८२ रा.शाकः १९४७

✦ सितम्बर–अक्टूबर सन् २०२५ ई. शरद ऋतुः रवि दक्षिणायणे–उत्तर–दक्षिणगोले ✦

♣ सम्प्रति भद्रादि ग्रह – नक्षत्रचार समय भार.स्टे.टा.घण्टा–मिनटों में ही अंकित किये हैं ♣

रवियोगाः	तिथि	वार	घटी	पल	घं.	मि.	नक्षत्र	घटी	पल	घं.	मि.	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	दिनमान पल	स्टेण्डर्ड टाईम सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	विविध तारीखें बंग	मुस	भा	चन्द्रराशि प्रवेश काल रा.घटी पल	घं.मि.	सूर्योदय कालिक सूर्य स्पष्ट रा.अ.क.वि.	गति	अंग्रेजी ता.	
श्रीवत्स	१	चं	५१	०६	२६	५७	उफा	१२	१६	११	२४	शु	३३	४२	किं	१९	०३	३०	०१	६	३०	६	३१	७	२९	३१	कन्या		[illegible]	[illegible]	२२	मातामह श्राद्ध शरद नवरात्रि प्रा. घट स्थापना श्रीअग्रसेन ज. ५१४९ वीं A
सौम्य	२	मं	५५	५४	२८	५२	ह	१७	५४	१३	४०	ब्र	३४	४१	बा	२३	२३	२९	५८	६	३०	६	२९	८	३०	आ१	तुला ५१ ०४	२६ ५६	[illegible]	[illegible]	२३	चंद्रदर्शन रा. आश्विन मास प्रा. स्वात्यां भौमः २० ५६
१६।१७ उ.	३	बु	६०	००	-	-	चि	२४	२५	१६	१७	ऐं	३६	१९	तै	२८	३६	२९	५४	६	३१	६	२८	९	रा१	२	तुला		[illegible]	[illegible]	२४	रविउल आखिर मास ४ मुस.
११।०१ या.	३	गु	०१	२८	०७	०७	स्वा	३१	३४	१९	०९	वै	३८	२६	ना	०१	२८	२९	५०	६	३१	६	२७	१०	२	३	तुला		[illegible]	[illegible]	२५	भ. २० १९ उ. पूफायां शुक्रः २२ १०
२२।०१ उ.	४	शु	०७	३५	०९	३४	वि	३९	०४	२२	०९	वि	४०	४६	वि	०७	३५	२९	४६	६	३२	६	२६	११	३	४	वृश्चि. २२ १०	१५ २४	[illegible]	[illegible]	२६	भ. ०९ ३४ या. सर्वा. २२ ०९ उ. ३० ३२ या. उपांग ललिता व्रतं
०७।०७ या. २५।०८ उ.	५	श	१३	५०	१२	०४	अ	४६	३०	२५	०८	प्री	४३	०४	बा	१३	५०	२९	४२	६	३२	६	२५	१२	४	५	वृश्चिक		[illegible]	[illegible]	२७	हस्ते रविः ०७ ०७ संग सू.सू.स्त्री.नपु. वाहन चातक वर्षा श्रेष्ठ
२७।५५ या.	६	र	१९	४८	१४	२८	ज्ये	५३	२६	२७	५५	आ	४४	५८	तै	१९	४८	२९	३८	६	३३	६	२४	१३	५	६	धनु ५३ २६	२७ ५५	[illegible]	[illegible]	२८	सर्वा. २७ ५५ उ. ३० ३३ या. शहीद भगतसिंह ज. चित्रायां बुधः २३ ०५
लुम्बक	७	चं	२४	५८	१६	३२	मू	५९	२२	३०	१८	सौ	४६	०८	व	२४	५८	२९	३४	६	३३	६	२३	१४	६	७	धनु		[illegible]	[illegible]	२९	भ. १६ ३२ उ. २९ २४ या. सरस्वती आह्वानं नवपद ओली प्रा. जैन
मित्र	८	मं	२८	५३	१८	०७	पूषा	६०	००	-	-	शो	४६	१४	ब	२८	५३	२९	३१	६	३३	६	२२	१५	७	८	धनु		[illegible]	[illegible]	३०	सरस्वती पूजन महाष्टमी दुर्गाष्टमी पूजा बैंक अर्द्धलेखाबंदी
०८।०६ उ.	९	बु	३१	१०	१९	०२	पूषा	०३	५१	०८	०६	अ	४४	५९	बा	००	१४	२९	२७	६	३४	६	२१	१६	८	९	मकर १९ ४४	१४ २७	[illegible]	[illegible]	अ१	सरस्वती बलिदानं ०८ ०६ उ. दुर्गानवमी पूजा अक्टूबर मास १० ता. ३१ प्रा.
पूर्णरवि	१०	गु	३१	३३	१९	११	उषा	०६	३८	०९	१३	सु	४२	१५	तै	०१	३५	२९	२३	६	३४	६	१९	१७	९	१०	मकर		[illegible]	[illegible]	२	श्री गांधी व शास्त्री ज. विजया दशमी दशहरा B
०१।३५ या.	११	शु	२९	५८	१८	३४	श्र	०७	२९	०९	३५	धृ	३७	५७	व	००	५९	२९	१९	६	३५	६	१८	१८	१०	११	कुंभ ३७ १२	२१ २८	[illegible]	[illegible]	३	भ. ०६ ५९ उ. १८ ३४ या. सर्वा. ०६ ३५ उ. ०९ ३५ या. पंचक २१ २८ उ. पापांकुशा ११ व्रतं सर्वे. C
प्रदोष	१२	श	२६	२७	१७	१०	ध	०६	२६	०९	०९	शू	३२	०८	बा	२६	२७	२९	१५	६	३५	६	१७	१९	११	१२	कुंभ		[illegible]	[illegible]	४	शनि प्रदोष व्रतं
०८।०१ उ. ३०।१६ या.	१३	र	२१	१२	१५	०५	श/पूभा	०३ ५९	३४ ११	०८ ३०	०१ १६	गं	२४	५६	तै	२१	१२	२९	११	६	३६	६	१६	२०	१२	१३	मीन ४५ २५	२४ ४६	[illegible]	[illegible]	५	सर्वा. ३० १६ उ. ३० ३६ या.
गद	१४	चं	१४	३०	१२	२४	उभा	५३	३४	२८	०२	वृ	१६	३३	व	१४	३०	२९	०८	६	३६	६	१५	२१	१३	१४	मीन		[illegible]	[illegible]	६	भ. १२ २४ उ. २२ ५४ या. शरद पूर्णिमाव्रतं क्षीरपान कोजागरीव्रतं लक्ष्मींद्र पूजा D
पूर्णिमा	१५	मं	०६	४३	०९	१८	रे	४७	०९	२५	२८	ध्रु	०७ ५७	१७ २६	ब	०६	४३	२९	०४	६	३७	६	१४	२२	१४	१५	मेष ४७ ०९	२५ २८	[illegible]	[illegible]	७	सर्वा. अमृत २५ २८ उ. ३० ३७ या. पंचक २५ २८ या. पूर्णिमा पुण्यःश्री वाल्मिकी जयंती E

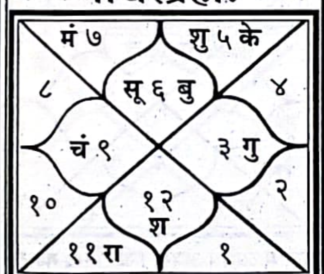








निर्णयसागरीय गोचरग्रहाः



अ. २५ आश्विन शुक्ले ८ भौमे इष्ट ०।०

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	५	८	६	५	२	४	११	१०	४
अं.	१२	१३	१०	२५	२८	१८	०३	२२	२२
क.	५५	२७	५९	२६	०७	४०	३६	५२	५२
वि.	२०	५९	४८	४२	४१	३३	४६	२९	२९
ग	५८	७४३	४०	९५	०७	७३	०४ ३३ व	३	३
ति	५९	३५	५०	४०	२३	५२		११	११
नक्षत्र	हस्त	पूषा	स्वाति	चित्रा	पुन.	पूफा.	उभा.	पूभा.	पूफा.

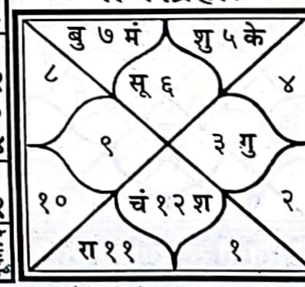
♣ ग्रह गोचरीय फलश्रुतिः ♣

देव शनि की वक्रता, तेजी सूत कपास। दलहन में मंदी नहीं, गणना गणित विकास॥ वार पांच मंगल गति, गोचर गमन निहार। नेता नायक दलपति, कष्टद रूप विचार॥ आश्विन पूनम निर्मला, गमन स्वच्छ आकाश। मेघ गाज वर्षा यदि, तेजी धान्य प्रकाश॥ भाव ताव व्यापार में, घट–बढ़ बने अपार। लोभी लेवे आपदा, व्यापारे सुख सार॥ षड़ाष्टकी शनि भौम की, एवं गुरु गतिचार। व्यय विशेष संसार में, राज़ काज प्रतिभार॥ बैंक कोष मुद्रा विषय, नीति नव्य प्रयोग। गोचर गणना व्योम की, निर्णय शास्त्र कुयोग॥ नव पंचम गुरु भौम का, भारत लोक महान। अणुशक्ति विज्ञान का, साधक देश विधान॥ उत्पादन उद्योग हित, जनमानस अभिलक्ष। समाधान सूचक बने, नायक सन्मति दक्ष॥

अ. २६ आश्विन शुक्ले १५ भौमे इष्ट ०।०

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	५	११	६	६	२	४	११	१०	४
अं.	१९	१८	१५	०६	२८	२७	०३	२२	२२
क.	४८	१५	४६	१८	५६	१८	०५	३०	३०
वि.	४८	३९	५४	४१	२०	३६	३१	१४	१४
ग	५९	८१७	४१	८९	०६	७४	०४ २० व	३	३
ति	१२	३६	१६	५२	२१	११		११	११
नक्षत्र	हस्त	रेवती	स्वाति	चित्रा	पुन.	उफा.	पूभा.	पूभा.	पूफा.

निर्णयसागरीय गोचरग्रहाः



● **पशुगमनागमन प्रश्नफल** ● सूर्यनक्षत्रचार से वर्तमान प्रश्न नक्षत्र ९ स्थान गणना में बने तो पशु वन में, छठे स्थान गणना मार्ग विचरण, सप्तम ७ गणना से घर आवेगा, दूसरे–तीसरे गणनागत नहीं मिले, श्रम साध्य गतिविधि

A तुलायां भानुः २३।४९ रवि दक्षिण गोले प्रा. **B** सरस्वती विसर्जन ०९।१३ उपरांत अपराजिता शमी पूजा बौद्धावतारः माधवाचार्य ज. तुलायां बुधः २७।४३ **C** पूभायां १ शनिः २३।४६

D उफायां शुक्रः १८।०५ बुधोदय प. १९।०४ **E** पाराशर ऋषि ज. मतांतरे महाराजा अजमीढ़ ज. मेढ़ क्षत्रिय स्वर्णकार कार्तिक स्नान प्रा. कृषक भूमि पूजा नवपद औली पूर्ण जैन स्वात्यां बुधः १२।१७

कार्तिक कृष्ण पक्षः संवत् २०८२ रा.शाकः १९४७																		दिन मान		स्टेण्डर्ड टाईम सूर्योदय		स्टेण्डर्ड टाईम सूर्यास्त		विविध तारीखें			चन्द्रराशि प्रवेश काल		सूर्योदय कालिक सूर्य स्पष्ट		अंग्रेजी ता.	✦अक्टूबर सन् २०२५ ई. शरद ऋतुः रवि दक्षिणायणे–दक्षिणगोले✦
रवियोगाः	तिथि	वार	घटी	पल	घं.	मि.	नक्षत्र	घटी	पल	घं.	मि.	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	घटी	पल	घं.	मि.	घं.	मि.	बंग	मुस	भा	रा.घटी पल	घं.मि.	रा.अ.क.वि.	गति	ता.	♣सम्प्रति भद्रादि ग्रह – नक्षत्रचार समय भार.स्टे.टा.घण्टा–मिनटों में ही अंकित किये हैं♣
क्षय	१	मं	५८	१३	२९	५४	0	०	०	०	०	0	०	०	0	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0		० ०	०	०	दीपावली निर्णय हेतु देखें पृष्ठ संख्या २३
मृत्यु	२	बु	४९	२५	२६	२३	अ	४०	२०	२२	४५	ह	४७	१९	तै	२३	४९	२९	००	६	३७	६	१३	२३	१५	१६	मेष		[illegible]	[illegible]	८	वायुसेना दि.A संग सू.सू.स्त्री.पु.वाहन गज वर्षा श्रेष्ठ
पद्म	३	गु	४०	४३	२२	५५	भ	३३	३३	२०	०३	व	३७	१७	व	१५	०१	२८	५६	६	३८	६	१२	२४	१६	१७	वृषभ ४६/५५	२५/२३	[illegible]	[illegible]	९	भ.१२/४८ उ.२२/५५ या.कन्यायां शुक्रः १०/४७ विश्व डाक दि.
चौ.व्रत	४	शु	३२	३२	१९	३९	कृ	२७	१३	१७	३१	सि	२७	३८	ब	०६	३२	२८	५२	६	३८	६	११	२५	१७	१८	वृषभ		[illegible]	[illegible]	१०	चित्रायां रविः २०/१२ करवा चतुर्थी व्रतं चंद्रोदय रात्रि २०/३७ A
श्रीवत्स	५	श	२५	१४	१६	४४	रो	२१	४४	१५	२०	व्य	१८	४१	तै	२५	१४	२८	४९	६	३९	६	१०	२६	१८	१९	मिथुन ४९/२५	२६/२४	[illegible]	[illegible]	११	सर्वा.अमृत ०६/३९ उ.१५/२० या.पद्म प्रभु जन्म जैन
१३।३७ उ.	६	र	१९	०६	१४	१७	मृ	१७	२४	१३	३७	व	१०	४०	व	१९	०६	२८	४५	६	३९	६	०९	२७	१९	२०	मिथुन		[illegible]	[illegible]	१२	भ.१४/१७ उ.२५/१७ या.
११।२७ या.	७	चं	१४	२३	१२	२५	आ	१४	२९	१२	२७	प	०३/५८	४७/०९	ब	१४	२३	२८	४१	६	४०	६	०८	२८	२०	२१	कर्क ५८/१९	२९/५९	[illegible]	[illegible]	१३	अहोई अष्टमी चंद्रोदय रात्रि २३/४४ कालाष्टमी विशाखायां भौमः ०९/१६
सुस्थिर	८	मं	११	१५	११	१०	पुन	१३	०६	११	५४	सि	५३	४७	कौ	११	१५	२८	३७	६	४०	६	०७	२९	२१	२२	कर्क		[illegible]	[illegible]	१४	श्रीविश्नोईपंथ स्थापना दि.B गोसेवा संकल्प दि.हस्ते शुक्रः १२/१८
मातंग	९	बु	०९	४४	१०	३४	पु	१३	१९	१२	००	सा	५०	४१	ग	०९	४४	२८	३४	६	४१	६	०६	३०	२२	२३	कर्क		[illegible]	[illegible]	१५	भ.२२/३१ उ.C हनुमान ज.मतांतरे मास शिवरात्रि
अमृत	१०	गु	०९	४८	१०	३६	श्ले	१५	०३	१२	४२	शु	४८	४३	वि	०९	४८	२८	३०	६	४१	६	०५	३१	२३	२४	सिंह १५/०३	१२/४२	[illegible]	[illegible]	१६	भ.१०/३६ या.श्रीराम शर्मा ज.विश्व खाद्य दि.विशाखायां बुधः १९/०५
ए.व्रत	११	शु	११	१८	११	१३	म	१८	१०	१३	५८	शु	४७	४८	बा	११	१८	२८	२६	६	४२	६	०४	का१	२४	२५	सिंह		[illegible]	[illegible]	१७	रमा ११ व्रतं सर्वे.तुलायांऽर्कः १३/४६ बं.कार्तिक मास प्रा.गोवत्स द्वादशी B
प्रदोष	१२	श	१४	०४	१२	२०	पूफा	२२	२९	१५	४२	ब्र	४७	४४	तै	१४	०४	२८	२२	६	४२	६	०३	२	२५	२६	कन्या ३८/४४	२२/१२	[illegible]	[illegible]	१८	शनि प्रदोष व्रतं धनतेरस यम दीपदानं धन्वंतरी ज.पुनर्वसौ ४ कर्के गुरूः १९/४७
मित्र	१३	र	१७	५३	१३	५२	उफा	२७	४७	१७	५०	ऐं	४८	२४	व	१७	५३	२८	१९	६	४३	६	०२	३	२६	२७	कन्या		[illegible]	[illegible]	१९	भ.१३/५२ उ.२६/४६ या.सर्वा.०६/४३ उ.३०/४३ या.अमृत १७/५० उ.३०/४३ या.नरक काली चतुर्दशी दीपदानं C
वज्र	१४	चं	२२	३५	१५	४५	ह	३३	५४	२०	१७	वै	४९	३९	श	२२	३५	२८	१५	६	४३	६	०१	४	२७	२८	कन्या		[illegible]	[illegible]	२०	रूपचतुर्दशी अरुणोदय स्नान D महावीर स्वामी निर्वाण जैन महर्षि दयानंद पुण्य १४२ वीं
अमावस	३०	मं	२७	५८	१७	५५	चि	४०	३७	२२	५९	वि	५१	२१	ना	२७	५८	२८	११	६	४४	६	००	५	२८	२९	तुला ०७/११	०९/३६	[illegible]	[illegible]	२१	देवपितृ कार्ये भौमवती अमावस्या दीपावली पर्व महालक्ष्मी पूजा दीपोत्सव D







卐 निर्णयसागरीय गोचरग्रहाः 卐



अ. २७ कार्तिक कृष्णे ८ भौमे इष्ट ०।०

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	५	३	६	६	२	५	११	१०	४
अं.	२६	००	२०	१६	२९	०५	०२	२२	२२
क.	४३	२३	३७	३०	३७	५८	३६	०७	०७
वि.	५७	०८	०४	२९	३३	५२	०८	५८	५८
ग	५९	८०१	४१	८४	०५	७४	०४/०१	३	३
ति	२८	५०	४२	००	१४	३०	व	११	११
नक्षत्र	चित्रा २	पुन. ४	विशाखा १	स्वाति ३	पुन. ३	उफा. ३	पूभा. ४	पूभा. १	पूफा. ३

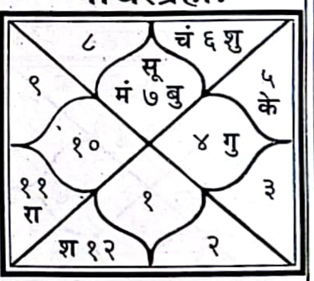
♣ तुला संक्रान्तिफलम् – तीर्थ संभागीय ♣

कार्तिक कृष्ण पक्षे ११ शुक्रे तुलायांऽर्कः प्र.वा.४ न.४ अस्य पुण्यकालः अद्यैव शुक्रवासरे सूर्योदय वेलातः पुण्यप्रदः वारनाम–मिश्रा शासकीय पशुपालन विकास योजना, पशु कल्याण केन्द्र वृद्धि, दुग्ध संग्राहक वर्ग को लाभद सुयोग। नक्षत्र नाम घोरा–आदिवासी, अल्पसंख्यक, निर्धन, असहाय, वयोवृद्ध, अनुसूचित जाति वर्ग हेतु शासकीय नवीन योजना लाभ। दिवा ३ याम व्यापिनी आयातक–निर्यातक, वैश्य उद्योगपति, स्वतंत्र कार्यकर्ता व्यापारी, शेयर बाजार कारक पक्ष हेतु कष्टद प्रभार सूचक। दक्षिणे गमन, नैऋत्यां दृष्टिः। संक्रांति वास मालीगृहे, कौलवकरणे, वाहन–वराह, उपवाहन–वृषभ, हरित वस्त्र, खड्गायुध, ताम्रपात्र, भिक्षान्न भक्षण, चंदन लेपन, सर्पजाति, बकुल पुष्प, मुक्ता भूषण, हरित कंचुकी, गतालकावस्था, उत्तिष्ठा, मुहूर्त–३०, धान्य गल्ला स्थिर समभाव, बैल, हरा वस्त्र, मोती, चंदन, इत्र, धनिया, सौंफ, हरे मूंग, मेहंदी, मसूर, मिर्च, खोपरा गोला, ताम्बा, रसायन द्रव्य; घी, शक्कर उन्नत धारणा, शुक्रोदय पूर्वे, वत्स पूर्वे, राहु उत्तरे, मूल भूमौ।

अ. २८ कार्तिक कृष्णे ३० भौमे इष्ट ०।०

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	६	५	६	६	३	५	११	१०	४
अं.	०३	२८	२५	२५	००	१४	०२	२१	२१
क.	४०	३३	३०	५७	१०	४१	०९	४५	४५
वि.	५८	५३	२१	३०	३९	०९	२५	४२	४२
ग	५९	७१७	४२	७६	०४	७४	०३/३३	३	३
ति	४३	३०	०९	२६	०२	४५	व	११	११
नक्षत्र	चित्रा ४	चित्रा २	विशाखा २	विशाखा २	पुन. ४	हस्त २	पूभा. ४	पूभा. १	पूफा. ३

卐 निर्णयसागरीय गोचरग्रहाः 卐



दीपावली सम्पूर्ण भारत का एक विशेष बड़ा पर्व है शास्त्रों के नियमाधीन हमें हर संभव प्रयास करना चाहिए कि दीपावली पर्व सम्पूर्ण भारत में एक ही दिन मान्य रहे। इस वर्ष प्रदोष काल में व्याप्ति अनुसार ज्योतिष्य गणना से पूरे भारत में दीपावली २ अलग अलग दिन मान्य रहेगी। जैसे जहाँ अमावस्या सिर्फ २०अक्टूबर को प्रदोष में व्याप्त है वहां सामान्य नियमानुसार २०को दीपावली और जहाँ अमावस्या २०और २१दोनों दिन प्रदोष में व्याप्त है वहां २१अक्टूबर को दीपावली – इस तरह सम्पूर्ण भारत में दो दिन दीपावली हो जाएगी। ऐसी स्थिति में हमें शास्त्र आज्ञानुसार धर्मसिन्धु में वर्णित **पुरुषार्थचिंतामणि के वचन** का प्रबलता से प्रयोग करना उचित प्रतीत होता है। इस मतानुसार सम्पूर्ण भारत में दीपावली २१ अक्टूबर को एक ही दिन मान्य रहेगी। हमारा यह निर्णय शास्त्रों के अधीन व्रत पर्व की एकरूपता हेतु प्रेषित किया गया है। **विद्वानजन पृष्ठ २३पढ़कर अपना निर्णय लेने हेतु स्वतंत्र हैं।**

कार्तिक शुक्ल पक्षः संवत् २०८२ रा.शाकः १९४७																		दिन मान		स्टेण्डर्ड टाईम सूर्योदय		सूर्यास्त		विविध तारीखें			चन्द्रराशि प्रवेश काल		सूर्योदय कालिक सूर्य स्पष्ट		अंग्रेजी ता.	✦अक्टूबर–नवम्बर सन् २०२५ ई. शरद–हेमंत ऋतुः रवि दक्षिणायणे–दक्षिणगोले✦
रवियोगाः	तिथि	वार	घटी	पल	घं.	मि.	नक्षत्र	घटी	पल	घं.	मि.	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	घटी	पल	घं.	मि.	घं.	मि.	बंग	मुस	भा	रा.घटी पल	घं.मि.	रा.अ.क.वि.	गति	ता.	♣सम्प्रति भद्रादि ग्रह – नक्षत्रचार समय भार.स्टे.टा.घण्टा–मिनटों में ही अंकित किये हैं♣
धूम्र	१	बु	३३	५२	२०	१७	स्वा	४७	४८	२५	५२	प्री	५३	२२	किं	००	५१	२८	०८	६	४४	६	००	६	२९	३०	तुला		६ ०४ ४० ४१	५९ ४५	२२	अन्नकूट गोवर्धन पूजा बलि पूजा जैन महावीर संवत् २५५२ प्रा.A
२८।५१ उ. ३०।४० या.	२	गु	४०	०६	२२	४७	वि	५५	१५	२८	५१	आ	५५	३६	बा	०६	५६	२८	०४	६	४५	५	५९	७	३०	का१	वृश्चि. ३८/२२	२२/०६	६ ०५ ४० २६	५९ ४७	२३	सर्वा. २८/५१ उ.चंद्रदर्शनं स्वात्यां रविः ३०/४० भाई दूज हेमन्त ऋतु प्रा. B
राक्षस	३	शु	४६	२६	२५	२०	अ	६०	००	-	-	सौ	५७	५२	तै	१३	१५	२८	०१	६	४६	५	५८	८	ज१	२	वृश्चिक		६ ०६ ४० १३	५९ ४९	२४	सर्वा. ३०/४६ या.संयुक्त राष्ट्र दि.वृश्चिके बुधः १२/३७ जमादि अव्वल मास ५
०७।५१ उ.	४	श	५२	३७	२७	४९	अ	०२	४४	०७	५२	शो	५९	५८	व	१९	३३	२७	५७	६	४६	५	५७	९	२	३	वृश्चिक		६ ०७ ४० ०२	५९ ५१	२५	भ. १४/३५ उ. २७/४९ या.
१०।४७ या.	५	र	५८	१६	३०	०५	ज्ये	१०	००	१०	४७	अ	६०	००	ब	२५	३१	२७	५३	६	४७	५	५६	१०	३	४	धनु १०/००	१०/४७	६ ०८ ३९ ५२	५९ ५३	२६	सर्वा. १०/४७ उ. ३०/४७ या.सौभाग्य ज्ञान लाभ पांडव पंचमी C
१३।२८ उ.	६	चं	६०	००	-	-	मू	१६	४०	१३	२८	अ	०१	३७	कौ	३०	४७	२७	५०	६	४७	५	५५	११	४	५	धनु		६ ०९ ३९ ४५	५९ ५४	२७	सूर्यषष्ठी–डालाछठ वृश्चिके भौमः १५/४१ अनुराधायां बुधः ०९/३१ चित्रायां शुक्रः २९/१०
१५।४५ या.	६	मं	०३	००	०८	००	पूषा	२२	२३	१५	४५	सु	०२	३६	तै	०३	००	२७	४६	६	४८	५	५५	१२	५	६	मकर ३८/३७	२२/१५	६ १० ३९ ३९	५९ ५६	२८	चौमासी अष्टान्हिका विधान प्रा.जैन
वज्र	७	बु	०६	२७	०९	२४	उषा	२६	४३	१७	३०	धृ	०२	३५	व	०६	२७	२७	४३	६	४९	५	५४	१३	६	७	मकर		६ ११ ३९ ३५	५९ ५८	२९	भ. ०९/२४ उ. २१/५१ या.सहस्त्रार्जुन ज.माधवानंदपुरी पु.पाली
१८।३४ उ.	८	गु	०८	१४	१०	०७	श्र	२९	२१	१८	३४	शू	०१/५८	१८/३५	ब	०८	१४	२७	३९	६	४९	५	५३	१४	७	८	कुंभ ५९/५८	३०/४८	६ १२ ३९ ३२	५९ ५९	३०	पंचक ३०/४८ उ.गोपाष्टमी अक्षय आंवला नवमी
पूर्णरवि	९	शु	०८	०५	१०	०४	ध	३०	०३	१८	५१	वृ	५४	१४	कौ	०८	०५	२७	३६	६	५०	५	५२	१५	८	९	कुंभ		६ १३ ३९ ३२	६० ०१	३१	इंदिरा गांधी पुण्य सरदार पटेल ज.राष्ट्रीय एकता दि.
१८।२१ या.	१०	श	०५	५४	०९	१२	श	२८	४५	१८	२१	ध्रु	४८	१७	ग	०५	५४	२७	३३	६	५१	५	५२	१६	९	१०	कुंभ		६ १४ ३९ ३२	६० ०२	न१	भ. २०/२८ उ.देवप्रबोधिनी ११ व्रतं स्मार्त्त (गृहस्थ) चातुर्मासपूर्णता D
चर	११	र	०१	४२	०७	३२	पूभा	२५	३१	१७	०४	व्या	४०	४८	वि	०१	४२	२७	२९	६	५१	५	५१	१७	१०	११	मीन ११/३०	११/२७	६ १५ ३९ ३५	६० ०४	२	भ. ०७/३२ या.सर्वा. १७/०४ उ. ३०/५२ या.तुलसी विवाह E
क्षय	१२	र	५५	४१	२९	०८	0	०	०	०	०	0	०	०	0	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0		० ०	०	०	E तुलायां शुक्रः १३/१४ देव प्रबोधिनी ११ व्रतं वै.नि.
१५।०६ उ.	१३	चं	४८	०६	२६	०६	उभा	२०	३५	१५	०६	ह	३१	५९	कौ	२२	०३	२७	२६	६	५२	५	५०	१८	११	१२	मीन		६ १६ ३९ ३९	६० ०६	३	सोम प्रदोष व्रतं जैन दिवाकर चौथमल जन्म जैन
१२।३५ या.	१४	मं	३९	२०	२२	३७	रे	१४	१५	१२	३५	व	२२	०५	ग	१३	५०	२७	२३	६	५३	५	५०	१९	१२	१३	मेष १४/१५	१२/३५	६ १७ ३९ ४४	६० ०८	४	भ. २२/३७ उ.सर्वा.अमृत १२/३५ उ. ३०/५३ या.पंचक १२/३५ या.वैकुण्ठ चतुर्दशी F
पूर्णिमा	१५	बु	२९	५०	१८	४९	अ	०६/५९	५८/१२	०९/३०	४०/३४	सि	११	२७	वि	०४	३८	२७	१९	६	५३	५	४९	२०	१३	१४	मेष		६ १८ ३९ ५२	६० ०९	५	भ. ०८/४५ या.सर्वा. ३०/३४ उ. ३०/५४ या.पूर्णिमा व्रतं कार्तिक स्नान +चातुर्मास पूर्णता G








卐 निर्णयसागरीय गोचरग्रहाः 卐



अ. २९ कार्तिक शुक्ले ८ गुरौ इष्ट ०।०

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	६	०९	७	७	३	५	११	१०	४
अं.	१२	१७	०१	०६	००	२५	०१	२१	२१
क.	३९	०२	५१	२२	४०	५४	४०	१७	१७
वि.	३२	२०	५७	४४	२०	५६	०७	०४	०४
गति	५९ ५९	७७८ २९	४२ ४२	५७ ५०	०२ २२	७४ ५९	०२ ५१ व	३ ११	३ ११
नक्षत्र	स्वाति २	श्रवण ३	विशाखा ४	अनु. १	पुन. ४	चित्रा १	पू.भा. ४	पू.भा. १	पू.फा. ३

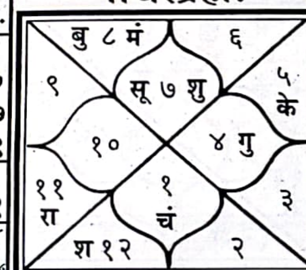
♣ ग्रह गोचरीय फलश्रुतिः ♣

देव शनि की वक्रता, तेजी सूत कपास। दलहन में मंदी नहीं, गणना गणित विकास ॥ क्रूरवार तेजी करे, मावस भौम कुसंग। मंदी से तेजी बने, वस्तु विविध प्रसंग ॥ निर्यातक गति न्यूनता, आयात रूप नवदेश। दलहन तिलहन नित्य का, उन्नत भाव निवेश ॥ वार पांच बुध देव के, प्रतिपदा पूर्णिमा लक्ष। संस्था सेवा वर्ग की, जनसेवा में दक्ष ॥ पवन वेग दीपोत्सवे नहीं, शकुन सुख पक्ष। वायु शून्यता मानिये, भावी सुखद सुलक्ष ॥ कार्तिक शुक्ल एकादशी, मेघ गाज आकाश। आषाढ मास वर्षा विपुल, निर्णय शकुन प्रकाश ॥ कृतिका कार्तिक पूर्णिमा नहीं सुखद संयोग। कृषि साधना पक्ष में , मनवा मंद प्रयोग ॥ कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा, मेघ घटा आकाश। तिलहन घी तेल में, तेजी का प्रकाश ॥

अ. ३० कार्तिक शुक्ले १५ बुधे इष्ट ०।०

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	६	०	७	७	३	६	११	१०	४
अं.	१८	११	०६	११	००	०३	०१	२०	२०
क.	३९	३३	०९	११	५१	२५	२४	५७	५७
वि.	५२	४७	०१	४०	३९	१३	१९	५९	५९
गति	६० ०९	११८ ५२	४३ ०३	३१ १७	०१ १३	७५ ०७	०२ ११ व	३ ११	३ ११
नक्षत्र	स्वाति ४	अश्वि. ४	अनु. १	अनु. ३	पुन. ४	चित्रा ४	पू.भा. ४	पू.भा. १	पू.फा. ३

卐 निर्णयसागरीय गोचरग्रहाः 卐



A गुजराती नववर्ष प्रा.गौतम स्वामी रास वाचन जैन **B** यमद्वितीया विश्वकर्मा पूजा चित्रगुप्त पूजा वल्लभ सूरि जन्म जैन **रा.कार्तिक मास प्रा.वृश्चिके भानुः ०९।२१** संग सू.सू.स्त्री.नपुं.वाहन मंडूक वर्षा श्रेष्ठ
C आचार्य जिन उदयसागर पुण्यः खरतरगच्छ जैन **D नवम्बर मास ११ ता. ३०** प्रा.अनुराधा भौमः ०८।१६ भीष्म पंचक व्रतारंभः **F** चौमासी चौदस **चौमासी अष्टान्हिका पूर्ण**
G निम्बार्क ज.गुरु नानक ज.मेला पुष्कर राज.गढ़ गंगा तीर्थ भीष्म पंचक व्रत पूर्ण श्री सिद्धाचल यात्रा जैन

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्षः संवत् २०८२ रा.शाकः १९४७

रवियोगाः	तिथि	वार	घटी	पल	घं.	मि.	नक्षत्र	घटी	पल	घं.	मि.	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	दिनमान पल	स्टेण्डर्ड टाईम सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	विविध तारीखें बंग	मुस	भा	चन्द्रराशि प्रवेश काल रा.घटी पल	घं.मि.	सूर्योदय कालिक सूर्य स्पष्ट रा.अं.क.वि.	गति	अंग्रेजी ता.
लुम्बक	१	गु	२०	०३	१४	५५	कृ	५१	२५	२७	२८	व्य	००/४९	२७/२८	कौ	२०	०३	२७	१६	६	५४	५	४८	२१	१४	१५	वृषभ १२/१३	११/४७	[illegible]	[illegible]	६
मित्र	२	शु	१०	२८	११	०६	रो	४४	०७	२४	३४	प	३८	५२	ग	१०	२८	२७	१३	६	५५	५	४८	२२	१५	१६	वृषभ		[illegible]	[illegible]	७
चौ.व्रत	३	श	०१	३३	०७	३३	मृ	३७	४८	२२	०२	शि	२९	०१	वि	०१	३३	२७	१०	६	५५	५	४७	२३	१६	१७	मिथुन १०/४८	११/१४	[illegible]	[illegible]	८
क्षय	४	श	५३	४७	२८	२६	0	०	०	०	०	0	०	०	0	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0		० ०	०	०
ध्वांक्ष	५	र	४७	२९	२५	५६	आ	३२	५२	२०	०५	सि	२०	१५	कौ	२०	२४	२७	०७	६	५६	५	४७	२४	१७	१८	मिथुन		[illegible]	[illegible]	९
१८।४८ उ.	६	चं	४३	००	२४	०९	पुन	२९	३९	१८	४८	सा	१२	५०	ग	१४	५९	२७	०४	६	५७	५	४६	२५	१८	१९	कर्क १५/१६	१३/०३	[illegible]	[illegible]	१०
१८।१८ या.	७	मं	४०	३०	२६	०९	पु	२८	२१	१८	१८	शु	०६	५७	वि	११	२८	२७	०१	६	५७	५	४६	२६	१९	२०	कर्क		[illegible]	[illegible]	११
राक्षस	८	बु	४०	०२	२२	५६	श्ले	२९	०३	१८	३५	शु	०२/५९	४०/५९	बा	१०	००	२६	५८	६	५८	५	४५	२७	२०	२१	सिंह २९/०३	१८/३५	[illegible]	[illegible]	१२
मुसल	९	गु	४१	२९	२३	३५	म	३१	३८	१९	३८	ऐं	५८	४१	तै	१०	३१	२६	५५	६	५९	५	४५	२८	२१	२२	सिंह		[illegible]	[illegible]	१३
सिद्धि	१०	शु	४४	३७	२४	५०	पूफा	३५	५३	२१	२१	वै	५८	३५	व	१२	५१	२६	५२	७	००	५	४४	२९	२२	२३	कन्या ५२/१०	२७/५२	[illegible]	[illegible]	१४
ए.व्रत	११	श	४९	०४	२६	३८	उफा	४१	२५	२३	३५	वि	५९	२४	ब	१६	४१	२६	४९	७	००	५	४४	३०	२३	२४	कन्या		[illegible]	[illegible]	१५
मानस	१२	र	५४	२७	२८	४८	ह	४७	५५	२६	११	प्री	६०	००	कौ	२१	३९	२६	४६	७	०१	५	४४	मा१	२४	२५	कन्या		[illegible]	[illegible]	१६
प्रदोष	१३	चं	६०	००	-	-	चि	५४	५९	२९	०२	प्री	००	५२	ग	२७	२३	२६	४३	७	०२	५	४३	२	२५	२६	तुला २१/२३	१५/३५	[illegible]	[illegible]	१७
केतु	१३	मं	००	२५	०७	१३	स्वा	६०	००	-	-	आ	०२	४६	व	००	२५	२६	४१	७	०३	५	४३	३	२६	२७	तुला		[illegible]	[illegible]	१८
धूम्र	१४	बु	०६	४२	०९	४४	स्वा	०२	२०	०७	५९	सौ	०४	५२	श	०६	४२	२६	३८	७	०३	५	४३	४	२७	२८	वृश्चि. ५२/५७	२८/१४	[illegible]	[illegible]	१९
अमावस	३०	गु	१३	०३	१२	१७	वि	०९	४७	१०	५९	शो	०७	०१	ना	१३	०३	२६	३६	७	०४	५	४२	५	२८	२९	वृश्चिक		[illegible]	[illegible]	२०

✦ नवंबर सन् २०२५ ई. हेमंत ऋतुः रवि दक्षिणायणे–दक्षिणगोले ✦

♣ सम्प्रति भद्रादि ग्रह – नक्षत्रचार समय भार.स्टे.टा.घण्टा–मिनटों में ही अंकित किये हैं ♣

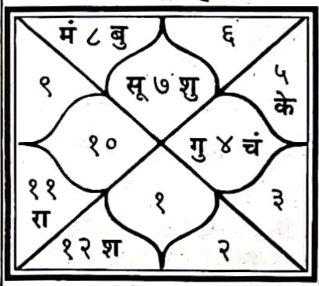
- ६ विशाखायां रविः १४/५२ पद्मक योगः १४/५२ उ. २७/२८ या.भौमास्त प. २३/५२
- ७ भ. २१/१७ उ.स्वात्यां शुक्रः २१/०६
- ८ भ. ०७/३३ या.चतुर्थी व्रतं चंद्रोदय रात्रि २०/२३
- ० A खरतरगच्छ मांडवला जहाज मंदिर मेला जैन
- ९ ॐ श्री मायानंद चैतन्य ज. सुविधानाथ जन्म व दीक्षा जैन वक्री बुधः २४/३०
- १० भ. २४/०९ उ.सर्वा. १८/४८ उ. ३०/५७ या.
- ११ भ. ११/३३ या.सर्वा. १८/१८ उ. ३०/५८ या.वक्री गुरुः २१/५१ जिनकांति सूरी पुण्यः A
- १२ श्री कालभैरवाष्टमी–भैरव समुत्पत्तिः बुधास्त प. १८/४१
- १३ श्रीजाम्भोजी पुण्य दि.विश्नोई पंथ
- १४ भ. १२/०८ उ. २४/५० या.बालदिवस नेहरू ज.श्रीमहावीर स्वामी दीक्षा कल्याणक
- १५ उत्पत्ति ११ व्रतं सर्वे.श्री पद्मप्रभु पुण्य जैन
- १६ सर्वा.अमृत ०७/०१ उ. २६/११ या.वृश्चिकेऽर्क १३/३७ बं.मार्गशीर्ष मास प्रा.
- १७ सोमप्रदोष व्रतं
- १८ भ. ०७/१३ उ. २०/२८ या.मास शिवरात्रि विशाखायां शुक्रः १२/१८
- १९ पितृकार्ये अमावस्या अनुराधायां रविः २०/५६ इंदिरा गांधी ज.ज्येष्ठायां भौमः १९/२८
- २० सर्वा. १०/५९ उ. देवकार्ये अमावस्या विशाखायां बुधः २८/१४







卐 निर्णयसागरीय गोचरग्रहाः 卐



अ. ३१ मार्गशीर्ष कृष्णे ८ बुधे इष्ट ०।०

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	६	३	७	७	३	६	११	१०	४
अं.	२५	२३	११	१२	००	१२	०१	२०	२०
क.	४१	४०	११	१४	५५	११	१०	३५	३५
वि.	३७	२७	३९	४४	५९	३२	०५	४३	४३
ग	६०	७७८	४३	२६/३१	००/११	७५	०१/३९	३	३
ति	२३	०८	२९	व	व	१६	व	११	११
नक्षत्र	विशाखा २	आर्द्रा ३	अनु. ३	अनु. ३	पुन. ४	स्वाति २	पूभा. ४	पूभा. १	पूफा. ३

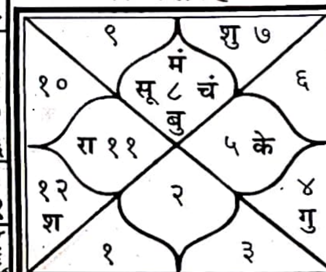
♣ वृश्चिक संक्रान्ति फलम् – रण संभागीय ♣

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्षे १२ सूर्ये वृश्चिकेऽर्कः प्र.वा.३ न.४ अस्य पुण्यकालः अद्यैव रविवासरे सूर्योदय वेलातः पुण्यप्रदः वार नाम घोरा–सुदूर जंगल–पर्वत निवासी, आदिवासी, निर्धन, वयोवृद्ध, अनुसूचित जनजाति हेतु शासकीय सुलाभ, नवीन योजना, नक्षत्र नाम ध्वांक्षी–स्वतंत्र कार्यकारक, आयात–निर्यात, उद्योग संचालक, वैश्य–व्यापारीगण हेतु हर्षवर्धक लाभद सुयोग। दिवा ३ याम व्यापिनी आयातक–निर्यातक, वैश्य, उद्योगपति, स्वतंत्र कार्यकर्ता–व्यापारी–शेयर बाजार कारक पक्ष हेतु कष्टद प्रभार सूचक दक्षिणे गमन, नैऋत्यां दृष्टिः, संक्रान्ति वासनिवास शाह, वैश्यगृहे, कौलवकरणे, वाहन–वराह, उपवाहन–वृषभ, हरित वस्त्र, खड्गायुध, ताम्रपात्र, भिक्षान्न भक्षण, चंदन लेपन, सर्पजाति, बकुलपुष्प, मुक्ता भूषण, हरित कंचुकी, गतालकावस्था, उत्तिष्ठा मुहूर्त–३०, धान्य–गल्ला स्थिर समभाव, हरा वस्त्र, मोती, चंदन, इत्र, धनिया, सौंफ, हरे मूंग, मेहंदी, मसूर, मिर्च, खोपरा गोला, ताम्बा, रसायन द्रव्य घी, शक्कर, उन्नत धारणा। शुक्रोदय पूर्वे, वत्स दक्षिणे, राहु पूर्वे, मूल पाताले।

अ. ३२ मार्गशीर्ष कृष्णे ३० गुरौ इष्ट ०।०

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	७	७	७	७	३	६	११	१०	४
अं.	०३	०१	१७	०४	००	२२	००	२०	२०
क.	४५	२४	०१	३१	४८	१४	५९	१०	१०
वि.	३४	००	०९	५२	५७	१२	४८	१६	१६
ग	६०	७१२	४३	८१/२०	०१/४७	७५	००/४९	३	३
ति	३७	२४	५७	व	व	२४	व	११	११
नक्षत्र	अनु. १	विशा. ४	ज्ये. १	अनु. १	पुन. ४	विशा. १	पूभा. ४	पूभा. १	पूफा. ३

卐 निर्णयसागरीय गोचरग्रहाः 卐



● **आयुवृद्धि सूत्र** ● अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेवितः। चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुविद्या यशोबलम्॥ ● **व्यवहार नीति सूत्र वचन** ● रे रे चातक ! सावधान मनसा मित्र ! क्षणं श्रूयतामम्भोदा बहवो वसन्ति गगने सर्वेऽपि नेतादृशाः। केचिद् वृष्टिभिराद्रयन्ति वसुधां गर्जन्ति केचिद् वृथा, यं यं पश्यसि तस्य तस्य पुरतो मा ब्रूहि दीनं वचः॥ ● **सुभाषित नीतिवचन सूत्र** ● यदि सन्ति गुणाः पुसां विकसन्त्येव ते स्वयम्। न हि कस्तूरिकामोदः शपथेन विभाव्यते॥ अनन्तशास्त्रं बहुला च विद्या अल्पश्च कालो बहुविघ्नता च। यत्सारभूतं तदुपासनीयं हंसो यथा क्षीरमिवाम्बुमध्यात्। धनहीनो न हीनश्च धनिकः स सुनिश्चयः। विद्यारत्नेन यो हीनः सः हीनः सर्ववस्तुषु॥

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्षः संवत् २०८२ रा.शाकः १९४७																		दिनमान		स्टेण्डर्ड टाईम सूर्योदय		सूर्यास्त		विविध तारीखें			चन्द्रराशि प्रवेश काल			सूर्योदय कालिक सूर्य स्पष्ट		अंग्रेजी ता.
रवियोगाः	तिथि	वार	घटी	पल	घं.	मि.	नक्षत्र	घटी	पल	घं.	मि.	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	घटी	पल	घं.	मि.	घं.	मि.	बंग	मुस	भा	रा.	घटी पल	घं.मि.	रा.अं.क.वि.	गति	
राक्षस	१	शु	१९	१७	१४	४८	अ	१७	०८	१३	५६	अ	०९	०६	ब	१९	१७	२६	३३	७	०५	५	४२	६	२९	३०	वृश्चिक			७ ०४ ४६ ११	६० ३९	२१
मुसल	२	श	२५	१६	१७	१२	ज्ये	२४	१३	१६	४७	सु	११	००	कौ	२५	१६	२६	३१	७	०६	५	४२	७	३०	१मा	धनु	२४/१३	१६/४७	७ ०५ ४६ ४१	६० ४०	२२
११।२८ उ.	३	र	३०	४७	१९	२५	मू	३०	५४	१९	२८	धृ	१२	३५	ग	३०	४७	२६	२८	७	०६	५	४२	८	१	२	धनु			७ ०६ ४७ २१	६० ४२	२३
२१।५४ या.	४	चं	३५	३९	२१	२३	पूषा	३६	५६	२१	५४	शू	१३	४४	ब	०३	१८	२६	२६	७	०७	५	४२	९	२	३	मकर	५३/२०	२८/२७	७ ०७ ४८ ११	६० ४३	२४
२३।५८ उ.	५	मं	३९	३४	२२	५८	उषा	४२	०५	२३	५८	गं	१४	१४	ब	०७	४४	२६	२४	७	०८	५	४१	१०	३	४	मकर			७ ०८ ४८ ५३	६० ४४	२५
२५।३३ या.	६	बु	४२	१५	२४	०३	श्र	४६	०१	२५	३३	वृ	१३	५४	कौ	११	०४	२६	२१	७	०९	५	४१	११	४	५	मकर			७ ०९ ४९ ३७	६० ४५	२६
श्रीवत्स	७	गु	४३	२३	२४	३१	ध	४८	२७	२६	३२	ध्रु	१२	२९	ग	१३	००	२६	१९	७	०९	५	४१	१२	५	६	कुंभ	१७/२५	१४/०७	७ १० ५० २२	६० ४६	२७
२६।५० उ.	८	शु	४२	४४	२४	१६	श	४९	०९	२६	५०	व्या	०९	४८	वि	१३	१७	२६	१७	७	१०	५	४१	१३	६	७	कुंभ			७ ११ ५१ ०७	६० ४७	२८
पूर्णरवि	९	श	४०	१२	२३	१६	पूभा	४७	५९	२६	२३	ह	०५	४०	बा	११	४२	२६	१५	७	११	५	४१	१४	७	८	मीन	३३/२७	२०/३४	७ १२ ५१ ५४	६० ४८	२९
२५।११ या.	१०	र	३५	४५	२१	३०	उभा	४४	५८	२५	११	व	००/५२	०१/५६	तै	०८	११	२६	१३	७	१२	५	४१	१५	८	९	मीन			७ १३ ५२ ४१	६० ४९	३०
ए.व्रत	११	चं	२९	३३	१९	०२	रे	४०	१५	२३	१८	व्य	४४	२६	व	०२	५१	२६	१२	७	१२	५	४१	१६	९	१०	मेष	४०/१५	२३/१८	७ १४ ५३ ३०	६० ५०	दि१
२०।५२ उ. २५।१४ या.	१२	मं	२१	५१	१५	५८	अ	३४	०६	२०	५२	व	३४	४८	बा	२१	५१	२६	१०	७	१३	५	४१	१७	१०	११	मेष			७ १५ ५४ २०	६० ५१	२
१८।०० उ.	१३	बु	१३	०१	१२	२६	भ	२६	५५	१८	००	प	२४	१८	तै	१३	०१	२६	०८	७	१४	५	४१	१८	११	१२	वृषभ	४०/०१	२३/१४	७ १६ ५५ १०	६० ५२	३
१४।५४ या.	१४	गु	०३	२९	०८	३८	कृ	१९	०९	१४	५४	शि	१३	१९	व	०३	२९	२६	०७	७	१५	५	४१	१९	१२	१३	वृषभ			७ १७ ५६ ०१	६० ५३	४
क्षय	१५	गु	५३	४४	२८	४४	0	०	०	०	०	0	०	०	0	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0			० ०	०	०

✦ नवम्बर–दिसम्बर सन् २०२५ ई. हेमंत ऋतुःरवि दक्षिणायणे–दक्षिणगोले ✦

♣ सम्प्रति भद्रादि ग्रह – नक्षत्रचार समय भार.स्टे.टा.घण्टा–मिनटों में ही अंकित किये हैं ♣

२१ सर्वा. १३/५६ या. **A** तुलायां बुधः २०/०७ जमादिउल आखिरमास ६मुस.

२२ **चंद्रदर्शन** रा.मार्गशीर्ष मास प्रा.धनुषि भानुः ०७/०६

२३ सर्वा. ०७/०६ उ. १९/२८ या.शतभिषायां४ राहुः पूफायां२ केतुः १०/१० **A**

२४ भ. ०८/२६ उ. २१/२३ या.





२५ **श्रीराम जानकी विवाहोत्सवः**

२६ **चम्पा स्कंद–गुह षष्ठी** वृश्चिके शुक्रः ११/२२ बुधोदय पू. ३०/०१

२७ भ. २४/३१ उ.**पंचक** १४/०७ उ.**मित्र सप्तमी नरसी मेहता ज.**



२८ भ. १२/२९ या.मार्गी शनिः ०९/४५ अनुराधायां शुक्रः २७/००

२९ मार्गी बुधः २३/०८ **जैन दिवाकर चौथमल पुण्यः**

३० सर्वा. ०७/१२ उ. २५/११ या. **B** मौन ११ व्रतं दिसम्बर मास १२ ता.३१ प्रा.

दि१ भ. ०८/२१ उ. १९/०२ या.**पंचक** २३/१८ **या.मोक्षदा ११ व्रतं सर्वे.श्रीगीता ज.B**

२ सर्वा.अमृत ०७/१३ उ. २०/५२ **या.भौमप्रदोष व्रतं** ज्येष्ठायां रविः २५/१४

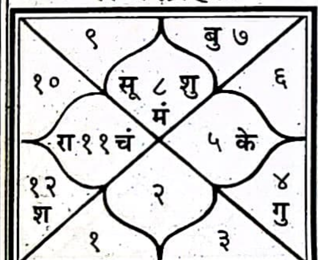


३ सर्वा. १८/०० उ. ३१/१५ या.**पिशाच मोचन श्राद्ध**

४ भ. ०८/३८ उ. १८/४१ या.**पूर्णिमा व्रतं** श्रीदत्तमहाप्रभु ज.**C**

० **C** संभवनाथ जन्म जैन नौसेना दि.

卐 निर्णयसागरीय गोचरग्रहाः 卐



अ. ३३ मार्गशीर्ष शुक्ले ८ शुक्रे इष्ट ०।०

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	७	१०	७	६	३	७	११	१०	४
अं.	११	०९	२२	२६	००	०२	००	१९	१९
क.	५१	१०	५४	४४	२९	१७	५६	४४	४४
वि.	०७	४४	१९	३३	११	३७	१५	४९	४९
ग	६०	७१५	४४	१२ ५६ व	०३ २० व	७५	००	३	३
ति	४७	१३	२३			२८	०३	११	११
नक्षत्र	अनु. ३	शत. १	ज्येष्ठा २	विशा. ३	पुन. ४	विशा. ४	पूभा. ४	शत. ४	पूफा. २

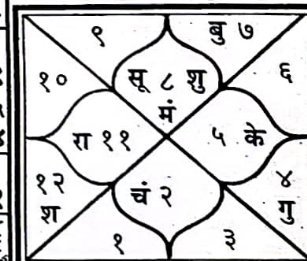
♣ ग्रह गोचरीय फलश्रुतिः ♣

अमा पूर्णिमा वार शुभ, बना सुखद अधियोग। सुख सुभिक्ष की धारणा, निर्णय शास्त्र सुयोग ॥ दिशा पश्चिम दुःख आपदा, विग्रह प्रांत विरोध। वार पांच गुरुदेव के, नीति न्याय अवबोध। चक्रवात आँधी पवन, सागर देश विदेश। संहारक रचना गति, जन धन मध्य विशेष ॥ मंगसर जिन नक्षत्र में, मेघ गाज नभ संग। आषाढ मास वर्षा गति, उन नक्षत्र प्रसंग ॥ मंगसर चौदस मावस, घटा छावे आकाश। महंगे भावों में बिके, गल्ला चारा घास ॥ अगहन कृष्णा पंचमी, मेघ गाज का साज। वर्षे चातुर्मास में, निर्णय शकुन विराज ॥ अगहन शुक्ला अष्टमी, मेघ गाज अभिलक्ष। निर्णय शकुन शास्त्र का, श्रावण वर्षा दक्ष ॥ मंगसर कृष्णा त्रयोदशी, पंचम दिवस सुलक्ष। मेघ गाज हिम गर्जना, लक्षण सौख्य सभिक्ष ॥

अ. ३४ मार्गशीर्ष शुक्ले १४ गुरौ इष्ट ०।०

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	७	१	७	६	३	७	११	१०	४
अं.	१७	०५	२७	२७	००	०९	००	१९	१९
क.	५६	०६	२१	५९	०६	५०	५८	२५	२५
वि.	०१	११	२६	१९	२२	२७	०८	४४	४४
ग	६०	९२०	४४	४२	०४ २६ व	७५	००	३	३
ति	५२	५१	४२	१८		२९	४१	११	११
नक्षत्र	ज्येष्ठा १	कृत्ति. ३	ज्येष्ठा ४	विशाखा ३	पुन. ४	अनु. २	पूभा. ४	शत. ४	पूफा. २

卐 निर्णयसागरीय गोचरग्रहाः 卐



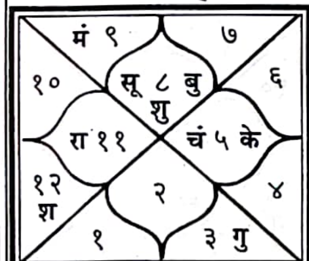
● **यात्रा प्रश्नफल** ● यात्रा के दिन की तिथि, नक्षत्र तथा वारों की संख्या जोड़कर तीन स्थान पर अलग–अलग रखें व क्रमशः ७–८–३ से भाग देवें। यदि तीनों स्थानों पर कोई अंक आवे तो यात्रा शुभ रहेगी, परन्तु प्रथम पर ० बचे तो अपव्यय, व्यर्थ भ्रमण और तीसरे में ० बचे तो विवाद विग्रह, दूसरी जगह ० रहते कष्ट, धनहानि समझें। **थवाड़ योग** – सूर्य नक्षत्र चार से दिन नक्षत्र तक की संख्या को ३ से गुणा करें, इसमें तिथि संख्या जोड़ें तथा ७ का भाग देवें। शेष यदि ३ बचे तो इसे घबाड़ योग दिवस बनता है। इन योग दिवस को सर्वकार्य में शुभ फलद मान्य किया है। **विशेष प्रश्नफल कथन** हेतु ये साहित्य पठन मनन योग्य–**प्रश्न भुवन दीपक** मू.१००/–रू., **प्रश्न ज्ञान** मू.१००/–रू. तथा **गुप्त प्रश्नोत्तरी** १५०/–रू., **प्रश्न चन्द्र प्रकाश** ३००/–रू. का प्राप्त है। यथायोग्य मनीआर्डर भेजकर मंगा लेवें। पता – **निर्णयसागर पुस्तकालय** – नीमच (म.प्र.) फोन – 07423-220520, मो.9425974174

पौष कृष्ण पक्षः संवत् २०८२ रा.शाकः १९४७																		दिन मान		स्टेण्डर्ड टाईम सूर्योदय		सूर्यास्त		विविध तारीखें			चन्द्रराशि प्रवेश काल		सूर्योदय कालिक सूर्य स्पष्ट		अंग्रेजी ता.	✦दिसम्बर सन् २०२५ ई. हेमंत ऋतुःरवि दक्षिणायणे–दक्षिणगोले✦
रवियोगाः	तिथि	वार	घटी	पल	घं.	मि.	नक्षत्र	घटी	पल	घं.	मि.	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	घटी	पल	घं.	मि.	घं.	मि.	बंग	मुस	भा	रा.घटी पल	घं.मि.	रा.अ.क.वि.	गति	ता.	♣सम्प्रति भद्रादि ग्रह – नक्षत्रचार समय भार.स्टे.टा.घण्टा–मिनटों में ही अंकित किये हैं♣
मित्र	१	शु	४४	१२	२४	५६	रो	११	१८	११	४६	सि	०२/५१	१२/२४	बा	१८	५३	२६	०५	७	१५	५	४१	२०	१३	१४	मिथुन ३७/३१	२२/१५	७ १८ ५६ ५४	६० ५४	५	पुनर्वसौ ३ मिथुने गुरूः १७/२४
वज्र	२	श	३५	२६	२१	२६	मृ	०३/५७	५२/२४	०८/३०	४९/१३	शु	४१	१४	तै	०९	४१	२६	०४	७	१६	५	४१	२१	१४	१५	मिथुन		७ १९ ५७ ४७	६० ५५	६	वृश्चिके बुधः २०/४४ **A** मूले धनुषि भौमः २०/१७ सशस्त्र सेना झंडा दि.
चौ.व्रत	३	र	२७	५२	१८	२५	पुन	५२	१८	२८	१२	शु	३२	०६	व	०१	२७	२६	०२	७	१७	५	४२	२२	१५	१६	कर्क ३८/२५	२२/३८	७ २० ५८ ४२	६० ५६	७	भ. ०७/५१ उ. १८/२५ या.सर्वा. २८/१२ उ.रवि पुष्य २८/१२ उ. ३१/१७ या.चतुर्थी व्रतं चंद्रोदय रात्रि २०/१९ **A**
धाता	४	चं	२१	५६	१६	०४	पु	४८	५८	२६	५३	ब्र	२४	१९	बा	२१	५६	२६	०१	७	१७	५	४२	२३	१६	१७	कर्क		७ २१ ५९ ३८	६० ५७	८	सर्वा. २६/५३ या.**श्रीदीपनारायण पुरी पुण्य** खाटू बड़ी (राज.)
२६।२३ उ.	५	मं	१७	५९	१४	२९	श्ले	४७	४२	२६	२३	ऐं	१८	०८	तै	१७	५९	२६	००	७	१८	५	४२	२४	१७	१८	सिंह ४७/४२	२६/२३	७ २३ ०० ३४	६० ५८	९	सर्वा. ०७/१८ उ. २६/२३ या.अनुराधायां बुधः २६/२७ ज्येष्ठायां शुक्रः १७/२८
२६।४४ या.	६	बु	१६	११	१३	४७	म	४८	३४	२६	४४	वै	१३	३८	व	१६	११	२५	५९	७	१९	५	४२	२५	१८	१९	सिंह		७ २४ ०१ ३३	६० ५९	१०	भ. १३/४७ उ. २५/४६ या.विश्व मानवाधिकार दि.
गद	७	गु	१६	३६	१३	५८	पूफा	५१	३१	२७	५६	वि	१०	५१	ब	१६	३६	२५	५८	७	१९	५	४२	२६	१९	२०	सिंह		७ २५ ०२ ३२	६१ ००	११	**कालाष्टमी**
शुभ	८	शु	१९	०३	१४	५७	उफा	५६	१५	२९	५०	प्री	०९	४०	कौ	१९	०३	२५	५७	७	२०	५	४३	२७	२०	२१	कन्या ०७/३१	१०/२१	७ २६ ०३ ३२	६१ ०२	१२	जिन हरिसागर पुण्य जैन
मृत्यु	९	श	२३	१५	१६	३८	ह	६०	००	-	-	आ	०९	४९	ग	२३	१५	२५	५६	७	२१	५	४३	२८	२१	२२	कन्या	-	७ २७ ०४ ३४	६१ ०३	१३	भ. २९/४१ उ.
मानस	१०	र	२८	४२	१८	५०	ह	०२	२३	०८	१८	सौ	१०	५९	वि	२८	४२	२५	५५	७	२१	५	४३	२९	२२	२३	तुला ३५/५१	२१/४२	७ २८ ०५ ३६	६१ ०४	१४	भ. १८/५० या.सर्वा.अमृत ०७/२१ उ. ०८/१८ या.**पौषी १० जैन पार्श्वनाथ ज.जैन**
ए.व्रत	११	चं	३४	५७	२१	२१	चि	०९	२७	११	०९	शो	१२	५०	ब	०१	४५	२५	५५	७	२२	५	४४	पौ१	२३	२४	तुला		७ २९ ०६ ४०	६१ ०५	१५	**सफला ११ व्रतं सर्वे.मूले रविः २८/१९ धनुष्यर्कः २८/१९ ★ शुक्रास्तः पू. १४/५१ B**
केतु	१२	मं	४१	२९	२३	५८	स्वा	१६	५८	१४	१०	अ	१५	०१	कौ	०८	११	२५	५४	७	२२	५	४४	२	२४	२५	तुला		८ ०० ०७ ४४	६१ ०५	१६	**B मलमास प्रारंभ सरदार पटेल पुण्य बं.पौष मास प्रा.**
प्रदोष	१३	बु	४७	५५	२६	३३	वि	२४	३१	१७	११	सु	१७	१३	ग	१४	४३	२५	५४	७	२३	५	४५	३	२५	२६	वृश्चि ०७/३८	१०/२६	८ ०१ ०८ ४९	६१ ०६	१७	भ. २६/३३ उ.प्रदोष व्रतं सर्वा.अमृत १७/११ उ. ३१/२४ या.श्रीचंद्रप्रभु जन्म जैन
आनंद	१४	गु	५४	००	२९	००	अ	३१	४८	२०	०७	धृ	१९	१५	वि	२१	०१	२५	५३	७	२४	५	४५	४	२६	२७	वृश्चिक		८ ०२ ०९ ५५	६१ ०७	१८	भ. १८/४८ या.सर्वा. २०/०७ या.**मासशिवरात्रि** श्रीजयप्रभविजय पुण्यःजैन
अमावस	३०	शु	५९	३३	३१	१३	ज्ये	३८	३८	२२	५१	शू	२०	५६	च	२६	५०	२५	५३	७	२४	५	४५	५	२७	२८	धनु ३८/३८	२२/५१	८ ०३ ११ ०२	६१ ०८	१९	**देवपितृकार्ये अमावस्या** ज्येष्ठायां बुधः ३०/०८





卐 निर्णयसागरीय **गोचरग्रहाः** 卐



अ. ३५ पौष कृष्णे ८ शुक्रे इष्ट ०।०

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	७	४	८	७	२	७	११	१०	४
अं.	२६	२८	०३	०५	२९	१९	०१	१९	१९
क.	०३	२६	२०	५६	२६	५४	०६	००	००
वि.	३२	१८	३०	३२	०९	३२	३८	१७	१७
ग	६१	७३१	४५	७५	०५/४५	७५	०१	३	३
ति	०१	३५	०७	१९	व	३२	३३	११	११
नक्षत्र	ज्ये. ३	उफा. १	मूल १	अनु. १	पुन. ३	ज्ये. १	पूभा. ४	शत. ४	पूफा. २

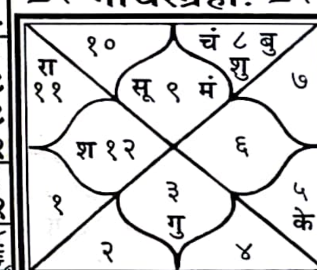
♣ धनु संक्रान्ति फलम् – दुर्ग रक्षा संभागीय ♣

पौष कृष्ण पक्षे ११ चन्द्रे धनुष्यर्कः प्र.वा.२ न.३ अस्य पुण्यकालः पर दिने भौमवासरे सूर्योदय वेलातः पुण्यप्रदः वारनाम–ध्वांक्षी, आयात–निर्यातकर्ता, शेयर, बाजार कम्पनी, उद्योगपति, वैश्य–व्यापारीगण हेतु सुखद। नक्षत्र नाम महोदरी, तस्कर–ठग, चौर्य कर्मशील, लोभी–प्रलोभी, संग्रहशील, स्टॉकिस्ट वर्ग हेतु मनोत्साह वर्धक–सुखद। रात्रि ४ याम व्यापिनी दुग्ध व्यवसायी, पशुपालकवर्ग पर श्रम विशेष प्रभारक, कष्टद प्रतिफल। उत्तरे गमन ईशान दृष्टिः संक्रान्ति वासनिवास रजकगृहे, कौलव करणे, वाहन–वराह, उपवाहन–वृषभ, हरित वस्त्र, खड्गायुध, ताम्रपात्र, भिक्षान्न भक्षण, चंदन लेपन, सर्पजाति, बकुल पुष्प, मुक्ता भूषण, हरित कंचुकी, गतालकावस्था, उत्तिष्ठा मुहूर्त–१५, धान्य–गल्ला उन्नत भाव, हरा वस्त्र, मोती, चंदन, इत्र, धनिया, सौंफ, हरे मूंग, मेहंदी, मसूर, मिर्च, खोपरा गोला, ताम्बा, रसायन, द्रव्य घी, शक्कर उन्नत धारणा, शुक्रास्त पूर्वे, वत्स दक्षिणे, राहु पूर्वे, मूल भूमौ।

अ. ३६ पौष कृष्णे ३० शुक्रे इष्ट ०।०

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	८	७	८	७	२	७	११	१०	४
अं.	०३	२२	०८	१५	२८	२८	०१	१८	१८
क.	११	१६	३७	१९	४२	४३	१९	३८	३८
वि.	०२	५२	२३	१०	५०	२२	३९	०१	०१
ग	६१	७२०	४५	८५	०६/४४	७५	०२	३	३
ति	०७	३१	२८	१९	व	३३	१७	११	११
नक्षत्र	मूल १	ज्येष्ठा २	मूल ३	अनु. ४	पुन. ३	ज्येष्ठा ४	पूभा. ४	शतभिषा ४	पूफा. २

卐 निर्णयसागरीय **गोचरग्रहाः** 卐



● **किमर्थम्–ब्राह्मणा पूज्याः** ● देवाधीनं जगत्सर्वं मन्त्राधीनश्च देवताः। ते मन्त्रा ब्राह्मणाधीनास्तस्माद् ब्राह्मण देवताः॥ आतुरे व्यसने प्राप्ते दुर्भिक्षे शत्रुसंकटे। राजद्वारे श्मशाने च यास्तिष्ठति स बान्धवः॥ यस्य पुत्रो वशीभूतो भार्या छन्दाऽनुगामिनी विभवे यश्च सन्तुष्टस्तस्य स्वर्ग इहैवहि॥ धन धान्य प्रयोगेषु विद्या संग्रहणे तथा। आहारे व्यवहारे च त्यक्त लज्जा सुखी भवेत्। जल बिन्दुनिपातेन क्रमशः पूर्यते घटः। स हेतुः सर्वविद्यानां धर्मस्य च धनस्य च॥ भारतीय कन्या महात्म्य–शतपुत्र समा कन्या गुणशीलां श्री समन्विता। अन्नदा धनदाश्चैव शक्ति रूपेण संस्थिता॥ ● **सुभाषित नीति वचन सूत्र** ● बलं विद्या हि विप्राणां, राज्ञां सैन्यं बलं तथा। बलं वित्तं च वैश्यानां शूद्राणां च कनिष्ठिका॥ बाहुवीर्यो बली राजा ब्राह्मणो ब्रह्मविद् बली। रूप यौवनमाधुर्यं स्त्रीणां बलमनुत्तमम्। न देवो विद्यते काष्ठे न पाषाणे न मृन्मये। भावो ही विद्यते देवस्तस्माद् भावो हि कारणम्॥ न निर्मिता नैव न दृष्टपूर्वा न श्रूयते हेममथी कुरंगी। तथापि तृष्णा रघुनन्दनस्य विनाशकाले विपरीतबुद्धि॥ काकः कृष्णः पिकः कृष्णः को भेदः पिककाकयो। वसन्तसमये प्राप्ते काकः काकः पिकः पिकः॥

पौष शुक्ल पक्षः संवत् २०८२ रा.शाकः १९४७

✦ दिसम्बर–जनवरी सन् २०२५-२६ ई. हेमंत–शिशिर ऋतुः रवि दक्षिण–उत्तरायणे–दक्षिणगोले ✦

♣ सम्प्रति भद्रादि ग्रह – नक्षत्रचार समय भार.स्टे.टा.घण्टा–मिनटों में ही अंकित किये हैं ♣

रवियोगाः	तिथि	वार	घटी	पल	घं.	मि.	नक्षत्र	घटी	पल	घं.	मि.	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	दिनमान पल	स्टेण्डर्ड टाईम सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	विविध तारीखें बंग	मुस	भा	चन्द्रराशि प्रवेश काल रा. घटी पल	घं.मि.	सूर्योदय कालिक सूर्य स्पष्ट रा.अ.क.वि.	गति	अंग्रेजी ता.	
गद्	१	श	६०	००	-	-	मू	४४	५२	२५	२२	गं	२२	११	किं	३२	०५	२५	५३	७	२५	५	४६	६	२८	२९	धनु		८ ०४ १२ ०९	६१ ०८	२०	मूले धनुषि शुक्रः ०७/४५
शुभ	१	र	०४	२६	०९	१२	पूषा	५०	२७	२७	३६	वृ	२२	५६	ब	०४	२६	२५	५३	७	२५	५	४६	७	२९	३०	धनु		८ ०५ १३ १७	६१ ०९	२१	चन्द्रदर्शनं सर्वा. २७/३६ उ. ३१/२६ या. मकरे भानुः २०/३३ रवि उत्तरायणे शिशिर ऋतु प्रा.
२१।३२ उ.	२	चं	०८	३६	१०	५२	उषा	५५	१६	२९	३२	ध्रु	२३	०७	कौ	०८	३६	२५	५३	७	२६	५	४७	८	२१	पौ१	मकर ०६/४३	१०/०७	८ ०६ १४ २५	६१ ०९	२२	सर्वा. २९/३२ उ. ३१/२६ या. रा. पौष मास प्रा. रज्जब मास ७ मुस. मेला ख्वाजा सा. अजमेर शरीफ
३१।०८ या.	३	मं	११	५८	१२	१३	श्र	५९	१४	३१	०८	व्या	२२	३९	ग	११	५८	२५	५३	७	२६	५	४७	९	२	२	मकर		८ ०७ १५ ३४	६१ ०९	२३	भ. २४/४६ उ. किसान दिवस श्री यतींद्रसूरीश्वर पुण्यः त्रि.स्तु.जैन
मित्र	४	बु	१४	२२	१३	१२	ध	६०	००	-	-	ह	२१	२८	वि	१४	२२	२५	५३	७	२७	५	४८	१०	३	३	कुंभ ३०/४९	१९/४६	८ ०८ १६ ४३	६१ ०९	२४	भ. १३/१२ या. पंचक १९/४६ उ.
०८।१८ उ.	५	गु	१५	४०	१३	४३	ध	०२	०८	०८	१८	व	१९	२५	बा	१५	४०	२५	५४	७	२७	५	४९	११	४	४	कुंभ		८ ०९ १७ ५२	६१ ०९	२५	क्रिसमस डे पं. मदनमोहन मालवीय ज. पूषायां भौमः १२/१३
०१।०० या.	६	शु	१५	४१	१३	४४	श	०३	५२	०९	००	सि	१६	२३	तै	१५	४१	२५	५४	७	२८	५	४९	१२	५	५	मीन ४९/१८	२७/११	८ १० १९ ०१	६१ ०९	२६	
कालदंड	७	श	१४	१६	१३	१०	पूभा	०४	१४	०९	१०	व्य	१२	१४	व	१४	१६	२५	५४	७	२८	५	५०	१३	६	६	मीन		८ ११ २० १०	६१ ०९	२७	भ १३/१० उ. २४/४० या. गुरु गोबिंदसिंह ज. गुरु राजेन्द्रसूरीश्वर जन्म व पुण्य जैन
०८।४३ उ. ३०।३० या.	८	र	११	१९	१२	००	उभा	०३	०८	०८	४३	व	०६	५३	ब	११	१९	२५	५५	७	२८	५	५०	१४	७	७	मीन		८ १२ २१ १९	६१ ०९	२८	सर्वा. ०७/२८ उ. ०८/४३ या. पूषायां रविः ३०/३० मूले धनुषि बुधः ३१/२३
०७।४१ उ.	९	चं	०६	५१	१०	१३	रे/अ	००/५६	३१/२९	०७/३०	४१/०४	प	००/५२	१९/३६	कौ	०६	५१	२५	५६	७	२९	५	५१	१५	८	८	मेष ००/३१	०७/४१	८ १३ २२ २७	६१ ०९	२९	पंचक ०७/४१ या. बुधास्त पू. २५/३०
२७।५८ या.	१०	मं	००	५७	०७	५२	भ	५१	१३	२७	५८	सि	४३	५२	ग	००	५७	२५	५६	७	२९	५	५२	१६	९	९	मेष		८ १४ २३ ३६	६१ ०९	३०	भ. १८/३० उ. २९/०१ या. सर्वा. २७/५८ उ. पुत्रदा ११ व्रतं स्मार्त पूषायां शुक्रः २२/०० A
क्षय	११	मं	५३	५०	२९	०१	0	०	०	०	०	0	०	०	0	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0		० ०	०	०	A आचार्य जिनानंद सागर पुण्यः खरतरगच्छ जैन
सिद्धि	१२	बु	४५	४८	२५	४८	कृ	४५	०२	२५	३०	सा	३४	२०	ब	१९	५४	२५	५७	७	२९	५	५२	१७	१०	१०	वृषभ ०४/४४	०९/२३	८ १५ २४ ४५	६१ ०९	३१	सर्वा. ३१/३० या. पुत्रदा ११ व्रतं निम्बार्क वैष्णव
२२।४८ उ.	१३	गु	३७	१३	२२	२३	रो	३८	१७	२२	४८	शु	२४	१७	कौ	११	३३	२५	५८	७	३०	५	५३	१८	११	११	वृषभ		८ १६ २५ ५३	६१ ०९	ज१	प्रदोष व्रतं जनवरी मास १ ता. ३१ सन् २०२६ प्रा.
२०।०४ या.	१४	शु	२८	३०	१८	५४	मृ	३१	२५	२०	०४	शु	१४	०२	ग	०२	५१	२५	५९	७	३०	५	५४	१९	१२	१२	मिथुन ०४/५०	०९/२६	८ १७ २७ ०१	६१ ०८	२	भ. १८/५४ उ. २९/१२ या. पूर्णिमा व्रतं श्री शाकंभरी ज. मरुधर केसरी मिश्रीमल पु. स्था. जैन
पूर्णिमा	१५	श	२०	०७	१५	३३	आ	२४	५४	१७	२८	ब्र	०३/५४	५७/२४	ब	२०	०७	२६	००	७	३०	५	५४	२०	१३	१३	मिथुन		८ १८ २८ १०	६१ ०८	३	पूर्णिमा पुण्यः माघ स्नान प्रा.






卐 निर्णयसागरीय गोचरग्रहाः 卐



अ. ३७ पौष शुक्ले ८ सूर्ये इष्ट ०।०

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	८	११	८	७	२	८	११	१०	४
अं.	१२	१५	१५	२८	२७	१०	०१	१८	१८
क.	२१	५६	२८	३०	३८	०३	४३	०९	०९
वि.	१९	५४	१०	००	२३	१७	४६	२४	२४
ग	६१	८३५	४५	९०	०७ ३७	७५	०३	३	३
ति	०९	४६	५१	१८	व	३२	१०	११	११
न क्षत्र	मूल ४	उभा. ४	पूषा. १	ज्येष्ठा ४	पुन. ३	मूल ४	पूभा. ४	शत. ४	पूफा. २

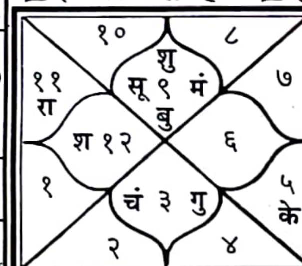
♣ ग्रह गोचरीय फलश्रुतिः ♣

वार पांच भृगुदेव के, भौतिक बुद्धि अपार। वस्तु सुगंधी–गंध की, तेजी पंथ निहार॥ रोग शोक व्याधि गति, संक्रामक अतिचार। स्वास्थ्य तंत्र में न्यूनता, पांच रूप शनिवार॥ ज्येष्ठा पौष अमावस को, पूर्वा उत्तरा नेष्ट। नखत मूल से मानिये, सुख सम्पदा श्रेष्ठ॥ पौष शुक्ला सप्तमी, आठम नवमी गाज। मेघ संग या बिजली, निर्णय सुखद समाज॥ सुदी पौष की पंचमी, हिम प्रपात संचार। निर्णय वर्षाकाल में, वर्षा बने अपार॥ युति योग बुध शुक्र का, लहर शीत अधिलक्ष। हिम प्रपात नभ गर्जना, ऋतु कोप नवदक्ष॥ सम सप्तक गुरु शुक्र का, षड़ाष्टकी विस्तार। दिशा पश्चिम संभाग में, जन धन क्षति विकार॥ चक्रवात आँधी पवन, तट सागर संचार। ऋतु कोप से आपदा, निर्णय शास्त्र निहार॥

अ. ३८ पौष शुक्ले १५ शनौ इष्ट ०।०

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	८	२	८	८	२	८	११	१०	४
अं.	१८	१३	२०	०७	२६	१७	०२	१७	१७
क.	२८	४८	०३	३७	५१	३६	०४	५०	५०
वि.	१०	३२	५१	१४	४३	२२	१३	१९	१९
ग	६१	८९०	४६	९२	०७ ५८	७५	०३	३	३
ति	०८	१४	०५	२७	व	३०	४४	११	११
न क्षत्र	पूषा. २	आर्द्रा ३	पूषा. ३	मूल ३	पुन. ३	पूषा. २	पूभा. ४	शत. ४	पूफा. २

卐 निर्णयसागरीय गोचरग्रहाः 卐



माघ कृष्ण पक्षः संवत् २०८२ रा.शाकः १९४७

रवियोगाः	तिथि	वार	घटी	पल	घं.	मि.	नक्षत्र	घटी	पल	घं.	मि.	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	दिनमान पल	स्टेण्डर्ड टाईम सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	विविध तारीखें बंग	मुस	भा	चन्द्रराशि प्रवेश काल रा.घटी पल	घं.मि.	सूर्योदय कालिक सूर्य स्पष्ट रा.अ.क.वि.	गति	अंग्रेजी ता.
केतु	१	र	१२	३०	१२	३०	पुन	१९	१२	१५	११	वै	४५	४२	कौ	१२	३०	२६	०२	७	३०	५	५५	२१	१४	१४	कर्क ०५/३२	०९/४३	८ १९ २९ १८	६१ ०८	४
धाता	२	चं	०६	०६	०९	५७	पु	१४	४६	१३	२५	वि	३८	११	ग	०६	०६	२६	०३	७	३१	५	५६	२२	१५	१५	कर्क		८ २० ३० २६	६१ ०८	५
चौ.व्रत	३	मं	०१	१९	०८	०२	श्ले	११	५८	१२	१८	प्री	३२	०६	वि	०१	१९	२६	०४	७	३१	५	५६	२३	१६	१६	सिंह ११/५८	१२/१८	८ २१ ३१ ३४	६१ ०८	६
क्षय	४	मं	५८	२६	३०	५३	0	०	०	०	०	0	०	०	0	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0		० ०	०	०
चर	५	बु	५७	३८	३०	३४	म	११	०४	११	५६	आ	२७	३७	कौ	२७	४६	२६	०६	७	३१	५	५७	२४	१७	१७	सिंह		८ २२ ३२ ४२	६१ ०८	७
१२।२४ उ.	६	गु	५८	५७	३१	०६	पूफा	१२	१४	१२	२४	सौ	२४	४६	ग	२८	०२	२६	०७	७	३१	५	५८	२५	१८	१८	कन्या २७/५१	१८/३९	८ २३ ३३ ५०	६१ ०८	८
१३।४१ या.	७	शु	६०	००	-	-	उफा	१५	२४	१३	४१	शो	२३	३१	वि	३०	२२	२६	०९	७	३१	५	५९	२६	१९	१९	कन्या		८ २४ ३४ ५८	६१ ०८	९
मृत्यु	७	श	०२	१३	०८	२४	ह	२०	२२	१५	४०	अ	२३	३८	ब	०२	१३	२६	११	७	३१	५	५९	२७	२०	२०	तुला ५३/२३	२८/५२	८ २५ ३६ ०६	६१ ०८	१०
पद्म	८	र	०७	०४	१०	२१	चि	२६	४२	१८	१२	सू	२४	४९	कौ	०७	०४	२६	१२	७	३१	६	००	२८	२१	२१	तुला		८ २६ ३७ १४	६१ ०८	११
छत्र	९	चं	१३	००	१२	४३	स्वा	३३	५५	२१	०५	धृ	२६	४२	ग	१३	००	२६	१४	७	३१	६	०१	२९	२२	२२	तुला		८ २७ ३८ २२	६१ ०८	१२
श्रीवत्स	१०	मं	१९	२८	१५	१८	वि	४१	२८	२४	०७	शू	२८	५३	वि	१९	२८	२६	१६	७	३१	६	०२	३०	२३	२३	वृश्चि. २४/३५	१७/२१	८ २८ ३९ ३०	६१ ०८	१३
ए.व्रत	११	बु	२५	५५	१७	५३	अ	४८	५१	२७	०४	गं	३१	०१	बा	२५	५५	२६	१८	७	३१	६	०२	मा१	२४	२४	वृश्चिक		८ २९ ४० ३८	६१ ०८	१४
कालदंड	१२	गु	३१	५५	२०	१७	ज्ये	५५	४२	२९	४८	वृ	३२	४७	तै	३१	५५	२६	२०	७	३१	६	०३	२	२५	२५	धनु ५५/४२	२९/४८	९ ०० ४१ ४६	६१ ०७	१५
प्रदोष	१३	शु	३७	०८	२२	२२	मू	६०	००	-	--	ध्रु	३३	५८	ग	०४	३८	२६	२२	७	३१	६	०४	३	२६	२६	धनु		९ ०१ ४२ ५३	६१ ०७	१६
गद्	१४	श	४१	२४	२४	०४	मू	०१	४३	०८	१२	व्या	३४	२७	वि	०९	२४	२६	२५	७	३१	६	०५	४	२७	२७	धनु		९ ०२ ४४ ००	६१ ०७	१७
अमावस	३०	र	४४	३८	२५	२२	पूषा	०६	४९	१०	१४	ह	३४	१०	च	१३	०९	२६	२७	७	३१	६	०६	५	२८	२८	मकर २२/५६	१६/४१	९ ०३ ४५ ०६	६१ ०६	१८

✦ जनवरी सन् २०२६ ई. शिशिर ऋतुः रवि उत्तरायणे–दक्षिणगोले ✦

♣ सम्प्रति भद्रादि ग्रह – नक्षत्रचार समय भार.स्टे.टा.घण्टा–मिनटों में ही अंकित किये हैं ♣

- ४ — सर्वा. १५/११ उ. रविपुष्य १५/११ उ. ३१/३१ या.
- ५ — भ. २०/५४ उ. सर्वा. १३/२५ या.
- ६ — भ. ०८/०२ या. सर्वा. ०७/३१ उ. १२/१८ या. संकष्ट–तिल चतुर्थी व्रतं चंद्रोदय रात्रि २१/१५ पूषायां बुधः [illegible]



- ८ — भ. ३१/०६ उ.
- ९ — भ. १९/४० या. श्री रामानंदाचार्य ज. रामानंदः स्वयंरामः प्रादुर्भूतो महीतले





- १० — उषायां शुक्रः १२/२१
- ११ — उषायां रविः ०८/३६ उषायां भौमः २१/०८
- १२ — भ. २६/०० उ. स्वामी विवेकानंद जन्म राष्ट्रीय युवा दिवस मकरे शुक्रः २७/५८
- १३ — भ. १५/१८ या. लोहड़ी पर्व पंजाब A बं. माघ मास प्रा.
- १४ — सर्वा. अमृत ०७/३१ उ. २७/०४ या. मकरेऽर्कः १५/०७ मकरसंक्रान्ति पुण्यकालःषट्तिला ११ व्रतं A
- १५ — थलसेना दि. शीतलनाथ जन्म जैन मकरे भौमः २८/२६ उषायां बुधः ०९/१८



- १६ — भ. २२/२२ उ. प्रदोष व्रतं मास शिवरात्रि मेरु त्रयोदशी जैन B
- १७ — भ. ११/१६ या. मकरे बुधः १०/२२ B आदिनाथ पुण्य जैन
- १८ — सर्वा. १०/१४ उ. ३१/३१ या. देवपितृकार्ये अमावस्या मौनी माघी अमावस्या प्रयागराज मेला स्नान पर्व

卐 निर्णयसागरीय गोचरग्रहाः 卐



अ. ३९ माघ कृष्णे ८ सूर्ये इष्ट ०।०

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	८	६	८	८	२	८	११	१०	४
अं.	२६	०१	२६	२०	२५	२७	०२	१७	१७
क.	३७	१९	१३	०७	४७	४०	३६	२४	२४
वि.	१४	३१	२६	२६	१७	१४	३२	५२	५२
ग	६१	७१७	४६	९५	०८	७५	०४	३	३
ति	०८	३२	२३	३७	०६ व	२८	२६	११	११
नक्षत्र	पूषा.४	चित्रा.३	पूषा.४	पूषा.२	पुन.२	उषा.१	पूभा.४	शत.४	पूफा.२

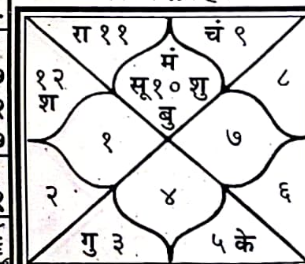
♣ मकर संक्रान्ति फलम् – वापी–कूप संभागीय ♣

माघ कृष्ण पक्षे ११ बुधे मकरेऽर्कः प्र.वा.३ न.३ अस्य पुण्यकालः अद्यैव बुधवासरे अपरान्ह वेलातः पुण्यप्रदः। वार नाम–मंदाकिनी, राजनेता, दलपति, सचिव, राजपत्रित अधिकारी, नीति निदेशक, अधीक्षक हेतु मनोत्साह वर्धक सुखद, नक्षत्र नाम–मंदाकिनी, राजपत्रित अधिकारी, नीति निदेशक, विविध दलपति, राजनेता, अधीक्षक वर्ग हेतु सुखद दिवा ३ याम व्यापिनी आयातक निर्यातक, वैश्य, उद्योगपति, स्वतंत्र कार्यकर्ता, व्यापारी, शेयर बाजार कारक पक्ष हेतु कष्टद प्रभार सूचक। पश्चिमे गमन, वायव्यां दृष्टिःसंक्रान्ति वास निवास मालीगृहे, बालव करणे, वाहन–व्याघ्र, उपवाहन–अश्व, पीतवस्त्र, गदायुध, रजतपात्र, पायस भक्षण, कंकुमलेपन, भूतजाति, जाति पुष्प, कंकण भूषण, पर्ण कंचुकी, कुमार्यावस्था, उपविष्टा, मुहूर्त–३०, धान्य–गल्ला स्थिर समभाव, घोड़ा, सोना, चाँदी, चना, तुवर, हल्दी, सरसों, दानामैथी, केसर, चंदन, रोली, चाय, तमाखु, सौंठ, गरम मसाला, सुगंधी पदार्थ उन्नत धारणा, शुक्रास्त पूर्वे, वत्स दक्षिणे, राहु पूर्वे, मूल स्वर्गे।

अ. ४० माघ कृष्णे ३० सूर्ये इष्ट ०।०

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	९	८	९	९	२	९	११	१०	४
अं.	०३	२५	०१	०१	२४	०६	०३	१७	१७
क.	४५	१५	३९	२६	५१	२८	०९	०२	०२
वि.	०६	३७	०३	४३	०४	२५	१४	३७	३७
ग	६१	७४७	४६	९९	०७	७५	०४	३	३
ति	०६	१६	३७	०४	५३ व	२६	५९	११	११
नक्षत्र	उषा.३	पूषा.४	उषा.२	उषा.२	पुन.२	उषा.३	पूभा.४	शत.४	पूफा.२

卐 निर्णयसागरीय गोचरग्रहाः 卐



● **सुभाषित–सन्तोष धनं परम सुखम्** ● गन्धाढ्यां नवमाल्लिकां मधुकरस्त्यक्तवागतो यूथिकां। तां दृष्टवाशुगतः स चन्दनवनं पश्चात्सरोजं गतः॥ बद्धस्तत्र निशाकरणे सहसा रोदित्यसौ मन्दधीः सन्तोषेण विना पराभवप्रदं प्राप्नोति सर्वोजनः
● **पुण्य–धर्म संग्रह सूत्र** ● अनित्यानि शरीराणि विभवो नैव शाश्वतः। नित्यं सन्निहितो मृत्युः कर्त्तव्यो धर्मसंग्रह॥ ● **सुभाषित नीति वचन सूत्र** ● बलं विद्या हि विप्राणां, राज्ञां सैन्यं बलं तथा। बलं वित्तं च वैश्यानां शूद्राणां च कनिष्टिका॥ बाहुवीर्यो बली राजा ब्राह्मणो ब्रह्मविद् बली। रूप यौवनमाधुर्यं स्त्रीणां बलमनुत्तमम्॥ न देवो विद्यते काष्ठे न पाषाणे न मृन्मये। भावो ही विद्यते देवस्तस्माद् भावो हि कारणम्॥ न निर्मिता नैव न दृष्टपूर्वा न श्रूयते हेममथी कुरंगी। तथापि तृष्णा रघुनन्दनस्य विनाशकाले विपरीतबुद्धि॥ काकः कृष्णः पिकः कृष्णः को भेदः पिककाकयो। वसन्तसमये प्राप्ते काकः काकः पिकः पिकः॥

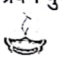
माघ शुक्ल पक्षः संवत् २०८२ रा.शाकः १९४७

✦ जनवरी–फरवरी सन् २०२६ ई. शिशिर ऋतुःरवि उत्तरायणे–दक्षिणगोले ✦

♣ सम्प्रति भद्रादि ग्रह – नक्षत्रचार समय भार.स्टे.टा.घण्टा–मिनटों में ही अंकित किये हैं ♣

रवियोगाः	तिथि	वार	घटी	पल	घं.	मि.	नक्षत्र	घटी	पल	घं.	मि.	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	दिनमान पल	स्टेण्डर्ड टाईम सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	विविध तारीखें बंग	मुस	भा	चन्द्रराशि प्रवेश काल रा.घटी पल	घं.मि.	सूर्योदय कालिक सूर्य स्पष्ट रा.अं.क.वि.	गति	अंग्रेजी ता.	
मृत्यु	१	चं	४६	५०	२६	१५	उषा	१०	५४	११	५२	व	३३	०६	किं	१५	५२	२६	२९	७	३१	६	०६	६	२९	२९	मकर		९ ०४ ४६ १२	६१ ०५	१९	सर्वा. ११/५२ उ. ३१/३० या.गुप्त नवरात्रि विधान प्रा.कुम्भे भानुः ३१/१५
लुम्बक	२	मं	४८	०१	२६	४३	श्र	१४	०१	१३	०७	सि	३१	१६	बा	१७	३४	२६	३२	७	३०	६	०७	७	३०	३०	कुंभ ४५/१२	२५/३५	९ ०५ ४७ १७	६१ ०५	२०	चंद्रदर्शनं पंचक २५/३५ उ.अभिजिति रविः २८/१३ बाबा रामदेव बीज A
१३।५८ उ.	३	बु	४८	१४	२६	४८	ध	१६	१०	१३	५८	व्य	२८	४०	तै	१८	१५	२६	३४	७	३०	६	०८	८	शा१	मा१	कुंभ		९ ०६ ४८ २१	६१ ०४	२१	गौरीतृतीया रा.माघ मास प्रा.शाबान मास ८ मुस.
१४।२७ या.	४	गु	४७	२७	२६	२९	श	१७	२२	१४	२७	व	२५	१९	व	१७	५८	२६	३७	७	३०	६	०९	९	२	२	कुंभ		९ ०७ ४९ २५	६१ ०३	२२	भ. १४/४१ उ. २६/२९ या.वरद विनायक तिल चतुर्थी
१४।३३ उ.	५	शु	४५	४२	२५	४७	पूभा	१७	३८	१४	३३	प	२१	१२	ब	१६	४२	२६	३९	७	३०	६	१०	१०	३	३	मीन ०२/४०	०८/३४	९ ०८ ५० २७	६१ ०२	२३	बसंत पंचमी श्री पंचमी सरस्वती ज.श्री राधा श्यामसुंदर पंचमी B
१०।५० या. १४।१६ उ.	६	श	४२	५८	२४	४०	उभा	१६	५६	१४	१६	शि	१६	२०	कौ	१४	२८	२६	४२	७	२९	६	१०	११	४	४	मीन		९ ०९ ५१ २९	६१ ०१	२४	श्रवणे रविः १०/५० A श्रवणे शुक्रः २६/४९ उभायां १ शनिः १०/४६
१३।३६ या.	७	र	३९	१४	२३	११	रे	१५	१७	१३	३६	सि	१०	४१	ग	११	१३	२६	४५	७	२९	६	११	१२	५	५	मेष १५/१७	१३/३६	९ १० ५२ ३०	६० ५९	२५	भ. २३/११ उ.सर्वा. १३/३६ उ. ३१/२९ या.पंचक १३/३६ या.श्रीनर्मदा ज.C
राक्षस	८	चं	३४	३४	२१	१९	अ	१२	४०	१२	३३	सा	०४/५७	१६/०७	वि	०७	०१	२६	४८	७	२९	६	१२	१३	६	६	मेष		९ ११ ५३ २९	६० ५८	२६	भ. १०/१७ या.गणतंत्र दि.७७वाँ भीष्माष्टमी
११।०१ उ.	९	मं	२९	०४	१९	०६	भ	०९	११	११	०९	शु	४९	२१	बा	०१	५५	२६	५०	७	२८	६	१३	१४	७	७	वृषभ २३/११	१६/४५	९ १२ ५४ २७	६० ५७	२७	सर्वा. ११/०९ उ. B नेताजी सुभाषचंद्र बोस ज.श्रवणे बुधः १०/२३
पूर्णरवि	१०	बु	२२	५१	१६	३७	कृ	०४	५७	०९	२७	ब्र	४१	०४	ग	२२	५१	२६	५३	७	२८	६	१३	१५	८	८	वृषभ		९ १३ ५५ २४	६० ५६	२८	भ. २७/१७ उ.सर्वा. ३१/२८ या.श्रवणे भौमः २४/३६
०७।३२ या.	११	गु	१६	१०	१३	५६	रो/मृ	००/५५	१०/०४	०७/२९	३२/२९	ऐं	३२	२९	वि	१६	१०	२६	५६	७	२८	६	१४	१६	९	९	मिथुन २७/३८	१८/३१	९ १४ ५६ २०	६० ५५	२९	भ. १३/५६ यां.जया ११ व्रतं सर्वे.वेणेश्वर मेला प्रा.डूंगरपुर (राज.) भीष्म द्वादशी
१७।२७ उ.	१२	शु	०९	१६	११	१०	आ	५०	००	२७	२७	वै	२३	४८	बा	०९	१६	२६	५९	७	२७	६	१५	१७	१०	१०	मिथुन		९ १५ ५७ १४	६० ५४	३०	प्रदोषव्रतं सर्वा. २७/२७ उ. ३१/२७ या.गांधी पुण्य दि.धनिष्ठायां बुधः २७/२४
२५।३४ या.	१३	श	०२	२८	०८	२६	पुन	४५	१८	२५	३४	वि	१५	१६	तै	०२	२८	२७	०२	७	२७	६	१६	१८	११	११	कर्क ३१/२६	२०/०१	९ १६ ५८ ०७	६० ५२	३१	भ. २९/५३ उ.विश्वकर्मा ज.गुरु गोरखनाथ ज.रामचरण रामस्नेही ज.स्वामी D
क्षय	१४	श	५६	०६	२९	५३	0	०	०	०	०	0	०	०	0	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0		० ०	०	०	D श्रीकरपात्रीजी पुण्य जिनेंद्र रथयात्रा जैन धनिष्ठायां शुक्रः १७/३६
पूर्णिमा	१५	र	५०	३२	२७	३९	पु	४१	१९	२३	५८	प्री	०७/५९	१०/४५	वि	२३	१२	२७	०५	७	२६	६	१६	१९	१२	१२	कर्क		९ १७ ५८ ५९	६० ५१	फ१	भ. १६/४३ या.सर्वा. ०७/२६ उ. २३/५८ या.रवि पुष्य ०७/२६ उ. २३/५८ या.पूर्णिमा व्रतं E






निर्णयसागरीय गोचरग्रहाः



अ.४१ माघ शुक्ले ८ चंद्रे इष्ट ०।०

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	९	०	९	९	२	९	११	१०	४
अं.	११	१०	०७	१४	२३	१६	०३	१६	१६
क.	५३	२२	५२	५४	४९	३१	५१	३७	३७
वि.	२९	१०	४६	५९	४९	३२	११	११	११
गति	६० ५८	८४६ ५४	४६ ५०	१०३ ३४	०७ १७ व	७५ २०	०५ ३४	३ ११	३ ११
नक्षत्र	श्रवण १	अश्वि. ४	अभि. २	श्रवण २	पुन. १	श्रवण २	उभा. १	शत. ३	पूफा. १

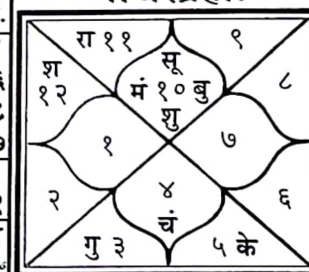
♣ ग्रह गोचरीय फलश्रुतिः ♣

क्रूरवार तेजी करे, मावस रवि कुसंग। मंदी से तेजी बने, वस्तु विविध प्रसंग॥ निर्यातक गति न्यूनता, आयात रूप नवदेश। दलहन तिलहन नित्य का, उन्नत भाव निवेश॥ तिथि सप्तमी से चतुर्दशी, शुक्ला माघ सुपक्ष। मेघ गाज नभ गर्जना, निर्णय शकुन सुभिक्ष॥ माघ मास की प्रतिपदा, निर्मल नभ आकाश। वस्तु सुगंधी तेल तिल, तिलहन तेज प्रकाश॥ भौम रूप जब पृष्ठ का, राशि सूर्य विचार। सुख सुभिक्ष की आमना, वसुधा हरित निहार॥ माघ अमावस रात दिन, मेघ गाज नभ संग। निर्णय भावी सौख्यदा, भादव वर्षा रंग॥ हिम प्रपात नहीं माघ में, फाल्गुन वायु अल्प। फाल्गुन वृद्धि ताप की, भावी वर्षा स्वल्प॥ षड़ाष्टकी गुरु शुक्र की, सम सप्तम परिवेश। चक्रवात आंधी पवन, जन धन क्षति प्रदेश॥

अ.४२ माघ शुक्ले १५ सूर्ये इष्ट ०।०

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	९	३	९	९	२	९	११	१०	४
अं.	१७	०६	१२	२५	२३	२४	०४	१६	१६
क.	५८	५०	३४	२३	०७	०३	२५	१८	१८
वि.	५९	४७	०३	३५	४१	१९	३१	०७	०७
गति	६० ५१	८५२ ३३	४६ ५७	१०६ ०६	०६ ३७ व	७५ १५	०५ ५६	३ ११	३ ११
नक्षत्र	श्रवण ३	पुष्य २	श्रवण १	धनिष्ठा १	पुन. १	धनिष्ठा १	उभा. १	शत. ३	पूफा. १

निर्णयसागरीय गोचरग्रहाः



● **शकुन सूत्रावली** ● बदी ३ से ८ तथा १२ से ३० एवं सुदी ५ से ९ तथा १२ से १५ मध्य मेघ गाज रचना, मानसून गति पथ संचार न्यूनाधिक प्रतियोग। ● **सुभाषितं** ● अहो भुवः सप्त समुद्रवत्या द्वीपेषु वर्षष्वपियुमेतत्। गायन्ति यत्रात्य जना मुरारेः कर्माणि भद्राण्यवतारवन्ति॥ यथा ही एकेन चक्रेण न रथस्यगतिर्भवेत् एवं पुरूषकारेण विना देवं न सिध्यति॥ न दैवमपि संचिन्त्य त्येजेदुद्योगमात्मनः। अनुद्योगेन तैलानि तिलेभ्यो नाप्तुमर्हति॥ पूर्वजन्म कृतं कर्म तद्दैवमिति कथ्यते। तस्मात् पुरूषकारेण यत्नं कुर्यादतन्द्रितः॥ मुहूर्त्तज्वलितं श्रेय न तु धूमायितं चिरम्॥ भैषज्यमेतद् दुःखस्य यदेतद्न्नानु चिन्तयेत्॥ ● सुदी चैत्र की प्रतिपदा, दशमी तक दिन लक्ष। मेघ गाज वर्षा यदि, ऋतुवर्षा नहीं दक्ष॥ शुक्ल चैत्र की प्रतिपदा, वर्षा बादल गाज। भावी श्रावण भादवा, न्यून वृष्टि का साज॥ बिना ऋतु फल–फूल हो, धरा मध्य जिस भाग। शकुन भवानी शास्त्र का, सुख सुभिक्ष नहीं राग॥ अपने–अपने देश में, देख आम फल–फूल, जा दिशि डार सु निर्फली, वा दिशि मेघ न मूल॥

C अचला रथ आरोग्य सप्तमी अभिजिति निर्गम रविः ०७।४९ श्रीदेवनारायण ज.गुर्जर वंशे श्रीमाधवाचार्य ज. **E** गुरु रविदास ज.६१३ वीं माघ कवि जन्म वेणेश्वरमेला स्नान पर्व माहीनदी डूंगरपुर (राज.) श्रीललिता ज.माघ स्नान पूर्ण फरवरी मास २ ता. २८ प्रा.

फाल्गुन कृष्ण पक्षः संवत् २०८२ रा.शाकः १९४७

रवियोगाः	तिथि	वार	घटी	पल	घं.	मि.	नक्षत्र	घटी	पल	घं.	मि.	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	दिनमान पल	स्टेण्डर्ड टाईम सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	विविध तारीखें बंग	मुस	भा	चन्द्रराशि प्रवेश काल रा.घटी पल	घं.मि.	सूर्योदय कालिक सूर्य स्पष्ट रा.अं.क.वि.	गति	अंग्रेजी ता.
सौम्य	१	चं	४६	०७	२५	५३	श्ले	३८	२५	२२	४८	सौ	५३	१९	बा	१८	११	२७	०९	७	२६	६	१७	२०	१३	१३	सिंह ३८ २५	२२ ४८	[illegible]	[illegible]	२
कालदंड	२	मं	४३	१०	२४	४१	म	३६	५३	२२	११	शो	४८	०४	तै	१४	२७	२७	१२	७	२५	६	१८	२१	१४	१४	सिंह		[illegible]	[illegible]	३
सुस्थिर	३	बु	४१	५३	२४	१०	पूफा	३७	००	२२	१३	अ	४४	०९	व	१२	१९	२७	१५	७	२५	६	१९	२२	१५	१५	कन्या ५२ १८	२८ २०	[illegible]	[illegible]	४
चौ.व्रत	४	गु	४२	२६	२४	२३	उफा	३८	५३	२२	५७	सु	४१	३९	ब	११	५७	२७	१८	७	२४	६	१९	२३	१६	१६	कन्या		[illegible]	[illegible]	५
अमृत	५	शु	४४	४९	२५	१९	ह	४२	३१	२४	२४	धृ	४०	३३	कौ	१३	२५	२७	२१	७	२४	६	२०	२४	१७	१७	कन्या		[illegible]	[illegible]	६
२६।२८ उ.	६	श	४८	५०	२६	५५	चि	४७	४४	२६	२८	शू	४०	४३	ग	१६	३९	२७	२५	७	२३	६	२१	२५	१८	१८	तुला १४ ५७	१३ २२	[illegible]	[illegible]	७
२१।०३ या.	७	र	५४	०८	२९	०२	स्वा	५४	११	२९	०३	गं	४१	५४	वि	२१	२२	२७	२८	७	२२	६	२२	२६	१९	१९	तुला		[illegible]	[illegible]	८
मित्र	८	चं	६०	००	-	-	वि	६०	००	-	-	वृ	४३	४५	बा	२७	०८	२७	३२	७	२२	६	२२	२७	२०	२०	वृश्चि. ४४ ३३	२५ ११	[illegible]	[illegible]	९
श्रीवत्स	८	मं	००	१७	०७	२८	वि	०१	२५	०७	५५	ध्रु	४५	५२	कौ	००	१७	२७	३५	७	२१	६	२३	२८	२१	२१	वृश्चिक		[illegible]	[illegible]	१०
सौम्य	९	बु	०६	३७	०९	५९	अ	०८	५१	१०	५३	व्या	४७	५३	ग	०६	३७	२७	३८	७	२०	६	२४	२९	२२	२२	वृश्चिक		[illegible]	[illegible]	११
कालदंड	१०	गु	१२	३७	१२	२३	ज्ये	१५	५६	१३	४२	ह	४९	२५	वि	१२	३७	२७	४२	७	२०	६	२४	१फा	२३	२३	धनु १५ ५६	१३ ४२	[illegible]	[illegible]	१२
ए.व्रत	११	शु	१७	४९	१४	२६	मू	२२	१४	१६	१३	व	५०	१०	बा	१७	४९	२७	४५	७	१९	६	२५	२	२४	२४	धनु		[illegible]	[illegible]	१३
प्रदोष	१२	श	२१	५०	१६	०२	पूषा	२७	२५	१८	१६	सि	४९	५८	तै	२१	५०	२७	४९	७	१८	६	२६	३	२५	२५	मकर ४३ ३०	२४ ४२	[illegible]	[illegible]	१४
अमृत	१३	र	२४	३०	१७	०५	उषा	३१	१७	१९	४८	व्य	४८	४३	व	२४	३०	२७	५३	७	१७	६	२६	४	२६	२६	मकर		[illegible]	[illegible]	१५
सिद्धि	१४	चं	२५	४५	१७	३५	श्र	३३	४८	२०	४८	व	४६	२३	श	२५	४५	२७	५६	७	१७	६	२७	५	२७	२७	मकर		[illegible]	[illegible]	१६
अमावस	३०	मं	२५	३८	१७	३१	ध	३५	००	२१	१६	प	४३	०१	ना	२५	३८	२८	००	७	१६	६	२८	६	२८	२८	कुंभ ०४ ३४	०९ ०६	[illegible]	[illegible]	१७

✦ फरवरी सन् २०२६ ई. शिशिर ऋतुः रवि उत्तरायणे–दक्षिणगोले ✦

♣ सम्प्रति भद्रादि ग्रह – नक्षत्रचार समय भार.स्टे.टा.घण्टा–मिनटों में ही अंकित किये हैं ♣




- २ शुक्रोदयः प. ३०/१० ★
- ३ कुम्भे बुधः २१/५२
- ४ भ. १२/२० उ. २४/१० या.
- ५ **फाल्गुनी चतुर्थी व्रतं चंद्रोदय रात्रि** २१/५१ **कुम्भे शुक्रः** २५/११
- ६ **घनिष्ठायां रविः** १४/०५
- ७ भ. २६/५५ उ.सर्वा. २६/२८ उ. ३१/२२ या.शतभिषायां बुधः १६/३०
- ८ भ. १५/५५ या.बुधोदय पं. १८/१७
- ९ **सीताष्टमी**



- १० **B** शिव खप्पर पूजा श्री जिनकुशल सूरी पुण्य दादा मेला मालपुरा (राज.) जैन
- ११ भ. २३/१३ उ.सर्वा.अमृत ०७/२० उ. १०/५३ या.**समर्थ रामदास नवमी** शतभिषायां शुक्रः ०८/५१
- १२ भ. १२/२३ या.**कुम्भेऽर्कः** २८/१० **बं.फाल्गुन मास प्रा.**
- १३ **विजया ११ व्रतं सर्वे.A** एवं जागरणं रुद्राभिषेकंच पूभायां बुधः २१/४०
- १४ **शनि प्रदोष व्रतं धनिष्ठायां भौमः** २४/३६
- १५ भ. १७/०५ उ. २९/२४ या. सर्वा. ०७/१७ उ. १९/४८ या.**महाशिवरात्रि व्रतं A**
- १६ सर्वा. ०७/१७ उ. २०/४८ या.**स्वामी दयानंद बोधोत्सव** वासुपूज्य जन्म जैन
- १७ **पंचक** ०९/०६ **उ. देवपितृकार्ये भौमवती अमावस्या B**




卐 निर्णयसागरीय गोचरग्रहाः 卐



अ. ४३ फाल्गुन कृष्णे ८ चंद्रे इष्ट ०।०

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	९	६	९	१०	२	१०	११	१०	४
अं.	२६	२१	१८	०९	२२	०४	०५	१५	१५
क.	०५	०९	५०	२८	१८	०४	१४	५२	५२
वि.	१७	०८	१४	४६	३१	५६	३६	४१	४१
ग	६०	७१३	४७	१०२	०५ ३०	७५	०६	३	३
ति	४३	५२	०६	३१	व	०९	२३	११	११
नक्षत्र	धनिष्ठा १	विशाखा १	श्रवण ३	शत. १	पुन. १	धनिष्ठा ४	उभा. १	शत. ३	पूफा. १

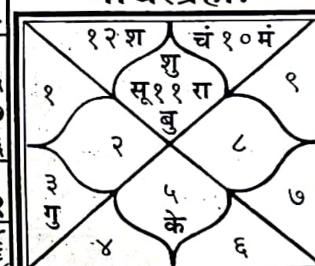
♣ कुम्भ संक्रान्ति फलम् – देवालय संभागीय ♣

फाल्गुन कृष्ण पक्षे १० गुरौ कुम्भेऽर्कः प्र.वा. २ न. ३ अस्य पुण्यकालः पर दिने शुक्रवासरे सूर्योदय वेलातः पुण्यप्रदः वार नाम–मंदा–धर्मोपदेशक, कथावाचक, व्याख्याता, लेखक, पत्रकार, शिक्षक, प्रोफेसर, प्रवचनकर्ता वर्ग हेतु सुखद मनोत्साहवर्धक। नक्षत्र नाम राक्षसी–आदिवासी जन, सुदूर जंगल–पर्वत निवासी, जनजाति–अनुसूचित, अल्पसंख्यक वर्ग हेतु सुखद। रात्रि ४ याम व्यापिनी दुग्ध व्यवसायी, पशुपालक वर्ग, पर श्रम विशेष प्रभारक कष्टद प्रतिफल। पूर्वे गमन, आग्नेयां दृष्टिः संक्रान्ति वासनिवास, भाली गृहे; बालवकरणे, वाहन–व्याघ्र; उपवाहन–अश्व; पीतवस्त्र, गदायुध, रजतपात्र, पायस भक्षण, कंकुमलेपन, भूतजाति, जाति पुष्प, कंकण भूषण; पर्ण कंचुकी, कुमार्यावस्था, उपविष्टा मुहूर्त–४५, धान्य–गल्ला स्थिर समभाव, घोड़ा, सोना, चाँदी, चना, तुवर, हल्दी, सरसों, दानामेथी, केसर, चंदन, रोली, चाय, तमाखु, सौंठ, गरम मसाला, सुगंधी पदार्थ, उन्नत धारणा। शुक्रोदय पश्चिमे; वत्स पश्चिमे, राहु दक्षिणे, मूल भूमौ।

अ. ४४ फाल्गुन कृष्णे ३० भौमे इष्ट ०।०

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	१०	९	९	१०	२	१०	११	१०	४
अं.	०४	२९	२५	२१	२१	१४	०६	१५	१५
क.	१०	००	०७	५३	३९	०५	०७	२७	२७
वि.	२४	०७	२८	३९	१०	३९	००	१६	१६
ग	६०	७१०	४७	७४	०४ ०९	७५	०६	३	३
ति	३२	४६	१३	१०	व	०१	४५	११	११
नक्षत्र	धनिष्ठा ४	धनिष्ठा २	धनिष्ठा १	पूभा. १	पुन. १	शत. ३	उभा. १	शत. ३	पूफा. १

卐 निर्णयसागरीय गोचरग्रहाः 卐



● **विवाहे त्रिज्येष्ठ विचार** ● यदि वर कन्या दोनों ज्येष्ठ हों तो उनके जन्म–मास–जन्म नक्षत्र–जन्मतिथि दिवस पर विवाह नेष्टसूचक तथा यह विचार केवल ज्येष्ठ वर–कन्या हेतु ही है एवं द्वितीय गर्भादि जन्म वालों हेतु मान्य नहीं तथा ज्येष्ठ मास–ज्येष्ठ वर–ज्येष्ठ कन्या ये तीन ३ त्रिज्येष्ठ संज्ञक होते है एवं इन तीन की गणना रचना स्थिति पर ही ज्येष्ठ मास का विवाह शुभ सूचक नहीं तथा २ पक्ष रहते यथा ज्येष्ठ मास और ज्येष्ठ (कन्या या वर) मध्यम माने गये हैं, इस स्थिति में ज्येष्ठ मास विवाह का निषेध नहीं है तथा ज्येष्ठ मास में भी कृतिकायां रविः नक्षत्र चार समय त्यागकर ज्येष्ठ मास में भी विवाह करना शुभ है, यह भी परिहार समाधान मान्य है। ● **मूलादि जन्म नक्षत्र फलम्** ● विशाखा नक्षत्र की कन्या देवर हेतु प्रभारक कष्टद परन्तु विशाखा ४ चरण मात्र अशुभ तथा आश्लेषा मूल नक्षत्र उत्पन्न वर+कन्या क्रमशः सास एवं श्वसुर हेतु कष्टद। परन्तु मूल ४ चरण एवं आश्लेषा १ चरण नेष्ट मात्र।

फाल्गुन शुक्ल पक्षः संवत् २०८२ रा.शाकः १९४७

रवियोगाः	तिथि	वार	घटी	पल	घं.	मि.	नक्षत्र	घटी	पल	घं.	मि.	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	दिनमान पल	स्टेण्डर्ड टाईम सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	विविध तारीखें बंग	मुस	भा	चन्द्रराशि प्रवेश काल रा.घटी पल	घं.मि.	सूर्योदय कालिक सूर्य स्पष्ट रा.अ.क.वि.	गति	अंग्रेजी ता.
मानस	१	बु	२४	१७	१६	५८	श	३५	०३	२१	१६	शि	३८	४५	ब	२४	१७	२८	०३	७	१५	६	२८	७	२९	२९	कुम्भ		१०।०५।१०।५६	६०।३१	१८
मुद्गर	२	गु	२१	५२	१५	५९	पूभा	३४	०४	२०	५२	सि	३३	४०	कौ	२१	५२	२८	०७	७	१४	६	२९	८	२१	३०	मीन १९:२४	१५:००	१०।०६।११।२७	६०।२९	१९
२०।०७ उ.	३	शु	१८	३४	१४	३९	उभा	३२	१५	२०	०७	सा	२७	५४	ग	१८	३४	२८	११	७	१३	६	३०	९	२	फा१	मीन		१०।०७।११।५६	६०।२७	२०
११।०७ या.	४	श	१४	३२	१३	०१	रे	२९	४६	१९	०७	शु	२१	३६	वि	१४	३२	२८	१४	७	१३	६	३०	१०	३	२	मेष २९:४६	११:०७	१०।०८।१२।२४	६०।२६	२१
१७।५५ उ.	५	र	०९	५७	११	१०	अ	२६	४७	१७	५५	शु	१४	५२	बा	०९	५७	२८	१८	७	१२	६	३१	११	४	३	मेष		१०।०९।१२।४९	६०।२४	२२
१६।३४ या.	६	चं	०४	५७	०९	१०	भ	२३	२७	१६	३४	ब्र	०७	४९	तै	०४	५७	२८	२२	७	११	६	३२	१२	५	४	वृषभ ३७:३४	२२:१२	१०।१०।१३।१३	६०।२२	२३
क्षय	७	चं	५९	३९	३१	०३	0	०	०	०	०	0	०	०	0	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0		० ०	०	०
गद	८	मं	५४	१५	२८	५२	कृ	१९	५३	१५	०७	ऐं	००:५३	३४:१०	वि	२६	५९	२८	२६	७	१०	६	३२	१३	६	५	वृषभ		१०।११।१३।३४	६०।२०	२४
१३।३९ उ.	९	बु	४८	५१	२६	४१	रो	१६	१४	१३	३९	वि	४५	४८	बा	२१	३४	२८	२९	७	०९	६	३३	१४	७	६	मिथुन ४४:२४	२४:५५	१०।१२।१३।५४	६०।१८	२५
पूर्णरवि	१०	गु	४३	३५	२४	३४	मृ	१२	३८	१२	११	प्री	३८	३३	तै	१६	१२	२८	३३	७	०८	६	३३	१५	८	७	मिथुन		१०।१३।१४।१२	६०।१६	२६
१०।४९ या.	११	शु	३८	३५	२२	३३	आ	०९	१४	१०	४९	आ	३१	३०	व	११	०३	२८	३७	७	०७	६	३४	१६	९	८	कर्क ५१:५३	२७:५२	१०।१४।१४।२७	६०।१४	२७
छत्र	१२	श	३४	०४	२०	४४	पुन	०६	१२	०९	३५	सौ	२४	४९	ब	०६	१६	२८	४१	७	०६	६	३५	१७	१०	९	कर्क		१०।१५।१४।४१	६०।१२	२८
०८।३४ उ.	१३	र	३०	११	१९	१०	पु	०३	४२	०८	३४	शो	१८	३८	कौ	०२	०३	२८	४५	७	०५	६	३५	१८	११	१०	कर्क		१०।१६।१४।५२	६०।१०	मा१
०७।५२ या.	१४	चं	२७	१०	१७	५६	श्ले	०१	५८	०७	५२	अ	१३	०६	व	२७	१०	२८	४८	७	०४	६	३६	१९	१२	११	सिंह ०१:३५	०७:५२	१०।१७।१५।०२	६०।०८	२
पूर्णिमा	१५	मं	२५	११	१७	०८	म	०१	१०	०७	३२	सु	०८	२२	ब	२५	११	२८	५२	७	०३	६	३६	२०	१३	१२	सिंह		१०।१८।१५।१०	६०।०६	३

अंग्रेजी ता.	✦फरवरी–मार्च सन् २०२६ ई. शिशिर बसंत ऋतुःरवि उत्तरायणे–दक्षिणगोले✦ ♣सम्प्रति भद्रादि ग्रह – नक्षत्रचार समय भार.स्टे.टा.घण्टा–मिनटों में ही अंकित किये हैं♣
१८	चंद्रदर्शनं मीने भानुः २१:२२ बसंत ऋतु प्रा.
१९	शतभिषायां रविः १८:३४ फुलेरा दूज रामकृष्ण परमहंस ज.रमजान मास ९ पाक रोजे शुरू
२०	भ. २५:५२ उ.सर्वा.अमृत. २०:०७ उ. ३१:१३ या.रा.फाल्गुन मास प्रा.
२१	भ. १३:०१ या.पंचक १९:०७ या.पूभायां शुक्रः २४:३६
२२	सर्वा. ०७:१२ उ. १७:५५ या.
२३	भ. ३१:०३ उ.कुम्भे भौमः ११:५०
०	**A** होली चौमासा विधान प्रा.जैन रौद्र नामक ५४ वां संवत्सर प्रा.
२४	भ. १७:५८ या.सर्वा. ०७:१० उ. १५:०७ या.श्री दादूदयाल ज.होलाष्टक प्रा.अष्टान्हिका पर्व **A**
२५	सर्वा. ०७:०९ उ. ३१:०८ या.
२६	वक्री बुधः १२:१७
२७	भ. ११:३३ उ. २२:३३ या.सर्वा. १०:४९ उ. ३१:०६ या.आमलकी ११ व्रतं सर्वे.मेला खाटू श्यामजी **B**
२८	रा.विज्ञान दि. **होलिका दहन निर्णय हेतु पृष्ठ २६ देखें।**
मा१	सर्वा. ०७:०५ उ. ०८:३४ या.रवि पुष्य ०७:०५ उ. ०८:३४ या.प्रदोष व्रतं **C**
२	भ. १७:५६ उ. २९:२९ या.पूर्णिमा व्रतं होलिका दहन प्रदोषे सायं ०६:३६ उ. ०९:०० या.
३	छारंडी वसंतोत्सवःधुलण्डी पूर्णिमा पुण्य चन्द्रग्रहण **D**

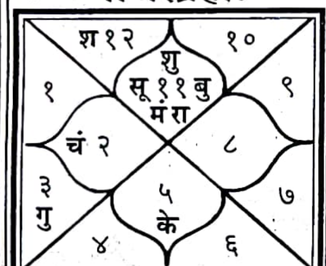








निर्णयसागरीय गोचरग्रहाः



अ.४५ फाल्गुन शुक्ले ८ भौमे इष्ट ०।०

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	१०	१	१०	१०	२	१०	११	१०	४
अं.	११	०५	००	२७	२१	२२	०६	१५	१५
क.	१३	१७	३८	५६	१४	५०	५५	०५	०५
वि.	३४	३८	०४	१९	०१	१९	०५	०१	०१
गति	६० २०	८५१ ३७	४७ १५	१६ ५२	०२:५० व	७४ ५२	०७ ०१	३ ११	३ ११
नक्षत्र	शत. २	कृत्तिका ३	धनिष्ठा ३	पूभा. ३	पुन. १	पूभा. १	उभा. २	शत. ३	पूफा. १

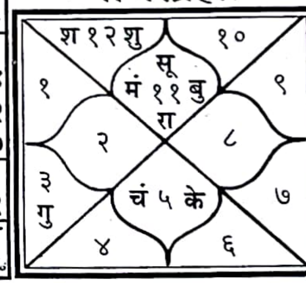
♣ ग्रह गोचरीय फलश्रुतिः ♣

द्विर्द्वादश शनि भौम का, नीति राज नवरंग। नेता, नायक आपदा, आंदोलित जन संग ॥ अमा पूर्णिमा भौमवती, अग्निकाण्ड अधियोग। आतंक द्वन्द्व हिंसा मति, विस्फोटक अभियोग ॥ क्रूरवार तेजी करे, मावस भौम कुसंग। मंदी से तेजी बने, वस्तु विविध प्रसंग ॥ निर्यातक गति न्यूनता, आयात रूप नवदेश। दलहन तिलहन नित्य का, उन्नत भाव निवेश ॥ वार पांच मंगल गति, गोचर गमन निहार। नेता नायक दलपति, कष्टद रूप विचार॥ पूनम फाल्गुन मास की, मेघ गाज गति लक्ष। भावी तेजी मानिये, गल्ला धान्य के पक्ष ॥ नव पंचम गुरु भौम का, भारत लोक महान। अणु शक्ति विज्ञान का, साधक देश विधान ॥ उत्पादन उद्योग हित, जन मानस अभिलक्ष। समाधान सूचक बने, नायक सन्मति दक्ष ॥

अ.४६ फाल्गुन शुक्ले १५ भौमे इष्ट ०।०

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	१०	४	१०	१०	२	११	११	१०	४
अं.	१८	१३	०६	२६	२०	०१	०७	१४	१४
क.	१५	०४	०८	३४	५८	३३	४४	४२	४२
वि.	१०	११	४६	१५	११	४६	४७	४७	४७
गति	६० ०६	७१५ ४२	४७ १४	४५:२४ व	०१:२९ व	७४ ४१	०७ १३	३ ११	३ ११
नक्षत्र	शत. ४	मघा ४	धनिष्ठा ४	पूभा. २	पुन. १	पूभा. ४	उभा. २	शत. ३	पूफा. १

निर्णयसागरीय गोचरग्रहाः



● **होलिका वायु प्रवाह शकुन सूत्र फलम्** ● होली दीपन के समय पूर्व दिशा का वायु प्रवाह सुखद, अग्निकोणीय आगजनी कारक, दक्षिण का दुर्भिक्ष एवं पशुपीड़ाकारक, नैऋत्य का फसल में हानिप्रदायक, पश्चिम का सामान्य सूचक एवं उन में तेजीप्रद, वायव्य कोण का चक्रवात–पवन वेग आंधीकारक, उत्तर एवं ईशानकोणीय मेघ गाज सूचक, चारों दिशा कोणीय राष्ट्रसंकट परिचायक, वायु शान्त होवे तथा होली की झल उंचे आकाश की गति में जावे तो उत्पात सूचक, फाल्गुन पूर्णिमा के दिन मेघ गाज वर्षा आंधी वायु वेग होने से भावी रूप में धान्य गल्ला कार्य व्यवसाय लाभदायक बनें। पूनम फागुन मास की, मेघ गाज गति लक्ष। भावी तेजी मानिये, गल्ला धान्य के पक्ष॥ इति वायु प्रवाह शकुनसूत्रम् ● **व्यवहार प्रसंग–शाश्वत नीति** ● लालयेत् पंचवर्षाणि दशवर्षाणि ताड़येत्। प्राप्ते तु षोडशे वर्षे पुत्रे मित्रत्वमाचरेत् ॥ लालनाद् बहवोदोषास्ताडनाद बहवो गुणाः। तस्मात्पुत्रं च शिष्यं च ताडयेन्नतु लालयेत् ॥ विद्या ददाति विनयं विनयाद् याति पात्रताम्। पात्रत्वाद् धनमाप्नोति धनाद् धर्मः ततः सुखम् ॥

B प्रा.रामस्नेही फूलडोल शाहपुरा मेवाड़ बुधास्त प. २७।५५ **C** मीने शुक्रः २४।५७ **मार्च मास ३ ता. ३१ प्रा.** **D** चैतन्य महाप्रभु ज.कुण्डलपुर मक्षीजी श्री सोनागिरि मेला जैन अष्टान्हिका पर्व विधान पूर्ण जैन शतभिषा भौम २२।५५

चैत्र कृष्ण पक्षः संवत् २०८२ रा.शाकः १९४७

✦ मार्च सन् २०२६ ई. बसंत ऋतुः रवि उत्तरायणे–दक्षिण गोले ✦

♣ सम्प्रति भद्रादि ग्रह – नक्षत्रचार समय भार.स्टे.टा.घण्टा–मिनटों में ही अंकित किये हैं ♣

रवियोगाः	तिथि	वार	घटी	पल	घं.	मि.	नक्षत्र	घटी	पल	घं.	मि.	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	दिनमान पल	स्टेण्डर्ड टाईम सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	विविध तारीखें बंग	मुस	भा	चन्द्रराशि प्रवेश काल रा.घटी पल	घं.मि.	सूर्योदय कालिक सूर्य स्पष्ट रा.अ.क.वि.	गति	अंग्रेजी ता.	
सुस्थिर	१	बु	२४	२८	१६	४९	पूफा	०१	३१	०७	३९	धृ	०४	३५	कौ	२४	२८	२८	५६	७	०२	६	३७	२१	१४	१३	कन्या १६/४८	१३/४६	[illegible]	[illegible]	४	पूभायां रविः २४/५५ बसंतोत्सवःउभायां शुक्रः १७/०९
मातंग	२	गु	२५	०७	१७	०४	उफा	०३	११	०८	१८	शू	०१	५०	ग	२५	०७	२९	००	७	०१	६	३७	२२	१५	१४	कन्या		[illegible]	[illegible]	५	भ. २९/२५ उ.सन्त तुकाराम जन्म
चौ.व्रत	३	शु	२७	१४	१७	५४	ह	०६	१४	०९	३०	गं	००/५९	१२/३९	वि	२७	१४	२९	०४	७	००	६	३८	२३	१६	१५	तुला ३८/१६	२२/११	[illegible]	[illegible]	६	भ. १७/५४ या.चैत्री चतुर्थी व्रतं चंद्रोदय रात्रि २१/२८
काण	४	श	३०	४६	१९	१८	चि	१०	४०	११	१६	ध्रु	६०	००	बा	३०	४६	२९	०८	६	५९	६	३८	२४	१७	१६	तुला		[illegible]	[illegible]	७	सर्वा. ११/१६ उ. ३०/५८ या.
लुम्बक	५	र	३५	३३	२१	१२	स्वा	१६	२३	१३	३२	ध्रु	००	१३	कौ	०३	०२	२९	१२	६	५८	६	३९	२५	१८	१७	तुला		[illegible]	[illegible]	८	विश्व महिला दि.श्रीरंग पंचमी अस्तं शनि प. ०९/३४
१६।११ उ.	६	चं	४१	१६	२३	२८	वि	२३	०५	१६	११	व्या	०१	३५	ग	०८	२०	२९	१५	६	५७	६	४०	२६	१९	१८	वृश्चि. ०६/२१	०९/३०	[illegible]	[illegible]	९	भ. २३/२८ उ.सर्वा. १६/११ उ. ३०/५६ या.एकनाथ षष्ठी
११।०५ या.	७	मं	४७	२६	२५	५५	अ	३०	२२	१९	०५	ह	०३	३२	वि	१४	२१	२९	१९	६	५६	६	४०	२७	२०	१९	वृश्चिक		[illegible]	[illegible]	१०	भ. १२/४१ या.शीतला सप्तमी शतभिषायां बुधः ०७/५६
ध्वांक्ष	८	बु	५३	३२	२८	२०	ज्ये	३७	४२	२२	००	व	०५	४१	बा	२०	३३	२९	२३	६	५५	६	४१	२८	२१	२०	धनु ३७/४२	२२/००	[illegible]	[illegible]	११	शीतलाष्टमी बासोड़ा मार्गी गुरूः ०९/०१ केशरियाजी मेला मेवाड़ वर्षीतप प्रा. A
धूम्र	९	गु	५८	५८	३०	३०	मू	४४	३३	२४	४४	सि	०७	४०	तै	२६	२३	२९	२७	६	५४	६	४१	२९	२२	२१	धनु		[illegible]	[illegible]	१२	A जैन ऋषभ जन्म+दीक्षा श्री आदिनाथ दीक्षा कल्याणक जैन
प्रवर्ध	१०	शु	६०	००	-	-	पूषा	५०	२५	२७	०३	व्य	०९	०५	व	३१	१८	२९	३१	६	५३	६	४२	३०	२३	२२	धनु		[illegible]	[illegible]	१३	भ. १९/२५ उ.दशामाता व्रत **सं. २०८३ घट स्थापना हेतु पृष्ठ १७ देखें।**
राक्षस	१०	श	०३	१८	०८	११	उषा	५४	५३	२८	४९	व	०९	३५	वि	०३	१८	२९	३५	६	५२	६	४२	चै१	२४	२३	मकर ०६/४२	०९/३३	[illegible]	[illegible]	१४	भ. ०८/११ या.सर्वा. २८/४९ उ. ३०/५१ या.मीनेऽर्कः २५/०४ बं.चैत्र मास प्रा.बुधोदय पू. १२/४०
ए.व्रत	११	र	०६	०५	०९	१७	श्र	५७	४३	२९	५६	प	०८	५५	बा	०६	०५	२९	३९	६	५१	६	४३	२	२५	२४	मकर		[illegible]	[illegible]	१५	पापमोचिनी ११ व्रतं सर्वे.रेवत्यां शुक्रः १०/३७
प्रदोष	१२	चं	०७	०८	०९	४१	ध	५८	५०	३०	२२	शि	०६	५६	तै	०७	०८	२९	४३	६	५०	६	४३	३	२६	२५	कुंभ २८/३१	१८/१४	[illegible]	[illegible]	१६	सोम प्रदोष व्रतं पंचक १८/१४ उ.
मृत्यु	१३	मं	०६	२६	०९	२३	श	५८	२०	३०	०९	सि	०३/५८	३५/५२	व	०६	२६	२९	४७	६	४९	६	४४	४	२७	२६	कुंभ		[illegible]	[illegible]	१७	भ. ०९/२३ उ. २०/५९ या.मास शिवरात्रि रंग तेरस श्रीप्रकाश पुरी निर्वाण मंडोर जोधपुरे
पद्म	१४	बु	०४	०५	०८	२६	पूभा	५६	२३	२९	२१	शु	५३	०३	श	०४	०५	२९	५१	६	४८	६	४४	५	२८	२७	मीन ४२/००	२३/३६	[illegible]	[illegible]	१८	उभायां रविः ०९/२१ पितृकार्ये अमावस्या B श्री गौतम ज.गुड़ी पड़वा ज्योतिष दि.ध्वजारोपण
अमावस	३०	गु	००	१७	०६	५३	उभा	५३	१५	२८	०५	शु	४६	१५	ना	००	१७	२९	५५	६	४७	६	४५	६	२९	२८	मीन		[illegible]	[illegible]	१९	सर्वा. २८/०५ उ.देवकार्ये अमावस्या सं.२०८२ पूर्ण नवरात्रि प्रा.घट स्थापना चैत्री नववर्ष प्रा. B






निर्णयसागरीय गोचरग्रहाः



अ.४७ चैत्र कृष्णे ८ बुधे इष्ट ०।०

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	१०	७	१०	१०	२	११	११	१०	४
अं.	२६	२२	१२	१९	२०	११	०८	१४	१४
क.	१५	३१	२६	०५	५१	३०	४३	१७	१७
वि.	०८	२२	३९	१०	४५	२९	०६	२२	२२
ग	५९	७१४	४७	५३/४९	००	७४	०७	३	३
ति	५२	००	१३	व	०५	२८	२३	११	११
नक्षत्र	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

♣ मीन संक्रांति फलम् – भवन संभागीय ♣

चैत्र कृष्ण पक्षे १० शनौ मीनेऽर्कः प्र.वा.३ न.३ अस्य पुण्यकालः पर दिने रविवासरे सूर्योदय वेलातः पुण्यप्रदः वार नाम राक्षसी–श्रमजीवी, निर्धन परिवार, जनजाति, व्यवसायहीन, समुदाय हेतु, मनोत्साहवर्धक सुखद प्रतिफल। नक्षत्र नाम मंदा–वैज्ञानिक, शोधकार्यकर्ता, विद्वान जगत साहित्यकार प्राचार्य, ज्ञानप्रदाता हेतु सौख्यकारक। रात्रि ३ याम व्यापिनी, गायक, वादक, नर्तक, चलचित्र, अभिनेता, निर्माता हेतु कष्टद प्रभारसूचक। उत्तरे गमन, ईशान दृष्टिः संक्रान्ति वासनिवास दुष्टजन–पापात्मागृहे, बालवकरणे, वाहन व्याघ्र, उपवाहन अश्व, पीतवस्त्र, गदायुध, रजतपात्र, पायस भक्षण, कुंकुमलेपन, भूतजाति, जाति पुष्प, कंकण भूषण, पर्ण कंचुकी, कुमार्यावस्था, उपविष्टा मुहूर्त–४५, धान्य गल्ला स्थिर समभाव; घोड़ा, सोना, चांदी, चना, तुवर, हल्दी, सरसों, दानामेथी, केसर, चंदन, रोली, चाय, तमाखु, सौंठ, गरम मसाला, सुगंधी पदार्थ, उन्नत धारणा, शुक्रोदय पश्चिमे, वत्स पश्चिमे, राहु दक्षिणे, मूल भूमौ।

अ.४८ चैत्र कृष्णे ३० गुरौ इष्ट ०।०

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	११	११	१०	१०	२	११	११	१०	४
अं.	०४	०४	१८	१४	२०	२१	०९	१३	१३
क.	१३	०९	४४	२५	५७	२५	४२	५१	५१
वि.	१८	४२	१०	१९	४९	३२	२८	५७	५७
ग	५९	८४५	४७	०७/३९	०१	७४	०७	३	३
ति	३८	२७	०९	व	३८	१५	२८	११	११
नक्षत्र	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

निर्णयसागरीय गोचरग्रहाः







♣ संक्रांतिवाहनं–व्याघ्रः संक्रान्त्युपवाहनं– अश्व ♣



♠ अथ मकर संक्रान्ति प्रतिफलम् – श्रीमन्नृपति विक्रमार्क २०८२ शाके १९४७ एवं श्री सिद्धार्थी – श्री रौद्र नामके संवत्सरे रवि सौम्यायने– शिशिरऋतौ माघमासे कृष्णपक्षे ११ बुधवासरे २५ घटी ५५ पल अनुराधा नक्षत्रे ४८ घटी ५१ पल गण्ड योगे ३१ घटी ०१ पल बालव करणे २५ घटी ५५ पल दिनमान २६ घटी १८ पल रजनीमानं ३३ घटी ४२ पल एवं पंचांगशुद्धावत्र– दिनेष्टघटीका १९ घटी ०० पल (१५:०७ घंटा मिनट) अपराह्न वेला मकरराशौ सूर्यसंक्रमणं स्यात् एवं समयानुगते – तदा देवानां दिनोदयः तथा च दैत्यानां रात्र्युदगमः अस्य पुण्यकालः धर्मशास्त्रीयय वाचानुसारे अधैव बुधवासरे अपराह्न वेलात सूर्यास्तपर्यन्तः शुभपुण्यप्रदः।

♣ वाहनादि प्रकार विषये– वाहनादि प्रकार विषये– वारात् ३ नक्षत्रात् ३ वार नाम मन्दाकिनी –अधिशासी, विकास अधिकारी, जिलाधीश, नेतानायक, श्रमिक नेता मंत्री पदस्थ जातको हित शुभ फल मनोउत्साह वर्धक। नक्षत्र नाम मन्दाकिनी – शासक – शासन वर्ग विशेष, श्रीमंत वर्ग, नेता दलपति अनुशासक, अभियंता, आरक्षी नायक सेना नायक राजकीय पद विशेष वर्ग हेतु सुखद फलदायी शुभ उपलक्षक सुख संचारक। दिवा ३ याम व्यापिनी आयत निर्यातक, वैश्य, उद्योगपति, स्वतंत्र कार्यकर्त्ता, व्यापारी, शेयर बाजार करकपक्ष हेतु कष्टद प्रभार सूचक। पश्चिमे गमन, वायव्यां दृष्टिः। बालव करणे, वाहन– व्याघ्र, उपवाहन– अश्व, पीतवस्त्र, गदायुध, रजत पात्र, पयास भक्षण, कुमकुम लेपन, भूत जाति, जाति पुष्प, कंकण भूषण, पर्ण कंचुकी, कुमार्यावस्था, उपविष्टा, मुहूर्त– ३०, धान्य गल्ला स्थिर सम भाव, सोना, चांदी, तिल, घी, तेल, मूंग, चना, तुवर, पोस्ता, केसर, अलसी, हल्दी, सरसों, दानामेथी, केसर, चन्दन, रोली, चाय, तम्बाकू, सौंठ, गरम मसाला, सुगंधी पदार्थ, उन्नत धारणा। रवि संक्रमण बुध दिवस, निर्णय शास्त्र सुदक्ष। तेल, गुड़, रस, खांड में तेजी का ही पक्ष। वास निवास रवि संक्रमण वन जंगल (माली) अधिकार। बाग़–बगीचा भाग में, रमण रूप अभिसार।। इतीद् मकर संक्रमणं फलाशय सूत्रं पंचांगे निर्णयसागरे– नीमच नगरस्थे।। शुभम् भूयात् सर्वदा श्रीरस्तु – विविध कल्याणमस्तु – सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वेसन्तु निरामयाः।। इत्यादि सुमंगलकामना सर्वेषां कृते।। ♣

♠ शनिचार एवं गुरु-बृहस्पति गतिचार फलाशय सूत्रावली ♠ श्री सिद्धार्थी – श्री रौद्र नामक संवत्सर कालांश के अंतर्गत श्री शनिदेव का राशि परिभ्रमण गोचर गतिचार चैत्री वर्ष प्रारम्भ से वर्ष पर्यंत मीन राशि विषयक ही भ्रमण शील रहेंगे। एवमेव गणना गतिचार अनुसार मूलतया पूर्वा भाद्रपद और उत्तर भाद्रपद नक्षत्रों में गतिक्रम चरितार्थ रहेगा। गणनानुसार संहिता मेदिनी शास्त्रानुसार मीन जनित शनिप्रतिफल एकपक्षीय रूप में शुभसूचक नहीं। इस कालांश में राजनैतिक गतिविधि विशेषकर प्रभावी बनें, साथ ही सामाजिक, आर्थिक क्षेत्र में भी अभिनव प्रक्रिया का असर बन पावे। सूत्र भी है कि **मीने प्रजाक्षयः– मीने तु सर्वदेशोऽपि संकष्टः।** श्रवण कृष्ण पक्ष ३ दिनांक १३.७.२५ से मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष ८ ता. २८.११.२५ तक वक्र गतिचार भी कायम होगा। वक्री शनि हेतु संहिता वचन यह कि **कन्या मीने यदा सौरी राशिवक्रंप्रजायते। नृप युद्धं भयं लोके दुर्भिक्षं तत्र जायते।। पुररपि ग्रन्थ भेदे तु–दुर्भिक्षं कुरूते मीन कन्योर्वक्रतां गतः। शनिर्दुष्टोधनुर्मीन कन्यायुग्म वृषस्थितः। कन्यायां मिथुन मीने–शनि करोति दुर्भिक्षः राजयुद्ध परस्परम्।।** सूत्रानुसार भावार्थ यह कि राजनेता, दलपति, जननायक, सत्तारूढ़ दल वा विरोधी दल इनमें आत्मसात्, पारस्परिक वैचारिक क्षमता नहीं बन पावें, सशक्त दलों में दरार विखण्डना गति का मानक प्रतीत होवे। राष्ट्रीय आदर्श अनुराग की मनोवृत्ति में न्यूनता तथा निज स्वार्थपद लोलुपता का पथ विशेषकर बन पावे। विविध सदनों की कार्यवाही में गतिरोध तथा अमानवीय असद् आचरण का गतिमान बनें। राष्ट्रीय उत्पत्ति–उत्पादन, कल कारखानों के गतिक्रम में व्यवधान बनें एवं श्रमिक रोष आन्दोलित प्रतिक्रिया का विकास बन पावें। इस वर्ष में विशेषकर उत्तरा भाद्रपद एवं पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र का स्पर्श शनिदेव को प्राप्त होगा। नक्षत्रद्वय गतिचार वश शास्त्रवचन–**द्वे नक्षत्रे यदा सौरी वर्षेण चरते यदा। राज्ञामम्योऽन्य भेदश्च शस्त्र कोपं च जायते।।** अभिप्राय यह कि देश देशान्तर के नायकों में भी विवाद विग्रह–सीमा विवाद आदि का चलन कलन। तथा ऋतु जनित विषमता–ऋतु प्रकोपवश सुभिक्ष की आमना न्यून बनें तथा नक्षत्र प्रतिफल अनुसार नदी, तीर, निवासी, देशजन, वाहन मालिक, वाहन चालक, शिल्पज्ञ, कारीगर, भवन निर्मातागण तथा महिला जगत, हेतु शुभफल प्रदायक नहीं। इन हेतु त्रास पीड़ा का प्रतिफल विशेषकर बन पावे।

✷ बृहस्पति गुरुदेव का वार्षिक परिभ्रमण – बृहस्पति गुरुदेव का गतिचार चैत्री नववर्ष, चैत्र शुक्ल प्रतिपदा दिनांक ३०.३.२५ ई. से १४.५.२५ तक वृषभ राशि तथा यहाँ से दिनांक १८.१०.२५ ई. तक मिथुन राशि में गतिशील तथा दिनांक १८.१०.२५ ई. से ०५.१२.२५ तक कर्क राशि में गुरु तथा यहाँ से पुनः वर्ष पर्यंत १९.३.२६ तक मिथुन राशि मध्य गतिशील रहेगा। वृषभ राशि गुरु गतिशील सूत्र यह कि **वृषराशौयदा–जीवोवैशाखोवत्सरस्तदा। नंदशालोभवेन्मेघः सर्वधान्यसमर्घता।। वैशाखेआश्विनेमासेस्त्रीणांरोगाश्वदन्तिनाम्। अश्वानांचमहापीडागृहवैरंपरस्परम्** अर्थात् वृषराशि में बृहस्पति होने से वैशाख वत्सर जानना। उसमें नंदशाल नामक मेघ वर्षा करता है और सब रस सस्ते होते हैं। वैशाख और आश्विन में स्त्री वर्ग को पीड़ा हो परस्पर विरोध हो। मिथुन राशि गुरु भ्रमण संहिता सूत्र – **मिथुने च गुरूर्याति तत्राब्दे दारूणं भयम्। नृपाणां विग्रहा तत्र स्वल्पं तोयं भविष्यति।।** तथा च कर्क राशिगत प्रतिफलम् – **बृहस्पतिर्यदा कर्के स्वल्पं मेघः प्रवर्षति। राजभिर्विग्रहश्चैव दुर्भिक्षं तत्र जायते।।** मूल भावार्थ फलाशय यह कि भाषा–भूषा– धर्मोन्माद की विभावना मनोवृत्ति का चलन–कलन विशेष बनें तथा विभिन्न देश संभाग में भूमि विवाद–प्रान्तीय समस्या की अभिवृद्धि रहे। विश्वमण्डलीय राष्ट्र नायकों में वाद–विवाद, अस्त्र–शस्त्र सेना का चलन–कलन सेना एवं सेनानायकों पर प्रभार चरितार्थ बनें। ऋतुजनित एवं देवकोप प्रकृति विपर्यय न्यूनाधिक बन पावें। सफेद वस्त्र, कपूर, चंदन, नारियल, सोना–चांदी इनमें तेजी–मंदी बनी रहे। रेशमी वस्त्र, जायफल, लौंग, मिर्च यह जाड़े में व्यापारियों को संग्रह करना चाहिए, घी, तेल, खाण्ड और कपास आदि में लाभ हो, अन्य सभी धान्य तेज रहे। गुरूदेव मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष ७ मंगलवार ता. ११.११.२५ से चैत्र कृष्ण पक्ष ८ बुधवार ता. ११.३.२६ तक वक्री गतिचार से गतिमान रहेगे – गुरुवक्री कालांश प्रतिफलं – **धनक्षयस्तदा लोके चौरादराजापि रोषितः निराधारा प्रजापीड़ा ग्रहभूतादिदोषतः गुरुवक्रेस्थिरो रोगः** अर्थ रोजगार समस्या वृद्धि एवं तंत्र वित्त व्यवस्था समाधान हेतु अर्थशास्त्रियों द्वारा नवीन कर भार टैक्स तथा आर्थिक नीति रीति में नवीन रचना सूत्र प्रतिपादित बनें।।

✷ राहु केतु गतिचार – चैत्री वर्ष प्रारम्भ से राहु – मीन का एवं केतु – कन्या राशि का गतिशील है तथा ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष ५ रविवार ता. १८.५.२५ से राहु – कुम्भ का एवं केतु – सिंह राशि का गतिशील प्रभावी रहेगा। इन विषयक गतिचार से फलाशय यह कि परस्पर राष्ट्रनायकों वैचारिक विभेद, परस्पर राजनयिक सन्धि प्रस्ताव में न्यूनता, विदेशनीति विकृति, विद्युत प्रसारण में न्यूनता, विद्युत प्रपात से जन, धन, क्षति, तथा वस्त्र–सूत–कपास, जूट पाट–सण, कांसी ताम्बा विविध धान्य के कार्य व्यवसाय लाभद बनें! संहिता प्रतिफल– **यस्मिन्संवत्सरेराहुर्मीनराशौप्रजायते। तस्मिन्मासेभयंविद्युदुः खकष्टसमागतः।।** भावार्थ – जिस वर्ष में मीन का राहु हो तो उनके आक्रांत मास में बिजली का भय हो और कष्ट का आगमन होता है। **एवंज्ञात्वाचकर्तव्योयावदन्नादिसंग्रहः। संग्रहः सर्वधान्यानांलाभो द्वित्रिचतुर्गुणः** भावार्थ – इस समय में अन्न का संग्रह किया जाय तो दुगुना, तिगुना लाभ हो!

● यह ज्योतिर्विज्ञान का प्रालेख संहिता मैदिनी शास्त्रानुगत अभिव्यक्ति होता है। तदुपरांत प्रकृति प्रधान विजनित मायावी तंत्र सृष्टि संरचना का विधान नियामक एवं गौ–प्रजा की भाग्य रचना का प्रारूप वर्चस्व भी सतत् सबल प्रबल रहता है। यह नैसर्गिक शाश्वत बिंदु प्राधार भी स्पष्ट गतिक विचारणीय अवशेष रहता है।। श्रीस्तु।।

卐 दिन का चौघड़िया 卐

र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
उ	अ	रो	ला	शु	चं	का
चं	का	उ	अ	रो	ला	शु
ला	शु	चं	का	उ	अ	रो
अ	रो	ला	शु	चं	का	उ
का	उ	अ	रो	ला	शु	चं
शु	चं	का	उ	अ	रो	ला
रो	ला	शु	चं	का	उ	अ
उ	अ	रो	ला	शु	चं	का

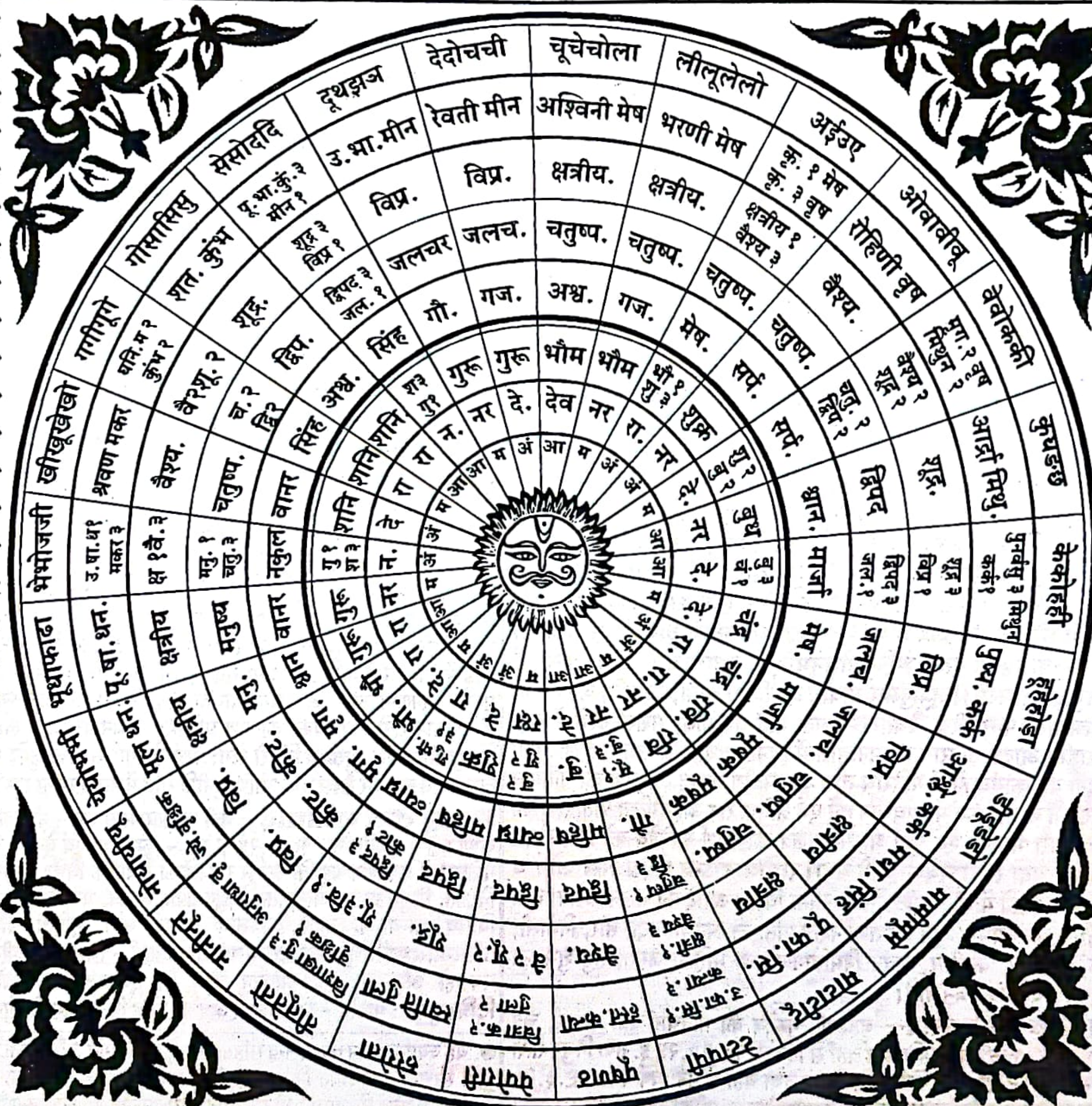
卐 रात्रि का चौघड़िया 卐

र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
शु	चं	का	उ	अ	रो	ला
अ	रो	ला	शु	चं	का	उ
चं	का	उ	अ	रो	ला	शु
रो	ला	शु	चं	का	उ	अ
का	उ	अ	रो	ला	शु	चं
ला	शु	चं	का	उ	अ	रो
उ	अ	रो	ला	शु	चं	का
शु	चं	का	उ	अ	रो	ला

卐 चौघड़ियामुहूर्त्त 卐

८ दिन के तथा ८ रात के होते हैं। उ.से उत्पात। चं. से चंचल। ला. से लाभ। अ. से अमृत। का. से काल। शु. से शुभ। रो. से रोग का बोध समझें। मध्यममानत: १ चौघड़िया का मान १॥ घंटे का होता है। गणितागत सूत्र - इष्ट दिन के दिनमान में ८ का भाग देने से १ का मान आवेगा। दिन का सूर्योदय में तथा रात्रि का सूर्यास्त में योग करने से गणना होती है।

अवकहडाचक्रसहितवरवधूमेलापकोपयोगिशतपदचक्रम्



❀ अथ खातचक्रम् - राहुपृष्ठीय ❀

संक्रा.	विवाहे	देवालये	राहुपृष्ठ कोण
सूर्य	२।३।४	१२।१।२	आग्नेये खातं
सूर्य	११।१२।१	९।१०।११	नैऋत्ये खातं
सूर्य	८।९।१०	६।७।८	वायव्ये खातं
सूर्य	५।६।७	३।४।५	ईशाने खातं
संक्रा.	जलाशये	गृहारंभे	राहुपृष्ठ कोण
सूर्य	१०।११।१२	५।६।७	आग्नेये खातं
सूर्य	७।८।९	२।३।४	नैऋत्ये खातं
सूर्य	४।५।६	११।१२।१	वायव्ये खातं
सूर्य	१।२।३	८।९।१०	ईशाने खातं

❀ अथ श्री महामृत्युंजय ❀ ▲ जपनीय मंत्र ▲

ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः। ॐ त्रयम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टि वर्धनम् उर्वारूकमिव बन्धनान्मृत्यो र्मुक्षीयमामृतात् भूर्भुवः स्वरों सः जूं हौं ॐ।

❀ त्र्यक्षरी मंत्र - ॐ जूं सः ❀

❀ रक्षार्थमंत्र - ॐ जूं सः (अमुकं -नामोच्चारणं) पालय पालय सः जूं ॐ ▲ शत्रुनाश एवं रोगनिवृत्ति ॐ जूं सः (शत्रुनाम वा रोग नामोच्चारणं) नाशय नाशय सः जूं ॐ

❀ मंत्र सरलार्थ - हम परमेश्वर त्रयम्बक की आराधना करते हैं वह परम सुखप्रदायक एवं पुष्टिवर्धक है। यथा तरबूज आदि फल (परिपाक होने से स्वयं ही) बेल से मुक्त होते हैं, वैसे ही (पूर्ण आयु भोगकर) मैं मृत्युमय जीवन से (बिनाकष्ट) मुक्त होउं, परन्तु अमृतमय जीवन से मुक्त नहीं होउं। ▲ ▲

अथ वरकन्ययोर्नक्षत्रमेलापके वर्णादिनाड्यन्तानामष्टकूटानां गुणस्य संख्या पञ्चाङ्गे निर्णयसागरे

(१) वर्णगुणज्ञानचक्र

वर ➤ ▲ परस्पर कार्यक्षमता

	वर	ब्रा.	क्ष.	वै.	शू.
कन्या	ब्राह्मण	१	०	०	०
	क्षत्रिय	१	१	०	०
	वैश्य	१	१	१	०
	शुद्र	१	१	१	१

(६) गणमैत्रीगुणज्ञानचक्र

वर ➤ परस्पर अभिरूचि

	गण	देव	नर.	राक्षस
कन्या	देव.	६	५	१
	नर.	५	६	०
	राक्षस.	१	०	६

(२) वश्यगुणज्ञानचक्र

वर ➤ परस्पर प्रीति संबंध

	वश्य	च.	नर.	ज.	वन	की.
कन्या	चतु.	२	१	१	॥	१
	नर.	१	२	१	०	०
	जल	१	॥	२	१	२
	वन	०	०	२	२	०
	कीट	१	०	१	०	२

(८) नाड़ीगुणज्ञानचक्र

शारीरिक संबंध तथा सन्तति

वर	नाड़ी	आ.	म.	अं.
कन्या	आदिं	०	८	८
	मध्य	८	०	८
	अन्त्य	८	८	०

(४) योनि गुणज्ञानचक्र

परस्पर दिमागी सम्बन्ध सन्तुलन विवेक

वर	योनि	अश्व	गज	मेष	सर्प	श्वा.	मा.	मूष.	गौ.	महि	व्या.	मृग	वान	नकु	सिं.
कन्या	अश्व	४	२	२	२	२	२	२	३	१	१	३	३	२	१
	गज	२	४	३	२	२	२	२	२	३	२	२	२	२	०
	मेष	३	३	४	३	२	३	२	३	३	१	३	०	३	१
	सर्प	२	२	३	४	२	२	१	१	२	२	२	२	०	२
	श्वान	२	२	२	२	४	१	१	२	२	१	०	२	२	१
	मार्जा	२	२	३	२	१	४	०	२	२	१	२	२	२	२
	मूषक	२	३	२	१	१	०	४	२	२	२	२	२	२	१
	गौ	३	२	३	१	२	२	२	४	३	०	३	२	३	१
	महि	१	३	३	२	२	२	२	३	४	१	२	२	२	३
	व्याघ्र	१	२	१	२	१	१	२	०	१	४	१	१	२	२
	मृग	३	२	३	२	०	२	२	३	२	१	४	२	२	२
	वानर	२	३	०	२	२	२	२	२	२	२	२	४	२	३
	नकुल	२	२	३	०	२	२	२	३	२	२	२	२	४	२
	सिंह	१	०	१	२	१	२	१	१	३	२	२	३	२	४

(७) राशिकूट गुणज्ञान चक्र

परस्पर दैनिक जीवनचर्या अनुक्रम-व्यवहार

वर	राशि	मेष	वृष.	मिथु	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि	धनु	मकर	कुंभ	मीन
कन्या	मेष	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०
	वृषभ	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७
	मिथु	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७
	कर्क	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०
	सिंह	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०
	कन्या	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७
	तुला	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०
	वृश्चि	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०
	धनु	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७
	मकर	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७
	कुंभ	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०
	मीन	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७

(३) तारागुणबोधकचक्र

परस्पर एक दूसरे को समझने की शक्ति

वर	तारा	१	२	३	४	५	६	७	८	९
कन्या	१	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
	२	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
	३	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
	४	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
	५	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
	६	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
	७	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
	८	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
	९	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३

तारा ज्ञान सूत्र कन्या के नक्षत्र से वर नक्षत्र तक तथा वर के नक्षत्र से कन्या नक्षत्र तक गणना करें। अलग २ दोनों में ९ के भाग से शेष ३-५-७ बचते तारा अशुभ। शेष अंक १-२-४-६-८-० में शुभ अर्थात् ३ गुण की मान्यता।

(५) ग्रहमैत्रीगुणचक्र

वर ➤ परस्पर प्रकृति स्वभाव

	ग्रह	सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श
कन्या	सू.	५	५	५	४	५	०	०
	चं.	५	५	४	१	४	॥	॥
	मं.	५	४	५	॥	५	३	॥
	बु.	४	१	॥	५	॥	५	४
	बृ.	५	४	५	॥	५	॥	३
	शु.	०	॥	३	५	॥	५	५
	श.	०	॥	॥	४	३	५	५

▲ मंगल का परिहार ▲

यदि कन्या के जो मंगल होवे और वर के उपरोक्त स्थानों में मंगल के बदले में शनि सूर्य राहु, केतु होवे तो मंगल का दोष दूर करता है। पाप क्रान्त शुक्र तथा सप्तम भावपति की नेष्ट स्थिति भी मंगल तुल्य ही समझना चाहिए।

पगड़ी मंगल चुनड़ी मंगल जिस वर या कन्या के जन्म कुंडली में मंगल लग्न से या चन्द्र से तथा वर के शुक्र से भी १।४।७।८।१२ स्थान भावों में मंगल होवे तो मांगलिक गुणधर्म की कुण्डली समझें।

वर्णादि	वर	गुण	कन्या
वर्ण	विप्र	१	क्षत्रिय
वैश्य	जल	१	मनुष्य
तारा	शेष २	३	शेष ९
योनि	गज	२	श्वान
ग्रहमै	गुरू	५	गुरू
गणमै	देव	०	राक्षस
भकूट	चार	७	दश
नाड़ी	अन्त्य	८	आदि
एवं	गुण	२७	योग

अथ गुणानयन उदाहरण

● वर का नाम चन्द्र चूड़ कन्या का नाम भवानी वर का जन्म नक्षत्र रेवती कन्या का जन्म नक्षत्र मूल इनके गुण २७ हुये। अत: एवं विवाह शुभ है। गण नहीं मिला उसके परिहार में राशि मैत्री उत्तम बनी है। अत: दोष विशेष नहीं। गुण १८ से अधिकाधिक शुभ रहते हैं तथा १८ से कम हीन हैं। किन्हीं दोषों के रहते यदि परिहार वाक्य अच्छे बनते हों तो दोष नगण्य होंगे तथा गुण वृद्धि में सहायक होंगे।

अपने नामाक्षर से वैर वर्ग ज्ञान कोष्ठक

अपने नाम के वर्ग से पंचम ५ गणना का वर्ग शत्रु-वैरी समझें। तृतीय ३ गणना का सम मित्र तथा चतुर्थ गणना का मित्र वर्ग समझना चाहिए।

अ इ उ ए	क ख ग घ ङ	च छ ज झ ञ	ट ठ ड ढ ण	त थ द ध न	प फ ब भ म	य र ल व	श ष स ह
गरूड़	मार्जार	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	मृग	मेढा-मेष



▲ जन्माक्षररचनामध्ये ▲ हंसकतत्व विवेचना

मेष	सिंह	धनु	अग्नि तत्व
वृषभ	कन्या	मकर	भूमि तत्व
मिथुन	तुला	कुम्भ	वायु तत्व
कर्क	वृश्चिक	मीन	जल तत्व

जन्माक्षर रचनामध्ये — युंजा-विवेक

पूर्व युंजा	अश्विनी-भरणी-कृतिका-रोहिणी-मृगशिरा-रेवती।
मध्य युंजा	आर्द्रा-पुनर्वसु-पुष्य-आश्लेषा-मघा-पूर्वा फाल्गुनी-उत्तरा फाल्गुनी-हस्त-चित्रा-स्वाति-विशाखा-अनुराधा।
अन्त्य युंजा	ज्येष्ठा - मूल - पूर्वाषाढ - उत्तराषाढ - श्रवण - घनिष्ठा - शतभिषा - पूर्वाभाद्रपद - उत्तराभाद्रपद।

उर्ध्वाधरस्थान्यपि भानि पुंसां
पार्श्वद्वयस्थानि तथा वधूनाम्।

卐 वरवधू गुणमेलापक सारिणी 卐

संपातकोष्ठे शुभयोर्गुणैक्यं सर्वं
शुभं तत्स्मृतितोऽधिकं यत् ॥



● वधू		● वर	मेष			वृष			मिथुन			कर्क		
			चू चे चो ला	लि लू ले लो	अ	इ उ ए	ओ वा वि वु	वे वो	क कि	कू घ ङ छ	के को ह	ही	हु हे हो डा	डी डू डे डो
			अ ४	भ ४	कृ १	कृ ३	रो ४	मृ २	मृ २	आ ४	पु ३	पु १	पु ४	आ ४
मेष	चू चे चो ला	अ ४	२८ ३	३३ ०	२८॥	१८॥ ४	२१॥ -४	२२॥ -४	२६	१७ ३	१९ ३	२३॥ ३	३१॥	२८
मेष	लि लू ले लो	भ ४	३४	२८ ३	२९ ०१	१९ ०४१	२२॥ -४	१४॥ ३४	१८ ३	२६	२७	३१॥	२३॥ ३	२५॥ १
मेष	अ	कृ १	२७॥	२९ १	२८ ३	१८ ३४	१० १३४०	१६॥ ४	२०	२० १	२१	२५॥	२६॥	२३॥ ३
वृष	इ उ ए	कृ ३	१८॥ ४	२० १४	१९ ३४	२८ ३	२० १३	२६॥	१७॥ +४	१७॥ १४	१८॥ +४	२२	२३	२० ३
वृष	ओ वा वि वु	रो ४	२३॥ -४	२३॥ ४	११ ३४१	२० ३१	२८ ३	३६ ०	२५॥ ०४	२३॥ +४	२२॥ +४	२६	२७	१२ ३१
वृष	वे वो	मृ २	२३॥ -४	१४॥ ३४	१८॥ -४	२७॥	३५	२८ ३	१९ ३४	२४ ०४	२२॥ +४	२६	१९ ३	२१
मिथुन	क कि	मृ २	२७	१८ ३	२२	१९॥ +४	२७ +४	२० ३४	२८ ३	३३ ०	३१॥	१९ -४	१२ ३४	१४ ४
मिथुन	कू घ ङ छ	आ ४	१९ ३	२७	२१ १	१८॥ -१४	२४॥ +४	२६ +४	३४	२८ ३	२५ ३०	१२॥ ०३४	२० -४	१३ १४
मिथुन	के को ह	पु ३	२० ३	२७	२३	२०॥ +४	२२॥ +४	२३॥ +४	३१॥	२४ ३	२८ ३	१५॥ -३४	२२॥ ४०	१७ -४
कर्क	ही	पु १	२२॥ ३	२९॥	२५॥	२२	२४	२५	१८ ४	१०॥ ३४	१४॥ ३४	२८ ३	३५ ०	२९॥
कर्क	हु हे हो डा	पु ४	३०॥	२१॥ ३	२६॥	२३	२५	१८ ३	११ ३४	१८ ४	२१॥ ४	३५	२८ ३	३० ०
कर्क	डी डू डे डो	श्ले ४	२६॥	२४॥ १	२२॥ ३	१९ ३	११ ३१	१९	१२ ४	१२ १४	१५ ४	२८॥	२९	२८ ३
सिंह	म मी मू मे	म ४	२० +५	२० १५	१६॥ ३५	१७॥ ३	९॥ ३१	१७॥	२१॥	२२॥ १	२०॥ -२	१६॥ -२४	१९ +४	१६ ३४२
सिंह	मो टा टी टू	पू ४	२६ +५	१८ ३५	२० -१५	२१ १	२३॥	१५॥ ३	१९॥ ३	२८॥	२६॥ -२	२२॥ -२४	१७॥ ३४	१६॥ १२४
सिंह	टे	उ १	१५॥ ३५	२६ +५	२० -१५	२१ १	२६	२४॥	२८॥	२०॥ ३	२१॥ ३	१७॥ ३४	२५॥ +४	१९॥ -१४
कन्या	टो प पी	उ ३	११ ३६	२२॥ ६	१६॥ १६	२१ -१५	२६ +५	२४॥ +५	३१॥	२३॥ ३	२४॥ ३	२० ३	२८	२२ १
कन्या	पू ष ण ठ	ह ४	९ २३६	२० ६	१७॥ ६	२२ +५	२५ +५	२६ +५	३३	२२॥ ३	२४॥ ३	२० ३	२८	२३
कन्या	पे पो	चि २	१३ ६	५ १३६	१९ ६	२३॥ +५	२० १५	१२ ३५	१९ ३	२७ १	२५॥	२१	१२ ३	२७
पंचांगे निर्णयसागरे नीमचनगरस्थे			अ ४	भ ४	कृ १	कृ ३	रो ४	मृ २	मृ २	आ ४	पु ३	पु १	पु ४	आ ४

● वधू		● वर	सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक		
			म मी मू मे	मो टा टी टू	टे	टो प पी	पू ष ण ठ	पे पो	र री	रू रे रो ता	ति तू ते	तो	न नी नू ने	नो या यी यू
			म ४	पू ४	उ १	उ ३	ह ४	चि २	चि २	स्वा ४	वि ३	वि १	अनु ४	ज्ये ४
मेष	चू चे चो ला	अ ४	२१ +५	२५ +५	१५॥ ३५	११ ३६	९ २३६	१३ ६	२२॥	२६॥ -२	२२॥	१८॥ -६	२५॥ -६	१४ ३६
मेष	लि लू ले लो	भ ४	२० -१५	१८ ३५	२६ +५	२१॥ ६	२० ६	४ १३६	१३॥ १३	२९॥	२१॥ -१	१७॥ -१६	१७॥ ३६	१९ -१६
मेष	अ	कृ १	१६॥ ३५	२० १५	२० १५	१५॥ १६	१५॥ ६	१८ ६	२७॥	१५॥ ३	१९॥ ३	१५॥ ३६	१९॥ -६	२५॥ -६
वृष	इ उ ए	कृ ३	१८॥ ३	२२ १	२२ १	२१ १५	२१ +५	२३॥ +५	२२॥ -६	१०॥ ३६	१४॥ ३६	२०॥ ३	२४॥	३०॥
वृष	ओ वा वि वु	रो ४	१०॥ ३१	२४॥	२७	२६ +५	२६ +५	२० -१५	१९ -१६	१५॥ ३६	९॥ ३१६	१५॥ ३१	२९॥	२३॥ १
वृष	वे वो	मृ २	१९॥	१५॥ ३	२४॥	२३॥ +५	२६ +५	१३ ३५	१२ ३६	२५ -६	१८॥ -६	२४॥	२१॥ ३	२४॥
मिथुन	क कि	मृ २	२३॥	१९॥ ३	२८॥	३१॥	३४	२१ ३	१४ ३५	२७ +५	२०॥ +५	१४ ६	११ ३६	१४ ६
मिथुन	कू घ ङ छ	आ ४	२३॥ १	२९॥	२१॥ ३	२४॥ ३	२४॥ ३	२८ १	२१ -१५	२७ +५	२१ -१५	१४॥ १६	१७ २६	६ १३२६
मिथुन	के को ह	पु ३	२२॥ +२	२६॥ +२	२१॥ ३	२४॥ ३	२५॥ ३	२७॥	२०॥ +५	२८ +५	२२ +५	१५॥ ६	२१॥ ६	७ ३६
कर्क	ही	पु १	१६॥ -२४	२०॥ २४	१५॥ ३४	१८ ३	१९ ३	२१	२०॥	२८	२२	२० +५	२६ +५	११॥ ३५
कर्क	हु हे हो डा	पु ४	१९॥ +४	१५॥ ३४	२३॥ +४	२६	२७	१२ ३	११॥ ३	२६॥	२१	१७ +५	१८ ३५	२१ -५
कर्क	डी डू डे डो	श्ले ४	१५ ०३४२	१५॥ १४२	१८॥ -१४	२१ १	२१	२६	२५॥	१२॥ ३	१७॥ ३	१५॥ ३५	२० +५	२६ -५
सिंह	म मी मू मे	म ४	२८ ३	३० ०१	२७॥ १	१६॥ १४	१६॥ +४	२१॥ ४	२४॥	११॥ ३	१६॥ ३	२२॥ ३	२५॥	३३
सिंह	मो टा टी टू	पू ४	३० -१	२८ ३	३५ ०	२२॥ ०४	२२॥ +४	७॥ १३४	१०॥ १३	२५॥	१८॥ १	२४॥ -१	२३॥ ३	२५॥ -१
सिंह	टे	उ १	२७॥ -१	३५	२८ ३	१७ ३४	१६ ०३४	१३॥ १४२	१६॥ १२	२५॥	१६॥ १२	२२॥ -१२	३१॥	१७॥ १३
कन्या	टो प पी	उ ३	१७॥ १४	२५ +४	१८ ३४	२८ ३	२७ ३०	२४॥ -१२	१६॥ १२४	२५॥ +४	१६॥ १२४	१८ १२	२७	१३ १३
कन्या	पू ष ण ठ	ह ४	१८॥ +४	२२॥ +४	१६ ३४	२६ ३	२८ ३	२८ ०	२० ०४	२६॥ +४	१८॥ +४	२०	२६	१३ ३
कन्या	पे पो	चि २	२२॥ ४	८॥ १३४	१४॥ १२४	२४॥ १३	२७	२८ ३	२० ३४	११ ०४	२६॥ +४	२८	११ ३	२५
पंचांगे निर्णयसागरे नीमचनगरस्थे			म ४	पू ४	उ १	उ ३	ह ४	चि २	चि २	स्वा ४	वि ३	वि १	अनु ४	ज्ये ४

● वधू		● वर	धनु			मकर			कुम्भ			मीन			
			ये यो भ भी	भू धा फा ढा	भे	भो ज जी	खि खू खे खो	ग गि	गु गे	गो सा सी सू	से सो द	दी	दू थ झ ञ	दे दो चा ची	
			मू ४	पू ४	उ १	उ ३	श्र ४	ध २	ध २	श ४	पू ३	पू १	उ ४	रे ४	
मेष	चू चे चो ला	अ ४	१३ ३५	२५ +५	२३॥ +५	२५	२६	२०	२०	१५ ३	१६ ३	१४॥ ३४	२४॥ +४	२६ +४	अ ४
मेष	लि लू ले लो	भ ४	२० -१५	१८ ३५	२६ +५	२७॥	२६	१० १३२	१० १३२	२० -१	२४ -२	२२॥ -२४	१७॥ ३४	२६॥ +४	भ ४
मेष	अ	कृ १	२४॥ +५	१८ १२५	१२ ३१५	१३॥ १३	११॥ २३	२५	२५	२७	१९ १	१७॥ १४	१९॥ १४	११॥ ३४	कृ १
वृष	इ उ ए	कृ ३	२० ६	१३॥ १२६	७॥ १३६	१२ १३५	१० ३५२	२३॥ +५	२९॥	३१॥	२३॥ १	२० १	२२ १	१४ ३	कृ ३
वृष	ओ वा वि वु	रो ४	१४ १	१९ ६	११॥ ३२६	१६ ३५२	१७ ३५	२० -१५	२४॥ -१	२४॥ -१	३०॥	२७	२७	१९ ३	रो ४
वृष	वे वो	मृ २	१५ ६	१० ३६	१७ २६	२१॥ -२५	२५ +५	१३ ३५	१९ ३	२७	२९॥	२६	१८ ३	२७	मृ २
मिथुन	क कि	मृ २	२३	१८ ३	२५ +२	२० -२६	२३॥ -६	११॥ ३६	१३ ३५	२१ +५	२३॥ +५	२५॥	१७॥ ३	२६॥	मृ २
मिथुन	कू घ ङ छ	आ ४	१६ १३	२८	२८	२३ -६	२३ -६	१७॥ -१६	१९ -१५	१२ १३५	१७ ३५	१९ ३	२६॥	२६॥	आ ४
मिथुन	के को ह	पु ३	१४ ३	२७	२७	२२ -६	२३ -६	१७ -६	१८॥ +५	१४ ३५	१६ ३५	१८ ३	२८	२७॥	पु ३
कर्क	ही	पु १	८ ३६	२१ -६	२१ -६	२६	२७	२१	१२॥ ६	८ ३६	१० ३६	१६ ३५	२६ +५	२५॥ +५	पु १
कर्क	हु हे हो डा	पु ४	१७ ६	११ २३६	२१ ६	२६	२५ -२	१३ ३	४॥ ३६	१४॥ ६	१८ ६	२४ +५	१८ ३५	२७ +५	पु ४
कर्क	डी डू डे डो	श्ले ४	२२॥ ६	१६ १६	८ ३१६	१३ १३	१३ ३	२६	१७॥ ६	१९॥ ६	११॥ १६	१७॥ १५	२१ १५	१३ ३५	श्ले ४
सिंह	म मी मू मे	म ४	२५ +५	१९ १५	८॥ १३५	३॥ ३१६	४॥ ३६	१८॥ ६	२४॥	२५॥	१८॥ १	१८॥ -१६	१९॥ १६	१३ ३६	म ४
सिंह	मो टा टी टू	पू ४	१९ -१५	१७ ३५	२४ +५	१७॥ ६	१८॥ ६	४॥ १३६	१०॥ १३	१९॥ १	२४॥	२४॥ -६	१७॥ ३६	२५॥ -६	पू ४
सिंह	टे	उ १	९॥ १३५	२५ +५	२५ +५	२० ६	२० ६	११॥ १६	१७॥ १	११॥ १३	१५॥ ३	१५॥ ३६	२६॥ -६	२५॥ -६	उ १
कन्या	टो प पी	उ ३	१४ १३	२९॥	२९॥	२४॥ +५	२४॥ +५	१६ -१५	१६॥ -१६	१०॥ ३१६	१४॥ ३६	१७॥ ३	२८॥	२७॥	उ ३
कन्या	पू ष ण ठ	ह ४	१५ ३	२७	२८॥	२३॥ +५	२४॥ +५	१८॥ +५	१९ -६	८॥ ३६२	१३॥ ३६	१६॥ ३	२६॥	२७॥	ह ४
कन्या	पे पो	चि २	२८	१४ १३	२२ १	१७ १५	१८॥ +५	१५॥ ३५	१६ ३६	२४ -६	१६॥ १६	१९॥ १	१०॥ १३२	१९॥	चि २
पंचांगे निर्णयसागरे नीमचनगरस्थे			मू ४	पू ४	उ १	उ ३	श्र ४	ध २	ध २	श ४	पू ३	पू १	उ ४	रे ४	

इस वर वधू मेलापक (वर्ण वश्यादि) नक्षत्र जनित गुण मेलापक ० सारिणी की स्पष्टता यह कि उपर की पंक्ति में वर के नक्षत्र तथा वाम बायीं खड़ी पंक्ति में कन्या के नक्षत्र दिये हैं। गुण संख्या उपरी भाग में तथा नीचे दी गयी संख्या में दोषों का संकेत चिह्न है। चिह्न संख्या का विवरण यह कि नाड़ी दोष की जगह ३ अंक। गण दोष हेतु १ अंक। तथा भकूट दोष (षडाष्टक) में ६ अंक एवं (नव पंचम) हेतु ५ अंक। तथा द्विर्द्वादश में ४ अंक। वैर योनि में २ अंक का लेखन है। तथा जिस स्थान पर ० शून्य अंक यह नृदूर (वर के नक्षत्र से पहले वधू का नक्षत्र होना) यदि कोई दोष नहीं है तो संपात में शुद्ध गुण संख्या का अंकन किया गया है। मूलतया वर-कन्या राशि स्वामी मैत्री सुयोग बनने पर गण-ग्रहशत्रुता-भकूट आदि का परिहार मान्य होता है। तथा अल्प दोष विकार अथवा शास्त्रीय परिहार समाधान वचन बनने के विचार स्थल पर ऋण (-) अथवा (+) धन आदिक चिह्न मात्र का संकेत है। इन चिह्न हेतु मेलापक शास्त्रीय ग्रन्थों से समाधान लेना व्यावहारिक विषय है। ● **निर्णयसागर पंचांग कार्यालय, मु.पो. नीमच छावनी ४५८ ४४१ (म.प्र.)**



वधू ● वर			मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन			
			चू चे चो ला	लि लू ले लो	अ	इ उ ए	ओ वा वि वु	वे वो	क कि	कु घ ङ छ	के को ह	ही	हु हे हो डा	डी डू डे डो	म मी मू मे	मो टा टी टू	टे	टो प पी	पू ष ण ठ	पे पो	र री	रू रे रो ता	ति तू ते	तो	न नी नू ने	नो या यी यू	ये यो भ भी	भू धा फा ढा	भे	भो ज जी	खि खू खे खो	ग गि	गु गे	गो सा सी सू	से सो द	दी	दू थ झ ञ	दे दो चा ची	
			अ४	भ४	कृ१	कृ३	रो४	मृ२	मृ२	आ४	पु३	पु१	पु४	आ४	म४	पू४	उ१	उ३	ह४	चि२	चि२	स्वा४	वि३	वि१	अनु४	ज्ये४	मू४	पू४	उ१	उ३	श्र४	ध२	ध२	श४	पू३	पू१	उ४	रे४	
तुला	र री	चि२	२२॥	१४॥ १३	२८॥	२३॥ +६	२० १६	१२ ३६	१३ ३५	२१ १५	१९॥ +५	२०॥	११॥ ३	२६॥	२५॥	११॥ १३	१७॥ १२	१७॥ १२४	२० +४	२१ ३४	२८ ३	२७ ०	३४॥	२३॥ ४	६॥ ३४	२०॥ ४	२८	१४ १३	२२ १	२५ +१	२६॥	२३॥ ३	१८ ३५	२६ +५	१८॥ १५	१२॥ १६	३॥ ६२१३	१२॥ ६	चि२
	रू रे रो ता	स्वा४	२७॥ +२	२९॥	१७॥ ३	१२॥ ३६	१५॥ ३६	२६ -६	२७ +५	२६ +५	२८ +५	२९	२७॥	१४॥ ३	१३॥ ३	२५॥	२५॥	२५॥ +४	२७॥ +४	२१ +४	२८	२८ ३	२० ३०	९ ३४०	२१॥ ४	१६॥ ४	२३	२७	१९ ३	२२ ३	२३ ३	२६॥	२१ +५	२० -५२	२५ +५	१९ ६	१९॥ ६	१२॥ ३६	स्वा४
	ति तू ते	वि३	२२॥	२२॥ १	२०॥ ३	१५॥ ३६	१०॥ १३६	१८॥ -६	१९॥ +५	२१ १५	२१ +५	२२	२१	१८॥ ३	१७॥ ३	१९॥ १	१७॥ १२	१७॥ १४२	१८॥ +४	२७॥ +४	३४॥	१९ ३	२८ ३	१७ ३४	१६ ०४	२०॥ ४	२८	२२ १	१४ १३	१७ १३	१७ ३	३०	२४॥ +५	२६ +५	२० १५	१४ १६	१३ १६२	४॥ ३६	वि३
वृश्चिक	तो	वि१	१६॥ +६	१६॥ १६	१४॥ ३६	१९॥ ३	१४॥ १३	२२॥	१२ ६	१३॥ १६	१३॥ ६	१९ -५	१८ -५	१५॥ -५	२१॥ ३	२३॥ १	२१॥ १२	१७ १२	१८	२७	२२॥ ४	७ ३४	१६ ३४	२८ ३	२७ ०	३१॥	२२॥ +४	१६॥ ४१	८॥ १३४	१२ १३	१२ ३	२५	२४	२५॥	१९॥ १	१९ १५	१८ १५	९॥ ३२५	वि१
	न नी नू ने	अनु४	२४॥ -६	१५॥ ३६	१९॥ -६	२४॥	२७॥	२०॥ ३	१० ३६	१५ २६	२०॥ ६	२६ -५	१८ ३५	२१ -५	२४॥	२०॥ ३	२९॥	२५	२५	११ ३	६॥ ३४	२०॥ ४	१६ ४	२८	२८ ३	३१॥ ०	१५॥ -२४	१३॥ ३४	२१॥ +४	२५	२६	१२ ३	११ ३	२१	२४॥	२४ +५	१८ ३५	२७ +५	अनु४
	नो या यी यू	ज्ये४	१२ ३६	१८॥ १६	२४॥ -६	२९॥	२२॥ १	२२॥	१२ ६	२ ३१२६	५ ६३	१०॥ ५३	२० +५	२६ -५	३१	२३॥ १	१६॥ १३	१२ १३	११ ३	२४	१९॥ ४	१४॥	१९॥ ४	३१॥	३०	२८ ३	१४ ०२३४	१६॥ १४	१६॥ १४	२० १	२०	२५	२४	१८ ३	१० १३	९॥ १३५	२१ १५	२१ +५	ज्ये४
धनु	ये यो भ भी	मू४	१२ ३५	२० १५	२४॥ +५	१९ ६	१३ १६	१६ ६	२१	१५ १३	१२ ३	८ ३६	१७ ६	२३॥ ६	२५ +५	१९ १५	९॥ १५३	१३ ३१	१३ ३	२७	२७	२१	२६	२३॥ +४	१५॥ -२४	१५ ३४२	२८ ३	२८ ०१	२६॥ १	१५ १४	१५ ४	२० ४	२८॥	२१॥ ३	१४॥ १३	१६ १३	२५ १	२६॥	मू४
	भू धा फा ढा	पू४	२६ +५	१८ ३५	१८ १२५	१२॥ १६२	१८ ६	१० ३६	१८ ३	२७	२७	२३ ६	१३ २३६	१७ १६	१९ -१५	१७ ३५	२५ +५	२८॥	२७	१३ १३	१३ १३	२७	२१ १	१७॥ -१४	१५ ३४	१७॥ -१४	२८ +१	२८ ३	३४ ०	२३॥ ०४	२३ ४	६ १३४	१४॥ १३	२३॥ १	२८॥	३०	२३ ३	३१	पू४
	भे	उ१	२४॥ +५	२६ +५	१२ १३५	६॥ १३६	१०॥ २३६	१७ २६	२५ +२	२७	२७	२३ ६	२३ ६	९ १६३	८॥ १५३	२४ +५	२५ +५	२८॥	२८॥	२१ १	२१ १	१९ ३	१३ १३	९॥ १३४	२३॥ +४	१७॥ -१४	२६॥ -१	३४	२८ ३	१६॥ ३४	१४॥ ३४०	१५ १४	२३॥ १	२३॥ १	२९॥	३१	३१	२३ ३	उ१
मकर	भो ज जी	उ३	२७	२८॥	१४॥ १३	१२ १३५	१६ २३५	२२॥ -२५	२० -२६	२२ -६	२२ -६	२८	२८	१४ १३	४॥ १३६	२० ६	२१ ६	२४॥ +५	२४॥ १५	१७ १५	२४ -१	२२ ३	१६ १३	१३ ३१	२७	२१ १	१६ १४	२३॥ ४	१७॥ ३४	२८ ३	२६ ३०	२६॥ +१	१७ -१४	१७ -१४	२३ +४	३०॥	३०॥	२२॥ ३	उ३
	खि खू खे खो	श्र४	२७	२६	१३॥ ३२	११ ३५२	१६ ३५	२५ +५	२२॥ -६	२१ -६	२२ -६	२८	२६ +२	१५ ३	६॥ ३६	१८॥ ६	२० ६	२३॥ +५	२४॥ +५	१९॥ ५	२६॥	२२ ३	१७ ३	१४ ३	२७	२२	१७ ४	२३ ४	१४॥ ३४	२५ ३	२८ ३	२८ -०	१८॥ ०४	१८ +४	२१ +४	२८॥	२९॥	२२॥ ३	श्र४
	ग गि	ध२	२० ,	११ १३२	२६	२३॥ +५	२० १५	१२ ३५	९॥ ३६	१६॥ १६	१५ -६	२१	१३ ३	२७	१९॥ ६	५॥ १३६	१२॥ १६	१५ १५	१७॥ +५	१५॥ ३५	२२॥ ३	२४॥	२९	२६	१२ ३	२६	२१ ४	७ ३४१	१६ ४१	२६॥ १	२७	२८ ३	१८॥ ३४	२३॥ ४०	१९ ४	२६॥ १	१५॥ १३	२२॥ +२	ध२
कुम्भ	गु गे	ध२	२०	११ १३२	२६	३०॥	२७ १	१९ ३	१२ ३५	१९ १५	१७॥ +५	१२॥ ६	४॥ ३६	१८॥ ६	२५॥	११॥ १३	१८॥ १	१७॥ १६	१९ +६	१७ ३६	१८ ३५	२० -५	२४॥ -५	२५	११ ३	२५	२९॥	१५॥ १३	२४॥ १	१८ १४	१८॥ +४	१९॥ ३४	२८ ३	३३ ०	२८॥ १	१८ १४	७ १३४	१४ ४२	ध२
	गो सा सी सू	श४	१५ ३	२१ १	२८	३२॥	२५ १	२७	२० +५	१२ १३५	१३ ३५	६॥ ३६	१४॥ ६	२०॥ ६	२६॥	२०॥ १	१२॥ १३	११॥ १३६	८॥ १३६	२५ ६	२५ +५	१९ +५	२६ +५	२६॥	२१	१९ ३	२२॥ ३	२४॥ १	२४॥ १	१८ १४	१८ +४	२४॥ +४	३३	२८ ३	१९ ०१३	८॥ १३४०	१७ १४	१६ ४	श४
	से सो द	पू३	१८ ३	२५ +२	२० -१	२४॥ -१	३१॥	३१॥	२४॥ +५	१७ ३५	१७ ३५	१२ ३६	२० ६	१२॥ १६	१९॥ १	२५॥	१६॥ ३	१५॥ ३६	१५॥ -३६	१७॥ १६	१८॥ -१५	२६ +५	२० -१५	२०॥ १	२६॥	११ १३	१५॥ १३	२९॥	३०॥	२४ +४	२३ +४	२० -१४	२८॥ -१	१९ १३	२८ ३	१७॥ ३४	२२॥ ०४	२० ४२	पू३
मीन	दी	पू१	१४॥ ३४	२१॥ -४२	१६ -१४	१९ १	२६	२६	२५॥	१८ ३	१८ ३	१७ ३५	२५ ५	१७॥ १५	१७ -१६	२३॥ +६	१४॥ ३६	१६॥ ३	१६॥ ३	१८॥ +१	११॥ १६	१९ +६	१३ १६	१९ -१५	२५ +५	९॥ १३५	१५ १३	२९	३०	२९॥	२८॥	२५॥ १	१७ १४	७॥ १३४	१६॥ ३४	२८ ३	३३ ०	३०॥ +२	पू१
	दू थ झ ञ	उ४	२४॥ +४	१६॥ ३४	१८॥ -१४	२१ १	२६	१८ ३	१७॥ ३	२५॥	२८	२७ ५	१९ ३५	२१ १५	१८॥ -१६	१६॥ ३६	२५॥ +६	२७॥	२६॥	९॥ १३२	३॥ ३२१६	१९॥ ६	१२ १६२	१८ १५२	१९ ३५	२१ -१५	२४ -१	२२ ३	३०	२९॥	२९॥	१४॥ १३	६ १३४	१६ १४	२१॥ ४	३३	२८ ३	३५ ०	उ४
	दे दो चा ची	रे४	२५ +४	२४॥ +४	११॥ ३४	१४ ३	१७ ३	२६	२५॥	२४॥	२६॥	२५॥ ५	२७ ५	१४ ३५	१३ ३६	२३॥ +६	२३॥ +६	२५॥	२६॥	१९॥	१२॥ ६	११॥ ३६	४॥ ३६	१०॥ ३५	२७ -५	२२ +५	२६॥	२९	२१	२०॥ ३	२१॥ ३	२२॥ -२	१४ ४२	१६ ४	१८ ४२	२९॥ +२	३४	२८ ३	रे४
गे निर्णयसागरे नीमचनगरस्थे			अ४	भ४	कृ१	कृ३	रो४	मृ२	मृ२	आ४	पु३	पु१	पु४	आ४	म४	पू४	उ१	उ३	ह४	चि२	चि२	स्वा४	वि३	वि१	अनु४	ज्ये४	मू४	पू४	उ१	उ३	श्र४	ध२	ध२	श४	पू३	पू१	उ४	रे४	

शास्त्रीय मांगलिक योग

कुयोग-सुयोग संरचना सूत्रावली

✲ तथा च विविध परिहार-समाधान वचन मीमांसा ✲

नर-नारी के दाम्पत्य जीवन को सुख-सम्पदायुक्त अथवा दुःख दुःविधायुक्त बनाने के लिये केवल मात्र मंगल ग्रह ही उत्तरदायी नहीं। मांगलिक योग सदैव मांगलिक संज्ञा का ही नहीं होता है - सुमंगल पक्ष की संरचना भी बन पाती है। अतः जन्मकुण्डली में केवल मंगल की स्थिति को ही आधारभूत नहीं मानें। दाम्पत्य जनजीवन को कष्टद बनाने वाले शनि-राहु-केतु-सूर्य तथा शुक्र की भाव विषम स्थिति रचना पर भी ध्यान देना चाहिये।

(१) कुजदोष-मंगल का स्थान न्यास जन्मकुण्डली के १-४-७-८-१२ भाव स्थान पर होने से वर-कन्या की पत्रिका मांगलिक संज्ञा की कही जाती है यथा सूत्र-**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे। कन्याभर्तुविनाशः स्याद्भर्तुर्भार्याविनाशनम्॥** (२) यदि वर-कन्या की पत्रिका में जिस स्थान भाव पर मंगल हो तथा अन्य कोई प्रबल पाप ग्रह भी उस स्थान पर ही रहते कुज-भौम दोष नहीं रहता है एवं परिहार रचना बन जाती है। यथा सूत्र-**शनि भौमोऽथवा कश्चित्पापो वा तादृशोभवेत्। तेष्वेव भवनष्वेव भौम दोष विनाश कृत॥ भौम तुल्यो यदा भौमः पापो वा तादृशो भवेत्। उद्वाहः शुभदः प्रोक्ताश्चियुश्च सुखप्रदः॥** भावार्थ यह कि उष्णमुष्णेन शम्यते तुल्य सूचक संज्ञा परिहार बन जाता है। (३) वर-कन्या की पत्रिका में १-४-७-८-१२ स्थान भाव में शनि हो तो भी भौमदोष शान्त हो जाता है यथासूत्र - **यामित्रे च यदा सौरिर्लग्ने च हिबुके तथा। अष्टमे द्वादशे चैव भौमदोषो न विद्यते॥** (४) एक विशेष सूत्र रचना यह भी कि वर-कन्या के जन्मलग्न तथा चन्द्रलग्न दोनों से भाव गणना करना चाहिये। यथा - **चन्द्राल्लग्न व्ययाष्टमे मदसुखे राहुः कुजार्की तथा। कन्याश्चेद्वरनाश-कृद्वरवधूहानिर्ध्रुवं जायतेति॥** (५) मांगलिक कन्या का विवाह मांगलिक वर के साथ करना यह भी शास्त्र नियामक प्रचलित है यथा सूत्र - **कुजदोषवती देया कुजदोषवते किल। नास्ति न चानिष्टं दम्पत्योः सुखवर्धनम्॥** (६) तथापि वर-कन्या मांगलिक वर्ग-संज्ञा में मान्य है भी या नहीं ? इस पक्ष पर भी विचार मंथन कर लेना योग्य विषय है। मंगल रचना में यदि निम्न वचन शास्त्र नियामक भी प्रतीत होवे तो मांगलिक-कुजदोष नहीं बनेगा। यथासूत्र-**सप्तमस्थो यदा भौमो गुरूणा च निरीक्षितः। तदा तु सर्व सौख्यं स्याद्भोम दोषो विनश्यति॥** अर्थात् मंगल पर गुरू की पूर्ण दृष्टि बनते मंगलकृत दोष नहीं रहे। (७) पुनरपि शास्त्रीय समाधान सूत्र यह भी कि मेषराशि का मंगल लग्न में अथवा वृश्चिक राशि का मंगल चतुर्थ ४ सुखभाव में अथवा मकर राशि का सप्तम ७ वें तथा कर्कराशि का अष्टम ८ वें अथवा धनुराशि का मंगल द्वादश १२ वें भाव स्थान में रहते भौम दोष नहीं बनेगा। यथा शास्त्र वचन-**अजे लग्ने व्यये चापे पाताले वृश्चिके कुजे। द्यूने मृगे कर्किचाष्टौ भौमदोषो न विद्युते॥** (८) यदि वर कन्या के मंगल की स्थिति वक्री-नीच-अस्त-तथा शत्रु राशि की १-४-७-८-१२ वें भाव में हो तथा गुरू-शुक्र लग्न केन्द्रादि में बलवान राशि रचना के हो तो भी भौम दोष नगण्य माना जाता है। यथा शास्त्रीय वचन-**वक्रिणि-नीचारिगृहस्थे वाऽर्कस्थेऽपिवा न कुज दोषः। सबले गुरौ भृगौ वा लग्ने द्यूनगेऽपिवाऽथवा भौमे॥** (९) इस भौम दोष समाधान हेतु और भी शास्त्र वचन है कि गुरू-शुक्र केन्द्र स्थान १-४-७-१० वें भाव में स्थित एवं स्वनवमांश वर्ग का अथवा चन्द्र पर गुरू-शुक्र की पूर्ण दृष्टि हो अथवा शुभ ग्रहों के साथ सम्बंधशील मंगल तथा कर्क लग्न का मंगल अपनी नीच राशि का अथवा शत्रुराशि मिथुन-कन्या का अथवा अस्तगत स्थिति का रहते भी अनिष्टसूचक नहीं होता है यथाशास्त्रीय सूत्र-**जीवोऽथवा भृगु-सुतश्च स्वकेन्द्र संस्थस्तौ शीत भानुमपि पूर्णतया सुदृष्ट्या। नीचः स्वभागगमितौ यदि वीर्यवन्तौ भौमोत्थ दोषजभयं नयतो विनाशम्॥ पुनरपि ग्रन्थान्तरीय सूत्र रचना - शुभयोगादिकर्त्तत्वे नाऽशुभं कुरूते कुजः। कुजः कर्कटलग्नस्थो न कदाचन दोषकृत॥ नीचराशिगतः सोऽयं शत्रुक्षेत्र गतोऽपि च। शुभाऽशुभफलं नैव दद्यादस्तं-गतोऽपि च॥ अस्तगे नीचगेभौमेशत्रुक्षेत्र गतेऽपिवा। कुजाष्टमोद्भवो दोषो न किंचदपि विद्यते॥** (१०) मंगल दोष परिहार विषयक समाधान वचन यह भी कि यदि वर-कन्या मांगलिक होवे तथा यदि सूर्य ३-६-१०-११ भाव स्थान में होवे एवं गुरू कर्क उच्चराशि तथा शुक्र उच्च मीन राशि तत्व संज्ञा के होवें तथा चन्द्रमा २-५-९-११ स्थान भाव में हो तो मंगल दोष विनाशक अर्थात् मांगलिक संज्ञा नहीं बनेगी। यथाशास्त्रीय वचन-**त्र्यायारिदिक्षु मार्त्तण्डो स्वोच्चगौ जीवभार्गवौ। पक्षेषु नवरूद्रेषु शीतगुश्चेत्तदा शुभः॥** (११) वर कन्या के मांगलिक स्थिति रचना उपरान्त यदि मंगल मकर उच्च राशि का अथवा स्वगृही मेष-वृश्चिक राशि का हो अथवा स्वनवमांश राशि वर्ग का हो एवमेव ३-६-१०-११ स्थान भाव में प्रभावशील रहते भी मंगलदोष नहीं बनता। यथा शास्त्रीय प्रमाण सूत्र-**स्वगृहे स्वोच्चगे भौमे वर्गोत्तमगतेऽपिवा। बलाढ्योऽपचय स्थाने भौमस्तस्य न दोष कृत॥ तनु धन सुखमदना युर्लाभव्ययगः कुजस्तु दाम्पत्यम्। विघटयति तद्गृहेशो न विघटयति तुंगमित्रगेहे वा॥** भावार्थ यह विशेष भी कि मित्र राशि सिंह-कर्क-धनु-मीन का मंगल मंगली दोष कारक नहीं बनता है। (१२) वर कन्या के अष्टकूट गुणादि मेलापक जन्मराशि नक्षत्र अनुसार यदि २५ से ३० संख्या के गुण प्राप्त होवें तथा राशिपति मित्रता एवं परस्पर गण एकसमान वर्ग के होवें तो भी भौम-कुजदोष का निवारण होता है। यथा **राशिमैत्रं यदा याति गणैक्यं वा यदा भवेत्। अथवा गुण बाहुल्ये भौम दोषो न विद्यते॥** (१३) जिस वर-कन्या की पत्रिका में प्रथम भावादि १-४-७-८-१२ में स्थित मंगल यदि चन्द्र अथवा गुरू के साथ युतिकारक अथवा चन्द्रमा केन्द्र स्थान १-४-७-१० भाव में होवें तथा सप्तम ७ भावेश अपने सप्तम स्थान में हो एवं केन्द्र-त्रिकोण भाव में शुभग्रह तथा ३-६-११ भाव स्थानों में पापग्रह हो इस रचना स्थिति के बनते भी मांगलिक दोष मान्य नहीं होगा। यथा शास्त्रीय वचन-**केन्द्रे कोणे शुभाढ्याश्चेत् त्रिषडायेऽप्य सद्ग्रहाः। तदा भौमस्य दोषो न मदने मदपस्तथा॥ कुजो जीवसमायुक्तो युक्तो वा शशिना यदा। चन्द्रः केन्द्रगतो वाऽपि तस्य दोषो न मंगली॥** (१४) यदि वर-कन्या की पत्रिका में लग्न से-चन्द्रमा से-तथा शुक्र से १-२-४-७-८-१२ इन भाव स्थानों में किसी एक स्थान पर ही अर्थात् जिस भाव राशि में वर के स्थित हो उसी भाव राशि स्थान में कन्या के भी होवें तो भी मांगलिक परिहार बन पाता है तथा दाम्पत्य जीवन सुखद रहता है। परन्तु यदि वर-कन्या में से दोनों के मंगल अलग-अलग स्थानों पर हो तो उपर्युक्त सुफल नहीं प्राप्त होगा। यथा-**दम्पत्योर्जन्मकाले व्ययधनहिबुके सप्तमे रन्ध्रलग्ने। लग्नाच्च शुक्रादपि खलु निवसन् भूमिपुत्रस्तयोश्च। दाम्पत्यं दीर्घकालं सुतधनबहुलं पुत्रलाभश्च सौख्यं। दद्यादेकत्र हीनौ मृतिमखिलभयं पुत्रनाशं करोति॥** (१५) मंगल आदि अन्य तत्सम पापक ग्रहों के परिहार दोष निवारण हेतु यह सूत्र भी अवलोकनीय है। यथा जो भाव अपने स्वामी से युक्त हो या दृष्टि प्रदाता हो तो उन भावों का फल शुभ-सूचक बनेगा। तथा पापग्रहयुक्त बुध एवं क्षीण चन्द्रमा यदि शनि-मंगल-सूर्य के साथ अथवा इनसे ही देखा जावे तो उन भाव स्थानों की हानि नेष्टफल बनना भी स्पष्ट है तथा शुभग्रह बुध-गुरू-शुक्र सबल प्रभावशील चन्द्र से युक्त अथवा दृष्ट हो उन भावों का प्रतिफल शुभसूचक यथा शास्त्रीय वचनसूत्र विशेष - **यो यो भावः स्वामिदृष्टो युतो वा सौम्येर्वास्यात्तस्य तस्यास्ति वृद्धिः। पापैरेवं तस्य भावस्य हानि निर्देष्टव्या पृच्छतां जन्मतो वा॥** इस प्रकार केवल १-४-७-८-१२ स्थान स्थित मंगल के रहते ही कुजदोष-मांगलिक कुयोग नहीं बन पाता है। अन्य भी लिखित विविध शास्त्रीय परिहार समाधान सूचक वचनों का मंथन करते-विचारशील रहते सारभूत तथ्य निर्णय करना शास्त्रसम्मत

निर्णयसागर पंचांग कार्यालय-नीमच छावनी (म.प्र.)

विविधशास्त्रीयपरिहार

अष्टकूट गुण मेलापक एवं विविध मुहूर्त्त निर्णय में तथा ग्रह शांति - अनुष्ठान आदि कार्य रचना में मूल दोष-प्रदोष रचना स्थिति बनने पर उन विषयक समाधान सुविधा परिहार वचनों की सम्मान्यता आगम काल से सम्मान्य है। कुयोगद स्थिति रहते सुयोग का वर्चस्व प्रभाव बनने पर कुयोग का पलायन होना - बनना सर्वशास्त्र सम्मत है। यथा-अयोगे सुयोगोऽपिचेत् स्यात्तदानीमयोगं निहत्यैष सिद्धिं तनोति।। पुनरपिवचनम् - अयोग: सिद्धियोगश्च द्वावेतौ भवतो यदि। अयोगो हन्यते तत्र सिद्ध योग: प्रवर्त्तते। ग्रन्थान्तरेऽपि सूत्राधारम्-दोषाश्चबहव: सन्ति गुणा: स्वल्पा: कलौयुगे। तथापि दोषा नश्यन्ति स्वापवाद गुणै: सह।। भावार्थ यह कि किसी कुयोग दिवस पर सुयोग विशेष यथा (अमृतसिद्धि-सवार्थ सिद्धि-दोष संघ विनाशक रवि योगादि तथा अन्य विशेष कल्पादि योग स्थिति) का समावेश बनें तो कुयोग दिवस नष्ट होकर सुयोग का ही प्रतिफल चरितार्थ होता है। इसी प्रकार गुण मेलापक-अष्टकूट गणना में भी बहुविध परिहार समाधान सूत्र हैं, परिहार बनने पर गुण संख्या वृद्धि करना-बनना भी एक नैसर्गिक नीति-रीति का स्पष्ट विषय है।

(१) राशि वर्ण (ब्राह्मण + क्षत्रिय + वैश्य + शुद्र) गुण मेलापक में इनकी विषमता बनने पर परिहार सूत्र - हीन वर्णो यदा राशी राशीशो वर्ण उत्तम:। तदा राशीश्वरो ग्राह्यस्तद्राशिं नैव चिन्तयेत्।। वर की अपेक्षा कन्या के राशि वर्ण अल्प होने पर यदि वर का राशिपति कन्या के राशिपति से उत्तम वर्ण का हो तो उस राशि का चिन्तन नहीं करें। ग्रहों का वर्ण संज्ञा सूत्र-गुरू शुक्र-विप्र ब्राह्मण। सूर्य मंगल-क्षत्रिय। चन्द्रमा-वैश्य। बुध-शनि - शुद्र वर्णक मान्य हैं। (२) वर कन्या के नक्षत्र योनि दोष विकार होने पर यदि वश्य गुण स्थिति योग्य है तो नक्षत्र योनि दोष पर विचार नहीं करें। यथा-योनेरथो वैरिभाव: स तु कार्ये वियोगद:। राशिवश्यं च यद्यस्ति कारयेन्न तु दोषभाक्।। (३) वर कन्या के राशिपतियों में शत्रुता रहने पर भी यदि दोनों की राशियों के नवांशपतियों में मित्रता हो अथवा नवांशपति बलवान हो तो ग्रह शत्रुता का दोष नहीं। यथा-राशिनाथे विरूद्धेऽपि सबलावंशकाधिपौ। तन्मैत्रेऽपि च कर्तव्यं दम्पत्यो: शुभमिच्छता।। (४) वर-कन्या के गण विषयक दोष विकार होने पर भी यदि राशिपतियों की परस्पर मित्रता है तो गण विकार नहीं रहेगा। यथा-ग्रहमैत्री च राशिश्च विद्यते नियतं यदि। न गणभावजनितं दूषणं स्याद्विरोधदम्।। (५) भकूट दोष निवारक परिहार वचन - वर की राशि से कन्या की राशि गणनानुगत ५ वीं अशुभ किन्तु नवम ९ वीं शुभ तथा वर से कन्या की राशि २ अशुभ परन्तु १२ वीं शुभ होती है। यथा-पुंसो गृहात् सुतगृहे सुतहा च कन्या, धर्मे स्थिता सुतवति पतिवल्लभा च। द्विर्द्वादशे धनगृहे धनहा च कन्या, रि:फे स्थिता धनवती पतिवल्लभा च।। तथा वर कन्या की २-१२, ६-८, ९-५ दुष्ट भकूट गणना होने पर भी यदि वर कन्या के राशि स्वामी एक ही हो अथवा राशिपतियों की मित्रता होने पर, गणदोष-दुष्ट भकूट दोष नगण्य हो जाता है। यथा-द्विर्द्वादशे वा नवपंचमे वा षट्काष्टके राक्षस-योषितौ वा। एकाधिपत्ये भवनेशमैत्रै: शुभाय पाणिग्रहणं विधेयम्।। पुनरपिशास्त्रवचनम् -वर्गवैरं योनिवैरं गणवैरं नृदूरकम। दुष्टकूट फलं सर्वं ग्रह मैत्रेण नश्यति।। प्रोक्तेदुष्टभकूटके परिणयस्त्वेकाधिपत्ये शुभो-अथो राशीश्वरसौहृदेऽपि - सूत्रानुगत भकूट परिहार यह भी कि १. वर कन्या राशिपति एक ही ग्रह होवें। २. राशिपतियों की मित्रता परस्पर होवें। ३. वर कन्या की तारायें (कन्यर्क्षाद् वरभं यावद् इत्यादि) परस्पर तारा शुद्धि रहते भी दुष्ट भकूट मान्य नहीं। ४. वर कन्या की राशि वश्यतासबलता - शुद्धि। ५. नवांश पतियों की मित्रता। ये पांच प्रकार के परिहार भी दुष्टभकूट दोष निवारक हैं तथापि इनमें परस्पर नाड़ी शुद्धि होना ही चाहिये। मैत्र्यां राशि स्वामिनो रंशनाथ द्वन्दस्यापि स्याद् गणनां न दोष:। खेटारित्वं नाशयेत्सद्भकूटं खेट प्रीतिश्चापि दुष्टं भकूटम्।। भावार्थ यह कि वर कन्या के राशिपतियों की परस्पर मित्रता हो अथवा दोनों के नवांशपतियों की मैत्री हो तो गण का दोष नहीं बनेगा तथा शुभ भकूट अथवा वर कन्या की एक समान राशि हो तो ग्रह शत्रुता दोष नष्ट होगा। एवं परस्पर ग्रह मित्रता रहने पर दुष्ट भकूट (६-८, ९-५, २-१२) दोष नष्ट होता है। स्पष्ट अभिप्राय यह कि वर कन्या की भकूट शुद्धि तथा ग्रह मित्रता इन दोनों विषय में कोई भी एक अवश्य होना चाहिये। शुभ भकूट ग्रह शत्रुतानाशक-तो परस्पर ग्रह मित्रता अशुभ भकूट दोष नाशक होती है। (६) गुण मेलापक में नाड़ी विचार विशेषकर देखा जाता है। नाड़ी दोष का परिहार ग्रह मेलापक-आचार्य सीताराम झा कृत में यह कि यदि वर-कन्या के जन्म ग्रह राशि जनित वर्ण (जन्मजाति से अभिप्राय नहीं) जन्मराशि वर्ण-ब्राह्मण वर्ग है तो नाड़ीदोष पूर्णतया मान्य होगा। क्षत्रिय-वैश्य-शुद्र वर्ण राशि रहते नाडी दोष प्रभावी नहीं। यथा-नाड़ी दोषो ही विप्राणां वर्ण दोषस्तु भू भुजाम्। वैश्यानां गण दोषस्तु शुद्राणां योनि दूषणम्।। अर्थात् नाड़ी दोष विप्र वर्ण पर प्रभावी, वर्ण दोष क्षत्रिय वर्ण पर, गण दोष वैश्य वर्ण पर, योनि दोष शुद्र वर्ण आदि राशि पर ही प्रभावशील होता है। पुनरपि शास्त्रीय नाड़ी परिहार व्यवस्था-राश्यैक्ये चेद्भिन्नमृक्षं द्वयो: स्यान्नक्षत्रैक्ये राशियुग्मं तथैव। नाड़ी दोषो न गणानां च दोषो नक्षत्रैक्ये पादभेदेशुभं स्यात्।। सरलार्थ यह कि वर-कन्या दोनों की राशि एक ही हो तथा नक्षत्र भिन्न-भिन्न अलग हों तथा दोनों का नक्षत्र एक ही हो और राशि भिन्न-अलग हो तो नाड़ी दोष तथा गण दोष प्रभावशील नहीं बनेगा। एवमेव नक्षत्र भी वर-कन्या के एक ही हो तथा नक्षत्र चरण भेद-भिन्न भिन्न हो तो नाड़ी दोष मान्य नहीं होगा। यथा पूर्वाभाद्रपद ३ चरण ४ चरण इन दोनों में नक्षत्र एक ही है परन्तु राशि भिन्न भिन्न है, अत: नाड़ी दोष नहीं बनेगा। जन्म नक्षत्र भेद अनुसार भी नाड़ी दोष परिहार व्यवस्था है यथा-रोहिण्यार्द्रा मृगेन्द्राग्नि पुष्यश्रवण षौष्णभम्। अहिर्बुधन्यर्क्षमेतेषां नाड़ी दोषो न विद्यते।। अर्थात् वर कन्या के जन्म नक्षत्र रोहिणी-आर्द्रा-मृगशिरा-विशाखा-पुष्य-श्रवण-रेवती तथा उत्तराभाद्रपद जन्म नक्षत्र होने पर नाड़ी दोष मान्य नहीं होगा। संकेत-इसी प्रमाण में कहीं मृगेन्द्राग्नि की जगह मघेन्द्राग्नि अर्थात् मृगशिरा की जगह मघा नक्षत्र का प्रारूप भी है। पुनरपि शास्त्रवचनम् - शुक्रे जीवे तथा सौम्ये एकराशीश्वरो यदि। नाड़ी दोषो न वक्तव्य: सर्वथा यत्नतो बुधै:।। भावार्थ यह कि वर-कन्या के राशिपति शुक्र-गुरू-बुध आदि में अन्यतम एक ही हो तो भी नाडी दोष का परिहार मान्य होता है। अत्यावश्यकता में नाडी शुद्धि नहीं बनने पर शास्त्रीय वचन यह भी है कि - दोषापनुत्तये नाड्या मृत्युंजय जपादिकम्। विधाय ब्राह्मणांश्चैव तर्पयेत् कांचनादिना।। हिरण्यमयीं दक्षिणां च दद्याद्वर्णादिकूटके। गवोऽन्नं वसनं हेम सर्वदोषापहारकम्।। अर्थात् महामृत्यंजयजप-स्वर्णदान-गौदान-अन्न वस्त्रादि अनुदान विविध दोष के निवारक हैं तथापि नाडी दोष विकार हेतु लक्ष्य रखना ही चाहिये। इस प्रकार का उद्बोधन विविध मुहूर्त्त ग्रन्थों में है। (७) वर-कन्या के वय-उम्र प्रमाण अधिकता की स्थिति होने पर आवश्यकता विशेष स्थिति अनुसार विवाह मुहूर्त्त समाधान सूत्र वचन यह भी लोक प्रचलित है। दुर्भिक्षे राष्ट्रभंगे च पित्रोर्वा प्राण संशये। प्रोढायामपि कन्यायां प्रतिकूलं न दुष्यति।। संकटे समनुप्राप्ते याज्ञवल्क्येन योगिना। शान्तिरूक्ता गणेशस्य कृत्वा तां शुभमाचरेत।। आवश्यकेषु कार्येषु राज्ञां तत् कर्मकारिणाम्। विवाहादीनि कुर्वीत विषमेऽपि गुरूशुक्रयो:।। भावार्थ यह कि दुर्भिक्ष-राष्ट्रभंग-पिता के अवसान स्थिति-वय प्रमाण विशेष-पद विशेषस्थ वर्ग तथा शासकीय कर्मचारीगण आवश्यकता विशेष स्थिति में वसिष्ठ हवन शांति श्री गणेशवो की पूजा आदि करके कार्य समाधान कर सकते हैं। दशवर्षव्यतिक्रांता कन्याशुद्धि विवर्जिता। तस्यास्तारेन्दु लग्नानां शुद्धौ पाणिग्रहोमत:।। द्वादशाऽब्दे परे कन्या षोडशाब्दे परे वरे। व्ययवेदाष्टमे सूर्ये जीवे चैव न दोष भाक्।। अष्टवर्षा भवेद् गौरी नववर्षा च रोहिणी दश वर्षा भवेत् कन्या अत उर्ध्व रजस्वला।। वर लोभाग्नि कालाभ्यां दुर्भिक्षदेश विप्लवात्। विवाहो शुभदो मान्यं अनिष्टगे बृहस्पतौ।। इत्यादि श्लोक वचन भी आवश्यकता विशेष स्थिति के ही समाधानसूचक उपलक्षक वचन मात्र हैं पूर्णतया मुहूर्त्त शास्त्र सम्मत नहीं। तथापि विवाहादि समाधान सूचक सूत्र-प्रमाणं ग्राम वचनं विवाहादौ तथात्यये। यत: परम्परायातं धर्मं विन्दन्ति ते खलु।। देशाचार: कुलाचारो जात्याचारो विशेषत:। कर्तव्यो विदुषा तत्र साराऽसारं विचार्य च। देशाचारस्तावदादौ विचिन्त्यो देशेदेशे या स्थिति: सैव कार्या। लोके कोऽपि पण्डितावर्जयन्ति दैवज्ञऽतो लोकमार्गेण यायात्।। एवमुक्ति: आचार्य वराहमिहिर: बृहत्संहितायामपि। विवाहादिक कार्य समाधान में ये सूत्र वचन भी देश काल परिस्थिति विशेष अनुसार ही समाधान सूचक उपलक्षक संज्ञा के समझना चाहिये। लग्न शुद्धि में ग्रह स्थिति परिहार-दोषो नैव सितेऽरिनीच गृहगे तत्षष्ठदोषोऽपि न। भौमेस्ते रिपु नीचगे नहि भवेद्भौमोऽष्टमो दोष कृन्नीचे। नीच नवांशके शशिनि रि:फाष्टारिदोषोऽपि न।। **लग्न विकार परिहार** - गुरौ लग्नाधिपे शुक्रे सवीर्ये लग्न केन्द्रगे दशदोषा विनश्यन्ति यथाऽग्नौ तूलराशय:।। प्रकारान्तरेऽपि-बुध गुरू सितेषु केन्द्रे १-४-१० मात्रे तथा त्रिकोण ९-५ स्थाने विविध दोष विनाशका:।। ग्रहयुति दोष परिहार - स्वक्षेत्रग: स्वोच्चगो वा मित्रक्षेत्रगते विधु:। युतिदोषाय न भवद्दम्पत्यो: श्रेयसे तदा।।

♠ ♣ ♠

घटी-पलानुसार घन्टा-मिनट रचना-सारिणी

घटी	पल	घंटा	मिनट	घटी	पल	घंटा	मिनट	घटी	पल	घंटा	मिनट	घटी	पल	घंटा	मिनट	घटी	पल	घंटा	मिनट
१	०	०	२४	८	०	३	१२	१५	०	६	०	२२	०	८	४८	२९	०	११	३६
१	३०	०	३६	८	३०	३	२४	१५	३०	६	१२	२२	३०	९	०	२९	३०	११	४८
२	०	०	४८	९	०	३	३६	१६	०	६	२४	२३	०	९	१२	३०	०	१२	०
२	३०	१	०	९	३०	३	४८	१६	३०	६	३६	२३	३०	९	२४				
३	०	१	१२	१०	०	४	०	१७	०	६	४८	२४	०	९	३६				
३	३०	१	२४	१०	३०	४	१२	१७	३०	७	०	२४	३०	९	४८				
४	०	१	३६	११	०	४	२४	१८	०	७	१२	२५	०	१०	०				
४	३०	१	४८	११	३०	४	३६	१८	३०	७	२४	२५	३०	१०	१२				
५	०	२	०	१२	०	४	४८	१९	०	७	३६	२६	०	१०	२४				
५	३०	२	१२	१२	३०	५	०	१९	३०	७	४८	२६	३०	१०	३६				
६	०	२	२४	१३	०	५	१२	२०	०	८	०	२७	०	१०	४८				
६	३०	२	३६	१३	३०	५	२४	२०	३०	८	१२	२७	३०	११	०				
७	०	२	४८	१४	०	५	३६	२१	०	८	२४	२८	०	११	१२				
७	३०	३	०	१४	३०	५	४८	२१	३०	८	३६	२८	३०	११	२४				

द्वैयागणना-कंठस्थेऽपि

१	२॥	१३	३२॥
२	५	१४	३५
३	७॥	१५	३७॥
४	१०	१६	४०
५	१२॥	१७	४२॥
६	१५	१८	४५
७	१७॥	१९	४७॥
८	२०	२०	५०
९	२२॥	२१	५२॥
१०	२५	२२	५५
११	२७॥	२३	५७॥
१२	३०	२४	६०

● **घटी-पल से घण्टा मिनट सूत्र** ● १ घटी में २४ मिनट एवं आधा ॥ घटी (३० पल) में १२ मिनट बनते हैं। इस प्रकार २ घटी में ४८ मिनट। तथा २ घटी ३० पल अर्थात् २॥ ढाई घटी में १ घण्टा बनता है तथा ६० घटी के २४ घण्टे अनुपातिक ढाई २॥ विभाजित स्पष्ट है। २ विपल ३० प्रति विपल अर्थात् २॥ ढाई विपल में १ सैकण्ड। इस प्रकार १ पल में २४ सैकण्ड।२ पल में ४८ सैकण्ड। २ पल ३० विपल (ढाई २॥ पल) में १ मिनट की गणना ● तथा घन्टा मिनिंट से घटीपल ● ज्ञान हेतु सरलार्थ यह कि घन्टा मिनिट समय में इष्टदिवस का सूर्योदय समय घटावें तथा घटित शेषफल को ढाई २॥ गुणित करने से घटी-पल मानक का प्रतिफल भी सहज ही बन जाता है।

नित्योपयोगी सूचना-समाधान

♣ इस समय सम्पूर्ण भारतवर्ष में भारतीय स्टेण्डर्ड समय (हस्त घटिका) अनुसार ही समय का चलन कलन व्यवहार में आने लगा है। मान्य पाठक अनुग्राहकों के पत्र भी आते रहे हैं कि पंचांग में घटी-पल की जगह घन्टा मिनिट समय का उल्लेखन ही किया जावे तथा वस्तुगत यह युगानुकूल सुविधा का विषय भी स्पष्ट है अत: तिथि-नक्षत्र-भद्रादि-पंचक एवं सर्वार्थ-अमृत-रवियोग विशेष तथा ग्रह नक्षत्र गतिचार आदि का समय घन्टा मिनिटों में ही अंकित किया गया है, कृपया इस विषयक ध्यान रखावें ♣ सूर्योदय से मध्याह्न काल दोपहर १२ बजे तक हस्त घडी समय देखते हैं उसी अनुसार लक्ष्य रखें तथा दोपहर १२ बजे उपरान्त १ घन्टा को १३ घन्टा, २ बजे को १४ सायं ३ बजे को १५ घं. सायं ४ बजे को १६ घं., सायं ५ बजे को १७ घं., सायं ६ बजे को १८ घं., रात्रि ७ बजे को १९ घं., रात्रि ८ बजे को २० घं., रात्रि ९ बजे को २१ घं., रात्रि १० बजे को २२ घं., रात्रि ११ बजे को २३ घं., तथा रात्रि १२ बजे को २४ घं. एवमेव अर्धरात्रोत्तर १ बजे को २५ घं., २ बजे को २६ घं., ३बजे को २७ घं., ४ बजे को २८ घं. तथा रात्रि शेष ५ बजे को २९ घन्टा गणना की समझ रखावें ।♣ तथा अगला सूर्योदय नहीं बना है तो रात्रिशेष ६ बजे को ३० घंटा, ७ बजे को ३१ घंटा मान्य करें। इस वर्ष से सर्वजन गणना सुविधार्थ इसी अनुरूप पंचांग में समय प्रमाण लिखा गया है। तथा घटी-पलों से घन्टा मिनिट ज्ञान सारिणी कतिपय वर्षों से दी जा रही है तथापि अब ♣ घन्टा मिनिट से घटी-पल समय ज्ञान हेतु विपरीत क्रिया यथा-पंचांग मे प्रदत्त घन्टा मिनिट समय में इष्ट दिन का सूर्योदय काल घटावें तथा ढाई २॥ गुणित करने से सहज ही घटी-पल समय मानक भी विदित होगा। नवजात शिशु के जन्म घन्टा मिनिट में ही सभी प्रदान करते हैं। जन्म इष्ट निर्माण हेतु स्टेण्डर्ड जन्म समय में इष्टदेशीय स्टेण्डर्ड सूर्योदय काल को घटा देवें तथा ढाई २॥ गुणित करने से जन्म इष्ट कालिक घटी पल ही प्राप्त होते हैं।♣ दिनमान-रात्रिमान-देशी समय मानक अनुसार जन्म इष्टकाल निर्माण की परम्परा शैली सुविधाजनक नहीं है। कृपया हमारे मानद श्री अनुग्राहकगण इस सुविधा नियामक पर लक्ष्य साधना रखते लाभान्वित रहेंगे। ♠♣♠

♠ अस्माकं भारतवर्ष: ♠



गायन्ति देवा: किल गीतकानि धन्यास्तु ये भारतभूमि भागे

♠ जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी ♠

अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा हिमालयो नाम नगाधिराज: ।
पूर्वापरौ तोयनिधीवगाह्य स्थित: पृथिव्या इव मानदण्ड: ॥

● कुमार संभवम्

✿

शाश्वत जीवन सूत्रम्

असतो मा सद् गमय
तमसो मा ज्योतिर्गमय
मृत्योर्माऽमृतं गमय

✿

सुजलां सुफलां मलयजशीतलाम्
शस्य - श्यामलाम् मातरम् । वन्दे मातरम्

●

धन्यो हि भारतो देश:
धन्या भारत संस्कृति: ।
भारतीयजना: धन्या:
धन्याऽस्माकं परम्परा ॥
कालेवर्षतु पर्जन्य:
पृथिवी सस्यशालिनी ।
देशोऽयं क्षोभरहितो
सुप्रजा: सन्तु निर्भया: ॥
पंचांगम् सुलभं सेव्यं
शास्त्रमर्मसमंचितम् ।
निर्णयात्मकं सर्वमान्यं
निर्णयसागरसंज्ञकम् ॥

♠●♠

क्रमांक १ चन्द्र स्पष्ट सारिणी

सर्वर्क्ष	गति	सर्वर्क्ष	गति	सर्वर्क्ष	गति	सर्वर्क्ष	गति	सर्वर्क्ष	गति	सर्वर्क्ष	गति	सर्वर्क्ष	गति	सर्वर्क्ष	गति	सर्वर्क्ष	गति	सर्वर्क्ष	गति
५३ ०	१५ ५	५४ १४	१४ ४५	५५ २९	१४ २५	५६ ४८	१४ ०५	५८ ११	१३ ४५	५९ ३८	१३ २५	६१ ०८	१३ ०५	६२ ४४	१२ ४५	६४ २६	१२ २५	६६ १२	१२ ०५
५३ ६	१५ ४	५४ १८	१४ ४४	५५ ३३	१४ २४	५६ ५२	१४ ०४	५८ १५	१३ ४४	५९ ४२	१३ २४	६१ १३	१३ ०४	६२ ४९	१२ ४४	६४ ३१	१२ २४	६६ १८	१२ ०४
५३ ९	१५ ३	५४ २१	१४ ४३	५५ ३६	१४ २३	५६ ५६	१४ ०३	५८ १९	१३ ४३	५९ ४७	१३ २३	६१ १७	१३ ०३	६२ ५४	१२ ४३	६४ ३६	१२ २३	६६ २३	१२ ०३
५३ १३	१५ २	५४ २५	१४ ४२	५५ ४०	१४ २२	५७ ०	१४ ०२	५८ २३	१३ ४२	५९ ५१	१३ २२	६१ २२	१३ ०२	६२ ५९	१२ ४२	६४ ४१	१२ २२	६६ २९	१२ ०२
५३ १६	१५ १	५४ २९	१४ ४१	५५ ४४	१४ २१	५७ ४	१४ ०१	५८ २८	१३ ४१	५९ ५५	१३ २१	६१ २७	१३ ०१	६३ ०४	१२ ४१	६४ ४६	१२ २१	६६ ३४	१२ ०१
५३ २०	१५ ०	५४ ३२	१४ ४०	५५ ४८	१४ २०	५७ ८	१४ ००	५८ ३२	१३ ४०	६० ००	१३ २०	६१ ३२	१३ ००	६३ ०९	१२ ४०	६४ ५२	१२ २०	६६ ४०	१२ ००
५३ २३	१४ ५९	५४ ३७	१४ ३९	५५ ५२	१४ १९	५७ १२	१३ ५९	५८ ३६	१३ ३९	६० ०४	१३ १९	६१ ३७	१२ ५९	६३ १४	१२ ३९	६४ ५७	१२ १९	६६ ४६	११ ५९
५३ २७	१४ ५८	५४ ४०	१४ ३८	५५ ५६	१४ १८	५७ १६	१३ ५८	५८ ४०	१३ ३८	६० ०९	१३ १८	६१ ४१	१२ ५८	६३ १९	१२ ३८	६५ ०३	१२ १८	६६ ५२	११ ५८
५३ ३०	१४ ५७	५४ ४४	१४ ३७	५६ ०	१४ १७	५७ २०	१३ ५७	५८ ४५	१३ ३७	६० १३	१३ १७	६१ ४६	१२ ५७	६३ २४	१२ ३७	६५ ०८	१२ १७	६६ ५९	११ ५७
५३ ३४	१४ ५६	५४ ४८	१४ ३६	५६ ४	१४ १६	५७ २४	१३ ५६	५८ ४९	१३ ३६	६० १८	१३ १६	६१ ५१	१२ ५६	६३ २९	१२ ३६	६५ १३	१२ १६	६७ ०५	११ ५६
५३ ३८	१४ ५५	५४ ५१	१४ ३५	५६ ८	१४ १५	५७ २८	१३ ५५	५८ ५४	१३ ३५	६० २२	१३ १५	६१ ५६	१२ ५५	६३ ३४	१२ ३५	६५ १८	१२ १५	६७ ११	११ ५५
५३ ४१	१४ ५४	५४ ५५	१४ ३४	५६ १२	१४ १४	५७ ३२	१३ ५४	५८ ५८	१३ ३४	६० २७	१३ १४	६२ ०१	१२ ५४	६३ ३९	१२ ३४	६५ २४	१२ १४	६७ १८	११ ५४
५३ ४५	१४ ५३	५४ ५९	१४ ३३	५६ १६	१४ १३	५७ ३६	१३ ५३	५९ ०३	१३ ३३	६० ३१	१३ १३	६२ ०६	१२ ५३	६३ ४४	१२ ३३	६५ २९	१२ १३	६७ २३	११ ५३
५३ ४८	१४ ५२	५५ ३	१४ ३२	५६ २०	१४ १२	५७ ४१	१३ ५२	५९ ०७	१३ ३२	६० ३६	१३ १२	६२ १०	१२ ५२	६३ ४९	१२ ३२	६५ ३४	१२ १२	६७ ३०	११ ५२
५३ ५२	१४ ५१	५५ ६	१४ ३१	५६ २४	१४ ११	५७ ४५	१३ ५१	५९ ११	१३ ३१	६० ४१	१३ ११	६२ १५	१२ ५१	६३ ५४	१२ ३१	६५ ४०	१२ ११	६७ ३७	११ ५१
५३ ५६	१४ ५०	५५ ११	१४ ३०	५६ २८	१४ १०	५७ ५०	१३ ५०	५९ १६	१३ ३०	६० ४६	१३ १०	६२ २०	१२ ५०	६४ ००	१२ ३०	६५ ४५	१२ १०	६७ ४३	११ ५०
५३ ५९	१४ ४९	५५ १४	१४ २९	५६ ३२	१४ ०९	५७ ५४	१३ ४९	५९ २०	१३ २९	६० ५०	१३ ०९	६२ २५	१२ ४९	६४ ०५	१२ २९	६५ ५२	१२ ०९	६७ ५०	११ ४९
५४ ३	१४ ४८	५५ १७	१४ २८	५६ ३६	१४ ०८	५७ ५८	१३ ४८	५९ २४	१३ २८	६० ५५	१३ ०८	६२ ३०	१२ ४८	६४ १०	१२ २८	६५ ५६	१२ ०८	६७ ५७	११ ४८
५४ ७	१४ ४७	५५ २१	१४ २७	५६ ४०	१४ ०७	५८ २	१३ ४७	५९ २९	१३ २७	६० ५९	१३ ०७	६२ ३५	१२ ४७	६४ १५	१२ २७	६६ ०१	१२ ०७	६८ ०३	११ ४७
५४ १०	१४ ४६	५५ २५	१४ २६	५६ ४४	१४ ०६	५८ ६	१३ ४६	५९ ३३	१३ २६	६१ ०४	१३ ०६	६२ ३९	१२ ४६	६४ २०	१२ २६	६६ ०७	१२ ०६	+ +	+ +

✿ **नाड़ीदोषपरिहार विशेष** ✿ रोहिण्यार्द्रामृगेन्द्राग्नि पुष्यश्रवणपौष्णभम् । अहिर्बुध्न्यर्क्षमेतेषां नाड़ी दोषो न विद्यते ॥ ज्योतिषचिन्तामणौ । तथा च विवांह कुतूहले - शुक्र जीवे तथा सौम्ये एकराशीश्वरो यदि। नाड़ीदोषो न वक्तव्यः सर्वथा यत्नतो बुधैः ॥ भावार्थ यह कि - रोहिणी, आर्द्रा, मृगशिरा, पुष्य, श्रवण, रेवती तथा उत्तराभाद्रपद जन्म नक्षत्र होने पर नाड़ी दोष मान्य नहीं। तथा शुक्र-गुरू-बुध में सेयदि अन्यतम दोनों (वर-कन्या) के राश्याधिप मेलापक में एक ही तो भी विद्वान वर्ग को नाड़ी दोष का परिहार सूत्र वचन ही समझना चाहिए। ▲ तथा वर्ण वश्यादि गणना में जातक विप्र-वर्ण का होवे तो नाड़ी दोष, अन्य वर्ण में नाड़ी दोष मान्य नहीं। ▲ **सूतक विषयेशास्त्रवचन विशेष** - व्रतयज्ञविवाहेषु श्राद्धे होमेऽर्चने जपे। प्रारब्धं सूतकं न स्यादनारब्धे तु सुतकम् ॥ भावार्थ - व्रत, यज्ञ, विवाह, श्राद्ध; होम, हवन कृत्य, पूजा-अनुष्ठान, जप का प्रारंभ होने पर सूतक मान्य नहीं तथा इनका आरंभ नहीं होने पर सूतक मान्य होता है तथा च बृहपतिमतानुगत-विवाहोत्सवयज्ञेषु त्वन्तरामृत सूतके। पूर्व संकल्पितेर्थेषु न दोषपरिकीर्त्तितः ॥ अर्थात विवाह, यज्ञ, विविध उत्सव, पूर्व संकल्पित कार्यों के मध्य में मरण होने पर सूतकादि दोष नहीं होता है। ✿ ✿

क्रमांक २ चन्द्र स्पष्ट सारिणी

अश्व.	भर.	कृति.	रोहि.	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य.	आश्ले.
०	०	१	१	२	२	३	३	४
१३	२६	१०	२३	६	२०	३	१६	०
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०

मघा	पूफा.	उफा.	हस्त.	चित्रा	स्वा.	विशा.	अनु.	ज्ये.
४	४	५	५	६	६	७	७	८
१३	२६	१०	२३	६	२०	३	१६	०
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०

मूल	पूषा	उषा	श्रवण	घनि.	शत.	पूभा.	उभा.	रेवती
८	८	९	९	१०	१०	११	११	०
१३	२६	१०	२३	६	२०	३	१६	०
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०

● **चन्द्र स्पष्ट सारिणी प्रयोग विधि** ● भयात भभोगरचना - ६०।० में से गत नक्षत्र के घटीपल घटा देवें तथा वर्तमान नक्षत्र के घटी पल जोड़ देवें, यह भभोग होगा तथा ६०।० में से घटायें, अंकों के घटी पलों में इष्ट घटी पल जोड़ें तो भयात होगा। भभोग के घटीपल (सर्वर्क्ष) अंकों को चन्द्र स्पष्ट सारिणी क्रम १ में देखें, उसमें भभोग घटी पल अंक तुल्य या समकक्ष अंक के सामने जो गति है, उससे भयात घटीपलों में गुणा करें, गुणनफल को ६० के भाग से अंश क.वि.३ अंक लेवें। तदुपरान्त अपने विगत नक्षत्र का फलांक (चन्द्र स्पष्ट सारणी क्रम २) से प्राप्त करें तथा इन विगत नक्षत्र फलांक अंकों में पूर्व प्राप्त गुणनफल अंशात्मक ३ फल जोड + देवें तो स्पष्ट चन्द्रमा होगा। **गति स्पष्ट विधि** - चन्द्र स्पष्ट सारणी क्रम १ से प्राप्त जो गति है उसकी केवल कला को ६० से गुणा कर गुणनफल में गति के विकलांक जोड़ देवें, यह चन्द्र स्पष्ट गति मध्यम मानेन स्पष्ट रहेगी। **उदाहरण यथा** - भयात् १९।३ है। भभोग ६५।५२ इस भभोग के समीपस्थ सर्वर्क्ष कोष्टांक ६५।५२ के सामने गति १२।९ को और भयात १९।३ को गुणा किया गुणनफल में ६० से भाग देकर ३।५१।२७ अंशादि ३ अंक मिले, इनको गत नक्षत्र विशाखा के कोष्ठांक ७।३।२०।० में जोड़ा+युक्त किया तो ७।७।११।२७ स्पष्ट चन्द्र आया। गति १२-९ केवल कला १२ को ६० से गुणित कर ७२० प्राप्त बनें इसमें विकला ९ + युक्त किया तो ७२९।० गति फल आया। गणितागत एवं सारणी सिद्ध में विशेष अन्तरांश नहीं होने से जन्मपत्रादि हेतु यह सामग्री बहुत उपयुक्त तथा शीघ्र ही कार्य करने में सक्षम सुलभ है। ✿ ✿

अथग्रहाणां-विंशोत्तरी महादशा एवं अन्तर्दशा गणना अनुक्रम ज्ञानार्थचक्रम्

सूर्यदशावर्ष ६ कृतिका उ.फा.उ.षा.				चन्द्रदशावर्ष १० रोहि. हस्त. श्रवण				भौमदशावर्ष ७ मृग. चित्रा. घनि.				राहुदशावर्ष १८ आर्द्रा. स्वा. शत.				गुरूदशावर्ष १६ पुन. विशा. पू.भाद्र.				शनिदशावर्ष १९ पुष्य. अनु. उ.भाद्र.				बुधदशावर्ष १७ आश्ले. ज्ये. रेवती				केतुदशावर्ष ७ मघा. मूल. अश्वि.				शुक्रदशावर्ष २० पू.फा.पू.षा.भरणी			
अन्तर्दशादि.				अन्तर्दशादि.				अन्तर्दशादि.				अन्तर्दशादि.				अन्तर्दशादि.				अन्तर्दशादि.				अन्तर्दशादि.				अन्तर्दशादि.				अन्तर्दशादि.			
ग्र.	व	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.
सू.	०	३	१८	चं.	०	१०	०	मं.	०	४	२७	रा.	२	८	१२	बृ.	२	१	१८	श.	३	०	३	बु.	२	४	२७	के.	०	४	२७	शु.	३	४	०
चं.	०	६	०	मं.	०	७	०	रा.	१	०	१८	बृ.	२	४	२४	श.	२	६	१२	बु.	२	८	९	के.	०	११	२७	शु.	१	२	०	सू.	१	०	०
मं.	०	४	६	रा.	१	६	०	बृ.	०	११	६	श.	२	१०	६	बु.	२	३	६	के.	१	१	९	शु.	२	१०	०	सू.	०	४	६	चं.	१	८	०
रा.	०	१०	२४	बृ.	१	४	०	श.	१	१	९	बु.	२	६	१८	के.	०	११	६	शु.	३	२	०	सू.	०	१०	६	चं.	०	७	०	मं.	१	२	०
बृ.	०	९	१८	श.	१	७	०	बु.	०	११	२७	के.	१	०	१८	शु.	२	८	०	सू.	०	११	१२	चं.	१	५	०	मं.	०	४	२७	रा.	३	०	०
श.	०	११	१२	बु.	१	५	०	के.	०	४	२७	शु.	३	०	०	सू.	०	९	१८	चं.	१	७	०	मं.	०	११	२७	रा.	१	०	१८	बृ.	२	८	०
बु.	०	१०	६	के.	०	७	०	शु.	१	२	०	सू.	०	१०	२४	चं.	१	४	०	मं.	१	१	९	रा.	२	६	१८	बृ.	०	११	६	श.	३	२	०
के.	०	४	६	शु.	१	८	०	सू.	०	४	६	चं.	१	६	०	मं.	०	११	६	रा.	२	१०	६	बृ.	२	३	६	श.	१	१	९	बु.	२	१०	०
शु.	१	०	०	सू.	०	६	०	चं.	०	७	०	मं.	१	०	१८	रा.	२	४	२४	बृ.	२	६	१२	श.	२	८	९	बु.	०	११	२७	के.	१	२	०

अथ द्वादशराशिमध्ये शनि-गोचर परिभ्रमणविज्ञान-पाद-वाहन-देहनिवास-प्रतिफल

शनिपानोतिविचार अपनी जन्मराशि से शनि गोचर भ्रमण करते १२-१-२ स्थान गणनानुगत बनें, तो इस स्थिति में उस जातक को साढेसाती ७॥ बृहत्कल्याणी शनिदशा कालांश बनता है तथा इसी प्रकार जन्मराशि से गणना करते ४-८ स्थान पर शनि राशि भ्रमण बनें तो ढैया दशा-लघुकल्याणी शनि दशाकालांश बनता है। प्रथम १ शनि पेट पर दूसरा २ पैरों पर तथा बारहवां १२ नैत्रों पर प्रभावशाली रहता है।

शनिपाद ज्ञान जिस नक्षत्र पर शनि हो उसकी संख्या में अपने जन्म नक्षत्र की संख्या जोड़कर चार ४ का भाग देवें। १ शेष रहते सोने का, २ शेष रहते लोहे का, ३ शेष रहते ताम्बे का तथा शून्य शेष रहे तो चांदी पाद समझें। स्वर्ण पाद से सुख-हानि, लोहपाद से धन द्रव्यनाश, ताम्र-तांबा से सामान्य फलद तथा चांदी पाया शुभ श्रीकार होता है।

शनिवाहन ज्ञान शनि नक्षत्र चार से अपने जन्म नक्षत्र तक गणना करें, उसमें ९ का भाग देवें तथा शेष १ रहते गंधर्व, २ शेष से अश्व, ३ शेष से गज, ४ शेष से मेष, ५ शेष से जम्बूक (सियार) तथा ६ से सिंह, ७ से काग, ८ से मृग तथा ० शून्य ९ शेष रहते मयूर वाहन होगा। इनमें अश्व-गज-मयूर वाहन योगवाही सुखद होता है।

साढेसात ७॥ वर्षमध्ये शनिनिवास शनिदेव ३ मास १० दिन मुख पर, १ वर्ष १ मास १० दिन दाहिनीं भुजा पर, १० मास दाहिनें पैर पर, १० मास बायां वाम पैर तथा १ वर्ष ४ मास २० दिन हृदय पर, १ वर्ष १ मास १० दिन वाम बायीं भुजा पर, १० मास मस्तिष्क सिर पर तथा ३ मास १० दिन बायाँ वाम नेत्र, ३ मास १० दिन दाहिने नेत्र पर ६ मास २० दिन गुदा पर निवास करते हैं। इनका स्थान प्रतिफल यह है कि मुखवास हानिप्रद, दाहिनी भुजा विजय उत्साह प्रदायक, दाहिनापाद भ्रमण प्रदायक, हृदयनिवास, धन-धान्य-सम्पदाकारक, बायीं वाम भुजा पीड़ा विकार प्रदायक, मस्तिष्क शिरवास, शांति विधायक, सौख्यप्रद, नेत्र निवास शुभ फलद तथा गुदा स्थानवास चिन्ता, विकार पीड़ा प्रदायक होता है।

साढेसाती शनि स्थिति प्रतिफल जन्म कुण्डली में यदि शनि मित्र राशि, उच्च राशि तथा शुभ ग्रह से सम्बंधशील हो तो शनि जनित ढैया-साढेसाती का कालांश विशेष अशुभ फल का सूचक नहीं, अपितु योगवाही शुभकारक प्रतिफल भी बन पाता है तथा जन्मकुण्डली में चन्द्र तथा शनि अशुभ ग्रहों से युक्त तथा नीच-शत्रु राशि में तब भी नेष्टफल सूचक रहता है। यथा अवनति, मानहानि, अपवाद, स्थाननाश, विरोधाभास, कार्य व्यवसाय में न्यूनता, हानि, शरीर सुख में कमी तथा रोग शोक सहज बन पाता है। व्यर्थ कार्यों में गति, मतिविभ्रम, कोर्ट-कचहरी आदि में समय यापन, पारिवारिक अशांति, अशोभनीय वार्ता, राज्य-कर्म-भाग्य पक्ष में न्यूनता का प्रारूप सहज बन पाता है। यदि जन्म में लग्न पंचम-नवम भाव का स्वामी बनते ३-६-११ भाव स्थान में शनि स्थित हो तो भी उपर्युक्त कुफल में न्यूनता बन कर सुख सम्पदा वृद्धि तथा मनोत्साह, सुखद दिनचर्यारात्रिचर्या बन पाती है।

महादशा ज्ञान एवं भुक्तभोग्य कर्तव्यता

गत नक्षत्र के घटीपल ६०।० में से घटाकर जन्म इष्ट घटीपल में जोड़ें उसे भयात कहते हैं तथा ६० में से घटाये गये घटीपल उसी में वर्तमान नक्षत्र के घटीपल जोडे उसे भभोग कहते हैं। भयात के पलात्मक मान में जो दशा हो उसके वर्ष संख्या से गुणा करें तथा भभोग के पलात्मक मान से भाग देवें। लब्धांक वर्ष होगी। फिर शेषांक को १२ से गुणा कर भभोग की पलों का भाग देवें लब्धांक मास होगी। फिर शेषांक में ३० से गुणा कर दिन लेवें तथा फिर शेषांक में ६० से गुणा कर घटी तथा पल प्राप्त करें। इस प्रकार यह महादशा का भुक्तकाल आवेगा इसे अभीष्ट दशा के वर्षों में से घटाने पर दशा के भोग्य वर्ष-मास-घटी पल सिद्ध होगी। इस प्रकार दशानयन सुगम स्पष्ट है।

ग्रहाणां दोषोपशान्त्यर्थसूत्र

✦ **स्नान विधान - यथा सिद्धोषधैः रोगान्नश्येयुर्मन्त्रतोऽथवा तथा स्नान विधानेन ग्रहदोषः प्रणश्यति॥** कूट, खिली, मालकांगनी, लाजवंती, जव, सरसूं, देवदारू, हल्दी, सर्वोषधि, लोंध इनके मिश्रित जल स्नान से ग्रह पीड़ा शरीर का कष्ट दूर होवे इनमें जो भी वस्तु प्राप्त बनें वह भी देशकाल परिस्थिति अनुसार मान्य योग्य है।

✦ **शांतिसूत्र विधान** - ग्रहों के जो दान होवें देवें तथा सत्य वार्ता मानना, ज्ञानी व्यक्तियों की सलाह, अनुसरण, जप, दान, मंत्रस्मरण, यज्ञ, होम, नियमित दिनचर्या, मन की शुद्धता, उत्तम ज्योतिषी की सलाह, रत्न नगों का धारण, ये कार्य स्वतः ग्रहशमन शांतिकारक हैं। यथा- **धर्मेण हन्यते व्याधिधर्मेण हन्यते ग्रहः। धर्मेणहन्यते शत्रुर्यतोधर्मस्ततो जयः॥ धर्मिष्ठा ये सदाचारा देवब्राह्मणपूजकाः। ये पथ्यभोजनरतास्ते सर्वे दीर्घजीविनः।**

विशेषकर ग्रहशांति हेतु शरीरस्थषट् शत्रु - काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर (ईर्ष्या) विकार इनसे अधिकाधिक बचाव का प्रयास रखना चाहिए। **नीतिवचनसूत्र** - रहिमन चुप है बैठीयों, देख दिनन को फेर। जब नीके दिन आही हैं, बनत न लागे देर॥ **डूबेगा रे तीन जणा** - आमद कम खर्चा घणा। बल कम गुस्सा घणा॥ पूंजी कम व्यापार घणा॥

✦ **तुलसी विपदा के सखा, विद्या विनय विवेक। सुकृत सह सत्य सिय, राम भरोसो एक।**

✦ **दुर्योग-अयोग परिहार - अयोगे सुयोगोऽपि चेत् स्यात्तदानीमयोगं निहत्यैष सिद्धिं तनोति॥** भावार्थ यह कि किसी कुयोग दिवस पर सुयोग (अमृत-सवार्थ सिद्धि-दोष संघ विनाशक रवि योगादि) का समावेश बनें तो, सिद्धि आदि सुयोग का ही फल चरितार्थ होता है। यथाशास्त्र वचन विशेष - अयोगः सिद्धियोगश्च द्वावेतौ भवतो यदि। अयोगो हन्यते तत्र सिद्धियोगः प्रवर्त्तते॥

स्पष्ट चन्द्रत: विंशोत्तरीय महादशा ज्ञानार्थे–सारिणी भाग–१

राशि चन्द्र		मेष, सिंह, धनु भोग्य दशा				वृष, कन्या, मकर भोग्य दशा				मिथुन, तुला, कुम्भ भोग्य दशा				कर्क, वृश्चिक, मीन भोग्य दशा			
अंश	कला		वर्ष	मास	दिन		वर्ष	मास	दिन		वर्ष	मास	दिन		वर्ष	मास	दिन
०	००	केतु	७	०	००	सूर्य	४	६	००	मंग	३	६	००	गुरू	४	०	०
०	२०	●	६	९	२७	●	४	४	०६	●	३	३	२७	●	३	७	६
०	४०	"	६	७	२४	"	४	२	१२	"	३	१	२४	"	३	२	१२
१	००	"	६	५	२१	"	४	०	१८	"	२	११	२१	"	२	९	१८
१	२०	"	६	३	१८	"	३	१०	२४	"	२	९	१८	"	२	४	२४
१	४०	"	६	१	१५	"	३	९	००	"	२	७	१५	"	२	०	०
२	००	"	५	११	१२	"	३	७	६	"	२	५	१२	"	१	७	६
२	२०	"	५	९	०९	"	३	५	१२	"	२	३	०९	"	१	२	१२
२	४०	"	५	७	०६	"	३	३	१८	"	२	१	०६	"	०	९	१८
३	००	"	५	५	०३	"	३	१	२४	"	१	११	०३	"	०	४	२४
३	२०	"	५	३	००	"	३	०	००	"	१	९	००	शनि	१९	०	०
३	४०	"	५	०	२७	"	२	१०	०६	"	१	६	२७	●	१८	६	९
४	००	"	४	१०	२४	"	२	८	१२	"	१	४	२४	"	१८	०	१८
४	२०	"	४	८	२१	"	२	६	१८	"	१	२	२१	"	१७	६	२७
४	४०	"	४	६	१८	"	२	४	२४	"	१	०	१८	"	१७	१	६
५	००	"	४	४	१५	"	२	३	००	"	०	१०	१५	"	१६	७	१५
५	२०	"	४	२	१२	"	२	१	०६	"	०	८	१२	"	१६	१	२४
५	४०	"	४	०	०९	"	१	११	१२	"	०	६	९	"	१५	८	३
६	००	"	३	१०	०६	"	१	९	१८	"	०	४	६	"	१५	२	१२
६	२०	"	३	८	०३	"	१	७	२४	"	०	२	३	"	१४	८	२१
६	४०	"	३	६	००	"	१	६	००	राहु	१८	०	००	"	१४	३	०
७	००	"	३	३	२७	"	१	४	०६	●	१७	६	१८	"	१३	९	९
७	२०	"	३	१	२४	"	१	२	१२	"	१७	१	६	"	१३	३	१८
७	४०	"	२	११	२१	"	१	०	१८	"	१६	७	२४	"	१२	९	२७
८	००	"	२	९	१८	"	०	१०	२४	"	१६	२	१२	"	१२	४	६
८	२०	"	२	७	१५	"	०	९	००	"	१५	९	००	"	११	१०	१५
८	४०	"	२	५	१२	"	०	७	०६	"	१५	३	१८	"	११	४	२४
९	००	"	२	३	०९	"	०	५	१२	"	१४	१०	६	"	१०	११	३
९	२०	"	२	१	०६	"	०	३	१८	"	१४	४	२४	"	१०	५	१२
९	४०	"	१	११	०३	"	०	१	२४	"	१३	११	१२	"	९	११	२१
१०	००	"	१	९	००	चंद्र	१०	०	००	"	१३	६	००	"	९	६	०
१०	२०	"	१	६	२७	●	९	९	०	"	१३	०	१८	"	९	०	९
१०	४०	"	१	४	२४	"	९	६	०	"	१२	७	६	"	८	६	१८
११	००	"	१	२	२१	"	९	३	०	"	१२	१	२४	"	८	०	२७
११	२०	"	१	०	१८	"	९	०	०	"	११	८	१२	"	७	७	६
११	४०	"	०	१०	१५	"	८	९	०	"	११	३	००	"	७	१	१५
१२	००	"	०	८	१२	"	८	६	०	"	१०	९	१८	"	६	७	२४
१२	२०	"	०	६	०९	"	८	३	०	"	१०	४	६	"	६	२	३
१२	४०	"	०	४	०६	"	८	०	०	"	९	१०	२४	"	५	८	१२
१३	००	"	०	२	०३	"	७	९	०	"	९	५	१२	"	५	२	२१

राशि चन्द्र		मेष, सिंह, धनु भोग्य दशा				वृष, कन्या, मकर भोग्य दशा				मिथुन, तुला, कुम्भ भोग्य दशा				कर्क, वृश्चिक, मीन भोग्य दशा			
अंश	कला		वर्ष	मास	दिन		वर्ष	मास	दिन		वर्ष	मास	दिन		वर्ष	मास	दिन
१३	२०	शुक्र	२०	०	०	चन्द्र	७	६	०	राहु	९	०	०	शनि	४	९	०
१३	४०	●	१९	६	०	●	७	३	०	●	८	६	१८	●	४	३	९
१४	००	"	१९	०	०	"	७	०	०	"	८	१	६	"	३	९	१८
१४	२०	"	१८	६	०	"	६	९	०	"	७	७	२४	"	३	३	२७
१४	४०	"	१८	०	०	"	६	६	०	"	७	२	१२	"	२	१०	६
१५	००	"	१७	६	०	"	६	३	०	"	६	९	००	"	२	४	१५
१५	२०	"	१७	०	०	"	६	०	०	"	६	३	१८	"	१	१०	२४
१५	४०	"	१६	६	०	"	५	९	०	"	५	१०	६	"	१	५	३
१६	००	"	१६	०	०	"	५	६	०	"	५	४	२४	"	०	११	१२
१६	२०	"	१५	६	०	"	५	३	०	"	४	११	१२	"	०	५	२१
१६	४०	"	१५	०	०	"	५	०	०	"	४	६	०	बुध	१७	०	०
१७	००	"	१४	६	०	"	४	९	०	"	४	०	१८	●	१६	६	२७
१७	२०	"	१४	०	०	"	४	६	०	"	३	७	६	"	१६	१	२४
१७	४०	"	१३	६	०	"	४	३	०	"	३	१	२४	"	१५	८	२१
१८	००	"	१३	०	०	"	४	०	०	"	२	८	१२	"	१५	३	१८
१८	२०	"	१२	६	०	"	३	९	०	"	२	३	०	"	१४	१०	१५
१८	४०	"	१२	०	०	"	३	६	०	"	१	९	१८	"	१४	५	१२
१९	००	"	११	६	०	"	३	३	०	"	१	४	६	"	१४	०	९
१९	२०	"	११	०	०	"	३	०	०	"	०	१०	२४	"	१३	७	६
१९	४०	"	१०	६	०	"	२	९	०	"	०	५	१२	"	१३	२	३
२०	००	"	१०	०	०	"	२	६	०	गुरू	१६	०	०	"	१२	९	०
२०	२०	"	९	६	०	"	२	३	०	●	१५	७	६	"	१२	३	२७
२०	४०	"	९	०	०	"	२	०	०	"	१५	२	१२	"	११	१०	२४
२१	००	"	८	६	०	"	१	९	०	"	१४	९	१८	"	११	५	२१
२१	२०	"	८	०	०	"	१	६	०	"	१४	४	२४	"	११	०	१८
२१	४०	"	७	६	०	"	१	३	०	"	१४	०	०	"	१०	७	१५
२२	००	"	७	०	०	"	१	०	०	"	१३	७	६	"	१०	२	१२
२२	२०	"	६	६	०	"	०	९	०	"	१३	२	१२	"	९	९	९
२२	४०	"	६	०	०	"	०	६	०	"	१२	९	१८	"	९	४	६
२३	००	"	५	६	०	"	०	३	०	"	१२	४	२४	"	८	११	३
२३	२०	"	५	०	०	मंग	७	०	०	"	१२	०	०	"	८	६	०
२३	४०	"	४	६	०	●	६	९	२७	"	११	७	६	"	८	०	२७
२४	००	"	४	०	०	"	६	७	२४	"	११	२	१२	"	७	७	२४
२४	२०	"	३	६	०	"	६	५	२१	"	१०	९	१८	"	७	२	२१
२४	४०	"	३	०	०	"	६	३	१८	"	१०	४	२४	"	६	९	१८
२५	००	"	२	६	०	"	६	१	१५	"	१०	०	०	"	६	४	१५
२५	२०	"	२	०	०	"	५	११	१२	"	९	७	६	"	५	११	१२
२५	४०	"	१	६	०	"	५	९	९	"	९	२	१२	"	५	६	९
२६	००	"	१	०	०	"	५	७	६	"	८	९	१८	"	५	१	६
२६	२०	"	०	६	०	"	५	५	३	"	८	४	२४	"	४	८	३

राशि चन्द्र		मेष, सिंह, धनु भोग्य दशा				वृष, कन्या, मकर भोग्य दशा				मिथुन, तुला, कुम्भ भोग्य दशा				कर्क, वृश्चिक, मीन भोग्य दशा			
अंश	कला		वर्ष	मास	दिन		वर्ष	मास	दिन		वर्ष	मास	दिन		वर्ष	मास	दिन
२६	४०	सूर्य	६	०	०	मंग	५	३	०	गुरू	८	०	०	बुध	४	३	०
२७	००	●	५	१०	६	●	५	०	२७	●	७	७	६	●	३	९	२७
२७	२०	"	५	८	१२	"	४	१०	२४	"	७	२	१२	"	३	४	२४
२७	४०	"	५	६	१८	"	४	८	२१	"	६	९	१८	"	२	११	२१
२८	००	"	५	४	२४	"	४	६	१८	"	६	४	२४	"	२	६	१८
२८	२०	"	५	३	००	"	४	४	१५	"	६	०	०	"	२	१	१५
२८	४०	"	४	१	६	"	४	२	१२	"	५	७	६	"	१	८	१२
२९	००	"	४	११	१२	"	४	०	०९	"	५	२	१२	"	१	३	९
२९	२०	"	४	९	१८	"	३	१०	०६	"	४	९	१८	"	०	१०	६
२९	४०	"	४	७	२४	"	३	८	०३	"	४	४	२४	"	०	५	३
३०	००	"	४	६	००	"	३	६	००	"	४	०	०	"	०	०	०

चन्द्रकला से विंशोत्तरी दशा सारणी भाग-२

चन्द्रकला	केतु ७ वर्ष		शुक्र २० वर्ष		सूर्य ६ वर्ष		चन्द्र १० वर्ष		मंगल ७ वर्ष		राहु १८ वर्ष		गुरू १६ वर्ष		शनि १९ वर्ष		बुध १७ वर्ष	
	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.
१	०	३	०	९	०	३	०	५	०	३	०	८	०	७	०	९	०	८
२	०	६	०	१८	०	५	०	९	०	६	०	१६	०	१४	०	१७	०	१५
३	०	९	०	२७	०	८	०	१४	०	९	०	२४	०	२२	०	२६	०	२३
४	०	१३	१	६	०	११	०	१८	०	१३	१	२	०	२९	१	४	१	१
५	०	१६	१	१५	०	१४	०	२३	०	१६	१	११	१	६	१	१३	१	८
६	०	१९	१	२४	०	१६	०	२७	०	१९	१	१९	१	१३	१	२१	१	१६
७	०	२२	२	३	०	१९	१	२	०	२२	१	२७	१	२०	२	०	१	२४
८	०	२५	२	१२	०	२२	१	६	०	२५	२	५	१	२८	२	८	२	१
९	०	२८	२	२१	०	२४	१	११	०	२८	२	१३	२	५	२	१७	२	९
१०	१	१॥	३	०	०	२७	१	१५	१	१॥	२	२१	२	१२	२	२६	२	१७
१५	१	१७	४	१५	१	११	२	७॥	१	१७	४	२	३	१८	४	८	३	२५
२०	२	३	६	०	१	२४	३	०	२	३	५	१२	४	२४	५	२१	५	३

विंशोत्तरी भोग्य दशा निकालने की विधि

इष्ट काल का चन्द्र स्पष्ट बनाकर उसकी राशि के कोष्ठक में अंश एवं कलाओं के अनुसार विंशोत्तरी दशा का भोग्य समय निकालें। २०-२० कलाओं के अन्तर पर दशा का भोग्य समय दिया है। फिर २० कलाओं से जितनी कलाऐं कम या अधिक का निकालना हो उनका कला सारिणी से उस ग्रह कोष्ठक में दिया समय निकालकर पहले निकाले गए समय में घटा या जोड़ कर अभीष्ट समय प्राप्त करें।

षड्वर्गीय होरा.

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	अंश
५	४	५	४	५	४	५	४	५	४	५	४	१५
४	५	४	५	४	५	४	५	४	५	४	५	३०

द्रेष्काण.

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	अंश
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१०
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	२०
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	३०

विषमे त्रिंशांशका: समे त्रिंशांशका:

अं	मे	मि	सिं	तु	ध	कुं	वृ	क	क	वृ	म	मी	अं
५	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	५
१०	११	११	११	११	११	११	६	६	६	६	६	६	१२
१८	९	९	९	९	९	९	१२	१२	१२	१२	१२	१२	२०
२५	३	३	३	३	३	३	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२५
३०	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	३०

सप्तांशक ४।१७।८।३४

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	अंश	
१	८	३	१०	५	१२	७	२	९	४	११	६	४	१७
२	९	४	११	६	१	८	३	१०	५	१२	७	८	३४
३	१०	५	१२	७	२	९	४	११	६	१	८	१२	५१
४	११	६	१	८	३	१०	५	१२	७	२	९	१७	८
५	१२	७	२	९	४	११	६	१	८	३	१०	२१	२५
६	१	८	३	१०	५	१२	७	२	९	४	११	२५	४२
७	२	९	४	११	६	१	८	३	१०	५	१२	३०	०

नवमांशक.

मे.	वृ.	मि	क.	सिं.	क.	तु.	वृ	ध.	म.	कुं.	मी.	अंश	
१	१०	७	४	१	१०	७	४	१	१०	७	४	३	२०
२	११	८	५	२	११	८	५	२	११	८	५	६	४०
३	१२	९	६	३	१२	९	६	३	१२	९	६	१०	०
४	१	१०	७	४	१	१०	७	४	१	१०	७	१३	२०
५	२	११	८	५	२	११	८	५	२	११	८	१६	४०
६	३	१२	९	६	३	१२	९	६	३	१२	९	२०	०
७	४	१	१०	७	४	१	१०	७	४	१	१०	२३	२०
८	५	२	११	८	५	२	११	८	५	२	११	२६	४०
९	६	३	१२	९	६	३	१२	९	६	३	१२	३०	०

द्वादशांशक.

मे	वृ	मि	क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	अंश	
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	२	३०
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	५	०
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	७	३०
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	१०	०
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	१२	३०
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	१५	०
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	१७	३०
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	२०	०
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	२२	३०
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	२५	०
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	२७	३०
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	३०	०

विंशोत्तरीदशा विगणना

सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२०
कृ. उ. उ.	रो. ह. श्र.	मृ. चि. ध.	आ. स्वा. श.	पु. वि. पू.	पु. अ. उ.	श्ले. ज्ये. रे.	म. मू. अ.	पू. पू. भ.

योगिनीदशा विगणना

मंगला	पिंगला	धान्या	भ्रामरी	भद्रिका	उल्का	सिद्धा	संकटा
आ. चि. श्र ०	पु. स्वा. ध. ०	पु. वि. श. ०	श्ले. अ. पू. अ.	म. ज्ये. उ. भ.	पू. मू. रे. कृ.	उ. पू. ० रो.	ह. उ. ० मृ.
१	२	३	४	५	६	७	८

दशाभुक्त भोग्य की कर्त्तव्यता

गत नक्षत्र की घटी पल को ६० में से घटाकर इष्ट घटी पल में जोड़ें उसे भयात और ६० में घटाया उसी में प्रवेश नक्षत्र की घटी जोड़ें उसे भभोग कहते हैं, भयात के पलों को दशा के वर्ष से गुणा करके भभोग की पलों से भाग लें लब्ध अंक वर्ष फिर शेषांक को १२ से गुणा कर भभोग की पलों का भाग दे लब्ध मास फिर ३० गुणाकर दिन तथा ६० से गुणाकर घटी और पल ले एवं दशा का भुक्त यह है। इसे दशा के वर्षों में घटा दें तो भोग्य वर्ष प्राप्त होते हैं।

रविरेखा ४८

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
१	३	१	३	५	६	१	३
२	६	२	५	६	७	२	४
४	१०	४	६	९	१२	४	६
७	११	७	९	११		७	१०
८		८	१०			८	११
९		९	११			९	१२
१०		१०	१२			१०	
११		११				११	

चंद्ररेखा ४९

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
३	१	२	१	१	३	३	३
६	३	३	३	४	४	५	६
७	६	५	४	७	५	६	१०
८	७	६	५	८	७	११	११
१०	१०	९	७	१०	९		
११	११	१०	८	११	१०		
		११	१०	१२	११		
			११				

भौमेरेखा ३९

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
३	३	१	३	६	६	१	१
५	६	२	५	१०	८	४	३
६	११	४	६	११	११	७	६
१०		७	११	१२	१२	८	१०
११		८				९	११
		१०				१०	
		११				११	

अवस्थाच.

विषमे.		समे.
मृता.	३०	बाल.
वृद्धा.	२४	कुमार.
युवा.	१८	युवा.
कुमा.	१२	वृद्धा.
बाल.	६	मृता.

अवस्थाजाग्र.

विषम	जाग्र.	सुप्ता.	सुप्ता
अं.	१०	२०	३०
सम	सु.	सु.	जा.

बुधरेखा ५४

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
५	२	१	१	६	१	१	१
६	४	२	३	८	२	२	२
९	६	४	५	११	३	४	४
११	८	७	६	१२	४	७	६
१२	१०	८	९		५	८	८
	११	९	१०		८	९	१०
		१०	११		९	१०	११
		११	१२		११	११	

गुरु. रेखा ५६

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
१	२	१	१	१	२	३	१
२	५	२	२	२	५	५	२
३	७	४	४	३	६	६	४
४	९	७	५	४	९	१२	५
७	११	८	६	७	१०		६
८		१०	९	८	११		७
९		११	१०	१०			९
१०			११	११			१०
११							११

शुक्ररेखा ५२

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
८	१	३	३	५	१	३	१
११	२	५	५	८	२	४	२
१२	३	६	६	९	३	५	३
	४	९	९	१०	४	८	४
	५	११	११	११	५	९	५
	८	१२			८	१०	८
	९				९	११	९
	११				१०		११
	१२				११		

तात्कालमैत्री

मित्राणि	शत्रवः
२	१
३	५
४	६
१०	७
११	८
१२	९

शनिरेखा ३९

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
१	३	३	६	५	६	३	१
२	६	५	८	६	११	५	३
४	११	६	९	११	१२	६	४
७		१०	१०	१२		११	६
८		११	११				१०
१०		१२	१२				११
११							

लग्नरेखा ४९

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
३	३	१	१	१	१	१	३
४	६	३	२	२	२	३	६
६	१०	६	४	४	३	४	१०
१०	११	१०	६	५	४	६	११
११		११	८	६	५	१०	
१२			१०	७	८	११	
			११	९	९		
				१०	११		
				११			

निसर्गग्रहमैत्रीचक्रम्

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ग्रह
चं. मं. गु.	सू. बु.	सू. चं. गु.	सू. शु.	सू. चं. मं.	बु. श.	बु. शु.	मित्राणि
बु	मं. गु. शु. श	शु. श.	मं. गु. श.	श.	म. गु.	गु.	समाः
शु. श.	०	बु.	चं.	बु. शु.	सू. चं.	सू. चं. मं.	शत्रवः

कारककुण्डली

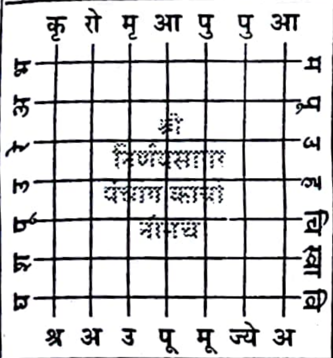
सबसे अधिक अंशवाला ग्रह आत्मकारक। तथा जन्मचक्र में जिस राशि का उसे लग्न मानते ग्रह स्थापित करें एवं कारकांश कुण्डली हेतु आत्मकारक ग्रह नवमांश कुण्डली में जहां हो उसे लग्न मानते जन्म ग्रह रचना। स्वांश कुण्डली - हेतु कारकांश का ही लग्न तथा नवमांश कुण्डली की ग्रह रचना।

▲ कष्टःस्यादेकरेखायांद्वाभ्यामर्थेक्षयो भवेत्। त्रिभिः क्लेशं विजानीयाच्चतुर्भिस्समतां वदेत् ॥१॥ पंचभिश्च वदेन्सौख्यंषड्भिश्चैव धनागमः। सप्तभिः परमानंदमष्टभिस्सर्वसंपदम्॥२॥ टी. जिस ग्रह का बल देखना हो उसकी रेखा इष्टग्रह की कुण्डली लिखके लगानी फिर विचारणीय राशि में कितने रेखा पाया है यदि १ से ३ तक पाया तो निर्बली ग्रह हुवा ४ पाया तो सम ५ से ८ पाया तो बली ऐसे ही विचार विवाह जनेऊ आदि प्रसंग में भी करना चाहिये, रेखा ४ से ऊपर जितनी अधिक रेखा प्राप्त होगी, ग्रह प्रभावशील बनते गोचर में ४-८-१२ गणना का शुभ मान्य रहेगा।

पंचधामैत्री सप्तकवर्गीफलम्.

१	सप्तकवर्ग में स्वग्रहीका.	३०	०	०
२	मित्र मित्र को अति मित्रता को.	२२	३०	०
३	मित्र सम को मित्र होय ताको.	१५	०	०
४	मित्रशत्रुकोसम होय ताको.	७	३०	०
५	सम शत्रु का शत्रु होय ताको.	३	४५	०
६	शत्रु शत्रुकी अतिशत्रु होय ताको.	१	५२	३०

● अन्यत्र सप्तशलाकाचक्रम ●



शाक्रे ज्ये शतभानिले जलशिवे पौष्णा-र्यमर्क्षे वसुद्वीशे वैश्वसुधां-शुभे हयभगे सार्पानुराधेमिथः। हस्तो-पांतिमभे विधातृविधिभे मुलादिती त्वाष्ट्रभाजांघ्री याम्यमघे कृशानुहरिभे विद्धे कुम्भृद्रेखिके॥

● ज्येष्ठा-पुष्य ● शततारका- स्वाति ● पूर्वाषाढा-आर्द्रा ● रेवती-उत्तराफाल्गुनी ● घनिष्ठा - विशाखा ● उत्तराषाढा- मृगशिरा ● अश्विनी - पूर्वाफाल्गुनी ● आश्लेषा - अनुराधा ● हस्त-उत्तराभाद्रपदा ● रोहिणी - अभिजित ● मूल - पुनर्वसु ● चित्रा -पूर्वाभाद्रपदा ● भरणी - मघा ● कृतिका - श्रवण ● इन नक्षत्रों का आपस में सप्तशलाका वेध होता है।

✦ शास्त्रीय-वेधसूत्र ✦

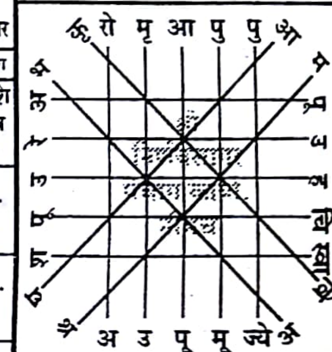
उपर्युक्त नक्षत्रों का वेध यदि पाप ग्रह से हो तो उस सम्पूर्ण नक्षत्र का त्याग करना चाहिए। यदि शुभ ग्रह से वेध हो तो केवल चरण वेध ही त्याज्य होता है। यथा श्री नारदीयसूत्रम - पदमेव शुभैर्विद्धमशुभैर्नैव कृत्स्नतः॥

अथ विनानतं दशम भावस्य स्पष्ट सारणीयम्

लग्न स्पष्ट के राशि अंश तुल्य सम सूत्र में जो फल होवें वही दशम स्पष्ट है तथा दशम भाव राशि फलांकों में ६ राशि योग से चतुर्थ भाव स्पष्ट होगा। शेष क्रिया जातक ग्रन्थानुसार

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	अंश
राशि मेष ०	८	८	८	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	राशि मेष ०
	२३	२४	२५	२५	२६	२७	२८	२८	२९	०	०	१	२	३	३	४	५	६	६	७	८	९	१०	११	११	१२	१३	१४	१५	१५	
	५६	३७	१८	५९	४०	२१	०२	४३	२४	५	४०	२८	१५	२	४६	३६	२३	१०	५७	४४	३१	१८	५	७	४२	३२	२४	२४	६	५६	
	२६	५६	२६	३८	४३	४२	४७	५२	२७	५२	११	५९	२६	३	३८	४९	१०	४६	४६	४८	४०	५१	१	१४	५०	४३	४८	५०	१	४८	
वृ. १	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	वृ. १
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	
	४३	२३	२९	१९	१०	१	५२	४२	३३	२४	१८	६	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२४	२३	३५	४१	
	३९	२१	६	२४	४२	२४	६	५४	४४	३०	१८	२	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	३४	३०	४०	१७	
मि. २	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	मि. २
	१५	१६	१७	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२९	०	१	२	४	५	६	७	८	१०	११	१२	१३	१५	१६	१७	१८	२०	
	४६	५२	५७	३	९	१५	२०	२९	३१	२७	४१	५१	५	९	३२	४६	०	१४	२८	४१	५५	९	२३	३७	५१	४	१८	३२	४६	०	
	४८	४२	५८	२	२७	३	३७	१३	५१	२४	२०	२३	१२	८	५३	३७	३८	२४	१०	५५	५५	४०	२९	१७	५	५७	४२	२७	२१	१३	
क. ३	११	११	११	११	११	११	११	११	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	क. ३
	२१	२२	२३	२४	२६	२७	२८	२९	१	२	३	४	६	७	८	९	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२६	
	१४	२७	४१	५५	९	२३	३६	५०	४	१८	३२	४७	२	१९	३१	४५	०	९	१८	२७	३७	४६	५५	४	१४	२३	३२	४१	५०	०	
	०	४५	३६	२३	१६	२४	४१	२६	५३	११	७	५१	२२	४१	१५	४२	१३	३५	३१	५२	६	११	३५	४८	१२	१६	२९	४३	५६	१२	
सिं. ४	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	सिं. ४
	२७	२८	२९	०	१	२	४	५	६	७	८	९	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	
	९	१८	२७	३७	४६	५५	४	१४	२३	३२	४२	५६	२०	३५	४४	३५	४४	१०	१२	१४	१६	१८	२७	३०	३२	३४	२६	३८	४०	५२	
	२५	३९	५२	६	१९	३३	४८	२	१६	३०	५४	३२	५	८	१२	१२	११	२०	१५	४	८	९	१०	१५	५५	७	२	५	८	१	
कं. ५	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	कं. ५
	२९	०	१	२	३	४	५	६	७	८	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	
	३८	४१	४३	४५	४७	५०	५२	५४	५९	५९	१	३	५	७	१०	१२	१४	१६	१८	२१	२३	१५	२७	३०	३२	३५	३७	४०	४२	४३	
	२	८	१०	१२	१	०	५	८	३	७	१३	२१	३५	५२	८	१	०	७	१४	२२	३०	३२	१	५	८	९	१०	२५	५०	५९	
तु. ६	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	तु. ६
	०	०	२	३	४	५	६	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२६	२७	२८	२९	०	१	३	
	४५	४८	५०	५२	५४	५६	५९	१	२	५	८	१५	२३	२९	४२	५०	१	१०	१९	२८	३८	४८	५८	९	१७	२४	३५	४२	५२	१	
	७	५	८	१३	१५	१९	२२	२	५	१४	३८	५५	१७	१२	३	०	१	८	१५	२२	८	९	३५	४२	५६	२	८	५	३	७	
वृ. ७	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	वृ. ७
	४	५	६	७	८	९	११	१२	१३	१४	१६	१७	१८	१९	२०	२२	२३	२४	२५	२७	२८	२९	०	२	३	४	५	६	८	९	
	१०	१९	२९	३८	४३	५३	३	२०	३५	४९	४	१६	३०	४४	५८	१२	२५	३८	५५	७	१९	३४	४८	२	१६	३०	४३	५३	११	२५	
	७	५	३	२	०	१	५	१३	२५	३५	४५	८	३	१०	१	२	५	३	५७	१२	२५	१८	२१	७	४	५	३	१	१५	५	
ध. ८	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	ध. ८
	१०	११	१३	१४	१५	१६	१८	१९	२०	२१	२२	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०	१	२	३	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	
	३९	५३	६	२०	३४	४८	२	१५	२९	४३	५७	११	१४	१९	२७	३०	३६	४२	४७	५३	५८	४	१०	१५	२१	२६	३२	३४	३६	३७	
	१४	१	५	३०	१५	२२	११	३	२९	१०	१५	२५	४८	३७	३७	३७	४२	३	४	४	३	१५	१२	२०	३०	५	८	३	४५	०	
म. ९	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	म. ९
	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०	०	१	२	३	४	५	५	६	७	८	९	१०	११	
	३८	३९	४८	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५२	४०	१	१	५२	४३	३३	२४	१५	६	५७	४६	३८	२९	२०	१०	७	
	१	२	५	२	१	०	३	१	५०	२२	११	८	१५	३०	३२	४०	४५	५०	७	३	४	९	१३	२१	२७	३५	४०	४५	५०	५०	
कुं. १०	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	कुं. १०
	११	१२	१३	१४	१४	१५	१६	१७	१८	१८	१९	२०	२१	२१	२२	२३	२४	२४	२५	२५	२६	२७	२७	२८	२९	२९	०	१	२	२	
	४६	५	२२	९	५६	४३	३०	२१	१४	५१	३८	२४	५	४६	३८	२९	१६	५९	१२	५६	३४	१५	५६	३७	१८	५९	४०	२१	३०	३	
	५१	३२	३२	३३	३०	२२	७	५	९	१०	१२	८	३	१५	२७	३७	४८	५९	१	२	३	५	८	१०	१२	५	३०	१२	१६	४	
मी. ११	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	मी. ११
	३	४	४	५	६	६	७	८	८	९	१०	१०	११	१२	१२	१३	१४	१५	१५	१६	१७	१७	१८	१९	१९	२०	२१	२१	२२	२३	
	२४	५	४९	२८	९	५०	३२	१२	५३	३४	१५	५६	२७	१३	५९	४०	२०	४०	३५	२४	५	४६	२८	९	५७	३१	१२	५३	४५	१५	
	३९	१२	५	३	०	८	७	६	१	५	३	४२	४७	३२	२६	१२	४२	३५	१	३	८	५	७	३	५३	५९	१	५	३	४	
अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	अंश

● विवाहे पंचशलाकाचक्रम् ●



वेधोऽन्योन्य - मसौ, विरिंच्यभिजितोर्याम्यानुराधर्क्ष - योर्विश्वेद्रोर्हरिपित्र्ययोर्ग्रह - कृतो - हस्तोत्तराभाद्रयोः। स्वातीवारूण - योर्भवे - न्रिर्ऋति-भादित्यो - स्तथो फांत्ययोः खेटे तत्र गते तुरीयचरणाद्योर्वा तृतीयद्वयोः॥

● रोहिणी-अभिजित् ● भरणी-अनुराधा ● उत्तराषाढा-मृगशिरा ● श्रवण-मघा ● हस्त-उत्तराभाद्रपदा ● स्वाति-शतभिषा ● मूल-पुनर्वसु ● उत्तराफाल्गुनी-रेवती

वधूप्रवेशने दाने वरणे पाणिपीड़ने वेधः पंचशलाकाख्येऽन्य त्रसप्तशलाककः॥

✦ इतिशास्त्रीयसूत्रम ✦

इन दो-दो नक्षत्रों में परस्पर गृह कृत वेध होता है एवं इन दो-दो नक्षत्रों में इष्टकालिक गोचर ग्रह के रहने पर चतुर्थ-प्रथम चरणों में तथा तृतीय-द्वितीय चरणों में परस्पर वेध होता है।

निर्णय सागर पंचांग कार्यालय

नीमच छावनी

●卐● अथ विविधविषयसम्पन्न बृहद्नवग्रह गुणधर्मविवेचन चक्रम् पंचांगे निर्णयसागरे नीमच नगरस्थे ●卐●

रवि:	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	ग्रह
आफताब	महताब	मिरीख	उता.रुद	मुस्तरी	झाहार	झाहल	रास.	जनव.	सितारा
सन्	मून	मार्स.	मर्क्यू.	जुपिटर	वीनस	सॅटर्न	ड्रगोन्स	ड्रगोन्स	प्लेनेट
३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	१ पाददृष्टि.
५।९	५।९	५।९	५।९	५।९	५।९	५।९	५।९	५।९	द्विपाददृष्टि.
४।८	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८	त्रिपाददृष्टि.
७	७	४।७।८	७	५।७।९	७	३।७।१०	७	७	सम्पूर्णदृष्टि.
हरिवंश श्रवण	त्रिपुर रुद्र जप.	रुद्री-जप मन्त्रादि	कांस्य दान	अमाव स्या व्रत	गोरक्षा दानम्	मृत्युं जयजप	सीसा दान	ध्वजा दान	नेष्टग्रहस्यवर्षे
गेहूँ	चाँवल	मसूर	हरे मूंग	चना दाल	चाँवल	उड़द	तिल	तिल	दानादिवस्तु
मास १	दिन २।	मास १॥	मास १	मास १३	मास १	मास ३०	मास १८	मास १८	माध्यमिक एक राशि भुक्तगति
माणक	मोती	प्रवाल	पन्ना	पुष्पराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लसणि	ग्रहाणां रत्नानि
चं.मं. गु.	र.बु.	र.गु. चं.	र.रा. शु.	र.चं. मं.	बु.रा. श.	बु.रा. शु.	बु.श. शु.	बु.	मित्रग्रहा:
बु.	मं.शु. गु.श.	शु.श.	मं.श. गु.	श.रा.	मं.गु.	गु.	गु.	०	समग्रहा:
श.रा. शु.	रा.	बु.रा.	चं.	बु.शु.	र.चं.	र.चं. मं.	र.चं. मं.	०	शत्रुग्रहा:
मेष १०	वृषभ ३	मकर २८	कन्या १५	कर्क ५	मीन २७	तुला २०	मिथुन १५	धनु १५	ग्रहाणां उच्चराश्यंश
तुला १०	वृश्चिक ३	कर्क २८	मीन १५	मकर ५	कन्या २७	मेष २०	धनु १५	मिथुन १५	ग्रहाणां नीचराश्यंश
सिंह २०	वृषभ ४ से ३०	मेष १८	कन्या १६ से २०	धनु १३	तुला १०	कुंभ २०	कर्क	मकर	मूल त्रिकोण राशि अंश
अर्क	पलाश	खदिर	अपामार्ग	पीपल	गूलर	शमी	दुर्बा	कुशा	ग्रह समिधा
कमल लाल पुष्प	श्वेत पुष्प	लाल कनेर	सभी पुष्प	पीला पुष्प	श्वेत पुष्प	काला पुष्प	काला पुष्प	काला पुष्प	ग्रहाणां पुष्पादि

रवि:	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	ग्रह
सिंह	कर्क	मेषवृश्चि.	कन्यामिथु.	धनुमीन	वृषतुला	मकरकुंभ	कन्या	मीन	स्वगृहाणि
सिंह	वृष	मेष	कन्या	धनु	तुला	कुंभ	कर्क	मकर	मूलत्रिकोण
क्षत्रीय	वैश्य	क्षत्रीय	शुद्र	विप्र	विप्र	अंत्यज	शुद्र	संकर	वर्ण
पुरूष	स्त्री	पुरूष	स्त्री-नपुं	पुरूष	स्त्री	स्त्री-नपुं.	पुरूष	पुरूष	पुरूष स्त्री
चतुरस्त्र	वर्त्तुल	चतु.	वृत्त	वृत्त	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	पुच्छ	आकार
मध्या.	अपरा.	मध्या	प्रभात	प्रभात	अपरा.	संध्या	संध्या	संध्या	समय
पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	आग्नेय	पश्चिम	नैर्ऋत्य	सर्व दिक्	दिशा
सुवर्ण	रौप्य	सुवर्ण ताम्र	कांस्य	सुवर्ण	रौप्य	लोह	सीसा	लोह	धातु
चतुष्प	बहुपद	चतुष्प	द्विपद	द्विपद	द्विपद	भुजंग अपद	अपद	अपद	पाद
उग्र.	सौम्य	उग्र	शुभ	शुभ	शुभ	पाप	पाप	पाप	शुभादि
सत्व.	सत्व	तम	रज	सत्व	रज	तम	तम	तम	गुण
स्थिर	चर	चर	द्विस्व.	स्थिर	चर	पक्षीस्थिर	चर	पक्षी	चरादि
तिक्त	क्षार	कटु	सर्वरस	मधुर	अम्ल	कषाय	कषाय	कषाय	रस
पशु भूमि	जल भूमि	दग्ध भूमि	श्मशा. भूमि	वाणी सुरालय	जल भूमि	उत्कर भूमि	उषर भूमि	उषर भूमि	भूमि
पित्त	श्लेष्म	पित्त	समधातु	समधातु	कफशुक्र	वायु	वायु	वायु	पित्तादि
प्रोढ	युवा	युवा	युवा	वृद्ध	युवा	अतिवृ	वृद्ध	वृद्ध	अवस्था
रक्त	श्वेत	रक्त	नीला हरा	पीत	श्वेत	नीला काला	धूम्र	धूम्र	रंग
मूल	जीव	धातु	जीव	जीव	मूल	मूल	धातु	धातु	धात्वादि
वन	जल	वन	ग्राम	ग्राम	ग्राम	संधि	विवर	विवर	स्थान
आत्मा	मन	शक्ति	वाणी	विद्या	वासना	संघर्ष	विकार	खेद	कारक
पिता	माता	भ्राता	मित्र-बन्धु	संतान	स्त्री	भृत्य	शत्रु	बाधा	सम्बन्ध
अग्नि	वरूण	स्कन्द	विष्णु	इन्द्र	इन्द्राणी	ब्रह्मा	वायु	आकाश	देवता
अस्थि	रक्त	मांस मज्जा	चर्म त्वचा	मेद चर्बी	वीर्य ओज	स्नायु	नस	नस	शरीर धातु

❋ हवनादिकृत्ये अग्निवास: ❋

अभीष्ट तिथि में १ जोड़ें, उसमें अभीष्ट वार संख्या जोड़ें तथा ४ का भाग देवें, शेष ३ या शून्य हो तो अग्निवास पृथ्वी पर, उस दिन होम करने में सफलता प्राप्त होती है। शेष १ तथा २ रहे तो स्वर्ग एवं पाताल में अग्निवास रहेगा, यह शुभप्रद नहीं है तिथि - गणना शुक्लादि अमान्त मासानुसार तथा इष्ट दिवसीय तिथि प्रमाण अनुसार करना चाहिए।

❋ हवनादिकृत्ये आहुतिशुद्धि: ❋

सूर्य जिस नक्षत्र पर रहता है उससे ३ नक्षत्रों की अग्रिम गणना से दी हुई आहुति सूर्य को मिलती है तदुपरांत आगे के ३ नक्षत्रों में बुध को, फिर ३ में शुक्र को, फिर ३ में शनि को, फिर ३ में चंद्र को, फिर ३ में मंगल को, फिर ३ नक्षत्र गुरू तथा ३ राहु केतु को आहुति मिलती है। पाप ग्रह वाले नक्षत्रों में होम की आहुति शुभ नहीं होती है, अत: शुभ ग्रह वाले नक्षत्रों में ही हवनादि कृत्य शुभद एवं सन्मान्य रहते हैं। सूर्य नक्षत्र से अभीष्ट नक्षत्र तक की गणना करके आहुति क्रिया का ज्ञान होता है।

✦ अग्निवासविषये-परिहारसूत्राणि ✦

बृहददेवज्ञरञ्जने मतानुगते-विवाह चूड़ा व्रतबंधगोचरे उत्पातशान्तिग्रहणे युगादौ। दुर्गाविधाने सततं प्रसूतौ नैवाग्निचक्रं परिशोधनीयम् ॥ ग्रहणोद्वाहगण्डान्ते तथा दुर्गोत्सवे पिच। तदाग्निचक्रं नालोक्यं - ग्रहशान्तौ विचारयेत् ॥ व्रतबंधे विवाहे च नवरात्रे च नित्यके। कुलदेवार्चने धीमान्नो कुर्यादग्निचिन्तम् ॥ विवाहे व्रतबंधे च यजने मधुसूदने। दुर्गायां पुत्र जन्मादौ अग्निचक्रं न दृश्यते ॥ परन्तुनवीन गृह प्रवेश, विशिष्ट अनुष्ठान शांति कर्म विधान विशिष्ट यज्ञ यागादि हेतु अग्निवास विषयक विचार करना समुचित ही है।

अथ बृहदद्वादशराशि गुणधर्म विवेचनचक्रम् पंचांगे निर्णयसागरे

संज्ञा	पु.स्त्री	चरादि	तत्व	पुष्टकृश	पाद	वर्ण	गुण	धातु	शब्द	स्थान	क्रूरादि	बलस	समवि.	दिशा	स्त्रीसंग	कांति	जाति	समादि	उदय	ऋतु	बुरज़	साइन
मेष	पुरूष	चर	अग्नि	दृढ	चतुष्प.	रक्त-लाल	तप्तदेह	पित्त	अतिरव	पर्वत	उग्र	दिवा	विषम	पूर्व	अल्प	रूक्ष	क्षत्री	सम	पृष्ठोदय	बसन्त	हमल	एरिज
वृषभ	स्त्री	स्थिर	पृथ्वी	दृढ	चतुष्प.	श्वेत	शीत	वायु	अतिरव	समभू.	सौम्य	रात्रि	सम	दक्षिण	मध्य	रूक्ष	वैश्य	विषम	पृष्ठोदय	ग्रीष्म	सौर	ट्यूरस
मिथुन	पुरूष	द्विस्व.	वायु	मृदु	द्विपद	हरित	तप्त	समधा	दीर्घशब्द	वनचर	उग्र	दिवा	विषम	पश्चिम	मध्य	स्निग्ध	शूद्र	विषम	शीर्षोदय	ग्रीष्म	जोबझ	जेमिनी
कर्क	स्त्री	चर	जल	मृदु	अपद	श्वेत	शीत	कफ	शब्दहीन	जलचर	सौम्य	रात्रि	सम	उत्तर	बहु	स्निग्ध	विप्र	सम	पृष्ठोदय	वर्षा	सर्तान	केन्सर
सिंह	पुरूष	स्थिर	अग्नि	दृढ	चतुष्प.	धूम्र-लाल	उष्ण	पित्त	दीर्घशब्द	पर्वत	उग्र	दिवा	विषम	पूर्व	अल्प	रूक्ष	क्षत्री	सम	शीर्षोदय	वर्षा	अशद	लेयो
कन्या	स्त्री	द्विस्व.	पृथ्वी	कृश	द्विपद	पांडुरंग	शीत	वायु	अर्धशब्द	समभू.	सौम्य	रात्रि	सम	दक्षिण	अल्प	रूक्ष	वैश्य	सम	शीर्षोदय	शरत्	संवुला	विर्गो
तुला	पुरूष	चर	वायु	दृढ	द्विपद	विचित्र	उष्ण	समधा	शब्दहीन	वनचर	उग्र	दिवा	विषम	पश्चिम	अल्प	स्निग्ध	शूद्र	सम	शीर्षोदय	शरत्	मीज़ान	लीब्रा
वृश्चिक	स्त्री	स्थिर	जल	कृश	बहुपद	श्वेत-ताम्र	शीत	कफ	शब्दहीन	जलचर	सौम्य	रात्रि	सम	उत्तर	बहु	स्निग्ध	विप्र	सम	शीर्षोदय	हेमंत	अक्रव	स्कार्पिओ
धनु	पुरूष	द्विस्व.	अग्नि	दृढ	द्विपद	सुवर्ण	उष्ण	पित्त	अतिशब्द	पर्वत	उग्र	दिवा	विषम	पूर्व	अल्प	रूक्ष	क्षत्री	सम	पृष्ठोदय	हेमंत	कौश	सेगीटेरी
मकर	स्त्री	चर	पृथ्वी	दृढ	चतुष्प.	भूरा	शीत	वायु	अतिशब्द	वनचर	सौम्य	रात्रि	सम	दक्षिण	अल्प	रूक्ष	वैश्य	विषम	पृष्ठोदय	शिशिर	जदी	केप्रीकार्न
कुंभ	पुरूष	स्थिर	वायु	दृढ	अपद	कृष्ण	उष्ण	समधा	खंडशब्द	भूमि	उग्र	दिवा	विषम	पश्चिम	मध्य	स्निग्ध	शूद्र	विषम	शीर्षोदय	शिशिर	दलव	एक्वारीस
मीन	स्त्री	द्विस्व.	जल	दृढ	अपद	धूम्र-पीला	शीत	कफ	हीनशब्द	जलचर	सौम्य	रात्रि	सम	उत्तर	बहु	स्निग्ध	विप्र	विषम	उभयोदय	वसन्त	हुत	पिसेस

अथ नक्षत्र कष्टावली सूत्रम्

नक्षत्र	चरणगत कष्टदिन				जपार्थ मंत्राः	रोग उत्पत्ति कष्टदिन	दान पदार्थाः	आराध्य वृक्ष	नक्षत्र	चरणगत कष्टदिन				जपार्थ मंत्राः	रोग उत्पत्ति कष्टदिन	दान पदार्थाः	आराध्य वृक्ष
	१	२	३	४						१	२	३	४				
अश्विनी	९	११	१	२०	मृत्युंजयमन्त्रः	९	भोजनदानम्	कुचला वृक्ष	स्वाति	६०	१७	३०	०	वायोरम्नेति मंत्रः	मृ.तु.	गोघृतदानम्	अर्जुन वृक्ष
भरणी	०	८०	४०	११	यमायतवेतिमंत्रः	११	गौअन्नदानम्	आंवला	विशाखा	१५	०	४	१३	इन्द्राग्निइतिमंत्रः	१६	गोस्वर्णदानम्	नागकेशर
कृतिका	९	११	१६	२७	अग्निर्मर्धेतिमंत्रः	९	स्वर्णदानम्	गूलर	अनुराधा	६०	१२	३६	३०	नमोमित्रेतिमंत्रः	स्थिर	गोघृत दानम्	नागकेशर
रोहिणी	३	९	१८	३०	ब्रह्मययेति मंत्रः	७	घृत दानम्	जामुन	ज्येष्ठा	६९	९	६	४	त्रातारमिन्द्रमिति मंत्रः	मृ.तु.	तिल दानम्	नीमवृक्ष
मृगशिरा	९	५	७	१०	इमं देवेति मंत्रः	३०	तिलदानम्	खैरी	मूल	०	९	१५	६	मातापुत्रेति मंत्रः	९	रजत पात्र दानम्	वेतवृक्ष
आर्द्रा	०	१८	०	०	नमस्तेरूद्रइतिमंत्रः	मृ.तु.	गौ दानम्	कृष्णगुरू	पू.षाढा	०	१५	२४	१०	आपोधर्मेति मंत्रः	मृ.तु.	गौमुक्तादानम्	अर्कवृक्ष
पुनर्वसु	७	१४	२	२१	अदितिद्योरिति मंत्रः	७	पीतल दानम्	कीकर	उ.षाढा	३०	२४	२६	१६	विश्वेदेवेति मंत्रः	३०	भोजन दानम्	कटहल वृक्ष
पुष्य	६	७	१०	२१	वृहस्पतेति मंत्रः	७	तेलान्न दानम्	पीपल	श्रवण	६०	२४	६	९	विष्णोररा. मंत्र	११	श्रीफलदानम्	श्वेत वृक्ष
आश्लेषा	०	०	४१	०	नमोऽस्तुसर्पेतिमंत्रः	मृ.तु.	गोऽजादि दानम्	नागचम्पा	घनिष्ठा	१५	४	२०	२१	वसो.पवित्रेति मंत्रः	१५	अश्वान्नदानम्	नारियल
मघा	१५	७	१७	२०	पितृभ्यइति मंत्रः	२०	वस्त्राज्यदानम्	वटवृक्ष	शतभिषा	०	४५	३	२२	वरणस्तम्भेति मंत्रः	११	भोजनान्नदानम्	आम वृक्ष
पू.फा.	०	१५	०	३०	भगप्प्रणेति मंत्रः	मृ.तु.	भोजन दानम्	अशोक वृक्ष	पू.भाद्र.	०	१२	२१	१९	अहिर्बुध्येति मंत्रः	मृ.तु.	भोजनदानम्	कदम्बवृक्ष
उ.फा.	७	१४	७	६०	दध्यावद्धेति मंत्रः	७	अन्न दानम्	खेजड़ीवृक्ष	उ.भाद्र.	१०	३	९	१५	अहिर्बुध्येति मंत्रः	७	अन्नदानम्	मेहंदीवृक्ष
हस्त	१५	१७	१५	०	उदुत्यंजातवेदेति मंत्रः	१५	तैल दानम्	जूही	रेवती	१८	१०	९	२०	पृषण्तवत्रं मंत्रः	स्थिर	वृष दानम्	बैर वृक्ष
चित्रा	११	९	९	१६	त्वष्टातुरीगति मंत्रः	११	दुग्धदानम्	बिल्ववृक्ष	● निर्णयसागर पंचांग कार्यालय, मु.पो. नीमच (म.प्र.) फोन - २२०५२० ●								

● नवग्रह मुद्रिका-विधान ●

बुध पन्ना	शुक्र हीरा	चन्द्र मुक्ता
गुरू पुखराज	सूर्य माणिक्य	मंगल मूंगा
केतु वैदूर्य	शनि नीलम	राहु गोमेद

▲ नवरत्न की मुद्रिका निर्माण हेतु कौन रत्न किस स्थान दिशा में धारण स्थापित किया जावे - मुहूर्त्तचिन्तामणि शास्त्र मान्यतानुसार उपर्युक्त कोष्ठ रचना प्रस्तुत है। यह नवरत्न की मुद्रिका रजत-चाँदी धातु में अथवा सोना-स्वर्ण धातु में निर्माण करवाना योग्य है। अशुभ नवग्रह जनित दोष निवारण हेतु नवरत्न की मुद्रिका धारण करना सर्वविध श्रीकार शुभ फलप्रदायक है।

✦ श्रीवर्धक-सिद्धिप्रदायक मुद्रिका ✦

विषुवद् दिवस (२१ मार्च) पर इस मुद्रिका का निर्माण करें। २५ रत्ती सोना - १६ रत्ती चाँदी - १० रत्ती ताम्बा एवं ५१ रत्ती इन धातु योग से तार-मुद्रिका बनावें। यह ऋद्धि-सिद्धि प्रदायक

मार्त्तण्ड प्रश्नावली

५	४	३	२	१
६	७	८	९	१०
१५	१४	१३	१२	११
१६	१७	१८	१९	२०

❋ मार्त्तण्डप्रश्नोत्तर विधान ❋ इस प्रश्नावली अंक यंत्र का उपयोग किसी भी रविवार को प्रातः विशेष फलद रहता है। शुद्ध सात्विक विचारधारा से शांतचित्त होकर आवश्यक उपयोगिता जानकर ही इस अंक प्रश्न यंत्र का उपयोग करना सार्थक है। प्रश्नकर्ता प्रमाद, कुतर्क व अव्यवस्थित मन से इस यंत्र फल का उपयोग नहीं करें। पूर्वाभिमुख होकर श्री सूर्यनारायण का मानसिक ध्यान करते इस यंत्र के किसी भी कोष्ठ के अंक पर अपनी दाहिनी अनामिका अंगुली रखे, फलाशय निम्नानुसार - **१ कार्यसिद्धि, २ कार्यसिद्धि दुःखनाश, ३ कार्यसिद्धि-लाभ, ४ प्रश्नसामान्य श्रमतः साधना, ५ प्रश्नयोगवाही सार्थक, ६ सफलता उत्तम गति, ७ मनोत्साह कार्यसिद्धि, ८ श्रमसाधनामात्र, विफलता, ९ हितलाभ कार्यगति, १०, सफलता सम्पर्क, ११ उत्तमक्रिया फलाशययोग्य, १२ विफलता वृथागति, १३ सामान्य गति श्रमासधना, १४ सफलता उत्तमगति, १५ लाभांश कार्यसिद्धि, १६ प्रश्न कुयोगद असिद्धि, १७ मनोत्साह मनोनीत गति, १८ श्रमतः सफलता समफल, १९ प्रश्न सामान्य आशा बलवति राजन्, २० प्रश्न योगद कार्य विधायक।** ✦❋✦

हिमांशु प्रश्नावली

श	ब	ग
उ	व	म
प	स	ह

❋ मनोकामना हिमांशु प्रश्नावली ❋ इस यंत्र का उपयोग सायंकाल विशेष फलद रहता है सोमवार विशेषकर मान्य है। प्रश्नफल इच्छुक जीव प्रमाद व अव्यवस्थित चित्त से इसका उपयोग नहीं करें, अन्यथा फलाशय योग्य नहीं। पश्चिमाभिमुख होकर तथा **'नमामि शशिनं सोमं'** शब्द का मानसिक उच्चारण करके अनामिका उंगुली यंत्र पर रखें, तथा फलाशय इस प्रकार समझे। **१ श-कार्यलाभ मनोकामना। २ ब-कार्यसिद्धि में सन्देह। ३ ग-फल योग्य सफलता। ४ म-उत्तम गति सुलाभ। ५ व-कार्यसिद्धि दुष्कर, विवेक से काम करें। ६ उ-सामान्य प्रतिफल, विशेष गतिविधि नैव। ७ प-सदकार्यरत रहने से ही सफलता। ८ स-मनोकामना, अर्थलाभ, सुआशा। ९ ह-कार्यपूर्ति में संदेह, श्रमसाधना विशेष से सुगति** (श्रीरस्तु)

❋ सर्वधर्म मूल बोधवचन ❋ १.सत्यं वद - सत्य बोलो। **२ धर्मं चर** - योग्य धर्माचरण करो। **३ मातृदेवो भव** - जननी को देव मानो। **४ पितृदेवो भव** - पिता को देव मानो। **५ आचार्य देवो भव** -ज्ञान एवं शिक्षा प्रदाता को देव मानो। **६ अतिथि देवो भव** - अतिथि को देव मानो। **७ स्वाध्यायान्मा प्रमदः** कर्तव्य पथ पर दृढ रहो, कार्यसिद्धि पर लक्ष्य तथा प्रमाद आलस्य से दूर रहो। **८ श्रद्धया देयम्** - यथाशक्ति श्रद्धा से आदान-प्रदान करो। ✣ ✣ ✣

✣ विविध शास्त्रीय विवेक ✣

✱ जमीन जायदाद लेन-देन-श्रवण घनिष्ठा शतभिषा। हस्त चित्रा स्वाति। पुर्नवसु पुष्य। मृगशिरा, अश्विनी, रेवती, अनुराधा इन नक्षत्रों में लेन-देन, सौदा सूत, भूमि खरीदी आदि करना शुभ फलद। तीनों उत्तरा, तीनों पूर्वा, विशाखा, रोहिणी, कृतिका, मघा, आर्द्रा, भरणी, आश्लेषा, मूल इन नक्षत्रों में चोरी गया, धरोहर रखा, उधार दिया या भू-गत द्रव्य वापस नहीं मिलता है। श्री तुलसीदासजी के ये वचनामृत अनुभूत हैं। ✦❋✦

✱ किसी भी मंगलवार को ऋण कर्जा नहीं लेना चाहिए। साथ ही संक्रान्ति दिवस, वृद्धि नामक योग और हस्त नक्षत्र तथा रविवार को भी कर्ज धन नहीं लेना चाहिये तथा इन दिनों में कर्ज की रकम वापस करना शुभद है। ✦❋✦

✱ बुधवार के दिन किसी को भी ऋण अथवा धन नहीं देना चाहिये अन्यथा उसके वापस आने में विबाधा अवरोध ही बन पावे। ✦❋✦

❋ भावीवर्ष फलाशय ❋ अंक शास्त्रीय नियम से वर्षप्रतिफल जानने का मौलिक सूत्र प्रस्तुत है। नववर्ष के शुभाशुभ गणना हेतु आप आयु की संख्या, जन्मराशि तथा जन्मनक्षत्र की संख्या, इन तीनों का योग करें तथा इस योग फलांक को तीन जगह अलग-अलग रखें। इसमें क्रमशः २-४-३ अंक से गुणा करें और क्रमशः इन गुणन फलों में ७-८-६ से भाग देवें। भाग देने पर यदि पहली और तीसरी स्थान संख्या भागावशेष में ० बचे तो विविध समस्या, त्रास, व्यय की स्थिति बने। दूसरे मध्य स्थान पर शून्य रहते आपत्ति, खेद, भय, अर्थ, हानि। अर्थात् तीनों स्थान पर शून्य बचते वर्षफलनेष्ट। कार्य-व्यवसाय संपर्क तथा अन्य विषयक हीनता रहे। यदि शून्य के अलावा अन्य अंक बचे तो वर्ष फलाशय सुखद। किसी स्थान पर ० रहें तो अनुपातिक क्रिया से शुभाशुभ प्रतिफल समझना चाहिए। ✦❋✦

वेदमाता गायत्री मंत्र ॐ भूर्भुवः स्वः। ॐ तत्सवितुवरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥ ॐ

❋आज का दिन कैसा ❋ जिस दिन विशेष का शुभाऽशुभ जानना हो उस दिन पंचांग में वर्तमान दिन का नक्षत्र देखें जो उस दिन नक्षत्र से आपके जन्म नाम का नक्षत्र ४-५-११-१२-१८-१९-२५-२६ वां हो तो समझें कि आपका दिन सुखद तथा अभिनव समाचार वा क्रियाओं से प्रसन्नता बने। यदि वर्तमान दिन नक्षत्र से आपके जन्म नक्षत्र की गणना क्रमशः २-३-६-७-९-१०, १३, १४, १६, १७, २०, २१, २३, २४, २७ होवे तो दिन का आधा भाग शुभ, आधा भाग अशुभ तथा १-८-१५-२२ वाँ गणनानुगत नक्षत्र आवे तो सारा दिन ठीक नहीं समझना चाहिये।

❋ शुभ यात्रा शकुन ❋ रविवार को यात्रा करनी हो तो दही, शक्कर, इलायची खाकर प्रस्थान करना चाहिये। सोमवार को खीर, मंगल को दलिया-थूली, बुध को दूध सेवन करके तथा गुरू को दही का भक्षण, शुक्रवार को दूध या दही की लस्सी, शनिवार को कुछ तिल मिले चांवल खाकर यात्रा करना श्रेयस्कर शुभफलात्मक समझना चाहिये श्रीरस्तु।

✣ विशिष्ट यात्रा मुहूर्त्त रचना ✣

✱ तिथि - षष्ठी, द्वादशी, अष्टमी, शुक्लपक्ष की प्रतिपदा पूर्णिमा, अमावस्या और रिक्ता ४-९-१४ तिथि मान्य नहीं, इनसे अन्य तिथि शुभ।

✱ नक्षत्र - अश्विनी, पुनर्वसु, अनुराधा, मृगशिरा, पुष्य, रेवती, हस्त, श्रवण तथा घनिष्ठा, ये नक्षत्र यात्रा विशेष में शुभद हैं। तीनों उत्तरा, शतभिषा, मूल, ज्येष्ठा, तीनों पूर्वा और रोहिणी मध्यम रूप से मान्य। परन्तु - स्वाति, कृतिका, आर्द्रा, विशाखा, चित्रा, आश्लेषा, मघा, भरणी आदि ८ नक्षत्र अशुभ सूचक हैं।

✱ विशेष वचन यह भी कि पूर्व दिशा में ज्येष्ठा, दक्षिण में पूर्वा भाद्रपद, पश्चिम में रोहिणी और उत्तर में उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र, शूलदोष संज्ञा के हैं। इनको विशेष निषेध जानें। यात्रायां प्रविदित जन्मनां नराणां सूत्रानुसार जन्म नक्षत्र राशि से ही यात्रा मुहूर्त्त विचार करना चाहिये। ✦❋✦

● श्री बीज प्रश्नोत्तरी प्रतिफलम् ●

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ
ॠ	लृ	लॄ	ए	ऐ	ओ	औ
अं	अः	क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ	ट	ठ
ड	ढ	ण	त	थ	द	ध
न	प	फ	ब	भ	म	य
र	ल	व	श	स	ह	क्ष
			ष			

♦ प्रश्न फलाशय ज्ञान–अवलोकन सूत्र ♦

सर्वदा प्रश्न फलाशय कथन–श्रवण–मनन हेतु देश काल परिस्थिति – कार्य व्यवसाय–आयुवय प्रमाण मानक आदि पक्ष विषय पर ध्यान रखना चाहिये। श्री बीज प्रश्नोत्तरी का उपयोग शुद्ध सात्विक मन एवं आस्था आत्म विश्वास रखते ही करें तथा स्वयं की बौद्धिक प्रतिभा–ज्ञान विवेक का सन्तुलन रखते ही समाधान करना भी योग्य सूत्र है।

प्रश्नकर्त्ता को विशेषकर प्रात:काल ६ से ९ तथा दिवा १२ से १ एवं सायं ३ से ६ समय मध्य ही इस प्रश्न यन्त्र का उपयोग करना विशेष अनुकूल है। पृच्छक अपने इष्टदेव का ध्यान करते तथा किसी फल या वृक्ष का नाम स्मरण करते अपनी अनामिका (पूजा कार्य वाली) अंगुली अकारादि प्रश्न कोष्ठक में रखें तथा जिस प्रश्नाक्षर कोष्ठ में अंगुली रखें, उसी स्थान–प्रश्नाक्षर का फल निम्नानुसार कहना देखना चाहिये।

अ कार प्रश्नाक्षर हो तो विजय, धन की प्राप्ति जानना सर्व कार्य की सिद्धि, पुत्र का लाभ सुख निश्चय करके हो ॥१॥

आ काराक्षर में रखे तो शोक–सन्ताप, सब प्राणियों से विरोध मानसिक चिन्तन, क्लेश कहना ॥२॥

इ कार में परम सुख, सर्व कार्यों की सिद्धि, सर्व दु:खों का नाश, धन–धान्य की वृद्धि कहना ॥३॥

ई कार में धन, पुत्र का लाभ, सर्व कार्यों की सिद्धि सौभाग्य अनुकूलता हो ॥४॥

उ काराक्षर में शोक त्रिविध ताप तथा चित्त में निश्चय करके वियोग हो और मानसिक दु:ख हो, नि:सन्देह विपत्ति हो ॥५॥

ऊ कार में स्थान का लाभ हो, अच्छी प्रतिष्ठा सर्व कार्यों की सिद्धि और जो–जो चित्त में चिन्तन विचार करें सो होवें ॥६॥

ऋ कार में अत्यन्त प्रीति, स्वर्ण का नित्य ही लाभ, सर्व कार्य सिद्ध हो, लाभ नि:सन्देह हो ॥७॥

ॠ कार में व्याधि की उत्पत्ति, दु:ख, सन्ताप हो और मित्रों के साथ विरोध नि:सन्देह उत्पन्न हो ॥८॥

लृ कार में सब कार्य की सिद्धि, मित्रों के समागम, शरीर में आरोग्य तथा राजकृत सम्मान हो ॥९॥

लॄ कार में सर्वविषयक हानि, रोग की उत्पत्ति, सम्पत्ति का हरण, कार्य की हानि नि:सन्देह हो ॥१०॥

ए कार में कार्य की सिद्धि, मित्रों के साथ समागम हो, स्थान का लाभ, शरीर में सुख और कल्याण हो ॥११॥

ऐ कार में बन्धन, मित्रों के साथ विरोध, औरों से भी विग्रह, नि:सन्देह मृत्यु व मृत्यु–समान कष्ट हो ॥१२॥

ओ कार में सिद्धि का दर्शन, दु:ख, शोक का विनाश, सर्वकार्य सिद्ध हो और भय न हो, इसमें संशय नहीं ॥१३॥

औ काराक्षर में सर्वकार्य की सिद्धि न हो, मित्रों के साथ विरोध और शोक संताप हो ॥१४॥

अं कार हो तो मानहानि, बन्धन, महादु:ख, क्लेश, भय, नि:सन्देह हो ॥१५॥

अ: अक्षर हो तो कार्य की सिद्धि, प्रतिष्ठा, पुत्र का लाभ, महासुख नि:सन्देह प्राप्त हो ॥१६॥

क कार में राजकृत सम्मान, अर्थ की सिद्धि, प्रिय का समागम और कल्याण निश्चय करके हो ॥१७॥

ख काराक्षर में शोक–सन्ताप, द्रव्य का नाश और शरीर में मानसिक ताप जनित व्याधि नि:सन्देह हो ॥१८॥

ग काराक्षर में जो कार्य विचारे उसकी सिद्धि हो, सौभाग्य की प्राप्ति एवं मित्रों के साथ समागम होगा ॥१९॥

घ काराक्षर में सर्वकार्य की सिद्धि, प्रिय–समागम का लाभ, भली–भाँति सौभाग्य और कल्याण हो ॥२०॥

ङ कार में कार्य का नाश, सिद्धि की निष्फलता; अर्थ का नाश, विपत्ति, सर्वकर्म निष्फल हों ॥२१॥

च काराक्षर में सर्वकार्य के विषय में विजय हो, राजकृत सन्मान, तथा द्रव्य का लाभ नि:सन्देह प्राप्त हो ॥२२॥

छ काराक्षर हो तो सर्वकार्य हो, अनेक तरह के सुख मिलें, शरीर में आरोग्यता रहे कुशल, आनन्द और सौभाग्य का अतुल लाभ हो ॥२३॥

ज काराक्षर हो तो द्रव्य की हानि, कार्य का विनाश हो, मित्रों के साथ विरोध और झगड़ा हो ॥२४॥

झ कार में द्रव्य का और अनेक विषय का लाभ, सौभाग्य की सफलता हो ॥२५॥

ञ कार में चित्त में शोक–सन्ताप हो, बन्धन, मित्रों के साथ विरोध और मृत्यु हो ॥२६॥

ट कार में लाभ हो, विजय हो, कार्य सफल हो और निश्चय करके सर्व अर्थ का साधन हो ॥२७॥

ठ काराक्षर में सर्वसिद्धि, धन की और धान्य की सिद्धि, शरीर रोग रहित और सि:सन्देह कार्य सफल हो ॥२८॥

ड काराक्षर में वृद्धि को प्राप्त हो। जो सिद्धि है वह मिले और कुशल पूर्वक शरीर में आरोग्यता नि:सन्देह सत्य करके प्राप्त हो ॥२९॥

ढ काराक्षर में बन्धन और रोग–शोक, चित्त में ताप हो और मन में जो–जो विचार हो सो सब व्यर्थ हों ॥३०॥

ण कार में सब विद्या, अतुल सौभाग्य हो, शरीर में आरोग्य, धन–धान्य सब हो ॥३१॥

त काराक्षर में अर्थ का लाभ धन सम्पदा सुख, सौभाग्य और दूसरे के द्वारा सब काम का अर्थसाधन हो ॥३२॥

थ काराक्षर में अर्थ की हानि, स्थान का विच्छेद, विशेषकरके भ्रम रोग की उत्पत्ति हो ॥३३॥

द काराक्षर में धन का लाभ, सुख शरीर में हो, निरोगता, अनेक प्रकार के भोग का सुख नित्य ही प्राप्त हो ॥३४॥

ध कार हो तो धन का लाभ, शरीर में सुख, आरोग्यता हो, मनुष्य को नि:संदेह अतुल भाग्य अर्थात् बड़े ऐश्वर्य की प्राप्ति हो ॥३५॥

न काराक्षर में अनेक भोग की प्राप्ति, सब वस्तु का लाभ, शरीर में आरोग्यता, कार्य की सफलता नि:सन्देह हो ॥३६॥

प काराक्षर में धन का नाश, रोग और बन्धन हो। चित्त में उद्वेग, नित्य ही कलह नि:सन्देह हो ॥३७॥

फ काराक्षर में धन की और सब सम्पत्ति की प्राप्ति और सब कार्य की सिद्धि, शरीर में निरोगता, सुख लाभ हो ॥३८॥

ब काराक्षर में बन्धन, धन का नाश और राजकाज में व्यय खर्च तथा शरीर व्याधि कहना ॥३९॥

भ काराक्षर में पहिले तो कार्य की हानि अनन्तर लाभ हो और पुत्र–सुखमनोकामना की सिद्धि होती है इसमें संशय नहीं ॥४०॥

म काराक्षर में निश्चय करके कष्ट, परम आपत्ति कहना, भोग की प्राप्ति न हो, सर्व कर्म निष्फल हों ॥४१॥

य काराक्षर में अर्थ की प्राप्ति, धन–धान्य की प्राप्ति हो, शोभा हो, सर्व–वस्तु का लाभ हो ॥४२॥

र काराक्षर में भययुक्त कार्य और स्वजनों के साथ विरोध, शारीरिक मानसिक चिन्ता विकार ॥४३॥

ल काराक्षर धन की सम्यक् प्राप्ति और वस्तुओं का लाभ, विपुल अर्थात् बड़े भोग का लाभ नि:सन्देह हो ॥४४॥

व काराक्षर में कार्य का नाश, धन की हानि हो, दु:ख–शोक, चित्त में खेद और महान भय प्राप्त हो ॥४५॥

श कार हो तो कार्य की सिद्धि, दिन–दिन सफल हो और अर्थ का लाभ, निश्चय ही सर्वकार्य हो ॥४६॥

स कार में सब कार्य निष्फल हों, अनेक चिन्ता मनुष्य को हो और मन में जो विचार करे वह सब नष्ट हो ॥४७॥

ह कार में सब काम और फलों को देने वाली महासिद्धि हो, सब कार्य सिद्ध हों, इसमें कुछ विचार नहीं करना ॥४८॥

क्ष काराक्षर में राजसम्मान, विद्या का लाभ स्थान का लाभ और कल्याण हो ॥४९॥

ष काराक्षर में धन–धान्य की ओर सर्व कार्य की सिद्धि हो, निश्चय करके सदा कल्याण और सर्वदा शुभ हो ॥५०॥

रेल्वेस्टैण्डर्डसमयानुसार भारतवर्षीय विविध सुप्रसिद्ध नगरों के सूर्योदयास्तसमय – पञ्चाङ्गे निर्णयसागरे

	तारीख	बम्बई–मुम्बई		कलकत्ता		चेन्नई–मद्रास		वाराणसी		जयपुर		नागपुर		शिमला		गोहाटी आसाम		धर्मशाला, कांगड़ा		जम्मू (कश्मीर)		देहली–राजधानी		पटना बिहार		भुवनेश्वर		तारीख
		उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	
जनवरी	१	७।१५	१८।०९	६।२०	१६।५९	६।३५	१७।५०	६।४७	१७।१५	७।१९	१७।४१	६।५४	१७।३९	७।२१	१७।२८	६।१४	१६।३९	७।२८	१७।२८	७।३३	१७।३४	७।१९	१७।३१	६।३९	१७।०५	६।२६	५।१५	१
	६	७।१७	१८।१२	६।२२	१७।०३	६।३७	१७।५३	६।४९	१७।१९	७।१९	१७।४४	६।५४	१७।४३	७।२२	१७।३२	६।१४	१६।४२	७।२८	१७।३२	७।३४	१७।३७	७।१९	१७।३५	६।४०	१७।०८	६।२७	५।१७	६
	११	७।१८	१८।१५	६।२२	१७।०६	६।३८	१७।५६	६।४९	१७।२२	७।१९	१७।४८	६।५४	१७।४६	७।२२	१७।३६	६।१४	१६।४६	७।२९	१७।३७	७।३४	१७।४१	७।१८	१७।३९	६।४१	१७।१२	६।२८	५।२१	११
	१६	७।१८	१८।१८	६।२२	१७।१०	६।३९	१७।५७	६।४९	१७।२६	७।१९	१७।५४	६।५३	१७।४९	७।२१	१७।४१	६।१४	१६।४९	७।२८	१७।४१	७।३३	१७।४६	७।१८	१७।४३	६।४१	१७।१६	६।२८	५।२४	१६
	२१	७।१८	१८।२२	६।२२	१७।१३	६।३९	१८।०१	६।४९	१७।३०	७।१९	१७।५७	६।५३	१७।५२	७।२०	१७।४५	६।१३	१६।५३	७।२६	१७।४५	७।३२	१७।५१	७।१८	१७।४६	६।४०	१७।२०	६।२८	५।२७	२१
	२६	७।१८	१८।२४	६।२१	१७।१६	६।३९	१८।०३	६।४७	१७।३३	७।१८	१८।०१	६।५३	१७।५५	७।१८	१७।४९	६।१३	१६।५७	७।२४	१७।४९	७।३०	१७।५६	७।१६	१७।५१	६।३९	१७।२४	६।२७	५।३१	२६
	३१	७।१७	१८।२८	६।२०	१७।२०	६।३९	१८।०६	६।४५	१७।३७	७।१६	१८।०५	६।५२	१७।५९	७।१६	१७।५४	६।१२	१७।०१	७।२२	१७।५४	७।२७	१८।००	७।१४	१७।५५	६।३७	१७।२८	६।२६	५।३४	३१
फरवरी	५	७।१५	१८।३०	६।१८	१७।२३	६।३८	१८।०८	६।४३	१७।४१	७।१३	१८।०९	६।५२	१८।०२	७।१४	१७।५८	६।०९	१७।०५	७।१९	१७।५९	७।२४	१८।०५	७।११	१७।५९	६।३५	१७।३१	६।२५	५।३९	५
	१०	७।१३	१८।३३	६।१५	१७।२६	६।३७	१८।१०	६।४०	१७।४४	७।१०	१८।१३	६।५१	१८।०५	७।११	१८।०२	६।०२	१७।०८	७।१५	१८।०४	७।२०	१८।१०	७।०८	१८।०३	६।३२	१७।३५	६।२२	५।४०	१०
	१५	७।११	१८।३५	६।१२	१७।२९	६।३५	१८।११	६।३७	१७।४८	७।०६	१८।१६	६।४८	१८।०८	७।०७	१८।०६	६।०३	१७।१२	७।११	१८।०८	७।१६	१८।१४	७।०४	१८।०७	६।२८	१७।३९	६।२०	५।४२	१५
	२०	७।०८	१८।३७	६।०९	१७।३२	६।३३	१८।१३	६।३३	१७।५१	७।०२	१८।१९	६।४५	१८।१०	७।०२	१८।१०	५।५९	१७।१५	७।०६	१८।१२	७।११	१८।१८	६।५९	१८।१०	६।२४	१७।४१	६।१६	५।४४	२०
	२५	७।०५	१८।३९	६।०५	१७।३४	६।३१	१८।१४	६।२९	१७।५४	६।५८	१८।२२	६।४१	१८।१३	६।५६	१८।१४	५।५५	१७।१८	७।००	१८।१६	७।०६	१८।२२	६।५४	१८।१४	६।२०	१७।४४	६।१३	५।४६	२५
मार्च	२	७।०१	१८।४१	६।०१	१७।३७	६।२८	१८।१४	६।२४	१७।५६	६।५४	१८।२५	६।३८	१८।१५	६।४९	१८।१८	५।५०	१७।२१	६।५३	१८।२०	७।००	१८।२६	६।४९	१८।१८	६।१५	१७।४८	६।०९	५।४९	२
	७	६।५८	१८।४३	५।५७	१७।३९	६।२५	१८।१५	६।२०	१७।५९	६।४९	१८।२८	६।३३	१८।१६	६।४३	१८।२१	५।४५	१७।२४	६।४७	१८।२४	६।५४	१८।२९	६।४४	१८।२१	६।११	१७।५०	६।०५	५।५०	७
	१२	६।५४	१८।४४	५।५२	१७।४१	६।२२	१८।१६	६।१५	१८।०१	६।४४	१८।३१	६।२९	१८।१८	६।३७	१८।२५	५।४०	१७।२६	६।४०	१८।२९	६।४८	१८।३१	६।३८	१८।२४	६।०५	१७।५३	६।०१	५।५२	१२
	१७	६।५०	१८।४५	५।४८	१७।४३	६।१९	१८।१६	६।१०	१८।०४	६।३८	१८।३३	६।२५	१८।२०	६।३०	१८।२८	५।३५	१७।२९	६।३४	१८।३३	६।४२	१८।३६	६।३३	१८।२७	६।००	१७।५५	५।५७	५।५३	१७
	२२	६।४५	१८।४७	५।४३	१७।४४	६।१६	१८।१७	६।०४	१८।०६	६।३२	१८।३६	६।२०	१८।२२	६।२४	१८।३१	५।२९	१७।३१	६।२८	१८।३६	६।३६	१८।३९	६।२६	१८।२९	५।५५	१७।५७	५।५३	५।५५	२२
	२७	६।४१	१८।४८	५।३८	१७।४६	६।१२	१८।१७	५।५९	१८।०८	६।२६	१८।३८	६।१५	१८।२३	६।१८	१८।३४	५।२४	१७।३४	६।२१	१८।३९	६।२९	१८।४२	६।२१	१८।३२	५।५०	१७।५९	५।४९	५।५६	२७
अप्रैल	१	६।३७	१८।४९	५।३३	१७।४८	६।०९	१८।१७	५।५४	१८।१०	६।२०	१८।४१	६।११	१८।२५	६।१२	१८।३८	५।१८	१७।३६	६।१५	१८।४२	६।२३	१८।४६	६।१५	१८।३४	५।४५	१८।०२	५।४४	५।५७	१
	६	६।३३	१८।५०	५।२९	१७।५०	६।०६	१८।१८	५।४९	१८।१३	६।१५	१८।४४	६।०६	१८।२६	६।०६	१८।४१	५।१३	१७।३८	६।०८	१८।४५	६।१७	१८।५०	६।१०	१८।३६	५।४०	१८।०४	५।४०	५।५९	६
	११	६।२९	१८।५१	५।२४	१७।५२	६।०२	१८।१८	५।४३	१८।१५	६।११	१८।४७	६।०२	१८।२८	६।०१	१८।४५	५।०८	१७।४१	६।०२	१८।४९	६।११	१८।५३	६।०३	१८।४०	५।३५	१८।०६	५।३६	६।००	११
	१६	६।२५	१८।५३	५।२०	१७।५३	५।५९	१८।१८	५।३९	१८।१७	६।०६	१८।४९	५।५८	१८।२९	५।५५	१८।४८	५।०३	१७।४३	५।५६	१८।५२	६।०५	१८।५६	५।५८	१८।४२	५।३०	१८।०९	५।३२	६।०१	१६
	२१	६।२१	१८।५४	५।१५	१७।५५	५।५७	१८।१९	५।३४	१८।१९	६।०१	१८।५१	५।५४	१८।३१	५।४९	१८।५१	४।५८	१७।४५	५।५०	१८।५६	५।५९	१८।५९	५।५३	१८।४६	५।२५	१८।१०	५।२८	६।०३	२१
	२६	६।१८	१८।५५	५।१२	१७।५७	५।५४	१८।२०	५।३०	१८।२२	५।५६	१८।५४	५।५०	१८।३३	५।४४	१८।५४	४।५४	१७।४८	५।४५	१८।५९	५।५३	१९।०३	५।४८	१८।४९	५।२२	१८।१४	५।२४	६।०४	२६
मई	१	६।१५	१८।५७	५।०८	१७।५९	५।५२	१८।२१	५।२६	१८।२४	५।५२	१८।५७	५।४७	१८।३५	५।३९	१८।५८	४।५०	१७।५०	५।४०	१९।०२	५।४८	१९।०६	५।४४	१८।५२	५।१७	१८।१६	५।२१	६।०६	१
	६	६।१२	१८।५९	५।०५	१८।०२	५।५०	१८।२२	५।२२	१८।२७	५।४८	१८।५९	५।४४	१८।३७	५।३५	१९।०१	४।४६	१७।५३	५।३६	१९।०६	५।४३	१९।०९	५।४०	१८।५५	५।१३	१८।१९	५।१८	६।०८	६
	११	६।१०	१९।००	५।०२	१८।०४	५।४८	१८।२३	५।१९	१८।२९	५।४५	१९।०२	५।४१	१८।३९	५।३१	१९।०४	४।४३	१७।५६	५।३२	१९।०९	५।३९	१९।१३	५।३७	१८।५८	५।१०	१८।२१	५।१६	६।१०	११
	१६	६।०८	१९।०२	५।००	१८।०६	५।४७	१८।२४	५।१६	१८।३२	५।४२	१९।०५	५।३९	१८।४१	५।२८	१९।०८	४।४०	१७।५९	५।२८	१९।१३	५।३६	१९।१६	५।३४	१९।०१	५।०७	१८।२४	५।१४	६।१२	१६
	२१	६।०६	१९।०४	४।५८	१८।०८	५।४६	१८।२५	५।१४	१८।३५	५।३९	१९।०८	५।३७	१८।४३	५।२५	१९।११	४।३८	१८।०१	५।२५	१९।१६	५।३३	१९।१९	५।३१	१९।०४	५।०५	१८।२७	५।१२	६।१४	२१
	२६	६।०५	१९।०६	४।५६	१८।११	५।४५	१८।२७	५।१२	१८।३७	५।३७	१९।११	५।३६	१८।४५	५।२२	१९।१४	४।३६	१८।०४	५।२२	१९।२०	५।३०	१९।२३	५।२९	१९।०६	५।०४	१८।२९	५।११	६।१५	२६
	३१	६।०४	१९।०८	४।५५	१८।१३	५।४५	१८।२८	५।११	१८।३९	५।३५	१९।१३	५।३५	१८।४७	५।२०	१९।१७	४।३५	१८।०६	५।२०	१९।२३	५।२८	१९।२६	५।२९	१९।०९	५।०२	१८।३१	५।१०	६।१८	३१
जून	५	६।०४	१९।१०	४।५५	१८।१५	५।४५	१८।३०	५।११	१८।४२	५।३५	१९।१५	५।३५	१८।४८	५।१९	१९।१९	४।३४	१८।०८	५।१९	१९।२५	५।२७	१९।२९	५।२८	१९।११	५।०२	१८।३४	५।१०	६।२०	५
	१०	६।०४	१९।११	४।५५	१८।१७	५।४५	१८।३१	५।११	१८।४४	५।३५	१९।१८	५।३५	१८।४९	५।१९	१९।२१	४।३४	१८।११	५।१८	१९।२७	५।२७	१९।३२	५।२७	१९।१४	५।०२	१८।३६	५।१०	६।२१	१०
	१५	६।०५	१९।१३	४।५५	१८।१८	५।४६	१८।३३	५।११	१८।४६	५।३५	१९।२०	५।३५	१८।५१	५।२०	१९।२२	४।३४	१८।१३	५।१९	१९।२९	५।२७	१९।३४	५।२७	१९।१५	५।०२	१८।३८	५।१०	६।२३	१५
	२०	६।०६	१९।१४	४।५६	१८।२०	५।४७	१८।३४	५।१२	१८।४७	५।३६	१९।२१	५।३६	१८।५३	५।२०	१९।२४	४।३५	१८।१४	५।२०	१९।३०	५।२८	१९।३५	५।२७	१९।१७	५।०३	१८।३९	५।११	६।२५	२०
	२५	६।०७	१९।१५	४।५७	१८।२१	५।४८	१८।३५	५।१३	१८।४८	५।३७	१९।२२	५।३७	१८।५५	५।२१	१९।२६	४।३६	१८।१५	५।२१	१९।३२	५।२९	१९।३६	५।२९	१९।१७	५।०४	१८।४०	५।१२	६।२६	२५
	३०	६।०८	१९।१६	४।५८	१८।२१	५।४९	१८।३६	५।१४	१८।४९	५।३८	१९।२२	५।३९	१८।५६	५।२२	१९।२७	४।३८	१८।१५	५।२२	१९।३४	५।३१	१९।३६	५।३१	१९।१८	५।०५	१८।४०	५।१४	६।२६	३०

रेल्वेस्टैण्डर्डसमयानुसार भारतवर्षीय विविध सुप्रसिद्ध नगरों के सूर्यादयास्तसमय - पञ्चाङ्गे निर्णयसागरे

तारीख	बम्बई-मुम्बई		कलकत्ता		चेन्नई-मद्रास		वाराणसी		जयपुर		नागपुर		शिमला		गोहाटी आसाम		धर्मशाला, कांगड़ा		जम्मू (कश्मीर)		देहली-राजधानी		पटना विहार		भुवनेश्वर		तारीख
	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	
जुलाई ५	६।१०	१९।१६	५।००	१८।२२	५।५१	१८।३६	५।१६	१८।४९	५।४०	१९।२२	५।४०	१८।५६	५।२४	१९।२६	४।३९	१८।१५	५।२४	१९।३५	५।३३	१९।३६	५।३३	१९।१७	५।०८	१८।४०	५।१६	६।२६	५ जुलाई
१०	६।११	१९।१६	५।०२	१८।२१	५।५२	१८।३६	५।१८	१८।४८	५।४२	१९।२१	५।४२	१८।५६	५।२६	१९।२५	४।४१	१८।१५	५।२७	१९।३४	५।३५	१९।३५	५।३५	१९।१७	५।१०	१८।४०	५।१७	६।२६	१०
१५	६।१३	१९।१६	५।०४	१८।२१	५।५३	१८।३६	५।२०	१८।४७	५।४५	१९।२०	५।४४	१८।५५	५।२९	१९।२३	४।४४	१८।१४	५।३०	१९।३२	५।३७	१९।३४	५।३८	१९।१६	५।१२	१८।३९	५।१९	६।२५	१५
२०	६।१५	१९।१५	५।०६	१८।१९	५।५५	१८।३६	५।२३	१८।४६	५।४८	१९।१८	५।४६	१८।५४	५।३१	१९।२१	४।४६	१८।१२	५।३३	१९।२९	५।४०	१९।३२	५।४०	१९।१५	५।१४	१८।३७	५।२१	६।२४	२०
२५	६।१७	१९।१४	५।०८	१८।१८	५।५६	१८।३५	५।२५	१८।४४	५।५०	१९।१६	५।४८	१८।५२	५।३४	१९।१९	४।४९	१८।१०	५।३६	१९।२६	५।४३	१९।२९	५।४२	१९।१३	५।१६	१८।३६	५।२३	६।२३	२५
३०	६।१८	१९।१२	५।१०	१८।१५	५।५७	१८।३४	५।२७	१८।४१	५।५३	१९।१३	५।५०	१८।५०	५।३८	१९।१६	४।५१	१८।०८	५।३९	१९।२३	५।४७	१९।२६	५।४६	१९।१०	५।१९	१८।३३	५।२५	६।२१	३०
अगस्त ४	६।२०	१९।१०	५।१२	१८।१३	५।५८	१८।३२	५।३०	१८।३८	५।५६	१९।१०	५।५२	१८।४८	५।४१	१९।१२	४।५३	१८।०५	५।४२	१९।१९	५।५०	१९।२२	५।४८	१९।०६	५।२१	१८।३०	५।२७	६।१९	४ अगस्त
९	६।२२	१९।०७	५।१४	१८।१०	५।५९	१८।३०	५।३२	१८।३५	५।५८	१९।०६	५।५३	१८।४५	५।४४	१९।०७	४।५६	१८।०१	५।४६	१९।१५	५।५३	१९।१७	५।५१	१९।०२	५।२३	१८।२६	५।२८	६।१६	९
१४	६।२३	१९।०४	५।१६	१८।०६	६।००	१८।२८	५।३४	१८।३१	६।०१	१९।०२	५।५५	१८।४२	५।४७	१९।०२	४।५८	१७।५७	५।४९	१९।१०	५।५६	१९।१२	५।५३	१८।५७	५।२६	१८।२३	५।३०	६।१३	१४
१९	६।२४	१९।०१	५।१८	१८।०२	६।००	१८।२५	५।३६	१८।२७	६।०३	१८।५७	५।५७	१८।३८	५।५०	१८।५७	५।०१	१७।५३	५।५२	१९।०४	६।००	१९।०६	५।५६	१८।५३	५।२८	१८।१८	५।३१	६।०९	१९
२४	६।२६	१८।५७	५।२०	१७।५८	६।०१	१८।२२	५।३९	१८।२२	६।०५	१८।५३	५।५८	१८।३४	५।५३	१८।५२	५।०३	१७।४८	५।५५	१८।५८	६।०३	१९।०१	५।५८	१८।४७	५।३०	१८।१३	५।३३	६।०५	२४
२९	६।२७	१८।५३	५।२१	१७।५४	६।०१	१८।१९	५।४१	१८।१७	६।०७	१८।४८	६।००	१८।३०	५।५६	१८।४६	५।०५	१७।४३	५।५९	१८।५१	६।०६	१८।५६	६।०१	१८।४२	५।३२	१८।०९	५।३४	६।०१	२९
सितम्बर ४	६।२७	१८।४९	५।२३	१७।४९	६।०१	१८।१५	५।४३	१८।१२	६।०९	१८।४२	६।०१	१८।२५	५।५८	१८।४०	५।०७	१७।३८	६।०२	१८।४५	६।०९	१८।५०	६।०४	१८।३८	५।३४	१८।०३	५।३५	५।५७	४ सितम्बर
८	६।२८	१८।४५	५।२४	१७।४४	६।०१	१८।१३	५।४४	१८।०७	६।१२	१८।३७	६।०२	१८।२१	६।०१	१८।३४	५।०९	१७।३३	६।०६	१८।३८	६।१२	१८।४३	६।०६	१८।३१	५।३६	१७।५८	५।३६	५।५३	८
१३	६।२९	१८।४१	५।२६	१७।४०	६।०१	१८।०९	५।४६	१८।०२	६।१४	१८।३१	६।०३	१८।१६	६।०४	१८।२८	५।११	१७।२७	६।०९	१८।३२	६।१५	१८।३७	६।०९	१८।२५	५।३८	१७।५२	५।३७	५।४८	१३
१८	६।३०	१८।३६	५।२७	१७।३४	६।०१	१८।०५	५।४८	१७।५६	६।१७	१८।२६	६।०५	१८।११	६।०७	१८।२१	५।१३	१७।२२	६।१२	१८।२५	६।१८	१८।३०	६।११	१८।१९	५।४०	१७।४७	५।३८	५।४४	१८
२३	६।३१	१८।३२	५।२९	१७।२९	६।०१	१८।०२	५।५०	१७।५१	६।१८	१८।२०	६।०६	१८।०७	६।१०	१८।१५	५।१५	१७।१६	६।१५	१८।१८	६।२१	१८।२४	६।१३	१८।१३	५।४१	१७।४२	५।३९	५।३९	२३
२८	६।३२	१८।२७	५।३०	१७।२५	६।०२	१७।५८	५।५२	१७।४६	६।२०	१८।१४	६।०७	१८।०२	६।१४	१८।०८	५।१७	१७।११	६।१८	१८।११	६।२४	१८।१७	६।१६	१८।०७	५।४३	१७।३७	५।४०	५।३५	२८
अक्टूबर ३	६।३३	१८।२३	५।३२	१७।२०	६।०२	१७।५५	५।५४	१७।४०	६।२३	१८।०९	६।०९	१७।५७	६।१७	१८।०१	५।२०	१७।०५	६।२२	१८।०५	६।२८	१८।११	६।१९	१८।०१	५।४६	१७।३१	५।४१	५।३०	३ अक्टूबर
८	६।३४	१८।१९	५।३४	१७।१५	६।०२	१७।५२	५।५६	१७।३५	६।२६	१८।०४	६।१०	१७।५३	६।२१	१७।५५	५।२२	१७।००	६।२५	१७।५८	६।३१	१८।०५	६।२२	१७।५६	५।४८	१७।२६	५।४३	५।२६	८
१३	६।३५	१८।१५	५।३५	१७।१०	६।०२	१७।४८	५।५९	१७।३०	६।२८	१७।५८	६।१२	१७।४८	६।२४	१७।५०	५।२४	१६।५५	६।२९	१७।५२	६।३४	१७।५९	६।२५	१७।५०	५।५०	१७।२१	५।४४	५।२२	१३
१८	६।३७	१८।११	५।३७	१७।०६	६।०३	१७।४६	६।०१	१७।२५	६।३१	१७।५३	६।१३	१७।४४	६।२८	१७।४४	५।२७	१६।५०	६।३२	१७।४६	६।३७	१७।५३	६।२८	१७।४५	५।५३	१७।१६	५।४६	५।१८	१८
२३	६।३९	१८।०८	५।४०	१७।०२	६।०४	१७।४३	६।०४	१७।२१	६।३४	१७।४९	६।१६	१७।४१	६।३१	१७।३९	५।३०	१६।४५	६।३६	१७।४१	६।४१	१७।४८	६।३१	१७।४०	५।५५	१७।११	५।४८	५।१४	२३
२८	६।४०	१८।०५	५।४२	१६।५९	६।०५	१७।४१	६।०७	१७।१७	६।३७	१७।४४	६।१८	१७।३७	६।३५	१७।३४	५।३३	१६।४१	६।४०	१७।३६	६।४५	१७।४३	६।३५	१७।३५	५।५९	१७।०७	५।५०	५।११	२८
नवम्बर २	६।४२	१८।०२	५।४५	१६।५६	६।०६	१७।३९	६।१०	१७।१४	६।४०	१७।४०	६।२०	१७।३४	६।३९	१७।३०	५।३६	१६।३८	६।४४	१७।३२	६।४९	१७।३८	६।३८	१७।३२	६।०२	१७।०३	५।५२	५।०८	२ नवम्बर
७	६।४५	१८।००	५।४८	१६।५३	६।०८	१७।३८	६।१३	१७।१०	६।४३	१७।३७	६।२३	१७।३२	६।४४	१७।२६	५।३९	१६।३४	६।४९	१७।२९	६।५३	१७।३४	६।४१	१७।२८	६।०५	१७।००	५।५५	५।०६	७
१२	६।४७	१७।५८	५।५१	१६।५१	६।१०	१७।३६	६।१६	१७।०८	६।४७	१७।३४	६।२६	१७।३०	६।४८	१७।२३	५।४३	१६।३२	६।५३	१७।२५	६।५८	१७।३०	६।४५	१७।२५	६।०८	१६।५८	५।५७	५।०४	१२
१७	६।५०	१७।५७	५।५४	१६।४९	६।१२	१७।३६	६।२०	१७।०६	६।५१	१७।३२	६।२९	१७।२९	६।५२	१७।२०	५।४६	१६।३०	६।५७	१७।२२	७।०३	१७।२७	६।४९	१७।२३	६।१२	१६।५६	६।००	५।०३	१७
२२	६।५३	१७।५७	५।५७	१६।४८	६।१४	१७।३६	६।२३	१७।०५	६।५५	१७।३१	६।३२	१७।२८	६।५६	१७।१८	५।५०	१६।२८	७।०२	१७।१९	७।०८	१७।२५	६।५४	१७।२१	६।१५	१६।५४	६।०३	५।०२	२२
२७	६।५६	१७।५७	६।०१	१६।४८	६।१७	१७।३६	६।२७	१७।०४	६।५९	१७।३१	६।३५	१७।२७	७।००	१७।१७	५।५४	१६।२८	७।०६	१७।१७	७।१२	१७।२४	६।५७	१७।२०	६।१९	१६।५४	६।०६	५।०२	२७
दिसम्बर २	६।५९	१७।५७	६।०४	१६।४८	६।१९	१७।३७	६।३१	१७।०४	७।०२	१७।३१	६।३८	१७।२८	७।०३	१७।१६	५।५७	१६।२७	७।१०	१७।१६	७।१६	१७।२४	७।०१	१७।२०	६।२३	१६।५३	६।१०	५।०२	२ दिसम्बर
७	७।०२	१७।५८	६।०७	१६।४८	६।२२	१७।३८	६।३४	१७।०४	७।०६	१७।३१	६।४१	१७।२८	७।०७	१७।१६	६।०१	१६।२८	७।१३	१७।१६	७।२०	१७।२४	७।०५	१७।२०	६।२७	१६।५४	६।१३	५।०३	७
१२	७।०५	१७।५९	६।१०	१६।५०	६।२५	१७।४०	६।३७	१७।०५	७।०९	१७।३२	६।४५	१७।३०	७।११	१७।१७	६।०४	१६।२९	७।१६	१७।१७	७।२३	१७।२५	७।०८	१७।२१	६।३०	१६।५५	६।१६	५।०५	१२
१७	७।०८	१८।०१	६।१३	१६।५१	६।२८	१७।४२	६।४१	१७।०७	७।१२	१७।३४	६।४८	१७।३२	७।१४	१७।१८	६।०७	१६।३१	७।१९	१७।१८	७।२६	१७।२६	७।११	१७।२३	६।३३	१६।५७	६।१९	५।०५	१७
२२	७।११	१८।०३	६।१६	१६।५४	६।३०	१७।४४	६।४३	१७।०९	७।१५	१७।३६	६।५०	१७।३४	७।१७	१७।२०	६।१०	१६।३२	७।२२	१७।२०	७।२९	१७।२८	७।१५	१७।२५	६।३५	१६।५९	६।२१	५।०९	२२
२७	७।१३	१८।०६	६।१८	१६।५६	६।३२	१७।४७	६।४५	१७।१२	७।१७	१७।३८	६।५२	१७।३६	७।१९	१७।२३	६।१२	१६।३५	७।२५	१७।२३	७।३१	१७।३१	७।१६	१७।२७	६।३८	१७।२	६।२४	५।१२	२७
३१	७।१४	१८।०८	६।२०	१६।५८	६।३४	१७।५०	६।४७	१७।१४	७।१९	१७।४०	६।५३	१७।३८	७।२१	१७।२७	६।१४	१६।३८	७।२७	१७।२७	७।३३	१७।३४	७।१८	१७।३०	६।४०	१७।४	६।२६	५।१५	३१

रेल्वेस्टैण्डर्डसमयानुसार भारतवर्षीय विविध सुप्रसिद्ध नगरों के सूर्यादयास्तसमय - पञ्चाङ्गे निर्णयसागरे

मास	तारीख	बंगलौर		हैदराबाद		अहमदाबाद		हिसार/भिवानी		चण्डीगढ		कानपुर		आगरा		अल्मोड़ा		बरेली		मैनपुरी		लखनऊ		जबलपुर		हरिद्वार		तारीख
		उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	
जनवरी	१	६।४२	१८।०१	६।५०	१७।५०	७।२४	१८।०२	७।२५	१७।३७	७।२५	१७।२७	७।०१	१७।२७	७।१२	१७।३२	७।१०	१७।२२	७।०८	१७।२२	७।०८	१७।२८	६।५८	१७।२१	६।५५	१७।३३	७।१८	५।२६	१
	६	६।४७	१८।०४	६।५१	१७।५३	७।२५	१८।०५	७।२५	१७।४०	७।२७	१७।३०	७।०२	१७।२७	७।१२	१७।३५	७।११	१७।२५	७।०९	१७।२५	७।०८	१७।३१	७।००	१७।२४	६।५६	१७।३६	७।१८	५।२९	६
	११	६।४८	१८।०७	६।५२	१७।५६	७।२६	१८।०९	७।२६	१७।४४	७।२७	१७।३३	७।०२	१७।३१	७।१३	१७।३९	७।११	१७।२९	७।०९	१७।२९	७।०९	१७।३५	७।०१	१७।२७	६।५७	१७।३९	७।१८	५।३३	११
	१६	६।५०	१८।०९	६।५३	१७।५९	७।२६	१८।१२	७।२७	१७।४८	७।२६	१७।३८	७।०२	१७।३५	७।१३	१७।४३	७।११	१७।३३	७।०९	१७।३३	७।०९	१७।३९	७।०१	१७।३१	६।५७	१७।४३	७।१८	५।३८	१६
	२१	६।५०	१८।१२	६।५३	१८।०१	७।२६	१८।१६	७।२६	१७।५२	७।२५	१७।४३	७।०१	१७।३८	७।१२	१७।४६	७।१०	१७।३९	७।०८	१७।३७	७।०८	१७।४२	७।००	१७।३४	६।५७	१७।४६	७।१६	५।४२	२१
	२६	६।५०	१८।१५	६।५२	१८।०४	७।२५	१८।१९	७।२४	१७।५७	७।२२	१७।४८	७।००	१७।४३	७।१०	१७।५०	७।०८	१७।४२	७।०६	१७।४२	७।०६	१७।४६	६।५९	१७।३९	६।५५	१७।५०	७।१४	५।४६	२६
	३१	६।५०	१८।१६	६।५१	१८।०७	७।२४	१८।२२	७।२१	१८।०१	७।१९	१७।५३	६।५७	१७।४७	७।०८	१७।५४	७।०६	१७।४६	७।०४	१७।४६	७।०४	१७।५०	६।५७	१७।४२	६।५४	१७।५३	७।१२	५।५०	३१
फरवरी	५	६।४९	१८।१९	६।५०	१८।१०	७।२२	१८।२६	७।१८	१८।०५	७।१६	१७।५८	६।५५	१७।५०	७।०६	१७।५९	७।०३	१७।४९	७।०१	१७।५०	७।०२	१७।५४	६।५३	१७।४६	६।५२	१७।५६	७।११	५।५३	५
	१०	६।४८	१८।२०	६।४९	१८।१२	७।१९	१८।२९	७।१४	१८।०९	७।१२	१८।०२	६।५२	१७।५४	७।०३	१८।०२	६।५९	१७।५४	६।५८	१७।५४	६।५९	१७।५८	६।५१	१७।४९	६।४९	१७।५९	७।०७	५।५७	१०
	१५	६।४६	१८।२२	६।४७	१८।१५	७।१६	१८।२२	७।१०	१८।१३	७।०७	१८।०६	६।४८	१७।५७	६।५९	१८।०५	६।५५	१७।५८	६।५४	१७।५८	६।५५	१८।०१	६।४७	१७।५३	६।४६	१८।०२	७।०३	६।०१	१५
	२०	६।४४	१८।२३	६।४४	१८।१७	७।१२	१८।३५	७।०५	१८।१७	७।०२	१८।१०	६।४५	१८।०१	६।५५	१८।०९	६।५१	१८।०१	६।५०	१८।०२	६।५१	१८।०५	६।४२	१५।५७	६।४३	१८।०५	६।५९	६।०५	२०
	२५	६।४२	१८।२४	६।४१	१८।१८	७।०८	१८।३७	७।०१	१८।२०	६।५८	१८।१४	६।४०	१८।०४	६।५०	१८।१२	६।४६	१८।०४	६।४५	१८।०५	६।४६	१८।०८	६।३८	१८।००	६।३९	१८।०७	६।५३	६।०९	२५
मार्च	२	६।३९	१८।२५	६।३७	१८।२०	७।०४	१८।४०	६।५५	१८।२३	६।५२	१८।१८	६।३५	१८।०७	६।४५	१८।१५	६।४१	१८।०८	६।४०	१८।०९	६।४१	१८।११	६।३३	१८।०३	६।३५	१८।१०	६।४८	६।१२	२
	७	६।३६	१८।२६	६।३४	१८।२१	७।००	१८।४२	६।५०	१८।२६	६।४७	१८।२१	६।३०	१८।१०	६।४०	१८।१८	६।३५	१८।११	६।३५	१८।१२	६।३६	१८।१४	६।२८	१८।०६	६।३०	१८।१२	६।४२	६।१६	७
	१२	६।३३	१८।२७	६।३०	१८।२२	६।५५	१८।४४	६।४४	१८।३०	६।४१	१८।२४	६।२५	१८।१२	६।३५	१८।२१	६।२९	१८।१४	६।२९	१८।१५	६।३१	१८।१९	६।२३	१८।०९	६।२६	१८।१५	६।३७	६।१९	१२
	१७	६।३०	१८।२७	६।२६	१८।२३	६।५०	१८।४६	६।३८	१८।३३	६।३५	१८।२८	६।२०	१८।१५	६।३०	१८।२४	६।२२	१८।१८	६।२४	१८।१९	६।२६	१८।२०	६।१८	१८।१२	६।२१	१८।१७	६।३१	६।२३	१७
	२२	६।२६	१८।२८	६।२३	१८।२४	६।४६	१८।४८	६।३३	१८।३५	६।२९	१८।३१	६।१५	१८।१७	६।२४	१८।२६	६।१७	१८।२०	६।१९	१८।२१	६।२०	१८।२२	६।१२	१८।१४	६।१६	१८।१८	६।२५	६।२५	२२
	२७	६।२३	१८।२८	६।१९	१८।२५	६।४१	१८।४९	६।२७	१८।३८	६।२३	१८।३४	६।०९	१८।१९	६।१८	१८।२९	६।१२	१८।२२	६।१३	१८।२३	६।१४	१८।२४	६।०७	१८।१७	६।१२	१८।२०	६।२०	६।२८	२७
अप्रैल	१	६।१९	१८।२९	६।१५	१८।२६	६।३६	१८।५१	६।२१	१८।४१	६।१७	१८।३७	६।०४	१८।२१	६।१४	१८।३१	६।०५	१८।२५	६।०७	१८।२६	६।१०	१८।२७	६।०२	१८।१९	६।०७	१८।२२	६।१३	६।३०	१
	६	६।१७	१८।२८	६।११	१८।२६	६।३२	१८।५३	६।१५	१८।४४	६।११	१८।४०	५।५९	१८।२४	६।०८	१८।३३	६।००	१८।२८	६।०१	१८।२९	६।०४	१८।२९	५।५६	१८।२१	६।०२	१८।२३	६।०७	६।३४	६
	११	६।१४	१८।२८	६।०७	१८।२८	६।२७	१८।५५	६।१०	१८।४६	६।०६	१८।४२	५।५४	१८।२६	६।०३	१८।३६	५।५४	१८।३१	५।५६	१८।३२	५।५९	१८।३२	५।५१	१८।२४	५।५७	१८।२५	६।००	६।३८	११
	१६	६।१०	१८।२९	६।०४	१८।३०	६।२२	१८।५७	६।०५	१८।४९	५।५९	१८।४६	५।४८	१८।२९	५।५८	१८।३८	५।४९	१८।३४	५।५१	१८।३५	५।५४	१८।३४	५।४६	१८।२६	५।५२	१८।२७	५।५५	६।४१	१६
	२१	६।०८	१८।३०	६।००	१८।३०	६।१८	१८।५८	६।००	१८।५२	५।५३	१८।४९	५।४४	१५।३०	५।५३	१८।४१	५।४४	१८।३६	५।४६	१८।३७	५।४९	१८।३७	५।४१	१८।२९	५।४९	१८।२९	५।५०	६।४४	२१
	२६	६।०५	१८।३०	५।५७	१८।३१	६।१६	१९।००	५।५४	१८।५५	५।४८	१८।५२	५।३९	१८।३४	५।४८	१८।४४	५।३८	१८।४०	५।४१	१८।४१	५।४४	१८।४०	५।३६	१८।३२	५।४७	१८।३१	५।४५	६।४७	२६
मई	१	६।०३	१८।३१	५।५४	१८।३२	६।११	१९।०३	५।५१	१८।५८	५।४४	१८।५६	५।३५	१८।३६	५।४५	१८।४६	५।३४	१८।४२	५।३७	१८।४३	५।४१	१८।४२	५।३१	१८।३५	५।४१	१८।३३	५।४०	६।५०	१
	६	६।०१	१८।३२	५।५२	१८।३३	६।०७	१९।०५	५।४६	१९।०१	५।३९	१८।५९	५।३२	१८।३९	५।४१	१८।४९	५।३०	१८।४५	५।३३	१८।४७	५।३७	१८।४५	५।२८	१८।३८	५।३८	१८।३६	५।३६	६।५४	६
	११	५।५९	१८।३३	५।५०	१८।३५	६।०५	१९।०७	५।४३	१९।०४	५।३५	१९।०३	५।२९	१८।४१	५।३८	१८।५२	५।२६	१८।४८	५।३०	१८।४९	५।३४	१८।४८	५।२४	१८।४०	५।३५	१८।३८	५।३२	६।५६	११
	१६	५।५८	१८।३४	५।४८	१८।३६	६।०३	१९।०९	५।४०	१९।०७	५।३१	१९।०७	५।२५	१८।४४	५।३४	१८।५५	५।२३	१८।५०	५।२७	१८।५२	५।३०	१८।५१	५।२२	१८।४३	५।३३	१८।४०	५।२९	६।५८	१६
	२१	५।५७	१८।३५	५।४६	१८।३८	६।०१	१९।१२	५।३७	१९।१०	५।२८	१९।१०	५।२३	१८।४७	५।३१	१८।५७	५।२०	१८।५४	५।२४	१८।५६	५।२७	१८।५३	५।१९	१८।४५	५।३१	१८।४२	५।२७	७।०१	२१
	२६	५।५६	१८।३७	५।४५	१८।४०	५।५९	१९।१४	५।३५	१९।१३	५।२५	१९।१३	५।२१	१८।४९	५।३०	१९।००	५।१८	१८।५६	५।२२	१८।५८	५।२६	१८।५६	५।१८	१८।४८	५।३०	१८।४४	५।२६	७।०४	२६
	३१	५।५६	१८।३८	५।४५	१८।४२	५।५८	१९।१६	५।३३	१९।१६	५।२३	१९।१६	५।२०	१८।५२	५।२८	१९।०२	५।१६	१८।५९	५।२१	१९।०१	५।२४	१८।५८	५।१६	१८।५०	५।२९	१८।४७	५।२४	७।०६	३१
जून	५	५।५६	१८।४०	५।४४	१८।४३	५।५८	१९।१८	५।३३	१९।१८	५।२३	१९।१९	५।१९	१८।५४	५।२८	१९।०५	५।१६	१९।०१	५।२०	१९।०३	५।२४	१९।०१	५।१६	१८।५२	५।२८	१८।४९	५।२३	७।०९	५
	१०	५।५६	१८।४१	५।४५	१८।४५	५।५७	१९।२०	५।३२	१९।२०	५।२२	१९।२१	५।१९	१८।५६	५।२७	१९।०७	५।१५	१९।०३	५।२०	१९।०६	५।२३	१९।०३	५।१६	१८।५४	५।२८	१८।५०	५।२२	७।१२	१०
	१५	५।५८	१८।४३	५।४५	१८।४६	५।५८	१९।२१	५।३३	१९।२२	५।२३	१९।२३	५।२०	१८।५८	५।२७	१९।०९	५।१४	१९।०५	५।२०	१९।०७	५।२३	१९।०५	५।१७	१८।५६	५।२८	१८।५२	५।२१	७।१५	१५
	२०	५।५८	१८।४४	५।४६	१८।४७	५।५९	१९।२३	५।३३	१९।२३	५।२३	१९।२५	५।२०	१८।५९	५।२७	१९।११	५।१६	१९।०७	५।२१	१९।०९	५।२३	१९।०७	५।१७	१८।५७	५।२९	१८।५४	५।२०	७।१८	२०
	२५	५।५९	१८।४५	५।४७	१८।४८	६।००	१९।२४	५।३४	१९।२४	५।२४	१९।२६	५।२२	१९।००	५।२८	१९।१२	५।१७	१९।०८	५।२२	१९।१०	५।२४	१९।०८	५।१८	१८।५८	५।३०	१८।५४	५।२१	७।१९	२५
	३०	६।००	१८।४६	५।४८	१८।४९	६।०१	१९।२४	५।३६	१९।२५	५।२६	१९।२५	५।२३	१९।०१	५।३१	१९।११	५।१९	१९।०८	५।२४	१९।१०	५।२७	१९।०७	५।२०	१८।५९	५।३२	१८।५५	५।२३	७।१८	३०

रेल्वेस्टैण्डर्डसमयानुसार भारतवर्षीय विविध सुप्रसिद्ध नगरों के सूर्योदयास्तसमय - पञ्चाङ्गे निर्णयसागरे

	तारीख	बंगलौर		हैदराबाद		अहमदाबाद		हिसार/भिवानी		चण्डीगढ		कानपुर		आगरा		अल्मोड़ा		बरेली		मैनपुरी		लखनऊ		जबलपुर		हरिद्वार		तारीख	
		उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.		
जुलाई	५	६।०२	१८।४६	५।५०	१८।४९	६।०३	१९।२४	५।३८	१९।२५	५।२८	१९।२६	५।२६	१९।००	५।३३	१९।११	५।२१	१९।०८	५।२५	१९।१०	५।२७	१९।०७	५।२१	१८।५९	५।३४	१८।५५	५।२७	७।१७	५	जुलाई
	१०	६।०३	१८।४६	५।५२	१८।५०	६।०५	१९।२४	५।४१	१९।२४	५।३०	१९।२६	५।२७	१९।०१	५।३५	१९।११	५।२४	१९।०७	५।२८	१९।०९	५।३१	१९।०७	५।२३	१८।५९	५।३६	१८।५५	५।३०	७।१६	१०	
	१५	६।०५	१८।४६	५।५४	१८।५०	६।०७	१९।२३	५।४३	१९।२२	५।३३	१९।२४	५।२९	१९।००	५।३८	१९।१०	५।२६	१९।०६	५।३०	१९।०८	५।३४	१९।०६	५।२६	१८।५८	५।३८	१८।५४	५।३२	७।१५	१५	
	२०	६।०६	१८।४६	५।५५	१८।४८	६।०९	१९।२२	५।४५	१९।२१	५।३६	१९।२२	५।३२	१८।५८	५।४०	१९।०८	५।२८	१९।०५	५।३२	१९।०७	५।३६	१९।०४	५।२८	१८।५६	५।४०	१८।५३	५।३५	७।१३	२०	
	२५	६।०७	१८।४५	५।५७	१८।४७	६।११	१९।२१	५।४८	१९।१९	५।३९	१९।१९	५।३४	१८।५६	५।४२	१९।०६	५।३१	१९।०२	५।३५	१९।०४	५।३८	१९।०२	५।३०	१८।५४	५।४२	१८।५१	५।३८	७।१०	२५	
	३०	६।०८	१८।४४	५।५९	१८।४६	६।१३	१९।१८	५।५१	१९।१६	५।४२	१९।१६	५।३६	१८।५४	५।४५	१९।०४	५।३४	१८।५९	५।३८	१९।०१	५।४१	१९।००	५।३३	१८।५२	५।४४	१८।४९	५।४१	७।०७	३०	
अगस्त	४	६।०९	१८।४२	६।००	१८।४४	६।१५	१९।१६	५।५४	१९।१२	५।४६	१९।१२	५।३९	१८।५०	५।४७	१९।०१	५।३७	१८।५६	५।४१	१८।५८	५।४३	१८।५७	५।३५	१८।४९	५।४६	१८।४७	५।४४	७।०४	४	अगस्त
	९	६।१०	१८।४०	६।०१	१८।४१	६।१७	१९।१३	५।५६	१९।०९	५।४९	१९।०७	५।४२	१८।४६	५।५०	१८।५७	५।४०	१८।५२	५।४३	१८।५४	५।४६	१८।५३	५।३८	१८।४६	५।४८	१८।४४	५।४७	७।०१	९	
	१४	६।११	१८।३८	६।०३	१८।३९	६।१९	१९।०९	५।५९	१९।०४	५।५२	१९।०२	५।४४	१८।४३	५।५२	१८।५३	५।४३	१८।४८	५।४६	१८।५०	५।४८	१८।४९	५।४०	१८।४१	५।५०	१८।४०	५।४९	६।५७	१४	
	१९	६।११	१८।३६	६।०४	१८।३६	६।२१	१९।०५	६।०२	१९।००	५।५६	१८।५७	५।४७	१८।३८	५।५५	१८।४९	५।४६	१८।४३	५।४९	१८।४५	५।५१	१८।४५	५।४३	१८।३७	५।५२	१८।३६	५।५२	६।५२	१९	
	२४	६।१२	१८।३३	६।०५	१८।३२	६।२३	१९।०१	६।०५	१८।५४	५।५९	१८।५१	५।४९	१८।३३	५।५६	१८।४४	५।४९	१८।३८	५।५२	१८।४०	५।५२	१८।४०	५।४५	१८।३१	५।५४	१८।३२	५।५५	६।४७	२४	
	२९	६।१२	१८।३०	६।०६	१८।२९	६।२५	१८।५७	६।०७	१८।४९	६।०१	१८।४६	५।५१	१८।२९	५।५९	१८।३९	५।५१	१८।३३	५।५३	१८।३४	५।५५	१८।३५	५।४८	१८।२६	५।५५	१८।२७	५।५७	६।४१	२९	
सितम्बर	४	६।१२	१८।२६	६।०६	१८।२५	६।२६	१८।५२	६।१०	१८।४५	६।०४	१८।४०	५।५३	१८।२३	६।०२	१८।३२	५।५४	१८।२७	५।५६	१८।२९	५।५८	१८।२८	५।५०	१८।२०	५।५७	१८।२३	६।००	६।३४	४	सितम्बर
	८	६।१२	१८।२३	६।०७	१८।२१	६।२८	१८।४७	६।१२	१८।३७	६।०७	१८।३४	५।५५	१८।१६	६।०५	१८।२७	५।५६	१८।२१	५।५८	१८।२३	६।०१	१८।२३	५।५२	१८।१५	५।५८	१८।१८	६।०२	६।२७	८	
	१३	६।१२	१८।२०	६।०७	१८।१७	६।२९	१८।४२	६।१५	१८।३२	६।१०	१८।२८	५।५८	१८।१२	६।०६	१८।२२	५।५८	१८।१६	६।००	१८।१७	६।०२	१८।१८	५।५४	१८।१०	६।००	१८।१३	६।०५	६।२३	१३	
	१८	६।१२	१८।१६	६।०७	१८।१३	६।३१	१८।३७	६।१७	१८।२६	६।१२	१८।२१	५।५९	१८।०६	६।०९	१८।१७	६।०१	१८।१०	६।०३	१८।११	६।०५	१८।१३	५।५६	१८।०४	६।०१	१८।०८	६।०८	६।१८	१८	
	२३	६।१२	१८।१२	६।०८	१८।०९	६।३२	१८।३२	६।२०	१८।२०	६।१५	१८।१५	६।०१	१८।०१	६।११	१८।११	६।०४	१८।०४	६।०५	१८।०५	६।०७	१८।०७	५।५९	१७।५९	६।०३	१८।०३	६।११	६।११	२३	
	२८	६।१३	१८।०९	६।०९	१८।०५	६।३४	१८।२७	६।२२	१८।१३	६।१७	१८।०९	६।०३	१७।५६	६।१२	१८।०६	६।०७	१७।५८	६।०७	१७।५९	६।०८	१८।०२	६।००	१७।५३	६।०४	१७।५८	६।१३	६।०५	२८	
अक्टूबर	३	६।१३	१८।०५	६।१०	१८।०१	६।३५	१८।२२	६।२५	१८।०८	६।२०	१८।०३	६।०५	१७।५१	६।१४	१८।००	६।०९	१७।५२	६।०९	१७।५३	६।१०	१७।५६	६।०३	१७।४८	६।०६	१७।५३	६।१५	५।५९	३	अक्टूबर
	८	६।१३	१८।०२	६।११	१७।५६	६।३७	१८।१८	६।२७	१८।०२	६।२४	१७।५७	६।०७	१७।४५	६।१७	१७।५५	६।१२	१७।४६	६।१३	१७।४८	६।१३	१७।५१	६।०५	१७।४२	६।०७	१७।४८	६।१८	५।५४	८	
	१३	६।१३	१७।५९	६।१२	१७।५३	६।३९	१८।१३	६।३०	१७।५७	६।२७	१७।५१	६।१०	१७।४०	६।२०	१७।५०	६।१५	१७।४१	६।१५	१७।४२	६।१६	१७।४६	६।०८	१७।३७	६।०९	१७।४४	६।२०	५।४८	१३	
	१८	६।१४	१७।५६	६।१३	१८।४९	६।४१	१८।०९	६।३४	१७।५१	६।३०	१७।४५	६।१३	१७।३५	६।२२	१७।४४	६।१८	१७।३५	६।१८	१७।३६	६।१८	१७।४०	६।१०	१७।३२	६।१२	१७।३९	६।२५	५।४१	१८	
	२३	६।१५	१७।५३	६।१४	१७।४६	६।४३	१८।०५	६।३७	१७।४६	६।३४	१७।४०	६।१५	१७।३१	६।२६	१७।४०	६।२१	१७।३०	६।२१	१७।३२	६।२२	१७।३६	६।१४	१७।२८	६।१४	१७।३५	६।२९	५।३६	२३	
	२८	६।१६	१७।५१	६।१६	१७।४४	६।४६	१८।०१	६।४०	१७।४२	६।३७	१७।३५	६।१८	१७।२७	६।२९	१७।३५	६।२४	१७।२६	६।२४	१७।२७	६।२५	१७।३१	६।१७	१७।२३	६।१६	१७।३२	६।३२	५।३२	२८	
नवम्बर	२	६।१७	१७।५०	६।१८	१७।४१	६।४९	१७।५८	६।४४	१७।३७	६।४१	१७।३१	६।२२	१७।२३	६।३२	१७।३१	६।२८	१७।२१	६।२८	१७।२३	६।२८	१७।२७	६।२१	१७।१९	६।१९	१७।२८	६।३६	५।२८	२	नवम्बर
	७	६।१८	१७।४८	६।२०	१७।४०	६।५२	१७।५५	६।४८	१७।३४	६।४५	१७।२७	६।२५	१७।२०	६।३६	१७।२८	६।३२	१७।१८	६।३१	१७।१९	६।३२	१७।२४	६।२४	१७।१५	६।२२	१७।२५	६।४०	५।२४	७	
	१२	६।२१	१७।४७	६।२२	१७।३८	६।५५	१७।५३	६।५१	१७।३१	६।५०	१७।२४	६।२९	१७।१७	६।३९	१७।२५	६।३६	१७।१५	६।३५	१७।१६	६।३५	१७।२१	६।२८	१७।१२	६।२५	१७।२३	६।४३	५।२१	१२	
	१७	६।२३	१७।४७	६।२५	१७।३७	६।५८	१७।५१	६।५५	१७।२८	६।५४	१७।२१	६।३२	१७।१५	६।४३	१७।२३	६।४०	१७।१२	६।३९	१७।१४	६।३९	१७।१९	६।३१	१७।११	६।२८	१७।२२	६।४७	५।१९	१७	
	२२	६।२५	१७।४७	६।२८	१७।३६	७।०१	१७।५०	६।५९	१७।२७	७।००	१७।१८	६।३६	१७।१३	६।४७	१७।२२	६।४४	१७।१०	६।४३	१७।१२	६।४३	१७।१८	६।३५	१७।०९	६।३१	१७।२१	६।५१	५।१७	२२	
	२७	६।२८	१७।४७	६।३१	१७।३६	७।०४	१७।५०	७।०३	१७।२६	७।०४	१७।१६	६।४०	१७।१३	६।५१	१७।२१	६।४८	१७।०९	६।४७	१७।११	६।४७	१७।१७	६।३८	१७।०७	६।३५	१७।२०	६।५५	५।१५	२७	
दिसम्बर	२	६।३०	१७।४८	६।३४	१७।३६	७।०८	१७।५०	७।०७	१७।२५	७।०८	१७।१५	६।४४	१७।१२	६।५३	१७।१९	६।५२	१७।०८	६।५१	१७।११	६।४९	१७।१५	६।४२	१७।०८	६।३९	१७।२०	६।५८	५।१४	२	दिसम्बर
	७	६।३३	१७।४९	६।३७	१७।३८	७।११	१७।५१	७।११	१७।२६	७।०२	१७।१६	६।४८	१७।१२	६।५७	१७।२१	६।५६	१७।०८	६।५५	१७।१०	६।५३	१७।१७	६।४५	१७।०९	६।४२	१७।२१	७।०३	५।१५	७	
	१२	६।३६	१७।५१	६।४०	१७।३९	७।१४	१७।५२	७।१५	१७।२७	७।१६	१७।१७	६।५१	१७।१३	७।०१	१७।२२	६।५९	१७।१०	६।५८	१७।१२	६।५७	१७।१८	६।४९	१७।११	६।४५	१७।२३	७।०८	५।१६	१२	
	१७	६।३८	१७।५३	६।४३	१७।४१	७।१७	१७।५४	७।१८	१७।२८	७।१९	१७।१९	६।५४	१७।१५	७।०५	१७।२३	७।०३	१७।११	७।०१	१७।१४	७।०१	१७।१९	६।५२	१७।१२	६।४८	१७।२४	७।११	५।१७	१७	
	२२	६।४१	१७।५५	६।४५	१७।४४	७।२०	१७।५६	७।२१	१७।३१	७।२१	१७।२०	६।५७	१७।१७	७।०८	१७।२४	७।०६	१७।१३	७।०४	१७।१६	७।०४	१७।२०	६।५४	१७।१३	६।५०	१७।२७	७।१५	५।१९	२२	
	२७	६।४३	१७।५८	६।४८	१७।४६	७।२२	१७।५९	७।२३	१७।३३	७।२३	१७।२३	६।५९	१७।२०	७।१०	१७।२७	७।०८	१७।१६	७।०६	१७।१८	७।०६	१७।२३	६।५७	१७।१४	६।५३	१७।२९	७।१७	५।२१	२७	
	३१	६।४५	१७।००	६।५०	१७।५०	७।२४	१८।०२	७।२५	१७।३७	७।२५	१७।२७	७।०१	१७।२७	७।१२	१७।३२	७।१०	१७।२२	७।०८	१७।२२	७।०७	१७।२५	६।५७	१७।१८	६।५५	१७।३३	७।१७	५।२५	३१	

रेल्वेस्टैण्डर्डसमयानुसार भारतवर्षीय विविध सुप्रसिद्ध नगरों के सूर्योदयास्तसमय - पञ्चाङ्गे निर्णयसागरे

मास	तारीख	नीमच		इन्दौर		भोपाल		ग्वालियर/मुरैना		कोटा		अजमेर		बीकानेर		बाड़मेर/जैसलमेर		बांसवाड़ा/दोहद		उदयपुर/डूंगरपुर		मथुरा/वृन्दावन		आकोला/अमरावती		अलवर		तारीख
		उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	
जनवरी	१	७।१६	५।४७	७।०९	५।४६	७।०४	५।३९	७।०७	५।३०	७।१३	५।४१	७।२१	५।४३	७।३०	५।४५	७।३५	५।५८	७।१६	५।५१	७।२१	५।५१	७।१७	५।२९	६।५७	५।४२	७।१६	५।३३	१
	६	७।१७	५।५०	७।१०	५।५०	७।०५	५।४२	७।०८	५।३४	७।१५	५।४४	७।२३	५।४६	७।३१	५।४९	७।३४	६।०२	७।१७	५।५४	७।२२	५।५५	७।१७	५।३३	६।५९	५।४५	७।१७	५।३७	६
	११	७।१८	५।५४	७।११	५।५३	७।०६	५।४६	७।०९	५।३७	७।१५	५।४८	७।२३	५।५१	७।३२	५।५३	७।३५	६।०५	७।१८	५।५८	७।२३	५।५८	७।१६	५।३७	७।००	५।४९	७।१७	५।४१	११
	१६	७।१८	५।५७	७।११	५।५७	७।०६	५।५०	७।०९	५।४१	७।१५	५।५२	७।२३	५।५४	७।३१	५।५७	७।३५	६।०९	७।१८	६।०१	७।२३	६।०२	७।१६	५।४१	७।००	५।५२	७।१७	५।४५	१६
	२१	७।१८	६।०१	७।११	६।००	७।०५	५।५३	७।०८	५।४५	७।१५	५।५६	७।२२	५।५८	७।३०	६।०१	७।३४	६।१३	७।१८	६।०५	७।२१	६।०६	७।१६	५।४४	७।००	५।५५	७।१७	५।४९	२१
	२६	७।१६	६।०५	७।१०	६।०४	७।०४	५।५७	७।०७	५।४९	७।१४	५।५९	७।२१	६।०२	७।२९	६।०५	७।३३	६।१७	७।१६	६।०९	७।२०	६।०९	७।१४	५।४९	६।५९	५।५९	७।१५	५।५३	२६
	३१	७।१५	६।०८	७।०८	६।०७	७।०३	६।००	७।०५	५।५३	७।१२	६।०३	७।१९	६।०६	७।२७	६।०९	७।३१	६।२१	७।१५	६।१२	७।१९	६।१३	७।१२	५।५३	६।५८	६।०२	७।१३	५।५७	३१
फरवरी	५	७।१२	६।१२	७।०६	६।१०	७।०१	६।०४	७।०२	५।५७	७।०९	६।०७	७।१६	६।१०	७।२४	६।१३	७।२८	६।२४	७।१३	६।१५	७।१७	६।१६	७।०९	५।५७	६।५६	६।०५	७।१०	६।०१	५
	१०	७।१०	६।१५	७।०४	६।१४	६।५८	६।०७	६।५९	६।००	७।०६	६।१०	७।१३	६।१४	७।२०	६।१६	७।२५	६।२८	७।१०	६।१९	७।१४	६।२०	७।०६	६।०१	६।५४	६।०८	७।०७	६।०५	१०
	१५	७।०६	६।१८	७।०१	६।१६	६।५५	६।१०	६।५६	६।०४	७।०३	६।१३	७।१०	६।१७	७।१७	६।२१	७।२२	६।३१	७।०७	६।२२	७।११	६।२३	७।०२	६।०५	६।५१	६।११	७।०३	६।०८	१५
	२०	७।०३	६।२१	६।५७	६।१९	६।५१	६।१३	६।५२	६।०७	६।५९	६।१७	७।०६	६।२०	७।१३	६।२४	७।१८	६।३४	७।०३	६।२४	७।०७	६।२६	६।५७	६।०८	६।४८	६।१३	६।५९	६।१२	२०
	२५	६।५९	६।२४	६।५३	६।२२	६।४७	६।१५	६।४७	६।१०	६।५५	६।२०	७।०१	६।२४	७।०८	६।२८	७।१४	६।३७	६।५९	६।२७	७।०३	६।२९	६।५२	६।१२	६।४४	६।१५	६।५५	६।१५	२५
मार्च	२	६।५३	६।२७	६।४८	६।२५	६।४३	६।१८	६।४२	६।१३	६।५०	६।२३	६।५६	६।२७	७।०२	६।३१	७।०९	६।४०	६।५५	६।३०	६।५९	६।३२	६।४७	६।१६	६।४०	६।१८	६।४९	६।१९	२
	७	६।४९	६।३०	६।४४	६।२७	६।३९	६।२०	६।३७	६।१६	६।४५	६।२५	६।५१	६।३०	६।५७	६।३४	७।०४	६।४३	६।५०	६।३२	६।५४	६।३४	६।४२	६।१९	६।३६	६।२०	६।४३	६।२२	७
	१२	६।४४	६।३२	६।४०	६।२९	६।३४	६।२२	६।३२	६।१९	६।४०	६।२८	६।४५	६।३३	६।५१	६।३७	६।५९	६।४५	६।४६	६।३४	६।४९	६।३६	६।३६	६।२२	६।३१	६।२१	६।३८	६।२५	१२
	१७	६।३९	६।३४	६।३५	६।३१	६।२९	६।२४	६।२६	६।२१	६।३६	६।३०	६।४०	६।३५	६।४६	६।४०	६।५४	६।४८	६।४१	६।३६	६।४४	६।३९	६।३१	६।२५	६।२७	६।२३	६।३३	६।२७	१७
	२२	६।३४	६।३६	६।३०	६।३२	६।२४	६।२६	६।२१	६।२४	६।३०	६।३२	६।३५	६।३८	६।४०	६।४३	६।४९	६।५०	६।३६	६।३८	६।३९	६।४१	६।२४	६।२७	६।२२	६।२४	६।२७	६।३०	२२
	२७	६।२९	६।३८	६।२५	६।३४	६।२०	६।२८	६।१५	६।२६	६।२४	६।३४	६।२९	६।४०	६।३४	६।४६	६।४३	६।५२	६।३१	६।४०	६।३४	६।४३	६।१९	६।३०	६।१८	६।२६	६।२१	६।३३	२७
अप्रैल	१	६।२४	६।४१	६।२०	६।३६	६।१५	६।३०	६।१०	६।२८	६।१९	६।३७	६।२४	६।४२	६।२८	६।४८	६।३८	६।५५	६।२६	६।४२	६।२९	६।४५	६।१३	६।३२	६।१३	६।२८	६।१६	६।३५	१
	६	६।१९	६।४३	६।१६	६।३८	६।१०	६।३१	६।०५	६।३१	६।१४	६।३८	६।१९	६।४५	६।२३	६।५१	६।३३	६।५७	६।२१	६।४४	६।२४	६।४७	६।०८	६।३४	६।०९	६।२९	६।१०	६।३८	६
	११	६।१४	६।४५	६।११	६।४०	६।०५	६।३३	६।००	६।३३	६।०९	६।४१	६।१३	६।४७	६।१७	६।५४	६।२७	६।५९	६।१७	६।४६	६।१९	६।४९	६।०१	६।३८	६।०५	६।३१	६।०५	६।४०	११
	१६	६।०९	६।४७	६।०७	६।४१	६।०१	६।३५	५।५५	६।३५	६।०४	६।४३	६।०८	६।५०	६।१२	६।५६	६।२३	७।०२	६।१२	६।४८	६।१४	६।५१	५।५६	६।४०	६।०१	६।३२	६।००	६।४३	१६
	२१	६।०५	६।४९	६।०३	६।४३	५।५६	६।३७	५।५०	६।३८	६।००	६।४६	६।०४	६।५२	६।०७	६।५९	६।१८	७।०४	६।०८	६।५०	६।१०	६।५३	५।५१	६।४४	५।५७	६।३४	५।५५	६।४६	२१
	२६	६।०१	६।५१	५।५९	६।४५	५।५३	६।३९	५।४६	६।४०	५।५६	६।४८	५।५९	६।५५	६।०३	७।०२	६।१४	७।०६	६।०४	६।५२	६।०६	६।५६	५।४६	६।४७	५।५३	६।३६	५।५०	६।४८	२६
मई	१	५।५७	६।५४	५।५५	६।४७	५।४९	६।४२	५।४२	६।४३	५।५२	६।५०	५।५५	६।५७	५।५८	७।०५	६।१०	७।०९	६।००	६।५४	६।०२	६।५८	५।४२	६।५०	५।५०	६।३७	५।४६	६।५१	१
	६	५।५४	६।५६	५।५२	६।५०	५।४६	६।४४	५।३८	६।४६	५।४८	६।५३	५।५२	७।००	५।५५	७।०८	६।०६	७।११	५।५७	६।५६	५।५८	७।००	५।३८	६।५३	५।४८	६।३९	५।४२	६।५४	६
	११	५।५१	६।५८	५।५०	६।५२	५।४३	६।४६	५।३५	६।४८	५।४५	६।५५	५।४८	७।०३	५।५१	७।१०	६।०३	७।१४	५।५४	६।५९	५।५५	७।०३	५।३५	६।५६	५।४४	६।४१	५।३९	६।५७	११
	१६	५।४८	७।०१	५।४७	६।५४	५।४०	६।४८	५।३२	६।५१	५।४३	६।५८	५।४६	७।०५	५।४८	७।१३	६।००	७।१७	५।५२	७।०१	५।५३	७।०५	५।३२	६।५९	५।४२	६।४३	५।३६	७।००	१६
	२१	५।४६	७।०३	५।४५	६।५६	५।३८	६।५१	५।३०	६।५४	५।४१	७।००	५।४३	७।०८	५।४६	७।१६	५।५८	७।१९	५।५०	७।०३	५।५१	७।०८	५।२९	७।०२	५।४१	६।४६	५।३४	७।०२	२१
	२६	५।४५	७।०६	५।४४	६।५९	५।३७	६।५२	५।२८	६।५६	५।३९	७।०३	५।४२	७।११	५।४४	७।१९	५।५६	७।२२	५।४८	७।०६	५।४९	७।१०	५।२७	७।०४	५।३९	६।४८	५।३२	७।०५	२६
	३१	५।४४	७।०८	५।४३	७।०१	५।३६	६।५५	५।२७	६।५९	५।३८	७।०५	५।४१	७।१३	५।४३	७।२२	५।५५	७।२४	५।४७	७।०८	५।४८	७।१३	५।२७	७।०५	५।३९	६।५०	५।३१	७।०८	३१
जून	५	५।४३	७।१०	५।४३	७।०३	५।३५	६।५७	५।२७	७।०१	५।३७	७।०८	५।४०	७।१५	५।४२	७।२४	५।५५	७।२७	५।४७	७।१०	५।४७	७।१५	५।२६	७।०९	५।३८	६।५२	५।३०	७।१०	५
	१०	५।४३	७।१२	५।४३	७।०५	५।३५	६।५९	५।२६	७।०३	५।३७	७।१०	५।४०	७।१८	५।४२	७।२६	५।५४	७।२९	५।४७	७।१२	५।४७	७।१७	५।२५	७।१२	५।३८	६।५३	५।३०	७।१२	१०
	१५	५।४३	७।१४	५।४३	७।०६	५।३६	७।०१	५।२७	७।०५	५।३८	७।११	५।४०	७।१९	५।४२	७।२८	५।५५	७।३०	५।४७	७।१४	५।४८	७।१९	५।२५	७।१३	५।३९	६।५५	५।३०	७।१४	१५
	२०	५।४४	७।१५	५।४४	७।०८	५।३६	७।०२	५।२८	७।०६	५।३८	७।१३	५।४१	७।२१	५।४३	७।२९	५।५५	७।३२	५।४८	७।१५	५।४८	७।२०	५।२६	७।१५	५।४०	६।५६	५।३१	७।१५	२०
	२५	५।४५	७।१६	५।४५	७।०९	५।३८	७।०३	५।२९	७।०७	५।३९	७।१३	५।४२	७।२२	५।४४	७।३०	५।५७	७।३३	५।४९	७।१६	५।५०	७।२१	५।२७	७।१५	५।४१	६।५७	५।३२	७।१६	२५
	३०	५।४७	७।१७	५।४७	७।०९	५।३९	७।०४	५।३०	७।०८	५।४१	७।१४	५।४४	७।२२	५।४५	७।३१	५।५८	७।३३	५।५१	७।१७	५।५१	७।२२	५।२९	७।१६	५।४२	६।५८	५।३४	७।१७	३०

रेल्वेस्टैण्डर्डसमयानुसार भारतवर्षीय विविध सुप्रसिद्ध नगरों के सूर्योदयास्तसमय – पञ्चाङ्गे निर्णयसागरे

तारीख	नीमच		इन्दौर		भोपाल		ग्वालियर/मुरैना		कोटा		अजमेर		बीकानेर		बाड़मेर/जैसलमेर		बांसवाड़ा/दोहद		उदयपुर/डूंगरपुर		मथुरा/वृन्दावन		आकोला/अमरावती		अलवर		तारीख
	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	
जुलाई ५	५।४९	७।१७	५।४८	७।०९	५।४१	७।०४	५।३२	७।०८	५।४३	७।१४	५।४५	७।२२	५।४७	७।३१	६।००	७।३३	५।५२	७।१७	५।५३	७।२२	५।३१	७।१५	५।४४	६।५८	५।३५	७।१७	५
१०	५।५१	७।१६	५।५०	७।०९	५।४३	७।०४	५।३४	७।०७	५।४५	७।१३	५।४८	७।२१	५।५०	७।३०	६।०२	७।३३	५।५४	७।१६	५।५५	७।२१	५।३३	७।१५	५।४६	६।५८	५।३८	७।१६	१०
१५	५।५३	७।१५	५।५२	७।०८	५।४५	७।०३	५।३३	७।०६	५।४७	७।१३	५।५०	७।२०	५।५२	७।२९	६।०४	७।३२	५।५६	७।१६	५।५७	७।२०	५।३६	७।१४	५।४८	६।५७	५।४०	७।१५	१५
२०	५।५५	७।१४	५।५४	७।०७	५।४७	७।०२	५।३९	७।०४	५।५०	७।११	५।५२	७।१९	५।५५	७।२७	६।०६	७।३१	६।००	७।१४	५।५९	७।१९	५।३८	७।१३	५।५०	६।५६	५।४३	७।१३	२०
२५	५।५७	७।१२	५।५६	७।०५	५।४९	७।००	५।४१	७।०२	५।५२	७।०९	५।५५	७।१७	५।५७	७।२५	६।०९	७।२९	६।०१	७।१२	६।०१	७।१७	५।४०	७।११	५।५२	६।५५	५।४५	७।११	२५
३०	६।००	७।०९	५।५९	७।०३	५।५१	६।५७	५।४४	७।००	५।५४	७।०७	५।५७	७।१४	६।००	७।२२	६।११	७।२६	६।०३	७।१०	६।०४	७।१५	५।४४	७।०८	५।५४	६।५२	५।४८	७।०८	३०
अगस्त ४	६।०२	७।०७	६।०१	७।००	५।५३	६।५४	५।४६	६।५६	५।५७	७।०४	६।००	७।११	६।०३	७।१८	६।१४	७।२३	६।०५	७।०७	६।०६	७।१२	५।४६	७।०४	५।५५	६।५०	५।५१	७।०५	४
९	६।०४	७।०३	६।०३	६।५७	५।५६	६।५१	५।४९	६।५३	५।५९	७।००	६।०२	७।०७	६।०५	७।१५	६।१६	७।२०	६।०७	७।०४	६।०८	७।०८	५।४९	७।००	५।५७	६।४७	५।५३	७।०१	९
१४	६।०६	६।५९	६।०४	६।५३	५।५७	६।४८	५।५१	६।४९	६।०१	६।५६	६।०५	७।०३	६।०८	७।१०	६।१८	७।१६	६।०९	७।००	६।१०	७।०५	५।५१	६।५५	५।५९	६।४४	५।५६	६।५७	१४
१९	६।०८	६।५५	६।०६	६।५०	५।५९	६।४४	५।५३	६।४४	६।०३	६।५२	६।०७	६।५९	६।१०	७।०६	६।२१	७।११	६।११	६।५६	६।१२	७।०१	५।५४	६।५१	६।००	६।४०	५।५८	६।५२	१९
२४	६।१०	६।५१	६।०८	६।४५	६।०१	६।४०	५।५६	६।४०	६।०५	६।४७	६।०९	६।५४	६।१३	७।०१	६।२३	७।०७	६।०३	६।५२	६।१४	६।५६	५।५६	६।४५	६।०२	६।३६	६।०१	६।४७	२४
२९	६।१२	६।४६	६।१०	६।४१	६।०३	६।३५	५।५८	६।३५	६।०७	६।४३	६।११	६।४९	६।१५	६।५५	६।२५	७।०२	६।१५	६।४८	६।१६	६।५१	५।५९	६।४०	६।०३	६।३१	६।०३	६।४२	२९
सितम्बर ४	६।१४	६।४०	६।११	६।३५	६।०५	६।२९	६।००	६।२८	६।१०	६।३६	६।१४	६।४२	६।१८	६।४९	६।२७	६।५६	६।१७	६।४२	६।१९	६।४५	६।०२	६।३६	६।०५	६।२७	६।०६	६।३५	४
८	६।१६	६।३६	६।१३	६।३१	६।०६	६।२५	६।०२	६।२४	६।११	६।३२	६।१६	६।३८	६।२०	६।४४	६।२९	६।५२	६।१८	६।३८	६।२०	६।४१	६।०४	६।३०	६।०६	६।२३	६।०७	६।३१	८
१३	६।१७	६।३१	६।१४	६।२६	६।०८	६।२०	६।०४	६।१९	६।१३	६।२७	६।१८	६।३३	६।२२	६।३८	६।३१	६।४६	६।१९	६।३३	६।२२	६।३६	६।०७	६।२३	६।०७	६।१८	६।१०	६।२५	१३
१८	६।१९	६।२६	६।१५	६।२१	६।०९	६।१५	६।०६	६।१३	६।१५	६।२२	६।२०	६।२७	६।२५	६।३२	६।३३	६।४१	६।२१	६।२८	६।२३	६।३१	६।०९	६।१७	६।०८	६।१३	६।१२	६।१९	१८
२३	६।२१	६।२०	६।१७	६।१६	६।११	६।१०	६।०८	६।०७	६।१७	६।१६	६।२२	६।२१	६।२७	६।२६	६।३५	६।३५	६।२३	६।२२	६।२५	६।२५	६।११	६।११	६।०९	६।०९	६।१४	६।१४	२३
२८	६।२३	६।१५	६।१८	६।११	६।१२	६।०५	६।१०	६।०२	६।१९	६।११	६।२४	६।१६	६।३०	६।२१	६।३७	६।३०	६।२४	६।१७	६।२७	६।२०	६।१४	६।०५	६।१०	६।०४	६।१७	६।०८	२८
अक्टूबर ३	६।२५	६।१०	६।२०	६।०७	६।१४	६।००	६।१२	५।५६	६।२०	६।०५	६।२६	६।१०	६।३२	६।१५	६।३९	६।२४	६।२६	६।१२	६।२९	६।१५	६।१७	५।५९	६।१२	५।५९	६।१९	६।०२	३
८	६।२७	६।०५	६।२२	६।०२	६।१६	५।५५	६।१५	५।५१	६।२३	६।००	६।२९	६।०५	६।३५	६।०९	६।४१	६।१९	६।२८	६।०७	६।३०	६।१०	६।२०	५।५४	६।१३	५।५५	६।२२	५।५७	८
१३	६।२९	६।००	६।२४	५।५७	६।१८	५।५१	६।१७	५।४६	६।२५	५।५५	६।३१	६।००	६।३८	६।०४	६।४३	६।१४	६।३०	६।०३	६।३३	६।०५	६।२३	५।४८	६।१५	५।५१	६।२४	५।५१	१३
१८	६।३१	५।५६	६।२६	५।५३	६।२०	५।४६	६।२०	५।४१	६।२८	५।५१	६।३४	५।५५	६।४०	५।५९	६।४६	६।०९	६।३२	५।५८	६।३६	६।०१	६।२६	५।४३	६।१७	५।४७	६।२७	५।४६	१८
२३	६।३४	५।५१	६।२८	५।४९	६।२२	५।४२	६।२३	५।३७	६।३०	५।४६	६।३६	५।५०	६।४४	५।५४	६।४९	६।०५	६।३४	५।५४	६।३८	५।५६	६।२९	५।३८	६।१९	५।४३	६।३०	५।४२	२३
२८	६।३६	५।४८	६।३१	५।४६	६।२५	५।३९	६।२६	५।३३	६।३३	५।४३	६।४०	५।४६	६।४७	५।५०	६।५२	६।०१	६।३७	५।५१	६।४१	५।५२	६।३३	५।३३	६।२१	५।४०	६।३३	५।३७	२८
नवम्बर २	६।३९	५।४४	६।३३	५।४२	६।२८	५।३५	६।२९	५।२९	६।३६	५।३९	६।४३	५।४३	६।५०	५।४६	६।५५	५।५७	६।४०	५।४७	६।४४	५।४९	६।३६	५।३०	६।२३	५।३७	६।३७	५।३७	२
७	६।४३	५।४१	६।३६	५।४०	६।३१	५।३३	६।३२	५।२६	६।३९	५।३६	६।४७	५।३९	६।५४	५।४२	६।५८	५।५४	६।४३	५।४५	६।४७	५।४६	६।३९	५।२६	६।२६	५।३४	६।४०	५।३०	७
१२	६।४६	५।३९	६।३९	५।३८	६।३४	५।३१	६।३६	५।२३	६।४३	५।३४	६।५०	५।३७	६।५८	५।३९	७।०१	५।५१	६।४६	५।४२	६।५०	५।४३	६।४३	५।२३	६।२९	५।३७	६।४४	५।२७	१२
१७	६।४९	५।३७	६।४३	५।३६	६।३७	५।२९	६।३९	५।२१	६।४६	५।३२	६।५४	५।३५	७।०२	५।३७	७।०५	५।४९	६।४९	५।४१	६।५४	५।४२	६।४७	५।२१	६।३२	५।३१	६।४८	५।२५	१७
२२	६।५३	५।३६	६।४६	५।३५	६।४१	५।२८	६।४३	५।२०	६।५०	५।३०	६।५८	५।३३	७।०६	५।३६	७।०९	५।४८	६।५३	५।३९	६।५७	५।४०	६।५२	५।१९	६।३५	५।३०	६।५२	५।२४	२२
२७	६।५६	५।३५	६।४९	५।३५	६।४४	५।२७	६।४७	५।२०	६।५४	५।३०	७।०१	५।३२	७।१०	५।३५	७।१२	५।४७	६।५६	५।३९	७।०१	५।४०	६।५५	५।१८	६।३८	५।३०	६।५६	५।२३	२७
दिसम्बर २	७।००	५।३५	६।५३	५।३५	६।४८	५।२७	६।५१	५।१९	६।५७	५।३०	७।०५	५।३२	७।१३	५।३४	७।१६	५।४७	७।००	५।३९	७।०४	५।४०	६।५९	५।१८	६।४२	५।३०	७।००	५।२२	२
७	७।०३	५।३६	६।५६	५।३६	६।५१	५।२८	६।५४	५।२०	७।०१	५।३०	७।०९	५।३७	७।१७	५।३५	७।२०	५।४८	७।०३	५।४१	७।०८	५।४०	७।०३	५।१८	६।४५	५।३१	७।०३	५।२३	७
१२	७।०७	५।३७	६।५९	५।३७	६।५४	५।३०	६।५८	५।२१	७।०४	५।३२	७।१२	५।३४	७।२१	५।३६	७।२३	५।४८	७।०६	५।४१	७।११	५।४१	७।०६	५।१९	६।४८	५।३३	७।०७	५।२४	१२
१७	७।१०	५।३९	७।०२	५।३९	६।५७	५।३१	७।०१	५।२२	७।०७	५।३३	७।१५	५।३६	७।२४	५।३५	७।२६	५।५०	७।०९	५।४३	७।१४	५।४३	७।०९	५।२१	६।५१	५।३५	७।१०	५।२६	१७
२२	७।१२	५।४१	७।०५	५।४१	७।००	५।३४	७।०३	५।२५	७।१०	५।३६	७।१८	५।३८	७।२६	५।४०	७।२९	५।५२	७।१२	५।४५	७।१७	५।४५	७।१३	५।२३	६।५३	५।३७	७।१२	५।२८	२२
२७	७।१५	५।४४	७।०७	५।४४	७।०२	५।३६	७।०५	५।२८	७।१२	५।३८	७।२०	५।४१	७।२९	५।४३	७।३१	५।५५	७।१४	५।४८	७।१९	५।४८	७।१४	५।२५	६।५६	५।४०	७।१५	५।३१	२७
३१	७।१६	५।४७	७।०८	५।४६	७।०३	५।३९	७।०७	५।३०	७।१३	५।४१	७।२१	५।४३	७।३०	५।४५	७।३२	५।५७	७।१६	५।५०	७।२१	५।५०	७।१६	५।२८	६।५७	५।४२	७।१६	५।३३	३१

रेल्वेस्टैण्डर्डसमयानुसार भारतवर्षीय विविध सुप्रसिद्ध नगरों के सूर्योदयास्तसमय - पंचांगे निर्णयसागरे

मास	तारीख	नागौर उदय घं. मि.	नागौर अस्त घं. मि.	सीकर उदय घं. मि.	सीकर अस्त घं. मि.	श्रीगंगानगर उदय घं. मि.	श्रीगंगानगर अस्त घं. मि.	जालौर उदय घं. मि.	जालौर अस्त घं. मि.	सरदार शहर उदय घं. मि.	सरदार शहर अस्त घं. मि.	सवाई माधोपुर उदय घं. मि.	सवाई माधोपुर अस्त घं. मि.	सिरोही उदय घं. मि.	सिरोही अस्त घं. मि.
जनवरी	१	७।२९	१७।४८	७।२४	१७।४२	७।३४	१७।४२	७।२९	१७।५६	७।२८	१७।४२	७।१५	१७।४०	७।२७	१७।५६
	६	७।३०	१७।५२	७।२५	१७।४५	७।३५	१७।४५	७।३०	१८।०	७।२९	१७।४६	७।१६	१७।४३	७।२८	१८।०
	११	७।३०	१७।५६	७।२६	१७।४९	७।३५	१७।४९	७।३१	१८।३	७।३०	१७।५०	७।१७	१७।४७	७।२९	१८।४
	१६	७।३०	१८।०	७।२५	१७।५३	७।३५	१७।५३	७।३१	१८।७	७।२९	१७।५४	७।१७	१७।५१	७।२९	१८।७
	२१	७।२९	१८।३	७।२४	१७।५७	७।३४	१७।५८	७।३०	१८।११	७।२९	१७।५८	७।१६	१७।५५	७।२८	१८।११
	२६	७।२८	१८।८	७।२३	१८।१	७।३२	१८।२	७।२९	१८।१५	७।२७	१८।२	७।१५	१७।५९	७।२७	१८।१५
	३१	७।२५	१८।१२	७।२१	१८।५	७।३०	१८।६	७।२९	१८।१८	७।२५	१८।६	७।१३	१८।२	७।२५	१८।१८
फरवरी	५	७।२३	१८।१५	७।१८	१८।९	७।२७	१८।११	७।२५	१८।२२	७।२२	१८।१०	७।११	१८।६	७।२३	१८।२२
	१०	७।२०	१८।१९	७।१४	१८।१३	७।२३	१८।१५	७।२२	१८।२६	७।१९	१८।१४	७।८	१८।१०	७।२०	१८।२५
	१५	७।१६	१८।२३	७।११	१८।१६	७।१९	१८।१९	७।१९	१८।२९	७।१५	१८।१८	७।४	१८।१३	७।१७	१८।२९
	२०	७।१२	१८।२६	७।६	१८।२०	७।१५	१८।२३	७।१५	१८।३२	७।१०	१८।२१	७।०	१८।१६	७।१३	१८।३२
	२५	७।७	१८।२९	७।२	१८।२३	७।१०	१८।२६	७।११	१८।३५	७।६	१८।२५	६।५६	१८।१९	७।९	१८।३४
मार्च	२	७।२	१८।३२	६।५७	१८।२६	७।३	१८।३१	७।५	१८।३८	७।०	१८।२९	६।५०	१८।२३	७।४	१८।३७
	७	६।५७	१८।३५	६।५२	१८।२९	६।५८	१८।३४	७।०	१८।४१	६।५४	१८।३२	६।४६	१८।२५	६।५९	१८।४०
	१२	६।५२	१८।३८	६।४६	१८।३२	६।५२	१८।३७	६।५५	१८।४३	६।४९	१८।३५	६।४०	१८।२८	६।५४	१८।४२
	१७	६।४६	१८।४१	६।४१	१८।३५	६।४६	१८।४०	६।५०	१८।४६	६।४३	१८।३८	६।३५	१८।३०	६।४९	१८।४४
	२२	६।४१	१८।४३	६।३५	१८।३८	६।४०	१८।४३	६।४५	१८।४८	६।३७	१८।४०	६।३०	१८।३३	६।४४	१८।४७
	२७	६।३५	१८।४६	६।२९	१८।४०	६।३४	१८।४६	६।४०	१८।५०	६।३२	१८।४३	६।२५	१८।३५	६।३९	१८।४९
अप्रैल	१	६।३०	१८।४८	६।२४	१८।४३	६।२९	१८।४९	६।३५	१८।५२	६।२७	१८।४६	६।२०	१८।३७	६।३४	१८।५१
	६	६।२४	१८।५१	६।१८	१८।४५	६।२३	१८।५२	६।३०	१८।५४	६।२१	१८।४८	६।१५	१८।३९	६।२९	१८।५३
	११	६।१९	१८।५३	६।१३	१८।४८	६।१७	१८।५५	६।२५	१८।५६	६।१६	१८।५१	६।१०	१८।४१	६।२४	१८।५५
	१६	६।१४	१८।५६	६।८	१८।५१	६।१२	१८।५८	६।२१	१८।५८	६।१०	१८।५४	६।५	१८।४४	६।१९	१८।५७
	२१	६।९	१८।५८	६।३	१८।५३	६।७	१९।१	६।१६	१९।१	६।५	१८।५६	६।०	१८।४६	६।१५	१८।५९
	२६	६।५	१९।१	५।५८	१८।५६	६।२	१९।४	६।१२	१९।३	६।१	१८।५९	५।५६	१८।४९	६।११	१९।२
मई	१	६।०	१९।४	५।५४	१८।५९	५।५७	१९।७	६।८	१९।५	५।५६	१९।२	५।५२	१८।५१	६।७	१९।४
	६	५।५७	१९।७	५।५०	१९।१	५।५३	१९।१०	६।४	१९।८	५।५२	१९।५	५।४८	१८।५४	६।३	१९।७
	११	५।५३	१९।९	५।४७	१९।४	५।४९	१९।१३	६।१	१९।१०	५।४९	१९।८	५।४५	१८।५६	६।०	१९।९
	१६	५।५०	१९।१२	५।४४	१९।७	५।४६	१९।१६	५।५९	१९।१३	५।४६	१९।११	५।४२	१८।५९	५।५८	१९।१२
	२१	५।४८	१९।१५	५।४१	१९।१०	५।४३	१९।१९	५।५६	१९।१६	५।४३	१९।१४	५।४०	१९।२	५।५६	१९।१४
	२६	५।४६	१९।१८	५।४०	१९।१३	५।४१	१९।२२	५।५५	१९।१८	५।४१	१९।१७	५।३८	१९।४	५।५४	१९।१६
	३१	५।४५	१९।२०	५।३८	१९।१५	५।३९	१९।२५	५।५३	१९।२०	५।४०	१९।१९	५।३७	१९।६	५।५३	१९।१९
जून	५	५।४४	१९।२२	५।३७	१९।१८	५।३८	१९।२७	५।५३	१९।२३	५।३९	१९।२१	५।३६	१९।९	५।५२	१९।२१
	१०	५।४४	१९।२५	५।३७	१९।२०	५।३८	१९।३०	५।५३	१९।२५	५।३८	१९।२४	५।३६	१९।११	५।५२	१९।२३
	१५	५।४४	१९।२६	५।३७	१९।२२	५।३८	१९।३२	५।५३	१९।२६	५।३९	१९।२६	५।३६	१९।१३	५।५२	१९।२५
	२०	५।४५	१९।२८	५।३८	१९।२३	५।३९	१९।३३	५।५४	१९।२८	५।३९	१९।२७	५।३७	१९।१४	५।५३	१९।२६
	२५	५।४६	१९।२९	५।३९	१९।२४	५।४०	१९।३४	५।५५	१९।२९	५।४०	१९।२८	५।३८	१९।१५	५।५४	१९।२७
	३०	५।४८	१९।२९	५।४१	१९।२४	५।४२	१९।३५	५।५६	१९।२९	५।४२	१९।२९	५।४०	१९।१६	५।५६	१९।२८

मास	तारीख	भरतपुर उदय घं. मि.	भरतपुर अस्त घं. मि.	डीडवाना उदय घं. मि.	डीडवाना अस्त घं. मि.	करौली उदय घं. मि.	करौली अस्त घं. मि.	भीनमाल उदय घं. मि.	भीनमाल अस्त घं. मि.	बालोतरा उदय घं. मि.	बालोतरा अस्त घं. मि.	भीलवाड़ा उदय घं. मि.	भीलवाड़ा अस्त घं. मि.
जनवरी	१	७।१४	१७।३३	७।२६	१७।४४	७।१४	१७।३६	७।३०	१७।५८	७।३२	१७।५७	७।२१	१७।४८
	६	७।१५	१७।३६	७।२७	१७।४८	७।१५	१७।४०	७।३१	१८।२	७।३३	१८।१	७।२२	१७।५२
	११	७।१५	१७।४०	७।२७	१७।५२	७।१६	१७।४४	७।३२	१८।६	७।३३	१८।४	७।२३	१७।५५
	१६	७।१५	१७।४४	७।२७	१७।५६	७।१६	१७।४८	७।३२	१८।९	७।३३	१८।८	७।२३	१७।५९
	२१	७।१४	१७।४८	७।२६	१८।०	७।१५	१७।५२	७।३१	१८।१३	७।३३	१८।१२	७।२२	१८।३
	२६	७।१३	१७।५२	७।२५	१८।४	७।१३	१७।५५	७।३०	१८।१७	७।३१	१८।१६	७।२१	१८।७
	३१	७।११	१७।५६	७।३२	१८।८	७।११	१८।०	७।२८	१८।२१	७।२९	१८।२०	७।१९	१८।१०
फरवरी	५	७।८	१८।०	७।२०	१८।१२	७।९	१८।३	७।२५	१८।२४	७।२७	१८।२३	७।१७	१८।१४
	१०	७।५	१८।४	७।१७	१८।१६	७।५	१८।७	७।२२	१८।२७	७।२४	१८।२७	७।१४	१८।१७
	१५	७।१	१८।७	७।१३	१८।१९	७।२	१८।१०	७।१९	१८।३१	७।२०	१८।३०	७।१०	१८।२१
	२०	६।५७	१८।११	७।९	१८।२३	६।५८	१८।१४	७।१५	१८।३४	७।१६	१८।३३	७।७	१८।२४
	२५	६।५३	१८।१४	७।४	१८।२६	६।५३	१८।१७	७।११	१८।३४	७।१२	१८।३६	७।२	१८।२७
मार्च	२	६।४७	१८।१८	७।०	१८।२९	६।४९	१८।२०	७।६	१८।३९	७।७	१८।३९	६।५७	१८।३०
	७	६।४२	१८।२०	६।५४	१८।३२	६।४१	१८।२२	७।२	१८।४२	७।२	१८।४२	६।५२	१८।३३
	१२	६।३७	१८।२३	६।४९	१८।३५	६।३८	१८।२५	६।५७	१८।४४	६।५७	१८।४४	६।४७	१८।३५
	१७	६।३१	१८।२६	६।४३	१८।३७	६।३३	१८।२८	६।५२	१८।४७	६।५२	१८।४७	६।४२	१८।३७
	२२	६।२६	१८।२८	६।३७	१८।४०	६।२८	१८।३०	६।४६	१८।४९	६।४७	१८।४९	६।३७	१८।४०
	२७	६।२१	१८।३१	६।३२	१८।४३	६।२२	१८।३२	६।४१	१८।५१	६।४२	१८।५१	६।३२	१८।४२
अप्रैल	१	६।१६	१८।३३	६।२६	१८।४५	६।१७	१८।३५	६।३६	१८।५३	६।३६	१८।५४	६।२७	१८।४४
	६	६।१०	१८।३६	६।२१	१८।४८	६।११	१८।३७	६।३१	१८।५५	६।३१	१८।५६	६।२२	१८।४६
	११	६।५	१८।३८	६।१५	१८।५०	६।६	१८।४०	६।२६	१८।५७	६।२६	१८।५८	६।१७	१८।४८
	१६	५।५९	१८।४१	६।१०	१८।५३	६।१	१८।४२	६।२१	१९।०	६।२१	१९।१	६।१२	१८।५०
	२१	५।५५	१८।४३	६।५	१८।५५	५।५७	१८।४४	६।१७	१९।२	६।१६	१९।३	६।८	१८।५३
	२६	५।५०	१८।४६	६।१	१८।५८	५।५२	१८।४८	६।१३	१९।४	६।१२	१९।५	६।४	१८।५५
मई	१	५।४६	१८।४८	५।५७	१९।१	५।४८	१८।५०	६।९	१९।६	६।८	१९।८	६।०	१८।५७
	६	५।४२	१८।५१	५।५३	१९।४	५।४४	१८।५२	६।५	१९।९	६।५	१९।११	५।५६	१९।०
	११	५।३९	१८।५४	५।५०	१९।६	५।४१	१८।५५	६।२	१९।११	६।१	१९।१३	५।५३	१९।२
	१६	५।३६	१८।५७	५।४७	१९।९	५।३८	१८।५८	६।०	१९।१४	५।५९	१९।१५	५।५०	१९।५
	२१	५।३३	१९।०	५।४४	१९।१२	५।३६	१९।०	५।५८	१९।१६	५।५६	१९।१८	५।४८	१९।७
	२६	५।३१	१९।२	५।४२	१९।१५	५।३४	१९।३	५।५६	१९।१९	५।५५	१९।२१	५।४७	१९।१०
	३१	५।३०	१९।५	५।४१	१९।१७	५।३३	१९।६	५।५५	१९।२१	५।५४	१९।२३	५।४५	१९।१२
जून	५	५।२९	१९।७	५।४०	१९।२०	५।३२	१९।८	५।५४	१९।२३	५।५३	१९।२६	५।४५	१९।१४
	१०	५।२९	१९।९	५।४०	१९।२२	५।३२	१९।१०	५।५४	१९।२५	५।५३	१९।२८	५।४४	१९।१६
	१५	५।२९	१९।११	५।४०	१९।२३	५।३२	१९।१२	५।५४	१९।२७	५।५३	१९।२९	५।४५	१९।१८
	२०	५।३०	१९।१२	५।४१	१९।२५	५।३३	१९।१३	५।५५	१९।२८	५।५४	१९।३१	५।४६	१९।२०
	२५	५।३१	१९।१३	५।४२	१९।२६	५।३४	१९।१४	५।५६	१९।२९	५।५५	१९।३२	५।४७	१९।२१
	३०	५।३३	१९।१४	५।४४	१९।२६	५।३६	१९।१४	५।५८	१९।३०	५।५७	१९।३२	५।४८	१९।२१

रेल्वेस्टैण्डर्डसमयानुसार भारतवर्षीय विविध सुप्रसिद्ध नगरों के सूर्योदयास्तसमय – पंचांगे निर्णयसागरे

माह	तारीख	नागौर		सीकर		श्रीगंगानगर		जालौर		सरदार शहर		सवाई माधोपुर		सिरोही		भरतपुर		डीडवाना		करौली		भीनमाल		बालोतरा		भीलवाड़ा		तारीख
		उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	
जुलाई	५	५।५०	१९।२९	५।४३	१९।२४	५।४३	१९।३४	५।५८	१९।३०	५।४४	१९।२९	५।४२	१९।१६	५।५८	१९।२८	५।३५	१९।१४	५।४६	१९।२६	५।३८	१९।१५	६।०	१९।३०	५।५८	१९।३२	५।५०	१९।२१	५
	१०	५।५२	१९।२९	५।४५	१९।२४	५।४६	१९।३४	६।०	१९।२९	५।४६	१९।२८	५।४४	१९।१५	६।०	१९।२७	५।३७	१९।१४	५।४८	१९।२६	५।४०	१९।१४	६।२	१९।३०	६।१	१९।३२	५।५२	१९।२१	१०
	१५	५।५४	१९।२७	५।४७	१९।२३	५।४८	१९।३३	६।२	१९।२८	५।४९	१९।२७	५।४६	१९।१४	६।२	१९।२६	५।३९	१९।१३	५।५०	१९।२५	५।४२	१९।१३	६।४	१९।२९	६।३	१९।३१	५।५४	१९।२०	१५
	२०	५।५७	१९।२६	५।५०	१९।२१	५।५१	१९।३१	६।५	१९।२७	५।५१	१९।२५	५।४८	१९।१३	६।४	१९।२५	५।४१	१९।११	५।५३	१९।२३	५।४५	१९।१२	६।६	१९।२७	६।५	१९।२९	५।५६	१९।१९	२०
	२५	५।५९	१९।२४	५।५३	१९।१९	५।५४	१९।२८	६।७	१९।२५	५।५४	१९।२३	५।५१	१९।११	६।७	१९।२३	५।४४	१९।९	५।५५	१९।२१	५।४७	१९।९	६।९	१९।२५	६।८	१९।२७	५।५९	१९।१७	२५
	३०	६।२	१९।२१	५।५५	१९।१६	५।५७	१९।२५	६।१०	१९।२२	५।५७	१९।२०	५।५३	१९।८	६।९	१९।२०	५।४७	१९।६	५।५८	१९।१८	५।५०	१९।७	६।११	१९।२३	६।१०	१९।२५	६।१	१९।१४	३०
अगस्त	४	६।४	१९।१८	५।५८	१९।१३	६।०	१९।२२	६।१२	१९।१९	५।५९	१९।१७	५।५६	१९।५	६।११	१९।१८	५।४९	१९।३	६।१	१९।१५	५।५२	१९।४	६।१३	१९।२०	६।१२	१९।२२	६।४	१९।११	४
	९	६।७	१९।१४	६।१	१९।९	६।३	१९।१८	६।१४	१९।१६	६।२	१९।१३	५।५८	१९।२	६।१४	१९।१४	५।५२	१८।५९	६।३	१९।११	५।५५	१९।०	६।१६	१९।१७	६।१५	१९।१८	६।६	१९।८	९
	१४	६।९	१९।१०	६।३	१९।५	६।५	१९।१३	६।१६	१९।१२	६।५	१९।९	६।०	१८।५८	६।१६	१९।१०	५।५४	१८।५५	६।६	१९।७	५।५७	१८।५६	६।१८	१९।१३	६।१७	१९।१४	६।८	१९।४	१४
	१९	६।१२	१९।५	६।६	१९।०	६।८	१९।९	६।१८	१९।८	६।७	१९।४	६।३	१८।५४	६।१८	१९।६	५।५७	१८।५१	६।८	१९।२	६।००	१८।५१	६।२०	१९।९	६।१९	१९।१०	६।१०	१९।०	१९
	२४	६।१४	१९।१	६।८	१८।५५	६।११	१९।३	६।२०	१९।४	६।१०	१८।५९	६।५	१८।४९	६।२०	१९।२	५।५९	१८।४६	६।११	१८।५७	६।२	१८।४७	६।२२	१९।४	६।२२	१९।५	६।१२	१८।५५	२४
	२९	६।१७	१८।५५	६।११	१८।५०	६।१४	१८।५८	६।२२	१८।५९	६।१२	१८।५४	६।७	१८।४४	६।२२	१८।५७	६।१	१८।४१	६।१३	१८।५२	६।४	१८।४२	६।२४	१९।०	६।२४	१९।०	६।१४	१८।५१	२९
सितम्बर	४	६।१९	१८।४९	६।१३	१८।४४	६।१७	१८।५१	६।२५	१८।५३	६।१५	१८।४७	६।९	१८।३८	६।२४	१८।५१	६।४	१८।३४	६।१६	१८।४६	६।७	१८।३५	६।२६	१८।५३	६।२६	१८।५४	६।१७	१८।४५	४
	८	६।२१	१८।४५	६।१५	१८।३९	६।१९	१८।४६	६।२६	१८।४९	६।१७	१८।४३	६।११	१८।३४	६।२६	१८।४७	६।६	१८।३०	६।१८	१८।४१	६।८	१८।३१	६।२८	१८।४९	६।२८	१८।५०	६।१८	१८।४०	८
	१३	६।२३	१८।३९	६।१७	१८।३३	६।२२	१८।४०	६।२८	१८।४३	६।२०	१८।३७	६।१३	१८।२८	६।२७	१८।४२	६।८	१८।२४	६।२०	१८।३६	६।१०	१८।२५	६।३०	१८।४४	६।३०	१८।४४	६।२०	१८।३५	१३
	१८	६।२५	१८।३३	६।२०	१८।२७	६।२४	१८।३४	६।३०	१८।३८	६।२२	१८।३१	६।१५	१८।३२	६।२९	१८।३६	६।१०	१८।१९	६।२२	१८।३०	६।१२	१८।२०	६।३१	१८।३८	६।३२	१८।३९	६।२२	१८।३०	१८
	२३	६।२८	१८।२७	६।२२	१८।२२	६।२७	१८।२८	६।३२	१८।३२	६।२४	१८।२५	६।१७	१८।१७	६।३१	१८।३१	६।१२	१८।१३	६।२४	१८।२४	६।१४	१८।१४	६।३३	१८।३३	६।३४	१८।३३	६।२४	१८।२४	२३
	२८	६।३०	१८।२२	६।२४	१८।१६	६।३०	१८।२०	६।३४	१८।२६	६।२७	१८।१९	६।१९	१८।१२	६।३३	१८।२५	६।१५	१८।७	६।२७	१८।१८	६।१७	१८।९	६।३५	१८।२८	६।३६	१८।२८	६।२६	१८।१९	२८
अक्टूबर	३	६।३२	१८।१६	६।२७	१८।१०	६।३३	१८।१५	६।३६	१८।२२	६।२९	१८।१३	६।२१	१८।६	६।३५	१८।२०	६।१७	१८।२	६।२९	१८।१३	६।१९	१८।३	६।३७	१८।२२	६।३८	१८।२३	६।२८	१८।१४	३
	८	६।३५	१८।११	६।२९	१८।४	६।३५	१८।१०	६।३८	१८।१७	६।३२	१८।८	६।२३	१८।१	६।३७	१८।१५	६।१९	१७।५६	६।३२	१८।७	६।२१	१७।५८	६।३९	१८।१७	६।४०	१८।१७	६।३०	१८।८	८
	१३	६।३७	१८।५	६।३२	१८।०	६।३८	१८।४	६।४०	१८।१२	६।३५	१८।२	६।२६	१७।५६	६।३९	१८।१०	६।२२	१७।५१	६।३४	१८।२	६।२४	१७।५३	६।४२	१८।१२	६।४२	१८।१२	६।३२	१८।४	१३
	१८	६।४०	१८।०	६।३५	१७।५४	६।४२	१७।५८	६।४३	१८।७	६।३८	१७।५७	६।२८	१७।५१	६।४२	१८।६	६।२५	१७।४६	६।३७	१७।५७	६।२६	१७।४८	६।४४	१८।८	६।४५	१८।८	६।३५	१७।५९	१८
	२३	६।४३	१७।५६	६।३८	१७।५०	६।४५	१७।५३	६।४५	१८।३	६।४१	१७।५२	६।३१	१७।४७	~~६।४४~~	~~१८।१~~	६।२८	१७।४१	६।४०	१७।५२	६।२९	१७।४३	६।४७	१८।३	६।४८	१८।३	६।३७	१७।५४	२३
	२८	६।४६	१७।५१	६।४१	१७।४५	६।४९	१७।४९	६।४८	१७।५९	६।४४	१७।४८	६।३४	१७।४३	६।४७	१७।५८	६।३१	१७।३७	६।४३	१७।४८	६।३२	१७।३९	६।४९	१८।०	६।५१	१८।०	६।४०	१७।५०	२८
नवम्बर	२	६।५०	१७।४८	६।४५	१७।४१	६।५२	१७।४४	६।५१	१७।५५	६।४८	१७।४३	६।३७	१७।३९	६।५०	१७।५४	६।३४	१७।३३	६।४७	१७।४४	६।३६	१७।३५	६।५२	१७।५६	६।५४	१७।५५	६।४३	१७।४७	२
	७	६।५३	१७।४४	६।४८	१७।३८	६।५६	१७।४१	६।५४	१७।५२	६।५१	१७।४०	६।४०	१७।३६	६।५३	१७।५१	६।३८	१७।३०	६।५०	१७।४१	६।३९	१७।३२	६।५६	१७।५३	६।५७	१७।५२	६।४६	१७।४४	७
	१२	६।५७	१७।४१	६।५२	१७।३५	७।०	१७।३७	६।५८	१७।४९	६।५५	१७।३७	६।४४	१७।३३	६।५७	१७।४९	६।४१	१७।२७	६।५४	१७।३८	६।४२	१७।२९	६।५९	१७।५१	७।१	१७।५०	६।५०	१७।४१	१२
	१७	७।१	१७।३९	६।५६	१७।३३	७।४	१७।३५	७।१	१७।४७	६।५९	१७।३५	६।४७	१७।३१	७।०	१७।४७	६।४५	१७।२५	६।५८	१७।३६	६।४६	१७।२७	७।२	१७।४९	७।४	१७।४८	६।५३	१७।३९	१७
	२२	७।४	१७।३८	७।०	१७।३१	७।९	१७।३३	७।५	१७।४६	७।३	१७।३३	६।५१	१७।३०	७।४	१७।४५	६।४९	१७।२३	७।२	१७।३४	६।५०	१७।२६	७।६	१७।४७	७।८	१७।४६	६।५७	१७।३८	२२
	२७	७।८	१७।३७	७।३	१७।३०	७।१३	१७।३२	७।९	१७।४५	७।७	१७।३२	६।५५	१७।२९	७।७	१७।४५	६।५३	१७।२२	७।५	१७।३३	६।५४	१७।२५	७।१०	१७।४७	७।१२	१७।४५	७।१	१७।३७	२७
दिसम्बर	२	७।१२	१७।३७	७।७	१७।३०	७।१७	१७।३१	७।१२	१७।४५	७।११	१७।३१	६।५८	१७।२९	७।११	१७।४५	६।५७	१७।२२	७।९	१७।३३	६।५७	१७।२५	७।१३	१७।४७	७।१५	१७।४५	७।४	१७।३७	२
	७	७।१६	१७।३७	७।११	१७।३०	७।२१	१७।३१	७।१६	१७।४६	७।१५	१७।३२	७।२	१७।२९	७।१४	१७।४५	७।०	१७।२२	७।१३	१७।३३	७।१	१७।२५	७।१७	१७।४७	७।१९	१७।४६	७।८	१७।३८	७
	१२	७।१९	१७।३८	७।१४	१७।३२	७।२४	१७।३२	७।१९	१७।४७	७।१८	१७।३३	७।५	१७।३०	७।१८	१७।४६	७।४	१७।२३	७।१६	१७।३४	७।४	१७।२६	७।२०	१७।४८	७।२२	१७।४७	७।११	१७।३९	१२
	१७	७।२२	१७।४०	७।१८	१७।३३	७।२८	१७।३४	७।२२	१७।४९	७।२२	१७।३४	७।८	१७।३२	७।२१	१७।४८	७।७	१७।२५	७।१९	१७।३६	७।८	१७।२८	७।२३	१७।५०	७।२५	१७।४९	७।१४	१७।४०	१७
	२२	७।२५	१७।४२	७।२०	१७।३५	७।३०	१७।३६	७।२५	१७।५१	७।२४	१७।३६	७।११	१७।३४	७।२३	१७।५१	७।१०	१७।२७	७।२२	१७।३८	७।१०	१७।३०	७।२६	१७।५२	७।२८	१७।५१	७।१७	१७।४३	२२
	२७	७।२७	१७।४५	७।२२	१७।३८	७।३२	१७।३९	७।२७	१७।५३	७।२७	१७।३९	७।१३	१७।३७	७।२६	१७।५३	७।१२	१७।३०	७।२४	१७।४१	७।१२	१७।३३	७।२८	१७।५५	७।३०	१७।५४	७।१९	१७।४५	२७
	३१	७।२९	१७।४७	७।२४	१७।४१	७।३४	१७।४१	७।२९	१७।५६	७।२८	१७।४२	७।१५	१७।३९	७।२७	१७।५६	७।१३	१७।३२	७।२६	१७।४४	७।१४	१७।३६	७।२९	१७।५८	७।३२	१७।५६	७।२०	१७।४८	३१

रेल्वेस्टैण्डर्डसमयानुसार भारतवर्षीय विविध सुप्रसिद्ध नगरों के सूर्योदयास्तसमय - पंचांगे निर्णयसागरे

तारीख	उज्जैन		शिवपुरी		ब्यावरा		झाबुआ		होशंगाबाद		रायपुर		सागर		जगदलपुर		खण्डवा		सूरत-गुज.		औरंगाबाद		आदिलाबाद		सोलापुर		तारीख
	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	
जनवरी १	७।१२	१७।४९	७।१०	१७।३६	७।९	१७।४२	७।१६	१७।५४	७।४	१७।४१	६।४५	१७।२९	७।२	१७।३५	६।३९	१७।३१	७।७	१७।४९	७।२०	१८।४	७।७	१७।५७	६।५४	१७।४५	७।१	१७।५९	१ जनवरी
६	७।१३	१७।५२	७।११	१७।३९	७।१०	१७।४५	७।१७	१७।५७	७।५	१७।४५	६।४६	१७।३२	७।३	१७।३९	६।४०	१७।३५	७।९	१७।५२	७।२१	१८।७	७।९	१८।०	६।५६	१७।४८	७।३	१८।२	६
११	७।१४	१७।५५	७।११	१७।४३	७।११	१७।४९	७।१८	१८।१	७।६	१७।४८	६।४७	१७।३५	७।४	१७।४२	६।४१	१७।३८	७।१०	१७।५६	७।२२	१८।११	७।१०	१८।३	६।५७	१७।५१	७।४	१८।५	११
१६	७।१४	१७।५९	७।११	१७।४६	७।११	१७।५३	७।१८	१८।४	७।६	१७।५२	६।४७	१७।३९	७।४	१७।४६	६।४२	१७।४१	७।१०	१७।५९	७।२२	१८।१४	७।१०	१८।६	६।५७	१७।५४	७।५	१८।९	१६
२१	७।१४	१८।२	७।१०	१७।५०	७।११	१७।५६	७।१८	१८।८	७।५	१७।५५	६।४७	१७।४२	७।३	१७।५०	६।४२	१७।४४	७।१०	१८।३	७।२२	१८।१८	७।१०	१८।१०	६।५७	१७।५८	७।५	१८।१२	२१
२६	७।१३	१८।६	७।९	१७।५४	७।१०	१८।०	७।१७	१८।११	७।४	१७।५९	६।४६	१७।४६	७।२	१७।५३	६।४१	१७।४७	७।९	१८।६	७।२१	१८।२१	७।९	१८।१३	६।५६	१८।१	७।४	१८।१५	२६
३१	७।११	१८।९	७।७	१७।५८	७।८	१८।३	७।१५	१८।१५	७।३	१८।२	६।४५	१७।४९	७।०	१७।५७	६।४०	१७।५०	७।७	१८।९	७।२०	१८।२४	७।८	१८।१६	६।५५	१८।४	७।३	१८।१७	३१
फरवरी ५	७।९	१८।१३	७।५	१८।२	७।६	१८।७	७।१३	१८।१८	७।१	१८।६	६।४३	१७।५२	६।५८	१८।०	६।३८	१७।५३	७।५	१८।१३	७।१८	१८।२७	७।६	१८।१९	६।५३	१८।७	७।२	१८।२०	५ फरवरी
१०	७।७	१८।१६	७।२	१८।५	७।३	१८।१०	७।१०	१८।२१	६।५८	१८।९	६।४०	१७।५५	६।५५	१८।३	६।३६	१७।५६	७।३	१८।१६	७।१६	१८।३०	७।४	१८।२२	६।५१	१८।९	७।०	१८।२२	१०
१५	७।४	१८।१९	६।५८	१८।८	७।०	१८।१३	७।७	१८।२४	६।५५	१८।१२	६।३८	१७।५७	६।५२	१८।६	६।३४	१७।५८	७।०	१८।१८	७।१३	१८।३३	७।१	१८।२४	६।४९	१८।१२	६।५७	१८।२५	१५
२०	७।०	१८।२२	६।५४	१८।१२	६।५६	१८।१६	७।४	१८।२७	६।५१	१८।१४	६।३४	१८।०	६।४८	१८।९	६।३१	१८।०	६।५६	१८।२१	७।१०	१८।३५	६।५८	१८।२६	६।४६	१८।१४	६।५५	१८।२७	२०
२५	६।५७	१८।२४	६।५०	१८।१५	६।५२	१८।१९	७।०	१८।२९	६।४८	१८।१७	६।३१	१८।२	६।४४	१८।१२	६।२८	१८।२	६।५३	१८।२३	७।६	१८।३७	६।५५	१८।२८	६।४२	१८।१६	६।५२	१८।२८	२५
मार्च २	६।५२	१८।२७	६।४५	१८।१७	६।४७	१८।२२	६।५६	१८।३२	६।४३	१८।१९	६।२७	१८।४	६।४०	१८।१४	६।२४	१८।४	६।४९	१८।२५	७।२	१८।४०	६।५१	१८।३०	६।३९	१८।१८	६।४८	१८।३०	२ मार्च
७	६।४७	१८।२९	६।४०	१८।२०	६।४३	१८।२४	६।५२	१८।३४	६।३९	१८।२१	६।२३	१८।६	६।३६	१८।१७	६।२०	१८।६	६।४५	१८।२७	६।५८	१८।४२	६।४७	१८।३२	६।३५	१८।२०	६।४५	१८।३१	७
१२	६।४२	१८।३१	६।३५	१८।२३	६।३८	१८।२६	६।४७	१८।३६	६।३५	१८।२३	६।१८	१८।८	६।३१	१८।१९	६।१६	१८।७	६।४०	१८।२९	६।५४	१८।४३	६।४३	१८।३४	६।३१	१८।२१	६।४१	१८।३२	१२
१७	६।३८	१८।३३	६।३०	१८।२५	६।३३	१८।२८	६।४२	१८।३८	६।३०	१८।२५	६।१४	१८।१०	६।२६	१८।२१	६।१२	१८।८	६।३६	१८।३१	६।४९	१८।४५	६।३९	१८।३५	६।२६	१८।२३	६।३७	१८।३४	१७
२२	६।३३	१८।३५	६।२५	१८।२७	६।२८	१८।३०	६।३८	१८।४०	६।२५	१८।२७	६।९	१८।११	६।२१	१८।२३	६।८	१८।१०	६।३१	१८।३३	६।४५	१८।४७	६।३५	१८।३६	६।२२	१८।२४	६।३३	१८।३५	२२
२७	६।२८	१८।३७	६।२०	१८।३०	६।२४	१८।३२	६।३३	१८।४१	६।२०	१८।२९	६।५	१८।१३	६।१६	१८।२५	६।४	१८।११	६।२६	१८।३४	६।४०	१८।४८	६।३०	१८।३८	६।१८	१८।२५	६।२९	१८।३६	२७
अप्रैल १	६।२३	१८।३८	६।१४	१८।३२	६।१९	१८।३४	६।२८	१८।४३	६।१५	१८।३१	६।०	१८।१४	६।११	१८।२७	५।५९	१८।१२	६।२२	१८।३६	६।३६	१८।५०	६।२६	१८।३९	६।१३	१८।२६	६।२५	१८।३७	१ अप्रैल
६	६।१९	१८।४०	६।९	१८।३४	६।१४	१८।३६	६।२३	१८।४५	६।११	१८।३२	५।५६	१८।१६	६।६	१८।२९	५।५५	१८।१३	६।१७	१८।३८	६।३१	१८।५१	६।२२	१८।४०	६।९	१८।२८	६।२१	१८।३८	६
११	६।१४	१८।४२	६।४	१८।३६	६।९	१८।३८	६।१९	१८।४७	६।६	१८।३४	५।५१	१८।१७	६।१	१८।३१	५।५१	१८।१४	६।१३	१८।३९	६।२७	१८।५३	६।१८	१८।४२	६।५	१८।२९	६।१७	१८।३९	११
१६	६।१०	१८।४४	५।५९	१८।३९	६।५	१८।४०	६।१४	१८।४८	६।२	१८।३६	५।४७	१८।१९	५।५७	१८।३३	५।४७	१८।१६	६।८	१८।४१	६।२३	१८।५४	६।१४	१८।४३	६।१	१८।३०	६।१४	१८।४०	१६
२१	६।६	१८।४६	५।५५	१८।४१	६।०	१८।४२	६।१०	१८।५०	५।५८	१८।३८	५।४३	१८।२१	५।५३	१८।३५	५।४४	१८।१७	६।४	१८।४३	६।१९	१८।५६	६।१०	१८।४५	५।५८	१९।३२	६।१०	१८।४१	२१
२६	६।२	१८।४८	५।५०	१८।४३	५।५६	१८।४४	६।६	१८।५२	५।५४	१८।३९	५।४०	१८।२३	५।४८	१८।३७	५।४०	१८।१९	६।१	१८।४५	६।१५	१८।५८	६।६	१८।४६	५।५४	१८।३३	६।७	१८।४२	२६
मई १	५।५८	१८।५०	५।४६	१८।४६	५।५२	१८।४६	६।३	१८।५४	५।५०	१८।४२	५।३६	१८।२४	५।४५	१८।३९	५।३७	१८।२०	५।५७	१८।४७	६।१२	१९।०	६।३	१८।४८	५।५१	१८।३५	६।४	१८।४४	१ मई
६	५।५५	१८।५२	५।४३	१८।४८	५।४९	१८।४९	५।५९	१८।५७	५।४७	१८।४४	५।३३	१८।२६	५।४१	१८।४२	५।३५	१८।२२	५।५४	१८।४९	६।९	१९।१	६।०	१८।५०	५।४८	१८।३७	६।२	१८।४५	६
११	५।५२	१८।५५	५।४०	१८।५१	५।४६	१८।५१	५।५७	१८।५९	५।४४	१८।४६	५।३१	१८।२८	५।३९	१८।४४	५।३२	१८।२४	५।५१	१८।५१	६।६	१९।४	५।५८	१८।५२	५।४६	१८।३९	६।०	१८।४७	११
१६	५।५०	१८।५७	५।३७	१८।५४	५।४४	१८।५३	५।५४	१९।१	५।४२	१८।४९	५।२९	१८।३०	५।३६	१८।४६	५।३०	१८।२५	५।४९	१८।५३	६।४	१९।६	५।५६	१८।५३	५।४४	१८।४१	५।५८	१८।४८	१६
२१	५।४८	१८।५९	५।३५	१८।५६	५।४२	१८।५६	५।५२	१९।३	५।४०	१८।५१	५।२७	१८।३३	५।३४	१८।४९	५।२९	१८।२७	५।४७	१८।५५	६।२	१९।७	५।५४	१८।५५	५।४२	१८।४३	५।५६	१८।५०	२१
२६	५।४६	१९।२	५।३३	१८।५९	५।४०	१८।५८	५।५१	१९।६	५।३९	१८।५३	५।२६	१८।३५	५।३३	१८।५१	५।२८	१८।२९	५।४६	१८।५७	६।१	१९।१०	५।५३	१८।५७	५।४१	१८।४५	५।५५	१८।५२	२६
३१	५।४५	१९।४	५।३२	१९।१	५।३९	१९।०	५।५०	१९।८	५।३८	१८।५५	५।२५	१८।३७	५।३२	१८।५३	५।२७	१८।३१	५।४५	१८।५९	६।०	१९।१२	५।५३	१९।०	५।४०	१८।४७	५।५५	१८।५४	३१
जून ५	५।४५	१९।६	५।३१	१९।३	५।३८	१९।३	५।५०	१९।१०	५।३७	१८।५७	५।२४	१८।३९	५।३१	१८।५६	५।२७	१८।३३	५।४५	१९।१	६।०	१९।१४	५।५२	१९।१	५।४०	१८।४८	५।५५	१८।५५	५ जून
१०	५।४५	१९।८	५।३१	१९।५	५।३८	१९।५	५।५०	१९।१२	५।३७	१८।५९	५।२४	१८।४०	५।३१	१८।५७	५।२७	१८।३५	५।४५	१९।३	६।०	१९।१६	५।५२	१९।३	५।४०	१८।५०	५।५५	१८।५७	१०
१५	५।४५	१९।९	५।३२	१९।७	५।३९	१९।६	५।५०	१९।१३	५।३८	१९।१	५।२५	१८।४२	५।३१	१८।५९	५।२८	१८।३६	५।४५	१९।५	६।०	१९।१७	५।५३	१९।५	५।४१	१८।५२	५।५६	१८।५९	१५
२०	५।४६	१९।११	५।३२	१९।८	५।३९	१९।८	५।५१	१९।१५	५।३८	१९।२	५।२६	१८।४३	५।३२	१९।०	५।२९	१८।३७	५।४६	१९।६	६।१	१९।१९	५।५४	१९।६	५।४२	१८।५३	५।५६	१९।०	२०
२५	५।४७	१९।१२	५।३४	१९।९	५।४१	१९।९	५।५२	१९।१६	५।४०	१९।३	५।२७	१८।४४	५।३३	१९।१	५।३०	१८।३८	५।४७	१९।७	६।२	१९।२०	५।५५	१९।७	५।४३	१८।५४	५।५८	१९।१	२५
३०	५।४८	१९।१२	५।३५	१९।१०	५।४२	१९।९	५।५४	१९।१६	५।४१	१९।४	५।२८	१८।४५	५।३५	१९।२	५।३१	१८।३९	५।४९	१९।८	६।४	१९।२०	५।५६	१९।८	५।४४	१८।५५	५।५९	१९।२	३०

रेल्वेस्टैण्डर्डसमयानुसार भारतवर्षीय विविध सुप्रसिद्ध नगरों के सूर्योदयास्तसमय - पंचांगे निर्णयसागरे

तारीख	मास	उज्जैन		शिवपुरी		ब्यावरा		झाबुआ		होशंगाबाद		रायपुर		सागर	
		उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.
५	जुलाई	५।५०	१९।१३	५।३७	१९।१०	५।४४	१९।९	५।५५	१९।१६	५।४३	१९।४	५।३०	१८।४५	५।३७	१९।२
१०		५।५२	१९।१२	५।३९	१९।१०	५।४६	१९।९	५।५७	१९।१६	५।४५	१९।४	५।३२	१८।४५	५।३९	१९।२
१५		५।५४	१९।१२	५।४१	१९।९	५।४८	१९।८	५।५९	१९।१५	५।४७	१९।३	५।३४	१८।४४	५।४१	१९।१
२०		५।५६	१९।१०	५।४४	१९।७	५।५०	१९।७	६।१	१९।१४	५।४९	१९।२	५।३६	१८।४३	५।४३	१९।०
२५		५।५८	१९।९	५।४६	१९।५	५।५२	१९।५	६।३	१९।१२	५।५१	१९।१	५।३८	१८।४२	५।४५	१८।५८
३०		६।०	१९।६	५।४८	१९।२	५।५४	१९।३	६।६	१९।१०	५।५३	१८।५८	५।४०	१८।४०	५।४७	१८।५५
४	अगस्त	६।३	१९।४	५।५१	१८।५९	५।५७	१९।०	६।८	१९।७	५।५५	१८।५५	५।४२	१८।३७	५।४९	१८।५३
९		६।५	१९।१	५।५३	१८।५६	५।५९	१८।५७	६।१०	१९।४	५।२७	१८।५२	५।४३	१८।३४	५।५२	१८।४९
१४		६।७	१८।५७	५।५५	१८।५२	६।१	१८।५३	६।११	१९।१	५।५९	१८।४८	५।४५	१८।३१	५।५४	१८।४६
१९		६।८	१८।५३	५।५८	१८।४८	६।३	१८।४९	६।१३	१८।५७	६।१	१८।४४	५।४७	१८।२७	५।५६	१८।४२
२४		६।१०	१८।४९	६।०	१८।४३	६।५	१८।४५	६।१५	१८।५३	६।२	१८।४०	५।४८	१८।२३	५।५७	१८।३७
२९		६।१२	१८।४५	६।२	१८।३८	६।६	१८।४०	६।१७	१८।४८	६।४	१८।३६	५।५०	१८।१९	५।५९	१८।३३
४	सितम्बर	६।१४	१८।३९	६।४	१८।३२	६।८	१८।३५	६।१८	१८।४३	६।६	१८।३०	५।५१	१८।१४	६।१	१८।२७
८		६।१५	१८।३५	६।६	१८।२८	६।१०	१८।३१	६।२०	१८।३९	६।७	१८।२६	५।५२	१८।१०	६।३	१८।२३
१३		६।१६	१८।३०	६।८	१८।२२	६।११	१८।२६	६।२१	१८।३४	६।९	१८।२१	५।५३	१८।५	६।४	१८।१८
१८		६।१८	१८।२५	६।१०	१८।१७	६।१३	१८।२०	६।२३	१८।२९	६।१०	१८।१६	५।५५	१८।०	६।६	१८।१३
२३		६।१९	१८।२०	६।१२	१८।११	६।१५	१८।१५	६।२४	१८।२४	६।१२	१८।११	५।५६	१७।५६	६।८	१८।७
२८		६।२१	१८।१५	६।१४	१८।६	६।१६	१८।१०	६।२६	१८।१९	६।१३	१८।६	५।५७	१७।५१	६।९	१८।२
३	अक्टूबर	६।२३	१८।१०	६।१६	१८।१	६।१८	१८।५	६।२७	१८।१४	६।१५	१८।२	५।५९	१७।४६	६।११	१७।५७
८		६।२५	१८।५	६।१८	१७।५५	६।२०	१८।०	६।२९	१८।९	६।१७	१७।५७	६।०	१७।४२	६।१३	१७।५२
१३		६।२६	१८।१	६।२०	१७।५०	६।२२	१७।५५	६।३१	१८।५	६।१८	१७।५२	६।२	१७।३७	६।१५	१७।४८
१८		६।२९	१७।५६	६।२३	१७।४६	६।२४	१७।५१	६।३३	१८।०	६।२१	१७।४८	६।४	१७।३३	६।१७	१७।४३
२३		६।३१	१७।५२	६।२६	१७।४१	६।२७	१७।४७	६।३५	१७।५७	६।२३	१७।४४	६।६	१७।३०	६।२०	१७।३९
२८		६।३३	१७।४९	६।२९	१७।३७	६।२९	१७।४३	६।३८	१७।५३	६।२५	१७।४०	६।८	१७।२६	६।२२	१७।३६
२	नवम्बर	६।३६	१७।४५	६।३२	१७।३४	६।३२	१७।४०	६।४०	१७।५०	६।२८	१७।३७	६।१०	१७।२३	६।२५	१७।३२
७		६।३९	१७।४३	६।३५	१७।३१	६।३५	१७।३७	६।४३	१७।४७	६।३१	१७।३५	६।१३	१७।२१	६।२८	१७।२९
१२		६।४२	१७।४०	६।३८	१७।२८	६।३९	१७।३४	६।४६	१७।४५	६।३४	१७।३२	६।१६	१७।१९	६।३२	१७।२७
१७		६।४५	१७।३९	६।४२	१७।२६	६।४२	१७।३३	६।५०	१७।४३	६।३७	१७।३१	६।१९	१७।१७	६।३५	१७।२५
२२		६।४९	१७।३७	६।४६	१७।२५	६।४५	१७।३१	६।५३	१७।४२	६।४०	१७।३०	६।२२	१७।१७	६।३८	१७।२४
२७		६।५२	१७।३७	६।४९	१७।२४	६।४९	१७।३१	६।५६	१७।४२	६।४४	१७।२९	६।२५	१७।१६	६।४२	१७।२३
२	दिसम्बर	६।५६	१७।३७	६।५३	१७।२४	६।५२	१७।३१	७।०	१७।४२	६।४७	१७।२९	६।२९	१७।१७	६।४५	१७।२३
७		६।५९	१७।३८	६।५७	१७।२४	६।५६	१७।३१	७।३	१७।४३	६।५१	१७।३०	६।३२	१७।१७	६।४९	१७।२४
१२		७।२	१७।३९	७।०	१७।२५	६।५९	१७।३३	७।६	१७।४४	६।५४	१७।३१	६।३५	१७।१९	६।५२	१७।२५
१७		७।५	१७।४१	७।३	१७।२७	७।२	१७।३४	७।९	१७।४६	६।५७	१७।३३	६।३८	१७।२१	६।५५	१७।२७
२२		७।८	१७।४३	७।६	१७।३०	७।५	१७।३७	७।१२	१७।४८	६।५९	१७।३६	६।४१	१७।२३	६।५८	१७।२९
२७		७।१०	१७।४६	७।८	१७।३२	७।७	१७।३९	७।१४	१७।५१	७।२	१७।३८	६।४३	१७।२६	७।०	१७।३२
३१		७।१२	१७।४८	७।९	१७।३५	७।९	१७।४१	७।१६	१७।५३	७।३	१७।४१	६।४४	१७।२८	७।१	१७।३५

जगदलपुर		खण्डवा		सूरत-गुज.		औरंगाबाद		आदिलाबाद		सोलापुर		तारीख	मास
उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.		
५।३३	१८।३९	५।५०	१९।८	६।५	१९।२०	५।५८	१९।८	५।४६	१८।५५	६।०	१९।२	५	जुलाई
५।३४	१८।३९	५।५२	१९।८	६।७	१९।२०	६।०	१९।८	५।४८	१८।५५	६।२	१९।२	१०	
५।३६	१८।३९	५।५४	१९।७	६।९	१९।१९	६।१	१९।७	५।४९	१८।५४	६।४	१९।१	१५	
५।३८	१८।३८	५।५६	१९।६	६।११	१९।१८	६।३	१९।६	५।५१	१८।५३	६।५	१९।१	२०	
५।४०	१८।३७	५।५८	१९।४	६।१३	१९।१७	६।५	१९।५	५।५३	१८।५२	६।७	१८।५९	२५	
५।४१	१८।३५	६।०	१९।२	६।१५	१९।१५	६।७	१९।३	५।५५	१८।५०	६।९	१८।५८	३०	
५।४३	१८।३२	६।२	१८।५९	६।१७	१९।१२	६।९	१९।०	५।५६	१८।४७	६।१०	१८।५६	४	अगस्त
५।४५	१८।३०	६।४	१८।५६	६।१९	१९।९	६।१०	१८।५८	५।५८	१८।४५	६।११	१८।५३	९	
५।४६	१८।२६	६।६	१८।५३	६।२०	१९।६	६।१२	१८।५४	६।०	१८।४२	६।१३	१८।५०	१४	
५।४७	१८।२३	६।८	१८।४९	६।२२	१९।२	६।१३	१८।५१	६।१	१८।३८	६।१४	१८।४७	१९	
५।४८	१८।२०	६।९	१८।४५	६।२३	१८।५८	६।१५	१८।४७	६।२	१८।३४	६।१५	१८।४४	२४	
५।५०	१८।१६	६।११	१८।४१	६।२५	१८।५४	६।१६	१८।४३	६।३	१८।३०	६।१६	१८।४०	२९	
५।५१	१८।११	६।१२	१८।३६	६।२६	१८।४९	६।१७	१८।३८	६।५	१८।२५	६।१७	१८।३५	४	सितम्बर
५।५२	१८।७	६।१३	१८।३२	६।२७	१८।४५	६।१८	१८।३५	६।६	१८।२२	६।१७	१८।३२	८	
५।५२	१८।३	६।१५	१८।२७	६।२९	१८।४०	६।१९	१८।३०	६।७	१८।१७	६।१८	१८।२८	१३	
५।५३	१७।५९	६।१६	१८।२२	६।३०	१८।३६	६।२०	१८।२५	६।७	१८।१३	६।१९	१८।२३	१८	
५।५४	१७।५४	६।१७	१८।१७	६।३१	१८।३१	६।२१	१८।२१	६।८	१८।८	६।१९	१८।२०	२३	
५।५५	१७।५०	६।१९	१८।१२	६।३२	१८।२६	६।२२	१८।१६	६।१०	१८।४	६।२०	१८।१५	२८	
५।५६	१७।४५	६।२०	१८।८	६।३४	१८।२२	६।२३	१८।१२	६।११	१७।५९	६।२१	१८।११	३	अक्टूबर
५।५७	१७।४१	६।२२	१८।३	६।३५	१८।१७	६।२५	१८।८	६।१२	१७।५५	६।२२	१८।७	८	
५।५९	१७।३७	६।२४	१७।५९	६।३७	१८।१३	६।२६	१८।४	६।१३	१७।५१	६।२३	१८।३	१३	
६।०	१७।३४	६।२६	१७।५५	६।३९	१८।९	६।२८	१८।०	६।१५	१७।४७	६।२४	१८।०	१८	
६।२	१७।३०	६।२८	१७।५१	६।४१	१८।५	६।३०	१७।५६	६।१७	१७।४४	६।२६	१७।५७	२३	
६।४	१७।२७	६।३०	१७।४७	६।४३	१८।२	६।३२	१७।५३	६।१९	१७।४१	६।२८	१७।५४	२८	
६।६	१७।२४	६।३३	१७।४४	६।४६	१७।५९	६।३४	१७।५०	६।२१	१७।३८	६।३०	१७।५१	२	नवम्बर
६।९	१७।२२	६।३५	१७।४२	६।४८	१७।५६	६।३६	१७।४८	६।२४	१७।३६	६।३२	१७।४९	७	
६।११	१७।२१	६।३८	१७।४०	६।५१	१७।५४	६।३९	१७।४६	६।२६	१७।३४	६।३४	१७।४८	१२	
६।१४	१७।१९	६।४१	१७।३८	६।५४	१७।५३	६।४२	१७।४५	६।२९	१७।३३	६।३७	१७।४७	१७	
६।१७	१७।१९	६।४५	१७।३७	६।५७	१७।५२	६।४५	१७।४४	६।३२	१७।३२	६।४०	१७।४६	२२	
६।२०	१७।१९	६।४८	१७।३७	७।१	१७।५२	६।४८	१७।४४	६।३५	१७।३२	६।४३	१७।४६	२७	
६।२३	१७।१९	६।५१	१७।३७	७।४	१७।५२	६।५१	१७।४४	६।३८	१७।३२	६।४६	१७।४७	२	दिसम्बर
६।२६	१७।२०	६।५५	१७।३८	७।७	१७।५३	६।५४	१७।४५	६।४२	१७।३३	६।४९	१७।४८	७	
६।२९	१७।२१	६।५८	१७।३९	७।१०	१७।५४	६।५८	१७।४७	६।४५	१७।३५	६।५२	१७।४९	१२	
६।३२	१७।२३	७।१	१७।४१	७।१३	१७।५६	७।०	१७।४९	६।४७	१७।३६	६।५४	१७।५१	१७	
६।३५	१७।२६	७।३	१७।४३	७।१६	१७।५८	७।३	१७।५१	६।५०	१७।३९	६।५७	१७।५४	२२	
६।३७	१७।२८	७।६	१७।४६	७।१८	१८।१	७।५	१७।५४	६।५२	१७।४१	६।५९	१७।५६	२७	
६।३९	१७।३१	७।७	१७।४८	७।२०	१८।३	७।७	१७।५६	६।५४	१७।४४	७।१	१७।५९	३१	

रेल्वेस्टैण्डर्डसमयानुसार भारतवर्षीय विविध सुप्रसिद्ध नगरों के सूर्योदयास्तसमय - पंचांगे निर्णयसागरे

माह	तारीख	झाँसी		मेरठ		बुलंदशहर		एटा		इटावा		अलीगढ		बदायूँ	
		उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.
जनवरी	१	७।६	१७।३२	७।१७	१७।२८	७।१५	१७।२९	७।१०	१७।२८	७।७	१७।२८	७।१३	१७।२९	७।९	१७।२५
	६	७।७	१७।३६	७।१८	१७।३२	७।१६	१७।३२	७।११	१७।३१	७।८	१७।३१	७।१४	१७।३३	७।१०	१७।२८
	११	७।८	१७।३९	७।१८	१७।३६	७।१६	१७।३६	७।११	१७।३५	७।८	१७।३५	७।१४	१७।३७	७।१०	१७।३२
	१६	७।८	१७।४३	७।१८	१७।४०	७।१६	१७।४०	७।११	१७।३९	७।८	१७।३९	७।१४	१७।४१	७।१०	१७।३६
	२१	७।७	१७।४७	७।१७	१७।४४	७।१५	१७।४५	७।१०	१७।४३	७।७	१७।४३	७।१३	१७।४५	७।९	१७।४०
	२६	७।५	१७।५१	७।१५	१७।४८	७।१३	१७।४९	७।९	१७।४७	७।६	१७।४७	७।१२	१७।४९	७।७	१७।४४
	३१	७।४	१७।५४	७।१२	१७।५२	७।११	१७।५३	७।६	१७।५१	७।४	१७।५१	७।९	१७।५३	७।५	१७।४८
फरवरी	५	७।१	१७।५८	७।९	१७।५७	७।८	१७।५७	७।४	१७।५५	७।१	१७।५५	७।६	१७।५७	७।२	१७।५२
	१०	६।५८	१८।२	७।६	१८।१	७।५	१८।१	७।०	१७।५९	६।५८	१७।५९	७।३	१८।१	६।५९	१७।५६
	१५	६।५४	१८।५	७।२	१८।४	७।१	१८।५	६।५७	१८।२	६।५४	१८।२	६।५९	१८।४	६।५५	१८।०
	२०	६।५१	१८।८	६।५७	१८।८	६।५६	१८।८	६।५२	१८।६	६।५०	१८।५	६।५५	१८।८	६।५१	१८।४
	२५	६।४६	१८।११	६।५२	१८।१२	६।५१	१८।१२	६।४८	१८।९	६।४६	१८।९	६।५०	१८।११	६।४६	१८।७
मार्च	२	६।४२	१८।१४	६।४७	१८।१५	६।४६	१८।१५	६।४३	१८।१२	६।४१	१८।११	६।४५	१८।१४	६।४१	१८।१०
	७	६।३७	१८।१६	६।४२	१८।१८	६।४१	१८।१८	६।३८	१८।१५	६।३६	१८।१४	६।४०	१८।१८	६।३६	१८।१३
	१२	६।३२	१८।१९	६।३६	१८।२१	६।३६	१८।२१	६।३२	१८।१८	६।३०	१८।१७	६।३५	१८।२०	६।३०	१८।१६
	१७	६।२७	१८।२१	६।३०	१८।२४	६।३०	१८।२४	६।२७	१८।२१	६।२५	१८।२०	६।२९	१८।२३	६।२५	१८।१९
	२२	६।२१	१८।२४	६।२५	१८।२७	६।२४	१८।२७	६।२१	१८।२४	६।२०	१८।२२	६।२३	१८।२६	६।१९	१८।२२
	२७	६।१६	१८।२६	६।१९	१८।३०	६।१८	१८।२९	६।१५	१८।२६	६।१४	१८।२५	६।१८	१८।२९	६।१३	१८।२४
अप्रैल	१	६।११	१८।२८	६।१३	१८।३३	६।१३	१८।३२	६।१०	१८।२९	६।९	१८।२७	६।१२	१८।३१	६।८	१८।२७
	६	६।६	१८।३०	६।७	१८।३६	६।७	१८।३५	६।४	१८।३१	६।३	१८।२९	६।६	१८।३४	६।२	१८।३०
	११	६।१	१८।३३	६।२	१८।३९	६।१	१८।३८	५।५९	१८।३४	५।५८	१८।३२	६।१	१८।३६	५।५७	१८।३२
	१६	५।५६	१८।३५	५।५६	१८।४१	५।५६	१८।४०	५।५४	१८।३६	५।५३	१८।३४	५।५६	१८।३९	५।५१	१८।३५
	२१	५।५१	१८।३७	५।५१	१८।४४	५।५१	१८।४३	५।४९	१८।३९	५।४८	१८।३७	५।५१	१८।४२	५।४६	१८।३८
	२६	५।४७	१८।४०	५।४६	१८।४७	५।४६	१८।४६	५।४४	१८।४२	५।४४	१८।३९	५।४६	१८।४५	५।४२	१८।४०
मई	१	५।४३	१८।४२	५।४२	१८।५०	५।४२	१८।४९	५।४०	१८।४५	५।४०	१८।४२	५।४२	१८।४७	५।३८	१८।४३
	६	५।३९	१८।४५	५।३८	१८।५३	५।३८	१८।५२	५।३६	१८।४७	५।३६	१८।४५	५।३८	१८।५०	५।३४	१८।४६
	११	५।३६	१८।४७	५।३४	१८।५६	५।३५	१८।५५	५।३३	१८।५०	५।३३	१८।४८	५।३५	१८।५३	५।३०	१८।४९
	१६	५।३४	१८।५०	५।३१	१८।५९	५।३२	१८।५८	५।३०	१८।५३	५।३०	१८।५०	५।३२	१८।५६	५।२७	१८।५२
	२१	५।३१	१८।५२	५।२८	१९।२	५।२९	१९।१	५।२७	१८।५६	५।२८	१८।५३	५।२९	१८।५९	५।२५	१८।५५
	२६	५।३०	१८।५५	५।२६	१९।५	५।२७	१९।३	५।२६	१८।५९	५।२६	१८।५६	५।२७	१९।२	५।२३	१८।५८
	३१	५।२९	१८।५७	५।२५	१९।८	५।२६	१९।६	५।२४	१९।१	५।२५	१८।५८	५।२६	१९।४	५।२१	१९।०
जून	५	५।२८	१९।०	५।२४	१९।१०	५।२५	१९।९	५।२४	१९।४	५।२४	१९।०	५।२५	१९।७	५।२१	१९।३
	१०	५।२८	१९।२	५।२४	१९।१३	५।२४	१९।११	५।२३	१९।६	५।२४	१९।२	५।२५	१९।९	५।२०	१९।५
	१५	५।२८	१९।३	५।२४	१९।१४	५।२५	१९।१२	५।२३	१९।७	५।२४	१९।४	५।२५	१९।११	५।२१	१९।७
	२०	५।२९	१९।५	५।२५	१९।१६	५।२५	१९।१४	५।२४	१९।९	५।२४	१९।६	५।२६	१९।१२	५।२१	१९।८
	२५	५।३०	१९।६	५।२६	१९।१७	५।२७	१९।१५	५।२५	१९।१०	५।२६	१९।७	५।२७	१९।१३	५।२३	१९।९
	३०	५।३२	१९।६	५।२७	१९।१७	५।२८	१९।१५	५।२७	१९।१०	५।२७	१९।७	५।२९	१९।१३	५।२४	१९।९

माह	तारीख	फर्रूखाबाद		मुरादाबाद		इलाहाबाद		धूलिया		नान्देड़		नासिक		तारीख
		उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	
जनवरी	१	७।६	१७।२४	७।१२	१७।२४	६।५३	१७।१९	७।१२	१७।५७	६।५८	१७।५०	७।१४	१८।३	१
	६	७।७	१७।२८	७।१३	१७।२८	६।५४	१७।२३	७।१४	१८।१	७।०	१७।५३	७।१५	१८।६	६
	११	७।७	१७।३२	७।१४	१७।३२	६।५४	१७।२६	७।१४	१८।४	७।१	१७।५७	७।१६	१८।९	११
	१६	७।७	१७।३६	७।१३	१७।३६	६।५४	१७।३०	७।१५	१८।७	७।१	१८।०	७।१७	१८।१२	१६
	२१	७।६	१७।४०	७।१२	१७।४०	६।५३	१७।३४	७।१४	१८।११	७।१	१८।३	७।१६	१८।१६	२१
	२६	७।५	१७।४४	७।१०	१७।४४	६।५२	१७।३८	७।१४	१८।१४	७।०	१८।६	७।१६	१८।१९	२६
	३१	७।२	१७।४८	७।८	१७।४९	६।५०	१७।४२	७।१२	१८।१७	६।५९	१८।९	७।१४	१८।२२	३१
फरवरी	५	७।०	१७।५२	७।५	१७।५३	६।४८	१७।४५	७।१०	१८।२०	६।५७	१८।१२	७।१३	१८।२५	५
	१०	६।५६	१७।५५	७।१	१७।५७	६।४५	१७।४९	७।८	१८।२३	६।५५	१८।१४	७।१०	१८।२८	१०
	१५	६।५३	१७।५९	६।५७	१८।०	६।४१	१७।५२	७।५	१८।२६	६।५३	१८।१७	७।८	१८।३०	१५
	२०	६।४८	१८।२	६।५३	१८।४	६।३७	१७।५५	७।२	१८।२८	६।५०	१८।१९	७।५	१८।३२	२०
	२५	६।४४	१८।६	६।४८	१८।८	६।३३	१७।५८	६।५८	१८।३०	६।४७	१८।२१	७।१	१८।३४	२५
मार्च	२	६।३९	१८।९	६।४३	१८।११	६।२९	१८।१	६।५५	१८।३२	६।४३	१८।२३	६।५८	१८।३६	२
	७	६।३४	१८।१२	६।३८	१८।१४	६।२४	१८।३	६।५१	१८।३४	६।३९	१८।२४	६।५४	१८।३८	७
	१२	६।२८	१८।१५	६।३२	१८।१७	६।१९	१८।६	६।४६	१८।३६	६।३५	१८।२६	६।४९	१८।४०	१२
	१७	६।२३	१८।१७	६।२६	१८।२०	६।१४	१८।८	६।४२	१८।३८	६।३१	१८।२७	६।४५	१८।४१	१७
	२२	६।१७	१८।२०	६।२०	१८।२३	६।८	१८।११	६।३७	१८।३९	६।२७	१८।२८	६।४१	१८।४२	२२
	२७	६।१२	१८।२२	६।१५	१८।२६	६।३	१८।१३	६।३३	१८।४१	६।२३	१८।३०	६।३६	१८।४४	२७
अप्रैल	१	६।६	१८।२५	६।९	१८।२९	५।५८	१८।१५	६।२८	१८।४२	६।१८	१८।३१	६।३२	१८।४५	१
	६	६।१	१८।२७	६।३	१८।३२	५।५३	१८।१७	६।२४	१८।४४	६।१४	१८।३२	६।२८	१८।४६	६
	११	५।५५	१८।३०	५।५७	१८।३४	५।४८	१८।१९	६।२०	१८।४५	६।१०	१८।३३	६।२४	१८।४८	११
	१६	५।५०	१८।३३	५।५२	१८।३७	५।४३	१८।२२	६।१५	१८।४७	६।६	१८।३५	६।२०	१८।४९	१६
	२१	५।४५	१८।३५	५।४७	१८।४०	५।३८	१८।२४	६।१२	१८।४८	६।३	१८।३६	६।१६	१८।५१	२१
	२६	५।४१	१८।३८	५।४२	१८।४३	५।३४	१८।२६	६।८	१८।५०	५।५९	१८।३८	६।१२	१८।५३	२६
मई	१	५।३६	१८।४१	५।३८	१८।४६	५।३०	१८।२९	६।५	१८।५२	५।५६	१८।३९	६।९	१८।५४	१
	६	५।३३	१८।४३	५।३४	१८।४९	५।२६	१८।३१	६।२	१८।५४	५।५३	१८।४१	६।६	१८।५६	६
	११	५।२९	१८।४६	५।३०	१८।५२	५।२३	१८।३४	५।५९	१८।५६	५।५१	१८।४३	६।४	१८।५८	११
	१६	५।२६	१८।४९	५।२७	१८।५५	५।२१	१८।३७	५।५७	१८।५८	५।४९	१८।४५	६।२	१९।१	१६
	२१	५।२४	१८।५२	५।२५	१८।५८	५।१९	१८।३९	५।५५	१९।०	५।४८	१८।४६	६।०	१९।२	२१
	२६	५।२२	१८।५५	५।२३	१९।१	५।१७	१८।४२	५।५४	१९।२	५।४७	१८।४८	५।५९	१९।४	२६
	३१	५।२१	१८।५७	५।२१	१९।३	५।१६	१८।४४	५।५३	१९।४	५।४६	१८।५०	५।५८	१९।६	३१
जून	५	५।२०	१९।०	५।२०	१९।६	५।१५	१८।४६	५।५३	१९।६	५।४६	१८।५२	५।५८	१९।८	५
	१०	५।२०	१९।२	५।२०	१९।८	५।१५	१८।४८	५।५३	१९।८	५।४६	१८।५४	५।५८	१९।१०	१०
	१५	५।२०	१९।३	५।२०	१९।१०	५।१५	१८।५०	५।५३	१९।९	५।४६	१८।५५	५।५९	१९।११	१५
	२०	५।२१	१९।५	५।२१	१९।११	५।१६	१८।५१	५।५४	१९।११	५।४७	१८।५७	६।०	१९।१२	२०
	२५	५।२२	१९।६	५।२२	१९।१२	५।१७	१८।५२	५।५५	१९।१२	५।४८	१८।५८	६।१	१९।१३	२५
	३०	५।२४	१९।६	५।२४	१९।१३	५।१९	१८।५३	५।५७	१९।१२	५।५०	१८।५८	६।२	१९।१४	३०

रेल्वेस्टैण्डर्डसमयानुसार भारतवर्षीय विविध सुप्रसिद्ध नगरों के सूर्योदयास्तसमय – पंचांगे निर्णयसागरे

मास	तारीख	झाँसी उदय घं. मि.	झाँसी अस्त घं. मि.	मेरठ उदय घं. मि.	मेरठ अस्त घं. मि.	बुलंदशहर उदय घं. मि.	बुलंदशहर अस्त घं. मि.	एटा उदय घं. मि.	एटा अस्त घं. मि.	इटावा उदय घं. मि.	इटावा अस्त घं. मि.	अलीगढ उदय घं. मि.	अलीगढ अस्त घं. मि.	बदायूँ उदय घं. मि.	बदायूँ अस्त घं. मि.	फर्रूखाबाद उदय घं. मि.	फर्रूखाबाद अस्त घं. मि.	मुरादाबाद उदय घं. मि.	मुरादाबाद अस्त घं. मि.	इलाहाबाद उदय घं. मि.	इलाहाबाद अस्त घं. मि.	धूलिया उदय घं. मि.	धूलिया अस्त घं. मि.	नान्देड़ उदय घं. मि.	नान्देड़ अस्त घं. मि.	नासिक उदय घं. मि.	नासिक अस्त घं. मि.	तारीख
जुलाई	५	५।३३	१९।१६	५।३०	१९।१७	५।३०	१९।१५	५।२९	१९।१०	५।२९	१९।७	५।३१	१९।१३	५।२६	१९।१९	५।२६	१९।१६	५।२६	१९।१३	५।२१	१८।५३	५।५९	१९।१३	५।५१	१८।५९	६।४	१९।१४	५
	१०	५।३६	१९।१६	५।३२	१९।१७	५।३२	१९।१५	५।३१	१९।१०	५।३१	१९।७	५।३३	१९।१३	५।२८	१९।९	५।२८	१९।१६	५।२८	१९।१२	५।२३	१८।५२	६।०	१९।१२	५।५३	१८।५८	६।५	१९।१४	१०
	१५	५।३८	१९।५	५।३४	१९।१५	५।३५	१९।१३	५।३३	१९।९	५।३४	१९।६	५।३५	१९।१२	५।३१	१९।८	५।३०	१९।४	५।३०	१९।११	५।२५	१८।५१	६।२	१९।१२	५।५५	१८।५८	६।७	१९।१३	१५
	२०	५।४०	१९।३	५।३७	१९।१३	५।३८	१९।१२	५।३६	१९।७	५।३६	१९।४	५।३८	१९।१०	५।३३	१९।६	५।३३	१९।३	५।३३	१९।९	५।२७	१८।५०	६।४	१९।११	५।५७	१८।५७	६।९	१९।१२	२०
	२५	५।४३	१९।१	५।४०	१९।११	५।४०	१९।९	५।३९	१९।५	५।३९	१९।२	५।४०	१९।८	५।३६	१९।४	५।३५	१९।१	५।३६	१९।६	५।३०	१८।४८	६।६	१९।९	५।५८	१८।५६	६।११	१९।११	२५
	३०	५।४५	१८।५९	५।४३	१९।८	५।४३	१९।६	५।४१	१९।२	५।४१	१८।५९	५।४३	१९।५	५।३९	१९।१	५।३८	१८।५८	५।३९	१९।४	५।३२	१८।४५	६।८	१९।७	६।०	१८।५४	६।१३	१९।९	३०
अगस्त	४	५।४७	१८।५६	५।४५	१९।५	५।४६	१९।३	५।४४	१८।५९	५।४४	१८।५६	५।४६	१९।१	५।४१	१८।५७	५।४१	१८।५५	५।४१	१९।०	५।३४	१८।४२	६।१०	१९।५	६।२	१८।५१	६।१५	१९।७	४
	९	५।५०	१८।५२	५।४८	१९।१	५।४९	१९।०	५।४७	१८।५५	५।४६	१८।५२	५।४८	१८।५८	५।४४	१८।५४	५।४३	१८।५१	५।४४	१८।५६	५।३७	१८।३९	६।१२	१९।२	६।३	१८।४९	६।१६	१९।४	९
	१४	५।५२	१८।४८	५।५१	१८।५६	५।५१	१८।५५	५।४९	१८।५१	५।४९	१८।४८	५।५१	१८।५३	५।४७	१८।४९	५।४६	१८।४७	५।४७	१८।५२	५।३९	१८।३५	६।१३	१८।५८	६।५	१८।४६	६।१८	१९।१	१४
	१९	५।५४	१८।४४	५।५४	१८।५२	५।५४	१८।५०	५।५२	१८।४६	५।५१	१८।४४	५।५४	१८।४९	५।४९	१८।४५	५।४८	१८।४२	५।५०	१८।४७	५।४१	१८।३१	६।१५	१८।५५	६।६	१८।४२	६।१९	१८।५७	१९
	२४	५।५६	१८।४०	५।५६	१८।४६	५।५६	१८।४५	५।५४	१८।४१	५।५४	१८।३९	५।५६	१८।४४	५।५२	१८।४०	५।५१	१८।३७	५।५२	१८।४२	५।४३	१८।२६	६।१६	१८।५१	६।७	१८।३९	६।२१	१८।५३	२४
	२९	५।५८	१८।३५	५।५९	१८।४१	५।५९	१८।४०	५।५६	१८।३६	५।५६	१८।३४	५।५९	१८।३९	५।५४	१८।३४	५।५३	१८।३२	५।५५	१८।३७	५।४५	१८।२१	६।१८	१८।४७	६।८	१८।३५	६।२२	१८।४९	२९
सितम्बर	४	६।१	१८।२९	६।२	१८।३४	६।२	१८।३३	५।५९	१८।३०	५।५८	१८।२८	६।१	१८।३२	५।५७	१८।२८	५।५६	१८।२६	५।५८	१८।३०	५।४८	१८।१५	६।१९	१८।४१	६।१०	१८।३०	६।२३	१८।४४	४
	८	६।२	१८।२४	६।४	१८।२९	६।४	१८।२९	६।१	१८।२५	६।०	१८।२३	६।३	१८।२८	५।५९	१८।२३	५।५७	१८।२१	६।०	१८।२५	५।४९	१८।११	६।२०	१८।३८	६।१०	१८।२६	६।२४	१८।४१	८
	१३	६।४	१८।१९	६।७	१८।२३	६।६	१८।२१	६।३	१८।१९	६।२	१८।१८	६।६	१८।२२	६।१	१८।१७	६।०	१८।१५	६।२	१८।१९	५।५१	१८।६	६।२१	१८।३३	६।११	१८।२२	६।२५	१८।३६	१३
	१८	६।६	१८।१३	६।९	१८।१७	६।९	१८।१७	६।६	१८।१३	६।४	१८।१२	६।८	१८।१६	६।४	१८।१२	६।२	१८।१०	६।५	१८।१३	५।५३	१८।०	६।२३	१८।२८	६।१२	१८।१७	६।२६	१८।३२	१८
	२३	६।८	१८।८	६।१२	१८।११	६।११	१८।११	६।८	१८।८	६।६	१८।६	६।१०	१८।१०	६।६	१८।६	६।४	१८।४	६।७	१८।७	५।५५	१७।५५	६।२४	१८।२४	६।१३	१८।१३	६।२७	१८।२७	२३
	२८	६।१०	१८।३	६।१४	१८।५	६।१३	१८।५	६।१०	१८।२	६।९	१८।१	६।१३	१८।४	६।८	१८।०	६।६	१७।५८	६।१०	१८।१	५।५७	१७।४९	६।२५	१८।१९	६।१४	१८।९	६।२८	१८।२३	२८
अक्टूबर	३	६।१२	१७।५७	६।१७	१७।५९	६।१६	१७।५९	६।१३	१७।५६	६।११	१७।५५	६।१५	१७।५८	६।११	१७।५४	६।९	१७।५२	६।१३	१७।५५	५।५९	१७।४४	६।२६	१८।१४	६।१५	१८।४	६।३०	१८।१८	३
	८	६।१४	१७।५२	६।२०	१७।५४	६।१९	१७।५३	६।१५	१७।५१	६।१३	१७।४९	६।१८	१७।५३	६।१४	१७।४८	६।११	१७।४७	६।१५	१७।४९	६।१	१७।३९	६।२८	१८।१०	६।१६	१८।०	६।३१	१८।१४	८
	१३	६।१७	१७।४७	६।२३	१७।४८	६।२२	१७।४८	६।१८	१७।४५	६।१६	१७।४४	६।२०	१७।४७	६।१६	१७।४३	६।१४	१७।४२	६।१८	१७।४४	६।४	१७।३४	६।३०	१८।६	६।१८	१७।५६	६।३२	१८।१०	१३
	१८	६।१९	१७।४२	६।२६	१७।४३	६।२५	१७।४३	६।२१	१७।४०	६।१९	१७।४०	६।२३	१७।४२	६।१९	१७।३८	६।१७	१७।३७	६।२१	१७।३९	६।६	१७।२९	६।३१	१८।२	६।१९	१७।५२	६।३४	१८।६	१८
	२३	६।२२	१७।३८	६।२९	१७।३८	६।२८	१७।३८	६।२४	१७।३६	६।२२	१७।३५	६।२६	१७।३८	६।२२	१७।३३	६।२०	१७।३२	६।२५	१७।३४	६।९	१७।२५	६।३३	१७।५८	६।२१	१७।४९	६।३६	१८।२	२३
	२८	६।२५	१७।३४	६।३३	१७।३३	६।३१	१७।३३	६।२७	१७।३१	६।२५	१७।३१	६।३०	१७।३३	६।२६	१७।२९	६।२३	१७।२८	६।२८	१७।२९	६।१२	१७।२१	६।३६	१७।५५	६।२३	१७।४६	६।३८	१७।५९	२८
नवम्बर	२	६।२८	१७।३०	६।३६	१७।२९	६।३५	१७।२९	६।३०	१७।२७	६।२८	१७।२७	६।३३	१७।२९	६।२९	१७।२५	६।२६	१७।२४	६।३२	१७।२५	६।१५	१७।१७	६।३८	१७।५२	६।२५	१७।४३	६।४०	१७।५६	२
	७	६।३१	१७।२७	६।४०	१७।२६	६।३८	१७।२६	६।३४	१७।२४	६।३१	१७।२४	६।३७	१७।२६	६।३३	१७।२१	६।३०	१७।२१	६।३५	१७।२२	६।१८	१७।१४	६।४१	१७।४९	६।२७	१७।४१	६।४३	१७।५४	७
	१२	६।३५	१७।२५	६।४१	१७।२२	६।४२	१७।२३	६।३८	१७।२१	६।३५	१७।२१	६।४१	१७।२३	६।३७	१७।१८	६।३४	१७।१८	६।३९	१७।१८	६।२१	१७।१२	६।४३	१७।४७	६।३०	१७।३९	६।४६	१७।५२	१२
	१७	६।३८	१७।२३	६।४८	१७।२०	६।४६	१७।२१	६।४२	१७।१९	६।३९	१७।१९	६।४४	१७।२१	६।४०	१७।१६	६।३८	१७।१५	६।४३	१७।१६	६।२५	१७।१०	६।४६	१७।४६	६।३३	१७।३८	६।४८	१७।५१	१७
	२२	६।४२	१७।२१	६।५२	१७।१८	६।५०	१७।१९	६।४५	१७।१७	६।४३	१७।१७	६।४८	१७।१९	६।४४	१७।१५	६।४१	१७।१४	६।४७	१७।१४	६।२९	१७।८	६।५०	१७।४५	६।३६	१७।३७	६।५१	१७।५०	२२
	२७	६।४६	१७।२१	६।५६	१७।१७	६।५४	१७।१८	६।४९	१७।१६	६।४६	१७।१७	६।५२	१७।१८	६।४८	१७।१४	६।४५	१७।१३	६।५१	१७।१३	६।३२	१७।८	६।५३	१७।४५	६।३९	१७।३७	६।५५	१७।५०	२७
दिसम्बर	२	६।४९	१७।२०	७।०	१७।१७	६।५८	१७।१७	६।५३	१७।१६	६।५०	१७।१६	६।५६	१७।१८	६।५२	१७।१३	६।४९	१७।१३	६।५५	१७।१३	६।३६	१७।८	६।५६	१७।४५	६।४२	१७।३८	६।५८	१७।५०	२
	७	६।५३	१७।२१	७।४	१७।१७	७।२	१७।१८	६।५७	१७।१६	६।५४	१७।१७	७।०	१७।१८	६।५६	१७।१४	६।५३	१७।१३	६।५९	१७।१३	६।४०	१७।८	६।५९	१७।४६	६।४५	१७।३९	७।१	१७।५१	७
	१२	६।५६	१७।२२	७।७	१७।१८	७।५	१७।१९	७।०	१७।१७	६।५७	१७।१८	७।३	१७।१९	६।५९	१७।१५	६।५६	१७।१४	७।३	१७।१४	६।४३	१७।९	७।२	१७।४७	६।४८	१७।४०	७।४	१७।५३	१२
	१७	६।५९	१७।२४	७।१०	१७।२०	७।८	१७।२०	७।३	१७।१९	७।०	१७।२०	७।६	१७।२१	७।२	१७।१६	६।५९	१७।१६	७।६	१७।१६	६।४६	१७।११	७।५	१७।४९	६।५१	१७।४२	७।७	१७।५४	१७
	२२	७।२	१७।२६	७।१३	१७।२२	७।११	१७।२३	७।६	१७।२१	७।३	१७।२२	७।९	१७।२३	७।५	१७।१९	७।२	१७।१८	७।८	१७।१८	६।४९	१७।१३	७।८	१७।५१	६।५४	१७।४४	७।१०	१७।५७	२२
	२७	७।४	१७।२९	७।१५	१७।२५	७।१३	१७।२५	७।८	१७।२४	७।५	१७।२५	७।११	१७।२६	७।७	१७।२१	७।४	१७।२१	७।११	१७।२१	६।५१	१७।१६	७।१०	१७।५४	६।५६	१७।४७	७।१२	१८।०	२७
	३१	७।६	१७।३१	७।१७	१७।२७	७।१५	१७।२८	७।१०	१७।२७	७।६	१७।२७	७।१३	१७।२८	७।९	१७।२४	७।६	१७।२३	७।१२	१७।२३	६।५२	१७।१८	७।१२	१७।५७	६।५८	१७।४९	७।१३	१८।२	३१

ता री ख	अप्रैल		मई		जून		जुलाई		अगस्त		सितम्बर		अक्टूबर		नवम्बर		दिसम्बर		जनवरी		फरवरी		मार्च		ता री ख
	उत्तर		उत्तर		उत्तर		उत्तर		उत्तर		उत्तर-दक्षिण		दक्षिण		दक्षिण		दक्षिण		दक्षिण		दक्षिण		दक्षिण-उत्तर		
	अंश	कला	अंश	कला	अंश	कला	अंश	कला	अंश	कला	अंश	कला	अंश	कला	अंश	कला	अंश	कला	अंश	कला	अंश	कला	अंश	कला	
१	+४	२५	+१४	५८	+२२	०१	+२३	०८	+१८	०६	+८	२५	-३	०३	-१४	१९	-२१	४५	-२३	०३	-१७	१५	-७	४८	१
२	+४	४८	+१५	१७	+२२	०९	+२३	०४	+१७	५१	+८	०३	-३	२६	-१४	३८	-२१	५५	-२२	५८	-१६	५८	-७	२५	२
३	+५	११	+१५	३४	+२२	१७	+२२	५९	+१७	३५	+७	४१	-३	४९	-१४	५७	-२२	०४	-२२	५३	-१६	४१	-७	०२	३
४	+५	३४	+१५	५२	+२२	२४	+२२	५५	+१७	२०	+७	१९	-४	१३	-१५	१६	-२२	१२	-२२	४७	-१६	२३	-६	३९	४
५	+५	५७	+१६	०९	+२२	३१	+२२	४९	+१७	०४	+६	५७	-४	३६	-१५	३४	-२२	२०	-२२	४१	-१६	०५	-६	१६	५
६	+६	१९	+१६	२६	+२२	३८	+२२	४४	+१६	४८	+६	३४	-४	५९	-१५	५३	-२२	२८	-२२	३४	-१५	४७	-५	५३	६
७	+६	४२	+१६	४३	+२२	४३	+२२	३८	+१६	३१	+६	१२	-५	२२	-१६	११	-२२	३४	-२२	२७	-१५	२९	-५	३०	७
८	+७	०५	+१७	००	+२२	४८	+२२	३१	+१६	१४	+५	५०	-५	४५	-१६	२८	-२२	४०	-२२	१९	-१५	१०	-५	०७	८
९	+७	२७	+१७	१६	+२२	५४	+२२	२४	+१५	५७	+५	२७	-६	०८	-१६	४६	-२२	४७	-२२	११	-१४	५१	-४	४३	९
१०	+७	४९	+१७	३२	+२२	५९	+२२	१७	+१५	४०	+५	०४	-६	३१	-१७	०३	-२२	५२	-२२	०३	-१४	३२	-४	२०	१०
११	+८	११	+१७	४८	+२३	०३	+२२	०९	+१५	२२	+४	४२	-६	५३	-१७	२०	-२२	५८	-२१	५४	-१४	१२	-३	५६	११
१२	+८	३३	+१८	०३	+२३	०७	+२२	०१	+१५	०४	+४	१९	-७	१६	-१७	३६	-२३	०३	-२१	४४	-१३	५३	-३	३३	१२
१३	+८	५५	+१८	१८	+२३	११	+२१	५३	+१४	४६	+३	५६	-७	३८	-१७	५२	-२३	०७	-२१	३५	-१३	३३	-३	०९	१३
१४	+९	१७	+१८	३३	+२३	१५	+२१	४४	+१४	२८	+३	३३	-८	०१	-१८	०८	-२३	११	-२१	२४	-१३	१२	-२	४६	१४
१५	+९	३९	+१८	४७	+२३	१७	+२१	३५	+१४	१०	+३	१०	-८	२३	-१८	२४	-२३	१५	-२१	१४	-१२	५२	-२	२२	१५
१६	+१०	००	+१९	०१	+२३	२०	+२१	२६	+१३	५१	+२	४७	-८	४५	-१८	३९	-२३	१८	-२१	०३	-१२	३२	-१	५८	१६
१७	+१०	२१	+१९	१५	+२३	२२	+२१	१६	+१३	३२	+२	२४	-९	०७	-१८	५४	-२३	२०	-२०	५२	-१२	११	-१	३५	१७
१८	+१०	४२	+१९	२९	+२३	२४	+२१	०६	+१३	१३	+२	००	-९	२९	-१९	०९	-२३	२२	-२०	४०	-११	५०	-१	११	१८
१९	+११	०३	+१९	४२	+२३	२५	+२०	५५	+१२	५३	+१	३७	-९	५१	-१९	२३	-२३	२४	-२०	२८	-११	२९	-०	४७	१९
२०	+११	२४	+१९	५५	+२३	२६	+२०	४४	+१२	३४	+१	१४	-१०	१३	-१९	३७	-२३	२५	-२०	१५	-११	०७	-०	२३	२०
२१	+११	४५	+२०	०७	+२३	२६	+२३	३३	+१२	१४	+०	५१	-१०	३४	-१९	५१	-२३	२६	-२०	०२	-१०	४६	★०	००	२१
२२	+१२	०५	+२०	१९	+२३	२६	+२०	२१	+११	५४	+०	२७	-१०	५६	-२०	०४	-२३	२६	-१९	४९	-१०	२४	उ.०	२४	२२
२३	+१२	२५	+२०	३१	+२३	२६	+२०	०९	+११	३४	★०	०४	-११	१७	-२०	१७	-२३	२६	-१९	३५	-१०	०२	★०	४८	२३
२४	+१२	४५	+२०	४३	+२३	२५	+१९	५७	+११	१३	द.०	१९	-११	३८	-२०	२९	-२३	२५	-१९	२१	-९	४०	+१	११	२४
२५	+१३	०५	+२०	५४	+२३	२४	+१९	४४	+१०	५३	★0	४३	-११	५९	-२०	४१	-२३	२४	-१९	०७	-९	१८	+१	३५	२५
२६	+१३	२४	+२१	०४	+२३	२२	+१९	३१	+१०	३२	-1	०६	-१२	१९	-२०	५३	-२३	२३	-१८	५२	-८	५६	+१	५९	२६
२७	+१३	४४	+२१	१५	+२३	२०	+१९	१८	+१०	११	-1	३०	-१२	४०	-२१	०४	-२३	२०	-१८	३७	-८	३३	+२	२२	२७
२८	+१४	०३	+२१	२५	+२३	१८	+१९	०५	+९	५०	-1	५३	-१३	००	-२१	१५	-२३	१८	-१८	२१	-८	११	+२	४६	२८
२९	+१४	२१	+२१	३४	+२३	१५	+१८	५१	+९	२९	-2	१६	-१३	२०	-२१	२६	-२३	१५	-१८	०५	-	-	+३	०९	२९
३०	+१४	४०	+२१	४४	+२३	१२	+१८	३६	+९	०८	-2	४०	-१३	४०	-२१	३६	-२३	११	-१७	४९	-	-	+३	३२	३०
३१	-	-	+२१	५२	-	-	+१८	२२	+८	४६		-	-१४	००			-२३	०७	-१७	३३	-	-	+३	५६	३१

● सुगम सूर्यक्रान्ति सारिणी ●

प्रत्येक अंग्रेजी मास तारीख अनुसार सारिणी की स्पष्टता की गई है प्रति मासों के नीचे रवि क्रान्ति दक्षिण या उत्तर का वर्णन है, तथा अंश कला संकेत भी दिये गये हैं। **२२ मार्च से उत्तर क्रान्ति ● (+)धनफल प्रारंभ एवं २४ सितम्बर से दक्षिण क्रान्ति ● (–) ऋण फल** का निर्देश भी है।

❀●❀ देशान्तर संस्कार एवं पंचांग विभेद विधि ❀●❀

जोधपुर से अन्यत्र नगरों का देशान्तर जानने हेतु सुगम विधि यह है कि **जोधपुर के रेखांश** ७३-४ में से अपने इष्ट स्थान के **रेखांश** घटा देवें, शेष अंश-कला संख्या के प्राप्त होंगे। इस शेष में ४ से गुणा करें, जो गुणनफल आवेगा वह **'देशान्तर संस्कार'** मिनिट सेकण्ड में आवेगा। तथा मिनिट सैकण्ड देशान्तर फल को घटी पल में चाहें तो इस हेतु नियम २।। गुणा करने से पलात्मक 'देशान्तर' प्राप्त होगा। इसे जोधपुर से **पूर्व देशों में धन** तथा **पश्चिम देशों में ऋण** करें एवं मध्यम इष्ट नगरीय पंचांग बन जावेगा। यथा देहली रेखांश ७७।१२ जोधपुर रेखांश ७३।४ के अन्तर से शेष ४ अंश ८ कला आया इसमें ४ से गुणित फल १६।३२ आया इसे २।। से गुणन करने पर ४०।८० आया विपल में ६० से संशोधन करने पर ४२ पल **'देशान्तर'** फलाशय आया। जोधपुर से देहली पूर्व देश वश धन + संज्ञक प्रतिफल बना।

वार	समय	राहुकालवेला	समय	गुलिककालम्	समय	यमगण्डम्
रवि	सायं	४।३० से ६।०	दिवा	३।० से ४।३०	दिवा	१२।० से १।३०
सोम	प्रातः	७।३० से ९।०	दिवा	१।३० से ३।००	प्रातः	१०।३० से १२।००
मंगल	दिवा	३।० से ४।३०	दिवा	१२।०० से १।३०	प्रातः	९।०० से १०।३०
बुध	दिवा	१२।० से १।३०	प्रातः	१०।३० से १२।०	प्रातः	७।३० से ९।००
गुरू	दिवा	१।३० से ३।०	प्रातः	९।० से १०।३०	प्रातः	६।०० से ७।३०
शुक्र	प्रातः	१०।३० से १२।०	प्रातः	७।३० से ९।००	दिवा	३।०० से ४।३०
शनि	प्रातः	९।० से १०।३०	प्रातः	६।०० से ७।३०	दिवा	१।३० से ३।००

▲ **राहुकालम् – कुवेला** भारत के दक्षिण संभाग कर्नाटक, केरल, मद्रास, गोआ, आंध्र आदि में भी निर्णयसागरीय पंचांग की सन्मान्यता तथा प्रचलन है। उन जनवर्ग की सुविधा हेतु राहुकाल गुलिक-यमगंडम् आदि का गणना नियम प्रस्तुत है। इस राहुकाल का दोष विशेष है तथा यमगण्डम् का सामान्य दोष विचार है एवं गुलिककालम् निर्वाह योग्य। इस प्रकार की लोकशास्त्रीय मान्यता है।

श्री शिवद्विघटिका मुहूर्त्ताः तथा च विविध शास्त्रीय शकुन ज्ञान सूत्राणि पंचांगे निर्णय सागरे - नीमच नगरस्थे

न तिथिर्न च नक्षत्रं योगं करणं तथा। शिवस्याज्ञां समादाय देवकार्यं विचिन्तयेत्॥ माहेन्द्रममृतं वक्रं शून्यं क्षणचतुष्टयम्। क्रियते मिहिरेणेदं यात्रोद्वाहादिमंगले॥ माहेन्द्रे विजयो नित्यममृते कार्यशोभनम्। वक्रे गतिविलम्बः स्याच्छून्ये च मरणंभयम्॥ सूत्रानुसार विभिन्न प्रान्तों में ज्योतिर्विद मुहूर्त समाधान करते हैं। यहाँ कोष्ठक रचना में दिन तथा रात्रि का मान ३०-३० घटी का लिया गया है, यदि और भी काल सूक्ष्मता चाहे तो इष्ट दिन के दिनमान अथवा रात्रिमान के न्यूनाधिक होने पर अनुपात से अधिक या कम घटी मान करना युक्तियुक्त है। ● मा. अर्थात् माहेन्द्र शुभ प्रतिफल ● अ. अर्थात् अमृत-शुभ प्रतिफल ● व. अर्थात् वक्र-कष्टतः समाधान ● शू. अर्थात् शून्य-नेष्ट अशुभ फलकाल इस प्रकार का शुभाऽशुभ प्रतिफल यात्रा कार्य तथा अन्य भी आवश्यकता विशेष के मांगलिक कार्यसमाधान हेतु विचार करके समय निर्धारण कर सकते हैं। तथापि श्री मिहिराचार्य दैवज्ञ श्री द्वारा १२-१२ घन्टे का समय मानक ही मान्य रखा है। एवं २-२ घटी का प्रत्येक १ मुहूर्त्त का मानक ही गणनीय है।

♣ माघ, फाल्गुन, चैत्र, वैशाख, श्रावण और भाद्रपद ♣	
रवि	दिन - मा.२ अ.८ व.१० शू.८ अ.२ रात्रि - शू.२ मा.२ शू.२ अ.४ शू.२ व.६ शू.६ मा.२ अ.४
चन्द्र	दिन - मा.४ व.८ अ.६ व.६ अ.४ शू.२ रात्रि - व.४ मा.४ अ.२ व.८ अ.४ शू.४ व.२ शू.२
मंगल	दिन - अ.६ शू.२ व.२ अ.६ शू.८ अ.४ शू.२ रात्रि - व.४ मा.४ अ.२ व.६ अ.४ शू.२ व.२ मा.२ अ.४
बुध	दिन - व.४ अ.४ व.६ अ.४ शू.२ व.४ मा.२ अ.४ रात्रि - शू.२ अ.६ मा.४ व.४ शू.४ अ.१०
गुरू	दिन - अ.६ शू.२ व.४ अ.६ व.८ अ.४ रात्रि - व.४ मा.४ अ.२ व.८ अ.४ शू.४ अ.४
शुक्र	दिन - शू.२ अ.१६ व.८ अ.२ शू.२ रात्रि - व.४ शू.२ अ.६ व.६ मा.६ शू.२ अ.४
शनि	दिन - शू.४ व.२ शू.२ अ.८ शू.२ व.२ शू.४ अ.४ शू.२ रात्रि - व.६ अ.६ व.४ शू.४ अ.४ शू.२ अ.४

♣♠♣ ज्येष्ठ और आषाढ ♣♠♣	
रवि	दिन - अ.६ व.८ अ.८ शू.२ मा.२ शू.४ रात्रि - शू.२ अ.८ व.६ अ.६ व.४ मा.४
चन्द्र	दिन - अ.४ व.४ अ.६ व.१६ रात्रि - व.६ अ.८ व.८ मा.२ व.६
मंगल	दिन - शू.४ व.६ अ.४ शू.४ व.६ शू.२ अ.४ रात्रि - शू.२ अ.८ व.६ अ.६ व.६ मा.२
बुध	दिन - शू.२ मा.४ अ.४ व.६ शू.२ व.४ अ.६ शू.२ रात्रि - व.४ अ.४ व.८ अ.६ शू.८
गुरू	दिन - अ.४ व.६ अ.४ शू.४ व.६ शू.२ अ.४ रात्रि - व.८ अ.६ व.६ अ.६ व.४
शुक्र	दिन - अ.२ व.२ अ.६ व.६ अ.८ शू.२ व.४ रात्रि - व.४ अ.४ शू.४ अ.२ व.४ अ.४ शू.८
शनि	दिन - मा.२ शू.६ अ.८ व.१० शू.४ रात्रि - शू.२ व.४ मा.२ अ.४ शू.१० अ.२ व.२ शू.२ अ.२

♣ आश्विन, कार्त्तिक, मार्गशीर्ष और पौष ♣	
रवि	दिन - शू.४ अ.६ व.६ अ.६ व.४ अ.२ शू.२ रात्रि - शू.४ अ.४ व.६ अ.६ शू.४ व.६
चन्द्र	दिन - अ.८ मा.४ शू.६ अ.६ मा.६ रात्रि - व.६ अ.८ व.६ अ.४ शू.२ व.४
मंगल	दिन - अ.४ व.६ अ.२ शू.४ मा.६ शू.६ व.२ रात्रि - व.६ अ.८ व.६ अ.४ शू.२ व.४
बुध	दिन - शू.२ मा.४ अ.८ व.६ शू.८ व.२ रात्रि - अ.१० शू.२ व.८ अ.६ शू.२ व.२
गुरू	दिन - अ.२ शू.४ व.६ अ.४ शू.२ व.४ अ.६ मा.२ रात्रि - शू.४ व.४ शू.२ अ.६ व.६ शू.२ व.६
शुक्र	दिन - व.८ अ.४ शू.२ अ.२ व.४ अ.६ मा.४ रात्रि - व.४ शू.२ अ.६ शू.६ मा.२ शू.२ व.८
शनि	दिन - शू.४ अ.४ शू.४ अ.८ शू.२ व.४ शू.२ मा.२ रात्रि - शू.२ व.४ अ.६ व.४ अ.६ व.४ अ.४

♠ **छिक्कायाः प्रतिफलम्** मूलतया सर्दी जुकाम तथा नासिका के रोग विशेष की छींक तथा मदिरा आदि विविध मद्य-मादक पदार्थों के सेवन से उत्पन्न छींक का शुभाऽशुभ प्रभाव नहीं बनता है एवं धेनु-गाय, कन्या, विधवा स्त्री, मालन, धोबिन, रजस्वला, वैश्या, चर्मकारिन स्त्री की छींक का दुष्प्रभाव विघटित ही होता है तथा स्वस्थ स्त्री-पुरूष, बालक-बालिका को छींक का फलाशय इस प्रकार सन्मुख छींक द्वन्द्व की कारक, पीठ पिछली सुख संचारक। छींक दाहिनी द्रव्य विनाशक, वाम छींक सौख्य विधायक। उँची छींक सौख्य की सूचक, निम्न भाग की भय प्रदायक। अपनी छींक गमन की कारक, भावी हेतु खेद विचारक। छींक शकुन निर्णय अभिसार, शास्त्र भवानी तत्व विचार। ♣ ♠ ♣

भद्रा-मुख-पुच्छ-घटी ज्ञानसूत्र

उपकरण	शुक्ल पक्ष				कृष्ण पक्ष			
तिथि	४	८	११	१५	३	७	१०	१४
प्रहर	५	२	७	४	८	३	६	१
आदिमुखघटी	५	५	५	५	५	५	५	५
प्रहर	८	१	६	३	७	२	५	४
अन्त पुच्छघटी	३	३	३	३	३	३	३	३

● **विवरण सूत्र** ● तिथि प्रयोग (आरम्भ से अन्त) के घट्यादि पूर्ण मान में ८ के भाग देने से लब्धांक १ एक प्रहर का मान होगा। पुच्छ घटीकाल शुभ-मुख घटी कालनेष्ट प्रतिफल सूचक। माध्यमिक मान से ४ चार प्रहर दिन में तथा रात्रि में भी ४ प्रहर का मानक होता है। १ प्रहर का माध्यमिक मान ७ घटी ३० पल तथापि स्पष्ट दिनमान-रात्रिमान अनुसार न्यूनाधिक प्रहर मान गणितागत प्राप्त होता है। ♣ ♠ ♣

पल्ली (छिपकली) प्रपात-पतन फल

स्थान	प्रतिफल	स्थान	प्रतिफल
मस्तक	लाभ	जानु	सुखद सन्देश
ललाट	प्रियदर्शन	जंघा	सुयोग विकास
भ्रुमध्य	सुयोग सम्पर्क	हाथ	लाभद-योग
उ.ओष्ठ	धननाश	कन्धा	विकास-हर्ष
अ.ओष्ठ	धनलाभ	नाभि	लाभ-सुयोग
नासिका	विकार खेद	कटि	सुख-सुविधा
द.कर्ण	सुयोगद	द.मणिबंध	अर्थ-हानि
वा.कर्ण	लाभ योग	वा.मणिबंध	अपवाद-खेद
नेत्र	कोष वृद्धि	हृदय	लाभ-सुयोग
द.भुजा	मानद योग	मुख	सुख-सुविधा
वा.भुजा	भय विकार	गुल्फ	भय विकार
कण्ठ	विजय हर्ष	केशान्त	विबाधा खेद
स्तन	विकार खेद	द.पाद	यात्रा प्रवास
उदर	लाभ योग	वा.पाद	कार्य हानि
पृष्ठ	व्यर्थ कार्य	पादांगुली	खेद विकार

▲ पल्ली पाते (छिपकली) परिहार ▲

♣ **शांति सूत्र** - रात्रि में पल्ली पतन होने पर किसी प्रकार का दोष विशेष नहीं। परन्तु जन्म नक्षत्र दिवस मृत्यु योग (आनन्दादि) भद्रा, व्यतिपात, वैधृति तथा अष्टम चन्द्र स्थिति के समय छिपकली पतन विशेष अशुभ। दोष शान्ति हेतु गौमूत्र से आचमन करें, पंचगव्य से स्नान करें। अथवा धारित कपड़ों सहित स्नान करें, तथा ५-७ तुलसी पत्र का सेवन कर सूर्यनारायण का दर्शन-ध्यान करें। अथवा घृत-घी में मुखमण्डल की छाया देखकर अनुदान करें। एवमेव "ॐ हौं जूं सः" इस बीज मंत्र की १ माला का जप जाप शांति विधायक सूत्र।

♣ **छींक विषयक विशेष सूत्र** - आसने शयने शौचे, दाने चैव तु भोजने। वामांगे पृष्ठतश्चैव षट् छिक्कास्तु शुभावहाः॥ तथा च-छींक सूंघनी छल कर लेनो, शकुन तत्व फल नाहीं जानो।

स्त्री-पुरूष अंगस्फुरण - शकुनप्रतिफलम्

पुरूषस्य दक्षिणांगे-स्त्रीणां वामांगे स्फुरणं शुभफलप्रदम्

स्थान	प्रतिफल	स्थान	प्रतिफल	स्थान	प्रतिफल
मस्तक	भूमि लाभ	वक्षःस्थल	विजयश्री	ओष्ठ	इष्ट सिद्धि
ललाट	स्थान लाभ	हृदय	कामना फल	हनु-ठोड़ी	सुख वृद्धि
स्कन्ध	सुख विकास	कटि	व्यर्थ कार्य	कण्ठ	लाभ सुयोग
भ्रूमध्य	सुखद फल	कटि पार्श्व	सम्पर्क लाभ	ग्रीवाधः	विकारभय
भ्रूयुग्म	सुखसुविधा	नाभि	स्त्री खेद	पृष्ठ	चिन्ता खेद
कपोल	शुभ फलद	आन्त्रिक	लाभ योग	मुख	सम्पर्क सुयोग
नेत्र	लाभद योग	भग	पति सुख	भुज	सुख सुविधा
नेत्रकोण	सुख सन्देश	कुक्षि	सुप्रीति	भुजमध्य	अर्थ लाभ
नेत्र समीप	प्रिय संगम	उदर	लाभ योग	वस्तिदेश	विकास योग
नेत्र-पक्ष्म	सम्पर्क लाभ	लिंग	स्त्री सुयोग	उरू	सुसन्देश
हस्त	लाभद योग	गुदा	वाहन योग	जानु	चिन्ता खेद
नेत्रोर्ध्व	हर्ष विजय	वृषण	पुत्र लाभ	जंघा	सम्पर्क सुयोग
पादोपरि	स्थान लाभ	पादतल	ज्ञान वृद्धि	निर्णयसागर पंचांगम्	

✿❀✿ जोधपुर नगरीय-दैनिक लग्न प्रवेश समय से अन्य भारतीय प्रमुख नगरों हेतु लग्न प्रवेश समय ज्ञानार्थ-संस्कार सारिणी ✿❀✿

लग्न ➢ / ✓शहर	मेष मिनट	वृषभ मिनट	मिथुन मिनट	कर्क मिनट	सिंह मिनट	कन्या मिनट	तुला मिनट	वृश्चिक मिनट	धनु मिनट	मकर मिनट	कुंभ मिनट	मीन मिनट
अयोध्या (उत्तरप्रदेश)	-३७	-३८	-३८	-३८	-३७	-३७	-३६	-३६	-३६	-३६	-३६	-३७
अजमेर (राज)	-०७	-०७	-०६	-०७	-०७	-०७	-०६	-०६	-०६	-०६	-०६	-०७
अजीतगढ (सीकर)	-१२	-१३	-१३	-१३	-१२	-११	-१०	-०९	-०८	-०९	-१०	-११
अलवर (राज.)	-१५	-१६	-१७	-१७	-१६	-१५	-१३	-१२	-११	-१२	-१३	-१४
अहमदाबाद (गुज.)	+०५	+०७	+०८	+०८	+०६	+०२	-०१	-०४	-०५	-०४	-०२	+०१
अलीगढ (उत्तरप्रदेश)	-२२	-२३	-२४	-२३	-२२	-२१	-१९	-१७	-१७	-१७	-१८	-२०
अहमद नगर (महाराष्ट्र)	-०१	+०५	+०८	+०७	+०२	-०५	-१२	-१८	-२१	-२०	-१५	-०८
अनूप शहर (उत्तरप्रदेश)	-२३	-२५	-२६	-२५	-२४	-२२	-२०	-१८	-१७	-१७	-१९	-२१
आदिलाबाद (आन्ध्र)	-१६	-११	-०८	-०९	-१४	-२०	-२७	-३२	-३५	-३४	-२९	-२३
आबू रोड़ (राजस्थान)	+०३	+०४	+०५	+०५	+०३	+०२	००	-०१	-०२	-०२	-०१	+०१
आकोला-अमरावती	-११	-०६	-०४	-०५	-०९	-१५	-२०	-२५	-२७	-२६	-२२	-१७
आगरा (उत्तरप्रदेश)	-२१	-२१	-२१	-२२	-२१	-२०	-१९	-१८	-१८	-१८	-१९	-२०
इटावा (उत्तरप्रदेश)	-२४	-२५	-२५	-२५	-२४	-२४	-२४	-२३	-२३	-२३	-२३	-२४
इचलकरंजी (महाराष्ट्र)	+०२	+१०	+१४	+१२	+०५	-०४	-१३	-२१	-२५	-२३	-१६	-०७
इम्फाल-मणिपुर	-८२	-८१	-८०	-८१	-८२	-८३	-८४	-८६	-८६	-८६	-८५	-८४
इन्दौर (मध्यप्रदेश)	-०८	-०५	-०३	-०४	-०७	-११	-१४	-१७	-१९	-१८	-१५	-१२
उज्जैन (मध्यप्रदेश)	-११	-१०	-१०	-१०	-११	-११	-११	-११	-११	-११	-११	-११
उदयपुर (राज.)	-०१	-००	+०१	+०१	००	-०२	-०४	-०५	-०६	-०६	-०४	-०३
औरंगाबाद (महाराष्ट्र)	-०४	+०२	+०४	+०३	-०२	-०८	-१४	-१९	-२२	-२१	-१६	-१०
कटक (उड़ीसा)	-४६	-४२	-३९	-४०	-४४	-५०	-५६	-६१	-६३	-६२	-५८	-५२
कन्नौज (उत्तरप्रदेश)	-२८	-२९	-२९	-२९	-२९	-२८	-२७	-२६	-२६	-२६	-२७	-२७
कलकत्ता (बंगाल)	-५८	-५५	-५३	-५४	-५७	-६०	-६४	-६७	-६९	-६८	-६६	-६२
कच्छ-भुज (गुजरात)	+१६	+१९	+२०	+२०	+१७	+१४	+११	+०९	+०७	+०८	+१०	+१३
कानपुर (उत्तरप्रदेश)	-२९	-३०	-३०	-३०	-३०	-२९	-२९	-२९	-२९	-२९	-२९	-२९
काशी (वाराणसी)	-३९	-३८	-३८	-३८	-३९	-३९	-४०	-४१	-४२	-४२	-४१	-४०
कुचामन सिटी (राज	-०८	-०९	-०९	-०९	-०८	-०७	-०६	-०६	-०५	-०५	-०६	-०७
कोटा (राज.)	-१०	-०९	-०८	-०९	-१०	-११	-१२	-१३	-१३	-१३	-१२	-११
कोरबा (छ.गढ)	-३५	-३२	-३१	-३१	-३४	-३८	-४२	-४५	-४७	-४६	-४३	-३९
गुड़गाँव (हरियाणा)	-१८	-२०	-२१	-२०	-१९	-१७	-१४	-१२	-११	-१२	-१४	-१६
गुवाहाटी (आसाम)	-७५	-७५	-७४	-७४	-७५	-७५	-७५	-७५	-७५	-७५	-७५	-७५

लग्न ➢ / ✓शहर	मेष मिनट	वृषभ मिनट	मिथुन मिनट	कर्क मिनट	सिंह मिनट	कन्या मिनट	तुला मिनट	वृश्चिक मिनट	धनु मिनट	मकर मिनट	कुंभ मिनट	मीन मिनट
ग्वालियर (म.प्र.)	-२०	-२०	-२०	-२०	-२०	-२०	-२०	-२०	-२०	-२०	-२०	-२०
गंगापुर सिटी (राज.)	-१५	-१५	-१५	-१५	-१५	-१५	-१५	-१४	-१४	-१४	-१५	-१५
चण्डीगढ	-१९	-२३	-२५	-२४	-२१	-१६	-१२	-०७	-०५	-०६	-१०	-१४
चित्तौडगढ (राज.)	-०५	-०४	-०३	-०४	-०५	-०६	-०८	-०९	-०९	-०९	-०८	-०७
चुरू (राज.)	-०९	-११	-१२	-१२	-१०	-०८	-०६	-०४	-०३	-०४	-०५	-०७
जमशेदपुर (टाटा)	-४९	-४६	-४५	-४६	-४८	-५२	-५५	-५८	-६०	-५९	-५६	-५३
जगदलपुर (बस्तर)	-३०	-२४	-२१	-२२	-२७	-३४	-४१	-४७	-५०	-४९	-४४	-३७
जबलपुर (मध्यप्रदेश)	-२५	-२२	-२१	-२२	-२४	-२७	-३०	-३३	-३४	-३४	-३१	-२८
जयपुर (राज.)	-१२	-१२	-१३	-१२	-१२	-११	-११	-१०	-१०	-१०	-१०	-११
जालौर (राज.)	+०३	+०३	+०३	+०४	+०३	+०२	+०१	००	००	००	+०१	+०२
जावरा (मध्यप्रदेश)	-०६	-०४	-०२	-०३	-०५	-०८	-१०	-१३	-१४	-१३	-११	-०९
जीन्द (हरियाणा)	-१६	-१८	-२०	-१९	-१७	-१४	-११	-०८	-०६	-०७	-१०	-१३
जैसलमेर (राजस्थान	+०८	+०८	+०७	+०५	+०८	+०९	+०९	+१०	+१०	+१०	+०९	+०९
झाँसी (उत्तरप्रदेश)	-२२	-२१	-२१	-२१	-२१	-२२	-२३	-२३	-२४	-२४	-२३	-२२
झालावाड़ (राज.)	-११	-०९	-०८	-०९	-१०	-१२	-१४	-१५	-१६	-१६	-१६	-१३
झुंझुनू (राज.)	-११	-१२	-१३	-१३	-१२	-१०	-०८	-०६	-०५	-०६	-०७	-०९
टौंक (राज.)	-११	-११	-१०	-११	-११	-११	-११	-११	-११	-११	-११	-११
दिल्ली (देहली)	-१९	-२१	-२२	-२२	-२०	-१७	-१५	-१३	-१२	-१२	-१४	-१६
दाहोद (गुजरात)	-०२	+०१	+०३	+०२	००	-०४	-०७	-१०	-१२	-११	-०९	-०५
दौसा (राज.)	-१४	-१४	-१४	-१४	-१४	-१३	-१३	-१२	-१२	-१२	-१२	-१३
धौलपुर (राज.)	-२०	-२०	-२०	-२०	-२०	-१९	-१९	-१९	-१८	-१८	-१९	-१९
धूलिया (महाराष्ट्र)	-०२	+०२	+०५	+०४	००	-०५	-११	-१५	-१७	-१६	-१२	-०७
नागौर (राज.)	-०३	-०४	-०४	-०४	-०४	-०३	-०२	-०१	-०१	-०१	-०२	-०२
नाथद्वारा (राज.)	-०२	-०१	००	००	-०१	-०३	-०४	-०५	-०६	-०६	-०५	-०३
नीमच (म.प्र.)	-०६	-०४	-०३	-०४	-०५	-०७	-०९	-१०	-११	-११	-०९	-०७
नीम का थाना (राज.)	-१२	-१३	-१४	-१४	-१३	-११	-१०	-०९	-०८	-०८	-०९	-११
नोहर (राजस्थान)	-०९	-१२	-१३	-१३	-१०	-०७	-०४	-०२	००	-०१	-०३	-०६
नान्देड़ (महाराष्ट्र)	-११	-०५	-०२	-०४	-०९	-१५	-२२	-२८	-३१	-३०	-२५	-१८
नागपुर (महाराष्ट्र)	-२०	-१६	-१३	-१४	-१८	-२३	-२८	-३३	-३५	-३४	-३०	-२५
पटना (बिहार)	-४८	-४७	-४७	-४७	-४८	-४८	-४९	-५०	-५०	-५०	-४९	-४९

लग्न ➤ / ✓शहर	मेष मिनट	वृषभ मिनट	मिथुन मिनट	कर्क मिनट	सिंह मिनट	कन्या मिनट	तुला मिनट	वृश्चिक मिनट	धनु मिनट	मकर मिनट	कुंभ मिनट	मीन मिनट
पाली (राज.)	-०१	००	००	००	००	-०१	-०१	-०२	-०२	-०२	-०२	-०१
पिलानी (राज.)	-१२	-१४	-१४	-१४	-१३	-१०	-०८	-०६	-०५	-०६	-०८	-१०
प्रतापगढ (राज.)	-०५	-०३	-०२	-०२	-०४	-०६	-१०	-११	-१२	-११	-१०	-०७
बंगलौर (कर्नाटक)	-०८	+०३	+०८	+०६	-०३	-१५	-२८	-३९	-४४	-४१	-३२	-२०
ब्यावर (राज.)	-०५	-०५	-०४	-०५	-०५	-०५	-०५	-०५	-०५	-०५	-०५	-०५
ब्यावरा (म.प्र.)	-१४	-१२	-१०	-११	-१३	-१५	-१७	-१९	-२०	-२०	-१८	-१६
बयाना (राज.)	-१७	-१८	-१८	-१८	-१८	-१७	-१६	-१६	-१६	-१६	-१६	-१७
बाड़मेर (राज.)	+०७	+०८	+०७	+०८	+०७	+०७	+०६	+०६	+०५	+०६	+०६	+०६
बारां (राज.)	-१३	-१२	-११	-११	-१२	-१४	-१५	-१६	-१६	-१६	-१५	-१४
बांसवाड़ा (राज.)	-०३	-०१	००	००	-०२	-०५	-०८	-१०	-११	-११	-०९	-०६
बीकानेर (राज.)	-०२	-०४	-०४	-०५	-०३	-०१	००	+०२	+०३	+०२	+०१	-०१
बूंदी (राज.)	-१०	-०९	-०८	-०९	-०९	-१०	-११	-१२	-१२	-१२	-११	-११
भरतपुर (राज.)	-१८	-१९	-१९	-२०	-१९	-१८	-१७	-१६	-१६	-१६	-१७	-१८
भीलवाड़ा (राज.)	-०६	-०५	-०४	-०५	-०५	-०६	-०७	-०८	-०८	-०८	-०७	-०७
भोपाल (म.प्र.)	-१५	-१२	-१०	-११	-१४	-१७	-२०	-२२	-२४	-२३	-२१	-१८
भुवनेश्वर (उड़ीसा)	-४६	-४२	-३९	-४०	-४४	-५०	-५६	-६१	-६३	-६२	-५८	-५२
भीनमाल (राज)	+०४	+०५	+०६	+०६	+०५	+०३	+०२	+०१	००	००	+०१	+०३
भिवानी (हरियाणा)	-१५	-१७	-१८	-१७	-१५	-१३	-१०	-०८	-०७	-०७	-०९	-१२
महेन्द्रगढ (हरि.)	-१४	-१६	-१७	-१६	-१५	-१३	-११	-०९	-०८	-०९	-१०	-१२
मद्रास (चैन्नई)	-१८	-०८	-०२	-०५	-१४	-२६	-३८	-४९	-५४	-५२	-४३	-३१
मैसूर (कर्नाटक)	-०३	+०८	+१३	+११	+०२	-११	-२५	-३६	-४१	-३९	-२९	-१७
मेरठ (उत्तर प्रदेश)	-२१	-२४	-२५	-२४	-२२	-१९	-१७	-१४	-१३	-१४	-१६	-१८
मैनपुरी (उत्तर प्रदेश)	-२५	-२६	-२६	-२६	-२५	-२४	-२३	-२३	-२२	-२२	-२३	-२४
मथुरा (उ.प्र.)	-१९	-२०	-२१	-२१	-२०	-१९	-१७	-१६	-१६	-१६	-१७	-१८
मंदसौर (म.प्र.)	-०६	-०४	-०३	-०४	-०५	-०८	-१०	-१२	-१३	-१२	-११	-०८
मुम्बई (महा.)	+०७	+१३	+१६	+१५	+०९	+०२	-०५	-११	-१४	-१३	-०७	-०१
मुरैना (म.प्र.)	-२०	-२०	-२०	-२०	-२०	-२०	-२०	-२०	-२०	-२०	-२०	-२०
मेड़ता सिटी (राज.)	-०४	-०५	-०४	-०५	-०५	-०४	-०४	-०४	-०३	-०३	-०४	-०४

लग्न ➤ / ✓शहर	मेष मिनट	वृषभ मिनट	मिथुन मिनट	कर्क मिनट	सिंह मिनट	कन्या मिनट	तुला मिनट	वृश्चिक मिनट	धनु मिनट	मकर मिनट	कुंभ मिनट	मीन मिनट
रतलाम (म.प्र.)	-०६	-०३	-०१	-०३	-०५	-०८	-१०	-१३	-१४	-१४	-१२	-०९
राजसमन्द (राज.)	-०२	-०१	००	-०१	-०२	-०३	-०४	-०५	-०६	-०६	-०५	-०३
रोहतक (हरियाणा)	-१६	-१९	-२०	-१९	-१७	-१५	-१२	-१०	-०८	-०९	-११	-१४
रायपुर (छत्तीसगढ)	-३०	-२६	-२४	-२५	-२८	-३३	-३८	-४३	-४५	-४४	-४०	-३५
लूनकरणसर (राज.)	-०५	-०७	-०७	-०७	-०५	-०३	-०१	+०१	+०२	+०२	००	-०२
सागर (मध्यप्रदेश)	-२१	-१८	-१७	-१८	-२०	-२२	-२५	-२७	-२८	-२७	-२६	-२३
सूरत (गुजरात)	+०५	+०९	+१२	+११	+०७	+०२	-०३	-०७	-१०	-०९	-०५	००
शिवपुरी (म.प्र.)	-१८	-१८	-१७	-१७	-१८	-१८	-१९	-२०	-२०	-२०	-१९	-१९
श्रीगंगानगर (राज.)	-०७	-०९	-११	-१०	-०७	-०४	+०१	+०३	+०५	+०४	+०१	-०२
सरदारशहर (राज.)	-०७	-०९	-१०	-१०	-०८	-०६	-०४	-०२	-०१	-०१	-०३	-०५
सवाईमाधोपुर (राज.)	-१३	-१३	-१२	-१३	-१३	-१३	-१४	-१४	-१४	-१४	-१४	-१३
सांचौर (राज.)	+०६	+०८	+०८	+०८	+०७	+०५	+०४	+०२	+०१	+०२	+०३	+०५
सिरोही (राज.)	+०२	+०३	+०३	+०३	+०२	+०१	००	-०२	-०२	-०२	-०१	००
सीकर (राज.)	-०९	-११	-११	-११	-१०	-०९	-०७	-०६	-०५	-०६	-०७	-०८
सुजानगढ (राज.)	-०७	-०८	-०८	-०९	-०७	-०६	-०५	-०३	-०३	-०३	-०४	-०५
सूरतगढ (राज.)	-०६	-०९	-१०	-१०	-०७	-०४	-०१	+०२	+०३	+०३	००	-०३
सोजत (राज.)	-०२	-०२	-०१	-०२	-०२	-०२	-०३	-०३	-०३	-०३	-०३	-०३
हैदराबाद (आंध्र)	-१४	-०७	-०३	-०५	-११	-२०	-२८	-३६	-४०	-३८	-३२	-२३
हरिद्वार (उत्तराखण्ड)	-२४	-२७	-२९	-२८	-२५	-२२	-१८	-१४	-१३	-१४	-१६	-२०
होशंगाबाद (म.प्र.)	-१६	-१३	-११	-१२	-१४	-१८	-२१	-२४	-२६	-२५	-२३	-१९
हनुमानगढ (राज.)	-०८	-११	-१२	-१२	-०९	-०६	-०२	+०१	+०२	+०२	-०१	-०४
हिण्डौन (राज.)	-१६	-१७	-१६	-१७	-१६	-१६	-१६	-१५	-१५	-१५	-१५	-१६
हिसार (हरियाणा)	-१३	-१६	-१७	-१७	-१५	-१२	-०९	-०६	-०५	-०५	-०७	-१०
हाथरस (उत्तरप्रदेश)	-२१	-२२	-२३	-२३	-२२	-२०	-१९	-१८	-१७	-१८	-१९	-२०
डिब्रुगढ (आसाम)	-८९	-९०	-९०	-९०	-९०	-८८	-८७	-८६	-८५	-८५	-८६	-८७
डेगाना (राज.)	-०५	-०६	-०६	-०६	-०६	-०५	-०४	-०४	-०४	-०४	-०४	-०५
डीडवाना (राज.)	-०७	-०८	-०८	-०८	-०७	-०६	-०५	-०४	-०४	-०४	-०५	-०६
डूंगरपुर (राज.)	-०१	+०२	+०२	+०२	००	-०२	-०५	-०७	-०८	-०७	-०५	-०३

आपके लोकप्रिय-गणमान्य निर्णयसागरीय पंचांग में दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी ● भारतीय स्टैण्डर्ड समय घन्टा-मिनिट समय अनुसार मुद्रित है। यह मेषादि द्वादश लग्न प्रवेश तथा समाप्ति का समय जोधपुर नगर का मान्य है। जोधपुर समय से भारतीय अन्य प्रमुख नगरों के इष्ट लग्न प्रवेश तथा समाप्ति का समय ज़ानने हेतु इस २ पृष्ठीय सारिणी में द्वादश लग्नों का समय संस्कार मिनिटों में दिया गया है। ये इष्ट देशीय संस्कार चिन्हानुसार जोधपुर लग्न प्रवेश तथा समापन काल में धन + अथवा ऋण - करने से इष्ट नगर का सूक्ष्म लग्न काल विदित होगा। ● यथा उदाहरण - मुम्बई में १० अक्टूबर को वृषभ लग्न का प्रवेश काल जानना है, दिनांक १० अक्टूबर को जोधपुर में वृषभ लग्न रात्रि ८ घन्टा.१२मि. है तथा २ पृष्ठीय सारिणी कोष्ठक में मुम्बई के सामने वृषभ लग्न कोष्ठ में (+) १३ मिनट लिखे हैं एवं जोधपुर लग्न प्रवेश रात्रि ८ घण्टा १२ मि.में धन (+) योग करने पर (८।१२+०।१३)= ८ घण्टा २५ मिनिट पर मुम्बई में वृषभ लग्न प्रवेशकाल प्रारंभ होगा। ✸एवमेव सभी इष्ट नगरीय तथा समीपस्थ नगर संभाग हेतु भी इसी प्रकार गणना अनुसार स्पष्ट ज्ञान होगा। ✸

● दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी – चैत्र शुक्ल संवत् २०८२ से प्रारंभ ●

❋ अप्रैल–२०२५ मासे दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी ❋ (समय - घंटा : मिनट)

★ तारीख	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
	प्रातः	प्रातः	दिवा	दिवा	दिवा	सायं	सायं	रात्रि	अर्द्धरात्रोत्तर			
१	०७:१०	०८:४७	१०:४४	१२:५७	१५:१५	१७:३१	१९:४६	२२:०३	२४:२०	२६:२४	२८:०८	२९:३८
२	०७:०६	०८:४४	१०:४०	१२:५३	१५:११	१७:२७	१९:४२	२१:५९	२४:१६	२६:२०	२८:०४	२९:३४
३	०७:०२	०८:४०	१०:३६	१२:४९	१५:०७	१७:२३	१९:३८	२१:५६	२४:१२	२६:१६	२८:००	२९:३०
४	०६:५८	०८:३६	१०:३२	१२:४५	१५:०३	१७:१९	१९:३४	२१:५२	२४:०८	२६:१२	२७:५६	२९:२६
५	०६:५४	०८:३२	१०:२८	१२:४२	१४:५९	१७:१५	१९:३०	२१:४८	२४:०४	२६:०८	२७:५२	२९:२२
६	०६:५०	०८:२८	१०:२४	१२:३८	१४:५५	१७:११	१९:२६	२१:४४	२४:००	२६:०४	२७:४८	२९:१८
७	०६:४६	०८:२४	१०:२०	१२:३४	१४:५२	१७:०७	१९:२२	२१:४०	२३:५६	२६:००	२७:४४	२९:१४
८	०६:४२	०८:२०	१०:१७	१२:३०	१४:४८	१७:०३	१९:१८	२१:३६	२३:५३	२५:५६	२७:४०	२९:१०
९	०६:३८	०८:१६	१०:१३	१२:२६	१४:४४	१६:५९	१९:१४	२१:३२	२३:४९	२५:५२	२७:३६	२९:०७
१०	०६:३४	०८:१२	१०:०९	१२:२२	१४:४०	१६:५६	१९:११	२१:२८	२३:४५	२५:४८	२७:३३	२९:०३
११	०६:३०	०८:०८	१०:०५	१२:१८	१४:३६	१६:५२	१९:०७	२१:२४	२३:४१	२५:४४	२७:२९	२८:५९
१२	०६:२७	०८:०४	१०:०१	१२:१४	१४:३२	१६:४८	१९:०३	२१:२०	२३:३७	२५:४१	२७:२५	२८:५५
१३	०६:२३	०८:०१	०९:५७	१२:१०	१४:२८	१६:४४	१८:५९	२१:१७	२३:३३	२५:३७	२७:२१	२८:५१
१४	३०:१५	०७:५७	०९:५३	१२:०७	१४:२४	१६:४०	१८:५५	२१:१३	२३:२९	२५:३३	२७:१७	२८:४७
१५	३०:११	०७:५३	०९:५०	१२:०३	१४:२१	१६:३६	१८:५१	२१:०९	२३:२६	२५:२९	२७:१३	२८:४३
१६	३०:०७	०७:४९	०९:४६	११:५९	१४:१७	१६:३२	१८:४७	२१:०५	२३:२२	२५:२५	२७:०९	२८:४०
१७	३०:०३	०७:४५	०९:४२	११:५५	१४:१३	१६:२९	१८:४४	२१:०१	२३:१८	२५:२१	२७:०६	२८:३६
१८	३०:००	०७:४१	०९:३८	११:५१	१४:०९	१६:२५	१८:४०	२०:५७	२३:१४	२५:१८	२७:०२	२८:३२
१९	२९:५६	०७:३८	०९:३४	११:४७	१४:०५	१६:२१	१८:३६	२०:५४	२३:१०	२५:१४	२६:५८	२८:२८
२०	२९:५२	०७:३४	०९:३०	११:४४	१४:०२	१६:१७	१८:३२	२०:५०	२३:०६	२५:१०	२६:५४	२८:२४
२१	२९:४८	०७:३०	०९:२६	११:३९	१३:५७	१६:१३	१८:२८	२०:४६	२३:०२	२५:०६	२६:५०	२८:२०
२२	२९:४४	०७:२५	०९:२२	११:३५	१३:५३	१६:०९	१८:२४	२०:४१	२२:५८	२५:०२	२६:४६	२८:१६
२३	२९:३९	०७:२१	०९:१८	११:३१	१३:४९	१६:०५	१८:२०	२०:३७	२२:५४	२४:५७	२६:४२	२८:१२
२४	२९:३५	०७:१७	०९:१४	११:२७	१३:४५	१६:०१	१८:१६	२०:३३	२२:५०	२४:५३	२६:३८	२८:०८
२५	२९:३१	०७:१३	०९:१०	११:२३	१३:४१	१५:५६	१८:११	२०:२९	२२:४६	२४:४९	२६:३३	२८:०४
२६	२९:२७	०७:०९	०९:०६	११:१९	१३:३७	१५:५२	१८:०७	२०:२५	२२:४२	२४:४५	२६:२९	२७:५९
२७	२९:२३	०७:०५	०९:०१	११:१५	१३:३३	१५:४८	१८:०३	२०:२१	२२:३७	२४:४१	२६:२५	२७:५५
२८	२९:१९	०७:०१	०८:५७	११:११	१३:२८	१५:४४	१७:५९	२०:१७	२२:३३	२४:३७	२६:२१	२७:५१
२९	२९:१५	०६:५७	०८:५३	११:०७	१३:२४	१५:४०	१७:५५	२०:१३	२२:२९	२४:३३	२६:१७	२७:४७
३०	२९:११	०६:५३	०८:४९	११:०३	१३:२०	१५:३६	१७:५१	२०:०९	२२:२५	२४:२९	२६:१३	२७:४३

पता– निर्णय सागर पंचांग कार्यालय, नीमच (म.प्र.), फोन : ८९६४०९८६४०

❋ मई–२०२५ मासे दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी ❋ (समय - घंटा : मिनट)

★ तारीख	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	★ तारीख
	अर्द्धरात्रोत्तर	प्रातः	प्रातः	दिवा	दिवा	दिवा	सायं	रात्रि	रात्रि	अर्द्धरात्रोत्तर			
१	२९:०७	०६:४९	०८:४५	१०:५९	१३:१६	१५:३२	१७:४७	२०:०५	२२:२१	२४:२५	२६:०९	२७:३९	१
२	२९:०३	०६:४५	०८:४१	१०:५५	१३:१२	१५:२८	१७:४३	२०:०१	२२:१७	२४:२१	२६:०५	२७:३५	२
३	२८:५९	०६:४१	०८:३७	१०:५१	१३:०८	१५:२४	१७:३९	१९:५७	२२:१३	२४:१७	२६:०१	२७:३१	३
४	२८:५५	०६:३७	०८:३३	१०:४७	१३:०४	१५:२०	१७:३५	१९:५३	२२:०९	२४:१३	२५:५७	२७:२७	४
५	२८:५१	०६:३३	०८:२९	१०:४३	१३:००	१५:१६	१७:३१	१९:४९	२२:०५	२४:०९	२५:५३	२७:२३	५
६	२८:४७	०६:२९	०८:२५	१०:३९	१२:५७	१५:१२	१७:२७	१९:४५	२२:०१	२४:०५	२५:४९	२७:१९	६
७	२८:४३	०६:२५	०८:२२	१०:३५	१२:५३	१५:०८	१७:२३	१९:४१	२१:५८	२४:०१	२५:४५	२७:१५	७
८	२८:३९	०६:२१	०८:१८	१०:३१	१२:४९	१५:०४	१७:१९	१९:३७	२१:५४	२३:५७	२५:४१	२७:१२	८
९	२८:३५	०६:१७	०८:१४	१०:२७	१२:४५	१५:००	१७:१६	१९:३३	२१:५०	२३:५३	२५:३८	२७:०८	९
१०	२८:३१	०६:१३	०८:१०	१०:२३	१२:४१	१४:५७	१७:१२	१९:२९	२१:४६	२३:४९	२५:३४	२७:०४	१०
११	२८:२८	०६:०९	०८:०६	१०:१९	१२:३७	१४:५३	१७:०८	१९:२५	२१:४२	२३:४६	२५:३०	२७:००	११
१२	२८:२४	०६:०६	०८:०२	१०:१५	१२:३३	१४:४९	१७:०४	१९:२२	२१:३८	२३:४२	२५:२६	२६:५६	१२
१३	२८:२०	०६:०२	०७:५८	१०:१२	१२:३०	१४:४५	१७:००	१९:१८	२१:३४	२३:३८	२५:२२	२६:५२	१३
१४	२८:१६	०५:५८	०७:५५	१०:०८	१२:२६	१४:४१	१६:५६	१९:१४	२१:३१	२३:३४	२५:१८	२६:४९	१४
१५	२८:१२	२९:५०	०७:५१	१०:०४	१२:२२	१४:३८	१६:५३	१९:१०	२१:२७	२३:३०	२५:१५	२६:४५	१५
१६	२८:०९	२९:४७	०७:४७	१०:००	१२:१८	१४:३४	१६:४९	१९:०७	२१:२३	२३:२७	२५:११	२६:४१	१६
१७	२८:०५	२९:४३	०७:४४	०९:५७	१२:१५	१४:३०	१६:४५	१९:०३	२१:२०	२३:२३	२५:०७	२६:३७	१७
१८	२८:०१	२९:३९	०७:४०	०९:५३	१२:११	१४:२७	१६:४२	१८:५९	२१:१६	२३:१९	२५:०४	२६:३४	१८
१९	२७:५८	२९:३६	०७:३६	०९:४९	१२:०७	१४:२३	१६:३८	१८:५६	२१:१२	२३:१६	२५:००	२६:३०	१९
२०	२७:५४	२९:३२	०७:३२	०९:४६	१२:०४	१४:१९	१६:३४	१८:५२	२१:०९	२३:१२	२४:५६	२६:२६	२०
२१	२७:५०	२९:२८	०७:२९	०९:४२	१२:००	१४:१५	१६:३०	१८:४८	२१:०५	२३:०८	२४:५३	२६:२३	२१
२२	२७:४६	२९:२४	०७:२४	०९:३८	११:५६	१४:११	१६:२६	१८:४४	२१:००	२३:०४	२४:४८	२६:१८	२२
२३	२७:४२	२९:२०	०७:२०	०९:३३	११:५१	१४:०७	१६:२२	१८:४०	२०:५६	२३:००	२४:४४	२६:१४	२३
२४	२७:३८	२९:१६	०७:१६	०९:२९	११:४७	१४:०३	१६:१८	१८:३५	२०:५२	२२:५६	२४:४०	२६:१०	२४
२५	२७:३३	२९:११	०७:१२	०९:२५	११:४३	१३:५९	१६:१४	१८:३१	२०:४८	२२:५१	२४:३६	२६:०६	२५
२६	२७:२९	२९:०७	०७:०८	०९:२१	११:३९	१३:५४	१६:०९	१८:२७	२०:४४	२२:४७	२४:३१	२६:०२	२६
२७	२७:२५	२९:०३	०७:०४	०९:१७	११:३५	१३:५०	१६:०५	१८:२३	२०:४०	२२:४३	२४:२७	२५:५७	२७
२८	२७:२१	२८:५९	०६:५९	०९:१३	११:३१	१३:४६	१६:०१	१८:१९	२०:३५	२२:३९	२४:२३	२५:५३	२८
२९	२७:१७	२८:५५	०६:५५	०९:०९	११:२६	१३:४२	१५:५७	१८:१५	२०:३१	२२:३५	२४:१९	२५:४९	२९
३०	२७:१३	२८:५१	०६:५१	०९:०५	११:२२	१३:३८	१५:५३	१८:११	२०:२७	२२:३१	२४:१५	२५:४५	३०
३१	२७:०९	२८:४७	०६:४७	०९:००	११:१८	१३:३४	१५:४९	१८:०७	२०:२३	२२:२७	२४:११	२५:४१	३१

❊ जून–२०२५ मासे दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी ❊ (समय - घंटा : मिनट)

★ तारीख	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	★ तारीख
	अर्द्धरात्रोत्तर		प्रातः	प्रातः	दिवा	दिवा	दिवा	सायं	रात्रि	रात्रि	अर्द्धरात्रोत्तर		
१	२७:०५	२८:४३	०६:४३	०८:५६	११:१४	१३:३०	१५:४५	१८:०३	२०:१९	२२:२३	२४:०७	२५:३७	१
२	२७:०१	२८:३९	०६:३९	०८:५२	११:१०	१३:२६	१५:४१	१७:५९	२०:१५	२२:१९	२४:०३	२५:३३	२
३	२६:५७	२८:३५	०६:३५	०८:४८	११:०६	१३:२२	१५:३७	१७:५५	२०:११	२२:१५	२३:५९	२५:२९	३
४	२६:५३	२८:३१	०६:३१	०८:४४	११:०२	१३:१८	१५:३३	१७:५१	२०:०७	२२:११	२३:५५	२५:२५	४
५	२६:४९	२८:२७	०६:२७	०८:४१	१०:५८	१३:१४	१५:२९	१७:४७	२०:०३	२२:०७	२३:५१	२५:२१	५
६	२६:४५	२८:२३	०६:२३	०८:३७	१०:५५	१३:१०	१५:२५	१७:४३	१९:५९	२२:०३	२३:४७	२५:१७	६
७	२६:४१	२८:१९	०६:२०	०८:३३	१०:५१	१३:०६	१५:२१	१७:३९	१९:५६	२१:५९	२३:४३	२५:१३	७
८	२६:३७	२८:१५	०६:१६	०८:२९	१०:४७	१३:०२	१५:१७	१७:३५	१९:५२	२१:५५	२३:३९	२५:१०	८
९	२६:३३	२८:११	०६:१२	०८:२५	१०:४३	१२:५९	१५:१४	१७:३१	१९:४८	२१:५१	२३:३६	२५:०६	९
१०	२६:३०	२८:०७	०६:०८	०८:२१	१०:३९	१२:५५	१५:१०	१७:२७	१९:४४	२१:४८	२३:३२	२५:०२	१०
११	२६:२६	२८:०४	०६:०४	०८:१७	१०:३५	१२:५१	१५:०६	१७:२४	१९:४०	२१:४४	२३:२८	२४:५८	११
१२	२६:२२	२८:००	०६:००	०८:१४	१०:३१	१२:४७	१५:०२	१७:२०	१९:३६	२१:४०	२३:२४	२४:५४	१२
१३	२६:१८	२७:५६	०५:५७	०८:१०	१०:२८	१२:४३	१४:५८	१७:१६	१९:३३	२१:३६	२३:२०	२४:५०	१३
१४	२६:१४	२७:५२	०५:५३	०८:०६	१०:२४	१२:४०	१४:५५	१७:१२	१९:२९	२१:३२	२३:१७	२४:४७	१४
१५	२६:११	२७:४९	०५:४९	०८:०२	१०:२०	१२:३६	१४:५१	१७:०८	१९:२५	२१:२९	२३:१३	२४:४३	१५
१६	२६:०७	२७:४५	२९:४१	०७:५९	१०:१६	१२:३२	१४:४७	१७:०५	१९:२१	२१:२५	२३:०९	२४:३९	१६
१७	२६:०३	२७:४१	२९:३८	०७:५५	१०:१३	१२:२८	१४:४३	१७:०१	१९:१८	२१:२१	२३:०५	२४:३६	१७
१८	२६:००	२७:३७	२९:३४	०७:५१	१०:०९	१२:२५	१४:४०	१६:५७	१९:१४	२१:१८	२३:०२	२४:३२	१८
१९	२५:५६	२७:३४	२९:३०	०७:४८	१०:०५	१२:२१	१४:३६	१६:५४	१९:१०	२१:१४	२२:५८	२४:२८	१९
२०	२५:५२	२७:३०	२९:२७	०७:४४	१०:०२	१२:१७	१४:३२	१६:५०	१९:०७	२१:१०	२२:५४	२४:२५	२०
२१	२५:४९	२७:२७	२९:२३	०७:४०	०९:५८	१२:१४	१४:२९	१६:४६	१९:०३	२१:०७	२२:५१	२४:२१	२१
२२	२५:४५	२७:२३	२९:१९	०७:३६	०९:५४	१२:१०	१४:२५	१६:४२	१८:५९	२१:०३	२२:४७	२४:१७	२२
२३	२५:४०	२७:१८	२९:१५	०७:३२	०९:५०	१२:०६	१४:२१	१६:३८	१८:५५	२०:५८	२२:४३	२४:१३	२३
२४	२५:३६	२७:१४	२९:११	०७:२८	०९:४६	१२:०२	१४:१७	१६:३४	१८:५१	२०:५४	२२:३९	२४:०९	२४
२५	२५:३२	२७:१०	२९:०७	०७:२४	०९:४२	११:५८	१४:१३	१६:३०	१८:४७	२०:५०	२२:३५	२४:०५	२५
२६	२५:२८	२७:०६	२९:०३	०७:२०	०९:३८	११:५३	१४:०८	१६:२६	१८:४३	२०:४६	२२:३१	२४:०१	२६
२७	२५:२४	२७:०२	२८:५९	०७:१६	०९:३४	११:४९	१४:०४	१६:२२	१८:३९	२०:४२	२२:२६	२३:५७	२७
२८	२५:२०	२६:५८	२८:५५	०७:१२	०९:३०	११:४५	१४:००	१६:१८	१८:३५	२०:३८	२२:२२	२३:५३	२८
२९	२५:१६	२६:५४	२८:५१	०७:०८	०९:२६	११:४१	१३:५६	१६:१४	१८:३१	२०:३४	२२:१८	२३:४९	२९
३०	२५:१२	२६:५०	२८:४७	०७:०४	०९:२२	११:३७	१३:५२	१६:१०	१८:२७	२०:३०	२२:१४	२३:४५	३०

पता– निर्णय सागर पंचांग कार्यालय, नीमच (म.प्र.), फोन : ८९६४०९८६४०

❊ जुलाई–२०२५ मासे दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी ❊ (समय - घंटा : मिनट)

★ तारीख	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	★ तारीख
	अर्द्धरात्रोत्तर			प्रातः	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा	सायं	रात्रि	रात्रि	रात्रि	
१	२५:०८	२६:४६	२८:४३	०७:००	०९:१८	११:३३	१३:४८	१६:०६	१८:२३	२०:२६	२२:१०	२३:४१	१
२	२५:०४	२६:४२	२८:३९	०६:५६	०९:१४	११:२९	१३:४४	१६:०२	१८:१९	२०:२२	२२:०७	२३:३७	२
३	२५:००	२६:३८	२८:३५	०६:५२	०९:१०	११:२६	१३:४१	१५:५८	१८:१५	२०:१८	२२:०३	२३:३३	३
४	२४:५६	२६:३४	२८:३१	०६:४८	०९:०६	११:२२	१३:३७	१५:५४	१८:११	२०:१४	२१:५९	२३:२९	४
५	२४:५२	२६:३०	२८:२७	०६:४४	०९:०२	११:१८	१३:३३	१५:५०	१८:०७	२०:१०	२१:५५	२३:२५	५
६	२४:४९	२६:२६	२८:२३	०६:४०	०८:५८	११:१४	१३:२९	१५:४६	१८:०३	२०:०६	२१:५१	२३:२१	६
७	२४:४५	२६:२३	२८:१९	०६:३६	०८:५४	११:१०	१३:२५	१५:४२	१७:५९	२०:०३	२१:४७	२३:१७	७
८	२४:४१	२६:१९	२८:१५	०६:३२	०८:५०	११:०६	१३:२१	१५:३८	१७:५५	१९:५९	२१:४३	२३:१३	८
९	२४:३७	२६:१५	२८:११	०६:२८	०८:४६	११:०२	१३:१७	१५:३५	१७:५१	१९:५५	२१:३९	२३:०९	९
१०	२४:३३	२६:११	२८:०७	०६:२५	०८:४२	१०:५८	१३:१३	१५:३१	१७:४७	१९:५१	२१:३५	२३:०५	१०
११	२४:२९	२६:०७	२८:०४	०६:२१	०८:३९	१०:५४	१३:०९	१५:२७	१७:४३	१९:४७	२१:३१	२३:०१	११
१२	२४:२५	२६:०३	२८:००	०६:१७	०८:३५	१०:५०	१३:०५	१५:२३	१७:४०	१९:४३	२१:२७	२२:५७	१२
१३	२४:२१	२५:५९	२७:५६	०६:१३	०८:३१	१०:४६	१३:०१	१५:१९	१७:३६	१९:३९	२१:२३	२२:५४	१३
१४	२४:१७	२५:५५	२७:५२	०६:०९	०८:२७	१०:४३	१२:५८	१५:१५	१७:३२	१९:३५	२१:२०	२२:५०	१४
१५	२४:१४	२५:५१	२७:४८	०६:०५	०८:२३	१०:३९	१२:५४	१५:११	१७:२८	१९:३१	२१:१६	२२:४६	१५
१६	२४:१०	२५:४८	२७:४४	०६:०१	०८:१९	१०:३५	१२:५०	१५:०७	१७:२४	१९:२८	२१:१२	२२:४२	१६
१७	२४:०६	२५:४४	२७:४०	२९:५४	०८:१५	१०:३१	१२:४६	१५:०४	१७:२०	१९:२४	२१:०८	२२:३८	१७
१८	२४:०२	२५:४०	२७:३६	२९:५०	०८:११	१०:२७	१२:४२	१५:००	१७:१६	१९:२०	२१:०४	२२:३४	१८
१९	२३:५८	२५:३६	२७:३३	२९:४६	०८:०८	१०:२३	१२:३८	१४:५६	१७:१३	१९:१६	२१:००	२२:३०	१९
२०	२३:५४	२५:३२	२७:२९	२९:४२	०८:०४	१०:१९	१२:३४	१४:५२	१७:०९	१९:१२	२०:५६	२२:२७	२०
२१	२३:५०	२५:२८	२७:२५	२९:३८	०८:००	१०:१६	१२:३१	१४:४८	१७:०५	१९:०८	२०:५३	२२:२३	२१
२२	२३:४७	२५:२४	२७:२१	२९:३४	०७:५६	१०:१२	१२:२७	१४:४४	१७:०१	१९:०५	२०:४९	२२:१९	२२
२३	२३:४३	२५:२१	२७:१७	२९:३०	०७:५२	१०:०८	१२:२३	१४:४०	१६:५७	१९:०१	२०:४५	२२:१५	२३
२४	२३:३९	२५:१७	२७:१३	२९:२७	०७:४८	१०:०४	१२:१९	१४:३७	१६:५३	१८:५७	२०:४१	२२:११	२४
२५	२३:३५	२५:१३	२७:०९	२९:२३	०७:४४	१०:००	१२:१५	१४:३३	१६:४९	१८:५३	२०:३७	२२:०७	२५
२६	२३:३१	२५:०९	२७:०५	२९:१९	०७:४०	०९:५६	१२:११	१४:२९	१६:४५	१८:४९	२०:३३	२२:०३	२६
२७	२३:२७	२५:०५	२७:०२	२९:१५	०७:३७	०९:५२	१२:०७	१४:२५	१६:४२	१८:४५	२०:२९	२१:५९	२७
२८	२३:२३	२५:०१	२६:५८	२९:११	०७:३३	०९:४८	१२:०३	१४:२१	१६:३८	१८:४१	२०:२५	२१:५५	२८
२९	२३:१९	२४:५७	२६:५४	२९:०७	०७:२९	०९:४४	११:५९	१४:१७	१६:३४	१८:३७	२०:२१	२१:५२	२९
३०	२३:१५	२४:५३	२६:५०	२९:०३	०७:२५	०९:४०	११:५६	१४:१३	१६:३०	१८:३३	२०:१८	२१:४८	३०
३१	२३:११	२४:४९	२६:४६	२८:५९	०७:२१	०९:३७	११:५२	१४:०९	१६:२६	१८:२९	२०:१४	२१:४४	३१

❋ अगस्त-२०२५ मासे दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी ❋ (समय - घंटा : मिनट)

★ तारीख	मेष रात्रि	वृषभ (अर्द्धरात्रोत्तर)	मिथुन (अर्द्धरात्रोत्तर)	कर्क (अर्द्धरात्रोत्तर)	सिंह प्रातः	कन्या दिवा	तुला दिवा	वृश्चिक दिवा	धनु दिवा	मकर सायं	कुम्भ रात्रि	मीन रात्रि	★ तारीख
१	२३:०८	२४:४५	२६:४२	२८:५५	०७:१७	०९:३३	११:४८	१४:०५	१६:२२	१८:२५	२०:१०	२१:४०	१
२	२३:०४	२४:४२	२६:३८	२८:५१	०७:१३	०९:२९	११:४४	१४:०१	१६:१८	१८:२२	२०:०६	२१:३६	२
३	२३:००	२४:३८	२६:३४	२८:४७	०७:०९	०९:२५	११:४०	१३:५७	१६:१४	१८:१८	२०:०२	२१:३२	३
४	२२:५६	२४:३४	२६:३०	२८:४३	०७:०५	०९:२१	११:३६	१३:५४	१६:१०	१८:१४	१९:५८	२१:२८	४
५	२२:५२	२४:३०	२६:२६	२८:४०	०७:०१	०९:१७	११:३२	१३:५०	१६:०६	१८:१०	१९:५४	२१:२४	५
६	२२:४८	२४:२६	२६:२२	२८:३६	०६:५७	०९:१३	११:२८	१३:४६	१६:०२	१८:०६	१९:५०	२१:२०	६
७	२२:४४	२४:२२	२६:१८	२८:३२	०६:५४	०९:०९	११:२४	१३:४२	१५:५८	१८:०२	१९:४६	२१:१६	७
८	२२:४०	२४:१८	२६:१५	२८:२८	०६:५०	०९:०५	११:२०	१३:३८	१५:५५	१७:५८	१९:४२	२१:१२	८
९	२२:३६	२४:१४	२६:११	२८:२४	०६:४६	०९:०१	११:१६	१३:३४	१५:५१	१७:५४	१९:३८	२१:०८	९
१०	२२:३२	२४:१०	२६:०७	२८:२०	०६:४२	०८:५७	११:१२	१३:३०	१५:४७	१७:५०	१९:३४	२१:०५	१०
११	२२:२८	२४:०६	२६:०३	२८:१६	०६:३८	०८:५३	११:०८	१३:२६	१५:४३	१७:४६	१९:३०	२१:०१	११
१२	२२:२४	२४:०२	२५:५९	२८:१२	०६:३४	०८:४९	११:०४	१३:२२	१५:३९	१७:४२	१९:२७	२०:५७	१२
१३	२२:२०	२३:५८	२५:५५	२८:०८	०६:३०	०८:४६	११:०१	१३:१८	१५:३५	१७:३८	१९:२३	२०:५३	१३
१४	२२:१६	२३:५४	२५:५१	२८:०४	०६:२६	०८:४२	१०:५७	१३:१४	१५:३१	१७:३४	१९:१९	२०:४९	१४
१५	२२:१२	२३:५०	२५:४७	२८:००	०६:२२	०८:३८	१०:५३	१३:१०	१५:२७	१७:३०	१९:१५	२०:४५	१५
१६	२२:०८	२३:४६	२५:४३	२७:५६	०६:१८	०८:३४	१०:४९	१३:०६	१५:२३	१७:२६	१९:११	२०:४१	१६
१७	२२:०४	२३:४२	२५:३९	२७:५२	३०:१०	०८:३०	१०:४५	१३:०२	१५:१९	१७:२२	१९:०७	२०:३७	१७
१८	२२:००	२३:३८	२५:३५	२७:४८	३०:०६	०८:२६	१०:४१	१२:५८	१५:१५	१७:१८	१९:०३	२०:३३	१८
१९	२१:५७	२३:३४	२५:३१	२७:४४	३०:०२	०८:२२	१०:३७	१२:५४	१५:११	१७:१५	१८:५९	२०:२९	१९
२०	२१:५३	२३:३०	२५:२७	२७:४०	२९:५८	०८:१८	१०:३३	१२:५०	१५:०७	१७:११	१८:५५	२०:२५	२०
२१	२१:४९	२३:२६	२५:२३	२७:३६	२९:५४	०८:१४	१०:२९	१२:४६	१५:०३	१७:०७	१८:५१	२०:२१	२१
२२	२१:४५	२३:२२	२५:१९	२७:३२	२९:५०	०८:१०	१०:२५	१२:४२	१४:५९	१७:०३	१८:४७	२०:१७	२२
२३	२१:४१	२३:१८	२५:१५	२७:२८	२९:४६	०८:०६	१०:२१	१२:३८	१४:५५	१६:५९	१८:४३	२०:१३	२३
२४	२१:३७	२३:१५	२५:११	२७:२४	२९:४२	०८:०२	१०:१७	१२:३४	१४:५१	१६:५५	१८:३९	२०:०९	२४
२५	२१:३३	२३:११	२५:०७	२७:२१	२९:३८	०७:५८	१०:१३	१२:३१	१४:४७	१६:५१	१८:३५	२०:०५	२५
२६	२१:२९	२३:०७	२५:०३	२७:१७	२९:३४	०७:५४	१०:०९	१२:२७	१४:४३	१६:४७	१८:३१	२०:०१	२६
२७	२१:२५	२३:०३	२४:५९	२७:१३	२९:३१	०७:५०	१०:०५	१२:२३	१४:३९	१६:४३	१८:२७	१९:५७	२७
२८	२१:२१	२२:५९	२४:५६	२७:०९	२९:२७	०७:४६	१०:०१	१२:१९	१४:३५	१६:३९	१८:२३	१९:५३	२८
२९	२१:१७	२२:५५	२४:५२	२७:०५	२९:२३	०७:४२	०९:५७	१२:१५	१४:३२	१६:३५	१८:१९	१९:४९	२९
३०	२१:१३	२२:५१	२४:४८	२७:०१	२९:१९	०७:३८	०९:५३	१२:११	१४:२८	१६:३१	१८:१५	१९:४६	३०
३१	२१:०९	२२:४७	२४:४४	२६:५७	२९:१५	०७:३४	०९:४९	१२:०७	१४:२४	१६:२७	१८:११	१९:४२	

❋ सितम्बर-२०२५ मासे दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी ❋ (समय - घंटा : मिनट)

★ तारीख	मेष रात्रि	वृषभ रात्रि	मिथुन (अर्द्धरात्रोत्तर)	कर्क (अर्द्धरात्रोत्तर)	सिंह (अर्द्धरात्रोत्तर)	कन्या प्रातः	तुला दिवा	वृश्चिक दिवा	धनु दिवा	मकर दिवा	कुम्भ सायं	मीन सायं	★ तारीख
१	२१:०५	२२:४३	२४:४०	२६:५३	२९:११	०७:३०	०९:४५	१२:०३	१४:२०	१६:२३	१८:०८	१९:३८	१
२	२१:०१	२२:३९	२४:३६	२६:४९	२९:०७	०७:२७	०९:४२	११:५९	१४:१६	१६:१९	१८:०४	१९:३४	२
३	२०:५७	२२:३५	२४:३२	२६:४५	२९:०३	०७:२३	०९:३८	११:५५	१४:१२	१६:१५	१८:००	१९:३०	३
४	२०:५३	२२:३१	२४:२८	२६:४१	२८:५९	०७:१९	०९:३४	११:५१	१४:०८	१६:११	१७:५६	१९:२६	४
५	२०:५०	२२:२७	२४:२४	२६:३७	२८:५५	०७:१५	०९:३०	११:४७	१४:०४	१६:०८	१७:५२	१९:२२	५
६	२०:४६	२२:२३	२४:२०	२६:३३	२८:५१	०७:११	०९:२६	११:४३	१४:००	१६:०४	१७:४८	१९:१८	६
७	२०:४२	२२:२०	२४:१६	२६:२९	२८:४७	०७:०७	०९:२२	११:३९	१३:५६	१६:००	१७:४४	१९:१४	७
८	२०:३८	२२:१६	२४:१२	२६:२५	२८:४३	०७:०३	०९:१८	११:३५	१३:५२	१५:५६	१७:४०	१९:१०	८
९	२०:३४	२२:१२	२४:०८	२६:२१	२८:३९	०६:५९	०९:१४	११:३१	१३:४८	१५:५२	१७:३६	१९:०६	९
१०	२०:३०	२२:०८	२४:०४	२६:१७	२८:३५	०६:५५	०९:१०	११:२८	१३:४४	१५:४८	१७:३२	१९:०२	१०
११	२०:२६	२२:०४	२४:००	२६:१३	२८:३१	०६:५१	०९:०६	११:२४	१३:४०	१५:४४	१७:२८	१८:५८	११
१२	२०:२२	२२:००	२३:५६	२६:१०	२८:२७	०६:४७	०९:०२	११:२०	१३:३६	१५:४०	१७:२४	१८:५४	१२
१३	२०:१८	२१:५६	२३:५२	२६:०६	२८:२३	०६:४३	०८:५८	११:१६	१३:३२	१५:३६	१७:२०	१८:५०	१३
१४	२०:१४	२१:५२	२३:४८	२६:०२	२८:१९	०६:३९	०८:५४	११:१२	१३:२८	१५:३२	१७:१६	१८:४६	१४
१५	२०:१०	२१:४८	२३:४४	२५:५८	२८:१५	०६:३५	०८:५०	११:०८	१३:२४	१५:२८	१७:१२	१८:४२	१५
१६	२०:०६	२१:४४	२३:४०	२५:५४	२८:११	०६:३१	०८:४६	११:०४	१३:२०	१५:२४	१७:०८	१८:३८	१६
१७	२०:०२	२१:४०	२३:३६	२५:५०	२८:०७	३०:२३	०८:४२	११:००	१३:१६	१५:२०	१७:०४	१८:३४	१७
१८	१९:५८	२१:३६	२३:३२	२५:४६	२८:०४	३०:१९	०८:३८	१०:५६	१३:१२	१५:१६	१७:००	१८:३०	१८
१९	१९:५४	२१:३२	२३:२८	२५:४२	२८:००	३०:१५	०८:३४	१०:५२	१३:०८	१५:१२	१६:५६	१८:२६	१९
२०	१९:५०	२१:२८	२३:२४	२५:३८	२७:५६	३०:११	०८:३०	१०:४८	१३:०४	१५:०८	१६:५२	१८:२२	२०
२१	१९:४६	२१:२४	२३:२०	२५:३४	२७:५२	३०:०७	०८:२६	१०:४४	१३:००	१५:०४	१६:४८	१८:१८	२१
२२	१९:४२	२१:२०	२३:१६	२५:३०	२७:४८	३०:०३	०८:२२	१०:४०	१२:५६	१५:००	१६:४४	१८:१४	२२
२३	१९:३८	२१:१६	२३:१२	२५:२६	२७:४४	२९:५९	०८:१८	१०:३६	१२:५२	१४:५६	१६:४०	१८:१०	२३
२४	१९:३४	२१:१२	२३:०९	२५:२२	२७:४०	२९:५५	०८:१४	१०:३२	१२:४८	१४:५२	१६:३६	१८:०६	२४
२५	१९:३०	२१:०८	२३:०५	२५:१८	२७:३६	२९:५१	०८:१०	१०:२८	१२:४४	१४:४८	१६:३२	१८:०२	२५
२६	१९:२६	२१:०४	२३:०१	२५:१४	२७:३२	२९:४७	०८:०६	१०:२४	१२:४०	१४:४४	१६:२८	१७:५८	२६
२७	१९:२२	२१:००	२२:५७	२५:१०	२७:२८	२९:४३	०८:०२	१०:२०	१२:३६	१४:४०	१६:२४	१७:५४	२७
२८	१९:१८	२०:५६	२२:५३	२५:०६	२७:२४	२९:३९	०७:५८	१०:१६	१२:३३	१४:३६	१६:२०	१७:५०	२८
२९	१९:१४	२०:५२	२२:४९	२५:०२	२७:२०	२९:३५	०७:५४	१०:१२	१२:२९	१४:३२	१६:१६	१७:४६	२९
३०	१९:१०	२०:४८	२२:४५	२४:५८	२७:१६	२९:३१	०७:५०	१०:०८	१२:२५	१४:२८	१६:१२	१७:४२	३०

पता– निर्णय सागर पंचांग कार्यालय, नीमच (म.प्र.), फोन : ८९६४०९८९४०

❋ अक्टूबर–२०२५ मासे दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी ❋ (समय - घंटा : मिनट)

★ तारीख	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
	सायं	रात्रि	रात्रि	अर्द्धरात्रोत्तर			प्रातः	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा
१	१९:०६	२०:४४	२२:४१	२४:५४	२७:१२	२९:२७	०७:४६	१०:०४	१२:२१	१४:२४	१६:०८	१७:३८
२	१९:०२	२०:४०	२२:३७	२४:५०	२७:०८	२९:२३	०७:४२	१०:००	१२:१७	१४:२०	१६:०४	१७:३४
३	१८:५८	२०:३६	२२:३३	२४:४६	२७:०४	२९:१९	०७:३८	०९:५६	१२:१३	१४:१६	१६:००	१७:३०
४	१८:५४	२०:३२	२२:२९	२४:४२	२७:००	२९:१५	०७:३४	०९:५२	१२:०९	१४:१२	१५:५६	१७:२७
५	१८:५०	२०:२८	२२:२५	२४:३८	२६:५६	२९:११	०७:३०	०९:४८	१२:०५	१४:०८	१५:५२	१७:२३
६	१८:४६	२०:२४	२२:२१	२४:३४	२६:५२	२९:०७	०७:२६	०९:४४	१२:०१	१४:०४	१५:४८	१७:१९
७	१८:४२	२०:२०	२२:१७	२४:३०	२६:४८	२९:०४	०७:२२	०९:४०	११:५७	१४:००	१५:४४	१७:१५
८	१८:३८	२०:१६	२२:१३	२४:२६	२६:४४	२९:००	०७:१८	०९:३६	११:५३	१३:५६	१५:४१	१७:११
९	१८:३४	२०:१२	२२:०९	२४:२२	२६:४०	२८:५६	०७:१५	०९:३२	११:४९	१३:५२	१५:३७	१७:०७
१०	१८:३०	२०:०८	२२:०५	२४:१८	२६:३६	२८:५२	०७:११	०९:२८	११:४५	१३:४८	१५:३३	१७:०३
११	१८:२६	२०:०४	२२:०१	२४:१४	२६:३२	२८:४८	०७:०७	०९:२४	११:४१	१३:४४	१५:२९	१६:५९
१२	१८:२२	२०:००	२१:५७	२४:१०	२६:२८	२८:४४	०७:०३	०९:२०	११:३७	१३:४०	१५:२५	१६:५५
१३	१८:१९	१९:५६	२१:५३	२४:०६	२६:२४	२८:४०	०६:५९	०९:१६	११:३३	१३:३७	१५:२१	१६:५१
१४	१८:१५	१९:५३	२१:४९	२४:०२	२६:२०	२८:३६	०६:५५	०९:१२	११:२९	१३:३३	१५:१७	१६:४७
१५	१८:११	१९:४९	२१:४५	२३:५८	२६:१६	२८:३२	०६:५१	०९:०८	११:२५	१३:२९	१५:१३	१६:४३
१६	१८:०७	१९:४५	२१:४१	२३:५४	२६:१२	२८:२८	०६:४७	०९:०५	११:२१	१३:२५	१५:०९	१६:३९
१७	१८:०३	१९:४१	२१:३७	२३:५१	२६:०८	२८:२४	०६:४३	०९:०१	११:१७	१३:२१	१५:०५	१६:३५
१८	१७:५९	१९:३७	२१:३३	२३:४७	२६:०४	२८:२०	३०:३५	०८:५७	११:१३	१३:१७	१५:०१	१६:३१
१९	१७:५५	१९:३३	२१:२९	२३:४३	२६:०१	२८:१६	३०:३१	०८:५३	११:०९	१३:१३	१४:५७	१६:२७
२०	१७:५१	१९:२९	२१:२६	२३:३९	२५:५७	२८:१२	३०:२७	०८:४९	११:०६	१३:०९	१४:५३	१६:२३
२१	१७:४७	१९:२५	२१:२२	२३:३५	२५:५३	२८:०८	३०:२३	०८:४५	११:०२	१३:०५	१४:४९	१६:१९
२२	१७:४३	१९:२१	२१:१८	२३:३१	२५:४९	२८:०४	३०:१९	०८:४१	१०:५८	१३:०१	१४:४५	१६:१६
२३	१७:३९	१९:१७	२१:१४	२३:२७	२५:४५	२८:०१	३०:१६	०८:३७	१०:५४	१२:५७	१४:४२	१६:१२
२४	१७:३५	१९:१३	२१:१०	२३:२३	२५:४१	२७:५७	३०:१२	०८:३३	१०:५०	१२:५३	१४:३८	१६:०८
२५	१७:३१	१९:०९	२१:०६	२३:१९	२५:३७	२७:५३	३०:०८	०८:२९	१०:४६	१२:४९	१४:३४	१६:०४
२६	१७:२७	१९:०५	२१:०२	२३:१५	२५:३३	२७:४९	३०:०४	०८:२५	१०:४२	१२:४५	१४:३०	१६:००
२७	१७:२३	१९:०१	२०:५८	२३:११	२५:२९	२७:४५	३०:००	०८:२१	१०:३८	१२:४१	१४:२६	१५:५६
२८	१७:१९	१८:५७	२०:५४	२३:०७	२५:२५	२७:४१	२९:५६	०८:१७	१०:३४	१२:३७	१४:२२	१५:५२
२९	१७:१५	१८:५३	२०:५०	२३:०३	२५:२१	२७:३७	२९:५२	०८:१३	१०:३०	१२:३३	१४:१८	१५:४८
३०	१७:११	१८:४९	२०:४६	२२:५९	२५:१७	२७:३३	२९:४८	०८:०९	१०:२६	१२:२९	१४:१४	१५:४४
३१	१७:०७	१८:४५	२०:४२	२२:५५	२५:१३	२७:२९	२९:४४	०८:०५	१०:२२	१२:२५	१४:१०	१५:४०

❋ नवम्बर–२०२५ मासे दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी ❋ (समय - घंटा : मिनट)

★ तारीख	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	★ तारीख
	दिवा	सायं	रात्रि	रात्रि	अर्द्धरात्रोत्तर			प्रातः	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा	
१	१७:०४	१८:४१	२०:३८	२२:५१	२५:०९	२७:२५	२९:४०	०८:०१	१०:१८	१२:२१	१४:०६	१५:३६	१
२	१७:००	१८:३७	२०:३४	२२:४७	२५:०५	२७:२१	२९:३६	०७:५७	१०:१४	१२:१८	१४:०२	१५:३२	२
३	१६:५६	१८:३४	२०:३०	२२:४३	२५:०१	२७:१७	२९:३२	०७:५३	१०:१०	१२:१४	१३:५८	१५:२८	३
४	१६:५२	१८:३०	२०:२६	२२:३९	२४:५७	२७:१३	२९:२८	०७:४९	१०:०६	१२:१०	१३:५४	१५:२४	४
५	१६:४८	१८:२६	२०:२२	२२:३५	२४:५३	२७:०९	२९:२४	०७:४६	१०:०२	१२:०६	१३:५०	१५:२०	५
६	१६:४४	१८:२२	२०:१८	२२:३२	२४:४९	२७:०५	२९:२०	०७:४२	०९:५८	१२:०२	१३:४६	१५:१६	६
७	१६:४०	१८:१८	२०:१४	२२:२८	२४:४५	२७:०१	२९:१६	०७:३८	०९:५४	११:५८	१३:४२	१५:१२	७
८	१६:३६	१८:१४	२०:१०	२२:२४	२४:४२	२६:५७	२९:१२	०७:३४	०९:५०	११:५४	१३:३८	१५:०८	८
९	१६:३२	१८:१०	२०:०७	२२:२०	२४:३८	२६:५३	२९:०८	०७:३०	०९:४६	११:५०	१३:३४	१५:०४	९
१०	१६:२८	१८:०६	२०:०३	२२:१६	२४:३४	२६:४९	२९:०४	०७:२६	०९:४३	११:४६	१३:३०	१५:००	१०
११	१६:२४	१८:०२	१९:५९	२२:१२	२४:३०	२६:४५	२९:००	०७:२२	०९:३९	११:४२	१३:२६	१४:५६	११
१२	१६:२०	१७:५८	१९:५५	२२:०८	२४:२६	२६:४१	२८:५६	०७:१८	०९:३५	११:३८	१३:२२	१४:५३	१२
१३	१६:१६	१७:५४	१९:५१	२२:०४	२४:२२	२६:३८	२८:५३	०७:१४	०९:३१	११:३४	१३:१९	१४:४९	१३
१४	१६:१२	१७:५०	१९:४७	२२:००	२४:१८	२६:३४	२८:४९	०७:१०	०९:२७	११:३०	१३:१५	१४:४५	१४
१५	१६:०९	१७:४६	१९:४३	२१:५६	२४:१४	२६:३०	२८:४५	०७:०६	०९:२३	११:२६	१३:११	१४:४१	१५
१६	१६:०५	१७:४३	१९:३९	२१:५२	२४:१०	२६:२६	२८:४१	०७:०२	०९:१९	११:२३	१३:०७	१४:३७	१६
१७	१६:०१	१७:३९	१९:३५	२१:४८	२४:०६	२६:२२	२८:३७	३०:५५	०९:१५	११:१९	१३:०३	१४:३३	१७
१८	१५:५७	१७:३५	१९:३१	२१:४५	२४:०२	२६:१८	२८:३३	३०:५१	०९:११	११:१५	१२:५९	१४:२९	१८
१९	१५:५३	१७:३१	१९:२७	२१:४१	२३:५८	२६:१४	२८:२९	३०:४७	०९:०७	११:११	१२:५५	१४:२५	१९
२०	१५:४९	१७:२७	१९:२४	२१:३७	२३:५५	२६:१०	२८:२५	३०:४३	०९:०३	११:०७	१२:५१	१४:२१	२०
२१	१५:४५	१७:२३	१९:२०	२१:३३	२३:५१	२६:०६	२८:२१	३०:३९	०९:००	११:०३	१२:४७	१४:१७	२१
२२	१५:४१	१७:१९	१९:१६	२१:२९	२३:४७	२६:०२	२८:१७	३०:३५	०८:५६	१०:५९	१२:४३	१४:१४	२२
२३	१५:३७	१७:१५	१९:१२	२१:२५	२३:४३	२५:५९	२८:१४	३०:३१	०८:५२	१०:५५	१२:४०	१४:१०	२३
२४	१५:३३	१७:११	१९:०८	२१:२१	२३:३९	२५:५५	२८:१०	३०:२७	०८:४८	१०:५१	१२:३६	१४:०६	२४
२५	१५:३०	१७:०८	१९:०४	२१:१७	२३:३५	२५:५१	२८:०६	३०:२४	०८:४४	१०:४८	१२:३२	१४:०२	२५
२६	१५:२६	१७:०४	१९:००	२१:१४	२३:३१	२५:४७	२८:०२	३०:२०	०८:४०	१०:४४	१२:२८	१३:५८	२६
२७	१५:२२	१७:००	१८:५६	२१:१०	२३:२८	२५:४३	२७:५८	३०:१६	०८:३६	१०:४०	१२:२४	१३:५४	२७
२८	१५:१८	१६:५६	१८:५३	२१:०६	२३:२४	२५:३९	२७:५४	३०:१२	०८:३३	१०:३६	१२:२०	१३:५०	२८
२९	१५:१४	१६:५२	१८:४९	२१:०२	२३:२०	२५:३५	२७:५१	३०:०८	०८:२९	१०:३२	१२:१६	१३:४७	२९
३०	१५:१०	१६:४८	१८:४५	२०:५८	२३:१६	२५:३२	२७:४७	३०:०४	०८:२५	१०:२८	१२:१३	१३:४३	३०

पता– निर्णय सागर पंचांग कार्यालय, नीमच (म.प्र.), फोन : ८९६४०९८६४०

❊ दिसम्बर–२०२५ मासे दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी ❊ (समय - घंटा : मिनट)

★ तारीख	मेष दिवा	वृषभ दिवा	मिथुन सायं	कर्क रात्रि	सिंह रात्रि	कन्या (अर्द्धरात्रोत्तर)	तुला (अर्द्धरात्रोत्तर)	वृश्चिक (अर्द्धरात्रोत्तर)	धनु प्रातः	मकर दिवा	कुम्भ दिवा	मीन दिवा
१	१५:०७	१६:४४	१८:४१	२०:५४	२३:१२	२५:२८	२७:४३	३०:००	०८:२१	१०:२५	१२:०९	१३:३९
२	१५:०३	१६:४१	१८:३७	२०:५०	२३:०८	२५:२४	२७:३९	२९:५७	०८:१७	१०:२१	१२:०५	१३:३५
३	१४:५९	१६:३७	१८:३३	२०:४७	२३:०४	२५:२०	२७:३५	२९:५३	०८:१३	१०:१७	१२:०१	१३:३१
४	१४:५५	१६:३३	१८:२९	२०:४३	२३:००	२५:१६	२७:३१	२९:४९	०८:०९	१०:१३	११:५७	१३:२७
५	१४:५१	१६:२९	१८:२६	२०:३९	२२:५७	२५:१२	२७:२७	२९:४५	०८:०५	१०:०९	११:५३	१३:२३
६	१४:४७	१६:२५	१८:२२	२०:३५	२२:५३	२५:०८	२७:२३	२९:४१	०८:०२	१०:०५	११:४९	१३:१९
७	१४:४३	१६:२१	१८:१८	२०:३१	२२:४९	२५:०४	२७:१९	२९:३७	०७:५८	१०:०१	११:४५	१३:१६
८	१४:३९	१६:१७	१८:१४	२०:२७	२२:४५	२५:००	२७:१६	२९:३३	०७:५४	०९:५७	११:४१	१३:१२
९	१४:३५	१६:१३	१८:१०	२०:२३	२२:४१	२४:५७	२७:१२	२९:२९	०७:५०	०९:५३	११:३८	१३:०८
१०	१४:३१	१६:०९	१८:०६	२०:१९	२२:३७	२४:५३	२७:०८	२९:२५	०७:४६	०९:४९	११:३४	१३:०४
११	१४:२७	१६:०५	१८:०२	२०:१५	२२:३३	२४:४९	२७:०४	२९:२१	०७:४२	०९:४५	११:३०	१३:००
१२	१४:२३	१६:०१	१७:५८	२०:११	२२:२९	२४:४५	२७:००	२९:१७	०७:३८	०९:४१	११:२६	१२:५६
१३	१४:१९	१५:५७	१७:५४	२०:०७	२२:२५	२४:४१	२६:५६	२९:१३	०७:३४	०९:३७	११:२२	१२:५२
१४	१४:१५	१५:५३	१७:५०	२०:०३	२२:२१	२४:३७	२६:५२	२९:०९	०७:३०	०९:३३	११:१८	१२:४८
१५	१४:११	१५:४९	१७:४६	१९:५९	२२:१७	२४:३३	२६:४८	२९:०५	०७:२६	०९:२९	११:१४	१२:४४
१६	१४:०७	१५:४५	१७:४२	१९:५५	२२:१३	२४:२९	२६:४४	२९:०१	३१:१८	०९:२५	११:१०	१२:४०
१७	१४:०३	१५:४१	१७:३८	१९:५१	२२:०९	२४:२५	२६:४०	२८:५७	३१:१४	०९:२१	११:०६	१२:३६
१८	१३:५९	१५:३७	१७:३४	१९:४७	२२:०५	२४:२१	२६:३६	२८:५३	३१:१०	०९:१७	११:०२	१२:३२
१९	१३:५५	१५:३३	१७:३०	१९:४३	२२:०१	२४:१७	२६:३२	२८:४९	३१:०६	०९:१३	१०:५७	१२:२८
२०	१३:५१	१५:२९	१७:२६	१९:३९	२१:५७	२४:१२	२६:२७	२८:४५	३१:०२	०९:०९	१०:५३	१२:२३
२१	१३:४७	१५:२५	१७:२२	१९:३५	२१:५३	२४:०८	२६:२३	२८:४१	३०:५८	०९:०५	१०:४९	१२:१९
२२	१३:४३	१५:२१	१७:१८	१९:३१	२१:४९	२४:०४	२६:१९	२८:३७	३०:५४	०९:०१	१०:४५	१२:१५
२३	१३:४०	१५:१७	१७:१४	१९:२७	२१:४५	२४:०१	२६:१६	२८:३३	३०:५०	०८:५८	१०:४२	१२:१२
२४	१३:३६	१५:१४	१७:१०	१९:२४	२१:४२	२३:५७	२६:१२	२८:३०	३०:४६	०८:५४	१०:३८	१२:०८
२५	१३:३२	१५:१०	१७:०७	१९:२०	२१:३८	२३:५४	२६:०९	२८:२६	३०:४३	०८:५०	१०:३४	१२:०५
२६	१३:२९	१५:०७	१७:०३	१९:१६	२१:३४	२३:५०	२६:०५	२८:२२	३०:३९	०८:४७	१०:३१	१२:०१
२७	१३:२५	१५:०३	१६:५९	१९:१३	२१:३१	२३:४६	२६:०१	२८:१९	३०:३५	०८:४३	१०:२७	११:५७
२८	१३:२१	१४:५९	१६:५६	१९:०९	२१:२७	२३:४२	२५:५७	२८:१५	३०:३२	०८:३९	१०:२३	११:५४
२९	१३:१७	१४:५५	१६:५२	१९:०५	२१:२३	२३:३९	२५:५४	२८:११	३०:२८	०८:३५	१०:२०	११:५०
३०	१३:१४	१४:५२	१६:४८	१९:०१	२१:१९	२३:३५	२५:५०	२८:०८	३०:२४	०८:३२	१०:१६	११:४६
३१	१३:१०	१४:४८	१६:४४	१८:५८	२१:१६	२३:३१	२५:४६	२८:०४	३०:२०	०८:२८	१०:१२	११:४२

❊ जनवरी–२०२६ मासे दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी ❊ (समय - घंटा : मिनट)

★ तारीख	मेष दिवा	वृषभ दिवा	मिथुन दिवा	कर्क सायं	सिंह रात्रि	कन्या रात्रि	तुला (अर्द्धरात्रोत्तर)	वृश्चिक (अर्द्धरात्रोत्तर)	धनु (अर्द्धरात्रोत्तर)	मकर प्रातः	कुम्भ दिवा	मीन दिवा	★ तारीख
१	१३:०६	१४:४४	१६:४१	१८:५४	२१:१२	२३:२७	२५:४२	२८:००	३०:१७	०८:२४	१०:०८	११:३८	१
२	१३:०२	१४:४०	१६:३७	१८:५०	२१:०८	२३:२४	२५:३९	२७:५६	३०:१३	०८:२०	१०:०५	११:३५	२
३	१२:५८	१४:३६	१६:३३	१८:४६	२१:०४	२३:२०	२५:३५	२७:५२	३०:०९	०८:१६	१०:०१	११:३१	३
४	१२:५५	१४:३२	१६:२९	१८:४२	२१:००	२३:१६	२५:३१	२७:४८	३०:०५	०८:१३	०९:५७	११:२७	४
५	१२:५१	१४:२९	१६:२५	१८:३८	२०:५६	२३:१२	२५:२७	२७:४५	३०:०१	०८:०९	०९:५३	११:२३	५
६	१२:४७	१४:२५	१६:२१	१८:३४	२०:५२	२३:०८	२५:२३	२७:४१	२९:५७	०८:०५	०९:४९	११:१९	६
७	१२:४३	१४:२१	१६:१७	१८:३१	२०:४८	२३:०४	२५:१९	२७:३७	२९:५३	०८:०१	०९:४५	११:१५	७
८	१२:३९	१४:१७	१६:१३	१८:२७	२०:४४	२३:००	२५:१५	२७:३३	२९:४९	०७:५७	०९:४१	११:११	८
९	१२:३५	१४:१३	१६:०९	१८:२३	२०:४०	२२:५६	२५:११	२७:२९	२९:४५	०७:५३	०९:३७	११:०७	९
१०	१२:३१	१४:०९	१६:०५	१८:१९	२०:३६	२२:५२	२५:०७	२७:२५	२९:४१	०७:४९	०९:३३	११:०३	१०
११	१२:२७	१४:०५	१६:०१	१८:१४	२०:३२	२२:४८	२५:०३	२७:२१	२९:३७	०७:४५	०९:२९	१०:५९	११
१२	१२:२३	१४:०१	१५:५७	१८:१०	२०:२८	२२:४४	२४:५९	२७:१७	२९:३३	०७:४१	०९:२५	१०:५५	१२
१३	१२:१९	१३:५६	१५:५३	१८:०६	२०:२४	२२:४०	२४:५५	२७:१२	२९:२९	०७:३७	०९:२१	१०:५१	१३
१४	१२:१४	१३:५२	१५:४९	१८:०२	२०:२०	२२:३६	२४:५१	२७:०८	२९:२५	०७:३२	०९:१७	१०:४७	१४
१५	१२:१०	१३:४८	१५:४५	१७:५८	२०:१६	२२:३२	२४:४७	२७:०४	२९:२१	३१:२४	०९;१३	१०:४३	१५
१६	१२:०६	१३:४४	१५:४१	१७:५४	२०:१२	२२:२७	२४:४२	२७:००	२९:१७	३१:२०	०९:०८	१०:३८	१६
१७	१२:०२	१३:४०	१५:३६	१७:५०	२०:०८	२२:२३	२४:३८	२६:५६	२९:१२	३१:१६	०९:०४	१०:३४	१७
१८	११:५८	१३:३६	१५:३२	१७:४५	२०:०३	२२:१९	२४:३४	२६:५२	२९:०८	३१:१२	०९:००	१०:३०	१८
१९	११:५३	१३:३१	१५:२८	१७:४१	१९:५९	२२:१५	२४:३०	२६:४७	२९:०४	३१:०८	०८:५६	१०:२६	१९
२०	११:४९	१३:२७	१५:२४	१७:३७	१९:५५	२२:१०	२४:२५	२६:४३	२९:००	३१:०३	०८:५१	१०:२२	२०
२१	११:४६	१३:२४	१५:२०	१७:३३	१९:५१	२२:०७	२४:२२	२६:३९	२८:५६	३१:००	०८:४८	१०:१८	२१
२२	११:४२	१३:२०	१५:१६	१७:३०	१९:४८	२२:०३	२४:१८	२६:३६	२८:५२	३०:५६	०८:४४	१०:१४	२२
२३	११:३८	१३:१६	१५:१३	१७:२६	१९:४४	२२:००	२४:१५	२६:३२	२८:४९	३०:५२	०८:४१	१०:११	२३
२४	११:३५	१३:१३	१५:०९	१७:२२	१९:४०	२१:५६	२४:११	२६:२८	२८:४५	३०:४९	०८:३७	१०:०७	२४
२५	११:३१	१३:०९	१५:०५	१७:१९	१९:३७	२१:५२	२४:०७	२६:२५	२८:४१	३०:४५	०८:३३	१०:०३	२५
२६	११:२७	१३:०५	१५:०२	१७:१५	१९:३३	२१:४८	२४:०३	२६:२१	२८:३८	३०:४१	०८:२९	०९:५९	२६
२७	११:२३	१३:०१	१४:५८	१७:११	१९:२९	२१:४५	२४:००	२६:१७	२८:३४	३०:३७	०८:२६	०९:५६	२७
२८	११:२०	१२:५८	१४:५४	१७:०७	१९:२५	२१:४१	२३:५६	२६:१४	२८:३०	३०:३४	०८:२२	०९:५२	२८
२९	११:१६	१२:५४	१४:५०	१७:०४	१९:२१	२१:३७	२३:५२	२६:१०	२८:२६	३०:३०	०८:१८	०९:४८	२९
३०	११:१२	१२:५०	१४:४७	१७:००	१९:१८	२१:३३	२३:४८	२६:०६	२८:२३	३०:२६	०८:१४	०९:४४	३०
३१	११:०८	१२:४६	१४:४३	१६:५६	१९:१४	२१:२९	२३:४४	२६:०२	२८:१९	३०:२२	०८:१०	०९:४०	३१

★ ❊ फरवरी-२०२६ मासे दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी ❊ (समय - घंटा : मिनट)

तारीख	मेष दिवा	वृषभ दिवा	मिथुन दिवा	कर्क दिवा	सिंह सायं	कन्या रात्रि	तुला रात्रि	वृश्चिक (अर्द्धरात्रोत्तर)	धनु (अर्द्धरात्रोत्तर)	मकर (अर्द्धरात्रोत्तर)	कुम्भ प्रात:	मीन दिवा
१	११:०४	१२:४२	१४:३९	१६:५२	१९:१०	२१:२६	२३:४१	२५:५८	२८:१५	३०:१८	०८:०७	०९:३७
२	११:००	१२:३८	१४:३५	१६:४८	१९:०६	२१:२२	२३:३७	२५:५४	२८:११	३०:१४	०८:०३	०९:३३
३	१०:५६	१२:३४	१४:३१	१६:४४	१९:०२	२१:१८	२३:३३	२५:५०	२८:०७	३०:११	०७:५९	०९:२९
४	१०:५३	१२:३०	१४:२७	१६:४०	१८:५८	२१:१४	२३:२९	२५:४६	२८:०३	३०:०७	०७:५५	०९:२५
५	१०:४९	१२:२७	१४:२३	१६:३६	१८:५४	२१:१०	२३:२५	२५:४२	२७:५९	३०:०३	०७:५१	०९:२१
६	१०:४५	१२:२३	१४:१९	१६:३२	१८:५०	२१:०६	२३:२१	२५:३९	२७:५५	२९:५९	०७:४७	०९:१७
७	१०:४१	१२:१९	१४:१५	१६:२८	१८:४६	२१:०२	२३:१७	२५:३५	२७:५१	२९:५५	०७:४३	०९:१३
८	१०:३७	१२:१५	१४:११	१६:२४	१८:४२	२०:५८	२३:१३	२५:३१	२७:४७	२९:५१	०७:३९	०९:०९
९	१०:३३	१२:११	१४:०७	१६:२०	१८:३८	२०:५४	२३:०९	२५:२६	२७:४३	२९:४७	०७:३५	०९:०५
१०	१०:२९	१२:०६	१४:०३	१६:१६	१८:३४	२०:५०	२३:०५	२५:२२	२७:३९	२९:४३	०७:३१	०९:०१
११	१०:२४	१२:०२	१३:५९	१६:१२	१८:३०	२०:४६	२३:०१	२५:१८	२७:३५	२९:३९	०७:२७	०८:५७
१२	१०:२०	११:५८	१३:५५	१६:०८	१८:२६	२०:४२	२२:५७	२५:१४	२७:३१	२९:३४	०७:२३	०८:५३
१३	१०:१६	११:५४	१३:५१	१६:०४	१८:२२	२०:३८	२२:५३	२५:१०	२७:२७	२९:३०	३१:१५	०८:४९
१४	१०:१२	११:५०	१३:४७	१६:००	१८:१८	२०:३३	२२:४८	२५:०६	२७:२३	२९:२६	३१:१०	०८:४५
१५	१०:०८	११:४६	१३:४३	१५:५६	१८:१४	२०:२९	२२:४४	२५:०२	२७:१९	२९:२२	३१:०६	०८:४०
१६	१०:०४	११:४२	१३:३८	१५:५२	१८:१०	२०:२५	२२:४०	२४:५८	२७:१४	२९:१८	३१:०२	०८:३६
१७	१०:००	११:३८	१३:३४	१५:४७	१८:०५	२०:२१	२२:३६	२४:५४	२७:१०	२९:१४	३०:५८	०८:३२
१८	०९:५६	११:३३	१३:३०	१५:४३	१८:०१	२०:१७	२२:३२	२४:४९	२७:०६	२९:१०	३०:५४	०८:२८
१९	०९:५२	११:२९	१३:२६	१५:३९	१७:५७	२०:१३	२२:२८	२४:४५	२७:०२	२९:०६	३०:५०	०८:२४
२०	०९:४८	११:२६	१३:२२	१५:३६	१७:५३	२०:०९	२२:२४	२४:४२	२६:५८	२९:०२	३०:४६	०८:२०
२१	०९:४४	११:२२	१३:१८	१५:३२	१७:५०	२०:०५	२२:२०	२४:३८	२६:५४	२८:५८	३०:४२	०८:१६
२२	०९:४०	११:१८	१३:१५	१५:२८	१७:४६	२०:०१	२२:१६	२४:३४	२६:५१	२८:५४	३०:३८	०८:१२
२३	०९:३६	११:१४	१३:११	१५:२४	१७:४२	१९:५८	२२:१३	२४:३०	२६:४७	२८:५०	३०:३५	०८:०९
२४	०९:३२	११:१०	१३:०७	१५:२०	१७:३८	१९:५४	२२:०९	२४:२६	२६:४३	२८:४७	३०:३१	०८:०५
२५	०९:२९	११:०७	१३:०३	१५:१६	१७:३४	१९:५०	२२:०५	२४:२३	२६:३९	२८:४३	३०:२७	०८:०१
२६	०९:२५	११:०३	१२:५९	१५:१३	१७:३०	१९:४६	२२:०१	२४:१९	२६:३५	२८:३९	३०:२३	०७:५७
२७	०९:२१	१०:५९	१२:५५	१५:०९	१७:२७	१९:४२	२१:५७	२४:१५	२६:३१	२८:३५	३०:१९	०७:५३
२८	०९:१७	१०:५५	१२:५२	१५:०५	१७:२३	१९:३८	२१:५३	२४:११	२६:२८	२८:३१	३०:१५	०७:४९

● **दैनिक लग्नसारणी स्पष्टता** ● प्रत्येक अंग्रेजी माह क्रम से प्रस्तुत है तथा प्रत्येक तारीख को मेषादि क्रम से लग्नों का प्रवेशकाल दिया है यथा-१ फरवरी, २०२६ को रेलवे समयानुसार (२४:००+अगले दिन सुर्योदय तक) दिन के ११:०४ से मेष लग्न प्रारम्भ तथा दिन के १२:४२ तक, यहां से वृषभ लग्न प्रारंभ एवं सभी हेतु यही क्रम समझें। ● **निर्णयसागर पंचांग** ●

★ ❊ मार्च-२०२६ मासे दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी ❊ (समय - घंटा : मिनट) ★

तारीख	मेष दिवा	वृषभ दिवा	मिथुन दिवा	कर्क दिवा	सिंह दिवा	कन्या सायं	तुला रात्रि	वृश्चिक रात्रि	धनु (अर्द्धरात्रोत्तर)	मकर (अर्द्धरात्रोत्तर)	कुम्भ (अर्द्धरात्रोत्तर)	मीन प्रात:	तारीख
१	०९:१३	१०:५१	१२:४८	१५:०१	१७:१९	१९:३४	२१:४९	२४:०७	२६:२४	२८:२७	३०:११	०७:४६	१
२	०९:०९	१०:४७	१२:४४	१४:५७	१७:१५	१९:३१	२१:४६	२४:०३	२६:२०	२८:२३	३०:०८	०७:४२	२
३	०९:०५	१०:४३	१२:४०	१४:५३	१७:११	१९:२७	२१:४२	२३:५९	२६:१६	२८:१९	३०:०४	०७:३८	३
४	०९:०१	१०:३९	१२:३६	१४:४९	१७:०७	१९:२३	२१:३८	२३:५५	२६:१२	२८:१६	३०:००	०७:३४	४
५	०८:५८	१०:३५	१२:३२	१४:४५	१७:०३	१९:१९	२१:३४	२३:५१	२६:०८	२८:१२	२९:५६	०७:३०	५
६	०८:५४	१०:३२	१२:२८	१४:४१	१६:५९	१९:१५	२१:३०	२३:४८	२६:०४	२८:०८	२९:५२	०७:२६	६
७	०८:५०	१०:२८	१२:२४	१४:३७	१६:५५	१९:११	२१:२६	२३:४४	२६:००	२८:०४	२९:४८	०७:२२	७
८	०८:४६	१०:२४	१२:२०	१४:३४	१६:५१	१९:०७	२१:२२	२३:४०	२५:५६	२८:००	२९:४४	०७:१८	८
९	०८:४२	१०:२०	१२:१६	१४:३०	१६:४७	१९:०३	२१:१८	२३:३६	२५:५२	२७:५६	२९:४०	०७:१४	९
१०	०८:३८	१०:१६	१२:१२	१४:२६	१६:४३	१८:५९	२१:१४	२३:३२	२५:४८	२७:५२	२९:३६	०७:१०	१०
११	०८:३४	१०:१२	१२:०८	१४:२२	१६:४०	१८:५५	२१:१०	२३:२८	२५:४४	२७:४८	२९:३२	०७:०६	११
१२	०८:३०	१०:०८	१२:०४	१४:१८	१६:३६	१८:५१	२१:०६	२३:२४	२५:४०	२७:४४	२९:२८	०७:०२	१२
१३	०८:२६	१०:०४	१२:०१	१४:१४	१६:३२	१८:४७	२१:०२	२३:२०	२५:३७	२७:४०	२९:२४	०६:५८	१३
१४	०८:२२	१०:००	११:५७	१४:१०	१६:२८	१८:४३	२०:५८	२३:१६	२५:३३	२७:३६	२९:२०	०६:५४	१४
१५	०८:१८	०९:५६	११:५३	१४:०६	१६:२४	१८:३९	२०:५४	२३:१२	२५:२९	२७:३२	२९:१६	३०:४६	१५
१६	०८:१४	०९:५२	११:४९	१४:०२	१६:२०	१८:३५	२०:५०	२३:०८	२५:२५	२७:२८	२९:१२	३०:४२	१६
१७	०८:१०	०९:४८	११:४५	१३:५८	१६:१६	१८:३१	२०:४६	२३:०४	२५:२१	२७:२४	२९:०८	३०:३९	१७
१८	०८:०६	०९:४४	११:४१	१३:५४	१६:१२	१८:२७	२०:४२	२३:००	२५:१७	२७:२०	२९:०४	३०:३५	१८
१९	०८:०२	०९:४०	११:३७	१३:५०	१६:०८	१८:२३	२०:३८	२२:५६	२५:१३	२७:१६	२९:००	३०:३१	१९

★ ❊ मार्च-२०२५ मासे दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी ❊ (समय - घंटा : मिनट) ★

तारीख	मेष दिवा	वृषभ दिवा	मिथुन दिवा	कर्क दिवा	सिंह दिवा	कन्या सायं	तुला रात्रि	वृश्चिक रात्रि	धनु (अर्द्धरात्रोत्तर)	मकर (अर्द्धरात्रोत्तर)	कुम्भ (अर्द्धरात्रोत्तर)	मीन (अर्द्धरात्रोत्तर)	तारीख
३०	०७:१७	०८:५५	१०:५२	१३:०५	१५:२३	१७:३९	१९:५४	२२:११	२४:२८	२६:३१	२८:१६	२९:४६	३०
३१	०७:१३	०८:५१	१०:४८	१३:०१	१५:१९	१७:३५	१९:५०	२२:०७	२४:२४	२६:२८	२८:१२	२९:४२	३१

वास्तु दोष निवारण उपाय १. जब भी पूजा करें तो मुख उत्तर-पूर्व या उत्तर-पश्चिम की ओर करके बैठें। २. रसोई घर गलत स्थान पर हो तो अग्निकोण में एक बल्ब लगा दें और सुबह-शाम उसे अनिवार्य रूप से जलायें। ३. जब भी पानी पीएं अपना मुख उत्तर-पूर्व की ओर रखें। ४. जब भी भोजन ग्रहण करें थाली दक्षिण पूर्व की ओर रखें और पूर्वाभिमुख होकर भोजन करें। ५. जब भी सोएं दक्षिण-पश्चिम कोण में दक्षिण की ओर सिराहना करके सोने से नींद गहरी और अच्छी आती है। ६.यदि प्लाट खरीदे हुए बहुत समय हो गया हो और मकान बनने का योग न आ रहा हो तो उस प्लाट में अनार का पौधा पुष्य नक्षत्र में लगायें। ७. घर के दरवाजे पर घुड़नाल (लोह की) लगायें। यह अपने आप निकली हुई होनी चाहिए। इन नियमों को व्यवहार में लाने से सुख-समृद्धि की वृद्धि होती है।

सूर्योदय दैनिक ग्रहस्पष्ट – चैत्र शुक्ल संवत् २०८२ से प्रारंभ

✳ अप्रैल सन् २०२५ ई. सूर्योदये इ. 00I00 दैनिक ग्रहस्पष्ट

मासारंभे अयनांशाः २४° १२' ३७"

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध (वक्री)	गुरु	शुक्र (वक्री)	शनि	राहु
	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.
१	११:१७:२०:५१	००:२३:४९:४५	०२:२९:२४:१८	११:०४:३०:३८	०१:२१:४६:२९	११:०३:१७:५७	११:००:१७:०६	११:०२:३१:१०
२	११:१८:२०:०२	०१:०८:३५:५१	०२:२९:४४:०६	११:०३:५८:१५	०१:२१:५५:५०	११:०२:५०:५८	११:००:२४:१७	११:०२:२७:५९
३	११:१९:१९:११	०१:२३:०१:०३	०३:००:०४:१५	११:०३:३१:०५	०१:२२:०५:१८	११:०२:२६:०३	११:००:३१:२६	११:०२:२४:४९
४	११:२०:१८:१७	०२:०७:०१:५९	०३:००:२४:४५	११:०३:०९:२०	०१:२२:१४:५३	११:०२:०३:१६	११:००:३८:३४	११:०२:२१:३८
५	११:२१:१७:२१	०२:२०:३७:५३	०३:००:४५:३५	११:०२:५३:०८	०१:२२:२४:३४	११:०१:४२:४५	११:००:४५:४१	११:०२:१८:२७
६	११:२२:१६:२२	०३:०३:४९:५७	०३:०१:०६:४५	११:०२:४२:३१	०१:२२:३४:२२	११:०१:२४:३२	११:००:५२:४६	११:०२:१५:१७
७	११:२३:१५:२१	०३:१६:४०:४४	०३:०१:२८:१४	११:०२:३७:२७ मा	०१:२२:४४:१७	११:०१:०८:४२	११:००:५९:४९	११:०२:१२:०६
८	११:२४:१४:१८	०३:२९:१३:३०	०३:०१:५०:०२	११:०२:३७:५१	०१:२२:५४:१७	११:००:५५:१७	११:०१:०६:५१	११:०२:०८:५५
९	११:२५:१३:१३	०४:११:३१:४४	०३:०२:१२:०८	११:०२:४३:३६	०१:२३:०४:२४	११:००:४४:१९	११:०१:१३:५०	११:०२:०५:४५
१०	११:२६:१२:०६	०४:२३:३८:४५	०३:०२:३४:३२	११:०२:५४:३०	०१:२३:१४:३७	११:००:३५:४८	११:०१:२०:४८	११:०२:०२:३४
११	११:२७:१०:५६	०५:०५:३७:३८	०३:०२:५७:१४	११:०३:१०:२५	०१:२३:२४:५६	११:००:२९:४४	११:०१:२७:४५	११:०१:५९:२४
१२	११:२८:०९:४५	०५:१७:३०:५९	०३:०३:२०:१२	११:०३:३१:०७	०१:२३:३५:२१	११:००:२६:०६	११:०१:३४:३९	११:०१:५६:१३
१३	११:२९:०८:३१	०५:२९:२१:०९	०३:०३:४३:२७	११:०३:५६:२६	०१:२३:४५:५२	११:००:२४:५३ मा	११:०१:४१:३१	११:०१:५३:०२
१४	००:००:०७:१५	०६:११:१०:१०	०३:०४:०६:५९	११:०४:२६:०८	०१:२३:५६:२८	११:००:२६:०२	११:०१:४८:२१	११:०१:४९:५२
१५	००:०१:०५:५८	०६:२३:००:००	०३:०४:३०:४६	११:०५:००:०२	०१:२४:०७:१०	११:००:२९:३३	११:०१:५५:१०	११:०१:४६:४१
१६	००:०२:०४:३८	०७:०४:५२:४३	०३:०४:५४:४९	११:०५:३७:५५	०१:२४:१७:५७	११:००:३५:२१	११:०२:०१:५६	११:०१:४३:३०
१७	००:०३:०३:१७	०७:१६:५०:३३	०३:०५:१९:०७	११:०६:१९:३७	०१:२४:२८:५०	११:००:४३:२४	११:०२:०८:३९	११:०१:४०:२०
१८	००:०४:०१:५४	०७:२८:५६:०८	०३:०५:४३:४०	११:०७:०४:५७	०१:२४:३९:४८	११:००:५३:३९	११:०२:१५:२१	११:०१:३७:०९
१९	००:०५:००:३०	०८:११:१२:२८	०३:०६:०८:२८	११:०७:५३:४३	०१:२४:५०:५२	११:०१:०६:०२	११:०२:२२:००	११:०१:३३:५८
२०	००:०५:५९:०४	०८:२३:४२:५५	०३:०६:३३:३०	११:०८:४५:४७	०१:२५:०२:००	११:०१:२०:२८	११:०२:२८:३७	११:०१:३०:४८
२१	००:०६:५७:३६	०९:०६:३१:०६	०३:०६:५८:४७	११:०९:४१:००	०१:२५:१३:१४	११:०१:३६:५६	११:०२:३५:११	११:०१:२७:३७
२२	००:०७:५६:०६	०९:१९:४०:३३	०३:०७:२४:१७	११:१०:३९:१२	०१:२५:२४:३२	११:०१:५५:१९	११:०२:४१:४३	११:०१:२४:२६
२३	००:०८:५४:३५	१०:०३:१४:१३	०३:०७:५०:०१	११:११:४०:१७	०१:२५:३५:५६	११:०२:१५:३६	११:०२:४८:१२	११:०१:२१:१६
२४	००:०९:५३:०३	१०:१७:१३:५४	०३:०८:१५:५८	११:१२:४४:०७	०१:२५:४७:२४	११:०२:३७:४१	११:०२:५४:३८	११:०१:१८:०५
२५	००:१०:५१:२९	११:०१:३९:२७	०३:०८:४२:०८	११:१३:५०:३६	०१:२५:५८:५७	११:०३:०१:३०	११:०३:०१:०२	११:०१:१४:५४
२६	००:११:४९:५३	११:१६:२८:०४	०३:०९:०८:३२	११:१४:५९:३७	०१:२६:१०:३५	११:०३:२७:०१	११:०३:०७:२३	११:०१:११:४४
२७	००:१२:४८:१६	००:०१:३३:५७	०३:०९:३५:०८	११:१६:११:०६	०१:२६:२२:१७	११:०३:५४:०८	११:०३:१३:४१	११:०१:०८:३३
२८	००:१३:४६:३७	००:१६:४८:२९	०३:१०:०१:५७	११:१७:२४:५७	०१:२६:३४:०३	११:०४:२२:४८	११:०३:१९:५६	११:०१:०५:२३
२९	००:१४:४४:५६	०१:०२:०१:२०	०३:१०:२८:५७	११:१८:४१:०६	०१:२६:४५:५४	११:०४:५२:५८	११:०३:२६:०९	११:०१:०२:१२
३०	००:१५:४३:१३	०१:१७:०२:०८	०३:१०:५६:१०	११:१९:५९:३०	०१:२६:५७:४९	११:०५:२४:३३	११:०३:३२:१८	११:००:५९:०१

पता– निर्णय सागर पंचांग कार्यालय, नीमच (म.प्र.), फोन : ८९६४०९८६४०

✳ मई सन् २०२५ ई. सूर्योदये इ. 00I00 दैनिक ग्रहस्पष्ट

मासारंभे अयनांशाः २४° १२' ४२"

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध (मार्गी)	गुरु	शुक्र	शनि	राहु
	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.
१	००:१६:४१:२८	०२:०१:४२:१४	०३:११:२३:३५	११:२१:२०:०५	०१:२७:०९:४९	११:०५:५७:३१	११:०३:३८:२४	११:००:५५:५१
२	००:१७:३९:४२	०२:१५:५५:५३	०३:११:५१:११	११:२२:४२:४८	०१:२७:२१:५२	११:०६:३१:४९	११:०३:४४:२६	११:००:५२:४०
३	००:१८:३७:५३	०२:२९:४०:३९	०३:१२:१८:५८	११:२४:०७:३७	०१:२७:३३:५९	११:०७:०७:२३	११:०३:५०:२६	११:००:४९:२९
४	००:१९:३६:०२	०३:१२:५७:०४	०३:१२:४६:५६	११:२५:३४:३०	०१:२७:४६:१०	११:०७:४४:१०	११:०३:५६:२२	११:००:४६:१८
५	००:२०:३४:१०	०३:२५:४७:५५	०३:१३:१५:०५	११:२७:०३:२५	०१:२७:५८:२४	११:०८:२२:०८	११:०४:०२:१५	११:००:४३:०८
६	००:२१:३२:१५	०४:०८:१७:१४	०३:१३:४३:२४	११:२८:३४:२१	०१:२८:१०:४२	११:०९:०१:१४	११:०४:०८:०४	११:००:३९:५७
७	००:२२:३०:१९	०४:२०:२९:४४	०३:१४:११:५३	००:००:०७:१७	०१:२८:२३:०४	११:०९:४१:२५	११:०४:१३:५०	११:००:३६:४६
८	००:२३:२८:२१	०५:०२:३०:०६	०३:१४:४०:३२	००:०१:४२:१३	०१:२८:३५:२९	११:१०:२२:३९	११:०४:१९:३२	११:००:३३:३६
९	००:२४:२६:२१	०५:१४:२२:४७	०३:१५:०९:२१	००:०३:१९:०७	०१:२८:४७:५८	११:११:०४:५४	११:०४:२५:११	११:००:३०:२५
१०	००:२५:२४:१९	०५:२६:११:३६	०३:१५:३८:२०	००:०४:५८:००	०१:२९:००:२९	११:११:४८:०८	११:०४:३०:४६	११:००:२७:१४
११	००:२६:२२:१६	०६:०७:५९:४७	०३:१६:०७:२७	००:०६:३८:५२	०१:२९:१३:०४	११:१२:३२:१७	११:०४:३६:१८	११:००:२४:०४
१२	००:२७:२०:११	०६:१९:४९:५१	०३:१६:३६:४४	००:०८:२१:४३	०१:२९:२५:४२	११:१३:१७:२१	११:०४:४१:४५	११:००:२०:५३
१३	००:२८:१८:०४	०७:०१:४३:५०	०३:१७:०६:१०	००:१०:०६:३३	०१:२९:३८:२३	११:१४:०३:१६	११:०४:४७:०९	११:००:१७:४२
१४	००:२९:१५:५७	०७:१३:४३:१८	०३:१७:३५:४५	००:११:५३:२२	०१:२९:५१:०७	११:१४:५०:०२	११:०४:५२:२९	११:००:१४:३२
१५	०१:००:१३:४७	०७:२५:४९:३८	०३:१८:०५:२८	००:१३:४२:११	०२:००:०३:५४	११:१५:३७:३६	११:०४:५७:४६	११:००:११:२१
१६	०१:०१:११:३६	०८:०८:०४:१३	०३:१८:३५:२०	००:१५:३२:५८	०२:००:१६:४४	११:१६:२५:५७	११:०५:०२:५८	११:००:०८:१०
१७	०१:०२:०९:२५	०८:२०:२८:४०	०३:१९:०५:२१	००:१७:२५:४५	०२:००:२९:३६	११:१७:१५:०२	११:०५:०८:०६	११:००:०५:००
१८	०१:०३:०७:११	०९:०३:०४:५७	०३:१९:३५:२९	००:१९:२०:२९	०२:००:४२:३१	११:१८:०४:५०	११:०५:१३:१०	११:००:०१:४९
१९	०१:०४:०४:५७	०९:१५:५५:२९	०३:२०:०५:४६	००:२१:१७:११	०२:००:५५:२९	११:१८:५५:२०	११:०५:१८:१०	१०:२९:५८:३८
२०	०१:०५:०२:४२	०९:२९:०३:००	०३:२०:३६:११	००:२३:१५:४७	०२:०१:०८:२९	११:१९:४६:२९	११:०५:२३:०६	१०:२९:५५:२७
२१	०१:०६:००:२६	१०:१२:३०:१३	०३:२१:०६:४४	००:२५:१६:१६	०२:०१:२१:३२	११:२०:३८:१७	११:०५:२७:५७	१०:२९:५२:१७
२२	०१:०६:५८:०८	१०:२६:१९:२३	०३:२१:३७:२५	००:२७:१८:३३	०२:०१:३४:३७	११:२१:३०:४२	११:०५:३२:४५	१०:२९:४९:०६
२३	०१:०७:५५:५०	११:१०:३१:३५	०३:२२:०८:१४	००:२९:२२:३४	०२:०१:४७:४५	११:२२:२३:४१	११:०५:३७:२८	१०:२९:४५:५५
२४	०१:०८:५३:३१	११:२५:०५:५३	०३:२२:३९:११	०१:०१:२८:१२	०२:०२:००:५५	११:२३:१७:१५	११:०५:४२:०६	१०:२९:४२:४४
२५	०१:०९:५१:११	००:०९:५८:४१	०३:२३:१०:१५	०१:०३:३५:२०	०२:०२:१४:०७	११:२४:११:२२	११:०५:४६:४०	१०:२९:३९:३४
२६	०१:१०:४८:४९	००:२५:०३:२६	०३:२३:४१:२७	०१:०५:४३:४८	०२:०२:२७:२१	११:२५:०६:००	११:०५:५१:१०	१०:२९:३६:२३
२७	०१:११:४६:२७	०१:१०:११:०४	०३:२४:१२:४६	०१:०७:५३:२७	०२:०२:४०:३७	११:२६:०१:०८	११:०५:५५:३४	१०:२९:३३:१२
२८	०१:१२:४४:०४	०१:२५:११:२६	०३:२४:४४:१३	०१:१०:०४:०२	०२:०२:५३:५५	११:२६:५६:४४	११:०५:५९:५५	१०:२९:३०:०२
२९	०१:१३:४१:३९	०२:०९:५४:५७	०३:२५:१५:४७	०१:१२:१५:२२	०२:०३:०७:१४	११:२७:५२:४९	११:०६:०४:१०	१०:२९:२६:५१
३०	०१:१४:३९:१३	०२:२४:१४:१८	०३:२५:४७:२८	०१:१४:२७:१०	०२:०३:२०:३६	११:२८:४९:२१	११:०६:०८:२१	१०:२९:२३:४०
३१	०१:१५:३६:४६	०३:०८:०५:२४	०३:२६:१९:१६	०१:१६:३९:१२	०२:०३:३३:५९	११:२९:४६:१८	११:०६:१२:२६	१०:२९:२०:२९

जून सन् २०२५ई. सूर्योदये इ. ००।०० दैनिक ग्रहस्पष्ट

मासारंभे अयनांशा: २४° १२' ४६"

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु
	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.
१	०१:१६:३४:१८	०३:२१:२७:२४	०३:२६:५१:१०	०१:१८:५१:१०	०२:०३:४७:२४	००:००:४३:४०	११:०६:१६:२७	१०:२९:१७:१९
२	०१:१७:३१:४८	०४:०४:२२:११	०३:२७:२३:१२	०१:२१:०२:४९	०२:०४:००:५०	००:०१:४१:२७	११:०६:२०:२३	१०:२९:१४:०८
३	०१:१८:२९:१७	०४:१६:५३:३४	०३:२७:५५:२०	०१:२३:१३:५२	०२:०४:१४:१८	००:०२:३९:३७	११:०६:२४:१४	१०:२९:१०:५७
४	०१:१९:२६:४५	०४:२९:०६:२६	०३:२८:२७:३४	०१:२५:२४:०२	०२:०४:२७:४७	००:०३:३८:०९	११:०६:२८:०१	१०:२९:०७:४६
५	०१:२०:२४:१२	०५:११:०६:०५	०३:२८:५९:५४	०१:२७:३३:०६	०२:०४:४१:१७	००:०४:३७:०४	११:०६:३१:४२	१०:२९:०४:३६
६	०१:२१:२१:३७	०५:२२:५७:४५	०३:२९:३२:२१	०१:२९:४०:५०	०२:०४:५४:४९	००:०५:३६:२०	११:०६:३५:१८	१०:२९:०१:२५
७	०१:२२:१९:०२	०६:०४:४६:१३	०४:००:०४:५४	०२:०१:४७:००	०२:०५:०८:२१	००:०६:३५:५७	११:०६:३८:४८	१०:२८:५८:१४
८	०१:२३:१६:२६	०६:१६:३५:३८	०४:००:३७:३२	०२:०३:५१:२७	०२:०५:२१:५५	००:०७:३५:५४	११:०६:४२:१४	१०:२८:५५:०३
९	०१:२४:१३:४८	०६:२८:२९:२२	०४:०१:१०:१७	०२:०५:५४:०२	०२:०५:३५:३०	००:०८:३६:११	११:०६:४५:३४	१०:२८:५१:५३
१०	०१:२५:११:१०	०७:१०:२९:५४	०४:०१:४३:०८	०२:०७:५४:३५	०२:०५:४९:०५	००:०९:३६:४६	११:०६:४८:५०	१०:२८:४८:४२
११	०१:२६:०८:३१	०७:२२:३८:५७	०४:०२:१६:०४	०२:०९:५३:०२	०२:०६:०२:४२	००:१०:३७:४०	११:०६:५२:००	१०:२८:४५:३१
१२	०१:२७:०५:५१	०८:०४:५७:३४	०४:०२:४९:०६	०२:११:४९:१७	०२:०६:१६:१९	००:११:३८:५२	११:०६:५५:०४	१०:२८:४२:२०
१३	०१:२८:०३:१०	०८:१७:२६:२०	०४:०३:२२:१३	०२:१३:४३:१५	०२:०६:२९:५७	००:१२:४०:२१	११:०६:५८:०४	१०:२८:३९:०९
१४	०१:२९:००:२९	०९:००:०५:३६	०४:०३:५५:२६	०२:१५:३४:५४	०२:०६:४३:३६	००:१३:४२:०८	११:०७:००:५७	१०:२८:३५:५९
१५	०१:२९:५७:४८	०९:१२:५५:५४	०४:०४:२८:४५	०२:१७:२४:११	०२:०६:५७:१६	००:१४:४४:१०	११:०७:०३:४६	१०:२८:३२:४८
१६	०२:००:५५:०६	०९:२५:५८:०१	०४:०५:०२:०९	०२:१९:११:०५	०२:०७:१०:५६	००:१५:४६:२९	११:०७:०६:२९	१०:२८:२९:३७
१७	०२:०१:५२:२३	१०:०९:१३:१०	०४:०५:३५:३८	०२:२०:५५:३४	०२:०७:२४:३६	००:१६:४९:०४	११:०७:०९:०६	१०:२८:२६:२६
१८	०२:०२:४९:४१	१०:२२:४२:५३	०४:०६:०९:१३	०२:२२:३७:३७	०२:०७:३८:१७	००:१७:५१:५३	११:०७:११:३८	१०:२८:२३:१५
१९	०२:०३:४६:५८	११:०६:२८:४१	०४:०६:४२:५४	०२:२४:१७:१४	०२:०७:५१:५९	००:१८:५४:५७	११:०७:१४:०४	१०:२८:२०:०५
२०	०२:०४:४४:१५	११:२०:३१:३३	०४:०७:१६:३९	०२:२५:५४:२३	०२:०८:०५:४०	००:१९:५८:१६	११:०७:१६:२५	१०:२८:१६:५४
२१	०२:०५:४१:३२	००:०४:५१:१६	०४:०७:५०:३१	०२:२७:२९:०४	०२:०८:१९:२३	००:२१:०१:४८	११:०७:१८:४०	१०:२८:१३:४३
२२	०२:०६:३८:४९	००:१९:२५:४३	०४:०८:२४:२७	०२:२९:०१:१६	०२:०८:३३:०५	००:२२:०५:३३	११:०७:२०:४९	१०:२८:१०:३२
२३	०२:०७:३६:०६	०१:०४:१०:३२	०४:०८:५८:२९	०३:००:३०:५७	०२:०८:४६:४७	००:२३:०९:३१	११:०७:२२:५२	१०:२८:०७:२१
२४	०२:०८:३३:२२	०१:१८:५९:०६	०४:०९:३२:३६	०३:०१:५८:०७	०२:०९:००:३०	००:२४:१३:४२	११:०७:२४:५०	१०:२८:०४:११
२५	०२:०९:३०:३८	०२:०३:४३:२१	०४:१०:०६:४९	०३:०३:२२:४४	०२:०९:१४:११	००:२५:१८:०४	११:०७:२६:४१	१०:२८:०१:००
२६	०२:१०:२७:५४	०२:१८:१५:०४	०४:१०:४१:०६	०३:०४:४४:४६	०२:०९:२७:५४	००:२६:२२:३८	११:०७:२८:२७	१०:२७:५७:४९
२७	०२:११:२५:१०	०३:०२:२७:१४	०४:११:१५:२९	०३:०६:०४:१०	०२:०९:४१:३६	००:२७:२७:२४	११:०७:३०:०७	१०:२७:५४:३८
२८	०२:१२:२२:२६	०३:१६:१५:१०	०४:११:४९:५७	०३:०७:२०:५४	०२:०९:५५:१८	००:२८:३२:२०	११:०७:३१:४१	१०:२७:५१:२७
२९	०२:१३:१९:४१	०३:२९:३६:५४	०४:१२:२४:२९	०३:०८:३४:५५	०२:१०:०८:५९	००:२९:३७:२७	११:०७:३३:०९	१०:२७:४८:१७
३०	०२:१४:१६:५५	०४:१२:३३:०९	०४:१२:५९:०७	०३:०९:४६:०९	०२:१०:२२:४०	०१:००:४२:४४	११:०७:३४:३१	१०:२७:४५:०६

पता– निर्णय सागर पंचांग कार्यालय, नीमच (म.प्र.), फोन : ८९६४०९८६४०

जुलाई सन् २०२५ ई. सूर्योदये इ. ००।०० दैनिक ग्रहस्पष्ट

मासारंभे अयनांशा: २४° १२' ५१"

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु
	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.
१	०२:१५:१४:१०	०४:२५:०६:३९	०४:१३:३३:४९	०३:१०:५४:३२	०२:१०:३६:२१	०१:०१:४८:१२	११:०७:३५:४७	१०:२७:४१:५५
२	०२:१६:११:२३	०५:०७:२१:३८	०४:१४:०८:३६	०३:११:५९:५९	०२:१०:५०:०१	०१:०२:५३:४९	११:०७:३६:५७	१०:२७:३८:४४
३	०२:१७:०८:३७	०५:१९:२३:०६	०४:१४:४३:२८	०३:१३:०२:२७	०२:११:०३:४०	०१:०३:५९:३६	११:०७:३८:०१	१०:२७:३५:३३
४	०२:१८:०५:५०	०६:०१:१६:२२	०४:१५:१८:२४	०३:१४:०१:४८	०२:११:१७:१८	०१:०५:०५:३३	११:०७:३८:५९	१०:२७:३२:२२
५	०२:१९:०३:०३	०६:१३:०६:३९	०४:१५:५३:२५	०३:१४:५७:५८	०२:११:३०:५६	०१:०६:११:३९	११:०७:३९:५२	१०:२७:२९:१२
६	०२:२०:००:१६	०६:२४:५८:४४	०४:१६:२८:३०	०३:१५:५०:५०	०२:११:४४:३३	०१:०७:१७:५५	११:०७:४०:३८	१०:२७:२६:०१
७	०२:२०:५७:२९	०७:०६:५६:४८	०४:१७:०३:४०	०३:१६:४०:१७	०२:११:५८:०९	०१:०८:२४:१९	११:०७:४१:१८	१०:२७:२२:५०
८	०२:२१:५४:४१	०७:१९:०४:०८	०४:१७:३८:५४	०३:१७:२६:१२	०२:१२:११:४४	०१:०९:३०:५२	११:०७:४१:५२	१०:२७:१९:३९
९	०२:२२:५१:५४	०८:०१:२३:०६	०४:१८:१४:१३	०३:१८:०८:२८	०२:१२:२५:१८	०१:१०:३७:३५	११:०७:४२:२०	१०:२७:१६:२८
१०	०२:२३:४९:०६	०८:१३:५५:०१	०४:१८:४९:३५	०३:१८:४६:५५	०२:१२:३८:५१	०१:११:४४:२५	११:०७:४२:४२	१०:२७:१३:१८
११	०२:२४:४६:१९	०८:२६:४०:२०	०४:१९:२५:०३	०३:१९:२१:२६	०२:१२:५२:२३	०१:१२:५१:२५	११:०७:४२:५७	१०:२७:१०:०७
१२	०२:२५:४३:३२	०९:०९:३८:४३	०४:२०:००:३४	०३:१९:५१:५३	०२:१३:०५:५४	०१:१३:५८:३२	११:०७:४३:०७	१०:२७:०६:५६
१३	०२:२६:४०:४५	०९:२२:४९:२३	०४:२०:३६:१०	०३:२०:१८:०७	०२:१३:१९:२३	०१:१५:०५:४८	११:०७:४३:११ व	१०:२७:०३:४५
१४	०२:२७:३७:५८	१०:०६:११:२९	०४:२१:११:५०	०३:२०:४०:००	०२:१३:३२:५१	०१:१६:१३:१३	११:०७:४३:०९	१०:२७:००:३४
१५	०२:२८:३५:१२	१०:१९:४४:१५	०४:२१:४७:३४	०३:२०:५७:२४	०२:१३:४६:१८	०१:१७:२०:४५	११:०७:४३:००	१०:२६:५७:२३
१६	०२:२९:३२:२७	११:०३:२७:१४	०४:२२:२३:२३	०३:२१:१०:११	०२:१३:५९:४३	०१:१८:२८:२५	११:०७:४२:४६	१०:२६:५४:१३
१७	०३:००:२९:४२	११:१७:२०:१२	०४:२२:५९:१६	०३:२१:१८:१६	०२:१४:१३:०७	०१:१९:३६:१३	११:०७:४२:२६	१०:२६:५१:०२
१८	०३:०१:२६:५८	००:०१:२२:५२	०४:२३:३५:१३	०३:२१:२१:३३ व	०२:१४:२६:२९	०१:२०:४४:०८	११:०७:४१:५९	१०:२६:४७:५१
१९	०३:०२:२४:१५	००:१५:३४:३०	०४:२४:११:१५	०३:२१:१९:५८	०२:१४:३९:५०	०१:२१:५२:११	११:०७:४१:२६	१०:२६:४४:४०
२०	०३:०३:२१:३२	००:२९:५३:२७	०४:२४:४७:२१	०३:२१:१३:३०	०२:१४:५३:०८	०१:२३:००:२१	११:०७:४०:४८	१०:२६:४१:२९
२१	०३:०४:१८:५१	०१:१४:१६:५०	०४:२५:२३:३१	०३:२१:०२:११	०२:१५:०६:२५	०१:२४:०८:३८	११:०७:४०:०३	१०:२६:३८:१८
२२	०३:०५:१६:१०	०१:२८:४०:२८	०४:२५:५९:४६	०३:२०:४६:०३	०२:१५:१९:४१	०१:२५:१७:०२	११:०७:३९:१३	१०:२६:३५:०८
२३	०३:०६:१३:२९	०२:१२:५९:०९	०४:२६:३६:०५	०३:२०:२५:१६	०२:१५:३२:५४	०१:२६:२५:३३	११:०७:३८:१६	१०:२६:३१:५७
२४	०३:०७:१०:५०	०२:२७:०७:२४	०४:२७:१२:२८	०३:१९:५९:५९	०२:१५:४६:०५	०१:२७:३४:१०	११:०७:३७:१३	१०:२६:२८:४६
२५	०३:०८:०८:११	०३:११:००:१२	०४:२७:४८:५५	०३:१९:३०:३०	०२:१५:५९:१४	०१:२८:४२:५४	११:०७:३६:०५	१०:२६:२५:३५
२६	०३:०९:०५:३२	०३:२४:३३:४९	०४:२८:२५:२७	०३:१८:५७:१०	०२:१६:१२:२१	०१:२९:५१:४४	११:०७:३४:५०	१०:२६:२२:२४
२७	०३:१०:०२:५४	०४:०७:४६:१६	०४:२९:०२:०३	०३:१८:२०:२४	०२:१६:२५:२५	०२:०१:००:४०	११:०७:३३:३०	१०:२६:१९:१३
२८	०३:११:००:१७	०४:२०:३७:२६	०४:२९:३८:४३	०३:१७:४०:४३	०२:१६:३८:२७	०२:०२:०९:४३	११:०७:३२:०४	१०:२६:१६:०२
२९	०३:११:५७:४१	०५:०३:०८:५८	०५:००:१५:२७	०३:१६:५८:४४	०२:१६:५१:२७	०२:०३:१८:५१	११:०७:३०:३१	१०:२६:१२:५२
३०	०३:१२:५५:०४	०५:१५:२३:५४	०५:००:५२:१६	०३:१६:१५:०७	०२:१७:०४:२४	०२:०४:२८:०५	११:०७:२८:५४	१०:२६:०९:४१
३१	०३:१३:५२:२९	०५:२७:२६:१९	०५:०१:२९:०८	०३:१५:३०:३६	०२:१७:१७:१८	०२:०५:३७:२५	११:०७:२७:१०	१०:२६:०६:३०

✻अगस्त सन् २०२५ ई. सूर्योदये इ. ००।०० दैनिक ग्रहस्पष्ट

मासारंभे अयनांशा: २४° १२' ५६"

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध (वक्री)	गुरु	शुक्र	शनि (वक्री)	राहु
	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.
१	०३:१४:४९:५४	०६:०९:२०:५४	०५:०२:०६:०४	०३:१४:४५:५७	०२:१७:३०:१०	०२:०६:४६:५०	११:०७:२५:२१	१०:२६:०३:१९
२	०३:१५:४७:१९	०६:२१:१२:३९	०५:०२:४३:०४	०३:१४:०१:५९	०२:१७:४२:५९	०२:०७:५६:२२	११:०७:२३:२६	१०:२६:००:०८
३	०३:१६:४४:४५	०७:०३:०६:३१	०५:०३:२०:०८	०३:१३:१९:३३	०२:१७:५५:४५	०२:०९:०५:५९	११:०७:२१:२६	१०:२५:५६:५८
४	०३:१७:४२:१२	०७:१५:०७:१२	०५:०३:५७:१६	०३:१२:३९:२६	०२:१८:०८:२८	०२:१०:१५:४२	११:०७:१९:२०	१०:२५:५३:४७
५	०३:१८:३९:४०	०७:२७:१८:४७	०५:०४:३४:२८	०३:१२:०२:२५	०२:१८:२१:०८	०२:११:२५:३०	११:०७:१७:०९	१०:२५:५०:३६
६	०३:१९:३७:०८	०८:०९:४४:३४	०५:०५:११:४३	०३:११:२९:१५	०२:१८:३३:४५	०२:१२:३५:२४	११:०७:१४:५३	१०:२५:४७:२५
७	०३:२०:३४:३७	०८:२२:२६:४८	०५:०५:४९:०२	०३:११:००:३७	०२:१८:४६:१९	०२:१३:४५:२३	११:०७:१२:३१	१०:२५:४४:१४
८	०३:२१:३२:०७	०९:०५:२६:३२	०५:०६:२६:२६	०३:१०:३७:०७	०२:१८:५८:५०	०२:१४:५५:२८	११:०७:१०:०४	१०:२५:४१:०३
९	०३:२२:२९:३८	०९:१८:४३:३६	०५:०७:०३:५२	०३:१०:१९:१७	०२:१९:११:१८	०२:१६:०५:३८	११:०७:०७:३१	१०:२५:३७:५२
१०	०३:२३:२७:१०	१०:०२:१६:३८	०५:०७:४१:२३	०३:१०:०७:३२	०२:१९:२३:४२	०२:१७:१५:५४	११:०७:०४:५४	१०:२५:३४:४२
११	०३:२४:२४:४३	१०:१६:०३:२५	०५:०८:१८:५८	०३:१०:०२:१७ मा	०२:१९:३६:०३	०२:१८:२६:१५	११:०७:०२:११	१०:२५:३१:३१
१२	०३:२५:२२:१७	११:००:०१:०९	०५:०८:५६:३६	०३:१०:०३:४६	०२:१९:४८:२०	०२:१९:३६:४२	११:०६:५९:२४	१०:२५:२८:२०
१३	०३:२६:१९:५२	११:१४:०६:५४	०५:०९:३४:१८	०३:१०:१२:१४	०२:२०:००:३४	०२:२०:४७:१४	११:०६:५६:३१	१०:२५:२५:०९
१४	०३:२७:१७:२९	११:२८:१७:४७	०५:१०:१२:०५	०३:१०:२७:४८	०२:२०:१२:४४	०२:२१:५७:५२	११:०६:५३:३४	१०:२५:२१:५८
१५	०३:२८:१५:०८	००:१२:३१:१५	०५:१०:४९:५५	०३:१०:५०:३३	०२:२०:२४:५१	०२:२३:०८:३५	११:०६:५०:३२	१०:२५:१८:४७
१६	०३:२९:१२:४८	००:२६:४४:५६	०५:११:२७:४९	०३:११:२०:३०	०२:२०:३६:५४	०२:२४:१९:२३	११:०६:४७:२५	१०:२५:१५:३७
१७	०४:००:१०:३०	०१:१०:५६:३९	०५:१२:०५:४७	०३:११:५७:३६	०२:२०:४८:५३	०२:२५:३०:१७	११:०६:४४:१४	१०:२५:१२:२६
१८	०४:०१:०८:१३	०१:२५:०४:१०	०५:१२:४३:४९	०३:१२:४१:४६	०२:२१:००:४७	०२:२६:४१:१५	११:०६:४०:५८	१०:२५:०९:१५
१९	०४:०२:०५:५७	०२:०९:०५:१०	०५:१३:२१:५५	०३:१३:३२:५२	०२:२१:१२:३८	०२:२७:५२:१९	११:०६:३७:३८	१०:२५:०६:०४
२०	०४:०३:०३:४४	०२:२२:५७:१४	०५:१४:००:०५	०३:१४:३०:४३	०२:२१:२४:२५	०२:२९:०३:२८	११:०६:३४:१३	१०:२५:०२:५३
२१	०४:०४:०१:३२	०३:०६:३७:५४	०५:१४:३८:१९	०३:१५:३५:०६	०२:२१:३६:०७	०३:००:१४:४१	११:०६:३०:४४	१०:२४:५९:४३
२२	०४:०४:५९:२१	०३:२०:०४:५९	०५:१५:१६:३७	०३:१६:४५:४५	०२:२१:४७:४५	०३:०१:२५:५९	११:०६:२७:११	१०:२४:५६:३२
२३	०४:०५:५७:१२	०४:०३:१६:४८	०५:१५:५४:५९	०३:१८:०२:२२	०२:२१:५९:१९	०३:०२:३७:२२	११:०६:२३:३३	१०:२४:५३:२१
२४	०४:०६:५५:०४	०४:१६:१२:२८	०५:१६:३३:२५	०३:१९:२४:३५	०२:२२:१०:४८	०३:०३:४८:४९	११:०६:१९:५२	१०:२४:५०:१०
२५	०४:०७:५२:५८	०४:२८:५१:५८	०५:१७:११:५५	०३:२०:५२:०२	०२:२२:२२:१२	०३:०५:००:२१	११:०६:१६:०७	१०:२४:४६:५९
२६	०४:०८:५०:५३	०५:११:१६:१८	०५:१७:५०:२९	०३:२२:२४:१९	०२:२२:३३:३१	०३:०६:११:५७	११:०६:१२:१९	१०:२४:४३:४८
२७	०४:०९:४८:४९	०५:२३:२७:२८	०५:१८:२९:०६	०३:२४:०१:००	०२:२२:४४:४६	०३:०७:२३:३८	११:०६:०८:२६	१०:२४:४०:३७
२८	०४:१०:४६:४७	०६:०५:२८:२०	०५:१९:०७:४८	०३:२५:४१:३६	०२:२२:५५:५६	०३:०८:३५:२३	११:०६:०४:३०	१०:२४:३७:२७
२९	०४:११:४४:४६	०६:१७:२२:३१	०५:१९:४६:३३	०३:२७:२५:४०	०२:२३:०७:००	०३:०९:४७:१२	११:०६:००:३१	१०:२४:३४:१६
३०	०४:१२:४२:४७	०६:२९:१४:११	०५:२०:२५:२२	०३:२९:१२:४४	०२:२३:१८:००	०३:१०:५९:०६	११:०५:५६:२९	१०:२४:३१:०५
३१	०४:१३:४०:४८	०७:११:०७:५२	०५:२१:०४:१४	०४:०१:०२:२०	०२:२३:२८:५४	०३:१२:११:०३	११:०५:५२:२४	१०:२४:२७:५४

✻सितम्बर सन् २०२५ ई. सूर्योदये इ. ००।०० दैनिक ग्रहस्पष्ट

मासारंभे अयनांशा: २४° १३' ०१"

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध (मार्गी)	गुरु	शुक्र	शनि (वक्री)	राहु
	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.
१	०४:१४:३८:५१	०७:२३:०८:१५	०५:२१:४३:११	०४:०२:५४:०१	०२:२३:३९:४३	०३:१३:२३:०५	११:०५:४८:१५	१०:२४:२४:४३
२	०४:१५:३६:५६	०८:०५:१९:५४	०५:२२:२२:११	०४:०४:४७:२१	०२:२३:५०:२७	०३:१४:३५:११	११:०५:४४:०४	१०:२४:२१:३३
३	०४:१६:३५:०२	०८:१७:४६:५९	०५:२३:०१:१५	०४:०६:४१:५७	०२:२४:०१:०५	०३:१५:४७:२१	११:०५:३९:५०	१०:२४:१८:२२
४	०४:१७:३३:०९	०९:००:३३:००	०५:२३:४०:२२	०४:०८:३७:२८	०२:२४:११:३७	०३:१६:५९:३६	११:०५:३५:३४	१०:२४:१५:११
५	०४:१८:३१:१७	०९:१३:४०:१६	०५:२४:१९:३३	०४:१०:३३:३२	०२:२४:२२:०४	०३:१८:११:५४	११:०५:३१:१५	१०:२४:१२:००
६	०४:१९:२९:२८	०९:२७:०९:४४	०५:२४:५८:४८	०४:१२:२९:५४	०२:२४:३२:२५	०३:१९:२४:१७	११:०५:२६:५४	१०:२४:०८:४९
७	०४:२०:२७:३९	१०:११:००:३७	०५:२५:३८:०६	०४:१४:२६:१७	०२:२४:४२:४०	०३:२०:३६:४३	११:०५:२२:३०	१०:२४:०५:३८
८	०४:२१:२५:५३	१०:२५:१०:१९	०५:२६:१७:२८	०४:१६:२२:२९	०२:२४:५२:४९	०३:२१:४९:१४	११:०५:१८:०५	१०:२४:०२:२८
९	०४:२२:२४:०८	११:०९:३४:३७	०५:२६:५६:५४	०४:१८:१८:१८	०२:२५:०२:५३	०३:२३:०१:४९	११:०५:१३:३७	१०:२३:५९:१७
१०	०४:२३:२२:२५	११:२४:०८:०४	०५:२७:३६:२४	०४:२०:१३:३६	०२:२५:१२:५०	०३:२४:१४:२८	११:०५:०९:०८	१०:२३:५६:०६
११	०४:२४:२०:४५	००:०८:४४:४५	०५:२८:१५:५७	०४:२२:०८:१४	०२:२५:२२:४१	०३:२५:२७:११	११:०५:०४:३७	१०:२३:५२:५५
१२	०४:२५:१९:०६	००:२३:१८:५१	०५:२८:५५:३४	०४:२४:०२:०७	०२:२५:३२:२६	०३:२६:३९:५८	११:०५:००:०५	१०:२३:४९:४४
१३	०४:२६:१७:२९	०१:०७:४५:२८	०५:२९:३५:१५	०४:२५:५५:१०	०२:२५:४२:०४	०३:२७:५२:५०	११:०४:५५:३१	१०:२३:४६:३३
१४	०४:२७:१५:५४	०१:२२:००:५०	०६:००:१५:००	०४:२७:४७:१८	०२:२५:५१:३६	०३:२९:०५:४५	११:०४:५०:५६	१०:२३:४३:२३
१५	०४:२८:१४:२२	०२:०६:०२:३२	०६:००:५४:४९	०४:२९:३८:३०	०२:२६:०१:०१	०४:००:१८:४४	११:०४:४६:२०	१०:२३:४०:१२
१६	०४:२९:१२:५२	०२:१९:४९:२१	०६:०१:३४:४२	०५:०१:२८:४२	०२:२६:१०:१९	०४:०१:३१:४७	११:०४:४१:४३	१०:२३:३७:०१
१७	०५:००:११:२४	०३:०३:२०:५८	०६:०२:१४:३९	०५:०३:१७:५५	०२:२६:१९:३१	०४:०२:४४:५४	११:०४:३७:०५	१०:२३:३३:५०
१८	०५:०१:०९:५८	०३:१६:३७:४०	०६:०२:५४:४०	०५:०५:०६:०६	०२:२६:२८:३५	०४:०३:५८:०५	११:०४:३२:२६	१०:२३:३०:३९
१९	०५:०२:०८:३४	०३:२९:४०:०१	०६:०३:३४:४४	०५:०६:५३:१६	०२:२६:३७:३२	०४:०५:११:१९	११:०४:२७:४७	१०:२३:२७:२९
२०	०५:०३:०७:१२	०४:१२:२८:४९	०६:०४:१४:५३	०५:०८:३९:२४	०२:२६:४६:२३	०४:०६:२४:३७	११:०४:२३:०७	१०:२३:२४:१८
२१	०५:०४:०५:५२	०४:२५:०४:५४	०६:०४:५५:०५	०५:१०:२४:३१	०२:२६:५५:०५	०४:०७:३७:५८	११:०४:१८:२७	१०:२३:२१:०७
२२	०५:०५:०४:३५	०५:०७:२९:१३	०६:०५:३५:२१	०५:१२:०८:३७	०२:२७:०३:४१	०४:०८:५१:२३	११:०४:१३:४७	१०:२३:१७:५६
२३	०५:०६:०३:१९	०५:१९:४२:५४	०६:०६:१५:४१	०५:१३:५१:४३	०२:२७:१२:०८	०४:१०:०४:५१	११:०४:०९:०८	१०:२३:१४:४५
२४	०५:०७:०२:०५	०६:०१:४७:२७	०६:०६:५६:०५	०५:१५:३३:५०	०२:२७:२०:२८	०४:११:१८:२२	११:०४:०४:२८	१०:२३:११:३४
२५	०५:०८:००:५३	०६:१३:४४:४७	०६:०७:३६:३३	०५:१७:१४:५९	०२:२७:२८:४०	०४:१२:३१:५६	११:०३:५९:४९	१०:२३:०८:२४
२६	०५:०८:५९:४३	०६:२५:३७:२१	०६:०८:१७:०४	०५:१८:५५:१०	०२:२७:३६:४५	०४:१३:४५:३४	११:०३:५५:११	१०:२३:०५:१३
२७	०५:०९:५८:३४	०७:०७:२८:०९	०६:०८:५७:४०	०५:२०:३४:२५	०२:२७:४४:४१	०४:१४:५९:१४	११:०३:५०:३३	१०:२३:०२:०२
२८	०५:१०:५७:२८	०७:१९:२०:४५	०६:०९:३८:१९	०५:२२:१२:४५	०२:२७:५२:२९	०४:१६:१२:५७	११:०३:४५:५७	१०:२२:५८:५१
२९	०५:११:५६:२३	०८:०१:१९:१४	०६:१०:१९:०१	०५:२३:५०:१०	०२:२८:००:०९	०४:१७:२६:४४	११:०३:४१:२१	१०:२२:५५:४०
३०	०५:१२:५५:२०	०८:१३:२७:५९	०६:१०:५९:४८	०५:२५:२६:४२	०२:२८:०७:४१	०४:१८:४०:३३	११:०३:३६:४६	१०:२२:५२:२९

पता– निर्णय सागर पंचांग कार्यालय, नीमच (म.प्र.), फोन : ८९६४०९८६४०

✲अक्टूबर सन् २०२५ ई. सूर्योदये इ. ००।०० दैनिक ग्रहस्पष्ट मासारंभे अयनांशा: २४° १३' ०५"

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि (वक्री)	राहु
	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.
१	०५:१३:५४:१८	०८:२५:५१:३४	०६:११:४०:३८	०५:२७:०२:२२	०२:२८:१५:०४	०४:१९:५४:२५	११:०३:३२:१३	१०:२२:४९:१९
२	०५:१४:५३:१९	०९:०८:३४:२२	०६:१२:२१:३१	०५:२८:३७:१०	०२:२८:२२:१८	०४:२१:०८:२०	११:०३:२७:४२	१०:२२:४६:०८
३	०५:१५:५२:२१	०९:२१:४०:०८	०६:१३:०२:२९	०६:००:११:०७	०२:२८:२९:२४	०४:२२:२२:१८	११:०३:२३:११	१०:२२:४२:५७
४	०५:१६:५१:२५	१०:०५:११:३०	०६:१३:४३:३०	०६:०१:४४:१४	०२:२८:३६:२२	०४:२३:३६:१८	११:०३:१८:४३	१०:२२:३९:४६
५	०५:१७:५०:३१	१०:१९:०९:१८	०६:१४:२४:३४	०६:०३:१६:३२	०२:२८:४३:१०	०४:२४:५०:२१	११:०३:१४:१७	१०:२२:३६:३५
६	०५:१८:४९:३८	११:०३:३२:०५	०६:१५:०५:४२	०६:०४:४८:०१	०२:२८:४९:५०	०४:२६:०४:२७	११:०३:०९:५३	१०:२२:३३:२४
७	०५:१९:४८:४८	११:१८:१५:३९	०६:१५:४६:५४	०६:०६:१८:४१	०२:२८:५६:२०	०४:२७:१८:३६	११:०३:०५:३१	१०:२२:३०:१४
८	०५:२०:४८:००	००:०३:१३:१५	०६:१६:२८:१०	०६:०७:४८:३२	०२:२९:०२:४२	०४:२८:३२:४७	११:०३:०१:११	१०:२२:२७:०३
९	०५:२१:४७:१४	००:१८:१६:१८	०६:१७:०९:२९	०६:०९:१७:३५	०२:२९:०८:५४	०४:२९:४७:०१	११:०२:५६:५४	१०:२२:२३:५२
१०	०५:२२:४६:३०	०१:०३:१५:३८	०६:१७:५०:५३	०६:१०:४५:५०	०२:२९:१४:५७	०५:०१:०१:१८	११:०२:५२:३९	१०:२२:२०:४१
११	०५:२३:४५:४८	०१:१८:०२:४७	०६:१८:३२:२०	०६:१२:१३:१५	०२:२९:२०:५०	०५:०२:१५:३८	११:०२:४८:२७	१०:२२:१७:३०
१२	०५:२४:४५:०९	०२:०२:३२:००	०६:१९:१३:५०	०६:१३:३९:५१	०२:२९:२६:३४	०५:०३:३०:००	११:०२:४४:१८	१०:२२:१४:१९
१३	०५:२५:४४:३१	०२:१६:३९:०७	०६:१९:५५:२५	०६:१५:०५:३६	०२:२९:३२:०८	०५:०४:४४:२५	११:०२:४०:१२	१०:२२:११:०९
१४	०५:२६:४३:५७	०३:००:२३:०८	०६:२०:३७:०४	०६:१६:३०:२९	०२:२९:३७:३३	०५:०५:५८:५२	११:०२:३६:०८	१०:२२:०७:५८
१५	०५:२७:४३:२४	०३:१३:४४:५८	०६:२१:१८:४६	०६:१७:५४:२९	०२:२९:४२:४७	०५:०७:१३:२२	११:०२:३२:०९	१०:२२:०४:४७
१६	०५:२८:४२:५४	०३:२६:४६:४७	०६:२२:००:३२	०६:१९:१७:३४	०२:२९:४७:५१	०५:०८:२७:५४	११:०२:२८:१२	१०:२२:०१:३६
१७	०५:२९:४२:२७	०४:०९:३१:२७	०६:२२:४२:२२	०६:२०:३९:४१	०२:२९:५२:४६	०५:०९:४२:२९	११:०२:२४:१९	१०:२१:५८:२५
१८	०६:००:४२:०१	०४:२२:०१:५६	०६:२३:२४:१६	०६:२२:००:४८	०२:२९:५७:३०	०५:१०:५७:०६	११:०२:२०:३०	१०:२१:५५:१४
१९	०६:०१:४१:३८	०५:०४:२०:५८	०६:२४:०६:१४	०६:२३:२०:५१	०३:००:०२:०३	०५:१२:११:४५	११:०२:१६:४४	१०:२१:५२:०३
२०	०६:०२:४१:१७	०५:१६:३०:५८	०६:२४:४८:१६	०६:२४:३९:४७	०३:००:०६:२६	०५:१३:२६:२६	११:०२:१३:०३	१०:२१:४८:५३
२१	०६:०३:४०:५८	०५:२८:३३:५३	०६:२५:३०:२१	०६:२५:५७:३०	०३:००:१०:३९	०५:१४:४१:०९	११:०२:०९:२५	१०:२१:४५:४२
२२	०६:०४:४०:४१	०६:१०:३१:२३	०६:२६:१२:३१	०६:२७:१३:५६	०३:००:१४:४०	०५:१५:५५:५४	११:०२:०५:५२	१०:२१:४२:३१
२३	०६:०५:४०:२६	०६:२२:२५:०२	०६:२६:५४:४३	०६:२८:२८:५८	०३:००:१८:३१	०५:१७:१०:४१	११:०२:०२:२२	१०:२१:३९:२०
२४	०६:०६:४०:१३	०७:०४:१६:२८	०६:२७:३७:००	०६:२९:४२:२९	०३:००:२२:१२	०५:१८:२५:३०	११:०१:५८:५८	१०:२१:३६:०९
२५	०६:०७:४०:०२	०७:१६:०७:३६	०६:२८:१९:२१	०७:००:५४:२२	०३:००:२५:४१	०५:१९:४०:२०	११:०१:५५:३७	१०:२१:३२:५८
२६	०६:०८:३९:५२	०७:२८:००:४९	०६:२९:०१:४५	०७:०२:०४:२६	०३:००:२८:५९	०५:२०:५५:१२	११:०१:५२:२२	१०:२१:२९:४८
२७	०६:०९:३९:४५	०८:०९:५९:०४	०६:२९:४४:१२	०७:०३:१२:३२	०३:००:३२:०६	०५:२२:१०:०६	११:०१:४९:११	१०:२१:२६:३७
२८	०६:१०:३९:३९	०८:२२:०५:५६	०७:००:२६:४४	०७:०४:१८:२६	०३:००:३५:०२	०५:२३:२५:०१	११:०१:४६:०५	१०:२१:२३:२६
२९	०६:११:३९:३५	०९:०४:२५:३२	०७:०१:०९:१८	०७:०५:२१:५५	०३:००:३७:४६	०५:२४:३९:५८	११:०१:४३:०३	१०:२१:२०:१५
३०	०६:१२:३९:३२	०९:१७:०२:२०	०७:०१:५१:५७	०७:०६:२२:४४	०३:००:४०:२०	०५:२५:५४:५६	११:०१:४०:०७	१०:२१:१७:०४
३१	०६:१३:३९:३२	१०:००:००:४९	०७:०२:३४:३९	०७:०७:२०:३३	०३:००:४२:४२	०५:२७:०९:५५	११:०१:३७:१६	१०:२१:१३:५३

✲नवम्बर सन् २०२५ ई. सूर्योदये इ. ००।०० दैनिक ग्रहस्पष्ट मासारंभे अयनांशा: २४° १३' १०"

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि(वक्री)	राहु
	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.
१	०६:१४:३९:३२	१०:१३:२४:५५	०७:०३:१७:२४	०७:०८:१५:०४	०३:००:४४:५२	०५:२८:२४:५६	११:०१:३४:३०	१०:२१:१०:४२
२	०६:१५:३९:३५	१०:२७:१७:१७	०७:०४:००:१३	०७:०९:०५:५३	०३:००:४६:५१	०५:२९:३९:५८	११:०१:३१:४९	१०:२१:०७:३२
३	०६:१६:३९:३९	११:११:३८:२८	०७:०४:४३:०६	०७:०९:५२:३५	०३:००:४८:३९	०६:००:५५:०२	११:०१:२९:१४	१०:२१:०४:२१
४	०६:१७:३९:४४	११:२६:२५:५८	०७:०५:२६:०२	०७:१०:३४:४१	०३:००:५०:१५	०६:०२:१०:०६	११:०१:२६:४४	१०:२१:०१:१०
५	०६:१८:३९:५२	००:११:३३:४७	०७:०६:०९:०१	०७:११:११:४०	०३:००:५१:३९	०६:०३:२५:१३	११:०१:२४:१९	१०:२०:५७:५९
६	०६:१९:४०:०१	००:२६:५२:३९	०७:०६:५२:०५	०७:११:४२:५७	०३:००:५२:५२	०६:०४:४०:२०	११:०१:२२:००	१०:२०:५४:४८
७	०६:२०:४०:१२	०१:१२:११:२३	०७:०७:३५:११	०७:१२:०७:५५	०३:००:५३:५२	०६:०५:५५:२९	११:०१:१९:४७	१०:२०:५१:३७
८	०६:२१:४०:२५	०१:२७:१८:४६	०७:०८:१८:२२	०७:१२:२५:५४	०३:००:५४:४२	०६:०७:१०:३९	११:०१:१७:३९	१०:२०:४८:२६
९	०६:२२:४०:४०	०२:१२:०५:३३	०७:०९:०१:३६	०७:१२:३६:१५व	०३:००:५५:१९	०६:०८:२५:५०	११:०१:१५:३७	१०:२०:४५:१६
१०	०६:२३:४०:५७	०२:२६:२५:४८	०७:०९:४४:५३	०७:१२:३८:१५	०३:००:५५:४४	०६:०९:४१:०३	११:०१:१३:४०	१०:२०:४२:०५
११	०६:२४:४१:१६	०३:१०:१७:१०	०७:१०:२८:१४	०७:१२:३१:१६	०३:००:५५:५८ व	०६:१०:५६:१७	११:०१:११:५०	१०:२०:३८:५४
१२	०६:२५:४१:३७	०३:२३:४०:२७	०७:११:११:३९	०७:१२:१४:४४	०३:००:५५:५९	०६:१२:११:३२	११:०१:१०:०५	१०:२०:३५:४३
१३	०६:२६:४२:००	०४:०६:३८:३५	०७:११:५५:०८	०७:११:४८:१३	०३:००:५५:४८	०६:१३:२६:४९	११:०१:०८:२६	१०:२०:३२:३२
१४	०६:२७:४२:२५	०४:१९:१५:४०	०७:१२:३८:४०	०७:११:११:३०	०३:००:५५:२६	०६:१४:४२:०६	११:०१:०६:५४	१०:२०:२९:२१
१५	०६:२८:४२:५२	०५:०१:३६:१५	०७:१३:२२:१६	०७:१०:२४:४१	०३:००:५४:५१	०६:१५:५७:२५	११:०१:०५:२७	१०:२०:२६:१०
१६	०६:२९:४३:२१	०५:१३:४४:४१	०७:१४:०५:५५	०७:०९:२८:१४	०३:००:५४:०४	०६:१७:१२:४५	११:०१:०४:०७	१०:२०:२२:५९
१७	०७:००:४३:५२	०५:२५:४४:५०	०७:१४:४९:३८	०७:०८:२३:०४	०३:००:५३:०६	०६:१८:२८:०५	११:०१:०२:५३	१०:२०:१९:४९
१८	०७:०१:४४:२४	०६:०७:३९:५३	०७:१५:३३:२५	०७:०७:१०:३६	०३:००:५१:५५	०६:१९:४३:२७	११:०१:०१:४५	१०:२०:१६:३८
१९	०७:०२:४४:५८	०६:१९:३२:१९	०७:१६:१७:१५	०७:०५:५२:४६	०३:००:५०:३२	०६:२०:५८:४९	११:०१:००:४३	१०:२०:१३:२७
२०	०७:०३:४५:३४	०७:०१:२४:००	०७:१७:०१:०९	०७:०४:३१:५२	०३:००:४८:५७	०६:२२:१४:१२	११:००:५९:४८	१०:२०:१०:१६
२१	०७:०४:४६:११	०७:१३:१६:२५	०७:१७:४५:०६	०७:०३:१०:३२	०३:००:४७:१०	०६:२३:२९:३६	११:००:५८:५९	१०:२०:०७:०५
२२	०७:०५:४६:४९	०७:२५:१०:४९	०७:१८:२९:०६	०७:०१:५१:२८	०३:००:४५:११	०६:२४:४५:००	११:००:५८:१६	१०:२०:०३:५४
२३	०७:०६:४७:२९	०८:०७:०८:३७	०७:१९:१३:१०	०७:००:३७:१८	०३:००:४३:००	०६:२६:००:२५	११:००:५७:४०	१०:२०:००:४३
२४	०७:०७:४८:११	०८:१९:११:३४	०७:१९:५७:१७	०६:२९:३०:२१	०३:००:४०:३८	०६:२७:१५:५१	११:००:५७:१०	१०:१९:५७:३३
२५	०७:०८:४८:५३	०९:०१:२१:५९	०७:२०:४१:२८	०६:२८:३२:३०	०३:००:३८:०३	०६:२८:३१:१७	११:००:५६:४७	१०:१९:५४:२२
२६	०७:०९:४९:३७	०९:१३:४२:४९	०७:२१:२५:४२	०६:२७:४५:०७	०३:००:३५:१७	०६:२९:४६:४३	११:००:५६:३०	१०:१९:५१:११
२७	०७:१०:५०:२१	०९:२६:१७:४४	०७:२२:०९:५९	०६:२७:०९:०१	०३:००:३२:२०	०७:०१:०२:१०	११:००:५६:१९	१०:१९:४८:००
२८	०७:११:५१:०७	१०:०९:१०:४४	०७:२२:५४:१९	०६:२६:४४:३३	०३:००:२९:११	०७:०२:१७:३७	११:००:५६:१५ मा	१०:१९:४४:४९
२९	०७:१२:५१:५४	१०:२२:२५:५७	०७:२३:३८:४२	०६:२६:३१:३७ मा	०३:००:२५:५०	०७:०३:३३:०५	११:००:५६:१८	१०:१९:४१:३८
३०	०७:१३:५२:४१	११:०६:०६:५१	०७:२४:२३:०९	०६:२६:२९:४८	०३:००:२२:१९	०७:०४:४८:३३	११:००:५६:२७	१०:१९:३८:२७

पता– निर्णय सागर पंचांग कार्यालय, नीमच (म.प्र.), फोन : ८९६४०९८६४०

*दिसम्बर सन् २०२५ ई. सूर्योदये इ. ००।०० दैनिक ग्रहस्पष्ट — मासारंभे अयनांशा: २४° १३' १५"

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु (वक्री)	शुक्र	शनि (मार्गी)	राहु
	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.
१	०७:१४:५३:३०	११:२०:१५:२९	०७:२५:०७:३८	०६:२६:३८:२९	०३:००:१८:३६	०७:०६:०४:०१	११:००:५६:४२	१०:१९:३५:१६
२	०७:१५:५४:२०	००:०४:५१:२५	०७:२५:५२:११	०६:२६:५६:५३	०३:००:१४:४२	०७:०७:१९:२९	११:००:५७:०४	१०:१९:३२:०६
३	०७:१६:५५:१०	००:१९:५०:४९	०७:२६:३६:४७	०६:२७:२४:०७	०३:००:१०:३७	०७:०८:३४:५८	११:००:५७:३३	१०:१९:२८:५५
४	०७:१७:५६:०१	०१:०५:०६:११	०७:२७:२१:२६	०६:२७:५९:१९	०३:००:०६:२२	०७:०९:५०:२७	११:००:५८:०८	१०:१९:२५:४४
५	०७:१८:५६:५४	०१:२०:२७:०२	०७:२८:०६:०८	०६:२८:४१:३७	०३:००:०१:५६	०७:११:०५:५७	११:००:५८:४९	१०:१९:२२:३३
६	०७:१९:५७:४७	०२:०५:४१:३३	०७:२८:५०:५३	०६:२९:३०:१३	०२:२९:५७:२०	०७:१२:२१:२६	११:००:५९:३७	१०:१९:१९:२२
७	०७:२०:५८:४२	०२:२०:३८:४८	०७:२९:३५:४१	०७:००:२४:२२	०२:२९:५२:३३	०७:१३:३६:५६	११:०१:००:३१	१०:१९:१६:११
८	०७:२१:५९:३८	०३:०५:१०:३८	०८:००:२०:३३	०७:०१:२३:२१	०२:२९:४७:३६	०७:१४:५२:२७	११:०१:०१:३२	१०:१९:१३:००
९	०७:२३:००:३४	०३:१९:१२:४१	०८:०१:०५:२७	०७:०२:२६:३५	०२:२९:४२:२९	०७:१६:०७:५७	११:०१:०२:३९	१०:१९:०९:५०
१०	०७:२४:०१:३३	०४:०२:४४:१२	०८:०१:५०:२५	०७:०३:३३:३०	०२:२९:३७:१२	०७:१७:२३:२८	११:०१:०३:५२	१०:१९:०६:३९
११	०७:२५:०२:३२	०४:१५:४७:२४	०८:०२:३५:२६	०७:०४:४३:३८	०२:२९:३१:४५	०७:१८:३९:००	११:०१:०५:१२	१०:१९:०३:२८
१२	०७:२६:०३:३२	०४:२८:२६:१८	०८:०३:२०:३०	०७:०५:५६:३२	०२:२९:२६:०९	०७:१९:५४:३२	११:०१:०६:३८	१०:१९:००:१७
१३	०७:२७:०४:३४	०५:१०:४५:५४	०८:०४:०५:३७	०७:०७:११:५०	०२:२९:२०:२४	०७:२१:१०:०४	११:०१:०८:११	१०:१८:५७:०६
१४	०७:२८:०५:३६	०५:२२:५१:२२	०८:०४:५०:४७	०७:०८:२९:१५	०२:२९:१४:२९	०७:२२:२५:३६	११:०१:०९:५०	१०:१८:५३:५५
१५	०७:२९:०६:४०	०६:०४:४७:४१	०८:०५:३६:००	०७:०९:४८:२८	०२:२९:०८:२६	०७:२३:४१:०९	११:०१:११:३५	१०:१८:५०:४४
१६	०८:००:०७:४४	०६:१६:३९:११	०८:०६:२१:१७	०७:११:०९:१५	०२:२९:०२:१४	०७:२४:५६:४२	११:०१:१३:२६	१०:१८:४७:३४
१७	०८:०१:०८:४९	०६:२८:२९:२९	०८:०७:०६:३६	०७:१२:३१:२५	०२:२८:५५:५४	०७:२६:१२:१५	११:०१:१५:२४	१०:१८:४४:२३
१८	०८:०२:०९:५५	०७:१०:२१:२२	०८:०७:५१:५८	०७:१३:५४:४६	०२:२८:४९:२६	०७:२७:२७:४८	११:०१:१७:२८	१०:१८:४१:१२
१९	०८:०३:११:०२	०७:२२:१६:५२	०८:०८:३७:२३	०७:१५:१९:१०	०२:२८:४२:५०	०७:२८:४३:२२	११:०१:१९:३९	१०:१८:३८:०१
२०	०८:०४:१२:०९	०८:०४:१७:२३	०८:०९:२२:५१	०७:१६:४४:२९	०२:२८:३६:०६	०७:२९:५८:५५	११:०१:२१:५५	१०:१८:३४:५०
२१	०८:०५:१३:१७	०८:१६:२३:५५	०८:१०:०८:२२	०७:१८:१०:३७	०२:२८:२९:१५	०८:०१:१४:२८	११:०१:२४:१८	१०:१८:३१:३९
२२	०८:०६:१४:२५	०८:२८:३७:२४	०८:१०:५३:५५	०७:१९:३७:२७	०२:२८:२२:१७	०८:०२:३०:०१	११:०१:२६:४७	१०:१८:२८:२९
२३	०८:०७:१५:३४	०९:१०:५८:५३	०८:११:३९:३१	०७:२१:०४:५६	०२:२८:१५:१३	०८:०३:४५:३४	११:०१:२९:२२	१०:१८:२५:१८
२४	०८:०८:१६:४३	०९:२३:२९:५४	०८:१२:२५:१०	०७:२२:३२:५९	०२:२८:०८:०२	०८:०५:०१:०७	११:०१:३२:०२	१०:१८:२२:०७
२५	०८:०९:१७:५२	१०:०६:१२:३०	०८:१३:१०:५१	०७:२४:०१:३३	०२:२८:००:४६	०८:०६:१६:४०	११:०१:३४:४९	१०:१८:१८:५६
२६	०८:१०:१९:०१	१०:१९:०९:१५	०८:१३:५६:३५	०७:२५:३०:३६	०२:२७:५३:२३	०८:०७:३२:१२	११:०१:३७:४२	१०:१८:१५:४५
२७	०८:११:२०:१०	११:०२:२३:०७	०८:१४:४२:२१	०७:२७:००:०६	०२:२७:४५:५६	०८:०८:४७:४५	११:०१:४०:४१	१०:१८:१२:३४
२८	०८:१२:२१:१९	११:१५:५६:५४	०८:१५:२८:१०	०७:२८:३०:००	०२:२७:३८:२३	०८:१०:०३:१७	११:०१:४३:४६	१०:१८:०९:२४
२९	०८:१३:२२:२७	११:२९:५२:४०	०८:१६:१४:०१	०८:००:००:१८	०२:२७:३०:४६	०८:११:१८:४८	११:०१:४६:५६	१०:१८:०६:१३
३०	०८:१४:२३:३६	००:१४:१०:५५	०८:१६:५९:५४	०८:०१:३०:५८	०२:२७:२३:०४	०८:१२:३४:२०	११:०१:५०:१२	१०:१८:०३:०२
३१	०८:१५:२४:४५	००:२८:४९:४५	०८:१७:४५:५०	०८:०३:०२:००	०२:२७:१५:१९	०८:१३:४९:५१	११:०१:५३:३४	१०:१७:५९:५१

*जनवरी सन् २०२६ ई. सूर्योदये इ. ००।०० दैनिक ग्रहस्पष्ट — मासारंभे अयनांशा: २४° १३' १९"

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु (वक्री)	शुक्र	शनि	राहु
	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.
१	०८:१६:२५:५३	०१:१३:४४:२२	०८:१८:३१:४८	०८:०४:३३:२४	०२:२७:०७:३०	०८:१५:०५:२१	११:०१:५७:०१	१०:१७:५६:४०
२	०८:१७:२७:०१	०१:२८:४७:०८	०८:१९:१७:४९	०८:०६:०५:०८	०२:२६:५९:३८	०८:१६:२०:५२	११:०२:००:३४	१०:१७:५३:३०
३	०८:१८:२८:१०	०२:१३:४८:३२	०८:२०:०३:५१	०८:०७:३७:१४	०२:२६:५१:४३	०८:१७:३६:२२	११:०२:०४:१३	१०:१७:५०:१९
४	०८:१९:२९:१८	०२:२८:३८:४५	०८:२०:४९:५६	०८:०९:०९:४१	०२:२६:४३:४५	०८:१८:५१:५१	११:०२:०७:५६	१०:१७:४७:०८
५	०८:२०:३०:२६	०३:१३:०९:२४	०८:२१:३६:०४	०८:१०:४२:३०	०२:२६:३५:४५	०८:२०:०७:२१	११:०२:११:४६	१०:१७:४३:५७
६	०८:२१:३१:३४	०३:२७:१४:४४	०८:२२:२२:१४	०८:१२:१५:४१	०२:२६:२७:४३	०८:२१:२२:५०	११:०२:१५:४०	१०:१७:४०:४६
७	०८:२२:३२:४२	०४:१०:५२:१०	०८:२३:०८:२६	०८:१३:४९:१४	०२:२६:१९:३९	०८:२२:३८:१९	११:०२:१९:४०	१०:१७:३७:३५
८	०८:२३:३३:५०	०४:२४:०२:०४	०८:२३:५४:४०	०८:१५:२३:१०	०२:२६:११:३५	०८:२३:५३:४८	११:०२:२३:४५	१०:१७:३४:२५
९	०८:२४:३४:५८	०५:०६:४७:०४	०८:२४:४०:५७	०८:१६:५७:३१	०२:२६:०३:२९	०८:२५:०९:१७	११:०२:२७:५६	१०:१७:३१:१४
१०	०८:२५:३६:०६	०५:१९:११:१४	०८:२५:२७:१५	०८:१८:३२:१६	०२:२५:५५:२३	०८:२६:२४:४६	११:०२:३२:११	१०:१७:२८:०३
११	०८:२६:३७:१४	०६:०१:१९:३१	०८:२६:१३:३६	०८:२०:०७:२६	०२:२५:४७:१७	०८:२७:४०:१४	११:०२:३६:३२	१०:१७:२४:५२
१२	०८:२७:३८:२२	०६:१३:१७:०४	०८:२६:६०:००	०८:२१:४३:०३	०२:२५:३९:१२	०८:२८:५५:४२	११:०२:४०:५७	१०:१७:२१:४२
१३	०८:२८:३९:३०	०६:२५:०८:५१	०८:२७:४६:२५	०८:२३:१९:०७	०२:२५:३१:०६	०९:००:११:१०	११:०२:४५:२८	१०:१७:१८:३१
१४	०८:२९:४०:३८	०७:०६:५९:२६	०८:२८:३२:५३	०८:२४:५५:३९	०२:२५:२३:०२	०९:०१:२६:३८	११:०२:५०:०४	१०:१७:१५:२०
१५	०९:००:४१:४६	०७:१८:५२:४१	०८:२९:१९:२२	०८:२६:३२:३९	०२:२५:१५:००	०९:०२:४२:०५	११:०२:५४:४४	१०:१७:१२:०९
१६	०९:०१:४२:५३	०८:००:५१:४४	०९:००:०५:५४	०८:२८:१०:१०	०२:२५:०६:५९	०९:०३:५७:३२	११:०२:५९:२९	१०:१७:०८:५९
१७	०९:०२:४४:००	०८:१२:५८:५२	०९:००:५२:२७	०८:२९:४८:११	०२:२४:५९:००	०९:०५:१२:५८	११:०३:०४:१९	१०:१७:०५:४८
१८	०९:०३:४५:०६	०८:२५:१५:३७	०९:०१:३९:०३	०९:०१:२६:४३	०२:२४:५१:०४	०९:०६:२८:२५	११:०३:०९:१४	१०:१७:०२:३७
१९	०९:०४:४६:१२	०९:०७:४२:५४	०९:०२:२५:४०	०९:०३:०५:४७	०२:२४:४३:१०	०९:०७:४३:५०	११:०३:१४:१३	१०:१६:५९:२६
२०	०९:०५:४७:१७	०९:२०:२१:०८	०९:०३:१२:१९	०९:०४:४५:२५	०२:२४:३५:२०	०९:०८:५९:१५	११:०३:१९:१७	१०:१६:५६:१६
२१	०९:०६:४८:२१	१०:०३:१०:३४	०९:०३:५९:००	०९:०६:२५:३५	०२:२४:२७:३४	०९:१०:१४:४०	११:०३:२४:२५	१०:१६:५३:०५
२२	०९:०७:४९:२५	१०:१६:११:३१	०९:०४:४५:४२	०९:०८:०६:२०	०२:२४:१९:५१	०९:११:३०:०४	११:०३:२९:३८	१०:१६:४९:५४
२३	०९:०८:५०:२७	१०:२९:२४:२६	०९:०५:३२:२६	०९:०९:४७:३८	०२:२४:१२:१३	०९:१२:४५:२७	११:०३:३४:५५	१०:१६:४६:४३
२४	०९:०९:५१:२९	११:१२:५०:०२	०९:०६:१९:११	०९:११:२९:३१	०२:२४:०४:४०	०९:१४:००:४९	११:०३:४०:१६	१०:१६:४३:३३
२५	०९:१०:५२:३०	११:२६:२९:०६	०९:०७:०५:५८	०९:१३:११:५८	०२:२३:५७:१२	०९:१५:१६:११	११:०३:४५:४२	१०:१६:४०:२२
२६	०९:११:५३:२९	००:१०:२२:१०	०९:०७:५२:४६	०९:१४:५४:५९	०२:२३:४९:४९	०९:१६:३१:३२	११:०३:५१:११	१०:१६:३७:११
२७	०९:१२:५४:२७	००:२४:२९:०४	०९:०८:३९:३६	०९:१६:३८:३२	०२:२३:४२:३२	०९:१७:४६:५२	११:०३:५६:४५	१०:१६:३४:००
२८	०९:१३:५५:२४	०१:०८:४८:२७	०९:०९:२६:२७	०९:१८:२२:३८	०२:२३:३५:२०	०९:१९:०२:११	११:०४:०२:२२	१०:१६:३०:५०
२९	०९:१४:५६:२०	०१:२३:१७:२६	०९:१०:१३:१९	०९:२०:०७:१३	०२:२३:२८:१६	०९:२०:१७:३०	११:०४:०८:०४	१०:१६:२७:३९
३०	०९:१५:५७:१४	०२:०७:५१:३०	०९:११:००:१२	०९:२१:५२:१७	०२:२३:२१:१७	०९:२१:३२:४७	११:०४:१३:४९	१०:१६:२४:२८
३१	०९:१६:५८:०७	०२:२२:२४:४७	०९:११:४७:०७	०९:२३:३७:४५	०२:२३:१४:२६	०९:२२:४८:०४	११:०४:१९:३८	१०:१६:२१:१८

✳फरवरी सन् २०२६ ई. सूर्योदये इ. ००।०० दैनिक ग्रहस्पष्ट — मासारंभे अयनांशाः २४° १३' २४"

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु (वक्री)	शुक्र	शनि	राहु
	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.
१	०९:१७:५८:५९	०३:०६:५०:४७	०९:१२:३४:०३	०९:२५:२३:३५	०२:२३:०७:४१	०९:२४:०३:१९	११:०४:२५:३१	१०:१६:१८:०७
२	०९:१८:५९:५०	०३:२१:०३:२०	०९:१३:२१:००	०९:२७:०९:४१	०२:२३:०१:०४	०९:२५:१८:३४	११:०४:३१:२७	१०:१६:१४:५६
३	०९:२०:००:४०	०४:०४:५७:२७	०९:१४:०७:५९	०९:२८:५५:५८	०२:२२:५४:३५	०९:२६:३३:४८	११:०४:३७:२७	१०:१६:११:४५
४	०९:२१:०१:२९	०४:१८:२९:५९	०९:१४:५४:५८	१०:००:४२:१९	०२:२२:४८:१३	०९:२७:४९:०२	११:०४:४३:३०	१०:१६:०८:३५
५	०९:२२:०२:१६	०५:०१:३९:४७	०९:१५:४१:५९	१०:०२:२८:३४	०२:२२:४२:००	०९:२९:०४:१४	११:०४:४९:३७	१०:१६:०५:२४
६	०९:२३:०३:०३	०५:१४:२७:३९	०९:१६:२९:०१	१०:०४:१४:३४	०२:२२:३५:५४	१०:००:१९:२६	११:०४:५५:४७	१०:१६:०२:१३
७	०९:२४:०३:४९	०५:२६:५५:५९	०९:१७:१६:०४	१०:०६:००:०६	०२:२२:२९:५८	१०:०१:३४:३७	११:०५:०२:००	१०:१५:५९:०३
८	०९:२५:०४:३३	०६:०९:०८:२२	०९:१८:०३:०८	१०:०७:४४:५६	०२:२२:२४:१०	१०:०२:४९:४७	११:०५:०८:१७	१०:१५:५५:५२
९	०९:२६:०५:१७	०६:२१:०९:०८	०९:१८:५०:१४	१०:०९:२८:४६	०२:२२:१८:३१	१०:०४:०४:५६	११:०५:१४:३६	१०:१५:५२:४१
१०	०९:२७:०५:५९	०७:०३:०२:५९	०९:१९:३७:२०	१०:११:११:१७	०२:२२:१३:०२	१०:०५:२०:०५	११:०५:२०:५९	१०:१५:४९:३१
११	०९:२८:०६:४१	०७:१४:५४:४६	०९:२०:२४:२७	१०:१२:५२:०५	०२:२२:०७:४२	१०:०६:३५:१२	११:०५:२७:२५	१०:१५:४६:२०
१२	०९:२९:०७:२१	०७:२६:४९:०३	०९:२१:११:३६	१०:१४:३०:४६	०२:२२:०२:३१	१०:०७:५०:१९	११:०५:३३:५४	१०:१५:४३:०९
१३	१०:००:०८:००	०८:०८:५०:०४	०९:२१:५८:४५	१०:१६:०६:५०	०२:२१:५७:३१	१०:०९:०५:२५	११:०५:४०:२६	१०:१५:३९:५९
१४	१०:०१:०८:३८	०८:२१:०१:२२	०९:२२:४५:५५	१०:१७:३९:४५	०२:२१:५२:४०	१०:१०:२०:३०	११:०५:४७:००	१०:१५:३६:४८
१५	१०:०२:०९:१५	०९:०३:२५:४४	०९:२३:३३:०५	१०:१९:०८:५७	०२:२१:४८:००	१०:११:३५:३४	११:०५:५३:३८	१०:१५:३३:३७
१६	१०:०३:०९:५०	०९:१६:०५:०२	०९:२४:२०:१७	१०:२०:३३:४९	०२:२१:४३:३०	१०:१२:५०:३७	११:०६:००:१८	१०:१५:३०:२७
१७	१०:०४:१०:२४	०९:२९:००:०७	०९:२५:०७:२८	१०:२१:५३:३९	०२:२१:३९:१०	१०:१४:०५:३९	११:०६:०७:००	१०:१५:२७:१६
१८	१०:०५:१०:५६	१०:१२:१०:५३	०९:२५:५४:४१	१०:२३:०७:४९	०२:२१:३५:०१	१०:१५:२०:४०	११:०६:१३:४५	१०:१५:२४:०५
१९	१०:०६:११:२७	१०:२५:३६:२२	०९:२६:४१:५४	१०:२४:१५:३६	०२:२१:३१:०३	१०:१६:३५:४०	११:०६:२०:३३	१०:१५:२०:५४
२०	१०:०७:११:५६	११:०९:१४:५६	०९:२७:२९:०७	१०:२५:१६:१९	०२:२१:२७:१७	१०:१७:५०:३८	११:०६:२७:२३	१०:१५:१७:४४
२१	१०:०८:१२:२४	११:२३:०४:३५	०९:२८:१६:२१	१०:२६:०९:२०	०२:२१:२३:४१	१०:१९:०५:३५	११:०६:३४:१५	१०:१५:१४:३३
२२	१०:०९:१२:४९	००:०७:०३:०५	०९:२९:०३:३५	१०:२६:५४:००	०२:२१:२०:१६	१०:२०:२०:३१	११:०६:४१:१०	१०:१५:११:२३
२३	१०:१०:१३:१३	००:२१:०८:१०	०९:२९:५०:५०	१०:२७:२९:४९	०२:२१:१७:०३	१०:२१:३५:२६	११:०६:४८:०६	१०:१५:०८:१२
२४	१०:११:१३:३४	०१:०५:१७:३८	१०:००:३८:०४	१०:२७:५६:१९	०२:२१:१४:०१	१०:२२:५०:१९	११:०६:५५:०५	१०:१५:०५:०१
२५	१०:१२:१३:५४	०१:१९:२९:१४	१०:०१:२५:१८	१०:२८:१३:११	०२:२१:११:१०	१०:२४:०५:१०	११:०७:०२:०६	१०:१५:०१:५१
२६	१०:१३:१४:१२	०२:०३:४०:४२	१०:०२:१२:३३	१०:२८:२०:१४व	०२:२१:०८:३१	१०:२५:२०:००	११:०७:०९:०८	१०:१४:५८:४०
२७	१०:१४:१४:२७	०२:१७:४९:३४	१०:०२:५९:४८	१०:२८:१७:२६	०२:२१:०६:०४	१०:२६:३४:४९	११:०७:१६:१३	१०:१४:५५:२९
२८	१०:१५:१४:४१	०३:०१:५३:०८	१०:०३:४७:०२	१०:२८:०४:५८	०२:२१:०३:४८	१०:२७:४९:३५	११:०७:२३:१९	१०:१४:५२:१९

•निर्णयसागर-कालदर्शक• प्रतिवार्षिक पंचांग के अलावा हमारा नित्य उपयोगी कैलेण्डर प्रारूप का २४ (चौबीस) पेजी कालदर्शक सन् २०२६ई. का भी विविध विषय सम्पन्न व्रत-पर्व-तिथि निर्णय सहित तथा अनेक सारगर्भित लेखों सहित प्रकाशित है। मूल्य एक प्रति ४०) रुपये थोक भाव हेतु भी पत्र व्यवहार कर ऑर्डर देवें।

✳मार्च सन् २०२६ ई. सूर्योदये इ. ००।०० दैनिक ग्रहस्पष्ट — मासारंभे अयनांशाः २४° १३' २८"

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध (वक्री)	गुरु (वक्री)	शुक्र	शनि	राहु
	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.
१	१०:१६:१४:५२	०३:१५:४८:३४	१०:०४:३४:१७	१०:२७:४३:१२	०२:२१:०१:४४	१०:२९:०४:२१	११:०७:३०:२७	१०:१४:४९:०८
२	१०:१७:१५:०२	०३:२९:३३:०५	१०:०५:२१:३१	१०:२७:१२:४२	०२:२०:५९:५१	११:००:१९:०४	११:०७:३७:३६	१०:१४:४५:५७
३	१०:१८:१५:१०	०४:१३:०४:११	१०:०६:०८:४६	१०:२६:३४:१५	०२:२०:५८:११	११:०१:३३:४६	११:०७:४४:४७	१०:१४:४२:४७
४	१०:१९:१५:१६	०४:२६:१९:५३	१०:०६:५६:००	१०:२५:४८:५१	०२:२०:५६:४१	११:०२:४८:२७	११:०७:५२:००	१०:१४:३९:३६
५	१०:२०:१५:२०	०५:०९:१९:०५	१०:०७:४३:१५	१०:२४:५७:३९	०२:२०:५५:२४	११:०४:०३:०६	११:०७:५९:१४	१०:१४:३६:२५
६	१०:२१:१५:२२	०५:२२:०१:३७	१०:०८:३०:२९	१०:२४:०१:५७	०२:२०:५४:१८	११:०५:१७:४४	११:०८:०६:३०	१०:१४:३३:१५
७	१०:२२:१५:२३	०६:०४:२८:२७	१०:०९:१७:४३	१०:२३:०३:१०	०२:२०:५३:२४	११:०६:३२:२०	११:०८:१३:४६	१०:१४:३०:०४
८	१०:२३:१५:२२	०६:१६:४१:३५	१०:१०:०४:५८	१०:२२:०२:४२	०२:२०:५२:४२	११:०७:४६:५४	११:०८:२१:०५	१०:१४:२६:५३
९	१०:२४:१५:१९	०६:२८:४३:५३	१०:१०:५२:११	१०:२१:०२:००	०२:२०:५२:११	११:०९:०१:२७	११:०८:२८:२४	१०:१४:२३:४३
१०	१०:२५:१५:१४	०७:१०:३९:०४	१०:११:३९:२५	१०:२०:०२:२५	०२:२०:५१:५२	११:१०:१५:५९	११:०८:३५:४४	१०:१४:२०:३२
११	१०:२६:१५:०८	०७:२२:३१:२२	१०:१२:२६:३९	१०:१९:०५:१०	०२:२०:५१:४४मा	११:११:३०:२९	११:०८:४३:०६	१०:१४:१७:२२
१२	१०:२७:१५:०१	०८:०४:२५:२२	१०:१३:१३:५२	१०:१८:११:२१	०२:२०:५१:५०	११:१२:४४:५७	११:०८:५०:२८	१०:१४:१४:११
१३	१०:२८:१४:५१	०८:१६:२५:४८	१०:१४:०१:०४	१०:१७:२१:५३	०२:२०:५२:०६	११:१३:५९:२४	११:०८:५७:५२	१०:१४:११:००
१४	१०:२९:१४:४०	०८:२८:३७:१५	१०:१४:४८:१७	१०:१६:३७:२९	०२:२०:५२:३५	११:१५:१३:५०	११:०९:०५:१६	१०:१४:०७:५०
१५	११:००:१४:२७	०९:११:०३:४९	१०:१५:३५:२९	१०:१५:५८:४२	०२:२०:५३:१४	११:१६:२८:१३	११:०९:१२:४१	१०:१४:०४:३९
१६	११:०१:१४:१३	०९:२३:४८:५४	१०:१६:२२:४०	१०:१५:२५:५६	०२:२०:५४:०६	११:१७:४२:३६	११:०९:२०:०७	१०:१४:०१:२८
१७	११:०२:१३:५७	१०:०६:५४:४२	१०:१७:०९:५१	१०:१४:५९:२४	०२:२०:५५:०९	११:१८:५६:५६	११:०९:२७:३३	१०:१३:५८:१८
१८	११:०३:१३:३८	१०:२०:२१:५७	१०:१७:५७:०१	१०:१४:३९:१२	०२:२०:५६:२३	११:२०:११:१५	११:०९:३५:००	१०:१३:५५:०७
१९	११:०४:१३:१८	११:०४:०९:४२	१०:१८:४४:१०	१०:१४:२५:१९	०२:२०:५७:४९	११:२१:२५:३२	११:०९:४२:२८	१०:१३:५१:५७

✳मार्च सन् २०२५ ई. सूर्योदये इ. ००।०० दैनिक ग्रहस्पष्ट — मासारंभे अयनांशाः २४° १२' ३२"

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध (वक्री)	गुरु	शुक्र (वक्री)	शनि	राहु
	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.
३०	११:१५:२२:२३	११:२३:४१:०५	०२:२८:४५:४९	११:०५:४९:३८	०१:२१:२८:०९	११:०४:१७:३२	११:००:०२:४०	११:०२:३७:३१
३१	११:१६:२१:३९	००:०८:४८:४६	०२:२९:०४:५२	११:०५:०७:५५	०१:२१:३७:१५	११:०३:४६:५१	११:००:०९:५३	११:०२:३४:२०

♣ **अयनांश ज्ञात करना** ♣ पंचाग में इष्ट ००।०० के ग्रह स्पष्ट के साथ ही प्रत्येक माह की तारीख के अयनांश दिए गए हैं, परन्तु हम किसी अन्य तारीख की पत्रिका बना रहे हैं तो उस अभीष्ट दिवस के अयनांश कैसे ज्ञात करें। इसके लिए प्रत्येक माह की एक तारीख के अयनांश में तारीख १ से ४ तक ० विकला, तारीख ५ से ११ तक १ विकला, तारीख १२ से १९ तक २ विकला, तारीख २० से २६ तक ३ विकला तथा तारीख २७ से ३१ तक ४ विकला जोड़ने पर अभीष्ट दिवस के अयनांश प्राप्त होंगे।

तिथ्यादिहित देशान्तर उपकरण ● जोधपुर से पूर्व देशों में धन + तथा पश्चिम देशों में अन्तर - करें ▲ तथा सूर्योदयास्त लग्न प्रवेश हेतु ▲ पूर्वदेशेषु विपरीत-ऋण तथा पश्चिमदेशेषुधनम + प्रतिफलम्

❋ अक्षांश रेखांशादि सारिणी रचना ❋

● गणमान्यपंचांगे निर्णयसागरे-नीमचनगरस्थे ●

स्टेण्डर्ड रेल्वे समय उपकरण ● स्थानीय देशी समय और स्टैण्डर्ड समय का अन्तर। रेल्वे समय में स्टे.अन्तर मिनिट घटाने से देशी समय प्राप्त होगा, तथा देशी समय में जोड़ने से रेल्वे समय होगा।

नगर का नाम	अक्षांश उत्तर अं. क.	रेखांश पूर्व अं. क.	देशान्तर फलम् घ. प.	स्टेण्डर्ड अन्तर मिनिट	नगर का नाम	अक्षांश उत्तर अं. क.	रेखांश पूर्व अं. क.	देशान्तर फलम् घ. प.	स्टेण्डर्ड अन्तर मिनिट	नगर का नाम	अक्षांश उत्तर अं. क.	रेखांश पूर्व अं. क.	देशान्तर फलम् घ. प.	स्टेण्डर्ड अन्तर मिनिट	नगर का नाम	अक्षांश उत्तर अं. क.	रेखांश पूर्व अं. क.	देशान्तर फलम् घ. प.	स्टेण्डर्ड अन्तर मिनिट
अजमेर	२६।२७	७४।४२	+०।१७	-३१	उन्नाव	२६।४८	८०।४३	+१।१७	-०७	किशनगढ राज.	२६।३७	७४।४०	+०।१७	-३१	चित्तौड़गढ	२४।५४	७४।४२	+०।१७	-३१
अलवर	२७।३४	७६।३८	+०।३७	-२३	उधमपुर पंजाब	३२।५६	७४।४३	+०।१७	-३१	कुरूक्षेत्र	२९।५८	७६।४८	+०।३७	-२३	चित्रकूट	२५।१५	८०।२८	+१।१५	-०८
अयोध्या	२६।४८	८२।१४	+१।३२	-०१	उटकमण्ड	११।१७	७६।४२	+०।३७	-२३	कुम्भकोणम्	१०।५८	७९।२५	+१।२	-१२	चैनपुर	२५।०२	८३।२०	+१।४२	+०३
अम्बाला	३०।२१	७६।५२	+०।३८	-२३	एटा कासगंज	२७।३५	७८।४१	+०।५७	-१५	कन्याकुमारीतमिल	०८।०६	७७।३४	+०।४५	-२०	चेरापूंजी	२५।१७	९१।४७	+३।०७	+३७
अमृतसर	३१।३७	७४।५५	+०।१८	-३१	एलिचपुर	२१।१८	७७।३५	+०।४५	-२०	केम्बलपुर पाक.	३३।४२	७२।१८	-०।०७	-११	चौपड़ा	२१।१५	७५।२०	+०।२२	-२९
अमरावती	२०।५६	७७।४८	+०।४७	-१९	औरंगाबाद म.रा.	१९।५३	७५।२३	+०।२५	-२८	कोलम्बो सिलोन	०६।५६	७९।५६	+१।१०	-१०	छपरा (बिहार)	२४।४७	८४।३१	+१।५७	+०९
अलीगंज हथुवा	२६।१२	८४।०८	+१।५०	+०६	औरंगाबाद बिहार	२४।४५	८४।२५	+१।५५	+०८	कोल्हापुर	१६।४२	७४।१६	+०।१२	-३३	छतरपुर	२४।५४	७९।३८	+१।०७	-११
अहमद्पुर	२९।१७	७१।३५	-०।१५	-४४	कटक	२०।२८	८५।५४	+२।१०	+१४	कोटा राज.	२५।१०	७५।५२	+०।२८	-२७	छिबरा मउ	२७।१०	७९।२९	+१।०५	-१२
अलमोड़ा	२९।३७	७९।४०	+१।०७	-११	कराची (पाक.)	२४।५१	६७।०४	-०।१०	-३२	कोचीन बन्दरगाह	०९।५८	७६।१७	+०।३२	-२५	जलगांव	२१।०१	७५।३९	+०।२५	-२९
अमरोहा	२८।५४	७८।१४	+०।५५	-१७	कन्नौज	२७।०३	७९।५८	+१।१०	-१०	खैरपुर सिन्ध	२७।२८	६८।४७	-०।४२	-२५	जगाधरी	३०।१०	७७।१८	+०।४२	-२१
अगरोहा	२९।२०	७५।४०	+०।२५	-२७	करनाल	२९।४२	७७।०२	+०।४०	-२२	खण्डवा	२१।५०	७६।१८	+०।३२	-२५	जगन्नाथपुरी	१९।४६	८५।४८	+०२।७	+१३
अखनूर (काश.)	३२।५४	७४।३५	+०।१५	-३२	कलकत्ता	२२।३४	८८।२४	+२।३५	+२४	खंभात	२२।१९	७२।३६	-०।०५	-४०	जमशेदपुर	२२।५०	८६।१०	+२।१२	+१५
अनन्तनाग (काश.)	३३।४४	७५।१०	+०।२०	-३०	कठुआ काश्मीर	३२।२२	७५।३६	+०।२५	-२८	गुडगांव	२८।२७	७७।०४	+०।४०	-२२	जलपाईगुड़ी	२६।३२	८८।४६	+२।३७	+२५
अलीगंजभोगांव	२७।२०	७९।१२	+१।०२	-१३	कपूरथला	३१।२३	७५।२५	+०।२५	-२८	गुलबर्गा	१७।२२	७६।४७	+०।३७	-२३	जसमेरगढ	३२।३०	७५।१८	+०।२२	-२९
अनूप शहर	२८।२१	७८।२३	+०।५२	-१७	कच्छभुज	२३।१५	६९।४०	-०।३३	-५१	गुन्टूर	१६।२०	८०।२७	+१।१५	-०८	जंजीरा	१८।१५	७३।००	-००।०	-३८
अलीगढ	२७।५४	७८।०६	+०।५०	-१८	कल्याण-महा.	१९।१७	७३।११	+०।००	-३७	गयाजी	२४।४९	८५।०१	+०२।०	+१०	जबलपुर (म.प्र.)	२३।१०	८०।०१	+१।१०	-१०
अमेठी	२६।०७	८१।४७	+१।२७	-०३	करीमनगर	१८।२७	७९।०६	+१।०२	-१४	ग्वालियर	२६।१४	७८।१०	+०।५२	-१७	जयपुर	२६।५६	७५।५२	+०।२७	-२७
अगरतला त्रिपुरा	२३।४९	९१।१७	+३।०२	+३५	करनूल	१५।५५	७८।००	+०।५०	-१८	गाजीपुर	२५।३४	८३।३५	+१।४५	+०४	जम्मू	३२।४४	७४।५४	+०।२०	-३०
अहमदनगर	१९।०५	७४।४८	+०।१७	-३१	कोलार गो.फि.	१३।५५	७४।५५	+०।१७	-३०	गिलगिल	३५।५४	७४।२२	+०।१३	-३३	जसगोटा	३२।४४	७५।०७	+०।२०	-३०
अहमदाबाद	२३।०२	७२।३८	-०।०३	-३९	कोयम्बतूर	११।००	७७।००	+०।४०	-२२	गिद्धौर	२४।५१	८६।०७	+२।१०	+१४	जसवन्तनगर	२६।५१	७८।५५	+०१।०	-१४
अंमलनेर	२१।३६	७१।२०	-०।१५	-४५	कालीकट	११।१५	७५।४९	+०।२७	-२७	गुरूसहायगंज	२७।०८	७९।४४	+०१।७	-११	जालना	१९।५०	७५।५८	+०।२७	-२६
आबू	२४।४०	७२।४५	-०।०२	-३९	कायमगंज	२७।३५	७९।२१	+१।०२	-१२	गुरूदासपुर	३२।०३	७५।२७	+०।२५	-२८	जामनगर	२२।२७	७०।०७	-०।३०	-५०
आकोला	२०।४२	७७।०२	+०।४०	-२२	कांडीलंका	०७।२०	८०।४५	+१।१७	-०७	गुजरात पाकिस्तान	३२।३६	७४।०५	+०।१०	-०४	जालंधर	३१।१९	७५।१८	+०।२२	-२९
आगरा	२७।१०	७८।०५	+०।५०	-१८	कालपी	२६।०९	७९।४३	+१।०७	-११	गुजरावाला पाक.	३२।१०	७४।१४	+०।१२	-०३	जाफराबाद	२०।५२	७१।२५	-०।१५	-४४
आसनसोल	२३।४२	८७।२०	+२।२२	+१९	कालका	३०।५०	७६।५६	+०।४०	-२२	गोरखपुर	२६।४५	८३।२७	+१।४५	+०४	जूनागढ गुज.	२१।३१	७०।३६	-०।२५	-४८
आजमगढ	२६।०३	८३।१३	+१।४२	+०३	काशी-वाराणसी	२५।२०	८३।००	+१।४०	+०२	गोंडा	२७।२८	८२।०१	+१।३०	-०२	जैसलमेर	२६।५५	७०।५७	-०।२०	-४६
आदिलाबाद	१९।४०	७८।३१	+०।५७	-१६	काबुल अफगान	३४।२७	६९।०६	-०।३९	-५३	गोवा	१५।३०	७३।५७	+०।१०	-३४	जौनपुर	२५।४२	८२।४४	+१।३७	+०१
इटावा	२६।४७	७९।०२	+०।१०	-१४	काठमांडु नेपाल	२७।४२	८५।१२	+१।०२	+११	गोहाटी (आसाम)	२६।११	९१।४५	+०३।७	+३७	जोधपुर	२६।१९	७३।०४	००।००	-३८
इन्दौर	२२।४५	७५।५०	+०।२८	-२७	कानपुर	२६।२८	८०।२४	+१।१५	-०८	गोकर्ण	१४।३३	७४।१८	+०।१२	-३३	झरिया	२३।५०	८२।३३	+१।३५	-००
इडर	२३।५०	७३।०२	+००।०	-३८	कालाबाग पाक.	३२।५८	७१।३६	-०।१५	-१४	चन्द्रपुर-चान्दा	१९।५८	७९।२१	+१।०२	-१३	झारसूगडा	२१।५६	८४।०४	+१।५०	+०६
इचलकरंजी	१६।४०	७४।३३	+०।१६	-३२	कांकरोली	२५।०२	७३।५४	+०।१०	-३४	चमन (क्वेटा पा.)	३०।३३	६६।३०	-०१।५	-३४	झांसी	२५।३७	७८।३७	+०।५५	-१६
इम्फाल मणिपुर	२४।५४	९३।५४	+३।३०	+४६	कांचीपुरम्-तमिल	१२।५१	७९।५३	+१।१०	-११	चम्बा	३२।३४	७६।१०	+०।३२	-२५	झालरापाटन	२४।३२	७६।१२	+०।३२	-२५
उदयपुर (मेवाड़)	२४।३७	७३।४२	+०।०७	-३५	कांगड़ा	३२।०९	७६।१८	+०।३२	-२५	चंडीगढ	३०।४०	७६।५२	+०।४०	-२२	ट्रावनकोर	०९।००	७७।००	+०।४०	-२२
उज्जैन	२३।०९	७५।४३	+०।२७	-२७	किश्तवाड़ जम्मू	३३।१२	७५।४८	+०।२७	-२७	चिकमंगलूर	१३।२०	७५।४६	+०।२७	-२७	टुण्डला जंक्शन	२७।१३	७८।१३	+०।५२	-१७

तिथ्यादिहित देशान्तर उपकरण ● जोधपुर से पूर्व देशों में धन + तथा पश्चिम देशों में अन्तर - करें ▲ तथा सूर्योदयास्त लग्न प्रवेश हेतु ▲ पूर्वदेशेषु विपरीत-ऋण तथा पश्चिमदेशेषुधनम + प्रतिफलम्

❋ अक्षांश रेखांशादि सारिणी रचना ❋

● गणमान्यपंचांगे निर्णयसागरे-नीमचनगरस्थे ●

स्टेण्डर्ड रेल्वे समय उपकरण ● स्थानीय देशी समय और स्टैण्डर्ड समय का अन्तर। रेल्वे समय में स्टे.अन्तर मिनिट घटाने से देशी समय प्राप्त होगा, तथा देशी समय में जोड़ने से रेल्वे समय होगा।

नगर का नाम	अक्षांश उत्तर अं. क.	रेखांश पूर्व अं. क.	देशान्तर फलम् घ. प.	स्टेण्डर्ड अन्तर मिनिट
टाटानगर-बिहार	२१।०९	८०।१०	+०१।१२	-०९
टोंक राजस्थान	२६।११	७५।५०	+०।२८	-२७
डलहौजी	३२।३०	७५।५४	+०।२८	-२७
डिबरूगढ	२७।२९	९४।५६	+३।४०	±५०
डिवाई	२८।१२	७८।१५	+०।५२	-१७
डेरागाजीखां पा.	३०।०४	७०।४९	-०।२७	-१६
ढाका बांग्लादेश	२३।४३	९०।२६	+२।५५	+३२
तुमसर	२१।२४	७९।४८	+१।०८	-११
त्रिचूर-केरल	१०।३२	७६।१४	+०।३२	-२५
त्रिचनापल्ली	१०।५०	७८।४६	+०।५७	-१५
त्रिवेन्द्रम	०८।३०	७६।५४	+०।४०	-२२
दरभंगा	२६।१०	८५।५७	+२।१०	+१४
दाहोद गुजरात	२२।५०	७४।१५	+०।१२	-३३
दार्जिलिंग	२७।६	८८।१८	+२।३२	+२३
द्वारकाधाम	२२।१२	६९।०१	-०।४०	-५४
दिल्ली-देहली	२८।३८	७७।१२	+०।४२	-२१
देहरादून	३०।२०	७८।४	+०।५०	-१८
दौलताबाद	१९।५७	७५।१२	+०।२२	-२९
धवलपुर धौलपुर	२६।४८	७७।५३	+०।५०	-१८
धर्मशाला	३२।१६	७६।२३	+०।३४	-२४
ध्रांगध्रा-सौराष्ट्र	२२।५९	७१।३२	-०।१५	-४४
धारवाड़	१५।२६	७५।००	+०।२०	-३०
धार म.प्र.	२२।३६	७५।१२	+०।२२	-२९
धूलिया	२०।५८	७४।४२	+०।१७	-३१
नसीराबाद	२६।०८	७४।४६	+०।१७	-३१
नड़ियाद (गुज.)	२२।४१	७२।५५	-००।०	-३८
नान्देड़	१९।११	७७।२१	+०।४३	-२१
नासिक	२०।०२	७३।५०	+०।०८	-३५
नाभा-पंजाब	३०।२३	७६।०९	+०।३०	-२६
नागपुर	२१।०९	७९।०९	+०।१२	-१३
नाथद्वारा	२४।५६	७३।५२	+०।०८	-३५
निजामाबाद	१८।४०	७८।०५	+०।५०	-१८
नीमच	२४।२७	७४।५२	+०।१८	-३१
परली	१८।५३	७६।३६	+०।३७	-३

नगर का नाम	अक्षांश उत्तर अं. क.	रेखांश पूर्व अं. क.	देशान्तर फलम् घ. प.	स्टेण्डर्ड अन्तर मिनिट
परतूर	१९।३६	७६।२०	+०।३५	-२५
परभणी	१९।१६	७६।५१	+०।३७	-२३
पटियाला	३०।२२	७६।२५	+०।३५	-२४
पटना-बिहार	२५।३७	८५।१३	+०२।२	+११
पठानकोट	३२।१५	७५।४२	+०।२७	-२७
प्रतापगढ (राज.)	२४।०२	७४।५०	+०।१८	-३१
प्रयागराज	२५।२४	८१।५४	+१।२८	-०३
पालीताणा	२१।३०	७१।४०	-०।१५	-४३
पानीपत	२९।२३	७७।०१	+०।४२	-२१
पाटन (राज.)	२७।५९	७६।०१	+०।३०	-२६
पाण्डीचेरी	११।५६	७९।५३	+१।१०	-१०
पीलीभीत	२८।४०	७९।५०	+०१।८	-११
पुरूलिया-बिहार	२३।२०	८६।२५	+२।१५	+१६
पूना	१८।१९	७३।५५	+०।१०	-३४
पूरणिया	२५।४६	८७।३०	+२।२५	+२०
पोरबन्दर-गुजरात	२१।३७	६९।४९	-०।३२	-५१
पंढरपुर	१७।४१	७५।२३	+०।२४	-२८
फरीदकोट	३०।४०	७४।५७	+०।२०	-३०
फरीदाबाद हरि.	२८।२६	७७।१९	+०।४२	-२१
फर्रूखाबाद	२७।२४	७९।३७	+०१।५	-१२
फतेहपुर (उ.प्र.)	२५।५५	८०।५२	+१।२०	-६
फतेहपुर (राज.)	२७।५२	७५।०२	+०।२०	-३०
फाजिल्का	३०।२५	७४।०४	+०।१०	-३४
फिरोजपुर	३०।५६	७४।४०	+०।१७	-३१
फैजाबाद	२६।४७	८२।१२	+१।३२	-०१
बड़ौदा-गुजरात	२२।१६	७३।१२	+०।०२	-३७
बद्रीनाथ	३०।४४	७९।३२	+१।०५	-१२
बरेली-उत्तरप्रदेश	२८।२२	७९।२७	+१।०५	-१२
बम्बई-मुम्बई	१८।५७	७२।५०	+०।०२	-३९
बहराइच	२७।३४	८१।४०	+१।२७	-०३
बल्लभगढ हरि.	२८।२१	७७।१९	+०।४२	-२१
बलरामपुर	२७।०४	८१।५०	+०।३०	-०२
बेलगांव	१५।५४	७४।३६	+०।१५	-३२
बेलूर-कर्नाटक	१३।०८	७५।५१	+०।२७	-२७

नगर का नाम	अक्षांश उत्तर अं. क.	रेखांश पूर्व अं. क.	देशान्तर फलम् घ. प.	स्टेण्डर्ड अन्तर मिनिट
बेल्लारी	१५।११	७६।५४	+०।३७	-२२
बासीम	२१।१०	७७।११	+०।४२	-२१
बागलकोट	१६।१२	७५।४२	+०।२६	-२८
बांकीपुर	२५।४०	८५।१२	+२।०२	+११
बांदा (उ.प्र.)	२५।२८	८०।२०	+१।१२	-०९
बांकुरा	२३।१४	८७।०३	+२।२०	+१८
बांसवाड़ा	२३।३०	७४।२४	+०।१४	-३२
बिलासपुर (म.प्र.)	२२।०५	८२।१३	+१।३२	-०१
बिलासपुर (हि.प्र.)	३१।१९	७६।५०	+०।३७	-२३
बीजापुर	१६।५०	७५।४७	+०।२७	-२७
बीकानेर	२८।०१	७३।२२	+०।०२	-३७
बूंदी (राज.)	२५।२७	७५।४१	+०।२७	-२७
बुलन्दशहर	२८।२४	७७।५४	+०।५०	-१८
बंगलौर	१२।५८	७७।३८	+०।४७	-१९
भण्डारा	२१।१०	७९।४१	+०१।७	-११
भ्रदावती	१३।५२	७५।४०	+०।२६	-२७
भिवानी हरियाणा	२८।४८	७६।०८	+०।३०	-३६
भिवण्डी	१९।१५	७३।०५	००।००	-३८
भुसावल	२१।०२	७५।४७	+०।२७	-२७
भरतपुर	२७।१५	७७।३०	+०।४५	-२०
भटिण्डा	३०।११	७५।००	+०।२०	-३०
भड़ोच	२१।४१	७३।००	-००।०	-३८
भावनगर-गुजरात	२१।४६	७२।११	-०।०८	-४१
भागलपुर	२५।१३	८६।५९	+२।२०	+१८
भुवनेश्वर	२०।२८	८५।५४	+२।१०	+१४
भूटान राजधानी	२७।३०	९०।००	+२।५०	+३०
महेन्द्रगढ हरि.	२८।१७	७६।०९	+०।३०	-२५
भोपाल	२३।१६	७७।३६	+०।४५	-२०
मनमाड़	२०।१५	७४।२९	+०।१४	-३२
मनसादेवी हरियाणा	३०।४३	७६।५१	+०।३७	-२३
मदुराई	०९।५५	७८।०७	+०।५०	-१८
मेहसाणा	२३।४२	७२।३७	-०।०३	-४०
मणीपुर स्टेट	२४।४४	९३।५८	+३।३०	+४६
मण्डी (हि.प्र.)	३१।४०	७६।५८	+०।४०	-२२

नगर का नाम	अक्षांश उत्तर अं. क.	रेखांश पूर्व अं. क.	देशान्तर फलम् घ. प.	स्टेण्डर्ड अन्तर मिनिट
मद्रास-चेन्नई	१३।०४	८०।१७	+१।१२	-०९
मथुरा	२७।२८	७७।४१	+०।४७	-१९
मालेगांव नासिक	२०।३१	७४।३०	+०।१५	-३२
माणिकपुर	२५।५०	८१।५०	+१।२८	-०३
मिर्जापुर	२५।०६	८२।३७	+१।३५	-००
मुरादाबाद	२८।५०	७८।४९	+०।५७	-१५
मुंगेर-बिहार	२५।२३	८६।३०	+२।१५	+१६
मुर्शिदाबाद	२४।१०	८८।१९	+२।३२	+२३
मुजफ्फरनगर	२९।३०	७७।४४	+०।४७	-१९
मुजफ्फरपुर	२६।१२	८५।२७	+२।०५	+१२
मेरठ	२९।००	७७।४५	+०।४७	-१९
मैसूर-कर्नाटक	१२।१८	७६।४२	+०।३७	-२३
मैनपुरी	२७।१३	७९।०४	+०।१०	-१४
मोतीहारी	२६।४०	८४।५७	+०२।०	+१०
यवतमाल	२०।२३	७८।११	+०।५५	-१७
यादगीर कर्नाटक	१६।४५	७७।१५	+०।४२	-२१
रत्नागिरि	१७।००	७३।२०	+०।०२	-३७
रतलाम	२३।२१	७५।०७	+०।२०	-३०
रायचूर	१६।१५	७७।२०	+०।४२	-२१
रोबर्ट सनपेट	१२।५४	७८।१६	+०।५५	-१७
राजामुन्द्री आंध्र.	१७।०५	८१।४८	+१।२८	-०३
राजकोट	२२।१८	७०।५९	-०।२०	-४६
रायगढ	२१।५८	८३।२६	+१।४५	+०४
रामदुर्ग	१५।५७	७५।२४	+०।२५	-२८
रायबरेली	२६।१५	८१।१६	+१।२२	-०५
रामेश्वरम्	०९।१७	७९।२२	+०१।२	-१३
रायपुर (छ.ग.)	२१।१५	८१।४१	+१।२७	-०३
रांची रामगढ	२३।४०	८५।३४	+०२।५	+१२
रायपुर (उ.प्र.)	२८।४८	७५।०५	+०१।०	-१४
रीवा	२४।३२	८१।१९	+१।२२	-०५
रेवाड़ी-जंक्शन	२८।१२	७६।४०	+०।३७	-२३
रोहतक	२८।५४	७६।३८	+०।३६	-२३
रंगून (बर्मा)	१६।५०	९६।१३	+३।५२	+५५
लद्दाख	३३।००	७८।४८	+०।५७	-१५

तिथ्यादिहित देशान्तर उपकरण ● जोधपुर से पूर्व देशों में धन + तथा पश्चिम देशों में अन्तर - करें ▲ तथा सूर्योदयास्त लग्न प्रवेश हेतु ▲ पूर्वदेशेषु विपरीत-ऋण तथा पश्चिमदेशेषुधनम + प्रतिफलम्

❋ अक्षांश रेखांशादि सारिणी रचना ❋

● गणमान्यपंचांगे निर्णयसागरे-नीमचनगरस्थे ●

स्टेण्डर्ड रेल्वे समय उपकरण ● स्थानीय देशी समय और स्टैण्डर्ड समय का अन्तर। रेल्वे समय में स्टे.अन्तर मिनिट घटाने से देशी समय प्राप्त होगा, तथा देशी समय में जोड़ने से रेल्वे समय होगा।

नगर का नाम	अक्षांश उत्तर अं. क.	रेखांश पूर्व अं. क.	देशान्तर फलम् घ. प.	स्टेण्डर्ड अन्तर मिनिट
लखनउ	२६।५५	८०।५९	+१।२०	-०६
ललितपुर	२४।२२	७८।२८	+०।५५	-१६
लातूर	१८।२४	७६।३४	+०।३७	-२४
लुधियाना	३०।५५	७५।५४	+०।३०	-२६
लाहौर (पाकि.)	३१।३७	७४।२६	+०।१४	-०२
वर्धा	२०।४५	७८।३९	+०।५७	-१५
वारनगल	१८।००	७९।३५	+०।१७	-१२
विजयवाड़ा	१६।३१	८०।३९	+१।१७	-०७
विशाखापट्टनम्	१७।४२	८३।२०	+१।४२	+०३
शाहजहांपुर	२७।५५	८०।००	+१।१०	-१०
शिमागो-मैसूर	१३।५६	७५।३८	+०।२७	-२७
शिकारपुर (पा.)	२७।५७	६८।४०	-०।४४	-२५
शिमला	३१।०६	७७।१३	+०।४२	-२१
शिकोहाबाद	२७।०६	७८।३८	+०।५७	-१५
शिलांग-मेघालय	२५।३४	९१।४५	+३।१०	+३८
श्रीगंगानगर	२९।५०	७३।५०	+०।१०	-३५
श्रीनगर काश्मीर	३४।०६	७४।५१	+०।१७	-३१
श्रीनगर गढवाल	३०।१४	७८।४२	+०।५७	-१५
श्रीमाधोपुर राज.	२७।२५	७५।२५	+०।२२	-२९
श्रीवर्धन	१८।०२	७३।००	+००।०	-३८
सतारा (महाराष्ट्र)	१७।४२	७४।०२	+०।१०	-३४
सम्बलपुर	२१।२८	८४।००	+१।५०	+०६
सहारनपुर	२९।५९	७७।२३	+०।४४	-२०
स्यालकोट (पा.)	३२।३१	७४।३६	+०।१५	-०२
साकोली	२१।०५	८०।०२	+१।१०	-१०
सागर (म.प्र.)	२३।५०	७८।४५	+०।५७	-१५
सिरसा	२९।३२	७५।०४	+०।२०	-३०
सिरोही	२४।३५	७३।०२	-०।००	-३८
सिकन्दराबाद	१७।२७	७८।३३	+०।५५	-१६
सीतामढी	२६।३५	८५।२७	+२।०५	+१२
सीतापुर	२७।३२	८०।२४	+१।१५	-०८
सुल्तानपुर	२६।१६	८२।०७	+१।३०	-०२
सूरत-गुजरात	२१।११	७२।५२	-०।०२	-३९
सेलम-तमिल	११।३९	७८।१५	+०।५२	-१७

नगर का नाम	अक्षांश उत्तर अं. क.	रेखांश पूर्व अं. क.	देशान्तर फलम् घ. प.	स्टेण्डर्ड अन्तर मिनिट
सोमनाथ	२१।०१	७०।२६	-०।२५	-४८
सोलापुर	१७।४०	७५।४८	-०।२७	-२७
सोनीपत	२८।५९	७७।०१	+०।४०	-२२
सोजत (मारवाड़)	२५।५६	७३।४२	+०।०७	-३५
सोनपुर (उड़ीसा)	२०।५१	८३।५५	+१।५०	+०६
सोलन (हि.प्र.)	३०।५७	७७।०९	+०।४०	-२२
संथाल परगना	२४।३०	८७।००	+२।२०	+१८
संगमनेर	१९।३५	७४।४६	+०।१७	-३१
हिंगोली	१९।४३	७७।११	+०।४२	-२१
हरदोई	२७।२३	८०।१०	+१।१२	-०९
हास्पेट	१५।१६	७६।२६	+०।३५	-२४
हजारीबाग	२३।५९	८५।२५	+२।०५	+१२
हरिद्वार	२९।५६	७८।१३	+०।५२	-१७
हांसी	२९।०६	७६।००	+०।३०	-२६
हथुना	२६।१२	८४।०५	+१।५०	+०६
हाजीपुर	२५।३५	८३।११	+१।४२	+०३
हाथरस	२७।३८	७८।०६	-०।५०	-१८
हिसार	२९।१०	७५।४६	+०।२७	-२७
हैदराबाद (पा.)	२५।२५	६८।३८	-०।४५	-२५
हैदराबाद दक्षिण	१७।१८	७८।३०	+०।५५	-१६
होशियारपुर	३१।३२	७५।५७	+०।३०	-२६
होशंगाबाद	२२।४६	७७।४५	+०।४७	-१९
होडल हरियाणा	२७।५३	७७।२२	+०।४२	-२१

संकेत - यहां दिये गये पाकिस्तानी नगरों के स्टेण्डर्ड अन्तर मिनट, पाकिस्तान के स्टेण्डर्ड टाईम तथा स्थानीय टाईम का अन्तर है। भारत और पाकिस्तान के स्टेण्डर्ड टाईम में ३० मिनट का अन्तर है। भारत में ३० मिनिट कम हैं।



नगर का नाम	अक्षांश उत्तर अं. क.	रेखांश पूर्व अं. क.	स्टेण्डर्ड अन्तर मिनिट
अवशेष राजस्थान नगर			
अकलेरा	२४।२३	७६।३६	-२४
अनूपगढ	२९।०७	७३।०६	-३८
आमेट	२५।२०	७३।५८	-३४
आसपुर	२३।५८	७४।०३	-३४
आहोर	२५।२३	७२।५०	-३९
इन्द्रगढ	२५।४४	७६।१३	-२५
एकलिंगजी	२४।४२	७३।४५	-३५
एरिनपुरा	२५।१०	७३।०५	-३८
ओसिया	२६।४५	७२।५४	-३८
करौली	२६।३०	७७।०२	-२२
कपासन	२४।५०	७४।२२	-३१
कुशालगढ	२३।१०	७४।२८	-३२
कूचामन	२७।१०	७४।५०	-३१
केकड़ी	२५।५५	७५।१०	-२९
कोटरा	२४।२२	७३।१०	-३७
कोलायतजी	२७।५०	७२।५८	-३८
खण्डेला-खाटू	२७।३५	७५।३०	-२८
खेड़ब्रह्मा	२४।०५	७३।०५	-३८
खेरवाड़ा	२४।००	७३।३४	-३६
श्री गंगानगर	२९।५०	७३।५०	-३५
गंगापुर-मेवाड़	२५।१५	७४।१७	-३३
गंगापुर-टोंक	२६।३०	७६।४५	-२३
गलियाकोट	२३।०९	७४।०	-३४
गढी	२३।०८	७४।१५	-३३
गिराब	२६।०२	७०।३५	-४८
गागरिया	२५।४५	७०।४४	-४७
चारभुजा रोड़	२५।१०	७३।५४	-३५
चिड़ावा	२८।१५	७५।४०	-२७
चुरू-शेखावटी	२८।१९	७५।०२	-३०
चोमूं-सामोद	२७।०८	७५।४८	-२७
छबरा	२४।४०	७६।५०	-२३
छोटीसादड़ी	२४।२५	७४।४०	-३१
जसरासर	२७।४५	७३।५०	-३५

नगर का नाम	अक्षांश उत्तर अं. क.	रेखांश पूर्व अं. क.	स्टेण्डर्ड अन्तर मिनिट
जसवन्तपुरा	२४।४८	७२।३०	-४०
जहाजपुरा	२५।३८	७५।१५	-२९
जायल	२७।१५	७४।१३	-३३
जालौर	२५।२२	७२।३८	-३९
जोधासर	२८।१०	७३।५०	-३५
झालावाड़	२४।३६	७६।१०	-२५
झुन्झुनुं	२८।०६	७५।२५	-२८
टाडगढ	२५।४०	७४।००	-३४
टोडारायसिंग	२६।००	७५।३०	-२८
डीग	२७।२८	७७।२०	-२१
डीडवाना	२७।२४	७४।३४	-३२
डूंगरपुर	२३।५०	७३।४५	-३५
डेगाना	२६।५०	७४।२०	-३३
तिजारा	२७।५२	७६।५०	-२३
थाना-कस्बा	२५।१२	७७।२०	-२१
थाना-गाजी	२७।२५	७६।२०	-२५
देवली	२५।४६	७५।२५	-२८
देवीकोट	२६।४०	७१।१०	-४५
देशनोक	२७।४८	७३।२०	-३७
देसूरी	२५।२०	७३।३७	-३६
नरैना	२६।५०	७४।१०	-३३
नवलगढ	२७।५०	७५।२०	-२९
नागौर	२७।१०	७३।४५	-३५
नारनौल	२८।०२	७६।१५	-२५
निम्बाहेड़ा	२४।३८	७४।४५	-३१
नीम का थाना	२७।४५	७५।५०	-२७
नोखा	२७।३५	७३।३०	-३६
नेनवां	२५।४५	७६।०	-२६
नोहर	२९।१०	७४।४५	-३१
पचपदरा	२५।५५	७२।२०	-४१
पर्वतसर	२६।५०	७४।५०	-३१
पाली-मारवाड़	२५।४६	७३।२०	-३७
पिलानी	२८।२३	७५।३५	-२८
पीपाड़ रोड़	२६।२७	७३।२७	-३६

❋ देशान्तर ज्ञान सूत्र ❋

जोधपुर-अक्षांश रेखांश पर इस पंचांग की गणना है। जोधपुर से अन्यत्र नगरों का देशान्तर जानने हेतु स्पष्ट सुगम विधि यह कि जोधपुर रेखांश व अपने अपने इष्ट नगर व ग्राम के रेखांशों का अन्तर करें, शेष अंश कालादि संख्या के प्राप्त होंगे इस शेष में ४ का गुणा करें, जो गुणनफल आवेगा, वह 'देशान्तर संस्कार' मिनिट-सेकण्ड में आवेगा। इसके घटी पल बना लेवें, इस हेतु नियम ढाई २॥ गुणा करने पर पलात्मक 'देशान्तर' संस्कार प्राप्त होगा।

● जोधपुर से पूर्व देश में धनफल तथा जोधपुर से पश्चिम देशों में - ऋण - फल देशान्तर प्राप्त होगा। जोधपुर रेखांश ७३।४ है, इससे कम रेखांश के नगर पश्चिम देशीय व इससे अधिक रेखांश के नगरपूर्व देशीय मान्य होंगे।

निर्णयसागर पंचांग कार्यालय, नीमच (म.प्र.)

तिथ्यादिहित देशान्तर उपकरण ● जोधपुर से पूर्व देशों में धन + तथा पश्चिम देशों में अन्तर - करें ▲ तथा सूर्योदयास्त लग्न प्रवेश हेतु ▲ पूर्वदेशेषु विपरीत-ऋण तथा पश्चिमदेशेषुधनम + प्रतिफलम्

❋ अक्षांश रेखांशादि सारिणी रचना ❋

● गणमान्यपंचांगे निर्णयसागरे-नीमचनगरस्थे ●

स्टेण्डर्ड रेल्वे समय उपकरण ● स्थानीय देशी समय और स्टैण्डर्ड समय का अन्तर। रेल्वे समय में स्टे.अन्तर मिनिट घटाने से देशी समय प्राप्त होगा, तथा देशी समय में जोड़ने से रेल्वे समय होगा।

नगर का नाम	अक्षांश उत्तर अं. क.	रेखांश पूर्व अं. क.	स्टेण्डर्ड अन्तर मिनिट	नगर का नाम	अक्षांश उत्तर अं. क.	रेखांश पूर्व अं. क.	स्टेण्डर्ड अन्तर मिनिट	नगर का नाम	अक्षांश उत्तर अं. क.	रेखांश पूर्व अं. क.	स्टेण्डर्ड अन्तर मिनिट	नगर का नाम	अक्षांश उत्तर अं. क.	रेखांश पूर्व अं. क.	स्टेण्डर्ड अन्तर मिनिट	नगर का नाम	अक्षांश उत्तर अं. क.	रेखांश पूर्व अं. क.	स्टेण्डर्ड अन्तर मिनिट
पुनासर	२७।०२	७३।०२	-३८	रींगस	२७।२१	७५।३४	-२८	करहाल	२७।०२	७९।०२	-१४	बदायूं	२८।०१	७९।१०	-१३	**अवशेष मध्यप्रदेश नगर**			
पुष्करराज	२६।३०	७४।३२	-३२	रिखबदेव	२४।०४	७३।४०	-३५	कालपी	२६।०७	७९।४४	-११	बाह	२६।५२	७८।३६	-१६	अमरकण्टक	२२।४०	८१।४८	-०३
फलौदी	२७।१०	७२।२२	-४१	लक्ष्मणगढ	२७।४५	७५।०४	-३०	कीछा	२८।५४	७९।३०	-१२	बालामठ	२७।१०	८०।४०	-०८	अम्बिकापुर	२३।११	८३।१५	+०४
फालना	२५।०५	७३।००	-३८	लाड़नूं	२७।४०	७४।२४	-३२	खुरजा	२८।१४	७७।५०	-१९	बाराबंकी	२६।५६	८१।१३	-०५	अशोकनगर	२४।३४	७७।५४	-१८
फुलेरा	२६।५०	७५।१५	-२९	लालसोट	२६।३४	७६।२४	-२४	खैर	२७।५५	७७।५४	-१८	बिलारी	२८।३७	७८।४८	-१५	अलिराजपुर	२३।१०	७४।२४	-३२
बड़ी सादड़ी	२४।२५	७४।२५	-३२	लूनी	२६।००	७२।५४	-३९	गढ-मुक्तेश्वर	२८।४७	७८।६	-१८	बिसलपुर	२८।१८	७९।५०	-११	अरोन	२५।५५	७७।५५	-१८
पोखरन	२६।५५	७१।५५	-४२	विजयनगर	२५।४५	७४।४४	-३१	गाजियाबाद	२८।४०	७७।२८	-२०	भरथना	२६।३९	७९।११	-१३	अम्बाह	२६।४३	७८।१३	-१७
वनस्थली	२६।२५	७५।५०	-२७	शाहपुरा मेवाड़	२५।४०	७४।५०	-३१	घाटमपुर	२६।१०	८०।११	-०९	मउ-बान्दा	२५।१६	८१।२२	-०५	अरोन-गुना	२४।२३	७७।१९	-१६
बयाना	२६।५५	७७।२०	-२१	शाहपुरा जयपुर	२७।२३	७५।५४	-२६	चरखारी	२५।२४	७९।४५	-११	मसूरी	३०।२७	७८।०६	-१८	आरंग-रायपुर	२१।१४	८२।०२	-०२
बांदीकुई	२७।०३	७६।३४	-२४	शेरगढ मारवाड़	२६।२५	७२।२४	-४१	चन्दौसी	२८।२७	७८।४३	-१५	मउ रानीपुर	२५।१५	७८।२६	-१४	आष्टा-सिहोर	२३।००	७६।४७	-२२
बाड़मेर	२५।४५	७१।२४	-४४	शेरगढ झाला	२४।४०	७६।३४	-२४	छाता	२७।४३	७७।३०	-२०	महोबा	२५।१७	७९।५५	-११	औंकारेश्वर	२२।१३	७६।०१	-२६
बाड़ी	२६।४०	७७।३४	-२०	श्री गंगानगर	२९।५०	७३।५०	-३५	जलेसर	२७।२९	७८।१८	-१७	मुगलसराय	२५।१७	८३।५१	+५	आलमपुर ग्वा.	२६।००	७८।४६	-१५
बाप	२७।२२	७२।२२	-४१	श्री डूंगरगढ	२८।०६	७४।०४	-३४	जसराना	२७।१५	७८।३८	-१५	मुरादनगर	२८।४७	७७।२९	-२०	इटारसी	२२।३०	७७।५५	-१८
बाली	२५।५०	७४।४	-३३	सलूम्बर	२४।०८	७४।०४	-३४	जलालाबाद	२७।०६	७९।४७	-११	रानीखेत	२९।४०	७९।३०	-१२	ईसागढ	२४।४५	७७।५०	-१८
बालोतरा	२५।४९	७२।१४	-४१	समदड़ी	२५।५०	७२।३४	-४०	जालौन	२६।०७	७९।२३	-१२	रामपुर	२८।४८	७९।०५	-१४	कटनी	२३।४७	८०।२७	-०८
बिलाड़ा	२६।१०	७३।४२	-३५	सरदार शहर	२८।२७	७४।३०	-३२	जौनपुर	२५।४६	८२।४४	+०१	राठ	२५।३६	७९।३४	-१२	कटंगी	२१।४७	७९।५०	-०९
ब्यावर	२६।०६	७४।२०	-३३	सवाईमाधोपुर	२५।५८	७६।२४	-२४	टाण्डा-रामपुर	२८।५८	७८।५७	-१४	रानीपुर	२५।१५	७९।२०	-१३	कटघोरा	२२।३०	८२।३४	+०२
भादरा	२९।१५	७५।२०	-२९	सागवाड़ा	२३।४०	७४।००	-३४	डिबाई	२८।१२	७८।१५	-१७	रूदोली	२६।४४	८१।४४	-०३	कुम्भराज	२४।१६	७७।८	-२१
भीनमाल	२५।००	७२।२०	-४१	संगरिया	२९।४०	७४।३४	-३२	देवप्रयाग	३०।०९	७८।३७	-१६	रूड़की	२९।५१	७७।५४	-१८	कोलारस	२५।१४	७७।३६	-२०
भीम	२५।४०	७४।१०	-३३	सांचोर	२४।४०	७१।५०	-४३	देवरिया	२६।३३	८३।४५	+०५	रोहिल खण्ड	२८।३०	७९।००	-१४	कोरबा	२२।२२	८२।४६	+०१
भीलवाड़ा	२५।२१	७४।४०	-३१	सांभर लेक	२६।५४	७५।१०	-२९	नवाबगंज-फरू.	२७।२६	७९।२४	-१२	लखीमपुर	२७।५७	८०।४९	-०७	खमरिया	५१।४७	८१।१५	-०५
भवानीमण्डी	२४।३०	७५।५४	-२७	सादूलपुर	२८।३८	७५।२४	-२८	नगीना	२९।२७	७५।३०	-२८	बक्सर	२५।३४	८४।१०	+०७	खरगोन	२१।५०	७५।४०	-२७
मकराना	२७।०३	७४।४४	-३१	सिवाना	२५।३६	७२।२४	-४०	नानपारा	२७।५२	८१।३३	-०४	विधुना	२६।४०	७९।३०	-१२	खरगांव	२१।४९	७५।३९	-२७
मालपुरा	२६।१८	७५।२५	-२८	सूरतगढ	२९।२०	७३।५४	-३४	नैनीताल	२९।२३	७९।३०	-१२	विसोली	२८।१८	७८।५५	-१४	खनिया धाना	२५।०२	७८।०८	-१७
मारवाड़ जं.	२५।४३	७३।४४	-३५	सुजानगढ	२७।४२	७४।३०	-३२	प्रतापगढ	२५।३३	८२।०	-०३	बिजनौर	२९।२२	७८।११	-१७	खाचरौद	२३।३४	७५।२०	-२८
मांडलगढ	२५।१२	७५।०४	-२९	सीकर-शेखावटी	२७।३६	७५।१०	-२९	पुखराया	२६।१४	७९।५०	-११	शाहाबाद	२७।३०	८०।०	-१०	खुरई	२४।०४	७८।१८	-१३
मावली	२४।४७	७३।५४	-३४	हनुमानगढ	२९।३५	७४।२४	-३३	फतेहगढ	२१।२३	७९।४०	-११	सम्भल	२८।३५	७८।३४	-१६	खुजनेर	२३।४८	७६।४०	-२३
मेड़तारोड़	२६।४०	७४।०४	-३४	हिण्डौन	२६।४४	७७।०४	-२२	फरीदपुर	२८।१२	७९।३२	-१२	सरीला	२५।४७	७९।४०	-११	गरोठ	२४।१४	७५।४१	-२७
रतनगढ	२८।०५	७४।४०	-३१	**अवशेष उत्तरप्रदेश नगर**				फतहपुर सीकरी	२७।०६	७७।३९	-१९	सादाबाद	२७।२६	७८।०२	-१८	गंज बासौदा	२३।३७	७७।५४	-१८
राजगढ	२८।४०	७५।२४	-२८	अहरोरॉ	२५।००	८२।०२	-०	फतेहाबाद	२७।०१	७८।१९	-१७	सिकन्दरा राउ	२७।४२	७८।२१	-१४	गाडरवारा	२२।५५	७८।५०	-१५
रानीवाड़ा	२४।४५	७२।१४	-४१	अमरोहा	२८।५४	७८।१४	-१७	फफून्द	२६।३५	७९।३४	-१२	सौरों	२७।५१	७८।४८	-१४	गुना	२४।३९	७७।२०	-२१
रामदेवरा	२७।००	७१।५४	-४३	आंवला	२८।१७	७९।०९	-१३	फिरोजाबाद	२७।०९	७८।२४	-१७	हलद्वानी	२९।१३	७९।३१	-१२	गोहरगंज	२३।०२	७७।४२	-१९
रावतभाटा	२५।०५	७५।४४	-२८	औरेया	२६।३०	७९।३२	-१२	बहेड़ी	२८।४३	७९।३०	-१२	हमीरपुर	२५।५७	८०।१२	-१०	गोहद	२६।२५	७८।३०	-१६
रायसिंगनगर	२९।३०	७३।२४	-३६	उरई	२५।५८	७९।३०	-१२	बलिया	२५।४४	८४।११	+०७	हापुड़	२८।४२	७७।५०	-१९	चन्देरी-गुना	२४।४३	७८।८	-१७

❀ अक्षांश रेखांशादि सारिणी रचना ❀

● गणमान्यपंचांगे निर्णयसागरे-नीमचनगरस्थे ●

तिथ्यादिहित देशान्तर उपकरण ● जोधपुर से पूर्व देशों में धन + तथा पश्चिम देशों में अन्तर - करें ▲ तथा सूर्योदयास्त लग्न प्रवेश हेतु ▲ पूर्वदेशेषु विपरीत-ऋण तथा पश्चिमदेशेषुधनम + प्रतिफलम्

स्टेण्डर्ड रेल्वे समय उपकरण ● स्थानीय देशी समय और स्टैण्डर्ड समय का अन्तर। रेल्वे समय में स्टे.अन्तर मिनिट घटाने से देशी समय प्राप्त होगा, तथा देशी समय में जोड़ने से रेल्वे समय होगा।

नगर का नाम	अक्षांश उत्तर अं. क.	रेखांश पूर्व अं. क.	स्टेण्डर्ड अन्तर मिनिट
चाम्पा	२२।०१	८२।४३	+०१
छत्तीसगढ	२१।३०	८२।००	-०२
छिंदवाड़ा	२२।०४	७८।५८	-१४
जगदलपुर	१९।०४	८२।०५	-०२
जांजगीर	२२।०३	८२।३४	+०२
जावरा	२३।४३	७५।०८	-२९
जीरापुर	२४।००	७६।१२	-२५
जोबट	२२।३०	७४।४२	-३१
जौरा-अलापुर	२६।२१	७७।५८	-१८
झाबुआ	२२।४५	७४।३८	-३१
तालबहट	२५।०२	७८।२६	-१६
दतिया	२५।३९	७८।२१	-१७
दमोह	२३।४९	७९।२९	-१२
दुर्ग-द्रुग	२१।११	८१।२१	-०५
देवास	२२।५७	७६।६	-२६
देवरी-रायपुर	२१।२९	८२।४१	+१
देवरी-सागर	२३।२३	७९।५	-१३
देवगढ	२१।५१	७८।५०	-१५
धमतरी	२०।४१	८१।३४	-०४
धार	२२।३६	७५।१२	-२९
नरवर	२५।३९	७७।५४	-१८
नरसिंहगढ	२३।४३	७७।०८	-२१
नरसिंहपुर	२२।५८	७९।१५	-१३
नागदा	२३।३०	७५।२९	-२८
नौहरा	२३।२८	७९।४०	-१२
पचमढी	२२।३०	७८।२२	-१७
पन्ना	२४।४३	८०।१४	-०९
पिछोर	२५।५८	७८।३२	-१६
पानसेमल	२१।४०	७४।४२	-३१
पिपरिया	२१।५१	७७।३०	-२०
पिचोर	२५।१५	७८।१०	-१७
पिथोरा	२१।२०	८२।३६	+०२
पिपरोदा	२५।५	७७।२७	-२०
पिपरई	२४।३०	७७।५८	-१८

नगर का नाम	अक्षांश उत्तर अं. क.	रेखांश पूर्व अं. क.	स्टेण्डर्ड अन्तर मिनिट
पौड़ी	२५।३५	७७।२५	-२१
बस्तर	१९।१०	८१।३०	-०४
बालाघाट	२१।४७	८०।१५	-०९
बड़वानी	२२।०३	७४।५७	-३०
बदनावर	२३।०५	७५।१८	-२९
बड़नगर	२३।०६	७५।२४	-२८
बड़वाह	२२।२५	७५।५८	-२६
बड़ौदा-शिवपुर	२५।३०	७६।४८	-२३
बारा सिवनी	२१।४०	८०।०५	-०९
बिजईपुर-मुरैना	२६।००	७७।२०	-२१
बीना	२४।१५	७८।२०	-१७
बुन्देलखण्ड	२४।३९	८०।०९	-०९
बैरसिया	२३।४०	७७।२५	-२०
बैतूल	२१।५१	७७।५८	-१८
बेहर	२२।०५	८०।४०	-०६
भाटापारा	२१।४०	८१।५५	-०२
भान्डेर	२५।४४	७८।४४	-१५
भीकनगांव	२१।५०	७६।०	-२६
भिण्ड	२६।३३	७८।४७	-१५
मण्डला	२२।४२	८०।३५	-०९
मऊ	२२।३३	७५।४७	-२७
मनासा	२४।३६	७५।११	-२९
मन्दसौर	२४।०६	७५।०८	-३०
महेश्वर	२२।११	७५।४०	-२७
महासमुन्द	२१।०७	८२।१०	-०१
मुंगेली	२२।०५	८१।५४	-०३
मुलताई	२१।४६	७८।२०	-१७
मुरैना	२६।२५	७८।०४	-१८
मूगावली	२४।२५	७८।०६	-१८
मोहनगढ	२४।५९	७८।४१	-१५
रायसेन	२३।२०	७७।५०	-१९
राहतगढ	२३।४५	७८।२८	-१६
राजनांदगांव	२१।०५	८१।०५	-०६
राजगढ	२४।००	७६।४०	-२३

नगर का नाम	अक्षांश उत्तर अं. क.	रेखांश पूर्व अं. क.	स्टेण्डर्ड अन्तर मिनिट
राजगढ-शिवपुरी	२५।२०	७७।३०	-२०
रामपुर-गुना	२४।४५	७७।०९	-२१
रेहली	२३।२८	७९।०८	-१३
विदिशा	२३।३२	७७।५१	-१९
शहडोल	२३।१५	८१।२०	-०५
शाजापुर	२३।२५	७६।१८	-२५
शिवपुर	२५।४५	७६।४८	-२३
शिवपुरी	२५।३९	७७।४४	-१९
शुजालपुर	२३।२३	७६।३४	-२३
सनावद	२२।१०	७६।१०	-२५
सबलगढ	२६।१६	७७।३०	-२०
सतना	२४।३३	८०।५५	-०६
सिवनी	२२।०५	७९।३५	-१२
सिलवानी	२३।२०	७८।३०	-१६
सिंगोली	२४।५६	७५।३०	-२८
सिहोर	२३।०६	७७।०७	-२१
सेवरी-नारायण	२१।४५	८२।३४	+०२
सिरोंज	२४।०५	७७।४४	-१९
सेंधवा	२१।४०	७५।०८	-२९
सोहागपुर	२२।४१	७८।१७	-१७
हरदा	२२।४१	७७।०८	-२१
हरसूद	२२।०५	७६।४५	-२३

● आयु - वय - प्रमाण ●

▲ वर्षायु ० से १ नवजात शिशु शैशव - सुकुमार
▲ वर्षायु ५ पर्यन्त शिशु निर्मल-बाल कालांश
▲ वर्षायु५ से १२ बाल्याऽवस्था श्रीयोगदवृद्धिकाल
▲ वर्षायु १२ से १८ श्री यौवनारंभ शुभकालांशः
▲ वर्षायु १८ से ३० श्री युवाऽवस्था कर्मकाल
▲ वर्षायु ३० से ४५ मध्यावस्था सुखदकालांशः
▲ वर्षायु ४५ से ६० प्रोढाऽवस्था समकालांशः
▲ वर्षायु ६० उपरान्त वृद्धावस्था वानप्रस्थकालांशः
एवं श्रीहरि संकीर्तन शुद्ध दिनचर्या-रात्रिचर्या

❀ श्री नव-ग्रह स्तोत्र ❀

● **सूर्य** - जपाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम् ।
तमोरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम् ॥
● **चन्द्र** - दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णव सम्भवं ।
नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुट भूषणम् ॥
● **भौम** - धरणीगर्भसंभूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम् ।
कुमारं शक्तिहस्तं तं मंगलं प्रणमाम्यहम् ॥
● **बुध** - प्रियंगुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम् ।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम् ॥
● **गुरू** - देवानां चं ऋषिणां च गुरूं कांचनसंनिभम् ।
बुद्धिभूतंत्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम् ॥
● **शुक्र** - हिम कुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरूम् ।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवंप्रणमाम्यहम् ॥
● **शनि** - नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजं ।
छायामार्त्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम् ॥
● **राहु** - अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्य विमर्दनम् ।
सिंहिका गर्भसंभूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम् ।
● **केतु** - पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम् ।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतु प्रणमाम्यहम् ॥

इति व्यास मुखाद्गीतं यः पठेत् सुसमाहितः। दिवा वा यदि वा रात्रौविघ्नशांतिर्भविष्यति ॥ नरनारीनृपाणां च भवेदुःस्वप्ननाशनम्। एश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्धनम् ॥ ग्रह नक्षत्रजाः पीड़ास्तस्कराग्नि समुद्भवाः। ताः सर्वाः प्रशमं यान्ति व्यासो ब्रूते न संशयः ॥

✦❀✦ दिनमानतः सूर्योदयास्त ✦❀✦

अपने नगर की लग्नसारिणी से इष्ट दिन के सूर्य राशि-अंश अनुसार इष्ट दिन लग्न फलांक लग्नसारिणी से लेवें तथा इस लग्न फलांक से सप्तम ७ राशि अंश के लग्न फलांक में से इष्ट दिन के लग्न फलांक घटा देवें, यह दिनमान इष्ट नगरीय होगा तथा दिनमान में ५ का भाग देने से मध्यम सूर्यास्त समय प्राप्त होगा उसको १२ घण्टे में घटाने से मध्यम सूर्योदयकाल शेष रहेगा। यथा तारीख २४ सितम्बर जोधपुर दिनमान ३०।४ में ५ के भाग से ६ घण्टा १ मिनिट मध्यम देशी-लोकल सूर्यास्त समय आया इसे १२ घण्टे में से घटाने पर ५।५९ मध्यम सूर्योदय आया। इसमें रेल्वे स्टेण्डर्ड अन्तर संस्कार तथा वेलान्तर संस्कार से स्टेण्डर्ड समय के सूर्योदयास्त प्राप्त होगे। पंचांग में जोधपुर सूर्योदयास्त अब स्टेण्डर्ड रेल्वे समय में ही दिया गया है।

उत्तर अक्षांश ८ से ३६ पर्यन्त मिनिटात्मक चरान्तर फल कौष्टक | अक्षांश २७ से ३६ उत्तरा क्रांति में मिनट

उपकरण-उत्तर क्रांति में मिनट + धन   दक्षिण क्रांति में मिनिट - ऋण | - ऋण   दक्षिण क्रांति में मिनिट + धन

क्रांति	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	क्रांति
अंश	मिनिट		०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	अंश
०१	०२	०२	०२	०१	०१	०१	०१	०१	०१	०१	०१	०१	०१	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	०१	०१	०१	०१
०२	०३	०३	०३	०२	०२	०२	०२	०२	०२	०२	०२	०१	०१	०१	०१	०१	००	००	००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२
०३	०४	०४	०४	०४	०३	०३	०३	०३	०३	०३	०२	०२	०२	०१	०१	०१	०१	००	००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०३	०३
०४	०६	०५	०५	०५	०४	०४	०४	०४	०३	०३	०३	०२	०२	०२	०१	०१	०१	००	००	००	००	०१	०१	०१	०२	०२	०३	०३	०४	०४
०५	०७	०७	०६	०६	०५	०५	०५	०५	०४	०४	०३	०३	०३	०२	०२	०१	०१	०१	००	००	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०४	०४	०४	०५
०६	०८	०८	०८	०७	०६	०६	०६	०५	०५	०५	०४	०४	०३	०३	०२	०२	०१	०१	००	००	०१	०१	०२	०२	०३	०३	०५	०५	०५	०६
०७	१०	०९	०९	०८	०८	०७	०७	०६	०६	०५	०५	०४	०४	०३	०२	०२	०१	०१	००	००	०१	०१	०२	०३	०३	०४	०६	०६	०६	०७
०८	११	१०	१०	१०	०९	०८	०८	०७	०७	०६	०५	०५	०४	०४	०३	०२	०२	०१	००	००	०१	०२	०३	०३	०४	०५	०६	०६	०७	०८
०९	१३	१२	१२	११	१०	०९	०९	०८	०८	०७	०६	०५	०५	०४	०३	०३	०२	०१	००	००	०१	०२	०३	०४	०४	०६	०६	०७	०८	०९
१०	१४	१४	१३	१२	११	११	१०	०९	०८	०८	०७	०६	०५	०५	०४	०३	०२	०१	००	००	०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०
११	१६	१५	१४	१३	१२	१२	११	१०	०९	०८	०८	०७	०६	०५	०४	०३	०२	०१	००	०१	०१	०२	०४	०४	०६	०६	०८	०९	१०	११
१२	१७	१६	१६	१५	१४	१३	१२	११	१०	०९	०८	०७	०६	०५	०४	०३	०२	०१	००	०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०९	१०	११	१२
१३	१९	१८	१७	१६	१५	१४	१३	१२	११	१०	०९	०८	०७	०६	०५	०४	०३	०१	००	०१	०२	०३	०४	०६	०७	०८	१०	११	१२	१३
१४	२०	१९	१८	१७	१६	१५	१४	१३	१२	११	०९	०८	०७	०६	०५	०४	०३	०२	००	०१	०२	०३	०५	०६	०७	०९	१०	१२	१३	१४
१५	२२	२०	१९	१८	१७	१६	१५	१४	१३	१२	१०	०९	०८	०७	०५	०४	०३	०२	००	०१	०२	०४	०५	०७	०८	१०	११	१३	१४	१५
१६	२३	२२	२१	२०	१९	१७	१६	१५	१३	१२	११	१०	०८	०७	०६	०४	०३	०२	००	०१	०२	०४	०५	०७	०९	१०	१२	१४	१५	१६
१७	२४	२३	२२	२१	२०	१८	१७	१६	१४	१३	१२	१०	०९	०८	०६	०५	०३	०२	००	०१	०३	०४	०६	०८	०९	११	१३	१५	१६	१७
१८	२६	२५	२३	२२	२१	१९	१८	१७	१५	१४	१२	११	१०	०८	०६	०५	०३	०२	००	०१	०३	०५	०६	०८	१०	१२	१४	१६	१७	१८
१९	२८	२६	२५	२३	२२	२०	१९	१८	१६	१५	१३	१२	१०	०८	०७	०५	०४	०२	००	०१	०३	०५	०७	०९	११	१३	१५	१७	१८	१९
२०	२९	२८	२६	२५	२३	२१	२०	१८	१७	१५	१४	१२	११	०९	०७	०५	०४	०२	००	०२	०३	०५	०७	०९	११	१३	१६	१८	२०	२०
२१	३१	२९	२८	२६	२४	२३	२१	१९	१८	१६	१४	१३	११	०९	०७	०६	०४	०२	००	०२	०४	०६	०८	१०	१२	१४	१७	१९	२१	२१
२२	३३	३१	२९	२८	२६	२४	२२	२०	१९	१७	१५	१३	१२	१०	०८	०६	०४	०२	००	०२	०४	०६	०८	११	१३	१५	१७	२०	२३	२२
२३	३४	३२	३०	२९	२७	२५	२३	२१	२०	१८	१६	१४	१२	१०	०८	०६	०४	०२	००	०२	०४	०७	०९	११	१३	१६	१८	२१	२४	२३
२४	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२३	२१	१९	१७	१५	१३	११	०९	०७	०४	०२	००	०२	०५	०७	०९	१२	१४	१७	१९	२२	२५	२४
	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	

- **पंचामृत** - गौघृत, गौदुग्ध, गाय का दही, गंगोदक, शहद।
- **पंचगव्य** - गोबर, गौमूत्र, गौदुग्ध, गौघृत, गाय का दही
- **पंच रत्न** - स्वर्ण, रजत, ताम्र, प्रवाल, मोती।
- **पंचपल्लव** - पीपलपत्ता, आम पत्ता, गूलर पत्ता, बड़पत्ता, पिलखन (अशोक)।
- **सप्तमृतिका** - हाथी स्थान, अश्व स्थान, वाल्मिक, दीमक, नदी संगम, तालाब, गौशाला+राजद्वार।
- **सप्तधान्य** - जौ, गेहूँ, चांवल, तिल, कांगनी, उड़द, मूँग
- **सप्तधातु**- सोना, चाँदी, ताम्बा, लोहा, राँगा, सीसा, आरकूट
- **अष्टमहादान** - कपास, नमक, घी, सप्तधान्य, स्वर्ण, लोहा, भूमि, गौदान।
- **अष्टांगअर्ध्य** - जल, पुष्प, कुशा का अग्रभाग, दही, चाँवल, केशर, दूर्वा, सुपारी
- **दशमहादान**- गौ, भूमि, तिल, स्वर्ण, घी, वस्त्र, धान्य, गुड़, चाँदी, लवण।
- **पंचोपचार** - गन्ध (चन्दनादि), पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य
- **पंचदेव** - सूर्य, गणेश, शक्ति, शिव, विष्णु

❁ समय भेद - अन्तरांश ❁

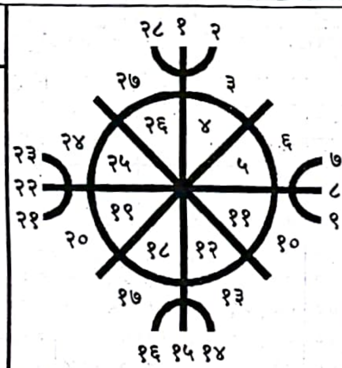
ग्रह गणित नियम से २४ घण्टे एक अहोरात्र में सूर्यनारायण ३६० अंश का गतिक्रम पूर्ण कर लेते हैं तो १८० अंश पूर्ति में १२ घण्टे तथा ९० अंश भोग करने में ६ घण्टे लग पाते हैं एवं अनुपात गणना नियामक से २४ घण्टे में ३६० अंश रवि गतिचार तो १ घण्टा में क्या? अर्थात् १५ अंश १ घण्टा में गमन होता है एवं १ घण्टा में (६० मिनिट) १५ अंश रविगमन तो १ अंश चलने में ४ मिनिट का चालक बनता है। अर्थात् अभिष्ट पंचांग गणना देश नगर से अन्यत्र १ अंश में ४ मिनिट का गतिभेद बनता है। जोधपुर से अक्षांश-रेखांश से पूर्व देशों में प्रति १ अंशान्तर में ४ मिनिट ऋण फल तथा पश्चिम देश संभाग में ४ मिनिट धनफल का रवि गतिचालक बनता है।

✿ चरान्तर फल अंक ज्ञान विधि ✿

इष्ट स्थानीयाऽक्षांशा-इष्टदिनांकीयाः क्रांति। अनुयोर्गुणनं फलं तस्य यः पंचमांशः, तदिष्ट दिने पलात्मकं रूपकं चरं संभवित इस सूत्र से स्पष्ट चरान्तर संस्कार प्राप्त होता ही है। परन्तु इष्ट देशीय पंचांग गणनातः सुलभ साधित अनुपातिक गणना के चर फलांक चरान्तर सारिणी में प्रस्तुत हैं जो मिनिट संज्ञा में है मिनिट में २॥ गुणित करें तो पलात्मक संज्ञा का भी फल प्रतीत होगा। यथा १ जून ८५ ई. को देहली का चरान्तर जानना है तो दैनिक रवि क्रांति सारिणी से इस दिन की रवि क्रांति २१ अं.५९ कला **'अर्धाधिकं रूपं स्यात्'** नियम से २२ अंश तथा रेखांश अक्षांश सारिणी से प्राप्त देहली अक्षांश २८।३८ है। चरान्तर सारिणी में २८ अक्षांश व २२ क्रांति सम्पात पर फलांक ४ मिनिट, परन्तु देहली अक्षांश २८॥ होने से २८-२९ अक्षांश मध्य फल अनुपातिक ५ मिनिट, चर फल प्राप्त हुआ जो कि २७ से ३६ अक्षांश मध्य वश फल उत्तरा क्रांति में - ऋण संज्ञक ▲ पुनरपि यथा नागपुर अक्षांश २१।९ तथा क्रांति अंश २२ उत्तरा। चर सारिणी में सम्पात इन दोनों का देखा १० मिनिट चर फल है। अक्षांश ८ से २६ मध्य वश उत्तरा क्रांति में + संज्ञक ▲ १ जून को रवि उदय जोधपुर स्टै. टा. ५ घं. ५० मि. है इससे देहली सूर्योदय हेतु ऋणात्मक ५ चर मिनिट कम किये ५।४५ इसमें देशान्तर संस्कार अक्षांश रेखांश सारिणी से प्राप्त + धन ४२ पल, २॥ ढाई का भाग देने से १७ मिनिट बने जो ५।४५ में कम करने से ५।२८ देहली सूर्योदय स्टे. टा. का आया। ▲ **दिनमान संकेत - सूर्योदयास्त हेतु देशान्तर फल इस पंचांग के सूर्योदयास्त में जहां धन चिह्न हो तो वहां ऋण करें, तथा ऋण हो तो धन।** सूर्यास्त तथा दिनमान हेतु देहली चर फल ५ मिनिट-ऋण इसे नियमतः ५ से गुणा करें तो २५ पल बने जोधपुर दिनमान १ जून को ३३ घडी ५० पल में धन किया तो ३४ घटी १५ पल देहली का दिनमान बना। ▲ **संकेत** - दिनमान हेतु चरान्तर मिनिट से विपरीत धन ऋण करना चाहिए। यहाँ चर मि. ऋण है तो धन किया। दिनमान ३४ घटी १५ पल के घंटा मिनिट २॥ का भाग देने से प्राप्त १३ घन्टा ४२ मि. आये तथा इसे देहली सूर्योदय ५।२८ में जोड़े तो १९ घं. १० मि. स्टै. टा. का सूर्यास्त देहली का बना। इसी प्रकार इस पंचांग के सूर्योदयादि से अन्यत्र किसी भी शहर के विदित कर सकते हैं। एवं सर्वदेशीय संस्कारित इष्ट नगरीय मान्य पंचांग विदित होगा।

दैनिक शुभाऽशुभ प्रतिफल परिज्ञान यन्त्र

ज्योतिष फलित सूत्रानुगत विविध सन्मार्ग ऋषि-महर्षियों द्वारा जन- कल्याणक अनुसंधान करते बहुविध संहिता शास्त्रों में अभिव्यक्त किये हैं। इस विषयक चन्द्र-सुधाकर-नाक्षत्रिक अमृत रश्मि प्रभामण्डल का प्रसार-प्राकृतिक प्रभाव जीव जगत पर अन्य ग्रहों की अपेक्षा-विशेषकर मान्य किया गया है एवं दैनिक नक्षत्र गतिचार अनुसार नित्य का भावीफल - प्रश्नफल - इष्ट दिवस फल आदि समाधान हेतु निम्नलिखित यन्त्र रचना करते आप स्वयं भी फलाशय जान सकते हैं। यथा शास्त्रीय वचन सूत्र - चन्द्रकालानलं चक्रं व्योमाकारं लिखेदबुध: । चतुर्दिक्षु त्रिशूलानि मध्यत्र्यस्राणि कारयेत् ॥ पूर्वं त्रिशूलमध्यस्थं दिवसर्क्षं समालिखेत् । त्रिशूले च बहिर्मध्ये मध्ये बहिस्त्रिशूलके। नामार्क्षं तु स्थितं यत्र ज्ञेयं तत्र शुभाऽशुभम् ॥ यन्त्रानुसारेण प्रतिफलम् त्रिशूले तु भवेत् कष्टं मध्यमं बहिरष्टके। आयु: प्रजा जयो लाभश्चन्द्रगर्भे न संशय: ॥ यह सूत्र चन्द्रकालानक संज्ञा से मान्य है। चन्द्र कालानक चक्र निर्माण के लिये कागज अथवा पत्थर स्लेट पट्टी पर पहले १ गोल चक्र बनावें तथा चारों दिशाओं में त्रिशूल रेखा करें एवं प्रत्येक त्रिशूलों के मध्य केन्द्र बिन्दु से कोण रेखा बनावें। इस प्रकार वर्त्तुल गोल में 'त्रिभुजों' का निर्माण हो जावेगा एवं प्रस्तुत यन्त्र चित्रानुसार रचना बन जावेगी। उपरोक्त यन्त्र चक्र में त्रिशूल मध्य में जहां १ लिखा है वहां उस दिन (इष्ट दिवस) का पंचांग में नक्षत्र देखकर उस दिन का नक्षत्र नाम लिखकर क्रमश: १-२-३-४-५ आदि क्रमश: संख्या अनुसार आगे के नक्षत्र अभिजित नक्षत्र सहित २८ नक्षत्रों के नाम लिखें। इस प्रकार आपका विशेषकर जन्म नक्षत्र अथवा प्रचलित प्रकारान्तर से नाम नक्षत्र यन्त्र चक्र के किस भाग में स्थित है। तदनुसार फलाशय प्रतिफल स्वयं का अथवा प्रश्नकर्ता का विचार कर सकते हैं तथा दैनिक नक्षत्र घटी-पल अथवा घन्टा मिनिट समयानुसार समय विभाजन का विचार भी कर सकते हैं। आपके नाम का नक्षत्र त्रिशूल मस्तक पर लिखे अनुसार आवे तो वह दिवस कष्टद प्रभारक चिन्ता विषयक जानें। त्रिशूल के अलावा नीचे के गोलाकार वर्त्तुल के बाहर किसी स्थान पर आवे तो सामान्य दिवस प्रतिफल समझें तथा गोलाकार वर्त्तुल के मध्य ४-५-११-१२-१८-१९-२५-२६ इन किसी भी स्थान पर आवें तो वह दिवस शुभ संज्ञा का बनते समस्या समाधान शुभ संदेश लाभ आमदनी-यश सम्पदा-वैचारिक शक्ति विकास-इष्ट जनवर्ग से सहयोग बनते अभिनव दिशा पथ का संचारक प्रतीत होगा। मूल अभिप्राय यह भी कि त्रिशूल गत स्थित द्वादश १२ नक्षत्र स्थान २८-१-२-७-८-९-१४-१५-१६-२१-२२-२३ नेष्ट फलसूचक हैं। यह भावी फल प्रतिफल परिज्ञान हेतु एक सामयिक फलाशय जानने मात्र का प्रसाधन अनुक्रम है।



पुष्प माहात्म्य परिज्ञान

भूमण्डलीय धरा पर विविध पुष्पों का सृजन होता है। फूलों की महक-महिमा नवग्रह-श्री देवादिगण-एवं जनवर्ग को आन्तरिक आत्मीय सुख संचारक बनती है। पुष्प प्रकृति की अनुपम देन हैं, इनके अवलोकन-स्पर्श-दर्शन आदि से व्यक्ति का मनमानस भी खिल उठता है। फुल-पुष्प केवल मनमोहक ही नहीं होते, अपितु इनसे आप नवग्रहों की अनुकूलता भी प्राप्त कर सकते हैं। ज्योतिष शास्त्र में विभिन्न ग्रहों के अनुसार फूलों का वर्णन है। ग्रह विशेष की पूजा-अर्चना के लिये अलग-अलग फूलों का विधान है। प्रतिकूल ग्रह की शुभता प्राप्त करने हेतु आप इन फूलों काउपयोग करते हैं तो आपको लाभ एवं अनुकूलता बन पावेगी। शास्त्रीय सूत्र वचन भी हैं कि - **पुष्पैर्देवा: प्रसीदन्ति पुष्पे देवाश्च संस्थिता। न रत्नैर्न सुवर्णे न वित्तेण च भूरिणा:। लक्ष्मी वसति पुष्पेषु पुष्पं वसति त्रिपुष्करे** इत्यादि वचन सर्वमान्य हैं। ग्रहराज सूर्य के लिये रक्त कनेर, रक्त गुलाब, लाल कमल के पुष्प, चन्द्रमा के लिये चमेली-चम्पा-गुलदावदी और चाँदनी के पुष्प। मंगल के लिए गुड़हल, सिन्दुरी-लाल गुलाब, लाल कनेर के पुष्प। बुध के लिये केवड़ा, चन्दन, तुलसी पत्र आदि। गुरू के लिये हारसिंगार, हजारा, पीला कनेर-पीला गुलाब पुष्प। शुक्र के लिये मोगरा, रातरानी, जूही के पुष्प। तथा शनिदेव की अनुकूलता के लिये काला गुलाब, लीली, कुंज आदि के पुष्प व्यवहार में लिये जाते हैं। जिस किसी व्यक्ति की जन्माक्षर ग्रह रचना अनुसार जो ग्रह प्रतिकूल स्थिति एवं नीच संज्ञा आदि से प्रपीड़ा प्रदायक हो तो उस ग्रह की अनुकूलता सुखद प्रतिफल के लिये उससे सम्बंधित पुष्प-इत्र आदि का प्रयोग व्यवहार में लेवें। ♣ **श्रीफल माहात्म्य - महिमा विधान** - जन मानस के धार्मिक कार्य बिना नारियल के सम्पन्न नहीं होते हैं। सभी देवी-देवता को नारियल भेंट करने की परम्परा रही है एवं नारियल को शुभ, सुख शान्ति-समृद्धि, सम्पन्नता और सम्मान का सूचक माना जाता है। पौराणिक मतानुगत इसमें ब्रह्मा-विष्णु-महेश आदि त्रिदेवों का निवास भी अभिव्यक्त किया गया है। गहरे लाल वस्त्र में मौली बंधन किया गया श्रीफल दुकान संस्थान अथवा गृह-भवन के शयन कक्ष में रखना भी श्रीकार रहता है।

विश्व के प्रमुख देशों के अक्षांश - रेखांश आदि

♣ विदेशी नगर का नाम कोष्ठक में देश का नाम	अक्षांश उत्तर/दक्षिण	रेखांश पूर्व/पश्चिम	क्षेत्रीय स्टै. टा. से स्थानीय समयान्तर मि. से.	ग्रीनविच समय से क्षेत्रीय स्टै. अन्तर घं. मि.	भारतीय स्टै. टा.से क्षेत्रीय स्टै.समयान्तर घं. मि.
अंकारा (तुर्किस्तान)	३९।५२ उ.	३२।५९ पू.	+११।५६	+२।००	-३।३०
अर्जेन्टाइना (द.अमेरिका)	२६।१२ द.	६४।४५ प.	+४१।००	-५।००	-१०।३०
ओटावा (कनाड़ा)	४५।२६ उ.	७५।४१ प.	-२।४४	-५।००	-१०।३०
अदन (एडन)	१३।२५ उ.	४५।०० पू.	+००।००	+३।००	-२।३०
अमन (जोर्डन)	३१।५७ उ.	३५।५७ पू.	+२३।४८	+२।००	-३।३०
एडन	१२।५८ उ.	४५।०१ पू.	+०।०४	+३।००	-२।३०
एथेन्स (ग्रीस)	३७।५९ उ.	२३।२० पू.	-२६।४०	+२।००	-३।३०
करांची (पाकिस्तान)	२४।५१ उ.	६७।०० पू.	-३२।००	+५।००	-०।३०
काबुल (अफगानिस्तान)	३४।३१ उ.	६९।१२ पू.	+६।४८	+४।३०	-१।००
काहिरा (मिस्त्र)	३०।०१ उ.	३१।१३ पू.	+४।५२	+२।००	-३।३०
ग्रीनविच (इंग्लैण्ड)	५१।२९ उ.	०।०० पू.	+०।००	+०।००	-५।३०
जकार्ता (इण्डोनेशिया)	७।५७ द.	११०।२० पू.	-८।४०	+७।३०	+२।००
जिनेवा (स्विट्जरलैण्ड)	४६।१२ उ.	६।०९ पू.	-३५।२४	+१।००	-४।३०
टोकियो (जापान)	३५।३९ उ.	१३९।४५ पू.	+१९।००	+९।००	+३।३०
ढाका (बांग्लादेश)	२३।४३ उ.	९०।२५ पू.	+१।४०	+६।००	+०।३०
तेहरान (ईरान)	३५।४४ उ.	५१।२७ पू.	-४।१२	+३।३०	-२।००
न्यूयार्क (अमेरिका)	४०।४३ उ.	७४।०० प.	+४।००	-५।००	-१०।३०
पीकिंग (चीन)	३९।५० उ.	११६।२० पू.	-१४।४०	+८।००	+२।३०
पेरिस (फ्रांस)	४८।५० उ.	२।२० पू.	-५०।४०	+१।००	-४।३०
बगदाद (ईराक)	३३।१८ उ.	४४।३० पू.	-२।००	+३।००	-२।३०
बर्लिन (प.जर्मनी)	५२।३२ उ.	१३।२४ पू.	-६।२४	+१।००	-४।३०
बेलग्रेड (यूगोस्लाविया)	४४।५० उ.	२०।३७ पू.	+२२।२८	+१।००	-४।३०
बैंकॉक (थाईलैंड)	१३।४५ उ.	१००।३० पू.	-१८।०	+७।००	+१।३०
ब्रुसेल (बेल्जियम)	५०।५१ उ.	४।२१ प.	-४२।३६	+१।००	-४।३०
मैड्रिड (स्पेन)	४०।२५ उ.	३।४५ प.	-७५।००	+१।००	-४।३०
मास्को (रूस)	५५।४५ उ.	३७।३५ पू.	-२९।४०	+३।००	-२।३०
मांडले (बर्मा)	२२।०० उ.	९६।०५ पू.	-५।४०	+६।३०	+१।००
मैक्सिको (मैक्सिको)	१९।२५ उ.	९९।१७ प.	-३७।०८	-६।००	-११।३०
रियाद (सऊदी अरब)	२४।५० उ.	४६।१८ पू.	+५।१२	+३।००	-२।३०
रोम (इटली)	४१।४५ उ.	१२।२९ पू.	-१०।०४	+१।००	-४।३०
रंगून (बर्मा)	१६।४८ उ.	९६।०८ पू.	-५।२८	+६।३०	+१।००
लंदन (इंग्लैण्ड)	५१।३२ उ.	०।०५ प.	-०।२०	-०।००	-५।३०
ल्हासा (तिब्बत)	२९।४० उ.	९१।०८ पू.	+३४।३२	+५।३०	+०।००
वांशिगटन (अमेरिका)	३८।५३ उ.	७७।०४ प.	-८।१६	-५।००	-१०।३०
वैलिंगटन (न्यूजीलैण्ड)	४१।१९ द.	१७४।४६ पू.	-२०।५६	+१२।००	+६।३०
सिंगापुर (मलाया)	१।१६ उ.	१०३।४७ पू.	-३४।५२	+७।३०	+२।००
सियोल (द.कोरिया)	३७।४० उ.	१२७।०० पू.	- ३२।००	+९।००	+३।३०
हांगकांग (हांगकांग)	२२।१८ उ.	११४।१० पू.	-२३।२०	+८।००	+२।३०

पंचांग संस्कार परिचय

● इष्टनगरीय पंचांग गणनानुसार देशान्तर समाधान ●

♣♣ शत तुल्य वर्षों से यह निर्णयसागरीय पंचांग आप श्री भू-देवों के करारविन्दों में आता है तथा सर्वत्र भारतवर्षीय भू-भाग में इसकी सन्मान्यता है। रेखांश भेद से देशान्तर गणना विभेद का गणितागत विधान है। यह पंचांग जोधपुर अक्षांश-रेखांश पर निर्मित होता है। जोधपुर से पूर्व भाग के देश तथा पश्चिम भाग देशों हेतु जो स्वल्प समयान्तर बनता है। उस हेतु पंचांग संस्कार की अल्प गणित रचना भी समयोचित है।

♣♣ स्थूल व्यवहार नियामक से मूल पंचांग रचना तो सर्वत्र व्यवहारिक योग्य ही है। तथापि कभी किसी तिथि-नक्षत्र-लग्न प्रवेश समय का प्रारंभ अथवा अन्त हो रहा हो उस समय समाधान मात्र हेतु संस्कार गणना युक्तियुक्त है, ताकि सन्धिगत समय की सूक्ष्मता बन पावे।

● **सूर्योदय साधन** - जिस स्थान का सूर्योदय स्पष्ट करना हो उस स्थान का अक्षांश/रेखांशादि सारिणी से अक्षांश व देशान्तरफल घटी-पल प्राप्त करें। देशान्तर फल घटी-पल में ढाई का भाग देकर मिनिट-सेकिण्ड बना लेवें। फिर इष्ट दिवस का सूर्योदय घं. मि.इस पंचांग से लेकर उसमें देशान्तर फल मिनिट को चिह्न के विपरीत अर्थात् देशान्तर + (धन) हो तो घटावें और - (ऋण) हो तो जोड़ें एवं अभीष्ट स्थान का मध्यम सूर्योदय समय प्राप्त होगा तथा विशेष सूक्ष्मता हेतु इसके बाद सूर्यक्रान्ति सारिणी से इष्ट दिवस की सूर्यक्रान्ति चिह्नानुसार + (धन) या - (ऋण) अंश कला ज्ञात करें। (+ (धन) चिह्न हो तो क्रान्ति उत्तर तथा - (ऋण) चिह्न हो तो क्रान्ति दक्षिण समझें) फिर चरान्तर सारिणी से अभीष्ट स्थान के अक्षांश अंश-कला और सूर्यक्रान्ति अंश-कला अनुसार अनुपातिक गणना कर सारिणी में उपर दिये निर्देश अनुसार-चरान्तर फल मिनिट + (धन) हो तो मध्यम सूर्य स्पष्ट में जोड़ दें अथवा - (ऋण) चिह्न हो तो घटा दें। अभीष्ट स्थान व दिन का स्पष्ट सूर्योदय समय ज्ञात होगा

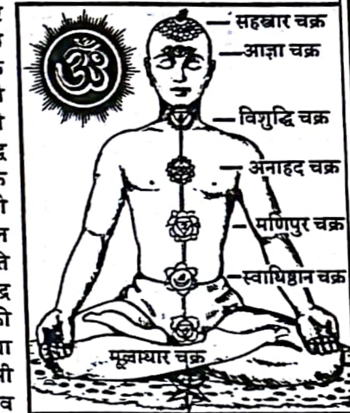
● **दिनमानसाधन**- अभीष्ट दिवस का दिनमान घटी-पल पंचांग से लेकर उसमें चरान्तर फल मिनिट को ५ से गुणा कर लब्ध पल-विपल को चिह्न के विपरीत संस्कार अर्थात् चरान्तर फल + (धन) चिह्न हो तो घटावें और - (ऋण) चिह्न हो तो जोड़ दें। अभीष्ट स्थान-दिवस का दिनमान प्राप्त होगा। इसे ६० घटी में से घटा दें तो रात्रिमान स्पष्ट बन जावेगा। ● **सूर्यास्तसाधन**-अभीष्ट स्थान के दिनमान घटी पल में ढाई का भाग देकर घंटा मिनिट बना लेवें और उसे अभीष्ट स्थान-दिवस के स्पष्ट सूर्योदय समय में जोड दें । स्पष्ट सूर्यास्त ज्ञात होगा।

● **तिथ्यादि साधन** - पंचांग में तिथ्यादि के घटी-पल (समाप्ति काल) जोधपुर सूर्योदय समय से हैं। अभीष्ट स्थान व दिन का स्पष्ट सूर्योदय यदि जोधपुर सूर्योदय समय से पूर्व का हो तो अन्तर मिनिटादि को ढाई से गुणा कर प्राप्त घटी-पल पंचांग के इष्ट दिवस के तिथि, नक्षत्र, योग, करण के घट्यादि में जोड दें अभीष्ट स्थान-दिन के तिथ्यादि मान स्पष्ट होंगे। यदि अभीष्ट स्थान-दिन का स्पष्ट सूर्योदय जोधपुर-सूर्योदय से बाद का हो तो अन्तर मिनिटादि को ढाई से गुणा कर प्राप्त घटी-पल को पंचांग के इष्ट दिवस के तिथि, नक्षत्र, योग, करण में से घटा दें। अभीष्ट स्थान-दिन के तिथ्यादि मान स्पष्ट होंगे। ♣ **ध्यान रहे पंचांग में तिथि-नक्षत्र के समाप्ति काल घण्टा-मिनिट भारतीय मानक समयानुसार हैं जो सम्पूर्ण भारत में एक समान मान्य हैं।** ♣ **गणितागत उदाहरण स्वरूप परिचय** - (१) २२ अक्टूबर २०११ को दिल्ली के सूर्योदयास्त, दिनमान एवं तिथ्यादि मान इस पंचांग से स्पष्ट करने के लिये २२ अक्टूबर २०११ का इस जोधपुर नगरीय पंचांग से सूर्योदय समय ६ घं. ४४ मि. में दिल्ली का (अक्षांश-रेखांशादि सारिणी से) देशान्तर फल+(धन) ० घटी ४२ पल में ढाई का भाग देने पर १६ मिनिट ४८ सैकिण्ड को चिह्न के विपरीत संस्कार अर्थात् घटाने पर ६ घं. २७ मि. १२ सै. दिल्लीका मध्यम सूर्योदय हुआ। अब सूर्य क्रांति सारिणी से २२ अक्टूबर की सूर्यक्रांति-१० अंश ५६ कला तथा अक्षांशादि सारिणी से दिल्ली का अक्षांश २८ अंश ३८ कला प्राप्त किया। इसे चरान्तर सारिणी में २८ व २९ अक्षांश तथा १० व ११ अंश क्रान्ति के मध्य चरान्तर मिनिट को अनुपातिक गणना कर चरान्तर फल १ मि. ३८ सै. को सारिणी में उपर दिये निर्देश अनुसार (सूर्यक्रान्ति दक्षिण होने से खड़ी लाईन के दाहिने तरफ अक्षांश २६।१९ से ३६ के लिये (धन) + संस्कार) दिल्ली के मध्यम सूर्योदय ६ घं.२७ मि. १२ सै. में जोड़ने पर ६ घं. २८ मि. ५० सै. दिल्ली का स्पष्ट सूर्योदय हुआ। २२ अक्टूबर को इस जोधपुर नगरीय पंचांग में दिनमान २८ घटी १२ पल है। इसमें चरान्तर फल + १ मि.३८ सै. को ५ से गुणा कर लब्ध ८ पल १० विपल को चरान्तर संस्कार हेतु चिह्न के विपरीत संस्कार अर्थात् (ऋण) करने पर २८ घं. ४ प. दिल्ली का दिनमान स्पष्ट हुआ।

इसे ६० घटी में से घटाया तो ३१ घ.५६ प. दिल्ली का रात्रिमान स्पष्ट हुआ। दिल्ली के दिनमान २८ घ.४ प. में ढाई का भाग देने पर ११ घं. १३ मि. ३६ सै. को दिल्ली के स्पष्ट सूर्योदय ६ घं. २८ मि. ५० सै. में जोड़ने पर १७ घं. ४२ मि. २६ सै. अर्थात् सायं ५ घं. ४२ मि. २६ सै. दिल्ली सूर्यास्त स्पष्ट हुआ।

दिल्ली का स्पष्ट सूर्योदय जोधपुर सूर्योदय से पूर्व है। अत: अन्तर (६ घं. ४४ मि. से - ६ घं.२८ मि.५०) =० घं.१५ मि. १० सै. को ढाई से गुणा कर प्राप्त लब्ध ३७ पल ५५ विपल अर्थात् ३८ पल को २२ अक्टूबर २०११ के पंचांग के तिथि (कार्तिक कृष्ण १० शनिवार) घ. २८ प. २० आश्लेषा नक्षत्र ८ घ. १० प., शुभ योग १७ घ. १३ प. तथा वणिज करण ० घ.४८ प. में जोडने पर दिल्ली के तिथ्यादि मान यथा - कार्तिक कृष्ण १० तिथि २८ घ. ५८ प., आश्लेषा नक्षत्र ८ घ. ४८ प. शुभयोग १७ घ. ५१ प. तथा वणिज करण १ घ. २६ प.स्पष्ट हुए। ♣ **इत्यादि देशान्तर भेदीय संस्कार गणना केवल सन्धिगत समय-कालांश** ♣ **विशेष सूक्ष्मता मात्र हेतु हैं एवं मूलतया पंचांग में प्रदत्त गणना सामान्य गतिक्रम से सार्वत्रिक अनुकूल व्यवहारजनक ही हैं।**

पंचभौतिक-शरीरस्थ-सप्तचक्र



इस सम्पूर्ण विश्व-व्यापक सृष्टि रचना के अन्तर्गत ''आत्मा'' ही एकमात्र ऐसा तत्व है जो कि नित्य एवं शाश्वत है। अन्य सभी उसी के स्वरूप हैं जो उससे सर्वथा अभिन्न हैं। वही विशुद्ध चैतन्य आत्मा जब प्रकृति के गुण धर्मों से संयुक्त बनता है तो वह अपने वास्तविक मूल स्वरूप को विस्मृत करते प्रकृति को ही निज का स्वरूप-केन्द्र मानने लगता है । यही उसकी भ्रान्ति है, जिसे ही 'अविद्या माया' की संज्ञा कहा है । इसी अविद्या के कारण उसकी जीव संज्ञा बनती है तथा इसी के कारण स्वरूप उसे अनेक सांसारिक मायावी क्लेशों को भोगना होता है। महर्षि पतंजलि योगीराज ने अपने योग दर्शन में पाँच प्रकार के सांसारिक प्रपंचजनक क्लेशों का वर्णन किया है । यथा अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष और अभिनिवेश साथ ही इनकी उत्पत्ति भूमि को ''अविद्या'' का नामकरण किया है। इसी अविद्या माया के कारण ही पंच भौतिक तत्व वाला जीव इस प्रकृति का जो अनित्य-अपवित्र-दुःख और अनात्म रूप है उसे वह जीव नित्य-पवित्र-सुख एवं आत्म भाव रूप समझकर विभ्रान्त बनते-पतित होता है। इस भ्रान्ति का मूल वैचारिक शक्ति माध्यम से जब जीवात्मा पुन: अपने मूल आत्म स्वरूप का बोध कर लेता है उस ज्ञान स्थिति की रचना होते ही वह शाश्वत एवं परम सुख संरचना को संप्राप्त कर लेता है। इस आत्म तत्व प्रक्रिया को जानने का नाम ही भारतीय दर्शन में ''योग'' संज्ञक वर्णित किया गया है। यही सूत्र रचना विश्व मण्डल के अन्तर्गत इस भारत भूमि मध्य समुत्पन्न होने से भारत-विश्वगुरू संज्ञक पात्रता प्राप्त किये है। चपल-चंचल मन को स्थिर केन्द्रीभूत करने का माध्यम ही योग प्रवेश का एक शाश्वत सत्य सन्मार्ग है । योग साधना से व्यक्ति विभिन्न प्रकार की सुप्त-प्रसुप्त शक्तियों को जाग्रत कर लेता है जिससे मनुष्य में कर्म करने की अद्भुत क्षमता संलब्ध होती है इसलिये श्रेष्ठ एवं मानवेतर जीवन के लिये ''योग साधना'' ही एकमात्र समाधान सूत्र है। ♣ योगशास्त्रीय सुलभ ज्ञान हेतु नवीन प्रकाशकों के प्रकाशन भी बने हैं। यथा -

❁ उदयान्तर-वेलान्तर मिनिट सारणी रचना ❁

तारीख	जन. मि.	फर मि.	मार्च मि.	अप्रैल मि.	मई मि.	जून मि.	जुलाई मि.	अग. मि.	सित मि.	अक्टू मि.	नवं. मि.	दिस. मि.
१	-४	-१४	-१२	-०४	+०३	+०२	-०४	-०६	+००	+१०	+१६	+११
२	-४	-१४	-१२	-०४	+०३	+०२	-०४	-०६	+००	+११	+१६	+१०
३	-५	-१४	-१२	-०३	+०३	+०२	-०४	-०६	+०१	+११	+१६	+१०
४	-५	-१४	-१२	-०३	+०३	+०२	-०४	-०६	+०१	+११	+१६	+१०
५	-६	-१४	-१२	-०३	+०४	+०२	-०४	-०६	+०१	+१२	+१६	+०९
६	-६	-१४	-११	-०२	+०४	+०२	-०४	-०६	+०२	+१२	+१६	+०९
७	-७	-१४	-११	-०२	+०४	+०१	-०५	-०६	+०२	+१२	+१६	+०८
८	-७	-१४	-११	-०२	+०४	+०१	-०५	-०५	+०२	+१२	+१६	+०८
९	-७	-१४	-११	-०२	+०४	+०१	-०५	-०५	+०३	+१३	+१६	+०७
१०	-८	-१४	-१०	-०१	+०४	+०१	-०५	-०५	+०३	+१३	+१६	+०७
११	-८	-१४	-१०	-०१	+०४	+०१	-०५	-०५	+०३	+१३	+१६	+०६
१२	-९	-१४	-१०	-०१	+०४	+००	-०५	-०५	+०४	+१४	+१६	+०६
१३	-९	-१४	-१०	-००	+०४	+००	-०५	-०५	+०४	+१४	+१६	+०६
१४	-९	-१४	-०९	-००	+०४	-००	-०६	-०४	+०५	+१४	+१५	+०५
१५	-१०	-१४	-०९	+००	+०४	-००	-०६	-०४	+०५	+१४	+१५	+०५
१६	-१०	-१४	-०९	+००	+०४	-००	-०६	-०४	+०५	+१४	+१५	+०४
१७	-१०	-१४	-०८	+०१	+०४	-०१	-०६	-०४	+०६	+१५	+१५	+०४
१८	-११	-१४	-०८	+०१	+०४	-०१	-०६	-०४	+०६	+१५	+१५	+०३
१९	-११	-१४	-०८	+०१	+०४	-०१	-०६	-०३	+०६	+१५	+१४	+०३
२०	-११	-१४	-०८	+०१	+०४	-०१	-०६	-०३	+०७	+१५	+१४	+०२
२१	-१२	-१४	-०७	+०१	+०४	-०२	-०६	-०३	+०७	+१५	+१४	+०२
२२	-१२	-१४	-०७	+०२	+०४	-०२	-०६	-०३	+०७	+१५	+१४	+०१
२३	-१२	-१४	-०७	+०२	+०३	-०२	-०६	-०२	+०८	+१६	+१३	+०१
२४	-१२	-१३	-०६	+०२	+०३	-०२	-०६	-०२	+०८	+१६	+१३	+००
२५	-१३	-१३	-०६	+०२	+०३	-०२	-०६	-०२	+०८	+१६	+१३	+००
२६	-१३	-१३	-०६	+०२	+०३	-०३	-०६	-०२	+०९	+१६	+१२	-०१
२७	-१३	-१३	-०५	+०२	+०३	-०३	-०६	-०१	+०९	+१६	+१२	-०१
२८	-१३	-१३	-०५	+०३	+०३	-०३	-०६	-०१	+०९	+१६	+१२	-०२
२९	-१३	-१२	-०५	+०३	+०३	-०३	-०६	-०१	+१०	+१६	+११	-०२
३०	-१४	-	-०४	+०३	+०३	-०३	-०६	-००	+१०	+१६	+११	-०३
३१	-१४	-	-०४	+	+०३	-	-०६	-००	+	+१६	+	-०३

▲●▲ **उपकरण हेतु** - स्टेण्डर्ड समय को देशी स्थानिक करने हेतु सारणी अनुसार + धन अथवा -ऋण करें तथा देशी स्थानिक समय को स्टेण्डर्ड समय करने में विपरीत क्रिया करें। धन + चिह्न हो तो ऋण करें तथा - चिह्न हो तो धन + करें। ✦ ❁ ✦

▲●▲ भारतीय वैदिक शास्त्रों में अनेक प्रकार के स्तोत्र पाठ वाचन की महिमा ग्रह जनित कुयोगद दिनमान एवं ग्रहपीड़ा निवारण हेतु वर्णित हैं। ग्रह पीड़ा के निवारण के साथ ही नित्य की जन-जीवनीय सुख सम्पदा अभिवृद्धि-आत्मशक्ति विकास हेतु भी विविध स्तोत्र वाचन-पठन आदिकाल से प्रचलित है। भारतीय ऋषि-महर्षि द्वारा उपदिष्ट धर्म-संस्कृति एवं सभ्यता की परिचायक स्तोत्रपाठ की परम्परा निरन्तर चली आ रही है। नीति वचन भी है कि ● स्तोत्रं कस्य न तुष्टये ● के अनुसार ऋषि-मुनि तथा इन्द्रादि देवताओं ने भी अपने किसी न किसी उपास्य देवी देवताओं को अपने अभीष्ट सिद्धि-समाधान के निमित्त स्तोत्रों द्वारा अभिवन्दना प्रार्थना की है और अपने कार्य में सफलीभूत भी बने हैं। इसी समाधार पर स्तोत्रों के नित्य के पठन-पाठन का श्रीगणेश भारत वसुन्धरा पर चरितार्थ बना। ♠ ♣ ♠

❁ दुःस्वप्न-नाशक-सूर्यस्तुतिः ❁

आदित्यः प्रथमं नाम द्वितीयं तु दिवाकरः।
तृतीयं भास्करः प्रोक्तं चतुर्थं च प्रभाकरः॥
पंचमं च सहस्रांशुः षष्ठं चैव त्रिलोचनः।
सप्तमं हरदिश्वश्च अष्टमं च विभावसुः॥
नवमं दिनकृत प्रोक्तं दशमं द्वादशात्मकः।
एकादशं त्रयीमूर्त्तिर्द्वादशं सूर्य एव च॥
द्वादशैतानि नामानि प्रातः काले पठेन्नरः।
दुःस्वप्ननाशनं सद्यः सर्वसिद्धि प्रजायते॥
अविमुक्त-चरण-युगलं दक्षिणमूर्तेश्च कुक्कुट - चतुष्कम्।
स्मरणं वाराणस्यां निहन्ति दुःस्वप्नमपशकुनं च॥

इत्यादि स्तोत्र पठन वाचन प्रातः काल करने से विविध प्रकार के दुष्ट स्वप्न दर्शन से मुक्ति प्राप्त होती है तथा विकारयुक्त अनिष्टसूचक स्वप्नदोषादि से निवृत्ति बने शक्तिसामर्थ्य का विकास बनता है एवं श्रीगजेन्द्रमोक्ष का पाठ भी मान्य है।

❁ सुख शांति प्रदायक स्तुतिः ❁

पुण्यश्लोको नलो राजा पुण्यश्लोको युधिष्ठिरः।
पुण्यश्लोका च वैदेही पुण्यश्लोको जनार्दनः॥
हरं हरिं हरिश्चन्द्रं हनुमन्तं हलायुधम्।
पंचकं वै स्मरेन्नित्यं घोरसंकटनाशनम्॥
अहल्या द्रोपदी तारा कुन्ती मन्दोदरी तथा
पंचकन्याः स्मरेन्नित्यं महापातक नाशनम्।
अयोध्या मथुरा माया काशी कांचा ह्यवन्तिका।
पुरी द्वारावती चैव सप्तैता मोक्षदायिका॥
कश्यपोऽत्रिर्भरद्वाजो विश्वामित्रौऽथ गौतमः।
जमदग्निर्वसिष्ठश्च सप्तैते ऋषयः स्मृताः॥
तेषांवंशानुवंशानां वेदमंत्रस्य द्दष्टणाम्।
संस्मरामि सदा भक्त्या धर्ममार्ग प्रदर्शकान्॥

इनके नित्य पाठ से नित्य की दिनचर्या व कार्य विबाधा में समाधान सहज भाविक बन पाता है। अवरोधित कार्य एवं विविध समस्या का निवारण भी हो पाता है, अनुभव योग्य सूत्र रचना है।

❁ शनिवज्रपञ्जरकवचम् ❁

नीलाम्बरो नीलवपुः कीरीटी गृध्रस्थितस्त्रासकरो धनुष्मान्।
चतुर्भुजः सूर्यसुतः प्रसन्नः सदा मम स्याद वरदः प्रशान्तः॥
कोणस्थः पिंगलो बभ्रुः कृष्णो रौद्रान्तको यमः।
सौरिः शनैश्चरोमन्दः पिप्लाश्रयसंस्थितः॥
एतानि शनि - नामानि जपेदश्वत्थसन्निधौ।
शनैश्चरकृता पीड़ा न कदाऽपि भविष्यति।

इस मंत्र कवच के नित्य पाठ से शनिजनित आदि व्याधि पलायित होकर शान्ति शमन का सन्मार्ग बन पाता है। शमी-खेजड़ा अथवा पीपल वृक्ष के पास इस मंत्र का ७ बार पाठ वाचन विशेष फलद रहता है।

❁ सप्त चिरजीवि स्तुतिः ❁

अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनुमांश्च विभीषणः।
कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिरजीविनः॥
सप्तेतान् संस्मरेन्नित्यं मार्कण्डेयमथाष्टमम्।
जीवेद् वर्षशतं सोऽपि सर्वव्याधिविवर्जितः॥

इस स्तोत्र श्लोक के पठन वाचन से यात्रा सुखद बनती है, यात्रा के प्रारंभ में इसका वाचन करना चाहिए तथा रोग-विकास-व्याधि से भी निवारण बनते आयुष्य वृद्धि बनती है। इस हेतु नित्य आठ बार प्रातः तथा आठ बार रात्रि शयन के पूर्व उच्चारण करना चाहिए।

पंचज्ञानेन्द्रीय

१ नेत्र - २ श्रौत्र (कर्ण) ३ नासिका (घ्राण) ४ त्वक (त्वचा स्पर्श) ५ रसना (जिह्वा) - ये पांच ज्ञानेन्द्रिय संज्ञा से मान्य।

पंचकर्मेन्द्रीय

१ वाक् २ हस्त ३ पाद ४ उपस्थ (लिंग) ५ गुदा ये पांच कर्मेन्द्रिय संज्ञा से मान्य।

शरीरस्थ षडङ्ग

१ शिरः २ हस्तद्वय १ उदर (पेट) २ पादद्वय - ये शरीर के छः अङ्ग हैं।

मनस्

(कर्म विबोधक संज्ञा) मानव नर देह की सुरम्य क्रियाशक्ति एवं नित्य के जीवन गतिक्रम संचलन हेतु उपर्युक्त मूल उपादेय हैं। नवग्रहजनित रश्मि प्रभामण्डल का प्रारूप इन विषयक पक्ष पर ही प्रभावशील बनता है।

⌘ **सिद्धिप्रदायक-वाचाशक्ति विवर्धक-सिद्धशारदा-स्तुतिः** ⌘ सरस्वतीं शारदां च कौमारीं ब्रह्मचारिणीम्। वागीश्वरी बुद्धिदात्रीं भारतीं भुवनेश्वरीम्॥ चन्द्रघण्टां मरालस्थां जगन्मातरमुत्तमाम्। वरदायिनीं सदा वन्दे चर्तुवर्गफलप्रदाम्॥ द्वादशैतानि नामानि सततं ध्यानसंयुतः। यः पठेत् तस्य जिह्वाग्रे नूनं वसति शारदा॥ ⌘ **स्थिरा लक्ष्मी साधना सूत्र** ⌘ त्रैलोक्य-पूजिते देवि। कमले विष्णुवल्लभे। यथा त्वमचला कृष्णे तथा भवमयि स्थिरा॥ ईश्वरी कमला लक्ष्मीश्चला भूर्तिर्हरिप्रिया। पद्मा पद्मालया सम्यगुच्चैः श्री पद्मधारिणी॥ द्वादशैतानि नामानि लक्ष्मीं सम्पूज्य यः पठेत्। स्थिरां लक्ष्मीर्भवेत् तस्य पुत्र-दारादिभिः सह॥

समाधान सिद्धिसूत्रक - कालहोरा मुहूर्त्त

यस्य ग्रहस्य वारेषु कर्म किंचित्प्रकीर्तितम्। तस्य ग्रहस्य होरायां सर्व कर्म विधीयते॥ प्रस्तुत श्लोक मुहूर्त्त शास्त्रीयवचनविशेष का परिचायक है, आवश्यकता विशेष में कार्यसिद्धि समाधान हेतु काल होरा मुहूर्त्त की संरचना शास्त्रकारों ने वर्णित की है। जो कि पुरातन आगमकाल से लोक व्यवहार में स्थिति विशेष पर कार्य समाधान हेतु अपूर्वयोगिक फलद है। सप्त ग्रहों की सप्त ७ होरा बनती हैं, जो कि प्रतिदिन कार्य साधना समाधान हेतु श्रेष्ठ कार्य सूचक समय प्रदान करती हैं। एक होरा का कालांश समय २॥ ढाई घटी अर्थात एक घन्टा का बनता है तथा इस क्रम से प्रत्येक १ घंटे पर काल होरा का समय परिवर्तित होता है। स्थानीय सूर्योदय से क्रमशः प्रतिघन्टा गतिकाल समझें। किस वार की काल होरा के समय कौन-कौन कार्य फलद-योगद-सिद्धिप्रदायक बन पाते हैं, इसका सुलभ विवरण इस प्रकार मुहूर्त्त ग्रन्थों में प्रतिपादित है।

(१) ● **सूर्य की कालहोरा** - आवेदन पत्र देने, राज कार्य अथवा पदअधिग्रहण, शासकीय सेवा कार्य, टेन्डर आदि देने में श्रेष्ठ। (२) ● **चन्द्र होरा** - सभी कार्यों के लिये कल्याण कारक। (३) ● **मंगल होरा** - वाद-विवाद, मुकदमा, कर्ज देना, यात्रा प्रवास, सभा - सोसायटी में गमन तथा न्यायालय विषय कार्य नोटिस, द्यूत क्रीड़ा हेतु श्रेष्ठ। (४) ● **बुध की होरा** - विद्या-कला साहित्यसंग्रह-विद्या शिक्षा, पठन, पाठन, नवीन लेखन, पुस्तक प्रकाशन, विमोचन, नवीन व्यापार तथा मुद्रण कार्य, कोष संग्रह, प्रार्थना पत्र प्रदान करने हेतु शुभ। (५) ● **गुरूकी होरा** - विवाह विषयक कार्य, संबंध स्थापित करना, उच्च अधिकारी वर्ग से सम्पर्क, व्यवहारगति, नवीन काव्य लेखन, प्रकाशन, बैंक खाता खोलना, वस्तु संग्रह, विद्या अभ्यास तथा अन्य भी विभिन्न शुभ कार्यों हेतु शुभ सूचक। (६) ● **शुक्र की होरा**-छाया चित्र - चलचित्र, फिल्म निर्माण शुभारंभ नवीन वस्त्र तथा आभूषण धारण व निर्माण, यात्रा प्रवास, सौभाग्यवर्धक कार्य-संगीत स्वर साधना हेतु योगद। (७) ● **शनि की होरा** - नवीन गृह निर्माण अथवा प्रवेश, भूमि खरीदी, मशीनरी मिल्स शुभारंभ, द्रव्य संग्रह, गृह नींव खात एवं खनिज खनन कार्य हेतु लाभद

● **सिद्धहोरा (क्षणवार) मुहूर्त्तज्ञानविधि**- जिस दिन जिस समय कि कालहोरा देखनी होवे, नीचे प्रदत्त काल होरा ज्ञान चक्र कोष्ठक सारिणी से काल होरा समय ज्ञात कर लेवें यथा रविवार को पहली होरा सूर्य २॥ घटी अर्थात् एक घन्टा की, इसके बाद रविवार को ही दूसरी होरा शुक्र की ५ घटी तक, फिर इसी क्रमानुसरा तीसरी ५ से ७॥ घटी तक बुध की होरा एवं अग्रिम ७॥ से १० घटी तक चन्द्र की अर्थात् प्रति १ घंटा वृद्धि से १ घन्टे का समय प्रति १ काल होरा वार का बनता है। कोष्ठक में घटी मान तथा घन्टा मान दोनों स्पष्ट किये गये हैं। इसी क्रम से प्रत्येक दैनिक वार में इष्ट समय की होरा वार काल विदित कर सकते हैं। फलित अन्वेषक आचार्यों ने दैनिक प्रमुख वार से अधिक प्रधानता होरा के (क्षणवार) को प्रदान की है। तथ्य यह भी कि दैनिकवार तथा क्षणवार दोनों अनुकूल होवें तो विशेष फल प्रदाता समय। तथा आवश्यकता में वार दोष विकार होवे तो (क्षणवार) होराकाल के समय शुभ वार की काल होरा में कार्य सम्पन्न करना श्रेयस्कर। यथा अनायास कोई विशेष कार्यवश रविवार को पश्चिम दिशा में यात्रा करना है तो मुहूर्त्त नियामक से रविवार को 'दिशाशूल' यात्रा में होगा, परन्तु उस दिन भी रविवार को सोमवार की 'काल होरा' में पश्चिम दिशा की यात्रा शुभ सूचक अर्थात् अवरोधितवार होने पर उस दिन की इष्ट शुभ होरा में कार्य सम्पन्न कर सकते हैं। पुनरपि फलाशय उदाहरण - आज सोमवार है तथा शासकीय सेवा कार्य हेतु आवेदन प्रस्तुत करना है, इस कार्य के लिये बुध की होरा योग्य फलद लिखी है अतः सोमवार को बुध की होरा (होरा चक्र कोष्ठक) में देखें तो ७-१४-२१ वें घंटे में बुध की होरा समय स्पष्ट लिखा ही है। अतः सोमवार को स्थानीय सूर्योदय से ६ वें, १३ वें अथवा २० वें घंटे के बाद एक-एक घंटे तक की बुध की होरा में अपना आवेदन पत्र प्रस्तुत कर सकते हैं। ▲ तथा प्रति घंटा गणना स्थानीय सूर्योदय से क्रमशः वृद्धिगत समझें। काल होरा (क्षणवार) कोष्ठ रचना निम्नानुसार -

होरा घंटा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
होरा घटी	२॥	५	७॥	१०	१२॥	१५	१७॥	२०	२२॥	२५	२७॥	३०	३२॥	३५	३७॥	४०	४२॥	४५	४७॥	५०	५२॥	५५	५७॥	६०
सूर्य	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.
चन्द्र	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.
मंगल	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.
बुध	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.
गुरू	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.
शुक्र	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.
शनि	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.

भूमिभवनमध्ये कूपखनन स्थानफलम्

कूपे वास्तोर्मध्यदेशेऽर्थनाशस्त्वैशान्यादौ पुष्टिरैश्वर्यवृद्धिः। सूनोर्नाशः स्त्रीविनाशो मृतिश्च सम्पत् पीड़ा शत्रुतः स्याच्च सौख्यम्॥ श्लोक भावार्थ स्पष्टता चक्र -

ईशान-सौख्य	पूर्व-श्रीवृद्धि	अग्निकोण-पुत्रभार
उत्तर-सौख्य	मध्य-हानि	दक्षिण-स्त्रीभार
वायव्य-पीड़ा	पश्चिम-सौख्य	नैऋत्य-स्वामीभार

अर्थात् वास्तु भूमि के ईशान-पूर्व-पश्चिम तथा उत्तरभाग में कूप खनन निर्माण शुभ फल संचारक होता है।

▲ **विशेष** - यदि कूप या अन्य जलाशय पहले से ही बना हो तो उस कूप-जलाशय भाग से प्रतिकूल वायव्य-उत्तर-ईशान-आग्नेय भागों में गृह निर्माण शुभ फलदायक नहीं।

कूपजलाशयाऽरंभे - नक्षत्रशुद्धिस्पष्टता

सूर्यनक्षत्र चार से इष्टदिन नक्षत्र गणना ३ संख्या शुभ तथा अग्रिम ३ अशुभ एवं क्रमशः ३ शुभ, ३ अशुभ, ३ शुभ, ३ अशुभ तथा ३ क्रमशः शुभ, ३ अशुभ तथा ३ शुभ अग्रिम गणना करते प्रतिफल समझना योग्य

वास्तु राजवल्लभे-देवस्थापनायां मुखदिशाज्ञान

ब्रह्माविष्णुशिवेन्द्रभास्करगुहा पूर्वापरस्या शुभाः। प्रोक्तौ सर्वदिशामुखौ शिवजिनौ विष्णुर्विधाता तथा। चामुण्डाग्रहमातरो धनपतिर्द्वौ भ्रातरौ भैरवो। देवोदक्षिण दिङ्मुखः कपिवरो नैऋत्यवक्रो भवेत्॥ भावार्थ - ब्रह्मा, विष्णु, शिव, इन्द्र, सूर्य, कार्तिकेय की प्रतिष्ठा में पूर्व या पश्चिम दिशा में मुख। शिव, जिन, विष्णु, ब्रह्मा का सभी दिशाओं में मुख। चामुण्डा (देवी) गृह, मातृका, शीतला-भैरव आदि का दक्षिण दिशा में और श्री हनुमानजी को नैऋत्यकोण मुख करके स्थापना करना चाहिए।

♠ **शिववास तिथि संरचना** - **तिथिं च द्विगुणीं कृत्य बाणैः संयोजयेत्ततः। सप्तिश्च हरेद्भागं शिववासं समुद्दिशेत्॥ एकेनवासः कैलाशे द्वितीये गौरी संनिधौ तृतीये वृषभारूढः संभायां च चतुष्टये। पंचकेभोजने चैव, क्रीड़ायांषण्मिते तथा॥ श्मशाने सप्तशेषे च शिववासः इतीरितः। कैलाशेलभते सौख्यं गौर्यां च सुखसम्पदः। वृषभेऽभीष्ट सिद्धिः स्यात् सभा सन्तापकारिणी॥ भोजने च भवेत् पीड़ा क्रीड़ायां कष्टमेव च। श्मशाने मरणज्ञेयं फलमेव विचारयेत्**॥ भावार्थ इष्ट तिथि को २ से गुणा कर ५ और मिलावें ७ के भाग से जो शेष रहे, फल उपर्युक्त स्पष्ट ही है।

♠ **स्पष्टार्थ** - शिववास शुभतिथिचक्र - **शुक्लपक्षे** २-५-६-९-१२-१३ तथा **कृष्ण पक्षे** - १-४-५-८-११-१२-३० शुभ मान्य।

♣ **प्रतिकूल दोषाऽभावः सूत्रम् दुर्भिक्षे राष्ट्रभंगे च पित्रोर्वाप्राणसंशये। प्रोढायामपि कन्यायां प्रतिकूलं न दूष्यति॥ तथा च ऋषिमेधा वचन** - दीर्घरोगाभिभूतस्य दूरदेशास्थितस्य च। उदासवर्तिनश्चैव प्रतिकूलं न विद्यते॥ भावार्थ यह कि - दुर्भिक्ष, राष्ट्रसंकट या माता-पिता के मरण संदेह तथा कन्या प्रौढ़ा हो तो प्रतिकूलता का दोष नहीं तथा अधिक काल तक रोग से पीड़ित या दूर देश स्थित या उदासी गति-मति के कारण होने पर प्रतिकूलता का दोष नहीं। ♠♣♠

❀ यात्रा प्रवास ❀ हेतु श्री गोकुलनाथजी के वचनामृत-श्री गोरक्षनाथजी के वचनतत्व ✹ यात्रा भ्रमण सुयोग ✹

पौ	मा	फा	चै	वै	ज्ये	आ	श्रा	भा	आ	का	मं	फलश्रुति	प्रहर १	प्रहर २	प्रहर ३	प्रहर ४	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	सुख, विवाद का अभाव, यात्रा योग सुखद, सुविधा गति, महाभय,	अर्थसिद्धि	सुख	शोक	सुख	सुख	क्लेश	भय	द्रव्य
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	विवाद, मानसिक दुःख, पृथागमन कुयोग	महाभय	क्लेश	सुख	कुशल	शून्य	नाश	दरिद्र	चिन्ता
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	कार्यसिद्धि, अर्थलाभ, विजय, मेल मिलाप सम्पर्क, योग	अर्थलाभ	राजपद	सुख	विनाश	द्रव्य	दुःख	इष्ट प्राप्ति	धन प्राप्ति
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	श्रम साधना, परन्तु प्रतिफल नेष्ट नहीं, मध्यमकार्य योग	क्लेश	कल्याण	क्लेश	अहित	क्लेश	अहित	धन	सुख
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	वस्तुलाभ संकट की निवृत्ति, मेल-मिलाप, कार्य सिद्धि	संकट	क्लेश	भाग्य	सुख	लाभ	धन	धन	सुख
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	चिन्ता, विवाद मानसिक पतन, वियोग, सफलता न्यून	संकट	क्लेश	मित्र	अर्थप्राप्ति	भय	लाभ	मृत्यु	धनलाभ
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	कार्यलाभ, मेलमिलापक सम्पर्क, कार्यसाधना सिद्धियोग	विलम्ब	अर्थप्राप्ति	सुख	सुख	लाभ	कष्ट	लाभ	सुख
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	कुयोग, कार्यहानि, विवाद, व्यवहार-मिलाप की न्यूनता	०	०	०	०	०	सुख	०	सुख
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	अर्थ-लाभ, कार्ययोग सफलता, यात्रा प्रवास सुखद	अर्थ	बहुभय	मित्र	सुख	सुख	लाभ	कार्यसिद्धि	कष्ट
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	यात्रा प्रवास योगद परंतु श्रम साधना विशेष, कार्य विलम्ब,	शीघ्र लाभ	सम्पूर्ण	मरण	मरण	क्लेश	कष्ट	धन	धन
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	मानसिक कष्ट, विवाद, भय, परंतु परिणाम नेष्ट नहीं,	मरण	अर्थ	कुशल	मृत्यु	लोभ	धननाश	०	मित्र
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	सुख-सुविधा, मेल-मिलाप, सार्थक, गति, कार्य सुयोग।	मरण	अर्थ	सुख	कुशल	०	सुख	मृत्यु	कष्ट

* **यात्रा प्रवास हेतु गोकुलनाथ गोरक्षनाथजी** के मतानुसार गमन प्रयाण के लिये मुहूर्त्त साधना पुरातन समय से लोकप्रिय व्यवहार योग्य है। बायें तरफ के पहले द्वादश १२ कोष्ठ में द्वादश मास नाम लिखे हैं तत्पश्चात फलश्रुति लिखी है और उसके बाद चार कोष्ठ में चार प्रहर की फलश्रुति अलग-अलग दिखी है और आगे के ४ कोष्ठों में दिशा और उनकी फलश्रुति दी है। * कोष्ठों में बताये अंकों का तृतीया और तेरस, चतुर्थी और चौदस, पंचमी और पूर्णिमा इनका फल एक है। * बदी चौदस तथा अमावस का निषेध। इन मुहूर्त्त पर गमन करने वालों को चन्द्र-भद्रा-भरणी-दिशाशूल-योगिनी काल घात वार आदि का दोष नहीं। * गोरखनाथजी के प्रश्न पर मत्स्येन्द्रनाथ ने इस मुहूर्त्त को 'मुहूर्त्तराज' कहा। * उदाहरणार्थ - कोष्ठ में दी गई तिथि-उस मास के बदी पक्ष तथा सुदी पक्ष में एक समान समझना चाहिये - यथा फाल्गुन सुदी तथा बदी तिथि के मुहूर्त्त पर गमन करने वालों का कार्यसिद्ध होवे। पहले प्रहर में जाने से अर्थलाभ। दूसरे प्रहर में राज्य सुख, तीसरे में शोक, चौथे में सुख एवं दिशाओं के भी फल जानें। श्रीवल्लभ सम्प्रदाय के वैष्णव इस मुहूर्त्तवेला को श्री गोकुलनाथ के वचनामृत भी कहते हैं।

❀ सम्मुखचन्द्रदिशाप्रति ❀

मेषे च सिंहे धनुपूर्वभागे वृषे च कन्या मकरे च याम्ये ।। युग्मं तुला कुंभसु पश्चिमायां, कर्कालिमीने दिशि चोत्तरस्यां ।।१।। फल सन्मुखो अर्थलाभाय दक्षिणे सुखसंपदे। पृष्टतः प्राणनाशाय वामे चंद्रे धनक्षयः ।।२।। अर्थः-मेष सिंह धनु पूर्व वृषभ कन्या मकर दक्षिण मिथुन तुला कुंभ पश्चिमे कर्क मीन वृश्चिके उत्तरे।

♣♠♣

❀ योगिनीचक्रम् ❀

ईशान ३०।८ — पूर्व १।९ — आग्नेय ३।११

उत्तर २।१० — दक्षिण ५।१३

योगिनी सुखदा वामे
पृष्ठे वांछितदायिनी ।।
दक्षिणे धनहंत्री च
सन्मुखे मरण प्रदा ।।१।।

वायव्य ७।१५ — पश्चिम ६।१४ — नैऋत्य ४।१२

❀ कालराहुचक्रम् ❀

ईशान — पूर्व शनि — आग्नेय शुक्र

उत्तर-रवि — दक्षिण-गुरु

अर्कोत्तरे वायुदिशां च सोमे
भौमे प्रतीच्यां बुधनैर्ऋते च
याम्ये गुरौ वन्हिदिशां च शुक्रे
मंदे च पूर्वे प्रवदंति कालः ।।

वायव्य सोम — पश्चिम भौम — नैऋत्य बुध

❀ दिशाशूलचक्रम ❀

पूर्व
चंद्र-शनि

उत्तर बुध-मंगल — दक्षिण गुरु

दिशाशूल ले जावो
वामे राहू योगिनी पूठ
।। सन्मुख लेवे चंद्रमा
ल्यावें लक्ष्मी लूट ।।१।।

पश्चिम रवि-शुक्र

❀ यात्रा विशेष सुयोग ❀

- हिंवर सुयोग - सूर्य नक्षत्रचार से इष्ट दिवस चन्द्र नक्षत्र की गणनाकर इस संख्या में शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से इष्टदिवस की तिथि संख्या तथा रविवार क्रम से इष्ट दिवस वार की संख्या जोड़कर ९ का भाग देवें। भाग देने पर ७ शेष बचे तो हिंवर योग दिवस बनता है, यह दिवस यात्रा में शुभ है।
- टेलक सुयोग - सूर्य नक्षत्र चार से इष्टदिवस नक्षत्र संख्या में इष्टदिवस तिथि तथा वार जोड़कर ७ का भाग देने पर ५ शेष बचने से टेलक योग बनता है। तस्करी कार्य एवं अनैतिक कार्य-चौर्यकार्य में यह सुयोग मान्य है।

अथ पुरूष जन्मकुण्डल्यां तन्वादि भावस्य ग्रहफलम्

ग्रहा:	तनुः १	धन २	भ्राता ३	सुख ४	पुत्र ५	शत्रुः ६	स्त्री ७	मृत्युः ८	धर्म ९	कर्म १०	लाभ ११	व्यय १२
सूर्यः	शूरः	धनी	सुखी	दुःखी	अपुत्रः	बली	स्त्रीजित्	अल्पायुः	सुखी	शूरः	धनी	पतितः
चन्द्रः	जड़ः	कुटुम्बी	क्रूर	सुशील	पुत्रवान्	अल्पायुः	ईर्ष्यालुः	रोगी	सुभगः	धीरः	ख्यातः	हीनांगः
भौमः	व्रणीः	कुटिल	विक्रमी	पीड़ित	अपुत्र	शत्रुजित्	स्त्रीपीड़ा	रोगी	पापात्मा	सुखी	धनाढ्यः	पतितः
बुधः	विद्वान्	धनी	दुर्जन	सुखी	मंत्री	दुशील	धर्मज्ञः	गुणी	पुत्रवान्	विक्रमी	धनी	जड़
गुरूः	चिरायुः	धनी	कृपणः	सुखी	प्रतापी	कामी	प्रसिद्धः	अल्पायु	पुत्रवान्	सुकृतिः	धनी	दरिद्रः
शुक्रः	सुखी	धनी	पापी	सुखी	धीमान्	रोगी	क्रोधी	नीच	प्रतापी	सुमति	धनाढ्यः	खलः
शनिः	रोगी	वक्ता	विक्रमी	दुःखी	दरिद्रः	सुखी	दुःखी	नेत्ररोगी	सुखी	पराक्रमी	धनी	दुःखी
राहुः	रोगी	विरोधी	विक्रमी	दुःखी	दुर्भगः	बली	अशुचिः	गतायुः	दैन्यं	मानी	ख्यातः	पतितः
केतुः	अल्पायुः	धर्महा	शूरः	दुःखी	अपुत्रः	बली	दारहा	क्लेशी	पापी	अधर्मी	धनी	दुर्जनः

अथ स्त्रीजन्मकुण्डल्यां तन्वादि भावस्य ग्रहफलम्

ग्रहा:	तनुः १	धन २	भ्राता ३	सुख ४	पुत्र ५	शत्रुः ६	पति ७	मृत्युः ८	धर्म ९	कर्म १०	लाभ ११	व्यय १२
सूर्यः	सक्रोधा	निर्धना	सुपुत्रा	सपीड़ा	अपुत्रा	धनाढ्या	दुःखार्ता	विधवा	धर्मिष्ठा	सती	सधना	सक्रोधा
चन्द्रः	अल्पायुः	सधना	सुखिनी	दुर्भगा	सुपुत्रा	रोगिणी	पतिप्रिया	दुखार्ता	सुखिनी	धन्या	गुणिनी	हीनांगा
भौमः	दुःखार्ता	बन्ध्या	अभ्रातृका	दुःखिनी	अपुत्रा	नीरोगा	विधवा	कुलटा	दुखिनी	कुपुत्रा	सुधर्मा	दुष्टा
बुधः	सुभगा	धनाढ्या	सुखिनी	सुगृहा	सबुद्धः	सक्रोधा	सती	कृतघ्ना	सुधर्मा	सुधर्मा	सुलाभा	कृशांगी
गुरूः	सती	सधना	भ्रातृमती	सुखिनी	साध्वी	सापदा	सुकीर्ति	रोगिणी	पुत्राढ्या	सुभगा	सुरूपा	सद्व्यया
शुक्रः	सुखिनी	सहर्षा	धनाढ्या	सुकीर्ति	सुसुता	दरिद्रा	पतिप्रिया	प्रमत्ता	सुपुण्या	सुकर्मा	सुपुत्रा	सद्व्यया
शनिः	बन्ध्या	निर्धना	दक्षा	सरोगा	अपुत्रा	सुगुणा	विधवा	दुःखार्ता	बन्ध्या	पापा	सुलाभा	मूढा
राहुः	अपुत्रा	दरिद्रा	धनाढ्या	रोगार्ता	अपुत्रा	धनाढ्या	दुःखार्ता	क्लेशिनी	बन्ध्या	कुकर्मा	सुभगा	खला
केतुः	दुःखार्ता	शोकार्ता	रोगाढ्या	मातृहीना	विपुत्रा	धनाढ्या	विधवा	सदुःखा	शोकार्ता	पापा	सुभगा	सरोगा

अथ सूर्यादिग्रहाणां जन्मराशितः गणना एवं गोचर भाव-राशि फलम्

ग्रहा:	मेष १	वृषभ २	मिथुन ३	कर्क ४	सिंह ५	कन्या ६	तुला ७	वृश्चिक ८	धनु ९	मकर १०	कुंभ ११	मीन १२
सूर्यः	स्थाननाश	भय	श्रीवृद्धि	मानभंग	दैन्य	विजय	मार्गभ्रम	पीड़ा	सुकृतना	सिद्धि	धनलाभ	धननाश
चन्द्रः	धनलाभ	सन्तोष	सुख	रोग	ज्ञानवृद्धि	धनलाभ	स्त्रीलाभ	रोग	धर्मलाभ	सौख्य	धनलाभ	धननाश
भौमः	शत्रुनाश	धननाश	धनलाभ	शत्रुप्रद	पुत्रकष्ट	धनलाभ	स्त्रीकष्ट	शत्रुप्रद	शत्रुपीड़ा	शोक	धनलाभ	धननाश
बुधः	सुख	धनलाभ	शत्रुप्रद	पशुलाभ	सुख	स्थानलाभ	पीड़ा	धनलाभ	पीड़ा	सौख्य	धनलाभ	धननाश
गुरूः	भय	धनलाभ	क्लेश	हानि	सुख	शोक	राजमान	पीड़ा	सौख्य	दैन्यंभ्रम.	धनलाभ	पीड़ाप्रवा.
शुक्रः	शत्रुनाश	धनलाभ	सौख्यं	धनलाभ	पुत्रलाभ	शत्रुप्रद	शोक	धनलाभ	वस्त्रलाभ	दुःख	धनलाभ	धनलाभ
शनिः	भयखेद	धननाश	ऐश्वर्य	शत्रुप्रद	पुत्रकष्ट	विजयसु.	दोषखेद	पीड़ा	धर्मनाश	विबाधा	धनलाभ	विवाद
राहुः	हानि	धननाश	धनलाभ	वैर	शोक	श्रीलाभ	कलह	भयखेद	दुःख	वैरं	सुख	शोक
केतुः	रोग	वैर	सुख	भय	सुख	धनलाभ	कलह	रोग	पापकर्म	शोक	कीर्ति	शत्रु

अथ वर्षकुण्डल्यां तन्वादि स्थान भावस्य ग्रहफलम्

ग्रहा:	भाव १	भाव २	भाव ३	भाव ४	भाव ५	भाव ६	भाव ७	भाव ८	भाव ९	भाव १०	भाव ११	भाव १२
सूर्यः	चिन्ता	राजभय	धनलाभ	हानि	कष्टम्	शत्रुनाश	पीड़ा	कष्टम्	धर्मनाश	सुख	धनलाभ	पीड़ा
चन्द्रः	पीड़ा	धनलाभ	हर्ष	शत्रुनाश	सुखम्	पीड़ा	कष्टम्	दुःखम्	भाग्योदय	विजय	धनलाभ	व्यय
भौमः	वृणाः	धनलाभ	जय	व्यसनं	दुर्मति	शत्रुनाश	स्त्रीकष्ट	पीड़ा	पुण्योदय	राज्यलाभ	धनलाभ	विरोध
बुधः	सौख्यम्	धनलाभ	सुखम्	द्रव्यलाभ	पुत्रलाभ	कलह	धनलाभ	व्यग्रता	सुखम्	मानलाभ	सुखलाभ	रोग
गुरूः	सुखम्	धनलाभ	जय	वाहनलाभ	पुत्रप्राप्ति	कष्टम्	सुखम्	रोग	धर्मलाभ	राज्यलाभ	धनलाभ	शोक
शुक्रः	मानप्राप्ति	धनलाभ	कीर्तिला	सुखलाभ	धनलाभ	शत्रुभय	स्त्रीसुख	कष्टम्	धर्मोदय	मानलाभ	क्षेमलाभ	व्यय
शनिः	वातार्ति	पीड़ा	धनलाभ	दुःखम्	पुत्रपीड़ा	जय	स्त्रीकष्ट	रोग	भाग्यहानि	धनहानि	धनलाभ	चिन्ता
राहुः	शिरोर्ति	राजभय	सुखम्	दुःखम्	बुद्धिनाश	शत्रुनाश	रोगी	कष्टम्	धर्महानि	विजय	सुलाभ	व्याधि
केतुः	चिन्ता	क्लेश	आरोग्य	राजभय	दुर्बुद्धि	सुखम्	क्लेश	पीड़ा	भाग्यनाश	धनलाभ	लाभ	शोक
मुन्था:	सुखम्	यशोऽर्थ	पुष्टि	दुःखम्	सुखाप्ति	कष्टम्	व्यसनं	दुःखम्	भाग्योदय	राज्ययोग	लाभ	कष्टम्

लग्नसारिणी-कालांश भेद

हमारे पंचांग में जोधपुर स्टे. टा. अनुसार लग्नसारिणी के पृष्ठ अंकित है। अंगेजी मास तारीखों के क्रम से प्रति दिवसीय लग्न प्रवेश काल है इस लग्नसारिणी से अन्य नगरों का स्वदेशीय लग्न प्रवेशकाल जानने हेतु विधि यह कि इष्ट नगर का देशान्तर फल अक्षांश रेखांश सारिणी से लेवें, घटी-पलात्मक फल है तथा इसे ढाई २॥ विभाजित करने से मिनिटात्मक फल प्राप्त होगा।

▲ ये देशांतर फल धन हो तो इस पंचांग के लग्न प्रवेश कालमें घटावें ▲ तथा ऋण चिह्न हो तो जोड़ें एवं देशान्तर संस्कार बनेगा। पुनः जिस नगर का लग्न प्रवेश जानना है, उसके अक्षांश तथा क्रान्ति से इस पंचांग में प्रदत्त 'चरान्तर सारिणी' से चरान्तर फल प्राप्त करें तथा देशान्तर संस्कृत समय में ▲ चरान्तर फल धन होवे तो धन करें तथा ऋण संज्ञक हो तो घटावें ▲ एवं स्पष्ट लग्न का प्रवेशकाल प्राप्त होगा। उदाहरणार्थ - देहली राजधानी अक्षांश २८।३८ उ. रेखांश ७७।१२ पूर्व है। तारीख १७ जून को देहली लग्न प्रवेश संस्कार करना है। जोधपुर लग्नप्रवेश सारिणी में तारीख १७ जून को वृषभ लग्न प्रवेश काल ३ घं. ४५ मि. रात्रि में है जोधपुर से देहली देशान्तर फल + ४२ पल है २॥ विभाजित १७ मिनिट + फल बना जोधपुर वृषभ लग्न प्रवेश काल ३ घं. ४५ मि. में देशान्तर फल धन वश ऋण किया तो ३ घं. २८ मि. देशान्तर फलित कालांश आया। १७ जून रविक्रांति २३।२२ उत्तरा है देहली अक्षांश २८।३८ है एवं चरान्तर सारिणी से चर फल ४ मिनिट उत्तरक्रान्ति वश ऋण संज्ञक फलांक देशान्तर संस्कृत लग्न प्रवेश ३।२८ मि. में४ मिनिट ऋण किये तो ३ घं. २४ मि. देहली लग्न प्रवेश काल आया। चरफल हेतु अक्षांश क्रान्ति अंशकलादि न्यूनाधिक स्थितिवश चर सारिणी सेअनुपातिक क्रिया से चरफल लेवें तो और भी ठीक रहेगा। जोधपुर के पूर्वापर आसन्न नगरों हेतु संस्कार क्रिया का विशेष महत्व नहीं, परन्तु दूरस्थ पूर्वापर नगरों हेतु संस्कार करना योग्य है, इस तरह यह पंचांग सर्वदेशीय उपयुक्त सन्मान्य गणना का चरितार्थ रहेगा।

❋ स्वप्न सरोवर सारिका ❋

❀ मानवीय स्वप्नविषयक शास्त्रीयसमादेश-फल ❀

इस सृष्टि प्रारम्भकाल से ही मनुष्य स्वप्न देखता चला आ रहा है। मनुष्य ही क्या स्वयं सृष्टि रचेता तत्व भी स्वप्न सरोवर की मार्मिक कल्पना में लिप्त रहता है। ऋग्वेद एवं उपनिषदों में स्वप्न विषयक बहुविध वर्णन मिलता है। साथ ही स्वप्न हेतु मंत्र सिद्धि साधना का विवेचन भी है, इस साधना से स्वप्न में कार्यसिद्धि वा असिद्धि हित दिग्दर्शन हो जाता है। स्वप्न फल हेतु जीव की प्रकृति शरीर स्थिति पर ही प्रतिफल स्पष्ट बनता है। निर्णयसागरपंचांग अनुरागीवृन्द हित कुछ तथ्य प्रदान करते हैं। यथा - **यस्य चित्तं स्थिरी भूतं समधातुश्च यो नरः। तत्प्रार्थितं च बहुशः स्वप्ने कार्यं प्रदृश्यते॥ चिन्ता च प्रकृतिश्चैव विकृतश्च तथा भवेत्। देवाः पुण्यानि पापानीत्येवं हि जगतीतले** अर्थात् जिस जीव का चित्त स्थिर शुद्ध तथा सप्त धातु वा त्रिदोष सम अवस्था में है। उस जव की सदेच्छा से ही स्वप्न में फलद कार्य प्रतीत होते हैं। विपरीत स्थिति में स्वप्न फलद नहीं होते हैं। चिन्ता, प्रकृति, विकृति, देव इष्ट एवं पाप पुण्य गति आदि स्थिति से भी स्वप्न होते हैं, इन हेतु शास्त्रीय सारगर्भित अभिमत यह कि -

रात्रि के प्रथम प्रहर में स्वप्न से १ वर्ष में फलद, प्रातःकालीन, स्वप्न शीघ्र फलद, जबकि देखने वाला पुनः शयन नहीं करे। "**रोगचिन्तोद्भवा व्यर्थाश्चिरपाकादिवीक्षताम्" रतेर्हासाच्चशोकाच्च भयान्मूत्रपुरीषयोः। प्रणष्टवस्तुचिन्तातो जातः स्वप्नो वृथा भवेत्॥** सूत्रानुसार रोगी व चिन्ताग्रस्त उन्माद, शोक, भय, मूत्रशौच वेगी जीव का स्वप्न व्यर्थ होता है, यह स्पष्ट ध्यान रखना चाहिये। शरीर में कफ का वेग होने से सुखदस्वप्न तथा पित्त वेग से भयावह दृश्य वात प्रकृति जीव उन्नति चढना, तेज गति, विवाद आरोहण आदि दृश्य प्राप्त करता है। **स्वप्नमिष्टं च दुष्टा यः पुनः स्वपिति मानवः। तदुत्पन्नं शुभ फलं स नाप्नोतीतिनिश्चितम्॥** शुभस्वप्न देखकर सो जाना फलकारक नहीं। अपितु जागकर सूर्यदेव की स्तुति, प्रातः शिवादि देवपूजन, फिर वयोवृद्ध जीव को स्वप्न कहें तो सार्थकता बनती है। तथा-**अनिष्टं प्रथमं दृष्ट्वा तत्पश्चात्स्वपेत्पुमान्। रात्रौ वा कथयेदन्यं ततो नाप्नोति तत्फलम्॥** अशुभ स्वप्न को देखकर शयन करना और रात्रि में ही उसे दूसरे से कह दें तो अनिष्ट फल नहीं बनेगा। अथवा प्रातः तुलसी पौध के आगे उस स्वप्न फल को कहें तो दुष्फल प्राप्त नहीं होवे। यह भी अभिमत विदित होता है।

अशुभ स्वप्न के उपलक्षण प्रतिफल यह कि स्वप्न में आकाश तारा, ग्रहण, ध्रुवतारा, सूर्यदर्शन, स्वर्ण देखना, रोग पीडाकारक। स्थूल पुरूष का पतला होना या कृश पुरूष पुष्ट होवे, स्वभाव का परिवर्तन, कबूतर, गिद्ध, कौवा, राक्षस आकृति, विद्युत दर्शन, लाल-काला वस्त्र धारित स्त्री, हंसता हुआ सन्यासी, कीचड़ में दबना, केश, अंगारे, भस्म, नदी को सूखते देखना, क्षुधातुर होना, दांत घिसना, उंट-गधे की सवारी, गड्ढे में पतित होना और निकल नहीं सके, अग्नि प्रवेश, मरणदृश्य आदि स्वप्न स्वास्थ्य हित शुभद नहीं, तथा रोग पीड़ा परिचायक समझें। झूलना, गीत गाना, खेलना, हंसना, बोलना, फोडना, डूबना, काले वस्त्र धारित स्त्री से प्रेम तथा भाव, घी-कीचड़-गोबर-तेल से लिप्त होना, श्वान, सियार, मुर्गा, बिलाव, नेवला, सर्प, मक्खी, बिच्छु को देखना अनिष्ट अशुभ सूचक। प्रियवस्तु का अपहरण होना, दाढी बनवाना, पकवान-मिष्ठान भोजन करना, किसी वस्तु की चोरी करना, सूखा वृक्ष, कारीगर, देवमन्दिर, पर्वत, शिखर, ध्वजा आदि दर्शन भी नेष्ट फल सूचक समझना चाहिये।

शुभ लक्षण सूचक स्वप्न हित प्रतिफल यह कि - सज्जन पुरूष, मंत्री-अधिकारीगण, देवता, श्वेत वस्त्र धारित स्त्री, हाथी सिंह, घोड़ा, गाय, कमल, रत्न, चांदी, दही, जौ, गेहूँ, सरसों, फल, दीपक, कन्या, चन्दन, गन्ना, फलयुक्त वृक्ष, भोजन, रोदन रोना, संगीत श्रवण, नौका विहार, विष्ठा मूत्र से सनना, अगम्या से सम्भोग आदि दृश्य स्वप्न शुभ फलद होते हैं।

प्रकारांतर से दाहिने हाथ में श्वेत सर्प का दंश, रूधिर स्नान, मांस भक्षण, स्वयं को मृतक देखना, मकान जलना, जल से नहाना, प्रायः शराब पीना, पीले वा लाल पुष्प का पाना, सर्प द्वारा काट जाना, खून निकलना, स्वकीय बंधन होना, भूमि या पर्वतों का लांघना उछलना आदि कर्म शुभ सूचक तथा सन्यासी, ब्राह्मण, पितर, पिता, मित्र, देवता, अधिकारी विशेषगण जो स्वप्न में शुभाऽशुभ कहते हैं वे वचन भी सत्य सिद्ध होते हैं। छाछ, कपास को छोडकर सफेद वस्तु देखना तथा गाय, हाथी, काले वर्ण के ब्राह्मण को छोडकर अन्य सभी काली वस्तु देखना नेष्ट सूचक।

जो जीव स्वप्न में दूसरे का वध या अपना बंधन अथवा किसी की निंदा करे, स्वयं की जय, शत्रु की पराजय देखना, विष खाकर मरना, शिखर वा पर्वत पर चढकर बिना श्रम उतरना, मूत्र शौच का शरीर में लगना शुभ सूचकतथा अपना घर गिराकर, नया घर बनावें वह व्यसनों से मुक्त हो जाता है। शोक से दुःखित होकर स्वप्न में नदी, कमल, बगीचा, पर्वत देखे वह शोक मुक्त हो जाता है। स्वप्न में शोक-रोदन-मरण-परिताप, दृश्य सुख वृद्धिकारक जानें। स्वप्न में फल-फूल खाना तथा देखना स्वकीय विवाह स्मृति दृश्य, हाथी-घोडे की सवारी, भूमि पर पतित होकर फिर उठ जावे, उत्तम शय्या पर शयन, बहुत वर्षा, ज्वालारहित अग्नि देखा आदि भी शुभ सूचक तथा स्वप्न में पितरों का दर्शन होने से वंश वृद्धि सुयोग तथा लाभ-आमद वृद्धि योग कारक। शीतल जल स्नान, वृक्ष पर चढना, नौका विहार एवं समुद्र नदी जलाशय में तैरना, मित्र बन्धु को गहने पहले देखना, चतुरंगिणी सेना सेना दर्शन, स्त्री सम्भोग क्रिया, अस्त्र-शस्त्र, केला, नीम्बू, सफेद मेघ, चमेली, तिल, अनार, अखरोट, खिरनी, सुपारी, नारियल, चन्दन, लौंग, इलायची, लाल पुष्प तथा विविध धातुओं का ढेर स्थापित करते देखना सुख सूचक समझना चाहिये। यदि स्वप्न में साक्षात् देवी लक्ष्मी के दर्शन हो जाएं तो जीवन में धन-सम्पदा का विकास होना है तथा स्वर्णमुद्रा-सिक्के-जेवर आदि स्वप्न में दिखे अथवा प्राप्त होवे तो प्राचीन मतानुगत पीड़ाकारक तथा नवीन लोक मतानुसार भावी लाभ की रचना बनें। तथापि इनका खो जाना अथवा बाँटना आदि नजर आवे तो भावी रूप में आर्थिक दुःविधा विषमता बनें। धन मिलने से पुरस्कार प्राप्त होने का भी संकेत समझें तथा स्वप्न में हाथी गजराज का दिखना भी शुभ सूचक। गौतम बुद्ध की मातुश्री को जब स्वप्न में सफेद हाथी के दर्शन बनें तो दिव्य शिशु का जन्म बना। हाथी की सवारी करना अथवा दर्शन होना भावी ऋद्धि-सिद्धि तथा पदोन्नति का प्रारूप चरितार्थ होता है। साथ ही नवीन मित्र सहयोगीगण की रचना बनें तथा स्वयं की मृत्यु-अन्त्येष्टि-श्मशान-शव लाश देखना शुभ सूचक उपलक्षण। परन्तु विशाल सींग-दाँत वाले जानवर, भयानक पुरूष, राक्षस, आँधी-तूफान देखना अशुभ उपलक्षक हैं। नवीन मतानुसार पानी में डूबना, सूखे गिरते वृक्ष, शीशे का टूटना, विशाल खाली मकान देखना अशुभ संकेत प्रदायक। तथापि सभी विषयक स्वप्न का शुभाऽशुभ प्रतिफल तब ही मान्य समझें जबकि नर-नारी-जीव का शारीरिक तन्त्र स्वस्थ एवं वात-पित्त-कफ आदि त्रिदोष सन्तुलित होवे, तब ही स्वप्नफल सार्थक समझें। अन्यथा स्वप्न फल निरर्थक ही निर्मूल समझें।

दुःस्वप्न नाशकमंत्र ब्रह्मवैवर्त्तपुराणान्तर्गत -

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं पूर्वदुर्गतिनाशिन्ये महामायायै स्वाहा॥ इसको स्नानादि से पवित्र होकर १० बार जपने से दुःस्वप्न नहीं दिखते हैं तथा श्रीगजेन्द्रमोक्ष स्त्रोत का पाठ करने से -भी दुःस्वप्न दर्शन नहीं होकर शुभत्व प्राप्त होता है

स्वप्नसिद्धि प्रदायक मंत्र -

ॐ ह्रीं श्रीं ऐं चक्रेश्वरि चक्रधारिणि शंखचक्रगदा धारिणी मम स्वप्नं प्रदर्शय स्वाहा॥ इस मंत्र को ११०८ बार जपने से सिद्धि होती है अथवा रात्रि में १०८ बार जपकर सो रहे तो स्वप्नेश्वरी प्राप्त होकर स्वप्न में शुभाऽशुभ कहती है। विशेष यह भी कि स्वप्न शास्त्र मनोवैज्ञानिक शास्त्र है, मन तथा मस्तिष्क से इसका प्रगाढ सम्बंध है। **इस विषय हित ज्ञानार्थ प्राच्य नवीन प्रकाशन भी बने हैं। स्वप्नसाहित्य ३ सेट मू. ६०) रूपये। हिन्दी भाषा में प्राप्त मनीआर्डर से शुल्क भेजकर मंगा लेवें।**

❋ सप्तवारादिक व्रत-विधि विधान ❋

(१) ● **रविवार व्रत विधि** - रविव्रत किसी शुक्ल पक्ष के प्रथम रविवार से प्रारंभ करें तथा १ वर्ष पर्यन्त अथवा ३० या १२ व्रत करना चाहिये। इस दिन भोजन में गेहूँ की रोटी अथवा गेहूँ का दलिया अथवा इनसे बना सीरा हलवा-गुड घी इलायची सहित बना सेवन करें। भोजन में नमक का प्रयोग नहीं करें। भोजन सूर्यास्त पहले करें तथा भोजन के पूर्व इस हलवा का कुछ भाग देवस्थान अथवा बालक बालिका को देकर भोजन करें। प्रथम हलवा सेवन करें फिर अन्य पदार्थ सेवन करें। प्रातः स्नान करके रक्त चन्दन का तिलक करें तथा रोली, अक्षत, लाल पुष्प मिश्रित जल से सूर्यनारायण को जलांजलि श्रद्धापूर्वक प्रदान करें। अन्तिम रविवार को हवन क्रिया के बाद योग्य दम्पत्ति को भोजन कराकर लाल वस्त्र एवं यथेच्छा दक्षिणा प्रदान करें। व्रत के दिन लाल रंग का बनियान या वस्त्र धारण करना योग्य तथा ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः इस बीज मंत्र का यथाशक्ति मानसिक जप करना भी योग्य। हवन समिधा अर्क-आंकड़ा यह व्रत आयु-सौभाग्य-समस्त कामना सिद्धि-चर्मनैत्र आदि विकार नाशक हैं।

(२) ● **सोमवार व्रत विधि** - यह व्रत चैत्र, वैशाख, श्रावण या कार्तिक मार्गशीर्ष के मास से धारण करना योग्य। तथापि किसी शुक्ल पक्ष के प्रथम सोमवार से प्रारंभ करें तथा १० या ५४ व्रत करें। भोजन में दही, दूध-चाँवल अथवा खीर के प्रथम ७ ग्रास खावें फिर अन्य पदार्थ सेवन करें। भोजन के पूर्व किसी विद्यार्थी को उपरोक्त वस्तु पदार्थ का यथेच्छा अनुदान करें तथा भोजन सूर्यास्त बाद करना समुचित, इस दिन सफेद रंग के वस्त्रादि धारण करना भी योग्य। प्रातः स्नान के बाद चन्दन का तिलक लगावें। तथा शिवालय के दर्शन दीप ज्योति सुगंध अर्पण आदि कार्य भी समुचित। **ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः** इस बीज मंत्र का यथाशक्ति मानसिक जाप योग्य। अन्तिम सोमवार को हवन क्रिया के बाद बालक-विद्यार्थी को खीर सहित भोजन करावें। हवन समिधा पलाश तथा दक्षिणा स्वरूप चाँदी अथवा सफेद वस्त्र देवें। यह व्रत व्यापार में लाभप्रदायक एवं मानसिक कष्ट विकारों के नाश हेतु फल प्रदायक है।

(३) ● **मंगलवारव्रत विधि** - यह व्रत किसी शुक्ल पक्ष के प्रथम मंगलवार से प्रारंभ करें तथा २१ या ४५ व्रत करें। भोजन में गेहूँ आटे गुड घी से बना हलवा एवं मोदक लड्डुओं का ५-७ ग्रास लेवें फिर यथेच्छा पदार्थ सेवन करें। परन्तु नमक का सेवन करना योग्य नहीं। ये सेवनीय पदार्थ किसी बैल-पशु को खिलाकर भोजन करना भी योग्य है। इस दिन श्री हनुमानजी के मन्दिर में तैल का दीपक प्रदान करना भी योग्य तथा लाल पुष्प की माला अर्पण करना एवं श्रीफल अर्पण करना भी योग्य तथा श्री हनुमान चालीसा - हनुमानाष्टक - बजरंगबाण के पाठ भी श्रद्धानिष्ठापूर्वक करना समुचित एवमेव **ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः** इस बीज मंत्र का यथाशक्ति मानसिक जाप योग्य। अन्तिम व्रत दिवस पर हवन क्रिया के बाद बालक विद्यार्थी को लड्डुओं से भोजन करावें हवन समिधा खदिर-खैरकाष्ठ तथा दक्षिणा स्वरूप लाल वस्त्र, ताम्रपत्र, गुड, नारियल आदि का अनुदान योग्य। यह व्रत ऋण निवारक आर्थिक समस्या का समाधान सूचक एवं सन्तति सौख्य प्रदायक एवं आत्मशक्ति तत्व का विकास सूचक है

(४) ● **बुधवारव्रत विधि** -यह व्रत किसी शुक्ल पक्ष के प्रथम बुधवार से प्रारंभ करें तथा २१ या ४५ व्रत करें। भोजन में हरे मूंग की दाल चाँवल की खिचड़ी, मूँग का हलवा, हरे मूँग की पकौड़ी ४-५ ग्रास लेवें, अन्य पदार्थ बाद में सेवन करें। भोजन करने के पूर्व ५-७ तुलसी पत्र गंगाजल या शुद्धजल के साथ सेवन करें। इन्हीं सेवनीय वस्तु का किसी अपंग अंगहीन को भोजन के पूर्व अनुदान करना भी योग्य। इस दिन हरे रंग का बनियान या वस्त्र धराण करें तथा **ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः** इस बीज मंत्र का यथाशक्ति मानसिक जाप योग्य। अन्तिम व्रत दिवस पर हवन क्रिया के बाद अंगहीन अथवा भिक्षुक को उपरोक्त वस्तु पदार्थ का ही भोजन करावें, हवन समिधा अपामार्ग आंधीझाड़ा तथा दक्षिणास्वरूप कांसी का पात्र, २ फल, हरा रूमाल वस्त्र, मूंग आदि का अनुदान करें। यह व्रत विद्या-बुद्धिवर्द्धक तथा व्यापार वृद्धि का सूचक इस दिन श्री गणेशजी के देवस्थान पर दर्शन तथा १ पावमोदक का प्रसाद अर्पण करना एवं गाय को हरी घास का अनुदान करना भी योग्य।

(५) ● **गुरूवारव्रत विधि** - यह व्रत किसी शुक्ल पक्ष के प्रथम गुरूवार से प्रारंभ करें तथा ३ वर्ष या १ वर्ष अथवा १६ संख्या के व्रत करने का विधान है। इस दिन कुछ हल्दी मिश्रित जल से स्नान करें तथा केसर या हल्दी का तिलक लगावें। तथा पीले रंग का बनियान या वस्त्र धारण करें। भोजन में चने की दाल से बने पदार्थ हलवा मोदक भूजिये केशरिया चांवल आदि पदार्थ प्रथम ७ ग्रास लेवें, अन्य पदार्थ बाद में लेवें। इन्हीं वस्तु का किसी पीली गाय को अथवा विद्यार्थी एवं अध्यापक को अनुदान करना भी योग्य। इस दिन केले के वृक्ष की पूजा दर्शन, जल प्रदान करना भी समुचित तथा जल में कुछ हल्दी सरसों मिलाकर जल प्रदान करें तथा **ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरूवे नमः** इस बीज मंत्र का यथाशक्ति मानसिक जाप योग्य। अन्तिम व्रत दिवस पर हवन क्रिया के बाद बालक-विद्यार्थियों को उपरोक्त वस्तु पदार्थ का भोजन करावें। हवन समिधा अश्वत्थ-पीपल काष्ठ तथा दक्षिणास्वरूप स्वर्ण, पीतल पात्र, पीले वस्त्र-रूमाल, पीला चन्दन गट्टा, चने की दाल, हल्दी आदि का यथाशक्ति अनुदान करें। यह व्रत विद्या बुद्धि प्रदाता तथा उत्तम स्थान पद प्रदायक, धन सम्पदा की स्थिरता हेतु एवं दाम्पत्य सौख्य, सन्तति सुख, यशवृद्धि सूचक है

(६) ● **शुक्रवार व्रत विधि** - यह व्रत किसी शुक्ल पक्ष के प्रथम शुक्रवार से प्रारंभ करें तथा २१ या ३१ व्रत करने का विधान है। इस दिन स्नान के बाद शुद्ध सफेद वस्त्र ही पहनें यथासंभव सफेद वर्ण की गाय के दर्शन तथा सर्वप्रथम १ या २ कन्या के दर्शन करें तथा श्रीफल नारियल देवें। भोजन में दूध, दही, चाँवल, खीर, घी, साबूदाना, सफेद मावा मिष्ठान्न, केला, जुवार, गेहूँ की रोटी आदि सफेद वस्तुमात्र सेवन करना ही योग्य है। तथा अन्य पदार्थ सेवन करना समुचित नहीं। तथा **ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः** इस बीज मंत्र का यथाशक्ति मानसिक जाप करें। रात्रिशयन सफेद चादर पर ही करें तथा भक्तिसंगीत श्रवण पठन मनन करते शयन करें। अन्तिम व्रत दिवस पर हवन क्रिया के बाद ६ कन्याओं को उपरोक्त वस्तुओं का भोजन करावें तथा दक्षिणास्वरूप सफेद वस्त्र रूमाल, श्रृंगारिक वस्तु, चाँदी का यथाशक्ति अनुदान एवं किसी एकाक्षि (एक आँख वाले) व्यक्ति को भी ये अनुदान योग्य। हवन समिधा गूलर-उदम्बर मान्य। यह व्रत अविवाहित स्त्री-पुरूष हेतु मनोकामना सिद्धि प्रदायक तथा दाम्पत्य सुख विवर्धक है एवं मांगलिक कार्य समाधान बनें। स्त्री-पुरूष एवं कुमार-कुमारी सभी वर्ग हेतु यह व्रत फलदायक है।

(७) ● **शनिवार व्रत विधि** - किसी शुक्ल पक्ष के प्रथम शनिवार से प्रारंभ करें तथा १९, ३१ या ५१ व्रत करने का विधान है। इस दिन स्नान के बाद तेल का अनुदान करना योग्य है तथा १ लोटा जल में कुछ काले तिल, लोंग, दूध, शकर आदि मिलाकर पीपल अथवा शमी-खेजड़ा के वृक्ष के दर्शन करते पश्चिम दिशा की तरफ मुख रखते जल प्रदान करें। भोजन में उड़द दाल से बने पदार्थ तथा विविध फल विशेषकर केला एवं तेल से निर्मित पदार्थ का सेवन प्रथम ५-७ ग्रास तक लेवें अन्य पदार्थ बाद में लेवें। इन्हीं वस्तु का अनुदान इस दिन किसी काले कुत्ते-भिक्षुक या निर्धन को देवें। काले रंग का बनियान धारण करें तथा **ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः** इस बीज मंत्र का मानसिक जाप यथेच्छा करें। अन्तिम व्रत दिवस पर हवन क्रिया के बाद यथाशक्ति तेल, तिल, छतरी, जूता, कम्बल, नीला काला वस्त्र, लोहा-कुर्सी, तिल के मोदक का अनुदान निर्धन व्यक्ति को करें। विशेषकर कबूतरों को दाना तथा चींटियों के बिल पर आटा डालना भी समुचित। हवन समिधा शमी-खेजड़ा। काले घोड़े की नाल अथवा नौका के किल से साधित मुद्रिका धारण करना भी समुचित। यह व्रत विविध सांसारिक विकार-विबाधा-अनिष्ट एवं शत्रु विनाशक है। यह व्रतादिक नियामक स्वानुभवगत तथा विविध शास्त्र नियामक से अंकित किया गया है। ग्रन्थान्तर भेद से स्वल्पान्तर नियामक हेतु अन्यथा विचार नहीं लेवें। तथापि सभी नियामक में यथा देशकाल स्थिति अनुसार व्यवहार कर्तव्यता समुचित है। परन्तु भोजन में भक्ष्य पदार्थ वस्त्र धारण अनुदान आदि का नियामक पूर्णतया परिपालन योग्य समझें।

✵ व्रत कब नष्ट हो जाता है (धर्म सिन्धु सूत्र) ✵

असकृज्जलपानाच्च सकृत्ताम्बूल चर्वणात्। उपवासः प्रणश्येत दिवास्वापाच्च मैथुनात्॥ व्रत दिवस पर बार बार जल पीना, एक बार भी पान खाना, दिन में सोना, स्त्री रंति प्रसंग आदि से व्रत नष्ट होता है।

❋ प्राण संकटे एवं सकृज्जलपाने दोषो नास्ति ❋

अर्थात् शरीर परिस्थिति विशेष पर एक से अधिक बार जल पीने से दोष नहीं। **अश्रुपातक्रोधादिना सद्यो व्रत नाशः परान्न भोजन चाऽपि** अर्थात् अश्रुपात रौदन, क्रोध, बहुभाषण, पराये अन्न का भोजन भी व्रत नाशक, इन विषयक बचाव रखना चाहिए।

✺ व्रत कब नष्ट नहीं होता है ✺

अष्टैतान्यव्रतघ्नानि आपो मूलं फलं पयः। हविर्ब्राह्मण काम्या च गुरौर्वचनमौषधम्॥ अर्थात् जल, मूलपदार्थ कन्द (भूमिगत उत्पन्न) सभी प्रकार के ऋतु फल, दूध एवं दूध से बने पदार्थ, हवन योग्य पदार्थ, विद्वान-वृद्धजन की इच्छा वचन, गुरू की आज्ञा तथा औषध सेवन आदि से धारित व्रत नष्ट नहीं होता है।

अथ सामान्यतो व्रत धर्माः

क्षमा सत्ये दया दानं शौचमिन्द्रिय निग्रहः। देवपूजा च हवनं सन्तोषः स्तेयवर्जनम्॥ अर्थात क्षमा, सत्यं, दया, दान, शौच, शुद्धि, इन्द्रीय नियंत्रण, इष्टदेव पूजा, हवन आत्म संतोष तथा चोरी नहीं करना तथा अतिलोभ-अनैतिक कार्य क्रिया से बचाव आदि सभी व्रत विषयक मान्य धर्मसूत्र हैं। ♠ ♣ ♠

नवीन विक्रम वर्षीय राजा विषये स्पष्टता

हमारे पास प्राय: प्रतिवर्ष पत्र आया करते हैं तथा संवत् के राजा-अधिपति हेतु उपालंभ लिखा जाता है एवं कई महानुभाव इतर अन्य पंचांगों में पृथक राजा का नाम देखते दोनों में से एक को अशुद्ध मानकर व्यर्थ ही विभ्रमयुक्त शंकास्पद बन पाते हैं। इस अभिलेख माध्यम से शंका समाधान यह कि प्रतिवर्ष राजा निर्णय विषय में शास्त्रीयव्यवस्था। चैत्रस्य प्रतिपच्शक्लार्कोदये प्रतिपत्तिथौ यो वासर: स राजा स्यात्तस्मिन्वर्षे ततः फलम्॥१॥ चैत्रस्य प्रतिपच्शुक्ला यत्रवारे प्रविशयति । सोऽपि वारो भवेद्राजातस्मिन् वर्षेततः फलम्॥२॥ दर्शप्रतिपत्संघौ चैत्रादौ योभवेद्वार: सोब्दपतिर्विज्ञेय: प्रतिपदि मध्याह्नकाले य: ॥३॥ बहुभि: कीर्त्तितो राजारवेरूदय कालिक: । तत्र भूपद्वये वृद्धौ भूपाभावस्तिथिक्षये ।४।। ग्रन्थान्तरेऽपि सूत्र रचना अमाप्रतिपदो: संधिर्मध्याह्नात् पूर्वतो यदि । तदात्तद्दिनृपो राजा परतश्चेतपरो भवेत् ॥५॥ चैत्रशुक्लाद्यदिवसे यो वार: सोऽब्दप: स्मृत: । शुभंवाप्यशुभं सर्वं तस्मादेव फलं स्मृतम् ॥६॥ उदये प्रतिपद्येवं मुहूर्त्तद्वयमस्तिचेत् । तस्मिन् दिने तु यो वार: स तु संवत्सरोऽधिप: ॥७॥ अभिप्राय सरलार्थ यह कि चैत्र शुक्ला प्रतिपदा १ को सूर्योदयकालिक समय का वार राजा संज्ञक होगा। अन्य मत यह भी कि चैत्र शुक्ला १ प्रतिपदा का मानक जिस वार में प्रवेश हो वही वार राजा होगा तथा मतान्तर यह भी कि प्रतिपदा मध्याह्न काल-समय का वार राजा होगा तथा चैत्र शुक्ला १ वृद्धि हो तो दोनों वारों का राजा एवं क्षय स्थिति में राजा का अभाव मानते हैं। कतिपय विज्ञ अमावस्या एवं प्रतिपदा संधि मध्याह्न से पूर्व होय वहीं दिवस का राजा तथा मध्याह्न काल से अग्रिम स्थिति पर द्वितीय दिवस का राजा मानते हैं। इत्यादि वचन मतभेद से पंचांगों में पृथक-पृथक पद्धति मान्यता व्यवस्था से राजा निर्णय में एक वार का अन्तरांश बन पाता है। इस विषयक उभय पक्ष में सूत्र-वचन है। हमारा अभिमत किसी को अप्रामाणिक कथन का नहीं। तथापि हमारे प्रायोगिक अनुभव में यही सारभूत निष्कर्ष आगम काल से रहा है कि नवीन प्रतिपदा का मान प्रवेश जिस समय हो वहीं वर्षेश - अधिपति राजा संज्ञक गणितागत नियामक से फलत: समुचित प्रतीत होता है। सुआशा है कि मानद ग्राहक महाशय विषय गरिमा सुतथ्य स्थिति पर ध्यान एवं मनन रखते विभ्रमशील नहीं रहेंगे। अस्तु

सप्तग्रह शुभाऽशुभ प्रतिफल प्रभाव

✿ **सूर्य**-राष्ट्रनायक - मन्त्री - मन्त्रिमण्डल सदस्य - राजपत्रित अधिकारी - शासकीय उच्च पदासीन वर्ग - सचिव - न्यायाधीश - अधीक्षक - अभियन्ता।

✿ **चन्द्र**-प्रजागण-जनसमाज-मध्यमवर्गीजन-महिला जगत।

✿ **मंगल** - सेनापति जल-थल-नभ, सभी वर्गीय सैनिक, चिकित्सक डॉक्टर-वैद्य, अणुशक्ति, आतंक, आन्दोलन, अग्निकाण्ड, हिंसक वर्ग, जन धन क्षति।

✿ **बुध** - लेखक, ग्रन्थकार, प्रकाशक, मुद्रक-समाचार जगत - पत्रकार - न्यूज पेपर, सम्पादक, वकील, राजदूत, बौद्धिकजीवी, स्वतंत्र कार्य क्रियाशील, व्यापारी।

✿ **गुरू** - न्यायाधीश, सभी न्यायालय वकील, आचार्य-मठाधीश-धर्माचार्य, मुद्राकोष बैंक कार्यशील वर्ग, उच्च उद्योगपति-श्रीमन्त वर्ग, व्याख्याता-कुलपति, वैज्ञानिक।

✿ **शुक्र** - चित्रकार, फिल्म उद्योग, फोटोग्राफर, नाटककार, गायक, वादक, नर्तक, महिला जगत, संगीतकार, फिल्म अभिनेता-अभिनेत्री, विविध उत्सव, सांसारिक भौतिक सुख।

✿ **शनि** - कृषि कर्म, कृषक, भूस्वामी, विविध खानें-भूगर्भीय पदार्थ, श्रमिक, मजदूर, खदान-खनिज, पत्थर व्यापारी, वयोवृद्धजन, स्मारक, प्राचीन स्थल, शासकीय सेवारत मध्यम वर्ग। **सप्त ग्रह गोचर ग्रह गतिचार चलन कलन शुभाऽशुभ प्रतिफल इन विषयक सहज भाव से प्रतीत होता है। सप्तग्रह दृष्टि न्यास, युति योग, षड़ाष्टक, समसप्तक ग्रहचार बनते इन पक्ष विषयक प्रभावशील प्रतिफल बन पाता है।**

द्वादश राशि चन्द्रफल सूत्र

स्वजन्मराशिमारभ्य चन्द्रराशि स्थितं फलम्।
आद्ये चन्द्रे शुभंज्ञेयं मनस्तोषं द्वितीयके ॥
तृतीये धन-सम्पत्तिश्चतुर्थे कलहागम: ।
पंचमे बुद्धिलाभश्च षष्ठे धान्यधनागम: ॥
सप्तमे राजसम्मानं चाष्टमे प्राणसंशय: ।
नवमे धर्मलाभ: स्यात् सिद्धिस्तु दशमे भवेत्।
एकादशे जयो नित्यं द्वादशे सर्वथा क्षति ॥

इत्यादि दैनिक चन्द्र स्थिति अनुसार अपनी जन्म नाम नक्षत्र राशि में इष्ट दिवस की चन्द्र राशि की गणना करके शुभाऽशुभ दैनिक प्रतिफल सुगमता से विदित कर सकते हैं।

देवानां कृते प्रियपत्रपुष्पाणि

शंकरस्य बिल्वपत्रं, विष्णोस्वतुलसीदलम्, गणेशस्य दुर्वान्कुरमं, अम्बायां नानाविध पुष्पाणि, सूर्यस्य रक्तं कन्वीरं पुष्पं, श्रीनाथ प्रभु: कमलप्रियम्॥ ♠ ♣ ♠

ग्रहजनित कुयोग रचना रोग विकार गति

✿ **सूर्य** - पित्त कुपित नेत्र विकार, अस्थिज्वर, अस्थिभंग, कर्णरोग, जलन, हृदयरोग, चित्तव्याकुलता, अग्नि-शस्त्र-काष्ठ-वाहन चोट, मस्तिष्क विकार, विविध ज्वर।

✿ **चन्द्र** - रक्त विकार, रक्तचाप, रक्त अल्पता, जलोदर, उन्माद, मति विभ्रम मानसिक प्रकोप, मानस अस्थिरता, शीत ज्वर, जुकाम, कफ विकार, पागलपन गतिमति।

✿ **मंगल** - पित्त प्रकोप, जलना, गिरना, गुप्त विकार, शिरशूल, मुख रोग, उदर विकार, फोड़े फुन्सी, आन्त्र रोग, बवासीर, खुजली, अल्सर, टाइफाइड-मोतीझरा, स्नायु दुर्बलता।

✿ **बुध** - वात-पित्त-कफ-चर्म-कर्ण आदि विकार, भ्रान्ति, गले एवं नासिका रोग, घाव का नहीं भरना, बौद्धिक असन्तुलन, पीलीया, खुजली, गुप्त रोग, उदर रोग, मधुमेह, मंदाग्नि, संग्रहणी, चेचक कुष्ठ, वाणि विकार, दाद, पक्षाघात

✿ **गुरू** - गठिया - कमर - वायु - कफ मुख आदि विकार, शोथ - सूजन, स्थूलता, दुर्बलता, पैर विकार, कब्ज, लीवर, कमर, कर्ण - विकार।

✿ **शुक्र** - शुक्र - वीर्य - मूत्र विषयक रोग, गुप्त रोग, स्नायविक दुर्बलता, मधुमेह कामान्ध वासना रोग, शीघ्रपतन, स्वप्न दोष, धातुक्षय, कफ-वायु विकार, कब्ज नेत्र रोग।

✿ **शनि** - पांव, घुटने, संधि स्थान विकार, पेट-मज्जा दुर्बलता, चोट-मोच संघात, रक्ताल्पता, वायु विकार, अंगवक्रता, पक्षाघात, गंजापन, केश न्यूनता, उन्माद, हृदय रोग।

✿ **राहु** - विविध अंग पीड़ा, रक्ताल्पता, त्वचा, मानस रोग, संक्रामक व्याधि, बवासीर, पशु विष जीव आदि से पीड़ा, वाहन पीड़ा, हाथ पैर सूजन, हृदय विकार।

✿ **केतु** - कामवासना सम - विषम से व्यथा, व्यवहार विकार, पाचन कमजोरी, गर्भपात, पथरी, गुप्त रोग एवं असाध्य रोग, खांसी, सर्दी, जुकाम तथा वात - पित्त जनित रोग विकार।

♣ **अखिलजगति पुंसां यज्ञयागादि कृत्यं, प्रभवति शुभकालाधीनमेवेह नित्यम्। स तु सुगणितगम्य - स्तन्यतेऽत: पवित्रं, विमलगणितयुक्तं पत्रमेतत्सचित्रम्॥ भवानीशंकरो यस्य माननीय: पितामह: । भारद्वाज - कुलोत्पन्न - रविशंकर शर्मण: ॥ सुत: शास्त्रीय आनन्द-स्वरूपो नीमच स्थित: । फलिते गणिते यश्च कुशलस्तेन निर्मितम् ॥ विशुद्धमेतत्पंचांगं बोभूयात् भूतले-सदा । व्यापारिणान्तु लाभाय हर्षाय विदुषां तथा ॥** ♣

स्मार्त्त - वैष्णव विभेद विषयेऽपि

**सूर्याद्भवन्ति भूतानि सूर्येण पालितानि तु।
सूर्ये लवं प्राप्नुवन्ति य: सूर्य: सोऽमेव च ॥
नमो विश्वप्रकाशाय सूर्ययामिततेजसे।
विश्ववन्द्यायगुरवे तद्धाम्ने च नमो नम: ॥**

व्रत पर्वादि लेखन में कभी स्मार्त्तानां (स्मा) अथवा वैष्णवानां-भागवतानां-निम्बार्काणाम् इत्यादि संज्ञा संकेत दिया जाता है एवं आस्थाशील धर्मनिष्ठ जनमानस विभ्रम में रह पाते हैं कि कौन संकेत का व्रत सम्पन्न किया जावे ? उन हेतु शास्त्रीय समाधान यह कि - धर्म सिन्धु काल माधव आदि व्रत पर्व निर्णायक ग्रन्थ में विचार विमर्श यह कि - अथात्र स्मार्त्त संज्ञा विषये - श्रौत - स्मार्त्त - पर्यवसितानां पंचरात्रादिदीक्षा - रहितानाम्। व्रताधिकारणो द्विविधा: - वैष्णवा: स्मार्त्ताश्च। तत्र यद्यपि "यस्य दीक्षास्ति वैष्णवी" इत्यादि लक्षण युक्ता वैष्णवास्तेद्भित्रा: स्मार्त्ता इति महानिबन्धेषूक्तम्॥

तथा च वैष्णव संज्ञा विषयेऽपि - पंचरात्रादिवैष्णव - वागमोक्त दीक्षां प्राप्तो वैष्णव: । समात्मा सर्वजीतेषु निजाचाराद विप्लुत:। विष्णवर्पिताऽखिलाचार: स हि वैष्णव उच्यते॥ पुनरपि संज्ञासूत्रम् - न चलति निज वर्णधर्मतो य: सममतिरात्म सुहृद विपक्ष पक्षे। न हरन्ति न च हन्तिक-ञ्चिदुच्चै: । सितमनसं तमवेहि विष्णुभक्तम्॥

इस विषयक सरल भावार्थ सरलार्थ यह कि जो जन समाज ने श्री रामानुजाचार्य अथवा श्री निम्बार्काचार्य अथवा श्री वल्लभाचार्य सम्प्रदाय विशेष के धर्माचार्य से निष्ठा सहित विधि विधान से दीक्षित होकर कण्ठी-तुलसीमाला तथा तिलक आदि नियम धारण करते तप्त मुद्रादि से शंख - चक्र अंकित करवाये हों, वे सभी वैष्णव संज्ञा के जन स्व स्व पंथ - मार्गीय संज्ञा का व्रत करें। तथा इस क्रिया से पृथक जन श्रुति - स्मृति के परिपालक-आस्तिक वेद-पुराणादि एवं पंचदेवोपासक "स्मार्त्त संज्ञा" में गणनीय होकर प्रथम पूर्व दिन के व्रत करने के स्पष्ट अधिकारी हैं। कर्मणोयस्य यत्कालस्तत्कालव्यापिनी तिथि-सूत्राधारम्। तथा जिनव्रत आदि पर "सर्वेषां" लिखा जाता है। यह व्रत दिवस सभी को समान रूप से आचरणीय है एवं विधवा स्त्रियों को दूसरे दिन का व्रत करने का एवं गृहस्थी को शुक्ल पक्षीय एकादशी तथा वानप्रस्थी सन्यासीगण दोनों पक्ष की एकादशी के अधिकारी हैं।

सुश्रुत-स्वास्थ्य संहिता

ॐ भद्रं कर्णेभि: श्रृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्रा:।
स्थिरैरंगैस्तुष्टुवा सस्तनुभिर्देवहितं यदायु: ॥

भावार्थ - हे देवो, हमारी जितनी आयु है उसमें कान-कर्णों से कल्याणकारी वार्ता ही सुने तथा नैत्र-चक्षुओं से कल्याणकारी पदार्थ ही देखें तथा हम सम्पूर्ण शरीर-आयु पर्यन्त अपने स्थिर (अविकल और दृढ) अंगों से (ईश्वर-सर्वेश्वर-परमात्मा) की आराधना करते हुए देवों का (पदार्थ मात्र का) हित ही करते रहें

ॐ द्यौ: शान्तिरन्तरिक्ष शान्ति: पृथिवी शान्तिराप: शान्तिरोषधय:
शान्ति: वनस्पतय: शान्तिर्विश्वेदेवा: शान्तिर्ब्रह्म शान्ति:
सर्व: शान्ति: शान्तिरेव शान्ति: सा मा शान्तिरेधि ॥
यतो यत: समीहसे ततो नोऽभयं कुरू।
शन्न: कुरू प्रजाभ्योऽभयन: पशुभ्य: सुशान्तिर्भवतु ॥

भावार्थ - स्वर्गलोक, आकाश, भूमि, वारि (जल) औषधि, वनस्पति, अशेष देवताओं तथा निराकार ब्रह्म में जो शान्ति है जो यथार्थ रूप में सर्वत्र शान्ति विद्यमान है वह प्रसिद्ध शान्ति मेरे लिये सर्वविध शान्तिकारक रहे। हे प्रभो! आप जिस जिस स्थान से समुचित समझते हैं उन उन स्थानों से हमें भय-विबाधा रहित करें। हमारी सन्तति हेतु सुख एवं हमारे पशुओं के लिये अभय देवें।

शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम्।
पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मानो मध्या रीरिषतायुर्गन्तो: ॥

भावार्थ - हे देवगण। शत वर्ष-पर्यन्त आप निश्चयपूर्वक हमारे समीप रहें। सौ वर्षों में हमारे शरीर जीर्ण अथवा वृद्ध हो जायेंगे। हमारे पुत्र अपने आत्मजों के पिता-जनक हो जाएंगे। अर्थात् हम पौत्र-प्रपौत्र आदि वाले बन जायेंगे। अर्थात् हमारे जीवन को मध्य-बीच की आयु में ही नष्ट न करें। इत्यादिक वैदिक आयुष्य कामना सूत्रावली। इस मृत्युलोक में नैसर्गिक जन्म प्राप्त करके प्राथमिक रूप से पंचभौतिक शरीर, स्वास्थ्य, संरक्षा-सुरक्षा हेतु ही मनुष्य को लक्ष्य साधना रखना चाहिये। तदर्थ ही आयुर्विज्ञान विषयक सूत्र रचना -

सर्वमन्यत् परित्यज्य शरीरमनुपालयेत्।
तदभावे हि भावानां सर्वाभाव: शरीरिणाम् ॥
नगरी नगरस्येव रथस्येव रथी यथा।
स्वशरीरस्य मेधावी कृत्येष्ववहितो भवेत् ॥

भावार्थ - यह कि बुद्धिमान, प्रज्ञाशील पुरूष (नर-नारी) को चाहिये कि जिन आहार-विहारादि से शरीर का योगक्षेम-कल्याण हो तथा नाम-अनागत व्याधियों की अनुत्पत्ति एवं बलवीर्य-वर्णादि की प्राप्ति हो-उनके ही ज्ञान और अनुष्ठान हेतु दिनचर्या-रात्रिचर्या-ऋतुचर्या पर निरंतर ध्यान एवं प्रयत्नशील रहे। स्पष्टता यह भी कि धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष रूप पुरूषार्थों के आचरण में शरीर ही प्रमुख कारण है। कहा भी है - शेष सब कुछ छोड़कर पुरूष को शरीर का ही संरक्षण करना चाहिए। शरीर के अभाव में शेष सांसारिक सभी पदार्थों का अस्तित्व होते हुए भी उनका अभाव ही होता है। यथा नगरपति नगर के योगक्षेम के कार्यों में एवं रथी रथ के योगक्षेम के कार्यों में सुदक्ष-सावधान रहता है। वैसे ही प्रत्येक मेधावी-ज्ञानशील पुरूष को अपने शरीर के योगक्षेम में क्रियाशील रहना चाहिए एवं आभ्यंतर त्रिदोष (वात-पित्त-कफ) वैषम्यादि से तथा बाह्य बाहरी अहित वस्तुओं के संसर्ग से शरीर रक्षण तन्मयतापूर्वक करना चाहिए। तदर्थ ही आयुर्वेदोक्त सदुपदेश सूत्र -

आयु: कामयमानेन धर्मार्थसुखसाधनम्।
आयुर्वेदोपदेशेषु विधेय: परमादर: ॥ वाग्भट्ट ॥
धर्मार्थकाममोक्षाणामारोग्यं मूलमुत्तमम्।
रोगास्तस्यापहर्त्तार: श्रेयसो जीवितस्य च ॥ चरक संहिता सूत्र ॥

भावार्थ - यह कि धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष इन चार पुरूषार्थ के विकास कामना हेतु आयुर्वेदीय स्वास्थ्य रक्षा सूत्रों पर निष्ठापूर्वक प्रयास करना चाहिए। स्वस्थ आरोग्य युक्त शरीर ही उत्तम कारण है तथा इसके पतन विनाश का कारण रोग होते हैं। रोगी मनुष्य धर्मादिकों का साधन नहीं कर सकता, क्योंकि रोग सुख तथा जीवन के विनाशक ही होते हैं। तदर्थ ही आयुर्विज्ञान सूत्र -

तस्मादात्मवता नित्यमाहाराचारभैषजै:।
धीमता तदनुष्ठेयं स्वास्थ्यं येनानुवर्त्तते ॥

अभिप्राय यह कि पथ्यसेवी पुरूष आहार तथा आचार और शास्त्रीय औषधियों द्वारा ऐसा व्यवहार करें जिससे स्वास्थ्य की वृद्धि बनें। इस प्रकार शरीर स्वास्थ्य रक्षा का विशद वर्णन आयुर्वेद संहिता ग्रंथों में किया गया है। अत: अब यह प्रश्न विचार भी बनता है कि स्वास्थ्य की परिभाषा संज्ञा क्या है? तदर्थ ही स्वास्थ्य लक्षण एवं मूल तत्व विषयक सरल सारगर्भित बहुसम्मत आयुर्वेदोक्त सार्थक वचन सूत्र सुश्रुत संहिता-

समदोष: समाग्निश्च समधातुमलक्रिय:।
प्रसन्नात्मेन्द्रिय मना: स्वस्थ्य इत्यभिधीयते ॥

भावार्थ - यह कि जिस मनुष्य के शरीर में वात-पित्त-कफ ये तीनों विकार एवमेव रस-रक्त-मांस-मेद-अस्थि-मजा और शुक्र-वीर्य ये ७ सातों धातु जठराग्नि आदि सब अग्नि सम हो अर्थात् ये सभी अपना कार्य नैसर्गिक नियमानुसार और नियत समय पर उचित रीति से करते हों, मल-मूत्र उचित मात्रा में हो इसी प्रकार स्वेद आदि सभी धातुओं के मल भी ठीक मर्यादित परिमाण में हो, पंच ज्ञानेन्द्रिय तथा पंच कर्मेन्द्रिय के व्यापार चलने, फिरने, सोने, जागने नित्य के कार्यक्रम तथा देखने, सुनने, सूंघने, चखने और स्पर्श करने आदि यथा नियम बनतें हो उनमें कोई त्रुटि या कमी न हो, एवमेव आत्मा इन्द्रियां तथा मन प्रसन्नचित्त रहें। इस प्रकार की शरीर क्रिया बनते-रहते प्राणधारी मनुष्य को स्वस्थ्य-तन्दुरूस्त समझना चाहिये।

▲ वात धातु के व्यवस्थित रहने से श्वास का चलन कलन, बोलना, गाना-गायन, भोजन, जल आदि का आमाशय में पहुंचना तथा इनका व्यवस्थित पाचन-पचना, रस और मल-मूत्रादि का पृथक-पृथक यथा स्थान जाना, स्त्रियों के आर्तव-रजस्वला नियामक तथा गर्भादि का उचित समय पर क्रियारत होना, रूधिर-रक्त का पूरे शरीर में घूमना एवं ५ ज्ञानेन्द्रियों और ५ कर्मेन्द्रियों का अपने अपने व्यापार और चेष्टा में ठीक ठीक लगा रहना एवं मस्तिष्क सुषुम्ना काण्ड का सभी कार्य-व्यापार सोच विचार मानसिक क्रियाएं यह भी सभी वायु तत्व के सन्तुलित रहते स्वस्थ्य ठीक अन्यथा विपरीत स्थिति में इन सभी विषयक विकार दोष-रोग बन पाता है।

▲ पित्त-धातु के ठीक रहने से भोजन का पचना, रस से रक्त की रचना, रक्त से मांस मेद आदि धातु का निर्माण। बुद्धि-स्मृति आदि का सबल बनना तथा अपने अपने कर्तव्य के लिये सावधान रहना, एवमेव नेत्र ज्योति का सुखद प्रारूप। स्नान चन्दनादि लेपन-तैल अभ्यंग (मालिश) आदि का गुण शरीर में पहुंचना, शरीर का कोमल, तेजस्वी और सन्तुलित रहना गुण लाभ बनते हैं अन्यथा पित्त विकृति होते उपर्युक्त सभी कार्य सही सही नहीं होते हैं।

▲ कफ - कफ धातु के व्यवस्थित रहने से भोजन का स्वाद ठीक मालूम होना, मुख में ग्रास का गीला होना, मुख तर-तरल स्थिति का रहना, आमाशय में भोजन का नियमित समय पर पाचन होना, हृदय का तृप्त रहना, शरीरस्थ संधि संस्थान का चिकना और कार्यक्षम रहना, हिलने, डोलने, चलने-फिरने आदि कार्यों का सही सही होना तथा त्वचा चमड़ी का स्निग्ध एवं तेजस्वी रहना। ये सभी वार्त्ता-क्रियायें उचित सन्तुलित मात्रा में बनी रहती है तथा कफ विकृति बनते इन सभी वार्त्ता विषय पर कुप्रभाव बन जाता है।

▲ जठराग्नि अर्थात पाचन शक्ति - शरीरस्थ ये अग्नि चार प्रकार की होती है १ मन्दाग्नि २ तीक्ष्णाग्नि ३ विषमाग्नि ४ समाग्नि। शरीर में कफ की अधिकता से मन्दाग्नि, पित्त की अधिकता से तीक्ष्णाग्नि एवं वायु की विषमता से विषमाग्नि होती है। मन्दाग्नि से अल्प भोजन भी देरी एवं कठिनता से पचता है। तीक्ष्णाग्नि से भूख बहुत लगती है और भोजन तत्काल पच जाता है। विषमाग्नि से कभी भोजन पचता है कभी नहीं पचता। इन सभी अग्नियों में समाग्नि वस्तुत: योग्य विषयक रचना है। इससे भोजन उचित मात्रा में उचित समय पर किया हुआ और देश ऋतु प्रकृति अनुसार भोजन आहार ग्रहण करते नियमित पचन-पाचन क्रम तथा बल शक्ति वर्धक होता है। अत: समाग्नि ही सर्वश्रेष्ठ अग्नि संज्ञा आयुर्वेद में वर्णित है।

▲ प्रसन्नात्मेन्द्रियमना: - इसका सरलार्थ यह कि जिनकी आत्मा-इन्द्रियां और मन प्रसन्न हैं वे ही पूर्णतया निरोगी स्वस्थ्य हैं अन्यथा पूर्णतया स्वस्थ्य संज्ञा के नहीं रहते हैं। जो व्यक्ति आहार-विहार विचार में इन्द्रियों पर संयम-सन्तुलन तथा मन पर नियंत्रण एवं विशेषकर अति काम-क्रोध-लोभ-मोह-मद-मत्सर (ईर्ष्या)-राग-द्वेष आदि कुवृत्ति-दुर्गति के कारण सूचक इन उपर्युक्त विषय वार्त्ता पर पूर्णतया नियंत्रण रखने में सफल बन पाते हैं। उन्हीं मानव-व्यक्ति का योगक्षेम-परम कल्याण-सुख शांति विधायक जन जीवन चरितार्थ बनता है तथा इस भूलोक पर धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष आदि पुरूषार्थ चतुष्टय की प्राप्ति में सफलता प्राप्तकरते मानद यशस्वी एवं स्तरीय जनजीवन की पात्रता सरलता से ही प्राप्त कर सकते हैं। यह आयुर्विज्ञान का परम सत्य-प्रमुख अन्तिम शाश्वत नियम सूत्र है। तदर्थ एक सर्वमान्य श्लोक रचना भी है।

............अवशेष भाग उच: पान गुण अग्रिम पृष्ठ पर

ज्योतिष द्वारा रोग निदान

ग्रहों का शुभाऽशुभ असर पृथ्वी के प्रत्येक प्राणी पर पड़ता है, यह निर्विवाद सत्य है। समस्त प्राणियों में मानव सर्वश्रेष्ठ है इसी कारण उसने अपने अनुभव द्वारा यह जानने का प्रयत्न किया कि जगत के कल्याण के लिए ज्योतिष-विज्ञान द्वारा यह सिद्ध कर दिखाया जाए कि ये ग्रह अपने नैसर्गिक प्रभामण्डल जनित रश्मि प्रसारण गुण-धर्म, रूप-रंग स्वभाव आदि शिशु-पिण्ड पर गर्भावस्था से ही दिखाते हैं यथाअनुक्रम रचना वराह मिहिर: -

१. प्रथम मास का स्वामी	मंगल	कलल (समिश्रण) शुक्र डिम्बाणु
२. द्वितीय मास का स्वामी	शुक्र	पेशी (अण्डा) प्रारूप - पिण्ड
३. तृतीय मास का स्वामी	बृहस्पति	अवयव-लिंगादि रचना
४. चतुर्थ मास का स्वामी	सूर्य	हड्डी, नस व जोड़ों की नस
५. पंचम मास का स्वामी	चन्द्रमा	चमड़ी-पृष्ठावरण रचना
६. षष्ठम मास का स्वामी	शनि	रूधिर, रोम, नखादि
७. सप्तम मास का स्वामी	चंद्र	चित्त में चैतन्यता प्राण रचना
८. अष्टम मास का स्वामी	लग्नेश	ओज, भूख, प्यास और स्वादगति
९. नवम मास का स्वामी	चन्द्रमा	बाहर निकलने की इच्छा
१०. दशम मास का स्वामी	सूर्य	और दशम मास तक जातक

बीवन समस्त अवयवों से परिपूर्ण होकर सूर्य के स्वामित्व में गर्भ से बाहर आता है। अत: जन्म से मरण तक जीव ग्रहों के चक्रव्यूह में रहता है। इन्हीं ग्रहों के शुभाऽशुभ प्रभाव के कारण इस जगत में नाना प्रकार के रूप-रंग, गुण-स्वभाव दिखाई पड़ते हैं। साथ ही उत्तम स्वास्थ्य का तथा रोग का होना ग्रहों की शुभाशुभ स्थिति पर अवलम्बित है। आयुर्वेद में वात, पित्त और कफ तीन विकारों की न्यूनाधिक रचना गति प्रमाण पर वर्णित है और इसी आधार पर ही कुशल वैद्यक (चिकित्सक) नाड़ी परीक्षण करते ही अपना निदान निश्चित करते हैं। प्रवीण वैद्य आयुर्वेद के अनुसार रोग का निदान रोगी की जिह्वा, नेत्र, त्वचा, मल-मूत्र व नाड़ी आदि अष्टविधि के आधार पर करते हैं। उसी तरह कुशल ज्योतिषज्ञ सम्पूर्ण ज्योतिष शास्त्र के अनुसार रोगी को न देखते हुए भी केवल उसकी जन्म कुण्डली लग्न-लग्नेश भाव, राशि, लग्न, ग्रह, युति, दृष्टि योग आदि से रोग निदान, शरीर के किस भाव पर पड़ रहा है, यह सहज विदित कर लेते हैं। यथा मौलिक गुणधर्म (१) वात - शनि, राहु, केतु (२) पित्त - सूर्य, मंगल (३) कफ - चंद्रमा, बृहस्पति (४) वात - कफात्मक - चंद्र, शुक्र (५) त्रिक्षेषात्मक - बुध (६) द्वंद्वज - विभिन्न ग्रहानुसार प्रतिफल निर्णय

✱ मानव प्रकृति प्रतिफल सूत्र ✱

● वात प्रकृति - अल्पकेश: कृशो रूक्षो वाचलाश्चलमानस:।
आकाशचारी स्वप्नेषु वातप्रकृतिको नर: ॥

● पित्त प्रकृति - अकाले पलितैर्व्याप्तो धीमान्स्वेदी च रोषण:।
स्वप्नेषु ज्योतिषां द्रष्टा पित्तप्रकृतिको नर: ॥

● कफ प्रकृति - गम्भीर बुद्धि: स्थूलांग्न: स्निग्धकेशो महाबल:।
स्वप्ने जलाशयालोकी श्लेष्म प्रकृतिको नर: ॥

● मिश्र प्रकृति - ज्ञात्वा मिश्राचिह्नैश्च द्वित्रिदोषोल्वणा नरा:।

रोगों की उत्पत्ति विशेषत: अशुभ ग्रहों के होने से, कुण्डली के किस भाव में अशुभ ग्रह पड़ा है तथा किस भाव से पीड़ा या रोग होना निश्चित है, यह नीचे लिखे अनुसार जाना जा सकता है - **प्रथम भाव से** - मुख, दांत, गला, जीभ, मस्तक में पीड़ा। **द्वितीय भाव से** - मुख व दाहिना नेत्र। **तृतीय भाव से** - कान, गर्दन व हाथ। **चतुर्थ भाव से** - पेट, कंधा, छाती। **पंचम भाव से** - कमर के उपर का भाग व जांघ। **षष्ठ भाव से** - दाहिना पांव व गुह्य भाग। **सप्तम भाव से** - नाभि स्थल व पेट का मध्य भाग। **अष्टम भाव से** - बायां पांव व गुह्य भाग व पुट्ठे। **नवम भाव से** - कमर के बीच का भाग **दशम भाव से** - पेट व कंधा। **एकादश भाव से** - बांया हाथ, कान और गर्दन। **द्वादश भाव से** - बांयीं आंख व पैर का तलुवा।

उपर लिखे हुए द्वादश भाव में से किसी भी भाव में यदि पाप ग्रह स्थित हो या उन ग्रहों की युति, प्रतियुति, दृष्टि आदि का अवलोकन कर शरीर के उसी भाग में पीड़ा व रोग का होना निश्चित किया जाता है। जन्मस्थ ग्रहों के बलाबल व कुण्डली में उनकी स्थिति के अनुसार अल्पकाल और दीर्घकाल के रोगों का पता लगाया जाता है। ग्रह गोचर के अनुसार भी व्यक्ति न्यूनाधिक रोगी होता है यह ग्रहों की गोचर स्थिति के अनुसार पता चलता है कि कौन सा ग्रह किस भाव में कितने समय के आगमन तथा उसके शुभाऽशुभ प्रभाव से ग्रसित हैं। यथा **सूर्य** - एक मास। **चन्द्रमा** - सवा दो दिन। **मंगल** - डेढ मास। **बुध** - एक मास। **बृहस्पति** - तेरह मास। **शुक्र** - अट्ठाईस दिन। **शनि** - ढाई वर्ष एवं **राहु-केतु** का गतिक्रम डेढ वर्ष लगभग नैसर्गिक गति नियामक से बन पाता है। परन्तु किस ग्रह से कौन सा रोग उत्पन्न होता है और उसका परिणाम शरीर पर कितना बुरा होगा, यह जानना आवश्यक है - **(१) सूर्य** - हृदय का भाग, मस्तक का मुख के पास पीड़ा, रक्तस्राव, नेत्र पीड़ा, दृष्टि दोष, हृदय रोग, मूर्छा, बुखार, पित्त, पीठ व पैरों में दर्द आदि। **(२) चन्द्रमा** - पेट में विकार, छाती में तकलीफ, जलोदर, सर्दी का बुखार, स्त्री प्रदर रोग, आर्तव दोष, अपस्मार, मृगी, सहन शक्ति आदि। **(३) बुध** - मस्तिष्क विकार, गला व गर्दन में पीड़ा, गण्डमाला, मज्जातन्तु की दुर्व्यवस्था, वाणी दोष, मानसिक व्यथा, सिरदर्द, गुह्य रोग, नपुंसकता आदि। **(४) बृहस्पति** - लीवर की बीमारी, रक्त संचय, दन्तरोग, घाव, कफ, नजला, जुकाम, खांसी, गुल्म रोग आदि। **(५) शुक्र** - वीर्यदोष, गर्मी, बादी, मूत्र विषय रोग, मधुमेह एवं रतिजन्य अन्य रोग। **(६) मंगल** - रक्तनाश, फोड़े, फुंसी, मुहांसे, खुजली, नाक का रोग, गुहा रोग, चीरफाड़, रक्तदोष, पित्त, अंड वृद्धि, व्रणरोग, अग्निपीड़ा आदि। **(७) शनि** - संधिवात (जोड़ों का दर्द, गठिया), अर्धांग वायु, वायु विकार, क्षयरोग (टी.बी.), खांसी, दमा, दाढ का दर्द, अपचन, वात विकार, नपुंसकता, दीर्घकालीन रोग आदि। **(८) राहु** - देवी प्रकोप, अपस्मार, प्रेत-पिशाच पीड़ा, अरूचि, दुष्ट विचार, शराब आदि नशा करना व आत्महत्या की प्रवृत्ति। **(९) केतु** - शत्रु का कपट, अपने से निम्न व्यक्तियों द्वारा पीड़ा, नि:संतान रहना तथा शारीरिक विकास में न्यूनता कमजोरी-मानसिक विभ्रमता।

शरीर में जिस धातु विकार का अधिपति जो ग्रह हो उसका जप, होम, दान आदि करने से मनुष्य रोग, शोक व भय से मुक्त होकर यश, बल व सुख को प्राप्त होता है। कहा जाता है कि मंत्र, तीर्थ, ब्राह्मण, देवता, ज्योतिषी, औषधि तथा गुरू में जिसकी जैसी भावना होती है, उसे वैसी ही सिद्धि मिलती है।

● **यथाशास्त्रीयसूत्रम् - मन्त्रे तीर्थे द्विजे देवे भेषजे च तथा गुरौ।**
यादृशी भावना यस्य सिद्धिर्भवति तादृशी ॥

●▲● गर्भाधान - प्रजनन सूत्र - प्रयोग ●▲●

(१) कामान्मिथुनसंयोगे शुद्धशोणित शुक्रज:। गर्भ: संजायेत नार्या: स जातो बाल उच्यते ॥ रति सुख या प्रजोत्पत्ति मनोकामना से नर-नारी के मध्य परस्पर आकर्षण उत्पन्न होता है एवं दोनों की उपस्थेन्द्रियों का स्नेहज प्रगाढ सम्मिलन होकर शुद्ध रज-डिम्बाणु तथा विशुद्ध शुक्र-वीर्य का संयोग बनते नारी के गर्भाशय में गर्भोत्पत्ति का प्रारूप चरितार्थ होता है एवं मासानुमासिक अभिवर्धित होते जब परिपक्व होकर जन्म लेता है उसे जातक अथवा बाल संज्ञा का स्वरूप मिलता है। (२) पुत्र-कन्या पक्ष हित आयुर्वेदशास्त्रीय वचन सूत्र-आधिक्ये रजस: कन्या पुत्र: शुक्राधिके भवेत्। नपुंसकं समत्वेन यथेच्छा पारमेश्वरी ॥ पवित्र रज+शुक्र का गर्भाशय में संयोग बनते-उस समय डिम्बाणु रज का परिमाण अधिक होने पर कन्या जन्म और यदि वीर्य (शुक्र) का परिमाण अधिक होने पर पुत्रोत्पत्ति का नियामक आयुर्वेद शास्त्र में वर्णित है। (३) रति विषय वासना एवं गर्भाधान प्रक्रिया हेतु शास्त्रकारों ने कतिपय सूत्र वर्जित क्षण-काल-दिवस का भी विवेचन किया है। यथा संभव इन सूत्रों पर सुविज्ञ नर-नारी को ध्यान में रखना चाहिये। चतुर्दश्यष्टमी चैव अमावस्या च पूर्णिमा। पर्वाण्येतानि राजेन्द्र ! रविसंक्रान्तिरेव च ॥ भावार्थ यह कि भद्रा-चतुर्थी-षष्ठी-अष्टमी-नवमी-चतुर्दशी-अमावस्या-पूर्णिमा आदि तिथि तथा रवि संक्रान्ति दिवस, संध्याकाल, माता पिता श्राद्ध दिवस-सूर्य चन्द्र ग्रहण दिवस एवं मंगल-रवि-शनिवार तथा रजस्वला ऋतुधर्म के आरंभ से ४ रात्रि गर्भाधान विषय में त्याग करें। इस नियामक पर ध्यान रखने से गर्भ प्रजनन एवं रचना कार्य शुभ होता है। (४) पुत्रोत्पत्ति की कामना हेतु भी शास्त्रीय वचन विशेष यह कि - युग्मासु पुत्रा जायन्ते स्त्रियोऽयुग्मासु रात्रिषु। तस्माद्युग्मासु पुत्रार्थी संविशेदार्त्तवे स्त्रियम् ॥ भावार्थ यह कि सम संख्यक दिवस ६-८-१०-१२-१४-१६ वीं रात्रि तथा कन्योत्पत्ति कामना हेतु ५-७-९-११-१३-१५ वीं रात्रि में स्त्री सम्भोग करना चाहिये। (५) इस पंचभौतिक शरीर में माता से उत्पन्न होने वाला भाग - शरीर का कोमल भाग यथा-रक्त, मांस, मज्जा, गुदा आदि। पिता प्रकृति जनित भाग - स्थिर (ठोस) वस्तु तथा शुक्र, धमनी, अस्थि, बाल आदि। उभय आत्मशक्ति द्वारा - चित्त (मन) इन्द्रियां आदि। (६) शुद्ध शुक्र (वीर्य) के लक्षण-शुक्रं शुक्लं गुरू स्निग्धं मधुरं बहलं बहु। धृतमाक्षिकतैलाभं सदगर्भायआर्तवं पुन: ॥ भावार्थ-यह स्फटिक श्वेत वर्ण का द्रव समान, स्निग्ध-चिकना, प्रगाढ, शहद के समान गंध वाला, अथवा तैल या शहद के समान शुक्र का रंग भी माना है तथा स्त्री के शुद्ध आर्त्तव रज के लक्षण - शशासृक् प्रतिमं ऋतु यद्वा लाक्षारसोपमम्। तदार्न्तवं प्रशंसन्ति यद्वासौ न विरंजयेत् ॥धौतं शशास्नाभं यच्च विरज्यते ॥ भावार्थ - शुद्ध रज लाख के रस या शशक (खरगोश) के रक्त के समान होता है तथा धोने पर वस्त्र-कपड़े से रंग चला जाता है। (७) पति-पत्नी रतिप्रसंग संभोग समय कृत संकल्प मन का वेग मनेच्छा ही महत्वपूर्ण स्तंभ है। जितना अधिक पौरूषीय वेग होगा उतना ही प्रबल पुल्लिंग योग अन्यथा स्थितियों में स्त्री लिंग की प्रधानता। सम्भोग दिवस पर सूर्यास्त पूर्व ही सुपाच्य भोजन करें तथा १-२ पके केले, चांवल-बूरा-देशी घी-दही-दूध से बने पदार्थ ही पुरूष सेवन करें।

❄✱❄ ग्रह शान्ति विधान - रत्न धारण नियामक ❄✱❄

उपरत्न	ग्रह का नाम	रत्न	कम से कम वजन	धातु आसन	किस अंगुली में पहनें ?	धारण वार
लालड़ी लाल पोटा	सूर्य	Rubby माणिक	५ रत्ती २।। के.	सोना ताँबा	अनामिका	रवि
चन्द्रमणि श्वेताभ	चंद्र	Pearl मोती	५ रत्ती २।। के.	चाँदी रजत	कनिष्ठिका अनामिका	सोम
विद्रुम	मंगल	Coral मूंगा	८ रत्ती ४ के.	सोना या ताँबा	अनामिका तर्जनी	मंगल
आनेक्स हरा नग	बुध	Emerald पन्ना	६ रत्ती ३ के.	सोना काँसी	कनिष्ठिका	बुध
सुनहला पीला	गुरू	Topaz पुखराज	५ रत्ती २।। के.	सोना पीतल	तर्जनी	गुरू
जरकन सफेद	शुक्र	Diamond हीरा	२ रत्ती १ के.	सोना शीशा पंचधातु	कनिष्ठिका मध्यमा	शुक्र
नीलमणि नीला नग	शनि	Saphire नीलम	५ रत्ती २।। के.	पंचधातु लोहा सोना	मध्यमा	शनि
फिरोजा समनील	राहु	Zircan गोमेद	७ रत्ती ३।। के.	पंचधातु रांगा	मध्यमा	शनि
लाजवर्द वैदूर्य	केतु	Cat's Eye लहसुनिया	७ रत्ती ३।। के.	पंचधातु जस्ता	कनिष्ठिका	बुध

आपकी जन्म दिनांक	भाग्यांक व प्रभावी ग्रह
१-१०-१९-२८	१-सूर्य
२-११-२०-२९	२-चंद्र
३-१२-२१-३०	३-गुरू
४-१३-२२-३१	४-प्रजापति
५-१४-२३	५-बुध
६-१५-२४	६-शुक्र
७-१६-२५	७-वरुण
८-१७-२६	८-शनि
९-१८-२७	९-मंगल

● **संकेत** - रत्न-नगों के वजन कम से कम उल्लेखित है। शक्ति सामर्थ्य अनुसार विशेष वजन के प्रभावी भी धारण कर सकते हैं।

● **पंच धातु नियामक** - सोना, चाँदी, ताम्बा, काँसी, लोहा एक समान मात्रा भाग में लेना सन्मार्गसूचक है।



● गण्डमूलादि गण्डान्तष नक्षत्राणि - चरणपाद फलं च ●

नक्षत्राणि	अश्विनी	आश्लेषा	मघा	ज्येष्ठा	मूल	रेवती
प्रथम पाद	पितृ प्रभार	सौख्यम्	मातृ प्रभार	भातृ प्रभार	पितृ प्रभार	लाभप्रदम्
द्वितीय पाद	सौख्यम्	धन प्रभार	पितृ प्रभार	भातृ प्रभार	मातृ प्रभार	सौख्यद
तृतीय पाद	सुयोगम्	मातृ प्रभार	सौख्यद	मातृ प्रभार	धन प्रभार	सुफलप्रदम्
चतुर्थ पाद	सौख्यद	पितृ प्रभार	शुभफलद	स्वयं प्रभार	सौख्यम्	कष्टसूचकम्

इन ६ गण्ड मूलादि नक्षत्रों में जन्म प्राप्त किये सन्तति-नवजातक का प्रतिफल उपर्युक्त चक्रानुसार जानना चाहिये। प्रभार से कष्ट सूचक, सौख्यद से शुभ फल, इन नक्षत्र में जन्म होने पर २७ वें दिन इन नक्षत्र विषयक हवन-शांति विधान आदि कार्य सम्पन्न करने से दोष विशेष प्रभावशील नहीं होता है।

● गणितागत-नवग्रह स्पष्टता अनुसार ●

नक्षत्र चरण प्रवेश समय-विबोधक सारिणी

राशि	नक्षत्र-चरण	रा.अं.क.	राशि	नक्षत्र-चरण	रा.अं.क.	राशि	नक्षत्र-चरण	रा.अं.क.
मेष	अश्विनी १	०-०-०	सिंह	पू.फा.१	४-१३-२०	धनु	उषा. १	८-२६-४०
मेष	अश्विनी २	०-३-२०	सिंह	पू.फा.२	४-१६-४०	मकर	उषा. २	९-०-०
मेष	अश्विनी ३	०-६-४०	सिंह	पू.फा.३	४-२०-०	मकर	उषा. ३	९-३-२०
मेष	अश्विनी ४	०-१०-०	सिंह	पू.फा.४	४-२३-२०	मकर	उषा. ४	९-६-४०
मेष	भरणी १	०-१३-२०	सिंह	उ.फा.१	४-२६-४०	मकर	श्रवण १	९-१०-०
मेष	भरणी २	०-१६-४०	कन्या	उ.फा.२	५-०-०	मकर	श्रवण २	९-१३-२०
मेष	भरणी ३	०-२०-०	कन्या	उ.फा.३	५-३-२०	मकर	श्रवण ३	९-१६-४०
मेष	भरणी ४	०-२३-२०	कन्या	उ.फा.४	५-६-४०	मकर	श्रवण ४	९-२०-०
मेष	कृतिका १	०-२६-४०	कन्या	हस्त १	५-१०-०	मकर	घनिष्ठा १	९-२३-२०
वृषभ	कृतिका २	१-०-०	कन्या	हस्त २	५-१३-२०	मकर	घनिष्ठा २	९-२६-४०
वृषभ	कृतिका ३	१-३-२०	कन्या	हस्त ३	५-१६-४०	कुंभ	घनिष्ठा ३	१०-०-०
वृषभ	कृतिका ४	१-६-४०	कन्या	हस्त ४	५-२०-०	कुंभ	घनिष्ठा ४	१०-३-२०
वृषभ	रोहिणी १	१-१०-०	कन्या	चित्रा १	५-२३-२०	कुंभ	शतभिषा १	१०-६-४०
वृषभ	रोहिणी २	१-१३-२०	कन्या	चित्रा २	५-२६-४०	कुंभ	शतभिषा २	१०-१०-०
वृषभ	रोहिणी ३	१-१६-४०	तुला	चित्रा ३	६-०-०	कुंभ	शतभिषा ३	१०-१३-२०
वृषभ	रोहिणी ४	१-२०-०	तुला	चित्रा ४	६-३-२०	कुंभ	शतभिषा ४	१०-१६-४०
वृषभ	मृगशिरा १	१-२३-२०	तुला	स्वाति १	६-६-४०	कुंभ	पूभा.१	१०-२०-०
वृषभ	मृगशिरा २	१-२६-४०	तुला	स्वाति २	६-१०-०	कुंभ	पूभा.२	१०-२३-२०
मिथुन	मृगशिरा ३	२-०-०	तुला	स्वाति ३	६-१३-२०	कुंभ	पूभा.३	१०-२६-४०
मिथुन	मृगशिरा ४	२-३-२०	तुला	स्वाति ४	६-१६-४०	मीन	पूभा.४	११-०-०
मिथुन	आर्द्रा १	२-६-४०	तुला	विशाखा १	६-२०-०	मीन	उभा.१	११-३-२०
मिथुन	आर्द्रा २	२-१०-०	तुला	विशाखा २	६-२३-२०	मीन	उभा.२	११-६-४०
मिथुन	आर्द्रा ३	२-१३-२०	तुला	विशाखा ३	६-२६-४०	मीन	उभा.३	११-१०-०
मिथुन	आर्द्रा ४	२-१६-४०	वृश्चिक	विशाखा ४	७-०-०	मीन	उभा.४	११-१३-२०
मिथुन	पुनर्वसु १	२-२०-०	वृश्चिक	अनुराधा १	७-३-२०	मीन	रेवती १	११-१६-४०
मिथुन	पुनर्वसु २	२-२३-२०	वृश्चिक	अनुराधा २	७-६-४०	मीन	रेवती २	११-२०-००
मिथुन	पुनर्वसु ३	२-२६-४०	वृश्चिक	अनुराधा ३	७-१०-०	मीन	रेवती ३	११-२३-२०
कर्क	पुनर्वसु ४	३-०-०	वृश्चिक	अनुराधा ४	७-१३-२०	मीन	रेवती ४	११-२६-४०
कर्क	पुष्य १	३-३-२०	वृश्चिक	ज्येष्ठा १	७-१६-४०	मीन	चरणपर्यन्त	१२-०-००
कर्क	पुष्य २	३-६-४०	वृश्चिक	ज्येष्ठा २	७-२०-०			
कर्क	पुष्य ३	३-१०-०	वृश्चिक	ज्येष्ठा ३	७-२३-२०			
कर्क	पुष्य ४	३-१३-२०	वृश्चिक	ज्येष्ठा ४	७-२६-४०			
कर्क	आश्लेषा १	३-१६-४०	धनु	मूल १	८-०-०			
कर्क	आश्लेषा २	३-२०-०	धनु	मूल २	८-३-२०			
कर्क	आश्लेषा ३	३-२३-२०	धनु	मूल ३	८-६-४०			
कर्क	आश्लेषा ४	३-२६-४०	धनु	मूल ४	८-१०-०			
सिंह	मघा १	४-०-०	धनु	पूषा. १	८-१३-२०			
सिंह	मघा २	४-३-२०	धनु	पूषा. २	८-१६-४०			
सिंह	मघा ३	४-६-४०	धनु	पूषा. ३	८-२०-०			
सिंह	मघा ४	४-१०-०	धनु	पूषा. ४	८-२३-२०			

सूर्य तथा चन्द्रमादि ग्रह अश्विनी आदि २७ नक्षत्रों के कान्तिवृत्त का पूरा परिभ्रमण करने में अपनी अपनी गतिमापक से पृथक पृथक समय लेते हैं। क्रान्तिवृत्त का मानक ३६० अंश का होता है एवं ३६० अंश में २७ का भाग देने से प्रत्येक नक्षत्र का माध्यमिक मानक १३ अंश २० कला बनता है तथा प्रत्येक नक्षत्र के ४ चरण होने से प्रत्येक नक्षत्र के १ चरण का मानक (१३-२०) भागित ४ करने से प्रति एक चरण का मानक ३ अंश २० कला बनेगा। तथा ०-०-० से चरण मान प्रारंभ होकर अग्रिम ३ अंश २० कला क्रम से १-२-३-४ चरण का गतिक्रम चरितार्थ होता है।

❄ जीवन पथ-कार्य व्यवसाय ❄

● ग्रह जनित संरचना नियामक से शिक्षा-वृत्ति विबोधन ●

ग्रहजनित संरचना योगानुयोग दृष्टि सम्बंधी भाव वर्ग संज्ञा विशेष अनुसार ग्रहों के प्रभावोत्पादक कार्य विषय का चयन कर व्यक्ति अपना भावी कैरियर-कार्य व्यवसाय का निर्धारण करने में सक्षम बन पाता है और अपने अपने क्षेत्र में कार्य योजना निर्धारित कर जीवन यापन का मार्ग तय कर सकते हैं। इसमें दशम राज्य भावेश-दशमेश एवं दशम भाव पर ग्रहदृष्टि, दशम स्थान पर किन ग्रहों का अस्तित्व विशेषकर है, यह विचारणीय विषय है। दशम स्थान पाप ग्रह अवलोकित दुष्कर कार्य रचना से धनोपार्जन प्रदायक एवं शुभग्रह अवलोकित शुभ पुण्यद-सुखद कार्य से धनोपार्जन में योगदान प्रदान करता है। कई व्यक्ति अपने क्षेत्र में विपुल धन-सम्पदा प्राप्त करते यशस्वी बनते हैं तथापि विशेषकर इस यश सम्पदा से वंचित ही प्रतीत होते हैं। इस विषय हेतु दशम भाव-लाभेश-लग्नेश-पराक्रमेश-भाग्येश-धनेश की भाव स्थिति रचना पर गहनता से विश्लेषण कर विचार विमर्श करना योग्य समाधान सूचक सूत्र भी स्पष्ट है। इस सन्दर्भ प्रकरण में ग्रहजनित कार्य गुण धर्म व्यवसाय पर शास्त्रोक्त एवं स्वानुभवगत सुतथ्य निर्णयसागरीय पंचांग अनुरागियों हेतु प्रस्तुत है।

(१) ❄ **सूर्य** - पुलिस विभाग, आरक्षी नायक, गुप्तचर, अपराध नियंत्रण निदेशक, विविध खेल खिलाड़ी, सेना-विभिन्न पदों पर नायक, वकालात, औषध निर्माण, विशेष जीवनीय औषध रचना, चिकित्सक, चाय-बागान-चाय कॉफी उद्योग, उनी वस्त्र, स्वर्णकारी, फोटोग्राफर, ठेकेदारी, जंगलात कार्य, भू-खनिज कार्य-सर्वेक्षण, वनविभागीय कार्य, राजकीय सेवा-विशेष पदाधिकार, विज्ञान-अनुसंधान-शोध कार्य, पी.एच.डी., अंग्रेजी भाषा, अर्थशास्त्र, शिल्पशास्त्र, चिकित्साशास्त्र, भूगर्भशास्त्र, प्रशासनिक राज्य शासन पद, गवर्नर, मन्त्री, प्रेसिडेन्ट, उच्च अभियंता, निदेशक-शासक, इमारती लकड़ी, टिम्बर, फर्नीचर, बिजली कार्य-इलेक्ट्रॉनिक, जवाहरात कार्य, जल संवहन जहाज कार्य तथा लाल वस्तु ताम्बा धातु सुयोग प्रदायक।

(२) ❄ **चन्द्र** - सुलेखन, अभिनय-अभिनेता, कवि, साहित्यकार, फिल्म निर्माण, टी.वी. सीरियल कार्य, अनुसंधान सिंचाई विभाग कार्य, कृषि कार्य, मछली उद्योग, जौहरी, जल तरल कार्य पदार्थ, जलसेना विभाग, रंग रसायन, मादक पदार्थ-शराब उद्योग, शरबत, दूध, दही, डीजल-पेट्रोल, वाहन-चालक, होटल, रेस्टॉरेन्ट, नित्य उपयोगी खाद्य पदार्थ विक्रय-निर्माण, इत्र-सुगंधी कार्य, मिष्ठान्न कार्य, स्त्री उपयोगी सामान निर्माण, पशु-पालन, डेयरी फार्म, वनस्पतिशास्त्र, पदार्थ विज्ञान, मौसम विज्ञान, नर्स-कम्पाउण्डर, कागज, शकर, घी, मोती, चाँदी धातु सुयोग प्रदायक।

(३) ❄ **मंगल** - आलोचक, पत्रकार, संवाददाता, लेखक, गणितज्ञ, ईंजीनियर, वैद्य, डॉक्टर, शल्य-सर्जरी चिकित्सक, शौर्य-पुरूषार्थ कार्य, जादूगर, पुलिस अधिकारी-आरक्षी नायक, दार्शनिक, पत्रकार, फोटोग्राफी, बैकरी, अग्नि समीप कार्यकारक, बिजली वस्तु क्रय-विक्रय, भूगर्भ खनिज कार्य, भूमि भवन निर्माण-बिल्डर्स, किराया-सूद ब्याज कार्य, मांस विक्रय, आतिश वस्तु पटाखा निर्माण, कृषि कर्म, जमीन जायदाद क्रय-विक्रय, खेल खिलाड़ी-खेल वस्तु प्रसाधन निर्माण, होटल व्यवसाय तथा गणित-इतिहास-रसायन-इन्जीनियर-भूगर्भ खनिज-गृहशास्त्र-भूगोल।

(४) ❄ **बुध**-परिवहन संचार-यातायात आडिटर, पोस्ट विभाग, कोरियर सेवा, रिसर्च शोध-स्कालर, सम्पादन, रिपोर्टर, टाईपिस्ट, कम्प्यूटर सेवा, शेयर मार्केट कार्य, कमीशन एजेन्ट-दलाल, वकील, बैंक-बीमा, मनोविज्ञान, लेन-देन, धन सम्पदा विनियोजक, लेखाधिकारी, मुद्रक, क्लर्क, स्टेशनरी, राजदूत, एकाउन्टेन्ट, साहित्यकार, प्रोफेसर, प्राचार्य, अध्यापन-कोचिंग क्लासेस, आमोद-प्रमोद खेल सामान, प्रकाशन, पर्यटन-यातायात-ट्रेफिक-डिजाईनर, मैनेजमेन्ट-व्यवस्थापन-मैनेजर, नक्शा नवीस, तम्बाकु-घड़ी-टेलीविजन-ब्रोकरशिप-इंजीनियर आदि कार्यधारक।

(५) ❄ **गुरू** - उपदेशक, आचार्य, मठाधीश, महन्त, दार्शनिक, कथावान, अध्यापन, कोचिंग क्लास, वकील, न्यायाधीश, कानूनवेत्ता, न्यायालय विभागीय कार्य, राजनेता, नायक-लीडरशिप, राजनीतिज्ञ, समाजसेवक, धर्माचार्य-पुजारी, परिवहन-यातायात कार्य, रसायनवेत्ता, टेक्स सलाहकार, टैक्स विभागीय सेवाकार्य, औषध विज्ञाता एवं निर्माता सुवक्ता, लेन-देन-सूद-ब्याज-किराया आमद, राजदूत, एम.पी., एम.एल.ऐ., प्रशासकीय पद विशेष नायक, नीति निर्णायक, योजना प्रदायक, तथा आर्थिक वित्तनीति रीति व्यवहार समायोजक कार्य, स्वर्ण, फल आयात निर्यात, मोम, शहद, पीले रंग की वस्तु व्यवसाय सुयोग प्रदायक तथा शोध विषयक पी.एच.डी. उपाधि विभूषित होने का सुयोग भी बने।

(६) ❄ **शुक्र** - राजनीतिज्ञ, निदेशक, सेक्रेटरी, अभिनेता, सरपंच, पटवारी, प्रधान, चित्रकारी, दूरदर्शन, टी.वी. चलचित्र-सिनेमा, वीडियो फिल्म, फोटोग्राफी, न्यायाधीश, ठेकेदारी, स्वर संगीत शिक्षक, गायक, वाद्य यंत्र सामान निर्माता-विक्रेता, वस्त्र बुनकर कार्य, डिजाइनर, मुनीम, समाजसेवक, नाट्यकला, अभिनय, फिल्म निर्माण, इनकम टैक्स-सेल टैक्स वकील, पायलट, ड्राईवर, विविध वाहन चालक, कवि, सोना-चाँदी सर्राफी कार्य, विदेशी मुद्रा कार्य, रेडिमेड वस्त्र, वस्त्र व्यवसाय विशेषज्ञ, फल व्यापार, शेयर मार्केट कार्य, सुगंध श्रृंगार वस्तु कार्य-विक्रय एवं निर्माण-फैन्सी प्रसाधन-दूरसंचार सेवा-मोबाईल सर्विस आदि कार्य धारक बनते हैं।

(७) ❄ **शनि** - भाषाविद्, दुभाषिया कार्य, लेखन, समाजसेवा, गाईड, निर्माता, बिल्डर्स, भू-खनिज सम्पदा कार्य, राजदूत, केशियर, निदेशक, वकील, रोड निर्माण कार्य, ठेकेदारी, पब्लिक सर्विस कार्य, श्रम विभाग कार्य, जमीन लेनदेन, कृषि यंत्र निर्माण तथा विक्रय, लोहा-वेल्डिंग कार्य, विविध यंत्र, मशीनरी, रेल्वे ठेकेदारी, सप्लायर, मेकेनिकल ईंजीनियर, विद्युत विभाग सेवा, बिजली सामान, पम्प-मोटर-गैस कार्य, मुद्रण कला, भवन निर्माण, स्वतंत्र एवं शासकीय ठेकेदारी, श्रमिक नेता आदि कार्य श्रीकार तथा चर्म उद्योग, मुर्गीपालन, पोलेट्री फार्म, उन, हाथी दांत कार्य, लोहा, कोयला, पेट्रोल-डीजल-चमड़ा, गैस-ईंधन, सीमेन्ट, लोहा-सरिया तथा रिफायनरी, नर्सरी, टेलरिंग, हाथकरघा-वीविंग बुनाई-वस्त्र मिल विषयक कार्य व्यवसाय भी धारक श्रीकार बनते हैं।

(८) ❄ **राहु-केतु** - छाया ग्रहों का प्रभाव भी जातक की जीवन शैली कार्य रचना-उद्योग व्यवसाय पर प्रभावी बनता है। इनके मूल प्रभाव अनुसार विमान सेवा, विद्युत, मोबाईल, टेलीफोन, दूरसंचार, शोध-गवेषणा कार्य, प्राणरक्षक विशेष औषध निर्माण करना बनता है। यह राजनीतिज्ञ-राजनेता बनाने में भी क्षमता रखता है। विषय निर्धारण चयन में उपर बताए गए ग्रहों का दशमेश से सम्बंध व अन्य भाव स्वामियों से सम्बंध आदि का विचार करके निर्णय लेना योग्य रहता है तथा सर्जरी-मंत्र-कूटनीति-गुप्त अंगशास्त्र-रतिशास्त्र-कॉमर्स-शिल्प-सर्जरी आदि कार्य व्यवसाय भी धारक रहते हैं। राहु-केतु भी जिस ग्रह भाव से सम्बंधशील बने उसका भी प्रभाव स्पष्ट बन पाता है।

❄ पदोन्नति पक्ष सुयोग ❄

शासकीय सेवालीन प्रति व्यक्ति की यह मनोकामना होती है कि वह पदोन्नति प्राप्त करे और मानद जीवन स्तर प्राप्त करते मान प्रतिष्ठा में अभिवृद्धि लेवें। ज्योतिष फलित नियामक अनुसार यदि जन्मपत्रिका में शुभ एवं प्रभावी ग्रह दशम स्थान भाव एवं दशमेश अथवा सूर्य से सम्बंध स्थापित करें तो वे शुभ प्रभावी ग्रह जातक के लिये अपनी दशा-अन्तरदशा में उन्नतिकारक सिद्ध होते हैं। एवमेव इसी विषयक भाव प्रतिफल स्पष्टता यह भी कि - ● दशमेश स्वगृही, उच्च आदि बली स्थिति में केन्द्र या त्रिकोण भाव में स्थित होवें। ● दशमेश अन्य सुयोग प्रदायक ग्रह के साथ अनुकूल स्थिति में निर्दोष रूप में स्थित होवें। ● लग्नेश-लग्नपति दशम भाव अथवा दशमेश के साथ स्वगृही हो या उच्च राशि का होवे। ● स्वराशि-उच्चराशि में स्थित सूर्य भी पदोन्नति प्रदायक अपनी दशा-अन्तरदशा में पदोन्नति प्रदान करता है। ● भाग्येश दशमेश की युति अथवा अपनी मित्र-उच्च-स्वराशि की रचना स्थिति दशा अन्तरदशा में उन्नति प्रदायक। ● जन्म पत्रिका में दशम भाव अथवा दशमेश से लग्नेश युति करता हो अथवा ५-९ भाव में स्थित हो तो गोचर में लग्नेश के दशम भाव अथवा दशमेश से त्रिकोण भाव में जाने पर अनुकूल उन्नति योग बनें। ● गुरू दशम भाव अथवा दशमेश से युति या त्रिकोण ५-९ भाव में सम्बंध स्थापित करता हो तथा बली वर्ग का हो तो गोचर में त्रिकोण स्थिति बनने पर भी पदोन्नति योग।

जन्मनक्षत्र फलश्रुति

हमारी पृथ्वी से नक्षत्र और चन्द्र का समीपस्थ होना गणितागत नियामक से स्पष्ट ही है। अतएव अन्य ग्रहजनित रश्मि प्रसारण के प्रभाव-प्रतिफल की अपेक्षा नक्षत्रनायक-अधिपति शशिराज-चन्द्रमा की विगणना शुभाऽशुभ अनुसंधान की प्रक्रिया आगकाल से ही सुप्रचलित है। एवमेव जन्म नक्षत्र का फलाशय जन्म के साथ ही देखा जाता है। जन्म नक्षत्र अनुसार व्यक्तित्व-वर्ण-स्वभाव-प्रकृति-व्यवहार कृतित्व आदि की रचना बन पाती है। यथा स्वाति नक्षत्र सूर्य रहते प्रवर्षण-वर्षा की बूंद मात्र सीप में प्रविष्ट होते मोती का रूप धारण तथा चित्रा-हस्त नक्षत्र के सूर्य किरणों में कृमि-कीटाणुओं का विनाश करने की क्षमता बनना आदि प्रतिफल प्रत्यक्ष अनुभव में आता है। इसी समाधान सूत्र से जन्म नक्षत्र फलाशय का सार्थक स्वरूप निर्णयसागीय पंचांग अनुरागियों हेतु प्रस्तुत।

(१) ❁ **अश्विनी** - देह आकृति से सुखद वर्ण प्रतिभा सामान्य ठीक, अपने कार्य संचालन में सुदक्ष, विलासी, धन सम्पदायुक्त, कलाप्रिय, दिशा-योजना निर्देशक, तकनीकी विषय ज्ञाता, मनोवैज्ञानिक, देश-विदेश यात्रा रूचि, अवसरवादी, व्यावसायिक गति मति।

(२) ❁ **भरणी** - सामान्य वर्ण, लोभी, स्वकार्य संचालन दक्षता, स्वार्थी, चतुर, अति उत्साही, अन्वेषक, ज्ञानसम्पन्न, प्रशासनिक क्षमता, समाजसेवी, अभिनेता, कलाप्रिय, कूटनीतिज्ञ, यशस्वी।

(३) ❁ **कृतिका** - स्वाभिमानी, प्रख्यात, तेजस्वी, वाचाल, विलासप्रिय, कला विषय विज्ञाता, दम्भी, परस्त्री आसक्त, भोगी, व्यवहार प्रिय, परिश्रमी, नेतृत्वक्षमता, साधन सम्पन्न, कर्मठ, न्याय प्रिय, कल्पनाशील, पर्यटन प्रवास में अभिरूचि।

(४) ❁ **रोहिणी** - मर्यादाशील, श्रीमन्त, अपने धन का संग्रही-परद्रव्य त्यागी, सौन्दर्यप्रेमी, विलासी, कामुक, मधुरभाषी, स्पष्टवक्ता, मध्यम कद-काठी, विवादी, ईर्ष्यालु, तथापि समाज सुधारक, गुण सम्पन्न, सेवाभावी।

(५) ❁ **मृगशिरा** - देह आकृति से ठीक, मनसा असन्तुष्ट, समाजप्रिय, अपने कार्य में सुदक्ष, चपल-चंचल, न्याय प्रदाता, संगीतप्रेमी, अभिनेता, सफल व्यवसायी, अन्वेषक, अल्पव्यवहारी, परोपकारी, नेतृत्व क्षमताशील

(६) ❁ **आर्द्रा** - वृथाभाषी, स्वाभिमानी, देहस्वरूप से ठीक, कल्पनाप्रिय, सद्गुणी, संघर्षशील, सिद्धान्तकारी, मनसा उदार, धनिक, प्रगतिशील, अनियमित दिनचर्या, विलासी-विकारी, असन्तोषी, वंशानुगत प्राप्त सम्पदा उपभोक्ता।

(७) ❁ **पुनर्वसु** - नीतिशील, गायक, संगीतप्रेमी, सतोगुणी, मादक उपभोक्ता, शान्त प्रवृत्ति, भोगी, व्यसनी, योजना निर्माता, दिशानिदेशक, भावुक मनोवृत्ति, आत्मविश्वासी, निष्ठाशील, शरीर वर्ण प्रतिभा से सामान्य योगद।

(८) ❁ **पुष्य** - ज्ञानी-विवेकशील, जितेन्द्रिय, धनवान, धर्मपरिपालक, सर्वप्रिय, गुणी, शान्त, तथापि चपल-अस्थिर स्वभाव, परिश्रमी, स्वकार्य में दक्ष, दूरदर्शी, अन्वेषक, न्याय प्रदाता, विलासी, धनसम्पदा, सांसारिक सुख उपभोक्ता।

(९) ❁ **आश्लेषा** - निन्दक, बहुभाषी, संचयी, चालाक, उच्च आकांक्षाशील, स्वाभिमानी, दृढ निश्चयी, संघर्षशील, धनोपासक, शरीर वर्ण से सामान्य, राजनीति-सामाज में गतिशील नायक मनोवृत्ति विशेष।

(१०) ❁ **मघा** - उत्साही, चपल, चंचल, भौतिक सुख भावना, समाज-देश के प्रति निष्ठाशील, गुप्तप्रेमी, स्त्रीद्वेषी, स्वतंत्र कार्य व्यवसाय में गतिमान सुदृढ शरीर, अस्थिर स्वभाव, अल्पमित्रता वाले, भौतिक सुख उपभोक्ता, उन्नत महत्वाकांक्षी।

(११) ❁ **पूर्वाफाल्गुनी** - प्रवास पर्यटनशील, मधुरभाषी, सेवाभावी, स्वाभिमानी, हठी, स्वर संगीत कला विद्या प्रेमी, योजना निर्माता, निदेशक, नायक, संघर्षशील, स्वार्थसाधक, नेतृत्वशक्तियुक्त, गोधूम वर्ण, विलक्षण प्रतिभा एवं धनी मानी।

(१२) ❁ **उत्तराफाल्गुनी** - ज्ञान विवेक प्रतिभाशील, उदारवादी, विद्यावान, जनसमाज-राष्ट्रप्रेमी, संस्कारित, शिक्षाविद्, लोक उपकारी, भावुक, सामान्य वर्ण-कद, अल्प परिवार एवं अल्पभाषी, सुलेखक, गुप्तप्रेमी, धन सम्पदा प्रतिभाशील।

(१३) ❁ **हस्त**-अपने कार्य में सुदक्ष, परद्रव्य हरण मनोवृत्ति, व्यसनप्रिय, स्पष्टवादी, समाजसेवी, विचारवान, कलावान, शिक्षाविद्, मार्गदर्शक, अल्पकामी, गोधूमवर्ण, उन्नत शरीर, मान सम्मान के अनुरागी तथा संघर्षशील मनोवृत्ति बनें।

(१४) ❁ **चित्रा** - विषय वासनाभोगी, सौन्दर्य अभिलाषी, उत्तम नेत्र, शरीर कद सामान्य, संशयी स्वभाव, वैज्ञानिक-आविष्कारक, समाजसेवी, प्रदर्शन रहित जीवन, कोमल हृदय, परिधान वेशभूषा के प्रेमी, धन सम्पदा सामान्य तथापि रहन सहन ठीक बनें।

(१५) ❁ **स्वाति** - अपने कार्य में सुदक्ष, कमीशन एजेन्ट, धन लेन-देन, आर्थिक व्यवसाय में चतुर, मधुरभाषी, दयालु, नीतिमान, धर्माभिमानी, उद्योगकार्य संचालन में अभिरूचि, सौन्दर्य श्रृंगार प्रेमी, लोकप्रसिद्ध, समाजसेवी, उत्साही।

(१६) ❁ **विशाखा** - स्वार्थशील, प्रलोभी, कलहप्रिय, स्वतंत्र विचारक, सिद्धान्तवादी, अन्वेषक, वैज्ञानिक, दृढ निश्चय मनोवृत्ति, आलोचक, कलाकार, समीक्षक, तर्क-वितर्क, संघर्षप्रेमी, सामान्य धनसम्पदाशील एवं धुन मिजाज के प्रवृत्ति वाले।

(१७) ❁ **अनुराधा** - प्रवासी पर्यटनशील प्रकृति, धन सम्पदाशील, परिधान आभूषण एवं परिवेश प्रिय, सौम्य व्यक्तित्व, शरीर वर्ण प्रतिभायुक्त, कोमल, अपने कार्य में सुदक्ष, आस्थावान, प्रकृति प्रेमी, स्वतंत्र कार्य उद्योग संचालक, व्यवहार कुशल, लोकनायक।

(१८) ❁ **ज्येष्ठा** - स्वतंत्र विचारक, कुपित-आवेश प्रकृति, अल्प व्यवहारी, संघर्षशील, वाद प्रतिवाद में निपुण, संकल्पवान एवं स्वाभिमानी मनोवृत्ति, मध्यम शरीर वर्ण प्रतिभा, सामान्य धनसम्पदा, क्रांतिकारी, कठोर परिश्रमी, अन्वेषक मनोत्साही, तथा माता-बन्धु आदि से व्यवहार न्यूनता

(१९) ❁ **मूल** - यशस्वी, समाजसेवी, कला विज्ञान विज्ञाता, राजनेता, नेतृत्व शक्ति, संकल्पशील, शरीर मध्यम सशक्त देह, कर्मठ, उत्तम विचारक, कामुक, विलासप्रिय, धनसम्पदाशील, साहसी, व्यवहार कुशल, मानव धर्मउपासक, समाजसेवी।

(२०) ❁ **पूर्वाषाढा** - महिला प्रेमी, विद्वान, वाचाल, साहसी, संघर्षशील, दृढ निश्चयी, गुप्तप्रेमी, नीति निर्माता, कूटनीतिज्ञ, स्वकार्यकुशल, सम्पादक, धैर्यवान, भाग्यवादी, सन्तोषी, शरीर वर्ण प्रतिभा सहित, व्यक्तित्व विधायक बन पाते हैं।

(२१) ❁ **उत्तराषाढ** - व्यवहार कुशल, अभिनेता, जनसमाज-राजनीति में गतिशील, मानवधर्मप्रेमी, अवसरवादी, यात्रा प्रवास-पर्यटनशील, स्वभाव से हठी, ज्ञान-विज्ञान विज्ञाता, चतुर, वाक्पटु, मान-सम्मान इच्छुक, राजकाज में अभिरूचिशील।

(२२) ❁ **श्रवण** - शरीर वर्ण प्रतिभा सम्पन्न, आकर्षक प्रारूप, सद्विचारक, नीतिशील, दिशानिदेशक, अभिनेता, कलाप्रिय, यशस्वी, उदार, जन समाज एवं देशप्रेमी, प्रगतिशील, सेवाभावी, सर्वप्रिय, परिश्रमी-संघर्षरत, महत्वाकांक्षी, नेतृत्व क्षमता।

(२३) ❁ **धनिष्ठा** - असंतोषी, हठी, संघर्षशील, स्वाभिमानी, स्पष्टवादी, उच्च विचारक, मनस्वी, वाचाल, चपल, स्थूल तथा मध्यम शरीर कद, नेतृत्व क्षमता, यात्रा प्रवास, पर्यटनप्रेमी, सामान्य धनसम्पदा, व्यय खर्च आसक्त, संगीतप्रेमी।

(२४) ❁ **शतभिषा** - कामवासना, भोगविलास आसक्त, यशस्वी, व्यवहार कुशल, वयोवृद्धसेवी, नीति निर्माता, दिशा निदेशक, ज्ञानी, मानी, गुणग्राही, संघर्षशील, परोपकारी, गुप्तप्रेमी, लेखक, उत्साही, विचारक, एकान्तप्रिय, विषय विज्ञाता, धनसम्पदाशील।

(२५) ❁ **पूर्वाभाद्रपद** - स्पष्टवादी, अल्पव्यवहारी, असंतुष्ट, नियम नियामक विज्ञाता, कृपण, धनसम्पदाशील, अपने कार्य में सुदक्ष, श्रम साधनाशील, भावुक, कोमल विचारक, सौम्य प्रकृति, वासनाभोगी, चिन्तक, भयभीत, आतुर मनोवृत्ति

(२६) ❁ **उत्तराभाद्रपद** - लोकप्रिय, आयोजक-समायोजक, ज्ञान-विज्ञान कलाप्रेमी, विचारक, मधुरवक्ता, स्वाभिमानी, बुद्धिमान, कलाकार, लेखक, व्यवसाय निपुण, प्रकृति प्रेमी, सन्तुलित भाषी, तथापि विवादग्रस्त, संग्राहक मनोवृत्तिशील।

(२७) ❁ **रेवती** - शरीर देह आकृति से प्रतिभाशील, सुधारवादी, जनसमाज एवं देशप्रेमी, अपने कार्य में चतुर, नीति निर्माता, दिशा निदेशक, स्वार्थशील मनोवृत्ति, विवादग्रस्त, तथापि लोकप्रिय, अन्वेषक, अनुसंधानशील गतिमति, योग्य विचारक, सामाजिक नेतृत्व क्षमता प्रदायक।

द्वादशजन्मलग्नफलश्रुतिः तथा च द्वादशजन्मराशिफलाशयश्रुतिः भावीफलसूत्रम्

१ मेषलग्ने समुत्पन्नश्चण्डो मानी सकोपकः ।
सुधीः स्वजनहन्ता च विक्रमी पर वत्सलः ॥
मेष लग्न वाले जीव स्पष्टवादी, अभिमानी, कुपित परन्तु गुणवान, निज पराक्रम से यशस्वी, परिवार वालों से पृथक तथा अन्य जीवों का प्रेमी, धन सम्पदायुक्त तथा गुणग्राही रहता है।

२ वृषलग्नोभवो बाल्ये गुरूभक्तः प्रियंवदः ।
गुणीकृती धनी लुब्धः शूरः सर्वजनप्रियः ॥
वृषभ लग्न वाले जीव मानव धर्म आस्थाशील गुणी जीवों का प्रेमी, प्रियवादी गुणशील, बुद्धिमान, धनवान, लोभी, पराक्रमी तथा जनसमाज का स्नेहभाजन एवं स्वकार्य कुशल होता है।

३ मिथुनोदयसंजातो मानी स्वजनवल्लभः ।
त्यागीभोगी धनीकामी दीर्घसूत्रोऽरिममर्दकः ॥
मिथुनलग्न वाले जीव मानी, बन्धुजनों का प्रेमी दानी-भोगी, शान्त गति से क्रियाशील, शत्रुहन्ता तथा वाहन सुख मित्र युक्त, उच्च जीवों के समीप, सहवासशील, नीतिमान् चतुर तथा बहुत सम्पर्क वाले होते हैं।

४ कर्कलग्ने समुत्पन्नो भोगी धर्मजनप्रियः ।
मिष्ठान्नपानसंयुक्तः सुभगः सुजनप्रियः ॥
कर्क लग्न वाला जीव भोगी, मानव धर्म उपासक मिष्ठान प्रेमी, धन-सम्पदाक ऐश्वर्य से सम्पन्न, उदार मनोवृत्ति, जलप्रिय, विनम्र परन्तु चपल बुद्धि, तत्वग्राही मनोवृत्तिशील होवे।

५ सिंहलग्नोदये जातो भोगी शत्रुविमर्दकः ।
स्वल्पोदरोऽल्पपुत्रश्च सोत्साही रण विक्रमी ॥
सिंह लग्न वाला जीव संसार भोगी, शत्रुनाशक, अल्पाहारी, परिवार नियोजक, पराक्रमशील, कर्मवादी साथ ही स्वाभिमानी प्रकृति विशेष रहे।

६ कन्यालग्नभवो बालो नानाशास्त्र विशारदः ।
सौभाग्यगुण सम्पन्नः सुन्दरः सुरतप्रियः ॥
कन्या लग्न वाला जीव विविध कला में प्रवीण, रूचिशील, कल्याण-शान्ति-विधायक, सौन्दर्य अभिलाषी, साफ-स्वच्छता का प्रेमी, नित्य लक्ष्मीयुत तथा कामी वासना प्रधानमति एवं विषय ज्ञानी एवं समलिंगिक रूचिशील होते हैं।

७ तुलालग्नोदये जातः सुधीः सत्कर्म जीविकः ।
विद्वान सर्वकलाभिज्ञो धनाढ्यो जनपूजितः ॥
तुला लग्न वाला जीव ज्ञानशील, विवेकी, सतकार्ययुक्त, मान-सम्मान वाला, धनसम्पदाशील अनेक कलाओं द्वारा जीवनयापन वाला, जनसमाज में पूज्य वाणिज्य कार्य में कुशल रहे।

८ वृंश्चिकोदयसंजातः शौर्यवानतिदुष्टधीः ।
विज्ञान ज्ञान सम्पन्न सुखीसुविग्रहः सुधीः ॥
वृश्चिक लग्न वाला जीव पराक्रम शक्तिशील, प्रपंचकर्ता, चतुर, स्वार्थी, वाद-विवाद में प्रवीण, विचारशील, वंश में प्रधान, हठवादी, साथ ही ज्ञान दम्भशील रहे।

९ धनुर्लग्नोदये जातौ नीतिमान् धर्मवान्, सुधीः ।
कुलमध्ये प्रधानश्च प्राज्ञः सर्वस्य पोषकः ॥
धनुलग्न वाला जीव धर्मिष्ठ, कुल वंश में प्रधान, सभी का परिपालक, सुन्दर, ज्ञानी, दृढ संकल्प वाला, राजसेवा कार्य तथा नीतिरीति निपुण रहे। विविध कला का परिज्ञाता, सतोगुणी, सुखद स्वभावयुक्त रहे।

१० मकरोदयसंजातो नीचकर्मा बहुप्रजः ।
लुब्धोऽलसो विनष्टश्च स्वकार्येषु कृतोद्यमः ॥
मकर लग्न वाला जीव लोभी, नीचकार्य में लीन, बहु उद्देश्य वाला तथा आलस्यमय, अपने कार्य में दक्ष, हठवादी, संहारक, स्वार्थ तत्व प्रधान रहे।

११ कुंभलग्ने नरे जातोऽचलचित्तोऽति सौहृदः ।
परदाररतो नित्यं मृदुकार्ये महासुखी ॥
कुम्भ लग्नवाला जीव धीर गंभीर, स्थिर मतिशील, स्पष्टवादी, कामवासना में मनोवृत्ति, भौतिकवादी, सुखभोक्ता, मित्रप्रेमी, आडम्बरशील रहे।

१२ मीनलग्नोदये जातो रत्नकांचनपूरितः ।
अल्पकामः कृशांगश्च दीर्घकालविचिन्तकः ॥
मीनलग्न वाला जीव धन-सम्पदायुक्त, अल्पकामी, चिन्तनशील-विचारक, स्वार्थ साधक, चतुर, शरीर प्रारूप सौन्दर्य सहित तथा अनेक कलाओं से जन जीवन युक्त एवं जीवनीय स्तर मानद् वर्ग का बनें।

* जन्मराशि फल स्पष्टता *

मेष - चपल नेत्र, विकारयुक्त, सिद्धान्तशील, गुणग्राही, मानद, उच्चाऽभिलाषी, नारी उत्थान प्रिय, उदार, जलाघाती, उद्यमी, सहज कुपित-सहज शांत, राजसेवी, अल्पभोजी, मानव सेवावादी, स्पष्टवादी।

वृषभ - पवित्र मानस, भोगी, दानी, मित्र मण्डलयुक्त, विलासी, चतुर, दम्भी, सभादक्ष, स्त्रीप्रिय, परोपकारी, धन सम्पदायुक्त, सत्यभाषी, स्वास्थ्य प्रिय, अल्प सन्तोषी, परिवार वल्लभ, प्रवीण

मिथुन - मधुर, भाषी, चपल नैत्र, दयावान, गायक, रतिप्रेमी, धनवान गुणवान, यथार्थवादी, अधिक भाषी, दृढ संकल्पशील, न्यायप्रिय, यशमान युक्त, गुणी कलाविद्, दृढ मैत्रीकारक चतुर।

कर्क - कर्मशील, धनवान, बलवान, मनोविकारी, हठवादी, कुटिल वृत्ति, कुपित, मानवतावादी, दुःखभोगी, मित्रप्रिय, शिरपीड़ित गुणवान, देश-विदेश प्रवासी, वस्तु संग्राहक गति-मति शील-चपल।

सिंह - क्षमावान, व्यसनी, विविध क्रियारत, यात्राप्रवास प्रिय, शीत भय, सहज कुपित, मित्रशील, परिवार प्रिय, उच्चाऽभिलाषी, शत्रुहन्ता, धनसम्पदायुक्त, विविधकला ज्ञाता।

कन्या - स्त्री विकार, प्रवास प्रिय, संगीत अभिरूचि, मानवतावादी, कलाकार, वृद्धवत् आचरणयुक्त, दयावान, सज्जनों का प्रेमी, परिवार प्रिय, उच्चाऽभिलाषी, धन सम्पदायुक्त मधुर भाषी।

तुला - कुपित, मनोविकार, बोलचाल में निपुण, चंचल, चपल नैत्र, सम-विषम स्थिति का उपभोक्ता, व्यापार दक्ष, बहु मित्रमंडलयुक्त, प्रवास प्रिय, क्रय-विक्रय निपुण, दयावान, वस्तु संग्राहक कलाविद् साहित्यप्रेमी।

वृश्चिक - देश-विदेश प्रवासरत, कुटिल, शक्तिशील, कामवासनारत, परिवार अनासक्त स्वार्थ तत्वी, अनैतिक कार्य क्रियारत, साहसी कुपित, द्वेषी, मित्रद्रोही, श्रमसाध्य लाभ आमद वाला, मातृसुख न्यून तथा दंशक मति।

धनु - बलवान, हठवादी, चतुर स्वार्थ परायण, विविधकला ज्ञाता, अभिमानी, स्त्री सुखदा, सेवाभावी, मधुर भाषी, भाग्यवान एवं गुण कला संग्राहक।

मकर - श्रमजीवी, स्त्रीआसक्त, सेवावादी, बहु परिवारी, धनवान, कलाविद्, सत्यभाषी, गंभीर मनोवृत्ति तथा विकारयुक्त, दोषाऽरोपक, राजसेवी।

कुम्भ - परोपकारी, चतुर, वस्तु संग्राहक, धन सम्पदाशील, कलाप्रिय, सुखद नैत्र, सरल स्वभाव, धनविद्या हेतु उद्यमशील, संगीतप्रिय।

मीन - शुभ आचरण, परिवार वल्लभ, संगीत प्रेमी, सेवाभावी, ज्ञानी, मितव्ययी, बोलचाल में दक्ष, विविध मार्ग से लाभद। स्पष्टवादी मानद जीव, कलाप्रिय, तथा जीवनीय स्तर सुखद।

निर्णयसागर पंचांग कार्यालय, मु.पो. नीमच (म.प्र.)

* जन्म राशि फलाशय *

**मेषे दीनो वृषेमानी पटुबुद्धिश्च मन्मथे ।
क्रूरः कर्के धृतिः सिंहे कन्यायां बहुमायिताः ॥
जूके स्त्रीत्वमलौ मानी चापे पापाशयोनरः ।
मुखरो मकरे कुम्भे चतुरः स्थिरधीर्झषे ॥**

संक्षेप में राशिफल लक्षणसूत्र यह कि - मेष - दीनवृत्ति, **वृषभ**-अभिमानी, **मिथुन-प्रवीण**, **कर्क**-हठवादी, **सिंह**-धैर्यशील, **कन्या**-मायाशील, **तुला**-चतुर स्त्री स्वभावी, **वृश्चिक**-दम्भी, **धनु**-मायावी, **मकर**-अतिभाषी, **कुम्भ**-चतुर दक्ष, **मीन**-गम्भीर कलावन्त।

चन्द्रदोष शान्ति विधि

चन्द्रमा के अशुभ स्थिति में रहते तथा आवश्यकता विशेष में शुभफलद रचना निर्माण समाधान - परिहार हेतु शास्त्रकारों द्वारा ये शास्त्रीय वचन प्रस्तुत हैं। **शंखं दद्याद् द्विजातिभ्यो हिमांशौ विफले सति । शंखाऽभावे महत्स्वच्छं तण्डुलं वा नवं दधि ॥** भावार्थ यह कि शंख अथवा उत्तम परिपूर्ण अक्षत्-चाँवल अथवा ताजा मीठा उत्तम दही का अनुदान परिहार विधायक है।

जन्म नक्षत्रानुसार - राशि - राशि स्वामी - वर्णवश्यादि - योनीगणनाड़ी - युंजा - हंसक - विविध विबोधक सूत्र

नक्षत्र	चरणाक्षर	राशि	स्वामी	वर्ण	वश्य	योनि	गण	नाड़ी	युंजा	हंसक तत्व	नक्षत्र पति	पु.स्त्री	सू.चं.	मण्डल	नक्षत्र संज्ञा	सप्तनाड़ी	लोचन
अश्विनी भरणी कृतिका	चू चे चो ला ली लू ले लो अ ० ० ०	मेष	मंगल	क्षत्रिय	चतुष्पद	अश्व गज मेष	देव नर राक्षस	आदि मध्य अन्त्य	पूर्व पूर्व पूर्व	अग्नि	अश्विनीकुमार यमराज अग्नि	पुरूष पुरूष पुरूष	चन्द्र चन्द्र चन्द्र	वायु अग्नि अग्नि	क्षिप्र लघु उग्र क्रूर मिश्र साधा	वायु चण्डा चण्डा	मन्द मध्य सुलोचन
कृतिका रोहिणी मृगशिरा	० इ उ ए ओ वा वी वु वे वो ० ०	वृषभ	शुक्र	वैश्य	चतुष्पद	मेष सर्प सर्प	राक्षस नर देव	अन्त्य अन्त्य मध्य	पूर्व पूर्व पूर्व	भूमि	अग्नि ब्रह्मा चन्द्रमा	पुरूष पुरूष पुरूष	चन्द्र सूर्य सूर्य	अग्नि महेन्द्र वायु	मिश्र साधा ध्रूव स्थिर मृदु मैत्र	चण्डा वायु दहना	सुलोचन अन्ध मन्द
मृगशिरा आर्द्रा पुनर्वसु	० ० क की कृ घ ङ छ के को ह ०	मिथुन	बुध	शूद्र	द्विपद नर	सर्प श्वान मार्जा	देव नर देव	मध्य आदि आदि	पूर्व मध्य मध्य	वायु	चन्द्रमा रूद्र शिव अदिति	पुरूष स्त्री स्त्री	सूर्य चन्द्र चन्द्र	वायु वरूण वायु	मृदु मैत्र तीक्ष्ण दारू चर चल	दहना सौम्य नीर	मन्द मध्य सुलोचन
पुनर्वसु पुष्य आश्लेषा	० ० ० ही हु हे हो डा डी डू डे डो	कर्क	चन्द्र	विप्र	जलचर	मार्जा मेष मार्जा	देव देव राक्षस	आदि मध्य अन्त्य	मध्य मध्य मध्य	जल	अदिति बृहस्पति सर्पदेव	स्त्री स्त्री स्त्री	चन्द्र चन्द्र चन्द्र	वायु अग्नि वरूण	चर चल क्षिप्र लघु तीक्ष्ण दारू	नीर जल अमृता	सुलोचन अन्ध मन्द
मघा पूर्वाफाल्गुनी उत्तराफाल्गुनी	मा मी मू मे मो टा टी टू टे ० ० ०	सिंह	सूर्य	क्षत्रिय	वनचर चतुष्पद	मूषक मूषक गौ	राक्षस नर नर	अन्त्य मध्य आदि	मध्य मध्य मध्य	अग्नि	पितर भग-सूर्य अर्यमा-सूर्य	स्त्री स्त्री स्त्री	चन्द्र सूर्य सूर्य	अग्नि अग्नि वायु	उग्र क्रूर उग्र क्रूर ध्रूव स्थिर	अमृता जल नीर	मध्य सुलोचन अन्ध
उत्तराफाल्गुनी हस्त चित्रा	० टो प पी पू ष ण ठ पे पो ० ०	कन्या	बुध	वैश्य	द्विपद नर	गौ महिष व्याघ्र	नर देव राक्षस	आदि आदि मध्य	मध्य मध्य मध्य	भूमि	अर्यमा-सूर्य सूर्यदेव विश्वकर्मा	स्त्री स्त्री स्त्री	सूर्य सूर्य सूर्य	वायु वायु वायु	ध्रूव स्थिर क्षिप्र लघु मृदु मैत्र	नीर सौम्य दहना	अन्ध मन्द मध्य
चित्रा स्वाति विशाखा	० ० रा री रू रे रो ता ती तू ते ०	तुला	शुक्र	शूद्र	द्विपद नर	व्याघ्र महिष व्याघ्र	राक्षस देव राक्षस	मध्य अन्त्य अन्त्य	मध्य मध्य मध्य	वायु	विश्वकर्मा वायुदेव इन्द्र अग्नि	स्त्री स्त्री नपुंसक	सूर्य सूर्य सूर्य	वायु वायु अग्नि	मृदु मैत्र चर चल मिश्र साधा	दहना वायु चण्डा	मध्य सुलोचन मध्य
विशाखा अनुराधा ज्येष्ठा	० ० ० तो ना नी नू ने नो या यी यू	वृश्चिक	मंगल	विप्र	कीट	व्याघ्र मृग मृग	राक्षस देव राक्षस	अन्त्य मध्य आदि	मध्य मध्य अन्त्य	जल	इन्द्र अग्नि मित्र सूर्य इन्द्र	नपुंसक नपुंसक नपुंसक	सूर्य सूर्य सूर्य	अग्नि महेन्द्र महेन्द्र	मिश्र साधा मृदु मैत्र तीक्ष्ण दारू	चण्डा चण्डा वायु	अन्ध मन्द मध्य
मूल पूर्वाषाढ उत्तराषाढ	ये यो भ भी भू ध फ ढ भे ० ० ०	धनु	गुरू	क्षत्रिय	द्विपद नर	श्वान वानर नकुल	राक्षस नर नर	आदि मध्य अन्त्य	अन्त्य अन्त्य अन्त्य	अग्नि	राक्षस जल विश्वदेव	पुरूष पुरूष पुरूष	सूर्य चन्द्र चन्द्र	वरूण वरूण महेन्द्र	तीक्ष दारू उग्र क्रूर ध्रुव स्थिर	दहना सौम्य नीर	सुलोचन अन्ध मन्द
उत्तराषाढ श्रवण घनिष्ठा	० भो ज जी खी खू खे खो गा गी ० ०	मकर	शनि	वैश्य	जलचर	नकुल वानर सिंह	नर देव राक्षस	अन्त्य अन्त्य मध्य	अन्त्य अन्त्य अन्त्य	भूमि	विश्वदेव विष्णु अष्टवसु	पुरूष पुरूष पुरूष	चन्द्र चन्द्र चन्द्र	महेन्द्र महेन्द्र महेन्द्र	ध्रुव स्थिर चर चल चर चल	नीर अमृता अमृता	मन्द सुलोचन अन्ध
घनिष्ठा शतभिषा पूर्वाभाद्रपद	० ० गू गे गो सा सी सू से सो द ०	कुंभ	शनि	शूद्र	द्विपद नर	सिंह अश्व सिंह	राक्षस राक्षस नर	मध्य आदि आदि	अन्त्य अन्त्य अन्त्य	वायु	अष्टवसु वरूण अजपाद-सूर्य	पुरूष पुरूष पुरूष	चन्द्र सूर्य सूर्य	महेन्द्र वरूण अग्नि	चर चल चर चल उग्र क्रूर	अमृता जल नीर	अन्ध मन्द मध्य
पूर्वाभाद्रपद उत्तराभाद्रपद रेवती	० ० ० दी दू थ झ ञ दे दो चा ची	मीन	गुरू	विप्र	जलचर	सिंह गौ गज	नर नर देव	आदि मध्य अन्त्य	अन्त्य अन्त्य पूर्व	जल	अजपाद-सूर्य अहिर्बुध्न्य-सूर्य पूषण-सूर्य	पुरूष पुरूष पुरूष	सूर्य चन्द्र चन्द्र	अग्नि वरूण वरूण	उग्र क्रूर ध्रुव स्थिर मृदु मैत्र	नीर सौम्य दहना	मध्य सुलोचन अन्ध

स्थूलमानेन मानव आयुर्दाय ज्ञानाय चक्रम्

दीर्घायुः	मध्यायुः	अल्पायुः
लग्नेश चर राशि अष्टमेश चर राशि	लग्नेश चर राशि अष्टमेश स्थिर राशि	लग्नेश चर राशि अष्टमेश द्विस्वभाव राशि
लग्नेश स्थिर राशि अष्टमेश द्विस्वभाव राशि	लग्नेश स्थिर राशि अष्टमेश चर राशि	लग्नेश स्थिर राशि अष्टमेश स्थिर राशि
लग्नेश द्विस्वभाव राशि अष्टमेश स्थिर राशि	लग्नेश द्विस्वभाव राशि अष्टमेश द्विस्वभाव राशि	लग्नेश द्विस्वभाव राशि अष्टमेश चर राशि

चर राशि - मेष, कर्क, तुला, मकर।
स्थिर राशि - वृष, सिंह, वृश्चिक, कुंभ।
द्विस्वभाव राशि - मिथुन, कन्या, धनु, मीन।

महर्षि जैमिनी रचित शास्त्र वचनानुसार आयुर्दाय वय-उम्र के ३ भेद होते हैं। यथा - १ दीर्घायु २ मध्यायु ३ अल्पायु प्रत्येक खण्ड का निर्णय-विचार भी तीन ३ प्रकार से पृथक-पृथक किया जाता है। १ लग्नेश तथा अष्टमेश २ शनि तथा चन्द्रमा ३ लग्न तथा होरा लग्न। उपर्युक्त आयु कोष्ठक रचना अनुसार - जन्माक्षर स्थित ग्रह राशि स्थिति अनुसार सामान्य गतिक विचार किया जाता है। प्रत्येक प्रकार के दो-दो अधिनायकों में दोनों चर राशि में हो या कोई एक द्विस्वभाव राशि में तथा दूसरा स्थिर राशि में हो जातक दीर्घायु तथा दोनों द्विस्वभाव राशि में हो अथवा कोई एक चर राशि में दूसरा स्थिर राशि में हो तो मध्यायु। एवमेव यदि दोनों स्थिर राशि में हों अथवा एक चर राशि में, दूसरा द्विस्वभाव राशि में हो जातक अल्पायु इस प्रकार के आयु निर्णय हेतु सामान्य दिशा निर्देशक सूत्र हैं।

८४ चौरासी लाख योनि का गणनानुक्रम

जलज जन्तु	९०००००	सप्त समुद्र
स्थावर जन्तु	२००००००	१ लवण मय सिन्धु
कृमि (कीट पतंग)	११०००००	२ क्षीर सिन्धु
पक्षिगण वर्ग	१००००००	३ दधि सिन्धु
पशु योनि वर्ग	३००००००	४ घृत सिन्धु
मानव वर्ग योनि	४०००००	५ इक्षुरसमय सिन्धु
एवं गणनानुक्रमे	८४०००००	६ मधुमय सिन्धु
		७ अमृत मय सिन्धु

सप्तपाताल - १ तल २ अतल ३ सुतल ४ वितल ५ तलातल ६ रसातल ७ पाताल सप्त द्वीप - १ जम्बु २ प्लक्ष ३ शाल्मलि ४ कुश ५ क्रौंच ६ शाक ७ पुष्कर जम्बूद्वीप नवखण्ड - १ इलावृत २ भद्राश्व ३ हरिवर्ष ४ केतुमाल ५ रम्यक ६ हिरण्यमय ७ कुरू ८ किंपुरूष ९ भारतवर्ष।

भवानीशंकरः शर्मा यस्याऽभूत प्राक् प्रवर्त्तकः। पंचाङ्ग तदिदं ग्राह्यं निर्णयसागराभिधम्॥ पंचाङ्ग तदिदं शुद्धं रविशंकर निर्मितम्। शुभयाऽस्तु सदानृणां निर्णयसागरसंज्ञकम्॥

❀ जन्मनामराशि निर्णय विवेचना ❀

♣ अवकहोड़ा शतपदचक्र अधिन्यास नियामक सूत्रानुसार ♣

जातक के नामकरण की महिमा सर्व विदित विषय हैं, नामकरण संस्कार भी जन्म से ११ या १२ वें दिन में किया जाता है। नामकरण की गरिमा हेतु शास्त्र वचन विशेष भी यथा-**नामाखिलस्य व्यवहार हेतु : शुभावहं कर्म सुभाग्य हेतुः। नाम्नैव कीर्ति लभते मनुष्यः ततः प्रशस्तं खलु नाम कर्म ॥** पीयूषधारा टीका में नामकरण की महिमा स्पष्ट ही है तद्नुसार जन्म + नाम + संयुक्ताक्षर राशि निर्णय हेतु शास्त्रीय विवेचना यह कि नक्षत्र चरण जनित राशि में (श) तथा (स) और (ब) एवं (व) अथवा अकारादि या आकारादि अक्षर राम या रमा में भी फरक-अन्तरांश नहीं होता है। यथा सूत्र - **ऋरयोः लृलयोश्चैव शसयो-र्बवयोस्तथा वदन्त्येषाञ्चसावर्ण्यं होरा चक्रविदो बुधाः ॥** अकारान्त अक्षर हो या आकारान्त इनमें विभेद नहीं बनता, एक समान राशि निर्णय होगा। यह ज्योतिर्विज्ञान होरा अवकहड़ा-शतपद चक्रन्यास नियामक से शाश्वत मौलिक मूल नियम है, एवमेव संयुक्त अक्षरों के राशि निर्णय की विधि यह है कि यथा ज्ञानचन्द्र की मकर राशि होगी। **पाणिनीय व्याकरण शास्त्र के भाषा सूत्र के अनुसार (ज ओ ञ्ः)** ज के प्रथम शब्द से ज्ञानचन्द्र की उत्पत्ति बनती है। ग अक्षर की मान्यता यहां नहीं समझें तथा श्रीधर तथा श्रवण की कुम्भ राशि ही मान्य होगी। इसी प्रकार 'क्षेमचन्द्र' की जन्म राशि **(क ष संयोगाद् क्षः)** अर्थात् क अक्षर की प्रधानता होने से मिथुन जन्म राशि प्रथमाक्षर के अनुसार बनी तथा यहां भी श-स की अक्षर मान्यता नहीं। तथा ज्ञानेश्वर-क्षेमचन्द्र-त्र्यम्बकनाथ इन नामों के आदि-आद्य अक्षर क्रमशः ज-क-त- हैं एवं क्रमशः उत्तराषाढ ३ मृगशिरा ३ तथा स्वाति ४ चरण अनुसार ही मकर-मिथुन-तुला राशि मान्य रहेगी तथा सूत्र - एक विशेष वचन यह भी कि **नाम्नि (ऋ लृ क्) इत्यादयः अनुस्वारा मात्रायां न भवन्ति ते च यदा भवन्ति तदा ज्ञेया इ. उ. ए. यथा क्रमम्।** इस सूत्रानुसार ऋषभदेव-लृतराम आदि की जन्म राशि क्रमशः वृषभ राशि बनेगी। ऋषभ हेतु - र-रा आदि का प्रयोजन नहीं। एवमेव संयुक्त अक्षर (प्रेम या प्रकाश) इस हेतु नियामक वचन यह कि **यदि नाम्नि भवेद्वर्णः संयुक्ताक्षर लक्षणः। ग्राह्यस्तदादिमो वर्ण इत्युक्तं ब्रह्मयामले ॥ 'संयोगजाक्षरे नाम्नि ग्राह्यतत्रादिमाक्षरम्'** अर्थात् नाम का प्रथम उच्चारित अक्षर (प् + र + ए) संधि विच्छेद करने से (प्रे या प्र) अक्षर की स्पष्टता सिद्ध है एवं नियमानुसार प्रहलाद-प्रकाश-प्रेम आदि की जन्म राशि उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र के टे.टो.प.पी. क्रमानुसार ३ चरण वश कन्या राशि मान्य होगी। इसी प्रकार द्रौपदी (द + र + ओ) नियम से पूर्वाभाद्रपद से.सो.द.दी. क्रमानुसार ३ चरण वश कुंभ राशि मान्य होगी। इस प्रकार संधियुक्त वाक्यों का निर्णय स्पष्ट है। **ऋरयोः लृलयोश्चैव शसयोर्ववयोस्तथा। वदंत्येषाञ्च सावर्ण्यंहोरा चक्रविदो बुधाः ॥** शतपदचक्र में अ, इ, उ, ए, ओ ये पांच स्वर वर्ण जो कथित हैं, उनसे ही यहां सवर्णी दीर्घ का तथा दीर्घ से सवर्णी ह्रस्व का भी ग्रहण करना शास्त्र सम्मत है। हस्त नक्षत्र के ३ चरण पर कोई नाम नहीं बनता है, अतः पू.ष.ठ.इन अक्षरों पर नाम रखना चाहिये। एवमेव उत्तराभाद्रपद के ४ चरण ञ अक्षर पर नाम नहीं बनने से दू थ झ आद्य अक्षरों से नाम रखना योग्य है। एवमेव आर्द्रा ३ चरण ङ अक्षर हेतु भी उपर्युक्त चरण भेद से विचार करना योग्य विषयक सूत्र है **न प्रोक्ता ङ ञ णा वर्णः नामादौ सन्ति ते नहि। चेद् भवन्ति तदा ज्ञेया गजडास्ते यथा क्रमम् ॥** अर्थात् किसी नक्षत्र चरण में जन्मवश ङ ञ ण वर्ण हो भी तो उसकी जगह पर क्रमशः ग ज ड वर्णों का प्रयोग करते नाम निर्णय करना चाहिए यह भी सूत्र मान्य है तथा नाम विधारणा हित युक्ति युक्त हैं।

❀ जन्मनाम राशिनाम निर्णय विवेचना विषयेऽपिः ❀

जन्म राशि तथा नाम राशि इनके प्रतिफल में अन्तर रहता है। सभी विषय में जन्म राशि प्रधानता नहीं रहती है तो सभी जगह नाम राशि की प्रधानता नहीं, कहां किस विषय में नाम या जन्म राशि का विचार होता है इस हेतु शास्त्रवचन - **विवाहे सर्वमांगल्येयात्रादौग्रहगोचरे। जन्मराशेः प्रधानत्वं नाम राशिं न चिंतयेत् ॥** विवाह कार्य, सभी मांगलिक कार्य-मुहूर्त-यात्रा विशेष मुहूर्त्त, दिन-मान ग्रहगोचर गणना दिनदशा हेतु जन्म राशि से ही विचार करना चाहिए तथा प्रचलित नाम राशि हेतु शास्त्रीय वचन यह कि **देशेग्रामेगृहेयुद्धेसेवायांव्यवहारके। नामराशेः प्रधानत्वं-जन्मराशिं न चिंतयेत्।** अर्थात् देश, ग्रामवास, नगर, घर, युद्ध, सेना, न्यायालय, कोर्ट, रजिस्ट्रीकरण आदि में नाम राशि की ही प्रधानता है, यथा सूत्र पुनरपि - **काकिण्यां वर्गशुद्धौ च वादे द्युते स्वरोदये। मंत्रे पूर्नभूवरणे नामराशेः प्रधानता ॥** एवं जन्म राशि से विचार करना योग्य नहीं।

❀ स्त्री-पुरुष राशि मान्यता हेतु विचार विशेष वचन ❀

इस हेतु शास्त्र वचन मुहूर्त्त चिन्तामणि अनुसार यह कि '**स्त्रीणां विधोर्बलमुशन्ति विवाहगर्भसंस्कारयोरितर कर्मसु भर्तुरेव**' अर्थात् विवाह गर्भाधान पुंसवन-आगरणी-सीमन्त-पुत्र कामना संस्कार में स्त्री की जन्मराशि से चन्द्र बल गणना निर्णय करना चाहिए। इसके अलावा अन्य सभी कार्यों में मूलरूपेण पति की जन्म राशि से ही विचार करना चाहिए। स्पष्ट शास्त्र वचनमेतद। मुहूर्त्त शास्त्रीय नियामक से एक सूत्रवचन यह भी है कि यदि जन्म नक्षत्र, राशि आदि मालूम नहीं हो तो नाम राशि से विवाहादि अन्य कार्यों का मुहूर्त्त लग्न ग्रह बल देख लेवें। **यथा विवाहघटनं चैव लग्नजं ग्रहजं बलम्। नामभादविचिन्तयंत् सर्व जन्म न ज्ञायते यदा ॥** अर्थात् यदि जन्म नक्षत्र राशि आदि का ज्ञान नहीं होवें तो नाम राशि से मुहूर्त्त लग्न बलादि हेतु विचार कर लेना चाहिये। परन्तु जहा तक पूर्ण प्रतिफल का प्रश्न है जन्म राशि की प्रधानता ही शास्त्रसम्मत है।

♣ मन्तव्यता गोचर गणना विषये ♣ उच्चराशिगतो भानुरूच्च राशिगतो गुरूः। रिष्फा १२ ऽष्ट ८ तुर्यगो ४ ऽपीष्ठो निचारिस्थ शुभोप्यसत् ॥ अर्थात् उच्च राशि मेष का सूर्य तथा कर्क राशि का गुरू ४-८-१२ भी शुभ मान्य। तथा सूर्य ४-८-१२ का होने पर भी शुभ राशि रहते १३ अंश बाद शुभ ही मान्य यथा - **अनिष्ट स्थानगेषु त्रयोदशदिनं त्यक्त्वा शेषस्थं शुभमादिशेत् ॥** इसी प्रकार चन्द्रमा शुभ वा मित्र ग्रह के नवांश तथा बृहस्पति से देखा जावे तो अशुभ होने पर भी शुभ मान्य सूत्र - **शुभांशेगुरूदृष्टोऽशुभोपि सन्।** एवमेव ४-८-१२ गणना का गुरू भी शुभ होता है यदि गुरू अपनी उच्च राशि - कर्क, स्वगृही-धनु-मीन एवं मित्र राशि तथा किसी भी राशि में अपने नवमांश में रहते ४-८-१२ वां बृहस्पति भी शुभ मान्य। विशेष यह भी कि गुरू अपनी नीच-मकर राशि वा शत्रु ग्रह की राशि में हो तो शुभ भी अशुभ मान्य होगा। यथा प्रमाण - **स्वोच्चे स्वभे स्वमैत्रे वा स्वांशे वर्गोत्तमे गुरूः। रिष्फा १२ ऽष्ट ८ तुर्यगो ४ ऽपीष्ठो नीचारिस्थः शुभोऽप्यसन ॥**

❀ ♣ अष्टकवर्गरेखाष्टक शुद्धि विधान ♣ - गोचर गणना से अशुभ ४-८-१२ गणना के सूर्य-चन्द्र-बृहस्पति आते हों तो रेखाष्टक गणना बल से अशुद्ध गोचर में भी शुभ कार्य सम्पन्न कर सकते हैं। यथा शास्त्र वचन - **अष्टवर्गविशुद्धेषु गुरूशीतांशुभानुषु। व्रतोद्वाहौ च कर्त्तव्यौ गोचरे न कदाचन ॥** ग्रन्थान्तरेऽपिराजमार्त्तण्डेतु-**अष्टवर्गेण ये शुद्धास्ते शुद्धाः सर्वकर्मसु। सूक्ष्माऽष्ट वर्ग संशुद्धिः स्थूला शुद्धिस्तु गोचरे ॥** लग्न समय पर सू.चं.गु. का अपना-अपना रेखाष्टक बल प्राप्त करें यदि १ से ३ रेखा ग्रह की आवे तो ग्रह को रेखा बल प्राप्त नहीं, नेष्ट समझें। यदि ४ या अधिक ८ तक रेखाबल प्राप्त होने पर ४-८-१२ गणना के सूर्य चन्द्र गुरू गोचर में रहते भी मांगलिक कार्य का विधान शास्त्र सम्मत कहा गया है।

❀ ♣ द्वादश १२ चन्द्र की शास्त्रीय मान्यता ♣ अभिषेके निषेके च प्राशने व्रत बन्धने तीर्थयात्रा विवाहे च चन्द्रो द्वादशगः १२ शुभः ॥ परन्तु - सर्वेषु शुभ कर्मेषु चन्द्रो द्वादशगः शुभः। नारीणां द्वादशश्चंद्रः मृत्युहानिकरस्तदा ॥ अर्थात् स्त्री हेतु १२ वां चन्द्र निषेध है परन्तु पुरूष पक्ष हेतु १२ वां चन्द्र शास्त्रकारों ने शुभद माना है।

नवजात शिशु
नामकरण अक्षरकोष

नवजात शिशु के नामकरण–संस्कार की महिमा–गरिमा सर्वविदित विषय है तथा नामकरण हेतु युगानुकूल एवं शुभ उपलक्षक अक्षर–शब्द रचना का अन्वेषण ज्योतिर्विद वर्ग एवं अभिभावकगण द्वारा पूर्ण आत्मीय मनोयोग–बौद्धिक शक्ति द्वारा प्रसाधित किया जाता है। इस कार्य विषयक समाधान हेतु अकारादि अनुक्रम से प्रशस्त नाम बालक–बालिका हेतु प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। नामकरण की अनुशंसा–महत्ता हेतु शास्त्रीय सूत्र वचन विशेष भी यथा – **नामाखिलस्य व्यवहार हेतु: शुभावहं कर्म सुभाग्य हेतु:। नाम्नैव कीर्त्ति लभते मनुष्य: तत: प्रशस्तं खलु नाम कर्म ॥**

अ-कारादि बालक

अत्रि	अंबर	अंगद	अंकज	अंशुल
अंचित	अंकित	अंशुमान	अंकुश	अंकुर
अंशज	अबीर	अभय	अभव	अक्षज
अक्षय	अक्षर	अर्पण	अक्षत	अग्रज
अमर	अमन	अटल	अनन्त	अजय
अमृत	अलाप	आनन्द	आर्णव	अश्विन
अविनाश	अभिनंदन	अरविन्द	अनिरूद्ध	अनिमेष
अमित	अखिलेश	अदित	अधिराज	अलंकृत
अभिराज	अभिलाष	अभिमन्यु	अनिल	अभिषेक
अमिताभ	अभिज	अभिजित	अभिनव	अमरीश
अजीत	अभीक	असीम	अवनीश	अनीक
अमीश	अमीर	अतुल	अर्जुन	अर्थेश
अरूण	अनुपम	अनुज	अमुल	अम्बुज
अनुराग	अनूप	अपूर्व	अशोक	अमोल
अवधेश	अमलेश	अनमोल	अरमान	अर्चित
अतीत	अनिष	आगम	अभिसार	आधार
अनुभव	अर्जित	अर्पित	अनुभव	आजाद
आभास	आलेश	आस्तिक	आर्यव	आकाश
आलोक	आदर्श	आयुष	आश्रय	आदेश
आर्थिक	आदित्य	आशीष	आमोद	आशुतोष
ओम	ओमेश	ओमदत्त	ओजस्वी	ओंकार
आर्यन	अखिल	अरमान		

अ-कारादि बालिका

अर्चा	अलका	अनन्ता	अमृता	अल्पना
अर्चना	अर्कजा	अपर्णा	अमला	अरूणा
अनन्या	अलखनन्दा	अपेक्षा	अमिया	अक्षिता
अनादि	अतीता	अभिज्ञा	आकृति	अम्बा
अलापिका	अंशजा	अंगजा	अंजना	अंचला
अंगारिका	अंजली	अंजु	अर्जिता	आचुकी
अयोध्या	अक्षरा	अक्षया	अक्षता	अंबजा
अप्सरा	अजरा	अजया	अचला	अनुप्रिया
अभिलाषा	अस्मिता	अमिता	अदिति	अर्पिता
अयाति	अन्तिमा	अनुमति	अनामिका	अवनि
अमीशि	अनोखी	अपराजिता	अनिता	अनिशा
अनमित्रा	अखिला	अंकिता	अणिमा	अनुश्री
अंजली	अलीशा	अरूंधती	अम्बुजा	अनुज्ञा
अनुपमा	अनुराधा	अनुव्रता	अंशुला	अन्नपूर्णा
अनमोल	अमोलिका	अनुष्का	अन्तरा	अपूर्वा
आशा	आभा	आशना	आस्था	आर्यका
आकांक्षा	आराधना	आशियाना	आशिमा	आश्रुति
आरती	आयुषी	आनन्दनी	आलोकिता	आदर्शनी

ई-इ-कारादि बालक

इन्द्रमोहन	ईश्वर	इन्दीवर	इन्दुमान	इन्दुकर
इन्दुकान्त	इन्द्रजीत	इन्द्रज	ईशान	ईशित

ई-इ-कारादि बालिका

ईक्षा	ईशा	इला	इंदुजा	इन्दुमा
इन्द्रा	ईश्वरी	इंदुकान्ता	इन्दिरा	ईशिता
इच्छा	ईक्षिता	इकजा	इप्सिता	इन्दालि

ऊ-कारादि बालक

उज्जवल	उग्रसेन	उपेन्द्र	उत्कर्ष	उत्पल
उत्तम	उद्भव	उदय	उदित	उद्योत
उमेश	उद्यम	उपमन्यु	उल्लास	उभय
उमाशंकर	उर्मिलेश	उद्यन्त	उम्मेद	उपांशु
उत्सव	उत्सर्ग	उपदेश	उमराव	उगम

ऊ-कारादि बालिका

उज्जवला	उत्प्रेक्षा	उत्तमा	उत्तरा	उदिति
उपमा	उपासना	उमा	उर्मिला	उर्वशी
ऊषा	ऊर्मी	उल्का	उन्नति	उर्शिता
उर्मिका	उत्कर्षा	उत्तालिका	उत्पला	उदन्तिका
उमिया	उमंग	उत्कला	उमराव	उगमा

ए-ओ बालक

एकल	एकाक्ष	एकाग्र	एकांश	ऐश्वर्य
ऐकराज	ओंकार	ओमप्रकाश	ओमेश्वर	एकलव्य

ए-ओ बालिका

एकता	एकाक्षरी	एकपर्णा	एकांगी	ऐकांशी
ऐकाग्रा	ऐश्वर्या	ओमलता	ओमजा	ओजस्विनी

क-कारादि बालक

कनिष्क	कपिल	कमल	कन्हैया	कमलज
करण	कन्दर्प	कनक	कपीन्द्र	कर्मिष्ठ
करमचन्द	कमलाकर	कमलाक्ष	कमलेश	कपूर
कश्यप	करूणाकर	कलानाथ	कल्याण	कलाधर
कल्पित	कवीन्द्र	कलश	कर्मिष्ठ	करूण
कवीश्वर	कान्ति	काशीराज	कामदेव	कामानुज
काव्य	कानमल	कार्त्तिकेय	किशोरीलाल	किसलय
किरण कुमार	किशन	किंशुक	किरीट	किशोर
कीर्त्तिकुमार	कीर्त्तन	कुँवरलाल	कुश	कुलेश्वर
कुशल	कुशिक	कुंजबिहारी	कुन्दन	कुणाल
कुसमित	कुशाग्र	कुलश्रेष्ठ	कुलदीप	कुमुदकान्त
कुलीन	कुबेर	कुलज	कुलिक	केतन
केशव	केवल	केतक	केतुभ	केसरी
केदार	कोविद	कौशल	कौस्तुभ	कौटिल्य
कृशांग	कृष्णा	कृपाल	कुंजीलाल	कार्त्तिक
कबीर	कपीश	कल्प	कल्पज	कर्मवीर

क-कारादि बालिका

कविता	कल्पना	कला	कल्याणी	करूणा
कमलेश	करिश्मा	कपिशा	कंचन	कजरी
कणिका	कनक	कदलिका	करणी	कलिका
करीना	कशीश	कमला	कंगना	कलश
कनीनिका	कनिष्ठा	कपिला	कलावती	कस्तूरी
कामिनी	कान्ता	कान्ति	काजल	काकुल
कानन	काकिल	कावेरी	काश्यपी	कांक्षा
कादम्बिनी	कादम्बरी	कामना	कामाक्षी	कामाख्या
कारिका	काव्या	किरण	किशोरी	कीर्त्ति
कीर्तना	कुमकुम	कुसुम	कुंकुमा	कुमुदनी
कुंजिका	कुन्तल	कुन्ती	कुन्दमाला	कुनालिका
कुन्जन	कुशल	कुन्जबाला	कुलवती	कुमुदिका
कुमुद	कुस्मिता	कूर्मिका	केतकी	केशवी
केसर	कोमल	कोकिला	कोयल	कौशल्या
कौशिकी	कौमुद	कौमुदी	कृपालिनी	कृतिका
कृष्णा	कृशला	कृष्णाला	कृति	

ख-खारादि बालक

खगेश	खद्योत	खजानसिंह	खद्दानसिंह	खगनाथ
ख्यालीलाल	खुशीलाल	खुमान	खुशवन्त	खुशाल
खूबचंद	खूबीराम	खेमराज	खेमशंकर	खैरातीलाल
खेतेश	खगपति	खद्योत	खिलाडी	खुशदिल

ख-खारादि बालिका

ख्याति	खंजना	खगवती	खरिका	खुशी
खुशबू	खुशनुमा	खेलप्रिया		

ग-गारादि बालक

गगन	गजराज	गणेश	गजानन	गजेन्द्र
गणनाथ	गवनीश	गणपति	गदाधर	गवीश
गंधर्वराज	गंगाधर	गजन	गंभीर	गिरधारी
गिरीराज	गिरवर	गिरधर	गिरीश	गीतम
गीत	गुंजित	गुलाब	गुणेश	गुलराज
गुलजारीलाल	गुरूप्रसाद	गुणवन्त	गुलशन	गुरूदत्त
गुमानसिंह	गुंजन	गोपेश	गोकुल	गोपाल
गोपीनाथ	गोविन्द	गोकर्ण	गोव्रत	गोविल
गोचर	गौतम	गौरव	गौरेश	गौरीशंकर
गौरांग	गहन	घनश्याम	घनानन्द	घेवरचंद

ग-गारादि बालिका

गंगा	गहना	गजल	गंधर्वी	गजप्रिया
गजमुक्ता	गणवति	गतिका	गतिमा	गरिमा
गवरी	गणिका	गायत्री	गार्गी	गांधारी
गिरिजा	गीत	गीतालि	गीतांजलि	गीतिका
ग्रीष्मा	गीता	गुलिका	गुंजिता	गुट्टी
गुगलिया	गुणाश्री	गुणमाला	गुंजा	गुन्जन
गोपिका	गोदावरी	गोनन्दा	गोकर्णिका	गोमती
गोकुला	गोधूलि	गोरजा	गोमा	गौतमी
गौरी	गौरा	गोपालिका	घनाक्षरी	घनश्यामा

च-चारादि बालक

चन्दन	चन्द्रकांत	चन्द्रज	चक्रपाणि	चरण
चमन	चरित्र	चम्पक	चम्पालाल	चतुर
चन्द्रेश	चाणक्य	चांदमल	चिरंजीव	चिमन

चित्रक	चित्रेश	चिन्तन	चिराग	चित्रांश
चिरायु	चिन्मय	चित्तज	चित्रगुप्त	चुन्नीलाल
चूड़ामणि	चेतन	चैतन्य	चोखेलाल	छत्रपति
छविकान्त	छीतरमल	छगन		

● च-चारादि बालिका ●

चन्द्रप्रभा	चम्पा	चन्द्रिका	चन्दनबाला	चमेली
चरिता	चविका	चरित्रा	चव्या	चकोरी
चंचला	चलका	चाहना	चारूता	चाँदनी
चारूलता	चिन्तना	चितला	चित्रा	चित्राक्षि
चितिका	चित्रांगदा	चिंन्मया	चित्तजा	चिन्तन
चुन्नी	चेष्टा	चेतालि	चेतना	छबीली
छवि	छटा	छाया	छिप्रा	झूमर

● ज-झकारादि बालक ●

जगदीश	जवाहर	जम्द्वीप	जगन	जयदीप
जगन्नाथ	जगमोहन	जतिन	जतन	जनक
जसवन्त	जनार्दन	जगतबन्धु	जयंत	जयदेव
जयेन्द्र	जयादित्य	जलज	जलेन्द्र	जलद
जलेश	जगजीत	जयराज	जानकीदास	जीवन
जितेन्द्र	जीवज	जीवेश	जुगराज	जुगलकिशोर
जुहारमल	जोगीराज	जोहरसिंह	जोहरीलाल	ज्योतिरादित्य
ज्योतिकुमार	ज्वाला	ज्वलित	झम्मनलाल	झमकलाल

● ज-झकारादि बालिका ●

जयन्ती	जयति	जसूम	जयमाला	जयलक्ष्मी
जयश्री	जया	जयना	जसुमति	जयनी
जयललिता	जमना	जयप्रभा	जानकी	ज्योति
जागृति	जास्मिन	जीविका	जिज्ञासा	जूही
जूली	जोशिका	ज्योत्सना	झलक	झुन्जुन

● त-तारादि बालक ●

तन्मय	तरंग	तमोहर	तनय	तनुराग
तपनांशु	तकशील	तनुज	तनु	तपन
तपेश	तरूण	तर्पित	तपस्वी	तनक
तनवीर	तनीश	तरण	तनवीरसिंह	तारक
तारेश	ताराचंद	तारकेश	तिजिल	तितिक्ष
तितिक्षु	तिनिश	तिलक	त्रिलोक	त्रिभुवन
त्रिदेव	तीरथ	तुराग	तुषार	तुषित
तुलित	तुलसी	तेजस	तेजपाल	तेजल
तेजस्वी	तोयेश	तोषित	तोषल	तोयद
तोताराम	तोषक	थानसिंह		

● त-तारादि बालिका ●

तवीशा	तनुजा	तन्मया	तनु	तपोधना
तनुश्री	तरंगणी	तरणि	तनीशा	तरणिजा
तरला	तपस्या	तुलसी	तरूणा	तमन्ना
तस्वीर	तानया	ताज	ताप्ती	तालिका
तारिका	तारा	तारामणि	थानेश्वरी	तिलोत्तमा
तितिक्षा	त्रिशा	त्रिदला	त्रिफला	त्रिपुरा
त्रिलोचना	त्रिशला	त्रिवेणी	तीजन	तुलिनी
तूलिका	तेजता	तेजसी	तेजस्विनी	तोषिका
तोषिनी	तोयशी	तोरण	तोरल	तृष्णा
तर्पिता	तृप्ति	तृषा	तृषिता	

● द-दारादि बालक ●

दक्ष	दलवीर	दधिज	दयाराम	दत्तात्रय
दयालु	दर्पित	दयानन्द	दशरथ	दर्पण
दरेन्द्र	दर्शन	दरबारीलाल	दमनक	द्रव्यवर्धन
दामोदर	दाक्षेय	दारासिंह	द्वारिकानाथ	दिगन्त
दिनेश	दिनकर	दिव्येश	दीपेन्द्र	दिलीप
दिव्यांशु	दिगेश	द्विजेन्द्र	दिव्य	द्विजेश
दिव्यांश	दिवाकर	दिग्विजय	दीपेन्दु	दीपक
दीपेश	दीप	दीपांशु	दीप्तांशु	दीनानाथ
दीनदयाल	दीक्षित	दुर्गेश	दुष्यन्त	दुर्लभ
दुर्वासा	द्रुपद	दुर्योधन	देव	देवेश
देवेन्द्र	देवल	देवज	देविक	देवदत्त
देवराज	देशबन्धु	देवकीनन्दन	देवाशीष	देवीलाल
देवव्रत	देवांग	देवदास	देवनाथ	देवस्वरूप
देवानन्द	देवकान्त	देवकीर्ति	दौलतराम	द्रोणक
दुलीचंद	धन्नालाल			

● द-दारादि बालिका ●

दक्षा	दया	दर्पना	दमयन्ती	दर्शना
दयनिता	दर्शिका	दरियाव कु.	द्राक्षा	दाखा
दाक्षी	दामिनी	द्राविका	दिव्या	दिवला
दिलखुश	दिविता	दिशि	दिशिता	द्विजा
दीक्षा	दीपा	दीप्ति	दीपालि	दीपिका
दीप्ता	दीक्षिता	दीपांजलि	दुर्गा	दुआ
दुर्लभा	दुलारी	दुर्गाक्षि	द्रुमालि	देवांगी
देवयानी	देवांशी	देवकी	देवना	देवप्रभा
देवश्री	देविका	देवला	देवेशी	देविका
देवगुणा	द्रोणिका	दृश्या	देशना	दृष्टि

● ध-कारादि बालक ●

धनंजय	धनपाल	धनराज	धनेश	धनेश्वर
धवल	धर्मेन्द्र	धर्मराज	धरणीधर	धवलकान्त
धर्मेश	धीरज	धीर	धीरेन्द्र	धीमन्त
ध्रुव	धुवन	ध्रुवक	धैर्यकुमार	ध्वनित

● ध-कारादि बालिका ●

धनप्रिया	धनाश्री	ध्वनि	धनिता	धन्या
धरती	धरित्री	धवला	धवलश्री	धनेश्वरी
धनुश्री	धनुषि	धारा	धात्री	धारणा
धीरा	धृति	धुमिला	ध्रुवा	धेनुका

● न-कारादि बालक ●

नवीन	नभेन्दु	नवनीत	नदीश	नगेन्द्र
नन्दन	नन्दलाल	नकुल	नवज	नगेश
नटवर	नचिकेता	नतांश	नवरंग	नमन
नमित	नरदेव	नरेन्द्र	नरेश	नयन
नल	नवरतन	नलिन	नवतन	नवल
नवेन्दु	नरोत्तम	नवरतन	नवनीत	नरसिंह
नक्षत्र	नायक	नागेश	नागार्जुन	नारायण
नाथूलाल	निर्जय	निर्भिक	निर्भय	निलय
निराला	निवेश	निबोध	निमिष	निश्चल
निशंक	निशान्त	नितिन	निशाकर	नीरज
नीरद	नितीश	निर्मल	नीरव	निपुण
निकाश	निकेतन	निधान	निखिल	निर्भय
निमीश	निरंजन	निर्वाण	निहार	निर्माण
निकुंज	निशान	निलेश	निराग	निर्मित
निर्णय	निशीत	नील	नीलज	नीलाभ
नीलम	निशाद	नेकबन्धु	नेमीचंद्र	नैतिक

● न-कारादि बालिका ●

नन्दना	नन्दिनी	नम्रता	नर्मदा	नवनीता
नन्दिका	नकुला	नगीना	नगमा	नयजा
नमना	नयशा	नमस्या	नयना	नर्तना
नमिता	नर्तिता	नव्या	नलिनी	नवधा
नताशा	नकुशा	नतीशा	नंदिता	नारायणी
निकिता	निवृत्ति	निक्षुमा	नियति	निचिता
निर्मला	निरूपमा	निशा	निशि	निधि
नित्या	निमीलिका	निरंजना	निवेषा	निवेषिता
निश्चला	निशिता	निराली	निहारिका	निष्ठा
नित्या	निखार	निर्मिता	नीरा	नीरू
नीतू	नीलम	नीलाक्षि	नीलिमा	नीना
नीरजा	नीलजा	नीलम	नीलू	नीति
नीतिका	नूतन	नूपुर	नूरी	नेहा

● प-प्र-कारादि बालक ●

पथिक	पवन	परम	पदम	पद्माकर
पद्मनाभ	पयोज	पयोद	परज	परमेश्वर
पराग	पनव	परीक्षित	पर्णक	पताग
परिवेश	पल्लव	पल्लवित	पलाश	पर्णव
पवनज	पन्नालाल	पवित्र	पर्व	परेश
पावन	पंकजित	पंकज	पंकिल	पतंजलि
पांशुल	पाणिनी	पारस	पिनाक	पीताम्बर
पीयूष	पुरजित	पुष्कर	पुलकित	पुखराज
पुरूषोत्तम	पुष्कल	पुरू	पुनीत	पुण्य
पुराण	पुष्पक	पुष्पित	पुष्पेन्द्र	पूरक
पूनम	पूरण	पूर्णेन्दु	पूजित	पूर्णानन्द
पूर्वेन्दु	पोषित	पोरव	पृथ्वीराज	प्रमेय
प्रकुंज	प्रभुलाल	प्रसंग	प्रवीर	प्रहलाद
प्रभाशंकर	प्रभाकर	प्रबोध	प्रभव	प्रणय
प्रणव	प्रशान्त	प्रयाग	प्रेमप्रकाश	प्रताप
प्रवेश	प्रभात	प्रफुल्ल	प्रभाष	प्रबल
प्रकाश	प्रशान्त	प्रद्युम्न	प्रखर	प्रदीप
प्रमित	प्रमोद	प्रसाद	प्रयंक	प्रकुल
प्रवीण	प्रतीक	प्रसून	प्रवीत	प्रहलाद
प्रांजल	प्राज्ञ	प्राकृत	प्राण	प्राणेश
प्रियंक	प्रियांशु	प्रियव्रत	प्रीतम	प्रीतेश
प्रेमानन्द	प्रेमल	प्रेमराज		

● प-प्र-कारादि बालिका ●

पद्मा	पद्मिनी	पन्ना	पराजिका	परमा
परिणीता	पर्णिका	पलभा	पल्लवी	पवना
पवित्रा	परिधि	परमिता	पलक	पंचालि
पंचवल्लभा	पंखुरी	पायल	पावना	पारूल
पोषिका	पारणा	पारिजात	पार्वती	पालिनी
पिंकी	पिपासा	पीयूषा	पुनीता	पुरला
पुलोमा	पुष्पा	पुष्पिता	पुष्या	पूजना
पूजा	पूजिता	पूर्णश्री	पूर्णा	पूर्णिका

पूर्वा	पूषण	पूषा	पूनम	पूर्णिमा
पूर्वी	पूज्या	प्रेम	प्रेरणा	प्रतिभा
प्रगल्भा	प्रचला	प्रचेता	प्रज्ञा	प्रतिमा
प्रणीता	प्रमिता	प्रमिला	प्रभा	प्रकृति
प्रचिता	प्राची	प्रणालि	प्रशिला	प्रतीति
प्रवीणा	प्रबला	प्रभद्रा	प्रमुदा	प्रतिक्षा
प्रतिज्ञा	प्रगति	प्रियंवदा	प्रयति	प्रशान्ति
प्रांजलि	प्रांजल	प्राक्षी	प्रारूल	प्रार्थना
प्राणेशा	प्रियाला	प्रियंका	प्रिंया	प्रीति

● फ-कारादि बालक ●

फलेश	फाल्गुन	फणीन्द्र	फलक	फणीश
फतेहलाल	फणिश्वर	फतेश	फलित	फागेश
फूलचंद	फूलेश्वर			

● फ-कारादि बालिका ●

फणी	फरहा	फलिता	फाल्गुनी	फूला
फूलन	फूलवती	फूलिता		

● ब-कारादि बालक ●

बलवीर	बलदेव	बलवन्त	बलराज	बन्धु
बसन्त	बटुक	बरसत	ब्रजेश	बकुल
बजरंग	बलराम	बनपाल	बनवारी	बंधुपाल
बद्रीनारायण	बहुल	बहादुर	बंकट	बलज
बलभद्र	ब्रजमोहन	ब्रह्मानन्द	बृजलाल	बृजकिशोर
बारिद	बालकिशन	बालचंद	बागमल	बालादित्य
बालेश्वर	बालमुकुन्द	बाली	बादल	बिहारी
बीरबल	बुद्धदेव	बेनीराम	बोधन	बोधित

● ब-कारादि बालिका ●

बबली	बसन्ती	बरखा	बबीता	बहार
बलजा	बदली	बहुला	बनमाला	बनदेवी
बनिता	ब्रजबाला	बाला	ब्राह्मी	बिन्दिया
बिजली	बिरजा	बिन्दु	बीना	बेला

● भ-कारादि बालक ●

भगत	भवानीशंकर	भगवती	भरत	भवेश
भद्रकान्त	भद्रसेन	भगवान	भास्कर	भगीरथ
भव्य	भविष्य	भंवर	भगवतीप्रसाद	भजन
भगवत	भवभूति	भ्रमर	भारतेन्दु	भारवी
भारत	भागीरथ	भाव्य	भावेश	भानु
भाविक	भाग्येश	भीकम	भीकाराम	भीम
भीमसेन	भुवनेश	भुवन	भूपाल	भूपेन्द्र
भूषण	भूषित	भूपराज	भूमिक	भूपद
भेरू	भैरव	भोला	भोगेश	भोजराज
भोपराज	भौमिक	भृगुराज		

● भ-कारादि बालिका ●

भद्रश्री	भजना	भद्रा	भविता	भवानी
भक्ति	भव्या	भ्रमरी	भरणी	भद्रिका
भंवरी	भगवती	भाग्यश्री	भानुमति	भ्रमरी
भावी	भानुप्रिया	भागवन्ती	भावना	भानुजा
भारती	भामिनी	भावी	भामति	भूमिका
भूषणा	भूमिजा	भूदेवी	भैरवी	भोली

● म-कारादि बालक ●

मंगल	महन्त	मंजुल	मणिकान्त	मधुकर
मधुप	मधुसूदन	मनोज	मलयज	महेन्द्र
मयूरेश	मनसुख	मनमोहन	मनोहर	मनित
मनीषी	मनु	महादेव	मनोज	महीश
मयंक	मनीष	मदन	महेश	मनन
मयूर	मथुरादास	मन्नालाल	महावीर	मगन
मनोरथ	मधुर	मनुज	मयूख	मलय
महक	मृगेन्द्र	मृणाल	मृगांक	मृदुल
मृत्युंजय	मानस	मानव	माणिक	माधव
मार्त्तण्ड	मानसिंह	मानमल	माखन	मिलन
मिलाप	मिहिर	मिलन्द	मित्रजीत	मिश्रीलाल
मिलिन्द	मितेश	मिनेश	मिथुन	मुरली
मुकेश	मुन्नालाल	मुदित	मुकुल	मुनीन्द्र
मुकन्द	मुलायमसिंह	मुखर	मुकुटबिहारी	मूलचंद
मोहक	मोहित	मोहन	मोतीलाल	मेघराज
मोक्षिक	मोहक	मैथिलीशरण	मौसम	मौलिकचंद्र

● म-कारादि बालिका ●

मंगला	मंजरी	मंजू	मंजुला	मंजूश्री
मंजूषा	मन्दिरा	मधु	मन्दोदरी	महिका
महक	मदालसा	मनालि	महिमा	मलिका
मयूरी	मनोरमा	मधुजा	मधुरिका	मनुजा
ममता	मयूरिका	महीजा	महादेवी	मनिका
महेश्वरी	मर्यादा	मरीना	मधुरिमा	मनुजा
मगनी	मयूखी	मनसा	मृगीशा	मृदुल
मृदुला	मृगाक्षी	मृगजा	मृणालिका	माधवी
मालिनी	मानिनी	मनीषा	माया	माण्डवी
मातंगी	माधुरी	मानसी	मानिता	मालती
मानवी	माही	मिथिलेश	मिताली	मीरा
मीनाक्षी	मीनल	मीमांसा	मुक्ता	मुग्धा
मुदिता	मुक्ति	मुस्कान	मूर्त्ति	मेना
मेदिनी	मेघा	मेनका	मैत्रेयी	मैथिली
मौसमी	मौलश्री	मोनिशा	मोनिका	मोदिनी
मोहिता	मोलिका	मोहिनी	मोक्षदा	मोक्षिका

● य-कारादि बालक ●

यशवन्त	यश	यमुनाप्रसाद	यक्षेन्द्र	यज्ञेश
यदुनन्दन	यतिन	यमीर	यशस्वी	यशपाल
यदुवीर	यमेश	यजत	यजन्त	यक्षराज
यशोधन	यशोधर्मन	यतीन्द्र	यज्ञेश्वर	यज्ञ
यशवंत	याज्ञिक	युगलकिशोर	युगंधर	युधिष्ठिर
युगराज	युवराज	यूकेश	यूपेन्द्र	योगित
योगीराज	योगेन्द्र	योगेश		

● य-कारादि बालिका ●

यशोदा	यमुना	यशिका	यतिका	यशवती
यज्ञांगी	यशोधरा	यामिनी	याचना	याज्या
योगिता	योगेश्वरी	योजना	युगलेश	युगन्द्री
युवती	युति	युतिका	युक्ति	युगादि
युगाद्या	यूथिका	योगिनी	योगमाया	योज्ञता

● र-कारादि बालक ●

रंजन	रक्षिक	रक्षित	रघुराज	रघुनाथ
रत्नाकर	रजत	रश्मिकान्त	रचित	रसिक
रत्नाम्बर	रजनीश	रणजीत	रतन	रजित
रणधीर	रमाकान्त	रवि	रविशंकर	रसित
रमेश	रविकान्त	रमणिक	रमण	रघुवर
रणछोड	रमक	राहुल	राजीव	राकेश
राही	राग	राणा	राजदीप	राज
राजेश	राजित	राजुल	राजेन्द्र	राधावल्लभ
राम	रामेश्वर	रासबिहारी	राधेश	राधेश्याम
राघव	राधेय	रामानुज	रिषीक	रूचित
रूद्र	रूपेन्द्र	रूद्रादित्य	रूपम	रोहित
रोहन	रोमेश	रोहक	रोहिणीश	रोशन
रौनक	रीतेश	ऋत्विक	ऋषि	

● र-कारादि बालिका ●

रक्षिता	रंजना	रंजिता	रचना	रजनी
रतिका	रमा	रत्नप्रभा	रविजा	रश्मि
रसना	रत्ना	रक्षा	रम्या	रम्भा
रसीली	रसिका	रागिनी	राजश्री	राधा
राधिका	राखी	राशि	रानू	राजरानी
रामेश्वरी	राजेश्वरी	रानी	रिचा	रिधि
रिमझिम	रिमिका	रीतिका	रीता	रीना
रीतू	रूचिका	रूचिता	रूही	रूचि
रूपा	रूबी	रूपाशी	रूचिरा	रूपश्री
रूपकला	रूक्मिणी	रूद्रा	रूद्राणी	रूपाली
रेशमा	रेवती	रेणु/रोजी	रेणुका	रेखा
रोशनी	रोचना	रोचिता	रोहिणी	रोहिता

● ल-कारादि बालक ●

लखन	लक्ष्मण	ललित	ललाम	लव
लक्ष	लहरीलाल	लक्षित	लक्ष्मीकांत	लम्बोदर
लक्षक	लक्षण	लगन	लाभेश	लायक
लालमणि	लीलाधर	लेखराज	लूनकरण	लोकेन्द्र
लोकनाथ	लोकेश	लोचन	लोकित	लोमश
लोहिताक्ष	लोहित	लोहिताक्ष	लेखेन्द्र	

● ल-कारादि बालिका ●

ललिता	लता	ललिमा	लवली	लक्ष्मी
लजिता	लज्जा	लक्षा	लक्षिता	लरिका
लतिका	लहर	लखिया	लक्षिका	लहक
लाजिमा	लालीमा	लाली	लालसा	लाजा
लावण्या	लाडली	लाजवन्ती	लिप्सा	लीप्सा
लीला	लीना	लुभानी	लूसी	लूनी
लेला	लेखा	लेखिका	लोपिका	लोचना
लोहिता	लोलिता	लोपा	लोमशा	

● व-कारादि बालक ●

वृन्द	वकुल	वन्दन	वत्सल	वचनेश
वपिल	वरद	वसन्त	वरूण	वल्लभ
वसुदेव	वरदान	वर्तमान	वरिष्ठ	वत्सर
वंश	वर्धमान	वसिष्ठ	वागीश	वारिद
वात्सल्य	वारीश	वारिजात	विकास	विवश
विराज	विक्रान्त	विकुंज	वीर	विकांक्ष
विक्रम	विजयंत	विजय	विजित	विट्ठल
विदित	विद्याधर	विधु	विभु	विनम्र

विवेक	विनय	विनिवेश	विनीत	विनोद
विपिन	विलास	विपुल	विभव	विभय
विभात	विभूति	विभोर	विमल	विरल
विमित	विद्युत	विराग	विबोध	विशुद्ध
विशाल	विश्वम्भर	विश्वनाथ	विश्वबन्धु	विराट
विशद	विमर्श	विधान	विनायक	विश्वास
विश्वामित्र	विज्ञान	विशेष	विहार	विदुर
वीरभद्र	वीरेन्द्र	वीरेश	वेदप्रकाश	वेदेश्वर
वेणीराम	वेद	वेदान्त	वेदिक	वेदांग
वैभव	वैकुण्ठ	वैद्यनाथ	वेदांक	

● व-कारादि बालिका ●

वंदिता	वंदना	वृन्दा	वल्लिनी	वनजा
वंजुला	वत्सला	वत्सिमा	वर्तिका	वरूणा
वर्षा	वनिता	वनालिका	वरिमा	वल्लभा
वनिशा	वशिमा	वसुंधरा	वसुधा	वरदा
वशिता	वर्षिता	वसन्ती	वामाक्षी	वामना
वाणी	वागीशा	वाहिका	विधि	विभाति
विन्दु	विदूषी	विकांक्षा	विकुण्ठा	विनम्रा
विक्रान्ता	विनति	विक्षुभा	विनया	विद्या
विशाखा	विनीता	विश्वा	विशाला	विपाशा
विपुला	विभा	विभूषा	विरजा	विजया
वीरिका	वीणा	वेदिका	वेदांगी	वेदान्ती
वेदिज़ा	वेधा	वेणुका	वेदप्रिया	वैशाली
वैभवी	वैदेही	वैजयन्ती	व्योमिनी	वृष्टि

● स-करादि बालक ●

संशय	संचय	संजय	सबल	सफल
सकुल	सजल	सलिल	सज्जन	सत्यम
सत्यव्रत	सपन	समर्पण	समाधान	साकाश
संकेत	संचित	संजीत	संजीव	सचिव
सन्तोष	सर्वक	सुन्दल	सचेत	संदीप
सचिन	सहर्ष	स्नेहिल	सत्यजीत	सवित
सरयु	सप्तांशु	सर्वेश	समिष	समीर
सर्वजित	सदाशिव	सहदेव	संकल्प	सत्यव्रत
सतपाल	संगम	समर	संस्कार	सत्यांश
संयम	संदेश	संयत	स्वराज	स्नेहल
साधक	सारंग	सांझ	सात्विक	सार्थक
सारथी	सागर	सितांग	सिद्धार्थ	सितांशु
सिताभ	सियाराम	सीताराम	सुबोध	सुनील
सुदेव	सुरेन्द्र	सुधीर	सुनन्द	सुमन्त
सुनीत	सुभद्र	सुलेख	सुमेघ	सुमित
सुकल	सुकल्प	सुशान्त	सुगन	सुशीम
सुजान	सुभव	सुघोष	सुचेतन	सुजन
सुजल	सुजात	सुदामा	सुदीप	सुदर्शन
सुगंध	सुधाकर	सुधांशु	सुभाषित	सुरभित
सुरेश	सुमित	सुलक्ष	सुलभ	सुव्रत
सुखेश	सुवीर	सुविद	सुशील	सुशीत
सुषीम	सुदेश	सुयोग	सुखदेव	सूर्यज
सूरज	सूर्यांशु	सोहन	सोमेश	सोमिल
सौरभ	शलभ	शंकर	शंभू	शक्ति
शरद	शमीश	शशिकान्त	शतजित	शत्रुंजय
शशांक	शशिकर	शगुन	श्याम	श्वेतांग
श्वेताभ	शामक	शान्तनु	शार्दूल	शांति
शाख	शिशिर	शिरीष	शिवराज	शिवि
शिशिरान्त	शिशिरांशु	श्रीकान्त	श्रीदत्त	श्रीधर
श्रीनाथ	श्रीपति	श्रीनिवास	शीतल	शील
शुभद	शुभाक्ष	शुभ्रांशु	शुचित	शुभाशीष
शूर	शेवांग	शेखर	शेरसिंह	श्रेयस
शैलेन्द्र	शैलज	शोभन	शोभाराम	शौकीन
शौनक	शौर्य	स्वप्निल		

● स-कारादि बालिका ●

सत्या	संध्या	संकल्पा	संयमा	सायना
संचिता	समृद्धि	सकुला	सजला	सप्तधा
सन्तोष	सपना	सरला	सरयु	सरिता
सजनी	सरोज	सलोनी	सरोजिनी	समेघा
समीया	समीक्षा	सर्वज्ञा	सनीका	सविता
स्वाति	संस्कृता	संगीता	संचल	संकल्पा
संजना	स्तुति	स्मृति	स्वनन्दा	स्वर्णलता
स्वराक्षरा	संचिति	संयोगिता	सस्मिता	संजीता
संजुला	साधना	सारिका	सानन्दा	साहिरा
सावर्णि	सारा	साविका	सारंगी	सावित्री
सावेरी	साक्षी	सांची	साक्षरा	सानिया
सारैभी	सिया	सिन्धुजा	सिम्बला	सीमा
सिद्धान्ती	सिंचिता	सिद्धा	सितजा	सिद्धि
सीमी	सुकृति	सुलेखा	सुचिता	सुदर्शनी
सुहानि	सुकर्मा	सुभद्रा	सुकामा	सुशीला
सुखदा	सुमित्रा	सुनन्दा	सुनीता	सुप्रिया
सुरभि	सुतारा	सुवाल्लि	सुधा	सुशाखा
सुगन्धा	सुजाता	सुचित्रा	सुचेता	सुजला
सुदीक्षा	सुधि	सुनयना	सुनामा	सुनीति
सुनीला	सुपर्णा	सुनेत्रा	सुवर्णा	सुप्रभा
सुप्रिया	सुभगा	सुमंगला	सुमति	सुमन
सुमना	सुयज्ञा	सुयशा	सुरनन्दा	सुरप्रिया
सुरभि	सुरभिता	सुरूचि	सुरूपा	सुरेखा
सुरोचना	सुदर्शना	सुरोमा	सुरोत्तमा	सुलभा
सुलोचना	सुवदना	सुलक्षणा	सुवासिका	सुवासिनी
सुविदा	सुव्रता	सुषमा	सुनन्दा	सुखदा
सूर्या	सेजल	सोनाली	सोमिला	सोनिया
सोनल	सोनाक्षी	सोमा	सोहना	सोहम्
सौम्या	शंकुला	शवि	शकुन्तला	शकुन
शलिका	शकुला	शर्मिला	शतरूपा	शवरी
शशिनी	शताक्षि	शशिप्रिया	शलभा	शची
श्लेषा	श्वेता	श्यामा	श्यामला	शलाका
शान्ति	शाशा	शारदा	शालिनी	शालू
शांता	शिवप्रिया	शिवानी	शिखा	शिखि
शिप्रा	शिवालि	शिक्षा	शिवजा	शिवाला
शिविका	शीतल	शीतला	शीला	शुचि
शुचिका	शुचिता	शुभांगी	शुभदा	शुभा
शुषमा	शुभ्रता	शुभ्रा	शुभ्रिका	शुष्मा
शेलुका	शेषा	शेवांगी	शैलजा	शैला
शैली	शैफाली	शोभना	शोभा	श्रद्धा
श्रुता	श्रुति	श्रेष्ठा	श्रेष्ठी	श्रेयो
श्रेयसी	श्रीदेवी	श्रीप्रिया	श्रीनिधि	श्रीमाया
श्रीप्रदा	श्रीना	श्रीमंजरी	श्रीप्रभा	श्रीरूपा
श्रीलता	श्रीविद्या	क्षिति	क्षितिजा	क्षिप्रा
क्षीरजा	क्षीरिका	सृष्टि		

● ह-कारादि बालक ●

हर्ष	हर्षद	हर्षित	हर्षुल	हरीश
हंसराज	हरिकान्त	हरित	हरिज	हरिताभ
हर्षवर्द्धन	हरीन्द्र	हरिपद	हरि	हरिहर
हरिदेव	हरिप्रसाद	हरिशंकर	हरिओम	हरजीत
हंसमुख	हमीर	हजारीलाल	हार्दिक	हिमेश
हिमांशु	हितेश	हितेन्द्र	हिमकर	हिरेश
हिम्मत	हीरालाल	हुकमचन्द	हुण्डीलाल	हेमांग
हेमाभ	हेमन्त	हेमेन्द्र	हेमन	हेमीश
हेमराज	हेमवन्त	होरीलाल	होतीलाल	

● ह-कारादि बालिका ●

हंसा	हंसजा	हंसमुखी	हसिता	हनी
हरिता	हरिवल्लभा	हरिप्रीता	हर्षिनी	हर्षा
हरिनी	हर्षना	हर्षप्रभा	हर्षिता	हर्षल
हार्दिका	हीना	हिमांशी	हिमांगी	हिमाक्षी
हिमा	हिमानी	हीरल	हिमिका	हीरामणि
हीर	हुबली	हुमा	हेमकान्ता	हेमलता
हेतुमाला	हेमप्रभा	हेमाद्रि	हेमालि	हेलन

● ड-कारादि बालक ●

डम्बरलाल	डालचंद	डूंगरमल	डेविड	डोरीलाल

● ड-कारादि बालिका ●

डाली	डालजा	डालिमा	डिम्पल	डिक्सी
डेजी	डेना	डेबी	डोली	

● क्ष-कारादि बालक ●

क्षणद	क्षत्रपति	क्षितिज	क्षितीश	क्षीरसागर
क्षेमेन्द्र	क्षेत्रपाल	क्षेमचन्द्र		

● क्ष-कारादि बालिका ●

क्षणिका	क्षमा	क्षणप्रणा	क्षमिता	क्षिप्रा
क्षीरा	क्षीरिका	क्षीरजा	क्षेमवती	

● त्र-ज्ञ-कारादि बालक ●

त्र्यम्बक	त्रपित	त्रिगुण	त्रिशांश	त्रिदेव
त्रिलोक	त्रिलोचन	त्रैलोक्य	त्रिभग	ज्ञानचन्द
ज्ञानिश	ज्ञानेश्वर	ज्ञानवेन्द्र	ज्ञानेन्द्र	ज्ञानेन्दु
ज्ञानसागर	ज्ञानेश	ज्ञानी		

♣ इस प्रकार नामकरण संस्कार हेतु सुविधा–साधना प्रदान की गई है तथा विशेष ज्ञानार्थ शब्दकोष विशेष भी सहधार्मिक सहायक बन पाता है। अ–व–क–ह–डा चक्र कोष्ठक ज्योतिष राशिमाला मान्यतानुसार वर्णमाला में कतिपय अक्षर इस प्रकार के भी हैं, जिन पर किसी प्रकार का नाम विशेष नहीं बनता तथा विशुद्ध उच्चारण एवं व्यवहारिकता में नहीं होता है। तदर्थ जन्मराशि अनुसार नाम निर्धारण करना भी व्यावहारिक है तथा स्त्रीलिंग–पुल्लिंग संज्ञा विशेषवश इन्हीं प्रदत्त नामकोष अनुसार आंशिक सुविधाजनक परिवर्तन भी कर लेना सन्मार्ग सूचक सूत्र हैं। यथा – (अमृता–अमृत) (जय–जया) (देव–देवी) इत्यादि। अस्तु !

सूर्य नक्षत्र	↓ दैनिक चन्द्रनक्षत्र गणनाक्रम ↓ ● रवियोग कोष्ट रचना ●					
अश्विनी	रोहिणी	आर्द्रा	आश्लेषा	मघा	हस्त	पूर्वा षा.
भरणी	मृगशिरा	पुनर्वसु	मघा	पूर्वा.फा.	चित्रा	उत्त.षा.
कृतिका	आर्द्रा	पुष्य	पूर्वा.फा.	उत्त.फा.	स्वाति	श्रवण
रोहिणी	पुनर्वसु	आश्लेषा	उत्त.फा.	हस्त	विशाखा	घनिष्ठा
मृगशिरा	पुष्य	मघा	हस्त	चित्रा	अनुराधा	शतभिषा
आर्द्रा	आश्लेषा	पूर्वा.फा.	चित्रा	स्वाति	ज्येष्ठा	पूर्वा.भा.
पुनर्वसु	मघा	उत्त.फा.	स्वाति	विशाखा	मूल	उत्त.भा.
पुष्य	पूर्वा.फा.	हस्त	विशाखा	अनुराधा	पूर्वा षा.	रेवती
आश्लेषा	उत्त.फा.	चित्रा	अनुराधा	ज्येष्ठा	उत्त.षा.	अश्विनी
मघा	हस्त	स्वाति	ज्येष्ठा	मूल	श्रवण	भरणी
पूर्वा.फा.	चित्रा	विशाखा	मूल	पूर्वा षा.	घनिष्ठा	कृतिका
उत्त.फा.	स्वाति	अनुराधा	पूर्वा षा.	उत्त.षा.	शतभिषा	रोहिणी
हस्त	विशाखा	ज्येष्ठा	उत्त.षा.	श्रवण	पूर्वा.भा.	मृगशिरा
चित्रा	अनुराधा	मूल	श्रवण	घनिष्ठा	उत्त.भा.	आर्द्रा
स्वाति	ज्येष्ठा	पूर्वा षा.	घनिष्ठा	शतभिषा	रेवती	पुनर्वसु
विशाखा	मूल	उत्त.षा.	शतभिषा	पूर्वा.भा.	अश्विनी	पुष्य
अनुराधा	पूर्वा षा.	श्रवण	पूर्वा.भा.	उत्त.भा.	भरणी	आश्लेषा
ज्येष्ठा	उत्त.षा.	घनिष्ठा	उत्त.भा.	रेवती	कृतिका	मघा
मूल	श्रवण	शतभिषा	रेवती	अश्विनी	रोहिणी	पूर्वा.फा.
पूर्वा षा.	घनिष्ठा	पूर्वा.भा.	अश्विनी	भरणी	मृगशिरा	उत्त.फा.
उत्त.षा.	शतभिषा	उत्त.भा.	भरणी	कृतिका	आर्द्रा	हस्त
श्रवण	पूर्वा.भा.	रेवती	कृतिका	रोहिणी	पुनर्वसु	चित्रा
घनिष्ठा	उत्त.भा.	अश्विनी	रोहिणी	मृगशिरा	पुष्य	स्वाति
शतभिषा	रेवती	भरणी	मृगशिरा	आर्द्रा	आश्लेषा	विशाखा
पूर्वा.भा.	अश्विनी	कृतिका	आर्द्रा	पुनर्वसु	मघा	अनुराधा
उत्त.भा.	भरणी	रोहिणी	पुनर्वसु	पुष्य	पूर्वा.फा.	ज्येष्ठा
रेवती	कृतिका	मृगशिरा	पुष्य	आश्लेषा	उत्त.फा.	मूल

❀ दोषसंघ विनाशक-मुहूर्त्तशुद्धिप्रदायक ❀
❀ नाक्षत्रिक-रवियोग ❀

इस प्रस्तुत कोष्ठ रचना में सुलभतया रवि योग नक्षत्र वेला मुहूर्त का परिज्ञान कराया गया है। सूर्यचन्द्र जनितनक्षत्र दिवस विशेष को शास्त्रकारों ने सर्वोत्तम कालांश मान्य किया है। कोष्ठ में गहरे शब्दों में सूर्य नक्षत्र तथा श्वेत शब्दों में दैनिक चन्द्र नक्षत्र हैं। यथा-अश्विनी 'अश्विन्यांरविचार:' है, तो क्रमश: यदि दैनिक नक्षत्र रोहिणी-आर्द्रा-आश्लेषा-मघा-हस्त-पूर्वाषाढ नक्षत्र होने पर रवियोग दिवस मान्य होगा **सूर्यभात्चन्द्रर्क्षे रवियोगा: स्युर्दोषसंघविनाशका:** मुहूर्त्त चिन्तामणिकार का स्पष्ट अभिमत है, जो कि मुहूर्त वेलाशोधन निर्णय हित अत्युपयोगी है।

✦ सर्वार्थसिद्धियोग ✦

रविवार - अश्विनी, पुष्य ३ तीनों उत्तरा, हस्त, मूल। **सोमवार** - रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, अनुराधा, श्रवण। **मंगलवार** - अश्विनी, कृतिका, आश्लेषा, उत्तरा भाद्रपद। **बुधवार** - कृतिका, रोहिणी, मृगशिरा, हस्त, अनुराधा। **गुरूवार** - अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य, अनुराधा, रेवती। **शुक्रवार** - अश्विनी, पुनर्वसु, अनुराधा, श्रवण, रेवती। **शनिवार** - रोहिणी, स्वाति, श्रवण।

✻ अमृतसिद्धियोग ✻

रविवार - हस्त। **सोमवार** - मृगशिरा। **मंगलवार** - अश्विनी। **बुधवार** - अनुराधा। **गुरूवार** - पुष्य। **शुक्रवार** - रेवती। **शनिवार** - रोहिणी। **परिज्ञान सूत्र** - वारों के आगे जो नक्षत्र हैं पंचांग में ये प्रतीत होने पर उपर्युक्त योग चरितार्थ होगा। यथा - रविवार को अश्विनी होने पर सर्वार्थसिद्धि तथा हस्तनक्षत्र होने पर अमृतसिद्धियोग बनेगा परन्तु मंगल-अश्विनी गृहप्रवेश में। शनि-रोहिणी महायात्रा में तथा गुरू-पुष्य विवाह में मान्य नहीं।

✿ दिन-रात्रि व्यवस्थासूत्र ✿

प्रात: संध्याकाल - अर्ध सूर्यबिम्ब सूर्योदय से ३ घटी तक। **सायं संध्याकाल** - सूर्यास्त से ३ घटी तक। **प्रदोषवेला अर्धबिम्ब** - सूर्यास्त से लेकर ६ घटी तक। **महानिशा वा निशीथ** - अर्द्ध रात्रि के मध्य की २ घटी। **ब्रह्ममुहूर्त्त उष:काल** - सूर्योदय से ५ घटी पहले। **अरूणोदय वेला** - सूर्योदय से ३ घटी पहले।

❀ दिनमान का विभाजन ❀

१ मुहूर्त्त का प्रमाण अनुपातिक २ घटी अथवा ४८ मिनिट का होता है। सूर्योदय से ६ घटी तक **प्रात:काल**। १२ घटी तक संगवकाल या **पूर्वाह्नकाल**। १८ घटी तक **मध्याह्नकाल**। २४ घटी तक अपराह्न काल। ३० घटी तक **सायंकाल**। इस प्रकार दिनमान में ५ का भाग देकर इष्टदिन के दिनमान घटीपल प्रमाण अनुसार अनुपातिक गणना से भी समझें। १ नाड़ी प्रमाण अर्थात् १ घटी मानक मान्य होता है।

★ आनन्दादि योगों के जानने का कोष्ठ ★

सं.	आनन्दादय: यो.	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	फलम्
१	आनन्द	अश्वि	मृग.	श्लेषा	हस्त	अनुरा.	उ.षा.	शत.	शुभ
२	कालदं.	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभि	पू.भा.	अशुभ
३	धूम्र	कृति.	पुनर्वसु	पू.फा.	स्वाति	मूल	श्रवण	उ.भा.	अशुभ
४	धाता	रोहिणी	पुष्य	उ.फा.	विशा.	पू.षा.	घ.	रेवती	शुभ
५	सौम्य	मृग	श्लेषा	हस्त	अनु.	उ.षा.	शत	अश्वि	शुभ
६	ध्वांक्ष	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभि.	पू.भा.	भरणी	अशुभ
७	केतु	पुनर्वसु	पूर्वाफा.	स्वाति	मूल	श्रवण	उ.भा.	कृति.	शुभ
८	श्रीवत्स	पुष्य	उ.फा.	विशा	पू.षा.	घनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	शुभ
९	वज्र	श्लेषा	हस्त	अनु.	उ.षा.	शत.	अश्वि.	मृग	अशुभ
१०	मुद्गर	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभि.	पू.भा.	भरणी	आर्द्रा	अशुभ
११	छत्र	पूर्वाफा	स्वाति	मूल	श्रवण	उ.भा.	कृति.	पुन.	शुभ
१२	मित्र	उ.फा.	विशा	पू.षा.	घनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	शुभ
१३	मानस	हस्त	अनुरा.	उ.षा.	शत.	अश्वि.	मृग	श्लेषा	शुभ
१४	पद्म	चित्रा	ज्येष्ठा	अभि.	पू.भा.	भरणी	आर्द्रा	मघा	शुभ
१५	लुम्बक	स्वाति	मूल	श्रवण	उ.भा.	कृति.	पुन.	पू.फा.	अशुभ
१६	उत्पात	विशा.	पू.षा.	घनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उ.फा.	अशुभ
१७	मृत्यु	अनु.	उ.षा.	शतभि	अश्वि.	मृग	श्लेषा	हस्त	अशुभ
१८	काण	ज्येष्ठा	अभि.	पू.भा.	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	अशुभ
१९	सिद्धि	मूल	श्रवण	उ.भा.	कृति.	पुन.	पू.फा.	स्वाति	शुभ
२०	शुभ	पूर्वा.षा.	घनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उ.फा.	विशा.	शुभ
२१	अमृत	उ.षा.	शतभि	अश्वि.	मृग.	श्लेषा	हस्त	अनु.	शुभ
२२	मुसल	अभि.	पू.भा.	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अशुभ
२३	गद	श्रवण	उ.भा.	कृति.	पुन.	पू.फा.	स्वाति	मूल	अशुभ
२४	मातंग	घनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उ.फा.	विशा.	पू.षा.	शुभ
२५	राक्षस	शत.	अश्वि	मृग	श्लेषा	हस्त	अनु.	उ.षा.	अशुभ
२६	चर	पू.भा.	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभि.	शुभ
२७	सुस्थिर	उ.भा.	कृतिका	पुनर्व.	पू.फा.	स्वाति	मूल	श्रवण	शुभ
२८	प्रवर्ध	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उ.फा.	विशा.	पू.षा.	घनि.	शुभ

अंकशास्त्र एवं वाहन तन्त्र

आप जो वाहन खरीदने जा रहे हैं, उसका रंग, नम्बर आपके लिए शुभ हो इसका निर्णय अंकशास्त्र के माध्यम से जान सकते हैं।

आज के नित्य के जनजीवन में विविध वाहन-सवारी संयंत्र का प्रगाढ एवं नित्योपयोगी सम्बंध है। हर व्यक्ति हेतु वाहन आवश्यकीय उपकरण विषय सुविधा प्रसाधन का स्वरूप है। जो वाहन आप क्रय करना चाहते हैं उसका अंक-नम्बर तथा रंग आपके लिये धारक श्रीकार शुभ हो इसका निर्णय-समाधान अंकशास्त्रीय व्यवस्था माध्यम नियामक अनुसार आप विदित कर सकते हैं। आपकी जन्म तारीख अंक गणनासूत्रानुसार 'मूल अंक' सूचक हैं - इनमें एक से लेकर नौ अंक तक का संख्या विधान है। इसके बाद की अंक संख्याओं को जोड़कर 'मूल अंक' निर्णय भी बन जाता है। यथा १ से ९ संख्या तक मूलांक स्पष्ट है तथा ९ अंक उपरान्त यदि १७ जन्म तारीख है तो १+७=८ मूल अंक मान्य होगा तथा जन्म तारीख-मास-वर्ष सन् इन सभी संख्याओं का योग भाग्यांक संज्ञा का भी बनता है। जन्म के मूल अंक अनुसार आपके वाहन का रंग तथा नम्बर क्या हो - समाधान यह कि -

● **मूल अंक १** - जिनका जन्म किसी भी मास की १-१०-१९-२८ तारीख को हुआ है, उनका मूलांक १ मान्य रहेगा। उनके लिये १, २, ४, ७ अंक योग वाले वाहन शुभश्रीकार तथा ८ अंक योग वाला वाहन शुभसूचक नहीं। सुनहला-पीला-ताम्र तथा गहरा हल्का भूरा अथवा हल्का हरा रंग-क्रीमिश सफेद रंग शुभसूचक तथा काला एवं नीला रंग शुभ नहीं। रविवार-सोमवार शुभ फलद। जिन जातकों का मूलांक एक १ होता है उनका मन स्थिर रहता है तथा दूरदर्शी बुद्धि वाले, किसी से भी यकायक सम्बंध प्रेम नहीं करने वाले होते हैं। अच्छी तरह सोच-विचारकर ही व्यवहार कायम करते हैं तथा जीवनभर प्रेम का निर्वाह करते गहरी सोच-समझ वाले बनते हैं। इनके प्रेम में शारीरिक सौन्दर्य की अपेक्षा वैचारिक धर्म का अधिक महत्व होता है

● **मूल अंक २** - जिनका जन्म किसी भी मास की २, ११, २०, २९ तारीख को हुआ है एवं जिनका मूलांक भाग्यांक २ है, उन हेतु १, २, ४, ७ अंक वाले वाहन शुभ तथा ९ अंक वाला वाहन अशुभ। इन हेतु सफेद-क्रीम, अंगूरी-हल्का हरा रंग शुभश्रीकार तथा नीला, काला, लाल गहरा रंग शुभ नहीं। रविवार, सोमवार, शुक्रवार शुभसूचक। इस मूलांक २ वाले जातक चंचल, कल्पनाशील, भावुक एवं साहस धैर्यशक्ति की कमी वाले होते हैं। वाहन चलन चालन सदुपयोग का लक्ष्य रखावें। आत्मविश्वास रखावें तथा मद्यपान से दूर रहें। साथ ही कला साहित्य के प्रेमी बनते हैं। भावुक प्रकृतिवश प्रेम प्रीति में अवरोधक स्थिति भी प्राप्त होवे।

● **मूल अंक ३** - जिनका जन्म किसी भी मास की ३, १२, ३१, ३० तारीख को हुआ है, उन हेतु ३, ९ अंक वाले वाहन शुभ तथा ५, ८ अंक वाले वाहन शुभ नहीं होते। इन हेतु विशेषकर पीला रंग अथवा हल्का नीला-काला रंग वाहन शुभ एवं गुरू-शुक्र-मंगलवार शुभश्रीकार तथा प्रकृति से आदर्शवादी, सिद्धान्तशील, अनुशासनप्रिय होते हैं। परस्पर प्रेम व्यवहार सम्पर्क भली प्रकार सोच-समझकर बनाते हैं। स्थायी प्रेम व्यवहार हेतु कुछ व्यवधान भी प्राप्त बने तथा परिणामतः प्रतिफल अनुकूल ही बने।

● **मूल अंक ४** - जिनका जन्म किसी मास की ४, १३, २२, ३१ तारीख को हुआ है एवं जिनका मूलांक-भाग्यांक ४ है उनके लिये २, ४, ७ अंक वाले वाहन शुभ होते हैं तथा ८ अंक वाहन अशुभ एवं रवि, सोम, शनिवार शुभधारक रहते हैं। इन हेतु क्रीमिश सफेद रंग तथा धूप छांव समान २ रंगों का समिश्रण यथा सुनहला-टू टोन एवं नीला तथा खाकी भूरा रंग शुभ बनता है। इनके व्यक्तित्व में आश्चर्यजनक एवं असाधारण कार्य करने की क्षमता होती है। धर्म, जाति, रूढिवाद से हटकर चलने वाले एवं दार्शनिक विचारधारा वाले बनते हैं तथा मौज-शौक में गति मति एवं व्ययशील रहते हैं। इन्हें धन-सम्पदा के संग्रह पर ध्यान रखना चाहिये।

● **मूल अंक ५** - जिनका जन्म किसी मास की ५, १४, २३ तारीख का हुआ है उनका मूलांक भाग्यांक ५ संख्या का मान्य है एवं ५ अंक वाला वाहन शुभ रहता है तथा ८, ९ अंक वाला वाहन अशुभ रहता है। इन हेतु चमकीला रंग, सफेद रंग, हल्का खाकी भूरा रंग शुभ रहता है। बुध, गुरू, शुक्रवार इन हेतु कारक श्रीकार रहते हैं। ये व्यापारिक प्रकृति प्रधान, बोलचाल में कुशल, लेखक एवं अपनी शक्ति से बाहर कल्पनाशील तथा कार्यरत बन पाते हैं। इन्हें नियोजित सन्तुलित कार्यरचना शैली पर ही ध्यान रखना चाहिए। किसी कार्य निर्णय में जल्दबाजी एवं आतुरता का स्वरूप कभी भी नहीं रखना चाहिये तथा प्रेम प्रसंग में सावधानी रखें।

● **मूल अंक ६** - जिनका जन्म किसी मास की ६, १५, २४ तारीख को हुआ है उनका मूलांक भाग्यांक ६ मान्य है। इन हेतु ३, ६ अंक वाले वाहन शुभ श्रीकार तथा ८, ४ अंक योग वाले वाहन शुभ नहीं होते तथा मंगल, गुरू, शुक्रवार विशेषकर शुभ रहते हैं। इन व्यक्तियों हेतु हल्का नीला-आसमानी एवं हल्का गुलाबी रंग तथा भूरा रंग शुभ। एवमेव काला या गहरा लाल रंग अशुभ होता है। ये जातक सौन्दर्य प्रधान गति मति, कला, स्वर, संगीतप्रेमी, वेशभूषा के शौकीन तथा स्वभाव से हठवादी बनते हैं। किसी के विकास उन्नति के प्रारूप को स्वीकार नहीं कर पाते हैं। जनजीवन, रहन-सहन ऐश्वर्यपूर्ण बनाने में आस्था रखते हैं। आधुनिक युगानुकूल वातावरण में आकर्षित बन पाते है।

● **मूल अंक ७** - जिनका जन्म किसी मास की ७, १६, २५ तारीख को हुआ है, उनका मूलांक भाग्यांक ७ है। इन हेतु १, ४, ७ अंक वाले वाहन शुभ रहते हैं तथा ९ अंक योग वाहन अशुभ रहता है तथा रविवार, सोमवार शुभसूचक रहते हैं। इनके वाहन का रंग हरा-पीला (लाईट) एवं सफेद श्रीकार रहे। ये जातक परिभ्रमण घूमने-फिरने, यात्रा प्रवास में अभिरूचिशील तथा परिवर्तनस्वरूप के इच्छुक रहते हैं। कल्पनाशक्ति विशेष रहते प्रचलित परम्परा से अलग नीति नियामक वाले रहते हैं तथापि आकर्षण शक्ति क्षमताशील रहते शारीरिक मानसिक कलात्मक रूप से गति मति वाले रहते हैं। दूसरे व्यक्ति की मन की बात सहज भाव से जान पाते हैं तथा आयात निर्यात कार्य से लाभशील रह पाते हैं।

● **मूल अंक ८** - जिनका जन्म किसी मास की ८, १७, २६ तारीख को हुआ है उनका मूलांक-भाग्यांक ८ है। इन हेतु ८ अंक योग वाले वाहन शुभ रहते हैं तथा ४ अंक योग वाले वाहन धारक नहीं होते हैं तथा इनके वाहन हेतु नीला-काला-भूरा तथा स्लेटी आदि गहरे रंग शुभश्रीकार एवं हल्के रंग के वाहन शुभ नहीं। विशेषकर शनिवार शुभ एवं रवि-सोमवार भी धारक बनते हैं। ये जातक अपने कार्य में दक्ष, स्वार्थशील, गंभीर एवं उदासीन गति मति वाले रहते हैं। प्रेम व्यवहार में न्यूनता एवं अकेलापन, सादगीपूर्ण जीवनक्रम में आस्था रखते हैं। अपने मित्र वर्ग से इच्छित वस्तु की कामना अपेक्षा विशेष वाले बनते हैं। अतः स्थिर प्रेम व्यवहार में न्यूनता बनना भी सहज समझें।

● **मूल अंक ९** - जिनका जन्म किसी मास की ९, १८, २७ तारीख का है, उनका मूलांक-भाग्यांक ९ बनता है। इन हेतु ३, ९ अंक योग वाले वाहन शुभ तथा ५, ७ अंक योग वाले वाहन धारक नहीं रहते हैं। इन हेतु मंगल, गुरू, शुक्रवार शुभ बनते हैं। इनके वाहन का रंग गुलाबी तथा गहरे लाल रंग का श्रीकार शुभ रहता है। इस तारीख भाग्यांक में उत्पन्न जातक साहसी प्रकृति, उग्र स्वभाव, स्पष्टवादी एवं आक्रामक नीति-रीति के होते हैं। तथापि यदि ये स्वभाव पर संयम बनावें तो भावी जीवनपथ शुभसूचक बन पावे। जनजीवन पथ संघर्षशील तथा विरोधाभासी वर्ग प्रायः बने तथा वाहन चलन चालन सदुपयोग पर विशेष ध्यान रखें एवं स्त्री पक्ष से व्यवहार सावधानी सर्वदा रखना योग्य रहे।

● **अंक समाधान संकेत** - किसी का जन्म २९.१२.१८८८ का बना है तो तारीख २९=२+९ अर्थात् ११=१+१=२ तारीख का अंक। मास दिसम्बर १२=१+२=३ का मास अंक। सन् १८८८=१+८+८+८=२५, २+५ अर्थात् ७। इस प्रकार २ तारीख ३ मास अंक + ७ सन् अंक एवं २+३+७=१२ अर्थात् १+२=३ तीन संख्या का भाग्यांक संयुक्तांक मान्य होगा। ●

वाहन क्रय एवं शुभारंभ मुहूर्त

मान्य नक्षत्र - अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, ज्येष्ठा, अभिजित्, श्रवण, घनिष्ठा, शतभिषा, रेवती। (मुहूर्त-परिजात) **विशेष सूत्र** - भद्रा, दुष्टयोग, निर्बल सूर्य, ४-९-१४ रिक्ता तिथि मंगलवार तथा ४,८,१२ वाँ चन्द्र एवं घात राशि चन्द्र विशेषतः त्याज्य है

● नवीन वर्ष प्रवेश सारिणी सौर आर्षमान-पूर्वानुगतम् ●

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०
वार	०१	०२	०३	०५	०६	००	०१	०३	०४	०५	०४	०२	०१	०६	०५	०४	०२
घटी	१५	३१	४६	०२	१७	३३	४८	०४	१९	३५	१०	४५	२१	५६	३१	०६	४२
पल	३१	०३	३४	०६	३७	०९	४०	१२	४३	१५	३०	४५	००	१५	३०	४५	००
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	००	००	००	००	००	००	००

● अभिनव वर्ष प्रवेश सारिणी वैधसिद्ध-वर्षमानानुगतम् ●

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०
वार	०१	०२	०३	०५	०६	००	०१	०३	०४	०५	०४	०२	०१	०६	०५	०३	०२
घटी	१५	३०	४६	०१	१६	३२	४७	०३	१८	३३	०७	४१	१५	४९	२२	५६	३०
पल	२२	४५	०८	३१	५४	१७	४०	०३	२६	४९	३९	२८	१८	०७	५७	४६	३६
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००

✦ **नवीन वर्ष साधना** - सम्प्रति नवीन वर्ष गणना हेतु भारतीय दैवज्ञों द्वारा दो प्रकार के वर्षमान से वर्षफल साधना की जा रही है। हमारे पास बहुधा पत्र आते रहते हैं कि दोनों प्रकार के वर्षमान कोष्ठ की रचना प्रकाशित की जावे। तदर्थ आर्ष परम्परानुगत ३६५।१५।३१।३० वर्षमान तथा नवीन वेधसिद्ध वर्षमान ३६५।१५।२२।५७ नियामक से दोनों कोष्ठ रचना प्रस्तुत है। गणितज्ञजन निज-निज सुविधा एवं अनुभव से प्रयोग में लेवें। दक्षिण भारत-कर्नाटक-केरल-मद्रास-महाराष्ट्र-गुजरात-आंध्रप्रदेश आदि में प्राय: नवीन वर्ष मानानुगत गणना मान्य है तो मध्यभारत में उत्तरोत्तर संभागों में उभयविध वर्ष मानानुगत गणना चरितार्थ है। ✦ **नवीन वर्ष प्रवेश पद्धति** - गताब्द गत वर्षों के वार घटि पल विपल में अपने जन्मकालिक वार तथा इष्ट घटी पल जोडने से नवीन वर्ष के वार एवं वर्ष कालिक, इष्ट घटि पल प्राप्त होंगे। कोष्ठ रचना में एक वर्ष से दस वर्ष तक तथा बाद में १०-१० वर्षान्तर में ध्रुवांक दिये हैं। यथा १६ वां वर्ष प्रवेश लाना है तो ५ तथा १० के गताब्द वार घटी पल विपल जोड़ने से १५ वें वर्ष के गताब्द वारादि प्राप्त होंगे। एवमेव २७ वां वर्ष प्रवेश लाना है तो ६ तथा २० गताब्द ध्रुवांक के योग से २७ वें वर्ष हेतु गताब्द वारादि बनेंगे एवं योग क्रिया करते किसी भी वर्ष के गताब्द वर्ष इष्ट काल वारादि प्राप्त होंगे। ✦ **गताब्द ज्ञान विधि** - जन्मसंवत् को वर्तमान संवत में घटाने में गताब्द (विगत वर्ष) प्राप्त होंगे। ✦ **वर्ष मूँथा स्थान** - जन्म लग्न भाव को प्रथम वर्ष मानते क्रमश: १-१ वर्ष वृद्धि हेतु लग्न से गणना करते रहें, जिस लग्नादि भाव स्थान पर इष्ट वर्ष की गणना पूर्ण होवे, उसी भाव की राशि में वर्ष लग्न, कुण्डली में मुँथा का स्थान न्यास होगा। विशेष वर्ष गणित विषयक विविध ज्ञान हेतु वर्षपत्र निर्माणोपयुक्त हिन्दी भाषा में वर्षफल सहित वर्ष फल कैसे मू. ४०) रू. तथा ताजिक नीलकण्ठी मू. ७०) रू. मनीआर्डर भेजकर मंगा लेवें।

● किसी देश के अक्षांश द्वारा इष्ट देश की पलभा ज्ञान हेतु सुगम विधि नियामक ●

अक्षांश	पलभा	अक्षांश	पलभा	अक्षांश	पलभा	अक्षांश	पलभा
०१	०।१२।३४	१५	३।१२।५४	२९	६।३९।४	४३	११।११।२४
०२	०।२५।९	१६	३।२६।२४	३०	६।५५।४१	४४	११।३५।२४
०३	०।३७।४४	१७	३।४०।५	३१	७।१२।३६	४५	१२।०।०
०४	०।५०।२१	१८	३।५३।६	३२	७।२९।५३	४६	१२।२५।३७
०५	०।१।०३।०	१९	४।७।५५	३३	७।४७।३१	४७	१२।५२।४
०६	१।१५।१४	२०	४।२२।१	३४	८।५।३८	४८	१३।१९।३४
०७	१।२८।२३	२१	४।३६।२२	३५	८।२४।७	४९	१३।४८।१८
०८	१।४१।१०	२२	४।५०।५३	३६	८।४३।५	५०	१४।१८।३
०९	१।५४।०	२३	५।५।३८	३७	९।२।२५	५१	१४।४९।८
१०	२।६।५४	२४	५।२०।३१	३८	९।२२।३०	५२	१५।२१।३२
११	२।१९।५५	२५	५।३२।४२	३९	९।४३।१	५३	१५।५५।३०
१२	२।३३।०	२६	५।५१।७	४०	१०।३।३६	५४	१६।३१।१
१३	२।४६।४१	२७	६।६।५०	४१	१०।२८।४८	५५	१७।८।३४
१४	२।५९।२८	२८	६।२२।४८	४२	१०।४८।१८		

कस्यापिअक्षांशत: कस्यापि देशस्य पलभाबोधक चक्रम्

जिस स्थान की पलभा बनानी हो वहां का अक्षांश जानकर उपरोक्त चक्र से इष्ट देश अक्षांश तथा उससे अगले अक्षांश की पलभाओं को घटा लेवें, शेष में इष्ट अक्षांश कला से गुणा करें, तथा गुणनफल में ६०,का भाग देने पर अंगुलात्मिका पलभा सिद्ध होगी। **यथा उदाहरण** - मद्रास की पलभा जाननी है तो वहां का अक्षांश १३।४ स्पष्ट है। अब पलभा चक्र से १३ और १४ अंश की पलभा लेने से २।४६।४१ तथा २।५९।२८ प्राप्त हुईं, इनका ऋणफल अन्तरांश ०।१२।४७ हुआ। इसमें इष्ट देश के अंश उपरान्त शेष कला ४ से गुणा किया तथा गुणनफल में ६० का भाग दिया लब्धि ०।०।५१ प्राप्त। इसको प्रथम पलभा २।४६।४१ में यथा स्थान जोड़ने से २।४७।३२ तथा **'अर्धाधिकं रूपं स्यात्'** नियम से २ अंगुल ४८ व्यंगुल पलभा सिद्ध हुई। इसी पलभा को अक्षभा या विषुवती भी कहते हैं। पलभा से चर खंड तथा चरखंड से स्वदेशीय उदयमान प्राप्त होता है। ❀ **निरक्षोदय या लंकोदयमान - लंकोदया विघटिका गजमानिगोन्कदस्त्रा, त्रिपक्ष दहना** - इस प्रमाण से ● २७८ पल मेष ● २९९ वृष ● ३२३ मिथुन ● ३२३ कर्क ● २९९ सिंह ● २७८ पल कन्या तथा तुला का लंकोदय मान एवं ● २९९ वृश्चिक ● ३२३ धनु ● ३२३ मकर ● २९९ कुंभ तथा ● २७८ पल मीन आदि सभी राशि का स्थिर उदयमान होता है। ❀ **इष्ट स्थानीय चरखंड साधन** - इष्ट स्थानीय पलभा को ३ जगह रखें उनमें क्रमश: १० तथा ८ और १०/३ से गुणा करने पर मेषादि ३ राशियों के क्रमश: ३ चर खण्ड होंगे तथा विपरीत उत्क्रम से कर्कादि ३ राशियों के होंगे। एवमेव मेषादि ६ राशियों के ही क्रमश: मीन, कुंभ, मकर, धनु, वृश्चिक तथा तुला राशि के चर खण्ड होंगे। ❀ **स्वदेशी उदयमान विधि** - मेष के लंकोदय जो उपरोक्त स्पष्ट हैं, इनमें इष्ट स्थानीय प्रथम गुणित चरखंड घटाने से पलात्मक मेष का उदयमान आवेगा। द्वितीय गुणित चरखंड को वृष के लंकोदय में घटाने में वृष का, तृतीय गुणितफल को मिथुन लंकोदय मान से घटाया तो मिथुन को उदयमान आया। कर्कादि कन्या राशि तक इन ३ में उत्क्रम नियम से कर्क में तीसरा, सिंह में दूसरा, कन्या में पहला चरखंड जोड़ने से कर्क से कन्या पर्यन्त उदयमान होंगे एवं मेषादि ६ राशि के उदय ही क्रमश: मीन, कुंभ, मकर, धनु, वृश्चिक व तुला के मान्य होंगे।

▲ स्वास्थ्य लक्षण सूत्र ▲

● **सुखसंज्ञकमारोग्यं विकारो दु:खमेव च** ● **समदोष: समाऽग्निश्च समधातुमलक्रिय:।** प्रसन्नात्मेन्द्रियमना: स्वस्थ इत्यभिधीयते॥ सु.सू.अ.१५। जिस व्यक्ति के तीन दोष (वात-पित्त-कफ) समान अवस्था में रहें जठराग्नि क्षुधा तत्व भी सम हों, सातों धातु (रस-रक्त-मांस-मेद-अस्थि-मज्जा-शुक्र) सम हों, धातुओं के मलों की क्रिया (मल मूत्रादि का यथा समय-सामयिक उत्सर्जन) तथा आत्मा, पंच ज्ञानेन्द्रियाँ (कर्ण-त्वचा-नेत्र-रसना-नासिका) की कार्यक्षमता तथा मन प्रसन्न हो-वह व्यक्ति ही परिपूर्ण स्वस्थ है। **''विकारो धातु वैषम्यं साम्यं प्रकृतिरूच्यते''** तथा आरोग्य जीवन कौन प्राप्त कर पाता है - **नित्यं हिताहारविहारसेवी, समीक्ष्यकारी विषयेष्वसक्त:। दाता सम: सत्यपर: क्षमावानाप्तोसेवी च भवत्यरोग:॥** सदैव हित आहार, हितविहार सेवन करने का स्वभाव वाला, सोचविचार कर क्रियाशील रहने वाला, बहु विषय-वासना से वंचित, त्यागी-दाता, सभी प्राणियों में तथा सभी अवस्था में समबुद्धि, सत्यनिष्ठा, सहिष्णु प्रकृति तथा विज्ञजनों का सत्संगशील मनुष्य निरोगी होता है। तभी शिष्टपुरूष हेतु नीतिवचन - **धर्मार्थकाममोक्षाणामारोग्यं मूलमुत्तमम्। रोगास्तस्यापहर्त्तार: श्रेयसो जीवितस्य च॥** धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष का सर्वोत्तम मूल आरोग्यता है, रोग विकार कल्याणकारक जीवन के अपहर्त्ता नाशक हैं।

▲ नवग्रह साधना-समाधान सूत्रावली ▲

शुभक्षणक्रियारम्भः जनिताः पर्वसम्भवाः ।
सम्पदस्सर्व लोकानां ज्योतिस्तत्र प्रयोजनम् ॥

♣ सेवा धर्म-सन्मार्ग द्वारा ग्रहशांति-अनुकूल प्रतिफल बनते आत्मसन्तोष तत्व का उदय स्वरूप स्वाभाविक ही बन पाता है। अभिप्राय यह भी कि नवग्रह सम्बंध विषयक व्यक्तियों की सेवा सुश्रुषा करने पर ग्रहजनित आदि व्याधि का पलायन बनता है। कौन सा ग्रह किस भाव से सम्बंध-रिश्ते का कारक है, इस सम्बंध में मीमांसा विज्ञान से ग्रहजनित अरिष्ट-कष्टदफल का निवारण होता है।

♣ आहार व्यवहार-वस्त्र विचार - नित्य के जनजीवन में अरिष्ट कष्ट प्रदायक ग्रहों के वार अनुसार वेशभूषा-पोशाख धारण करना एवं उपयुक्त खानपीन-आहार को स्वीकार करना तथा यथाशक्ति अनुदान करना भी सरल सुगम तन्त्र उपाय ग्रहजनित आधि व्याधि निवारक सूत्र है।

● **सूर्य**-रविवार के दिन मसूर की दाल, गुड़-गुड़ का हलवा सीरा, लाल रंग के फल-मिष्ठान आदि का प्रयोग एवं अनुदान करें तथा लाल रंग के वस्त्र धारण करें एवं लाल रंग की बोतल के पानी का उपयोग भी योग्य है। सूर्य पिता एवं पितृ पक्ष दादा-दादी और दशम भाव का कारक है। सूर्य विषयक विकार शान्त करने हेतु पिता एवं दादा-दादी तथा वयोवृद्धजन की सेवा करना भी सार्थक उपाय है।

● **चन्द्र** - यदि चन्द्रमा नीच का अथवा क्षीण वर्ग का है तो सोमवार के दिन दही, चाँवल, दूध एवं सफेद वस्तु पदार्थों का भोजन में विशेषकर सेवन करें और सफेद वर्ण वस्त्र धारण करें। चन्द्रमा माता और उनसे सम्बंध वाले रिश्तेदार यथा - मौसी-मौसा, मामा-मामी तथा चतुर्थ भाव का कारक होने से मातृपक्ष से सम्बंधित रिश्तेदारों की सेवा करें एवं चन्द्रजनित दोष विकार स्वाभाविक रूप से नष्ट बन पावे।

● **मंगल** - यदि निर्बल एवं कष्ट प्रदायक है तो इस दिन लाल वस्त्र पोशाख-रूमाल आदि का उपयोग करें तथा भोजन में गाजर, टमाटर, लाल मिर्च, मसूर की दाल, लाल रंग के फल आदि विशेषकर सेवन करें। मंगल भाई, पराक्रम और तृतीय भाव का कारक है। मंगल दोष विकार निवारण हेतु बन्धु भ्राता एवं इनके प्रियजन के प्रति सम्मान अथवा सेवा सहायता का मनोभाव कायम रखें।

● **बुध** - बुधवार के दिन साबूत हरे मूंग, इसी की छिलके सहित दाल, हरी साग सब्जी तथा सभी हरे रंग के फल का भोजन में प्रयोग अधिक करें एवं हरे रंग का रूमाल हरे वस्त्र भी धारण करें तथा हरे रंग की बोतल में रखा पानी पीना भी अनुकूल बनें। बुध बहन, बुआ, पुत्री, भूमि-भवन, वाहन, व्यापार आदि का कारक है। बुधजनित दोष निवारण हेतु बहन, बुआ, पुत्री आदि की सेवा सुश्रुषा विशेष शुभ है।

● **गुरू** - यदि निर्बल एवं कष्टप्रदायक है तो इस दिन चने की दाल, बेसन, बेसन का हलवा, तुवर दाल, सभी पीले रंग के फल, पीली रंग के मिष्ठान्न का भोजन में सेवन करें तथा पीले रंग की पोषाख वस्त्र आदि विशेषकर धारण करें। गुरू द्वितीय, पंचम, दशम भाव का कारक है। बृहस्पति गुरूजनित विकार निवारण हेतु शिक्षक, गुरू, ब्राह्मण, साधु-सन्त, गौ-माता आदि की सेवा प्रसाधना शुभसूचक

● **शुक्र** - दोष निवारण हेतु इस दिन उड़द की दाल, दूध, दही, खीर, साबूदाना, पोहा, केला, चाँवल, मैदा-सूजी तथा सफेद मिष्ठान्न का प्रयोग विशेषकर करें तथा सफेद रंग की पोषाख वस्त्र ही पहनें। यह सप्तम स्त्री भाव का कारक है। सभी स्त्री वर्ग, कन्या तथा स्त्री नारी-महिला का सम्मान करते यथोचित सेवा सहायता करें।

● **शनि** - दोष निवारण हेतु इस दिन काली उड़द दाल, काले तिल, काले अंगूर एवं जामुन आदि काले रंग के सभी फल एवं मिष्ठान्न आदि का भोजन में सेवन करें तथा काले रंग का रूमाल अथवा कोई भी एक काली पोषाख अथवा आसमानी-हल्का नीले रंग के वस्त्र धारण करें। शनिसेवक, नौकर, श्रमिक, दलित वर्ग, निर्धन तथा षष्ठ शत्रु भाव का कारक है। शनि दोष निवारण हेतु इन जन समुदाय की सहायता सेवा अनुराग भी शुभ है।

♣ शाश्वत अखण्ड-सन्मार्ग सूत्र ♣

सदा सुखदायिकनी विभाति शुद्धभावना।
सदैव दुःखदायिनी भवेच्च दुष्ट भावना॥
न निष्फलाः भवेद्यतः कदापि कोऽपि भावना।
यथामतिस्तथा गति वन्दति नेदवादिनः॥
सत्येन धार्यते पृथ्वी, सत्येन तपते रविः।
सत्येन वाति वायुश्च, सर्वं सत्ये प्रतिष्ठितम्॥

भूमण्डलीय विविध धर्मसूत्र प्रवर्त्तक

श्री आचार्य प्रवर - कालांश - परिगणना तन्त्र

सृष्टि का आदि शास्त्र - 'इयं विवस्वते योगं' (गीता ४-१) भगवान श्रीकृष्ण ने कहा इस अविनाशी योग तत्व सूत्र को मैने आरंभ में सूर्य से कहा। सूर्य ने अपने पुत्र मनु से कहा, जिसके अनुसार एक परमात्मा ही परम सत्य एवं परम तत्व है वह कण-कण एवं अणु-परमाणु में व्याप्त है। योग साधना के मर्म द्वारा वह परमात्मा दर्शन-स्पर्श और प्रवेश के लिये सुलभ है। श्री भगवान द्वारा उपदिष्ट वह आदि मार्मिक तत्व ज्ञान वैदिक ऋषि-महर्षियों से लेकर अद्यावधि अक्षुण्ण रूप संचरित प्रवाहित है। कण-कण में व्याप्त ब्रह्म ही सत्य है। "विज्ञानमानन्दं ब्रह्म-सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म - ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या जीवो ब्रह्मैव नापरः" इससे पृथक मोक्ष मुक्ति का कोई भी अन्य शाश्वत उपाय-सन्मार्ग नहीं है।

● **भगवान श्रीराम** (त्रेता युग-लाखों वर्ष पूर्व का कालांश)

● **योगेश्वर श्रीकृष्ण** (५००० वर्ष पूर्व श्रीगीता)

● **महात्मा मूसा** (३००० वर्ष पूर्व यहूदी धर्म) - तुमने ईश्वर से श्रद्धा हटायी - मूर्त्ति बनाई - इससे ईश्वर नाराज है। प्रार्थना में लग जाओ। सूत्र प्रसारित।

● **महात्मा जरथुस्त्र** (२७०० वर्ष पूर्व - पारसी धर्म) - अहूरमज्दा (ईश्वर) की उपासना द्वारा हृदय में स्थित राग-द्वेष, काम-क्रोधादि ८ विकारों को नष्ट करो जो दुःख के मूल कारण हैं।

● **भगवान महावीर** (२६०० वर्ष पूर्व जैन दर्शन ग्रन्थ सूत्रपात) - आत्मा ही सत्य है। कठोर तपस्या से इसी जन्म में जाना जा सकता है।

● **गौतम बुद्ध** (२५०० वर्ष पूर्व - महापरिनिब्बान सुत्त) - मैंने उस अविनाशी पद को प्राप्त किया - जिसे आदि पूर्व महर्षियों ने प्राप्त किया था। यही मूलतया मोक्ष का सन्मार्ग है।

● **मसीह ईसा** (२००० वर्ष पूर्व - ईसाई धर्म) - ईश्वर प्रार्थना से प्राप्त होता है। मेरे अर्थात् सद्गुरू के पास जाओ - इसलिये कि ईश्वर के ही पुत्र कहलाओगे

● **हजरत मुहम्मद सलल्लाहु** (१४०० वर्ष पूर्व - इस्लाम धर्म) - "ला इलाह इल्लल्लाह मुहम्मद रसूलल्लाह" जर्रे-जर्रे में व्याप्त खुदा (ईश्वर) के सिवाय कोई पूजनीय नहीं है। मुहम्मद साहब अल्लाह के केवल सन्देशवाहक हैं।

● **आदि शंकराचार्य** (१२०० वर्ष पूर्व लगभग) - जगत मिथ्या है। इसमें परम सत्य है केवल हरि और उनका नाम।

● **सन्त कबीर** (६०० वर्ष पूर्व लगभग) - राम नाम अति दुर्लभ, औरन ते नहीं काम। आदि मध्य और अन्त हूँ, रामहिं ते संग्राम॥

● **श्रीगुरू नानक** (५०० वर्ष पूर्व लगभग)- "एक औंकार सतगुरू प्रसादि" - एक औंकार ही सत्य है किन्तु वह सद्गुरू की कृपा का प्रसाद है।

● **स्वामी दयानन्द सरस्वती** (२०० वर्ष पूर्व लगभग) - अजर, अमर, अविनाशी एक परमात्मा की उपासना करें। उस ईश्वर का मुख्य नाम ओम् है।

इस प्रकार सभी धर्मसूत्र प्रवर्तक आचार्यवर्यगण समुदाय द्वारा एकमात्र ब्रह्म ईश्वर की सर्वव्यापक प्रभुसत्ता का ही सन्मार्ग मोक्ष मुक्ति हेतु स्वीकार किया गया है।

♠ **ऋग्वेद** - ऋते ज्ञानात्र मुक्ति। प्रज्ञानं ब्रह्म

♠ **यजुर्वेद** - अहं ब्रह्माऽस्मि

♠ **सामवेद** - तत्वमसि

♠ **अथर्ववेद** - अयमात्मा ब्रह्म

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते। पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते॥

ॐ = सच्चिदानन्दघनः। अदः = वह परब्रह्मः। पूर्णम् = सब प्रकार से पूर्ण है। इदम् = यह (जगत भी)। पूर्णम् = पूर्ण (ही) हैं क्योंकि पूर्णात् = उस पूर्ण (पर ब्रह्म) से ही। पूर्णम् = यह पूर्णः। उदच्यते = उत्पन्न हुआ है। पूर्णस्य = पूर्ण के। पूर्णम् = पूर्ण को। आदाय = निकाल देने पर भी। पूर्णम् = पूर्ण। एव = ही। अवशिष्यते = शेष रहता है।

ईशा वास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्। तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद् धनम्॥

जगत्याम-अखिल ब्रह्माण्ड में। यत् किंच-जो कुछ भी। जगत्-जड़ चेतन स्वरूप जगत है। इदम्-यह। सर्वम्-समस्त। ईशा-ईश्वर से। वास्यम्-व्याप्त है। तेन-उस ईश्वर को साथ रखते। त्यक्तेन-त्यागपूर्वक। भुञ्जीथाः-भोगते रहो। मा गृधः-इसमें आसक्त नहीं होना-क्योंकि। धनम्-धनादि योग्य पदार्थ। कस्य स्वित्-किसका है अर्थात् किसी का भी नहीं है।

उषः पान गुण-ब्रह्म मुहूर्त वेला

● जल पीने की अनुक्रमणिका-आयुर्वेदीय सुगम विधान ●

आयुष्य वृद्धि की कामना करने वाला जीव विशेषकर सूर्योदय के पूर्व शयन त्याग करके आठ अंजलि (लगभग १ गिलास) रात्रि में ताम्र पात्र में रखा पानी पीता है और ऐसा नियमपूर्वक करता है वह जरा-वृद्धत्व को सहज प्राप्त नहीं होकर, आरोग्य लाभ प्राप्त करते शतायु होने का गुण लाभ प्राप्त करता है। भाव प्रकाश में स्पष्ट उल्लेख है कि-

सवितुरूदयकाले प्रसृतिः सलिलस्य यः पिवेदष्टौ।
रोगजरापरिमुक्तो जीवेद्वत्सरशतं साग्रम्॥
अम्भसः प्रसृतोरष्टौ सूर्याऽनुदिते पिबेत्।
वातपित्तकफान् जित्वा जीवेद्वर्षशतं सुखी॥

भावार्थ - यह कि सूर्योदय पूर्व में जल की आठ अंजलि जो मनुष्य पीता है, वह वृद्धावस्था से मुक्त होकर सौ वर्ष तक जीता है। सूर्योदय पूर्व जलपान से वात-पित्त-कफ विकृति दूर होकर शतायु का वरदान प्राप्त होता है। साथ ही उषः पान विधान से बवासीर-कोष्ठबद्धता, कब्ज, शोथ, संग्रहणी, ज्वर, जठर, जरा, कुष्ठ, मेद विकार, मूत्राघात, रक्तपत्ति, कर्णविकार, गलरोग, शिरारोग, कटिशूल, नेत्र रोगों का पलायन होता है।

रात्रि का अंधकार दूर होने पर जो मनुष्य प्रातःकाल नाक से पानी पीता है, उसकी बुद्धि सचेष्ट होते, नेत्रों की दृष्टि गरूड़ के सदृश्य हो जाती है तथा विविध रोगों के नष्ट होने की पात्रता प्राप्त होती है। अधिक जल पीने से अन्न नहीं पचता। मनुष्य को अग्नि बढाने के लिये जल थोड़ा-थोड़ा, बार-बार पीना चाहिये। मूर्च्छा-पित्त-गरमी-दाह-विष-रक्त विकार-मदात्य-परिश्रम, भ्रम, तमकश्वास, वमन और उर्ध्वगत रक्त पित्त इन रोगों में शीतल जल पीना चाहिये। परन्तु पसली के दर्द, जुकाम, वायु विकार, गले के रोग, कब्ज-कोष्ठबद्धता, जुलाब लेने के बाद, नवज्वर, अरूचि, संग्रहणी, गुल्म, खांसी, हिचकी रोग में शीतल जल नहीं पीना चाहिए। जल गरम करके कुछ ठंडा करके पीना योग्य सूत्र है।

साथ ही कथन यह भी कि - मंदाग्नि, शोथ-सूजन, क्षय, मुख से जल बहने, उदर रोग, कोढ, नेत्र रोग, ज्वर, अल्सर तथा मधुमेह में थोड़ा पानी पीना चाहिए। शीतल जल का पाचन दो प्रहर में होता है तथा गरम करके शीतल किया हुआ जल १ प्रहर में ही पच जाता है। गुनगुना पानी अगर पिया जाए तो चार घड़ी में ही पच जाता है। आहार तथा पानी कभी साथ साथ नहीं लेना चाहिए। पानी और भोजन साथ साथ लेने से गैस-वायु विकार बनता है तथा पाचक रस मन्द होते, पाचन क्रिया शिथिल होती है। मल आंतों में जमकर रक्त रस का निर्माण न्यून हो जाता है

भोजन के मध्य भाग में कुछ जल पीना तथा भोजनोपरान्त १ या १॥ घंटे बाद पानी पीना हितकर रहता है। ताम्बे के पात्र में रात में रखा जल सुबह सूर्योदय पूर्व ५-६ तुलसी के पत्तों के साथ पीने से सोने में सुहागे समान गुण धर्म समझना चाहिये।

● अजीर्णे भेषजं वारि जीर्णे वारि बलप्रदम्।
अमृतं भोजनार्धे तु भुक्तस्योपरि तद्विषम्॥ ●

★★ अवशेष भाग - सुश्रुत स्वास्थ्य संहिता....

नित्यं हिताहारविहार सेवी, समीक्ष्यकारी विषयेष्वसक्तः।
दाता समः सत्यपरः क्षमावानाप्तोसेवी च भवत्यरोगः॥

भावार्थ-यह कि सदैव हितकारी आहार, हित विहार-आचरण करने का स्वभाव वाला, सोच विचारकर क्रियाशील रहने वाला, बहु कामादि विषय वासना से वंचित, त्यागी-दाता एवं सभी प्राणियों में तथा सभी अवस्था में सम बुद्धि-क्षमावान, सत्यनिष्ठा, सहिष्णु प्रकृति तथा विज्ञजनों का सत्संगशील मनुष्य निरोगी-स्वस्थ्य बनता है।

दोषाः कदाचित् कुप्यन्ति जिता लंघन पाचनैः।
संशोधनैस्तु ये शुद्धा नस्तेषां पुनरूद्भवः॥
विनाऽपि भैषजैर्व्याधि पथ्यादैव निवर्त्तते।
न तु पथ्य विहीनानां भैषजनां शतैरपि॥

▲ आयुर्वेदीय वचनामृत-श्लोक सारावली ▲

आयुर्हिताहितं व्याधिर्निदानं शयनं तथा।
विद्यते यत्र विद्वद्भिः स आयुर्वेद उच्यते॥
हिताहितं सुखं दुःखमायुस्तस्य हिताहितम्॥
मानं च तच्च यत्रोक्तमायुर्वेदः स उच्यते॥
"स्वस्थस्य स्वास्थ्य रक्षणमातुरस्य विकार प्रशमनेऽप्रमादः"
सुखसंज्ञकमारोग्यं विकारो दुःख मेव च
दोषाणां साम्यमारोग्यं वैषम्यं व्याधिरूच्यते॥

भावार्थ - मानव जीव के आयु सुख विषयक हितकारी तथा अहितकारी गुण विषय का विवेचन एवं शारीरिक रोग उत्पन्न बनते उस विषयक चिकित्सा-औषध आदि का विचार जिस शास्त्र में वर्णित होता है वह आयुर्वेद नामकीय संज्ञा का मान्य। साथ ही आयुर्विज्ञान की विशेषता यह भी कि स्वस्थ्य पुरूष का स्वास्थ्य निरंतर कायम रहे तथापि कभी विकार-रोग बनते शांति विधायक उपक्रम औषध एवं दिनचर्या-रात्रिचर्या तथा विशेषकर पथ्य नियामक का निर्णय सन्देश प्रदान करना ही आयुर्वेद का अभिप्राय है। नित्य का जीवनक्रम दिनचर्या सुखपूर्वक बने यह स्वास्थ्य तथा रोग विकारशील बनते रोगी जीवन का उपकरण। मूलतया शरीरस्थ त्रिदोष वात-पित्त-कफ का सन्तुलन साम्य रूप बना रहे। इस प्रकार का ही आहार विचार-व्यवहार ऋतुचर्या पर बुद्धिमान पुरूष क्रियाशील रहता है।

न तक्रसेवी व्यथते कदाचित् न तक्रदग्धाः प्रभवन्ति रोगाः।
यथा सुराणाममृतं प्रधानं तथा नराणां भुवि तक्रमाहुः॥
भोजनान्ते पिबेत् तक्रं मैथुनान्ते च पयः
निशान्ते च पिबेत् वारि स्वप्नेऽपि वैद्यो न दृश्यते॥

भावार्थ - भोजन के अन्त में लवण-नमक-सिका जीरा युक्त छाछ सेवन करने वाला व्यक्ति विशेषकर स्वस्थ्य ही रहता है। यथा स्वर्ग में देवताओं हेतु रसपान अमृत संज्ञा का होता है उसी प्रकार मनुष्यों के लिये पृथ्वी-भूलोक पर तक्र (छाछ) अमृत संज्ञा से ही मान्य है। विशेष कथन यह भी कि भोजन के उपरान्त छाछ (मक्खन रहित) तथा कामवासना-रतिक्रिया-स्त्री प्रसंग के उपरान्त कुछ गरम दुग्ध पान करना बलवीर्य स्वास्थ्यवर्धक तथा रात्रि अन्त ब्रह्म मुहूर्त में यथाशक्ति जल का पीना सुखद सूत्र है।

यस्य देशस्य यो जन्तुस्तज्जं तस्यौषधं हितम्।
देशादन्यत्र वसतस्तत्तुल्य गुणमौषधम्॥

भावार्थ - जिस देश प्रदेश का मानव जीव जन्मज है मूलतया उसी देश-प्रदेश की जड़ी-बूटी-औषध का व्यवहार प्रयोग ही लाभदायी रहता है।

प्राणायाम : सद्सच्चामृतं प्राणैव



पंचभौतिक नर-नारी देह में स्थित "प्राण" ही सर्वोच्च सत्ता तंत्र है। यह सत् और असत् एवं उससे भी श्रेष्ठ जो अमृतस्वरूप परमात्मा है, वह भी यह प्राण ही है। "प्राणे सर्वं प्रतिष्ठितम्" नित्य के जनजीवन के सुस्वस्थ्य तथा शक्तिप्रदायक रचना हेतु प्राणायाम ही मूलतया जीवन का आधार स्तंभ है। प्राणायाम से शरीर में विशुद्धि शक्ति-ओज-उर्जा प्राप्त होती है। अपने दाहिने अंगुष्ठ से दाहिने नासारन्ध्र (नाक) को दबाकर रखे तथा वाम-बांये नासारन्ध्र-नथुने छिद्र से सरलतया अपनी शक्ति अनुसार वायु को मस्तिष्क की तरफ खींचना चाहिये। फिर बायें-वाम नासापुट छिद्र को (तर्जनी-दीर्घा) अंगुली से दबाकर दाहिने नासिका छिद्र से वायु को निकालें। इस क्रिया को सूर्योदय से पूर्व-मध्याह्न काल तथा सूर्यास्त काल के समय तीन या पाँच बार करने से शरीरस्थ नाड़ियों का शुद्धिकरण बनते मनोत्साह एवं आत्मीय स्वास्थ्य का लाभ बन पाता है। शरीर-देहस्थ इस शरीर रूपी यन्त्र की गति को सन्तुलित-नियमित रखने हेतु श्वांस गति प्रक्रिया एकमात्र प्रमुख तन्त्र है। प्राणायाम का संविधान श्वांस परिचक्र रचना के व्यवस्थापन हेतु सर्वेश्वर प्रदत्त एक सुगम साधना का सूत्र है। भारतीय ऋषि-महर्षियों द्वारा इस विषयक बहुविध अनुसंधान करके ही प्राणायाम योग का नियामक सर्वजन हितार्थ चरितार्थ किया है। वस्तुत: प्राणायाम का भाव है - प्राणों को वश में करना। यह समस्त ब्रह्माण्ड और जो भी कुछ इसके अन्तराल में व्याप्त है, वह सभी कुछ आकाश और प्राण इन दोनों तत्व से बना हुआ है। प्राण वह शक्ति पुंज है, जिसने आकाश को भी अधिष्ठित कर विश्व की रचना की है। वस्तुगत जिस तरह आकाश सर्वशक्तिमान और सर्व व्यापक है, उसी प्रकार प्राण भी इस विश्व की सर्वसमर्थ एवं सर्वव्यापिनी शक्ति है। प्राण विश्व की मानसिक तथा शारीरिक सभी प्रकार की शक्तियों का समष्टिगत प्रारूप है एवं इसी प्राण विज्ञान और निग्रह क्रिया को प्राणायाम संज्ञा प्रदान की गई है। योगियों के मतानुगत जो व्यक्ति दिव्य आनंद का रसास्वादन करना चाहता है और विविध व्याधियों से मुक्त होना चाहता है, उन हेतु प्राथमिक रूप में प्राण को वश में करके इसी की सहायता से निर्वाण वा समाधि रूप में मग्न होकर अलौकिक ज्ञान विज्ञान को प्राप्त करना एक नैसर्गिक सन्मार्ग है।

इस प्राण को वश में करने हेतु अपने निकटतम पदार्थों को अधीन करने हेतु प्रयास बनावें। वैसे तो शरीर हमारे बहुत निकट है, परन्तु मन सर्वाधिक समीप है। जो प्राण हमारे शरीर और मन में कार्य कर रहा है, वह विश्व के अन्य सभी प्राणों की अपेक्षा हमारे निकट है एवं संसार सागर से निवृत्ति हेतु प्राणायाम की प्रसाधना नर देह हेतु परम सत्य विषय है।

♣♠ आर्यावर्त्तीय-आद्य ऋषि-महर्षय: ♠♣

अंगिरा जमदग्निश्च वशिष्ठः कश्यपो भृगुः।
आत्रेयौ गौतमः सांख्यः पुलस्त्यो नारदोऽसितः॥
अगस्त्यो वामदेवश्च मार्कण्डेयाश्वलायनौ।
पारीक्षिर्भिक्षुरात्रेयो भरद्वाजः कपिञ्जलः॥
विश्वामित्राश्वरथ्यौ च भार्गवश्च्यवनोऽभिजित्।
गार्ग्यः शाण्डिल्यकौण्डिन्यौ वार्क्षिर्देवलगालवौ॥
सांकृत्यो बैजपापिश्च कुशिको बादरायणः।
बडिशः शरलोमा च काप्यकात्यायनावुभौ॥
कांकायनः कैकशेयो धौम्यो मारीचिकाश्यणौ।
शर्कराक्षो हिरण्याक्षो लोकाक्षः पैंगिरैव च॥
शौनकः शाकुनेयश्च मैत्रेयो मैमतायनिः।
वैखानसा बालखिल्यास्तथा चान्ये महर्षयः।

छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौकल्पोऽथ पठ्यते।
ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरूक्तं श्रोत्रमुच्यते॥
शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम्।
अस्य च शास्त्रस्य वेदचक्षुष्टव मुक्तं शिक्षायाम्॥

● योगाश्चित्त वृत्ति निरोधः योग सूत्र ●

मानव इस असार संसार में रजोगुण-तमोगुण जनित प्रकृति का निवारण एवं मन की एकाग्रता करते, विशुद्ध सत्वगुण क्रियाधारित बनकर तदुपरान्त उसका निरोध कर 'एकाग्र' अर्थात् एकैव परमात्मा का सद्सिद्धान्त एवं सत्यपरायण मर्मसूत्र का जीवनीय कर्म इनके अग्रभाग में मन+बुद्धि+अहंकार (रूपक चित्त) मनोवृत्ति को भी धारण करते 'निरूद्ध' अर्थात् सांसारिक मिथ्या पाखण्ड प्रपंच से मन की गति को निर्धारित करने का नित्य प्रति अभ्यास स्थापित करने का निरन्तर (अहर्निश) साधक बनें एवं सरलतया निरापद मोक्ष-मुक्ति का आनंद स्वरूप ही चरितार्थ होगा-यह आत्मविश्वास-क्रिया पथ सुदृढ शाश्वत सत्य समझें।

♣ त्रिविध दुःख सूत्रावली ♣ (१) आध्यात्मिक-शरीर विषय विकार ज्वरादि संक्रामक रोग-पीड़ा (२) आधिभौतिक दूसरे अन्य जीव प्राणियों हिंसक क्रिया आतंक-उत्पातकारक वर्ग से पीड़ा (३) आधिदैविक-अतिवृष्टि, अतिताप, परिताप, अति शीत-मन इन्द्रियों की चंचलता, नवग्रहजनित मनोविकार आदि से मुक्ति पाना 'अत्यन्त' पुरूषार्थ सन्मार्ग ही समझें।

◆ परमगति मोक्ष का लक्षण ◆

यदा पञ्चावतिष्ठन्ते ज्ञानानि मनसा सह।
बुद्धिश्च न विचेष्टते तामाहुः परमां गतिम्॥ उपनिषद् सूत्र

भावार्थ यह कि निर्विकार गतिक मन के साथ पाँच ज्ञानेन्द्रिय जीव के साथ रहती है और बुद्धि तत्व का निर्णय-निश्चय स्थिर सत्य वैचारिक संज्ञा का होता है। उसको परमगति अर्थात् मोक्ष कहते हैं। इस सूत्रानुसार ही यह मुक्ति को प्राप्त जीव शुद्ध दिव्य नैत्र और शुद्ध मन-मानस से सांसारिक कार्यों को देखता-प्राप्त होता रमण करता है। आत्मा-परमात्मा (जीव-ब्रह्म) एक समान गुण संज्ञक नहीं ? परमेश्वर-परमात्मा अनन्त स्वरूप, सामर्थ्य, दिव्यदृष्टा, दिव्य शाश्वत सत्य रचेता, गुण कर्म स्वभाव वाला है। अत: वही कभी अविद्या और दु:ख बन्धनादि अनैतिक कार्य कर्मों में नहीं जा सकता है। परन्तु जन्मज मानव-जीव ज्ञान युक्त होकर भी पूर्णतया सम स्वरूप तथा अल्पज्ञ और सीमित-परिस्थिति गुणकर्म स्वभाव वाला रहता है तथा परमेश्वर परमब्रह्म के गुण-कर्म-स्वभाव तुल्य कभी नहीं हो सकता है अपितु मानव जीव परमेश्वर-परमात्मा ब्रह्म का ही अंशज अंश मात्र है।

● जीवन साधक - मिताहार ●

योग सिद्धि के चाहने वाले साधक को अल्पमात्रा में पौष्टिक तत्वों वाला भोजन करना चाहिए। मिताहार अथवा अल्पाहार एक दूसरे के पर्याय हैं। अत: अभ्यासपूर्वक अल्पाहारी बनने का लक्ष्य रखना चाहिए। अल्पाहार से शरीर क्रियाशील बनता है तथा आलस्य-प्रमाद का पलायन सहज ही बन पाता है। साथ ही इस नियामक से जीवन में स्फूर्ति एवं उमंग-मनोत्साह का संचार भी बन पाता है। शुद्ध और हल्का आहार मन-चित्त शुद्धि और प्रसन्नता का मूल आधार है। विद्वानों का अभिकथन भी है कि "जैसा खावे अन्न वैसा बनता मन।" शुद्ध मधुर अल्प, स्निग्ध साधक ले आहार। बने उमंग स्फूर्ति घटे आलस्य विकार॥

सप्तवार कार्याऽकार्य विवेचना

१. **रविवार** - संगीत वाद्यादि-शिक्षा, स्वास्थ्य, विचार, औषधसेवन, मोटर, यान, सवारी, नौकरी, पशु खरीदी, हवन मंत्र, उपदेश शिक्षा, दीक्षा, अस्त्र, शस्त्र, वस्त्र धातु की खरीद व बेचान, वाद-विवाद, न्याय विषयक सलाह कार्य, नवीन कार्य पदग्रहण तथा राज्य प्रशासनिक कार्य, सेना संचालन आदि कार्य शुभ।

२. **सोमवार** - कृषि खेती यंत्र खरीदी, बीज बोना, बगीचा, फल, वृक्ष लगाना, वस्त्र तथा रत्न धारण, औषध क्रय-विक्रय, भ्रमण-यात्रा, कला-कार्य, स्त्री-प्रसंग, नवीन कार्य, अलंकार धारण, पशु पालन, वस्त्र भूषण क्रय-विक्रय हेतु शुभ।

३. **मंगलवार**- जासूसी कार्य, भेद लेना, ऋण देना, गवाही, चोरी, विष कार्य, असद् कार्य, अग्नि विषयक कार्य, सेना-संग्राम, युद्ध नीति-रीति, वाद-विवाद निर्णय, साहस कृत्य आदि कार्य शुभ, पर मंगल को ऋण लेना अशुभ है।

४. **बुधवार**- ऋण देना अहितकर तथा शिक्षा-दीक्षा विषयक कार्य, विद्यारम्भ, अध्ययन, चातुर्यकार्य, सेवावृत्ति, बही-खाता, हिसाब-विचार, शिल्प कार्य, निर्माण-कार्य, नोटिस देना, गृह-प्रवेश, राजनीति विचार, शालागमन शुभ हैं।

५. **गुरूवार** - ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा, धर्म-न्याय विषयक कार्य, अनुष्ठान, साइंस, कानूनी व कला संकाय शिक्षा आरम्भ, ग्रह शान्ति, मांगलिक कार्य, नवीन पदग्रहण, वस्त्र आभूषण धारण, यात्रा, ट्रक-ट्रेक्टर, इंजन, मोटर, यान, चालन, औषध सेवन व निर्माण शुभ साथ ही शपथग्रहण शुभद।

६. **शुक्रवार** - सांसर्गिक काम, गुप्त विचार गोष्ठी, प्रेम-व्यवहार, मित्रता, वस्त्र, मणिरत्न धारण तथा निर्माण, अर्क, इत्र, नाटक, छाया-चित्र, फिल्म, संगीत आदि कार्य शुभ। भंडार भरना, खेती करना, हल प्रवाह, धान्यरोपण, आयु, ज्ञान, शिक्षा शुभ।

७. **शनिवार** - गृह प्रवेश व निर्माण, नौकर-चाकर रखना, धातु लोह, मशीनरी, कलपुर्जों के कार्य, गवाही, व्यापार विचार, वादविवादादि दुष्टकार्य, वाहन खरीदना, सेवा विषयक कार्य करना शुभ। परन्तु बीज बोना, कृषि खेती कार्य शुभ नहीं।

संकेत - इन सभी विचारों के अलावा 'समयशुद्धि' तथा अपनी जन्मराशि अनुसार चन्द्र चलन-कलन भी विचारें।

नक्षत्रसंज्ञा-फलविवेक

१. **ध्रुव स्थिर नक्षत्र** - तीनों उत्तरा, रोहिणी तथा रविवार, ध्रुव स्थिर संज्ञा के हैं। इनमें स्थिर कार्य, बीज बोना, गृहारम्भ, शान्तिकर्म, बाग-बगीचा, वृक्षारोपण, गायन, वादन, शिक्षा, मैत्री, संधिविचार, वस्त्राभूषण निर्माण व धारण करना शुभ, खेल, खिलाड़ी हेतु शुभद। मंत्रीपदीय व अन्य शपथग्रहण, स्थान ग्रहण शुभ।

२. **चर चल नक्षत्र** - स्वाति, पुनर्वसु, श्रवण, घनिष्ठा, शतभिषा तथा सोमवार। इनमें मोटर, ट्रक, टेक्टर, सायकल आदि विविधयानों का चलाना, यात्रा क्रय-विक्रय, दूकान खोलना, चित्रकारी, विद्या ज्ञान शुभ

३. **उग्र क्रूर नक्षत्र** - तीनों पूर्वा, भरणी, मघा तथा मंगलवार इनमें दुष्ट कार्य, तस्करी धन्धा, विष व शस्त्रकर्म शुभ हैं।

४. **मिश्र + साधारण नक्षत्र** - विशा, कृतिका नक्षत्र तथा बुधवार, इनमें मांगलिक कार्य, व्यापार, उपयोग शुभ तथा उग्र नक्षत्र कार्य भी कर सकते हैं।

५. **क्षिप्र लघु नक्षत्र** - हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभि तथा गुरूवार इनमें चर + चल नक्षत्र में कहे कार्य भी शुभ।

६. **मृदु मैत्र नक्षत्र** - मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा तथा शुक्रवार इनमें ध्रुव + स्थिर नक्षत्र में कहे कार्य भी शुभ होते हैं।

७. **तीक्ष्ण दारूण नक्षत्र** - मूल, ज्येष्ठा, आर्द्रा, आश्लेषा तथा शनिवार इनमें उग्र + क्रूर नक्षत्र विचार में बताये गये कार्य भी शुभ होते हैं।

कुयोगपरिहार

शुभाऽशुभ तिथिवार नक्षत्रादि योग जो कथित हैं, उनके स्थान, राशि, दिशा, दिन भेद से परिहार वचन शास्त्रों में वर्णित हैं उन्हें भी विचार लेना उचित है। क्योंकि मुहूर्त्त वेला शोधन में परिहार शास्त्र वचनों पर ध्यान देना युक्तियुक्त है। '**मध्याह्नात् परतः शुभम्**' वचन विशेष से भद्रा, व्यतिपात, वैधृति, जन्म नक्षत्रादि विविध दोष दोपहर बाद न्यून होते हैं तथा सर्वार्थ-अमृत सिद्धि-रवि योग भी कुयोग दोषसंघविनाशक हैं। इसी प्रकार और भी शास्त्रीय सूत्र-**उत्पाते यमघण्टे च काणे च क्रकचे तथा तिथौदग्धे च काले च प्राग्यामात् परतः शुभम्॥ क्रकचो मृत्यु योगाख्यो दिन दग्ध तथैव च। चन्द्रे शुभे क्षयं यान्ति वृक्षा वज्राहता इव॥ वारर्क्ष तिथियोगेषु यात्रामेव विवर्जयेत्। विवाहादीनि कुर्वीत गर्गादीनामिदं वचः॥** अभिप्राय यह कि शुभ चन्द्रबल गणनाप्रधान विषयक है। यह सूत्र रचना परिहार समादेशिक स्पष्ट है।

तिथिवारनक्षत्रादिषु शुभाऽशुभयोगाः कोष्टकम्

योग	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	क्रम
चर. क्रकच. दग्ध.	पू.भा. १२ ति. १२ ति.	भरणी ११ ११	आर्द्रा. १० ५	मघा. ९ ३	चित्रा ८ ६	ज्येष्ठा ७ ८	अभि. ६ ९	१ २ ३
मृत्युदा.	१ ६ ११	२ ७ १२	१ ६ ११	३ ८ १३	४ ९ १४	२ ७ १२	५ १० १५	४
सिद्धि	०	०	३ ८ १३	२ ७ १२	५ १० १५	१ ६ ११	४ ९ १४	५
उत्पात मृत्यु काण. सिद्धिः	विशा. अनु. ज्ये. मूल	पू.षा. उत्त.षा. अभि. श्रव.	धनि शत. पू.भा. उ.भा.	रेव. अश्वि. भर. कृति.	रोहि. मृग. आर्द्रा पुन.	पुष्य. अश्ले. मघा. पू.फा.	उ.फा. हस्त चित्रा स्वाति	६ ७ ८ ९
यमदष्ट्र.	मघा घनि.	मूल विशा.	कृति. रोहि.	पू.षा. पुन.	उत्तराषा. अश्वि.	रोहि. अनु.	श्रव. शत.	१०
यमघण्ट मूसल. दग्ध अमृ.सि.	मघा अभि. भरणी हस्त	विशा. पू.भा. चित्रा मृग.	आर्द्रा भर. उत्त.षा. अश्वि	मूल आर्द्रा घनि. अनु.	कृति. मघा उत्त.फा. पुष्य	रोहि. चित्रा ज्ये. रेव.	हस्त ज्येष्ठा रेवती रोहि.	११ १२ १३ १४

रवियोग - सूर्य के नक्षत्र चार से इष्ट दिन नक्षत्र संख्या ४, ९, ६, १०, १३, २० वीं हो तो ये रवियोग विविध प्रकार से दोषसंघविनाशक एवं कुयोगनाशक हैं।

कार्य विशेष में सिद्धि योगों का भी त्याग - गृहप्रवेशे यात्रायां विवाहे च यथाक्रमम्। भौमेऽश्विनीं शनौ ब्राह्मं गुरौ पुष्यं विवर्जयेत्॥ भावार्थ - गृह प्रवेश में मंगल अश्विनी तथा शनि रोहिणी योग यात्रा में तथा गुरूपुष्य योग विवाह में मान्य नहीं। यह वचन मुहूर्त्तचिन्तामणिः अंतर्गत स्पष्ट उल्लेखित है।

गुरू-शुक्र अस्त-परिहार- आवश्यकेषु कार्येषु राज्ञां तत्कर्मकारिणाम्। विवाहीदीनि कुर्वीत मोढ्येऽपि गुरूशुक्रयोः॥ दुर्भिक्षे राष्ट्रभंगे वा पित्रोर्वा प्राण संशये। प्रोढायामपि कन्यायां प्रतिकूलं न दूष्यति॥ भावार्थ यह कि अति आवश्यकता, दुर्भिक्ष, संकटकाल, देशविपत्ति आदि स्थिति विशेष में राजनायक-राजकर्मचारी तथा समगतिक-आतुर व्यक्ति गुरू शुक्र अस्त कालांश में भी कार्य निर्वाह करें, ऐसा परिहार वचन प्रतीत होता है। तथा च - नित्ययाने गृहे जीर्णे प्राशने परिधानके। वधू प्रवेशे मांगल्ये न मोढ्य गुरूशुक्रयोः॥ नष्टेशुक्रे तथा जीवे सिंहस्थे च बृहस्पतौ कार्या चैव स्वदेव्यऽर्चा प्रत्यब्दं कुलधर्मतः॥ दैनिक यात्रा, जीर्ण गृह निर्माण, नवीन वस्त्र धारण, प्रतिवार्षिक व्रतोत्सव कुलदेवी पूजा, अन्नप्राशन आदि में भी गुरू शुक्रास्त समय निषेध नहीं।

✦ विविध ग्रहसंज्ञा विवेक ✦

नवग्रहों का भाग्योदयकालांश - रवि का २२ से २४ वर्ष तक। चन्द्र का २४ से २५ वर्ष तक। मंगल का २८ से ३२ वर्ष तक। बुध का ३२ से ३६ वर्ष तक। गुरू का १६ से २२ वर्ष तक। शुक्र का २५ से २८ वर्ष तक। शनि का ३६ से ४२ वर्ष तक तथा राहु ४२ से ४८ वर्ष तक और केतु ४८ से ५४ वर्ष तक प्रारब्ध विकासक कालांश

ग्रहाणां धात्वादि - सूर्य-अस्थि, चन्द्र-रूधिर, भौम-मज्जा एवं मांस बुध-चमड़ी, गुरू-चर्बी, शुक्र-वीर्य, शनि-राहु-केतु नसों के अधिपति हैं। इनकी विषम नेष्ट स्थिति में इन धातुओं की कमी एवं रोग तथा शुभ सबल स्थिति में इन धातुओं का सौख्य प्रभावशील बनना स्पष्ट है।

ग्रहाणां नैसर्गिक प्रतिफलं -
● सूर्य-पिता, आत्मा, प्रताप, आरोग्य, शक्ति, लक्ष्मी। ● चन्द्र-मन, बुद्धि, उत्तम सोसायटी, माता, धन का कारक। ● मंगल-पराक्रम, रोग, गुण, भाई, भूमि, जाति, शत्रु, शासक। ● बुध-विद्या, बंधु, विवेक, मामा, मित्र, वाणी-वचन। ● गुरू-बुद्धि, शरीर, पुष्टि, पुत्र और ज्ञान का प्रदायक है। ● शुक्र-स्त्री सुख, वाहन, भूषण, काम, श्रृंगार, व्यापार सुख। ● शनि-आयु, जीवन, मृत्यु, सुख, दु:ख कारक आदि उपलक्षक।

ग्रहाणां मौलिकतत्व - रवि, मंगल-तेजतत्व, चन्द्र, शुक्र - जलतत्व। बुध-पृथ्वी तत्व। गुरू-आकाशतत्व। शनि-वायुतत्व। राहु जल - वायुतत्व। केतु आकाश - तेजतत्व के गुणधर्म से योगवाही है।

अथ द्वादश भाव फल विबोधक यंत्रम्

फलित अन्वेषण के समय किस भाव से क्या क्या विचार होना चाहिए इस हेतु सुलभ कोष्ठ प्रस्तुत है। साथ ही ग्रह + राशि + कारक + नेष्ट ग्रहों के स्थान व भाव संज्ञा एवं विशेष प्रभावी स्थान भी स्थापित किये गये हैं। निर्णयसागर पंचांग-नीमच

प्रथम भाव - शरीर, वर्ण, आकृति, बुद्धि लक्षण, यश, मान, गुणत्व, विवेकशक्ति, सुख-दु:ख, प्रवास, तेज, जन जीवनीय विवेक, प्रारब्ध योग, जिज्ञासा, मस्तिष्क, स्वभाव, प्रतिष्ठा, आयु, शरीर चिह्न, व्रणादि, निद्रा, दादी, स्त्री का दादा। सूर्यकारक मिथुन, कन्या, तुला, कुम्भ बलवान राशि। भाव संज्ञा-केन्द्र संज्ञक।

द्वितीय भाव - धन, विवेक, दाहिना नेत्र, परिवार, कुटुम्ब सुख, स्वर विचार, गुणज्ञता, वचन-वाणी, विद्या, भोजन, सौन्दर्य, यात्रा, सुवर्णरत्नादि कोष, लक्षाधिपति तथा विपुल धन सम्पदा। गुरूकारक मंगल नेष्ट। भाव पणफर। खान पीन अभिरूचि तथा आकस्मिक धन लाभ-लॉटरी आदि पक्ष।

तृतीय भाव - बहन भाई, मूल अभिरूचि, पराक्रम, साहस, हाथ, कान, महत्वाकांक्षा, नौकर, सुख-दु:ख, हस्ताक्षर, मित्रता, रहन-सहन, वृत्ति, धैर्य, दत्तक, उद्योग, यश, अपयश, माता पिता, मरण, खांसी, दमा, औषध ज्ञान। मंगल कारक पाप ग्रह बली। भाव संज्ञा - आपोक्लिम, उपचय।

चतुर्थ भाव - विद्या विचार, मातृ सुख-दु:ख, पशुपालन, कृषि कर्म, जमीन, जायदाद, नव-निर्माण, मनोवृत्ति, मानसिक सुख दु:ख, गृह सुख, उपभोग, रहन-सहन, हृदय का साहस, जीवनीय उन्नति, कार्य प्रसाधन क्षमता, पूर्वार्जित विविध सुख, ऐश्वर्य, कीर्ति, वाहन सवारी योग। चन्द्र + बुधकारक बुध नेष्ट। भाव संज्ञा केन्द्र

पंचम भाव - बुद्धि, सन्तान, विवेक, देव भक्ति, विद्या योग, यांत्रिक विद्या, शास्त्रनिपुणता, सट्टा, लॉटरी, राजनीति, प्रतिभा, वाक्पटुता, साहित्य योग, लेखन कुशलता, मंत्र यंत्र शक्ति, सन्तान सुख-दु:ख, गर्भधारणा शक्ति। गुरूकारक गुरू एकमात्र विफल। भावसंज्ञा त्रिकोण-पणफर विशेष प्रेम विवाह

षष्ठ भाव - रोग, शत्रु, व्यसन, चोट, घाव, संसर्गिक रोग, मामा का पक्ष, नुकसानी, चोरी भय, हानि, स्वजन विरोध, काका, मामा, कारागार-जेल यातना, कमर, पैर, धोखा, मन:स्ताप, रकम अवरोध-विवाद शनि + मंगलकारक शुक्र नेष्ट। भाव त्रिक।

सप्तम भाव - पत्नी का रूप, रंग, गुण, स्वभाव, स्त्री सुखादि, लाभ-हानि, व्यापार-व्यवसाय, सुरत, काम कला, व्याभिचार, विवाह, न्यायालय, विवेक, व्यापार, क्रिया + गुप्त रोग विकार, मूत्राशय स्थान, अण्डकोष, साझेदारी, लिंग, योनि, भतीजा पक्ष, गुमा हुआ धन लाभ, मुकदमे, स्वतंत्र कार्य, अर्शरोग। शुक्रकारक शनि नेष्ट। भाव संज्ञा केन्द्र

अष्टम भाव - रिश्वत, भूगत द्रव्य, लॉटरी आदि से आकस्मिक धन लाभ, जलयात्रा, ससुराल से लाभ, चिन्ता, शत्रु, गुप्तरोग विकार, स्त्री लाभ, सर्पादि दंश, आयुष्य, आत्मघात, व्यसन, विदेश यात्रा योग ऋणत्व, संकट। शनिकारक। भाव-त्रिक्

नवम भाव - जल यात्रा, विदेश वायु यात्रा, धर्म, पाप, पुण्य आदि का विवेक। उदारता, दान, दैविक शक्ति। यंत्र मंत्र साधना, पर्यटन, पौत्र सुख, शील, संतोष, सम्पन्नता योग, भाग्य विकास, अधिकार मान। उच्च शिक्षा सूर्य + गुरू कारक। त्रिकोण का सर्व क्षेत्रीय विचार। भाव-त्रिकोण

दशम भाव - पिता का रूप रंग वृत्ति एवं पात्रता, गुण, स्वभाव, आयु, उत्कर्ष, मान सम्मान, उच्च पद, राजयोग, सत्ता, अधिकार, नौकरी, स्वतंत्र व्यापार, धंधा, पिता का सुख, कर्मसिद्धि, मान हानि, जन जीवनीय स्तर, अनुशासन, पद लाभ। राजमान्यता, परीक्षोत्तीर्ण, वैभव उपजीविका। मंगल योगद गुरू, सूर्य, बुध, शनिकारक। भाव-केन्द्र।

एकादश भाव - सम्पूर्ण धनागमन लॉटरी लाभ आदि का विचार, मित्र सुख, भाई जंवाई, समाज में श्रेष्ठता, वाहन, सवारी का लाभ, सुख, प्रॉपर्टी योग, मंगल कृत्य, मशीनरी कार्य, मेलमिलाप क्रिया कुशलता। आकस्मिक लाभ, आभूषण योग। गुरूकारक। भाव-पणफर उपचय।

द्वादश भाव - वाम नेत्र, दूर यात्रा का विचार, व्यसन, दुराचरण, कारावास, दण्ड, गुप्त शत्रु, अपव्यय, ऋण, अपघात, कलह, अच्छा-बुरा व्यय विचार, मुकदमा, शत्रुत्व, द्रव्य हानि, अपयश। शनिकारक। भाव-त्रिक आपोक्लिम। विदेश यात्रा स्थान परिवर्तन

✦ ग्रह परिहार विवेक ✦

ग्रहों के दोष शामक ग्रह - राहु का दोषनाशक बुध, राहु व बुध का दोषनाशक शनि और राहु बुध, शनि इन तीनों का दोषनाशक मंगल तथा राहु, बुध, शनि, मंगल इन चारों का दोषनाशक शुक्र है। शु.रा.बु.श. मंगल इन पांचों का दोषनाशक गुरू है। रा.मं.बु.गु. श.शु. इन ६ के दोष निवारण में चन्द्र तथा सभी ग्रहों का दोष नाश सूर्य के बलवान होनें पर समझें।

ग्रहाणां विफलत्वयोग- सूर्य के साथ चन्द्र, लग्न से चतुर्थ बुध, पांचवे भाग में गुरू, द्वितीय मंगल, छठे शुक्र, सातवें शनि हो तो विफल योग, अर्थात् मौलिक फल के नाशक हैं।

ग्रहाणां फलकाल - सूर्य + मंगल आदि में शनि तथा चन्द्र मध्य में, गुरू तथा शुक्र अन्त्य में तथा बुध सर्वदा शुभाऽशुभ फल के प्रतिकारक।

ग्रहों के अस्तकालांश- (उपकरण-सूर्य + चन्द्रान्तरम्) चन्द्र २, मंगल १७, बुध १३, गुरू ११, शुक्र ९, शनि १५ अंशान्तर कालांश से अस्तगत माध्यमिक स्थूल नियम से समझना चाहिये

ग्रहाणां भोग राशि - सूर्य बुध शुक्र १ मास, मंगल १॥ मास, शनि २॥ वर्ष, गुरू १ वर्ष, राहु १॥ वर्ष, १ राशि में मौलिक स्थूल नियम से गतिशील हैं तथा वक्र व अतिचार स्थिति बनने पर यह नियामक स्पष्ट गणना का नहीं। इसी प्रकार अस्त कालांश गणना हेतु भी नियम समझना चाहिये।

✿ **श्रीशिवपार्वतीसम्वादे सामुद्रिके हस्तरेखा शुभाऽशुभ फलं लिख्यते** ✿ **अथातः संप्रवक्ष्यामि हस्तरेखाविचारणम् । दक्षिणे पुरूषं ज्ञेयं वामे वामाकरं शुभं ॥ शिवोक्तं तत्र सामुद्रं हस्तरेखा शुभाऽशुभं । यस्य विज्ञानमात्रेण पुरूषो नहि शोचति ॥ यस्य मीनसमारेखा कर्म सिद्धिश्च जायते । धनाढ्यस्तु स विज्ञेयो बहुपुत्रो न संशयः ॥ तुला ग्रामं तथा वज्रं करमध्ये च दृश्यते । तस्यवाणिज्य सिद्धिः स्यात्पुरूषस्य न संशयः ॥ पद्मचापादि खडगं च अष्टकोणादि दृश्यते । स्त्रियाश्च पुरूषस्यापि धन्वान्सः सुखी नरः ॥ त्रिशूलं करमध्ये तु तेन मंत्री प्रवर्त्तते । यज्ञे धर्मे च दाने च देवद्विजप्रपूजकः ॥ शक्तितोमरबाणैश्च करमध्ये च दृश्यते । रथ चक्र ध्वजाकारौ स च शासनं लभेन्नरः ॥ अंकुशं कुण्डलं चक्रं यस्यपाणितले भवेत् । तस्य शासन महाश्रेष्ठं सामुद्रं वचनं यथा ॥ गिरिकंकण योनीनां नर मुण्डघटादिकं । करे वै यस्य चिन्हानि राजमंत्री भवेन्नरः ॥ रविचन्द्र लता नैत्र अष्टकोण त्रिकोणकम् । मंदिरस्य गजाश्वानां चिन्हे धनसुखीनरः ॥ अंगुष्ठोदरमध्यस्थो यवो यस्य विराजते । उत्पन्न भक्ष भोगीस्यात् स नरः सुखमेधते ॥ मध्यातर्जनीमूले यवो यस्य प्रदृश्यते । धनवान सुखभोगी स्यात्स्वस्वदारगृहादिषु ॥** ● **हस्त सामुद्रिक शास्त्र महिमा-गरिमा सूत्रम् - उन्मानमानगतिसंहतिसारवर्ण स्नेहस्वरप्रकृतिसत्वमनूक्रमादौ । क्षेत्रं मृजां च विधिवत कुशलोऽवलोक्य सामुद्रविद्धवति यातमनागतं वा ॥ इति सामुद्रिकं सूत्रं सुविख्याते पंचांगनिर्णयसागरे नीमच नगरस्थे ॥** ♣♣♣



♣ **ललाट मस्तिष्क रेखा विवेक -** ललाटे लिखितं धात्रा रेखा चिह्नं शुभाऽशुभम् यद ज्ञात्वापुरूषो लोके त्रिकालज्ञो भवेद् ध्रुवम् ॥ हस्तेरेखा प्रतिफल कथन सूत्र - **नैसर्गिकं कालजं च चिह्नं नैमेत्तिकं तथा कालदेशानुमानेन ज्ञात्वा फलमुदीरयेत् ॥** ललाट में स्वच्छ सरल सीधी पूर्ण स्पष्ट रेखा होने से मनुष्य सुखी और दीर्घायु होता है। छिन्न भिन्न रेखा से दु:खी और अल्पायु होता है। ललाट में खड़ी रेखा, त्रिशूल, स्वास्तिक आदि आकार की रेखाओं के होने से धन-पुत्र-स्त्री, सुख सुविधा से जीवन क्रम चलता है। जिस जातक के ललाट में एक भी रेखा नहीं होवे वो वह जीव धनवान, दीर्घजीवी तथा सुखी होता है। जिसका ललाट संकीर्ण होगा वह कृपण तथा दुर्जन प्रकृति का रहेगा, एवमेव उन्नत ललाट वाला दयालु व उदार मनोवृत्ति का बनेगा। जिस स्त्री का ललाट उन्नत नेत्र नील कमल सदृश तथा नासिका से कर्ण तक भोहें द्वितीया के चन्द्र तुल्य टेढी और चौडी तथा परस्पर मिली न हो तो यह लक्षण स्त्री हेतु सुख-सौभाग्य वर्धक है। जिस पुरूष के ललाट पर सीधी-सरल लम्बी ३ रेखा हो वह भाग्यवान, विचारक तथा मान प्रतिष्ठा वाला होगा। जिसके टुकडे टुकडे में उपर नीचे छिन्न-भिन्न रेखा चिन्ह वह निर्दयी, कठोर घाती, हठी-दुराग्रही, क्रूर स्वभाव का जाने। जिस जातक के ललाट पर उपर नीचे सीधी रेखा तथा मध्य भाग में सर्पाकार गति की रेखा हो वह प्रतापी धनी परन्तु मध्यायु वाला होवे। जिसके ललाट पर तीन रेखा सर्पाकार गति की हो उसे जलाघात जल में डूबने का कुयोग। जिसके ललाट पर ऊपर १ सीधी रेखा फिर २ भाग के समान २ रेखा फिर नीचे २ छोटी रेखा चिन्ह होने से विचारक मेधावी विद्वान अन्वेषक-चतुर-शान्त-धीर प्रकृति, अनेक गुणों से युक्त परन्तु आयु तथा धन सम्पदा से न्यूनता। जिसके ललाट पर उपर नीचे सर्पाकार गति की लम्बी रेखा तथा मध्य में सरल सीधी रेखा होवे एवं भाल विशाल हो तो सद्गुणों से युक्त विद्वान, सुखी, धनी स्त्री पुत्रादि से युक्त प्रतापी तथा दीर्घायु होवें। जिस स्त्री के ललाट पर उपर की रेखा से बडी दूसरी रेखा, इससे बडी तीसरी रेखा सीधी सरल हो तथा वाम कपोल पर दाल के समान तिल हो तो वह सौभाग्यवती व धन सम्पदाशील होवे। जिस स्त्री के ललाट पर छिन्न भिन्न रेखाएं हों तथा नासिका के अग्रभाग पर तिल या कालामसा वह दुर्भाग्य सूचक है। ♣ **शरीर अंग भाग प्रतिफल** ♣ मनुष्य की दोनों भौहें मिलकर एक हो जाए अथवा भौहें नहीं हो तो वह धन सम्पदा से चिन्तित बने। टेढी भौहें हों तथा दीर्घ हो तो भाग्य वैभव विकास प्रदायक। काले नैत्र धन सम्पदा सूचक, पीले वर्ण के माता-पिता पर प्रभारी, सफेद हो तो कभी हानि कमी लाभ, चित्र विचित्र होने से दुर्जन-सूचक। ♣ **विशेष फलाशय सूत्र** ♣ सबसे छोटी अंगुली को कनिष्ठा, इसके पास वाली को अनामिका (शुभ एवं देव कार्य संज्ञक) कहते हैं। इससे अग्रिम अंगुली को दीर्घा या मध्यमा सबसे बड़ी। तथा इसके आगे वाली अंगुली तर्जनी संज्ञक व इससे आगे अंगुष्ठ अंगुली रहती है। अनामिका मूल भाग से जो रेखा उठती है, उसे पुण्य रेखा समझें, इस रेखा वश जीव धर्मात्मा, मानवसेवी, विचारक तथा जनसेवा युक्त होता है। मध्या अंगुली के मूल से मणिबन्ध (करतल से बाहर की २-३ रेखा) तक गयी बनी रेखा उर्ध्व रेखा वा भाग्य रेखा होती है। इसके प्रभाव से सांसारिक विविध सुख सुविधा उपभोग वैभव मानद जीवन का योग समझें। अंगुष्ठ मध्य में यव (जौ) समान चिह्न होने से मनुष्य यशस्वी व अपने कुल का भूषण विशेष सुख सुविधायुक्त तथा विनम्र मधुर भाषी होता है। करतल मध्य का तिल लक्ष्मीवान सूचक, पैर के तलवे में तिल वाहन सुख प्रदाता व राजयोग प्रदायक। मणिबन्ध से शनि पर्वत तक जाने वाली रेखा भाग्य रेखा एवमेव चन्द्र स्थान से चलकर शनि पर्वत गामिनी रेखा चन्द्र रेखा वा भाग्य रेखा कहलाती है। इन दोनों रेखा के जीव यश धन सम्पदा युक्त व विविध वैभव के उपभोक्ता बनते हैं। मणिबन्ध में प्राय: तीन रेखा होती है, तीन से अधिक होने पर दुर्भाग्य सूचक तथा अंगुष्ठ मूल से लगी प्रथम मणिबन्ध संज्ञक रेखा धन सम्पदा की, मध्य वाली ज्ञान विज्ञान गुणज्ञता की सूचक, तथा हाथ से लगी अन्तिम तीसरी मणिबन्धरेखा भक्ति भावना-यश पुण्य पराक्रम सूचक। ये ३ रेखा स्वच्छ सरल होने से उपर्युक्त ३ रेखा फल सहज प्राप्त होता है। कनिष्ठा अंगुली मूल की रेखा स्त्री सुख विषयक तथा अंगुष्ठमूल की रेखा सन्तति सुख विषयक। कनिष्ठा से तर्जनी तक आयु रेखा। चन्द्रपर्वत से अंगुष्ठ तक मातृरेखा एवं अंगुष्ठ मूल से अंगुष्ठ पर्यन्त पितृ वा आयु रेखा। यह प्रतिफल निज अनुभवाऽगत व्यक्त किया है।

नवग्रह यंत्र विधान सुरचना

बृहददैवज्ञरंजन निबन्धग्रन्थमतानुगते स्पष्टता

वनं समाश्रिता येऽपि निर्ममा निष्परिग्रहाः। अपि ते परिपृच्छन्ति ज्योतिषां गति कोविदम् ॥ इस भूलोक-मृत्युलोक में सभी चर-अचर, जड़-चेतन, मूर्त्त-अमूर्त्त तत्व नवग्रह जनित सम-विषम, पोषक-शोषक, रश्मि विकरण-प्रस्तार, प्रभामण्डल जनित प्रक्रिया से शुभाऽशुभ सुखदु:खादि फल प्राप्त करते ही हैं। विषम प्रतिफल जनित विकार निवारण हेतु शास्त्रीय मनीषियों द्वारा विविध व्रत उपवास, अनुष्ठान, पाठ पूजा जप आदि सत्कर्म उल्लेखित किये गये इसी क्रमानुगत अरिष्ट निवारक नवग्रह यंत्र लेखन-धारण विधान भी शास्त्रों में वर्णित है। सर्वजन सुलभता हेतु निर्माण एवं धारण प्रक्रिया विधि -

● **सूर्ययंत्र** - किसी मास के शुक्ल पक्ष के प्रथम रविवार अथवा रविपुष्य के दिन सूर्योदय उपरान्त भोजपत्र पर अनार की कलम से अष्टगन्ध की स्याही बनाते लिखें, धूप-दीप एवं सुगंधित लाल पुष्प अर्पित करके **ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं स: सूर्याय नम:** मंत्र उच्चारण सहित सात्विक मनस्थिति रखते धारण करना अथवा लिखना शास्त्र सम्मत हैं।

सूर्ययंत्र

६	१	८
७	५	३
२	९	४

● **चन्द्र यंत्र** - किसी मास के शुक्ल पक्ष के प्रथम सोमवार के दिन चन्द्रदर्शन उपरान्त भोजपत्र पर अनार या चांदी की कलम से अष्टगंध की स्याही से लिखें, धूप दीप एवं सफेद सुगंधित पुष्प प्रदान करके **ॐ श्रां श्रीं श्रौं स: चन्द्रमसे नम:** मंत्र उच्चारण सहित धारण करें अथवा लिखना समुचित सूत्र हैं।

चन्द्रयंत्र

७	२	९
८	६	४
३	१०	५

● **मंगल यंत्र** - किसी मास के शुक्ल पक्ष के प्रथम मंगलवार को शुभादि चोघड़िया वेला समय में भोज पत्र पर अनार या ताम्बा की कलम से अष्टगंध स्याही से लिखें, धूप दीप एवं सुगंधित लाल पुष्प अर्पित करके **ॐ क्रां क्रीं क्रौं स: भौमाय नम:** मंत्र उच्चारण सहित धारण करें अथवा लिखें

मंगलयंत्र

८	३	१०
९	७	५
४	११	६

● **बुध यंत्र** - किसी मास के शुक्ल पक्ष के प्रथम बुधवार को शुभादि चोघड़िया वेला समय में भोज पत्र पर अनार की कलम से केशर की स्याही अथवा अष्टगंध स्याही से लिखे, धूपदीप एवं दूर्वा हरे मूंग अर्पित करके **ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं स: बुधाय नम:** मंत्र उच्चारण सहित धारण करें अथवा लिखें

बुधयंत्र

९	४	११
१०	८	६
५	१२	७

● **गुरूयंत्र** - किसी मास के शुक्ल पक्ष के प्रथम गुरूवार को शुभादि चौघड़िया वेला समय में अथवा शुक्ल पक्षीय गुरू-पुष्य दिवस में भोजपत्र पर अनार की कलम से केशर की स्याही अथवा केशर चन्दन की स्याही से लिखें, धूप दीप एवं पीले रंग के पुष्प, केला फल, हल्दी अर्पित करके **ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं स: गुरवे नम:** मंत्र उच्चारण सहित धारण करें अथवा लिखें

गुरूयंत्र

१०	५	१२
११	९	७
६	१३	८

● **शुक्र यंत्र** - किसी मास के शुक्ल पक्ष के प्रथम शुक्रवार को शुभादि चौघड़िया वेला समय में भोजपत्र पर अनार या चन्दन की कलम से अष्टगंध की स्याही से लिखें। धूप दीप एवं सुगंधित सफेद पुष्प अक्षत चाँवल गंगाजल अर्पित करके **ॐ द्रां द्रीं द्रौं स: शुक्राय नम:** बीज मत्र उच्चारण सहित धारण करें अथवा लिखें।

शुक्रयंत्र

११	६	१३
१२	१०	८
७	१४	९

● **शनि यंत्र** - किसी मास के शुक्ल पक्ष के प्रथम शनिवार को सूर्यास्त से १ घन्टा पूर्व के समय में भोजपत्र पर अनार या काले घोडे की नाल से बनी कलम से अष्टगंध या गंध त्रय की स्याही से लिखें। धूप दीप एवं काला गुलाब पुष्प खेजड़े के पत्र पुष्प तथा सरसों अर्पित करके **ॐ प्रां प्रीं प्रौं स: शनये नम:** बीज मंत्र उच्चारण सहित धारण करें अथवा लिखें। **गंधत्रय स्याही वस्तु-सिन्दूर, हल्दी, कुंकुम।**

शनियंत्र

१२	७	१४
१३	११	९
८	१५	१०

● **राहु यंत्र** - किसी मास के शुक्ल पक्ष के प्रथम शनिवार को रात्रि के प्रथम प्रहर सूर्यास्त बाद समय में भोजपत्र पर अनार की कलम से अष्टगंध या गंधत्रय की स्याही से लिखें। धूप दीप एवं कालागुलाब पुष्प, हरि दूब, भृंगराज पुष्प यथोचित अर्पित करके, कम्बल उनी आसन पर बैठकर **ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं स:** राहुवे नम: मंत्र उच्चारण सहित धारण करें अथवा लिखें। **सभी स्याही निर्माण में गंगाजल योग्य है।**

राहुयंत्र

१३	८	१५
१४	१२	१०
९	१६	११

● **केतु यंत्र** - किसी मास के शुक्ल पक्ष के प्रथम मंगलवार या रविवार को सूर्यास्त बाद समय में भोज पत्र पर अनार की कलम से अष्टगंध या गंधत्रय की स्याही से लिखें। धूप दीप एवं काला गुलाब पुष्प, दर्भा, भृंगराज पुष्प यथोचित अर्पित करके, कम्बल उनी आसन पर बैठकर **ॐ स्रां स्रीं स्रौं स:** केतवे नम: मंत्र उच्चारण सहित धारण करें अथवा लिखें।

केतुयंत्र

१४	९	१६
१५	१३	११
१०	१७	१२

● **कतिपयसुविधासूत्राणि-यंत्रविषये** - सूर्य यंत्र को ताम्बा अथवा स्वर्णधातु ताबीज में अथवा लाल वस्त्र में धारण करें। इन धातु पत्र पर यंत्र अंकन किया जाकर भी स्थापित किया जा सकता है। चंद्रयंत्र चाँदी के ताबीज में तथा धातु पत्र चाँदी मान्य हैं। भौमयंत्र को सोना-ताम्बा के ताबीज में तथा धातु ताम्र -स्वर्ण पत्र मान्य हैं। बुध यंत्र को हरे रंग के वस्त्र अथवा स्वर्ण ताबीज में धारण करें। गुरू यंत्र को पीले रंग के वस्त्र अथवा स्वर्ण ताबीज में धारण करें। शुक्र यंत्र को सफेद रंग के वस्त्र अथवा चाँदी ताबीज में धारण करें। शनि-राहु-केतु आदि यंत्र को काले अथवा नीले रंग के वस्त्र अथवा स्वर्ण-रजत धातु ताबीज में धारण करें

● यंत्र धारण पक्ष में अभिकथन यह भी कि पुरूष वर्ग दाहिनी भुजा में तथा स्त्री वर्ग वाम भुजा में धारण करें। इन यंत्रों को स्वर्ण-रजत (चाँदी) ताम्बा के पत्र पर भी अंकित किया जा सकता है। तथा भुजा में धारण नहीं करें तो इन धातु पत्र पर अंकित कराकर यथाविधि धूप-दीप पुष्प-वस्त्रादि अर्पित करके यथोचित भवन कक्ष-व्यवसाय कक्ष पर भी स्थापित कर सकते हैं। **विशेष कथन** यह भी कि अष्टगंध गंधत्रय की स्याही के अभाव में सूर्य-मंगल के यंत्र लेखन में लाल चन्दन की स्याही बनाते तथा शुक्र-चन्द्रादिक यंत्र लेखन हेतु सफेद चन्दन की स्याही तथा बुध यंत्र को हरे रंग की स्याही से एवं गुरूयंत्र को चन्दन केशर स्याही बनाते तथा शनि-राहु-केतु यंत्र काली स्याही से लेखन भी समुचित परिहारक सूत्र हैं। **सामान्य अष्टगन्ध द्रव्य** कुंकुम, रक्त चन्दन, श्वेत चन्दन, कपूर, केशर, सिन्दूर, हल्दी तथा गंगाजल से मिश्रण क्रिया

❀ ग्रहजनित रश्मि प्रभाव - आभामण्डल ❀

ग्रह संचरित-रचित आभामण्डल वह माध्यम है, जिसमें से होकर उच्चतर शाश्वत सत्य अथवा यथार्थ से प्रतिक्रियात्मक उर्जाऐं गहन होकर भौतिक पंचतत्वीय देह में प्रविष्ट होती हैं। गर्भाधान जन्म समय से लेकर नवजात शिशु के कोषाणु ग्रहों की रश्मि-तरंगों को सहजभाविक ग्रहण कर लेते हैं। ये ग्रह जनित तीन ३ प्रभाव यथा-गुरुत्वाकर्षण प्रभाव-चुम्बकीय प्रभाव-विकिरण प्रभाव संज्ञा के हैं। किसी भी ग्रहजनित अनिष्ट विबाधा निवारण हेतु २ प्रकार के उपाय मान्य हैं। १ प्रथम लौकिक उपाय-इससे तात्पर्य यह कि आपके द्वारा किसी भी कार्य करने से पूर्व उसके समाधानपूर्ति हेतु 'वर्तमान' में उपलब्ध साधन-प्रसाधनों का विशुद्ध नीति रीति से उपयोग लेना। अपने कर्म सत्कर्म एवं सत्‌चिन्तन से जीवनधारा एवं धारणा में विपुल परिवर्तन बनना नैसर्गिक विषय हैं। २ द्वितीय शास्त्रीय उपाय से तात्पर्य उपासना-अनुदान-रत्नधारण-मंत्रजाप-स्तोत्र कवचादि के पाठ अनुष्ठान एवं व्रत तथा दानादि। इन दोनों प्रकार के प्रसाधन नियामक का ध्यान रखते ही समाधान होगा।

● **शनि पीड़ा निवारण स्तुति** ● ध्वाजिनी धामिनी चैव कंकाली कलह प्रिया। अजा महिष मातंगी शनेभार्या प्रकीर्त्तिता॥ एतासां शनिर्भायाणां प्रातरूत्थाय य: पठेत्। शनैश्चर कृतापीड़ा विनश्यति न संशय:॥ इस प्रकार की स्तुति से शनिजनित आदि-व्याधि नष्ट होती है

नवग्रह शान्ति

सबीज मंत्रादि-सूत्र रचना

(१) सूर्य वैदिक मंत्र - ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतम्मर्त्यंञ्च हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ॥

सूर्य गायत्री-आदित्याय विद्महे प्रभाकराय धीमहि तन्नः सूर्यः प्रचोदयात् ॥

एकाक्षरीबीजमन्त्र - ॐ घृणिः सूर्याय नमः।

तान्त्रिकसूर्यमन्त्र - ॐ ह्रां, ह्रीं, ह्रौं सः सूर्याय नमः

जप संख्या - ७००० सप्तसहस्राणि

ग्रहाणामादिरादित्यो लोकलक्षणकारकः।

विषमस्थानसम्भूतां पीड़ां दहतु मे रविः ॥

(२) चंद्रवैदिकमंत्र - ॐ इमन्देवाऽअसपत्नं सुवध्वं - महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठाय्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विशऽएष वोऽमी राजा सोऽमोस्माकं ब्राह्मणानां राजा ॥

सोमगायत्री - ॐ अमृतांङ्गाय विद्महे कलारूपाय धीमहि तन्नः सोमः प्रचोदयात् ॥

एकाक्षरी बीजमंत्रः - ॐ सों सोमाय नमः।

तान्त्रिकमंत्र : - ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः।

जपसंख्या - ११००० एकादशसहस्राणि।

रोहिणीशः सुधामूर्तिः सुधागात्रो सुधाशनः।

विषमस्थानसम्भूतां पीड़ां दहतु मे विधुः ॥

(३) मंगलवैदिकमंत्रः - ॐ अग्निर्मूर्द्धादिवः ककुत्पतिःपृथिव्याऽअयम्। अपां रेतां सि जिन्वति ॥

भौमगायत्री - ॐ अङ्गारकाय विद्महे शक्ति हस्ताय धीमहि तन्नो भौमः प्रचोदयात् ॥

एकाक्षरीबीजमंत्रः - ॐ अं अंगारकाय नमः।

तान्त्रिक मन्त्रः - ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः।

जपसंख्या - १०००० दशसहस्राणि।

भूमिपुत्रो महातेजा जगतो भयकृत्सदा।

वृष्टिकृद-वृष्टिहर्ता च पीड़ां दहतु मे कुजः ॥

(४) बुधवैदिक मंत्रः - ॐ उदबुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टापूर्त्ते स ठँ सृजेथामयं च अस्मिन्त्सधस्थेऽ अध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत।

बुधगायत्री - ॐ सौम्य रूपाय विद्महे वाणेशाय धीमहि तन्नौ सौम्यः प्रचोदयात् ॥

एकाक्षरीबीजमंत्र - ॐ बुं बुधाय नमः।

तान्त्रिकबुधमंत्र - ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः।

जपसंख्या - ९००० नवसहस्राणि।

उत्पातरूपी जगतां चन्द्रपुत्रो महाद्युतिः।

सूर्यप्रियकरो विद्वान पीड़ा दहतु मे बुधः ॥

(५) गुरूवैदिकमन्त्रः - ॐ बृहस्पतेऽअति यदर्यो ऽअर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु यद्दीदयच्छ वसऽऋतप्रजाततदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्।

गुरूगायत्री - ॐ आंङ्गिरसाय विद्महे दिव्यदेहाय धीमहि तन्नौः जीवः प्रचोदयात् ॥

एकाक्षरीबीजमंत्र - ॐ बृं बृहस्पतये नमः।

तान्त्रिकगुरूमन्त्रः- ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः।

जपसंख्या - १९००० एकोनविंशति सहस्राणि।

देवमंत्री विशालाक्षः सदा लोकहितेरतः।

अनेकशिष्यैः सम्पूर्णः पीड़ां दहतु मे गुरूः ॥

(६) शुक्रवैदिकमंत्रः:- ॐ अन्नात् परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिवत्क्षत्रम्पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान ठँशुक्रमंधसऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतम्मधु ॥

शुक्रगायत्री - ॐ भृगुजाय विद्महे दिव्य देहाय धीमहि तन्नो शुक्रः प्रचोदयात् ॥

एकाक्षरीबीजमंत्रः - ॐ शुं शुक्राय नमः।

तान्त्रिकशुक्रमन्त्रः- ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः

जपसंख्या - १६००० षोड़शसहस्राणि।

दैत्यमन्त्री गुरूस्तेषां प्राणदश्च महाद्युतिः।

प्रभुस्ताराग्रहाणां च पीड़ा दहतु मे भृगुः ॥

(७) शनिवैदिक मंत्रः - ॐ शन्नो देवीरभिष्टऽआपो भवन्तुपीतये। शय्योरभिस्रवन्तु नः ॥

शनिगायत्री - ॐ भगभवाय विद्महे मृत्युपुरूषाय धीमहि तन्नौ शनिः प्रचोदयात् ॥

एकाक्षरीबीजमन्त्रः - ॐ शं शनैश्चराय नमः।

तांत्रिक शनिमंत्रः- ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः।

जपसंख्या - २३००० त्रयोविंशतिः सहस्राणि।

सूर्यपुत्रो दीर्घदेहो विशालाक्षः शिवप्रियः।

मन्दचारः प्रसन्नात्मा पीड़ां दहतु मे शनिः ॥

(८) राहुमन्त्र - ॐ कयानश्चित्रऽआभुवदूती सदा वृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता ॥

राहुगायत्री - ॐ शिरोरूपाय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नो राहुः प्रचोदयात्।

एकाक्षरी बीजमन्त्र - ॐ रां राहवे नमः ॥

तान्त्रिकमन्त्र - ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः ॥

जपसंख्या - १८००० अष्टादशसहस्राणि

महाशीर्षो महावक्त्रो महाद्रंष्ट्रो महायशाः।

अतनुश्चोर्ध्व केशश्च पीड़ां दहतु मे तमः ॥

नाक्षत्रिक पंचक योग

मृतदाहकर्म, दक्षिण दिशा की यात्रा, पालना-शय्या-खाट का प्रयोग तथा मकान पर छत डालना आदि कार्य पंचकों में नहीं करें तथा अन्य विषयक कार्यों में पंचक दोषकारक नहीं होता

(९) केतुमन्त्रः - ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशो मर्य्याअपेशसे समुषद्भिरजायथाः।

केतु गायत्री - ॐ पद्मपुत्राय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नोः केतुः प्रचोदयात् ॥

एकाक्षरी बीजमन्त्र - ॐ कें केतवे नमः।

तान्त्रिक मन्त्र - ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः।

जपसंख्या - १७००० सप्तदशसहस्राणि।

अनेकरूपवर्णश्च शतशोऽथ सहस्रशः।

उत्पात रूपी घोरश्च पीड़ा दहतु मे शिखी ॥

घातचन्द्रविषये स्पष्टता

कार्यसिद्धि की यात्रा, उच्च वर्ग से सम्पर्क, न्यायालय-विवाद, मोटर-ट्रक, ट्रेक्टर, स्कूटर, साइकिल, गाड़ी आदि वाहन प्रयोग, रोगादि में घात चन्द्र देखें। परंतु विवाहोपनयन तथा अन्य सभी शुभ मांगलिक कार्य, तीर्थ-यात्रा प्रसंग में घात चन्द्र का विचार नहीं करें। यह मुहूर्त्तचिन्तामणि का अभिमत स्पष्टतया मान्य।

द्वादशराशितिथि, वार, मास, नक्षत्रादि स्त्रीणां सह घातचन्द्रचक्रम्

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि	धन	मकर	कुम्भ	मीन
मास	कार्तिक	मार्ग.	आषाढ	पौष	ज्येष्ठ	भाद्र	माघ	आश्वि.	श्रावण	वैशाख	चैत्र	फाल्गु.
तिथि	१-६-११	५-१०-१५	२-७-१२	२-७-१२	३-८-१३	५-१०-१५	४-९-१४	१-६-११	३-८-१३	४-९-१४	३-८-१३	५-१०-१५
वार	रवि	शनि	सोम	बुध	शनि	शनि	गुरू	शुक्र	शुक्र	मंगल	गुरू	शुक्र
नक्षत्र	मघा	हस्त	स्वाति	अनु.	मूल	श्रवण	शत.	रेवती	भरणी	रोहि.	आर्द्रा	आश्ले.
योग	विष्कुं.	शुक्ल	परिध	व्याधा	धृति	शूल	शूल	व्यती.	वरी.	वैधृति	गण्ड	वैधृति
करण	बव	शकुनि	चतु.	नाग	बव	कौल	तैतिल	गर	तैतिल	शकुनि	किंस्तु	चतु.
लग्न	मेष	मिथुन	कन्या	मकर	वृष	सिंह	मीन	मिथुन	सिंह	वृश्चि.	मेष	कर्क
प्रहर	१ ला	४ था	३ रा	१ ला	१ ला	१ ला	४ था	१ ला	१ ला	४ था	३ रा	४ था
चं.पुरू.	मेष	कन्या	कुम्भ	सिंह	मकर	मिथुन	धनु	वृष	मीन	सिंह	धनु	कुम्भ
चं.स्त्री.	मेष	धनु	धनु	मीन	वृश्चि	वृश्चि	मीन	धनु	कन्या	वृश्चि	मिथुन	कुम्भ

बुध MERCURY

हरे मूँग. हरा वस्त्र. हरे रंग का फल. सुवर्ण. पन्ना, कांस्यपात्र. केसर-कस्तूरी. पंचरत्न. विविध पुष्प. कपूर. गजदन्त. शंख. घृत. मिश्री, दासी. शास्त्र-पुस्तक आदि का अनुदान।

ईशान्यांबाणाकार मण्डल, अंगुल ४. मगधदेशोद्भव, आत्रेय गोत्र, हरित वर्ण, बीज मंत्र - ॐ ऐं श्रीं श्रीं बुधाय नम: । जप संख्या ९००० सूर्योदय से ५ घटी पर्यन्त।



शुक्र VENUS

श्वेत छींट चित्र वस्त्र, सजावट-श्रृंगार वस्तु-युवा स्त्री सम्मान-तुलसी पूजा, सफेद घोड़ा. सवत्सा गाय. हीरा. श्वेत स्फटिक. सुवर्ण. रजत. चाँवल. सुगंध वस्तु. कपूर-श्वेत चन्दन अथवा पुष्प. घृत. शर्करा-मिश्री. दधि. गौशाला सेवा आदि का अनुदान।

पूर्वे पंचकोणमण्डल अंगुल ९ भोजकटदेशोद्भव भार्गव सगोत्र श्वेत वर्ण, बीज मंत्र - ॐ ह्रीं श्रीं शुक्राय नम: । जप संख्या १६००० सूर्योदय काल।



चंद्र MOON

वंशपात्र (टोकरी-टोकरा). चाँवल. कपूर. मोती, श्वेत वस्त्र. श्वेत चन्दन. श्वेत पुष्प. श्वेत वृषभ. रजत-चाँदी. शंख. घृतपूर्ण कुंभ. मिश्री-शर्करा. दुग्ध दधि. स्फटिक माला आदि का अनुदान।

आग्नेयां चुतुरस्त्रमण्डल अंगुल २४ यमुनातीरदेशोद्भव आत्रेय सगोत्र श्वेत वर्ण। बीज मंत्र-ॐ ऐं क्लीं सोमाय नम: । जप संख्या ११००० संध्याकाल



गुरु JUPITER

शर्करा, मधु. घृत, हल्दी, पीत अश्व. पीत वस्त्र, पीत धान्य, शास्त्र-पुस्तक, पुखराज, लवण, स्वर्ण. पीतपुष्प. केसर, पीतमुद्रा - मोहर कन्या भोजन, वयोवृद्ध जन की सेवा. भूमि तथा छत्रदान।

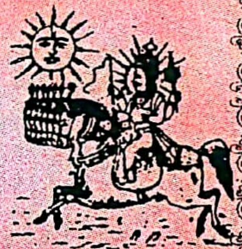
उत्तरे दीर्घचतुरस्त्रमण्डल अंगुल ६ सिन्धुदेशोद्भव, आंगिरसगोत्र, पीतवर्ण-बीज मंत्र - ॐ ऐं क्लीं बृहस्पतये नम: । जप संख्या १९००० संध्याकाल।



रवि SUN

माणिक्य. गेहूँ. सवत्सा धेनु. रक्तवस्त्र-पुष्प. गुड. केसर. स्वर्ण. ताम्र. रक्तचन्दन, रक्तकमल. भूमि भवन दान आदि।

मध्येवर्तुलमण्डल अंगुल १२ कलिंग देशोद्भव काश्यपगोत्र रक्तवर्ण बीजमंत्र - ॐ ह्रीं ह्रौं सूर्याय नम: । जप संख्या ७००० सूर्योदयकाल।



मंगल MARS

प्रवाल-मूंगा. गेहूँ. मसूर. लालवस्त्र - कनेरादिरक्त पुष्प. गुड़. ताम्रपात्र. रक्त चन्दन. केसर, रक्तवृषभ. भूमि आदि दान।

दक्षिणे त्रिकोणमण्डल अंगुल ३ अवंतिदेशोद्भव भारद्वाज गोत्र। रक्तवर्ण-बीजमंत्र - ॐ हूं श्रीं भौमाय नम: । जप संख्या १०००० सूर्योदय से १ घण्टा।



केतु KETU

वैदूर्य (लहसुनिया), तिल, कम्बल, कस्तूरी, शस्त्र, कालावस्त्र, काला पुष्प, सभी तैल, उड़द, कालीमिर्च. सप्तधान्य. बकरा. लौह धातु. छतरी. सीसा-रांगा आदि का अनुदान।

वायव्ये ध्वजाकारमण्डल अंगुल ६ अवन्तिदेशोद्भव जैमिनि गोत्र धूम्रवर्ण - बीजमंत्र - ॐ ह्रीं ऐं केतवे नम: । जप संख्या १७००० रात्रिकाल।



शनि SATURN

उड़द, तिल, सभी तैल, महिषी. लौह धातु, छतरी, श्याम धेनु, श्यामवस्त्र. नीलम, कुलथी, जूता-उपानह, स्वर्ण. कम्बल आदि का अनुदान।

पश्चिमे धनुषाकार मंडल अंगुल २ सौराष्ट्र देशोद्भव काश्यप गोत्र, कृष्णवर्ण-बीज मंत्र - ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नम: । जप संख्या २३००० संध्या काल।



राहु RAHU

गेहूँ, उड़द, गोमेद, कालाघोड़ा. खड्ग, नीलवस्त्र, कम्बल. तिल. तैल. लौह धातु. सप्त धान्य. रत्न. अभ्रक. स्वर्ण आदि का अनुदान।

नैऋत्यां शूर्पाकारमण्डल अंगुल १२ राठीनादेशोद्भव पेठीनस गोत्र, धूम्रवर्ण - बीज मंत्र - ॐ ऐं ह्रीं राहवे नम: । जप संख्या १८००० रात्रिकाल।



भारत में सर्वाधिक प्रामाणिक बिक्री वाले इस पञ्चाङ्ग को लेते समय "निर्णयसागर पञ्चाङ्ग कार्यालय, नीमच" नाम अवश्य देखें।

निर्णयसागर पञ्चाङ्ग कार्यालय, नीमच छावनी













यह जोधपुरीय ♣ श्रीचण्डमार्त्तण्डनिर्णयसागरपञ्चाङ्ग ♣ नीमचनगरस्थ सुप्रसिद्ध ज्योतिर्विद् पण्डित श्रीयुत भवानीशंकररविशंकरात्मज वैद्य श्री आनन्दस्वरूप शास्त्री द्वारा अभिनव सुसंस्कारित ग्रहगणितानुसार शुद्धकर, विविधशास्त्रीय विषयों से अलंकृत, धर्मकृत्योपयोगी सर्वजनहितार्थ स्व निर्णयसागरपञ्चाङ्ग कार्यालय, नीमच छावनी (म.प्र.) से प्रकाशित किया।













Published, Printed & Prepared by Late Pt. Bhawani Shankar Ravishankar Sharma, Vaidya Anand Swaroop Shastri , Shobha Devi & Sons as
NIRNAY SAGAR PANCHANG KARYALAY, 503, Tilak Marg, Neemuch - 458441 (M.P.) Ph. : 9425974174, 07423-220520
Email us : nspkn1@gmail.com Message us : 8964098640 Search us : "Nirnay Sagar Panchang Prakashan"